विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् फर्वरी सन् १८८४ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्तमें लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्योपार की इच्छा हो वह छापे खाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेज कर क़ीमत का निर्णय कर लें॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
अथ इतिहास॥	१-आदि पर्व्व	४-विराट पर्व्व	१- बाल काण्ड
महाभारत	२-सभा पर्व्व	५- उद्योग पर्व्व	२- अयोध्या काण्ड
१-पहिले हिस्सा में आ-	३- बन पर्व्व	६- भीष्म पर्व्व	३- आरण्य काण्ड
दि पर्व्व सभा पर्व्व बन	४-विराट पर्व्व	७- द्रोण पर्व्व	४- किष्किन्धा काण्ड
पर्व्व	५- उद्योग पर्व्व	८- कर्ण पर्व्व	५- सुन्दर काण्ड
२- दूसरे हिस्सा में विरा-	६-भीष्म पर्व्व	९- शल्य पर्व्व	६- लङ्का काण्ड
ट पर्व्व उद्योग पर्व्व भी-	७- द्रोण पर्व्व	१०-गदा पर्व्व	७- उत्तर काण्ड
ष्म पर्व्व द्रोण पर्व्व	८-कर्ण पर्व्व	११-स्त्री पर्व्व	रामायण शब्दार्थ कोष
३-तीसरे हिस्सा में क-	९- शल्य पर्व्व व गदा प-	१२-स्वर्गारोहण	रामायण का इतिहास
र्ण पर्व्व शल्य पर्व्व गदा	र्व्व सौप्तिक पर्व्व मय यो-	रामायण राम विलास	रामायण मानस दीपिका
पर्व्व सौप्तिक पर्व्व यो-	षिक व विशोक व स्त्री	रामायण तुलसी कृत	रामायण कवितावली
षिक पर्व्व विशोक पर्व्व	पर्व्व	रामायण सटीक मय	रामायण गीतावली स-
स्त्री पर्व्व शान्ति में राजध-	१०-शान्ति पर्व्व राज धर्म्म	मानस दीपिका कोष आ-	भुवनेश भूषण
र्म्म आपद्धर्म्म मोक्ष ध-	मोक्ष धर्म्म दान धर्म्म	रामायण तुलसी कृत टी-	विनय पत्रिका बाबू गो-
र्म्म	११- अश्वमेध आश्रम	का शुकदेव लाल कृत	कुल लाल कृत
४-चौथे हिस्सा में शा-	वासिक मुशल पर्व्व म-	रामायण तुलसी कृत टी-	विनय पत्रिका बाबू शि-
न्ति पर्व्व दान धर्म्म अश्व-	हाप्रस्थान स्वर्गारोहण	का रामचरण दास कृत	व प्रसाद कृत
मेध आश्रम वासिक पर्व्व	१२.हरिवंश पर्व्व	तथा जिल्द बँधी	शंकर चरित सुधा
व मौशल पर्व्व व महा	महाभारत सबलसिंह	तथा छोटे अक्षरों की मय	विष्णु पुराण भाषा
प्रस्थान स्वर्गारोहण प-	१- आदि पर्व्व	तसवीर व क्षेपक	लिंग पुराण
र्व्व हरि वंश पर्व्व	२- सभा पर्व्व	रामायण तुलसी कृत सा-	प्रश्नोत्तर खण्ड
महाभारत पर्व्व अलेहदा भी हैं	३- बन पर्व्व	तों काण्ड	वाराह पुराण

सूचीपत्र भक्तमालका ॥

निष्ठा अठारहवीं दास्यताकि जिसमें सोरह भक्तों की कथा ॥

निष्ठा उन्नीसवीं वात्सल्य नव भक्तोंकी कथा ॥

निष्ठाबीसवीं सौहार्दकथाछवों भक्तोंकी कथा ॥

निष्ठा इक्कीसवीं शरणागत और आत्मनिवेदनभक्तों की कथा ॥

इति ॥

अथ मङ्गलाचरणप्रारम्भः ॥



श्रीमद्वृन्दावनंध्यायेद्वैष्णवोहृदयेसदा ॥ महापद्मंयोगपीठंकाञ्चनस्थलनिर्मलं १ पूर्णचन्द्रोदयन्नित्यंसर्वत्रकुसुमान्वितम् ॥ कदम्बपादपच्छायंकालिन्दीपुलिनोत्तमं २ माधवीकुञ्जविश्रामभ्रमद्भ्रमरविभ्रमं ॥ कोकिलध्वनिसम्वीतंमयूरोद्दामनर्त्तनं ३ कृष्णसारसमाकीर्णंकामधेनुसुखास्पदं ॥ गोपगोपीप्रियस्थानं कल्पपादपशोभितं ४ मध्येगोवर्द्धनंतत्र विचित्रमणिमन्दिरम् ॥ रत्नसिंहासनासक्तंपद्मरागासरोरुहम् ५ तन्मध्येचिन्तयेत्कृष्णंकिशोरंनंदनन्दनं ॥ वामेतस्यप्रियांराधांकिशोरींरूपमानवीं ६ स्वभावतोपास्तसमस्तदोषमशेषकल्याणगुणैकराशिं ॥ व्यूहांगिनंब्रह्मपरंवरेण्यम् ध्यायेमकृष्णंकमलेक्षणंहरिं ७ अंगेतुवामेवृषभानुजां मुदा विराजमानामनुरूपसौभगां ॥ सखीसहस्रैःपरिसेवितांसदा स्मरेमदेवींसकलेष्टकामदां ८ स्फुरदिन्दीवरश्यामंध्यायेद्वृन्दावनेश्वरं ॥ द्विभुजंकान्तमुद्राढ्यम् वनमालिनमीश्वरम् ९ गोपीगोपगवावीतंकुञ्जमण्डलमध्यगं ॥ दिव्यालंकरणोपेतंरत्नपंकजमध्यगं ॥ कालिन्दीजलकल्लोलसंगिमारुतसेवितं ॥ चिन्तयंश्चेतसाकृष्णं मुक्तोभवतिसंसृतेः १० ॥ इतिश्री[illegible] [illegible]ध्यानश्लोकाःशुभंभूयात् ॥ जयतिश्रीराधाकृष्णौ ॥

श्रीराधावल्लभोजयतु ॥ श्रीराधाकांत वृन्दावन विहारी [illegible]

में फैलाये कि जिनको कीर्त्तनकरके कैसाहीअधम व पातकीहोवे वहभी संसार समुद्रसे उतरजाताहै और यह विशेषता उनहीं के नहीं कि जो उत्तमकुल व विद्याकला करके युक्तहोंय किन्तु ऐसे असाधुकुल व नीच राक्षस दैत्यादि जो सर्वप्रकार लोकवेद की रीतिसे वाहर व सवविद्या कलाआदिसेशून्य व अनधिकारीथे उनचरित्रोंको गायकर ऐसेस्थानको पहुंचे कि जहां योगियोंका मनभी न जायसके पशुपक्षी जैसेऋच्छ वानर गजग्राह गीधआदिको वह उत्तमगति प्राप्तहुई जिसको ऋषिमुनिनहीं पहुंचते भगवत्नाम जन्ममरणकेदुःखदूरकरनेकोपरमऔषधीहै और नहीं कहाजाताहै कि नामईश्वरकावड़ा कि ईश्वरवड़ाहै परंतु ध्यानकरना चाहिये कि यद्यपिकिसीके स्वरूपकाज्ञानहै और नामयादनहीं तो किसी प्रकार विनानाम निर्देश उसका ज्ञाननहीं करसक्ता और यद्यपि किसी बस्तुकेरूपका ज्ञाननहींहै व नामजानताहै तो नामसे मिलसक्ताहै जैसे यह कि किसीकोवुलानाहै तो यद्यपि वहसमीपभीहै तथापि बेनामनहीं बुलासक्ता व नामकाज्ञानहै तो दूरभीहै तो पुकारनेसे तुरन्त आसक्ताहै अब विचारिलेनाचाहिये कि वड़ाई किसकोहै व सिवायइसके ब्रह्मके दो स्वरूपहैं एकसगुण दूसरा निर्गुण सो यहनाम दोनोंसे वड़ाहै क्योंकि ब्रह्मएकअविनाशी और व्यापक सत्चित् आनन्दघनहै सोयद्यपि ऐसा ईश्वर निर्गुण निर्विकार सबके शरीरमें प्राप्तहै तथापि संपूर्णजीवदीन व दुःखीहैं और जबउसीजीव ने नामकोजपा व नामका ध्यानकिया तोवह निर्गुणब्रह्म आपसेआप साक्षात्कार होजाताहै किन्तु अपने स्वरूपको जीवजानलेताहै अब विचार करनाचाहिये कि ब्रह्मवड़ाहै कि नाम और सगुणब्रह्मसे इसकारणवड़ाहै किजव भक्तोंकोदुःखहुआ तब ईश्वरनेआप अपने ऊपर परिश्रम अंगीकारकरके अनेकप्रकारके अवतारधारणकिये और दुःखोंकोदूरकिया व नामकैसाहै कि जबभक्तोंनेजपा विनाक्लेश व परिश्रम दुःखदूरहोगये अर्थात् यहनाम अर्थधर्म काममोक्ष चारोंपदार्थ के देनेको आपसमर्थहै और किसीसाधनका प्रयोजननहीं और इस कलियुगमें तो सिवायकृष्णनामके और कोईयुक्ति व कारण उद्धारकानहीं वावनपुराणमेंलिखाहै कि जिसने भगवत्नामजपा उसने अश्वमेधयज्ञ आदि सबकिया भागवतमेंकहाहै कि जो बहुतदुःखीहैं वे संसारकेदुःखसे

इरतेहैं सोयोगियोंसेभी भगवन्त का नामलेतेहैं सोगीत [illegible] तेहैं स्कंदपुराणमें वर्णनहै कि गोविन्दनाम ऐसाएकबार उच्चारणहै कि जिसका जपना पापोंके हजारटुकड़े करदेताहै नारदपुराणमें कहाहै कि नारायणनामको नित्यनवीन जानकरकहते और सुनतेहैं वे [illegible] जपतेहैं वे जीव जीवन्मुक्तहैं तात्पर्य्य यह कि हजारोंश्लोक व वेद श्रुति नामकी महिमामें हैं सो उसीनाम को जपकर व दण्डवत् करके प्रारम्भ लिखना भाषांतर भक्तमाल प्रदीपन जो तुलसीराम ने उर्दू में किया है सूक्ष्मकरके करताहूं ॥

श्रीगुरुकीमहिमा ॥

प्रथम श्रीगुरुके चरण कमलोंको दण्डवत्है कि जिनकीकृपा हृदयके अंधकारके दूरकरनेके निमित्त सूर्य्यसे अधिक प्रकाशकरतीहै व वेदश्रुति कहतीहै कि अज्ञान अंधकारकरके जोअंधहैं तिनको गुरुज्ञानरूप अञ्जनकी सलाईहै यह भगवत् कि जिसकी महिमाब्रह्मा और शिवभीनहीं कहसके सोगुरुके उपदेशसे प्राप्तहोताहै वेद व सबशास्त्रों ने बिनागुरु उपदेश दूसराकोईउपायजन्ममरणकेदुःखसेछूटनेके निमित्तनहीं लिखा ॥

भगवद्भक्तिकीमहिमा ॥

पश्चात् श्रीभगवद्भक्तिको फेरभी दण्डवत्है यद्यपि भगवान्में व भक्तिमें कुछ अन्तरनहीं परन्तु एकविशेष विचार [illegible] करके भगवद्भक्तिकी बड़ाईजानहूं कि [illegible] सुखदुःख होनेदेताहै व भक्तिमहारानी [illegible] व दुःखको समीपनहीं आनेदेती [illegible] लिखी है [illegible] भगवन्त की [illegible]

[illegible]

बावनपुराणमें कहाहै किजिनकी अनन्यभक्ति शंखचक्र धारीनारायणमें है वे लोग निश्चय करिके नारायणको पहुंचते हैं महाभारतमें लिखाहै किहजारों जन्मोंमें जोतप व ध्यानकरके पापदूरहुये हैं उसीकी भगवत् में भक्तिहोतीहै वैशाख माहात्म्यमें वर्णनहै किप्रथमतो भरतखंडमें जन्म होना दुर्घटहै तिसपर मनुष्य फिरमनुष्यमेंभी स्वधर्म करनेवाला तिसमें भक्तहोना बहुतदुर्लभहै पद्मपुराणमें लिखाहै किजिसके हृदयमें प्रेमभक्ति का निवासहै तिसको यमराज स्वप्नमें भी नहींदेखता औरजिसको प्रेत व पिशाच व राक्षस व देवताभी विघ्ननहीं करसक्ते नारदपुराणमें लिखाहै कि अर्थ धर्म काम मोक्ष इनचारोंकेनिमित्त लोगपरिश्रम करतेहैं सो यह सब भगवत्भक्तिसे अनायास प्राप्तहोजातेहैं फिर पद्मपुराणमें कहाहै कि भगवत्भक्तों को मुक्तिकाद्वार खुलाहै और यह निस्सन्देह निश्चय किया गया किभक्तिसे अधिकअन्य कुछ साधन नहींहै ब्रह्मांडपुराणमें कहाहै कि जोभगवत्के भक्तनहींहैं उनके निमित्त करोड़ों कल्पतकमुक्ति व ज्ञान प्राप्तनहोगा भागवतमें लिखाहै कि नारायणकी भक्तिवास्ते ब्राह्मणकुलमें जन्म अथवा देवताहोनेका प्रयोजननहीं व नऋपीश्वरहोनेका न व्रत न दान न यज्ञ केवल भक्तिसे नारायण प्रसन्नहोतेहैं और सब स्वांगहैं भागवतमें उद्धवसे श्रीकृष्ण कहते हैं योग और सांख्य और वेदका पढ़ना और वैराग्य हमको वशनहीं करसक्ते एकभक्तिवश करतीहै स्कंदपुराण में लिखाहै कि भगवत्भक्ति करनेसे औरकोई उत्तम पंथनहींहै भगवत् का वाक्यहै किभक्तिकी अवलम्बसे गोपी और गऊ औरवृक्ष औरपशु और सांप आदिक पवित्र होकर हमको प्राप्तहुये भागवतमें कहाहै कि जोकर्मोंसे और तपसे और योग व ज्ञान वैराग्य और दानादिक सबधर्मों से फल होताहै सो केवल भक्तिसे होजाताहै नारदपुराणमें लिखाहै कि विशेषकरके मुक्तिकीप्राप्ति ज्ञानसेकहतेहैं सोवह ज्ञानभक्तिहीके आधीन है उसीमें फिरकहाहै किविना भगवत्भक्तिके जोसहस्रअश्वमेधयज्ञ और वेदके अनुसार कर्मकिये सब निष्फलहैं स्कंदपुराणमें कहाहै जहां भगवत्काभक्त रहताहै तहां ब्रह्मा विष्णु महेश और सबसिद्ध निवास करते हैं भगवद्गीता में कहाहै कि केवल भक्तिसे जाना जाताहै जैसामैंहूं फिर उसीमें लिखाहै अनन्य भक्तिसे प्राप्त होताहै फिर लिखा है अर्जुन ने

भगवत्से पूछा किज्ञान और भक्तिइनमें अधिक कौनहै भगवत्ने आज्ञाकी कि मेरेभक्त योग्यतमहैं नाम सबसे अति अधिकहै यद्यपि ज्ञानसेभीमेरी प्राप्तिहै परंतु उसमेंक्लेश अधिकहै इसी प्रकारके हजारों श्लोक पुराणोंके और वेदकी श्रुतिहैं बिस्तारके भयसे नहीं लिखा फिरि जबकि शास्त्रोंका और वेदोंका प्रत्यक्ष यह अर्थहै किभगवत्के प्राप्तहोनेके निमित्त व अन्य फलके हेतु एक भगवत्भक्तिही समर्थहै तोबड़ीदुर्भाग्यताहै किऐसीभक्ति को त्याग करिकै इधर उधर दौड़ता फिरै॥

भगवद्भक्तिका स्वरूप कि भक्ति किसकोकहतेहैं॥

अब यहबर्णन उचितहुआ कि जिसभक्तिकी यह महिमाहै सो क्या बस्तुहै और क्याउसकावृत्तान्तहै सोईवर्णनहोताहै कि वेद और सूत्रोंके सिद्धांतकेअनुसार यहबात स्थिर व दृढ़हुईहै कि भगवत्में परमअनुराग काहोना यहीभक्तिहै सो शाण्डिल्यऋषीश्वरने अपनेसूत्रमेंलिखाहै और सूत्रउसकोकहतेहैं कि कईजगहकेवेदकी आज्ञाको ऋषीश्वरोंने संग्रह करिके थोड़े अक्षरोंमें एकजगहरचिदिया (सापरानुरक्ती ईश्वरे) यही सूत्रहै अर्थइसका यहकि ईश्वरमें दृढ़स्नेहहोनाभक्तिहै और विशेषस्पष्ट बर्णन इससूत्रका प्रेमनिष्ठामेंहोगा इससूत्रमें यहशंकाप्रकटहुई कि गीता जीमें भगवत्ने भक्तिउसकोकहा कि जोअनन्यभजन और ध्यानकरतेहैं दूसरीजगहसेवाको भक्तिवर्णनकिया तीसरीजगह लिखाहै कि मन और प्राणकालगाना औ भगवत्हीको समझना वो भगवत्हीका वर्णनकरना उसकानामभक्तिहै और रामानुज और माध्व और निम्बार्क और बिष्णु-स्वामीइत्यादि आचार्य्योंने यहनिर्णय व निश्चय किया है कि दिन रात निश्चल जिसप्रकारगङ्गाकाप्रवाह अनुक्षणप्रवर्तहै और एकजगहभगवत् वाक्यहै कि जो कोई जिसप्रकारके भावकरिके मेरे शरणा होते हैं उसी प्रकार उनकोमिलताहै और एकजगह भगवत्केप्रसन्नताको भक्तिलिखा है और विष्णुपुराणमेंलिखाहै मन वच कर्मसे भगवत्सेवानाहै उसीका नामभक्तिहै नन्दशास्त्र कायमतहै कि भक्तिके तीनअक्षरहैं प्रथमअक्षर(भ) यह अक्षर भवजोसंसार तिसके दुःख को दूरकरताहै दूसरा अक्षर (क्) कल्याणकरताहै तीसराअक्षर (ती) तीव्रज्ञानकोदेताहै इसीहेतु भक्तिनाम

भक्तिकहतेहैं और एकजगहलिखाहै कि भगवत् को स्वामी और अपने को दास भृत्य जानना इसीकानाम भक्तिहै भगवत्का वचनहै कि भक्तों के अनेक भांतिके भावकेहेतु भक्ति अनेक भांतिकीहै सो भावहीको भक्ति जानना चाहिये विष्णुपुराण में लिखाहै कि शास्त्रकी आज्ञाके अनुसार कर्मकरना और जोकर्म त्यागनेयोग्यहैं तिनकाछोड़देना वो भगवत्आज्ञा के बन्धनमें रहना इसकानाम भक्तिहै कि उसीके कारण से भगवत् की कृपाहोगी और साहित्यशास्त्र कि जिस शास्त्र में स्नेह व काव्य व रस इत्यादि कोवर्णनकियाहै उसमेंलिखाहै कि सात्विकभावसे जो ज्ञानशुद्ध होय तिसको भक्ति कहतेहैं अर्थात् इनसब वचनोंसे भक्तिस्वरूपके निर्णयमें बहुत विरोध पाया गया सिद्धांत एकबात क्याहै तहां कहतेहैं कि सिद्धांत उसी अनुराग तात्पर्य भगवत्में दृढ़ स्नेह होने को भक्ति कहतेहैं यह सब विरोध ऊपर कहनेमात्रकोहै बिचार करनेमें उन सबका परिणाम भगवत् की प्रीति है जिस रीति भांति से मनका रोकना भगवत् में लगाना शास्त्रों में लिखाहै अथवा जिसभांति भांतिकीरीति से भक्तलोग भगवत्कोप्राप्तहुये उसको भक्तिलिखा इसहेतुसेविरोध दिखलाई देनेलगे नहींतो वास्तवकरिकै कुछ विरोध नहीं और विशेष निर्णय उस अनुराग का यहहै कि जिसउपासकके संपूर्ण अन्तर बहितकी वृत्ति मित्र शत्रु सुख दुःखसे अलग होकर वेद व स्मृति व पुराण व नारद पञ्चरात्र इत्यादि शास्त्रोंकी आज्ञाके अनुसार श्रवण कीर्तन पूजादिकमें बिना चाहना कोई वस्तुके लगीहुई ऐसे उपासककी वृत्ती शास्त्र व नरकादिक के भयको छोड़ कर व स्वर्गादिक के सम्पूर्ण सुखभोगसे उदासीन होकर सम्पूर्णब्रह्मांडों की शोभा व सुन्दरताका सार जो भगवत्का रूप तिसमें स्वभाव करिकै आपसे आप अखण्ड निश्चल अनुक्षण लगीरहै इसका नाम भक्ति है सो दो प्रकारकी है एक विहित दूसरी अविहित सो विहित उसको कहतेहैं कि जिस प्रकार शास्त्रमें रीति वे आज्ञाहै उसीके अनुसार होय सो विहित है सो चारप्रकारकीहै एक काम अर्थात् चाहनासे जैसे गोपिका व ध्रुव इत्यादिकी दूसरी द्वेष अर्थात् शत्रुतासे जैसेरावण शिशुपालादिककी तीसरी भय अर्थात् डरसे जैसेकंस व मारीचादिकी चौथी स्नेह अर्थात् केवल प्रीति जैसे नारद व सनकादिक इत्यादिकी सो इन चारों प्रकारमेंसे दो

प्रकार की एक शत्रुता एक भयसे उपासनाकी रीतिसे त्याज्यहै और दूसरी अविहित उसको कहतेहैं कि जो स्वभाव करिकै आपसे आप बुद्धिके विचारसे विना शास्त्रकी आज्ञाकी भगवत् में प्रीतिहो और यहगति फल रूप अन्तकाहै यद्यपि इसमें भिन्न भिन्न करिकै वर्णन करनेका प्रयोजन नहीं तथापि कोई कोई इसमें दो भेद वर्णन करतेहैं एक ज्ञानांगा जो ज्ञानको उत्पन्न करके मुक्ति देतीहै दूसरी स्वतंत्राजोकि आप मुक्तिदेतीहै ज्ञान उसका एक अंगहै इसमें भगवद्गीताका वचनहै कि मेरे भक्त मेरी मायाको तरतेहैं फिर द्वितीयवार वर्णनकिया कि मेरे भक्त मुझको प्राप्त होतेहैं तृतीयवार गीताजीके अंतमें कहा कि जो संसार से छूटाचाहै तो केवलमेराहीसेवनकरे सोइसमें वेदश्रुति और सब स्मृति व पुराण इत्यादिक इस बातमें युक्तहैं फिर उसी भक्तिके तीन प्रकारहैं उत्तम मध्यम प्राकृत सोप्रथमपदवी कानाम उत्तमहै उसका स्वरूप यहहै कि जो भगवत्को सब जगह व्यापक और वर्तमान देखताहै औरसबकोभगवत् मय जानताहै जल व तरंगकेसदृश सो उत्तमहै और जिसकी भगवत्मेंप्रीति है परंतु भगवत्भक्ति को अपना मित्र जानता है और प्राकृत भक्तों पर दया व अनुग्रह करताहै और द्वेषीजनोंसे अनमिल रहताहै सो मध्यम है और जो भगवत् और भगवत् अर्चा मूर्तिइत्यादिको ईश्वर जानताहै और भगवत्भक्तों में प्रीतिनहीं सो प्राकृतहै फिर वहीभक्ति सात्विक राजस तामसके विवरणसे भागवतके वचनके प्रमाणसे तीनप्रकार की है किन्तु जो निष्कामहै सो सात्विकहै जैसे प्रह्लादआदिक और जो किसीप्रकारकी कामनायुक्तहै सो राजसहै जैसे ध्रुव व गज इत्यादिक और जो शत्रुकेविजयकेहेतु करतेहैं सो तामस जैसे इन्द्रादिक कि वृत्रासुरके वधके निमित्त भगवत्का आराधनकरावो फिर इसभक्तिके तीनप्रकार और भी भागवतमें लिखेहैं एकमानस जो मनसेहोय दूसरा वाचक जो बोलनेसेहोय तीसरा कायिक जो शरीरसेहोय फिर वहीं गीताजीमें चार प्रकारकी लिखीहै एकआर्त जो किसीदुःखके कारणसे भगवत् आराधन होय जैसेद्रौपदी व गज आदिक दूसरा जिज्ञासु मुक्तिकीचाह रखनेवाले

लिखतेहैं एकवह जोआपकरै दूसरावहकि औरलोगोंसे समझायके करावे तीसरे वह कि और लोगों को भक्तिकरते हुये देखकर प्रसन्नहोय फिर उसीभक्तिके नवप्रकार भागवत्में लिखेहैं श्रवण १ कीर्त्तन २ स्मरण ३ सेवा ४ अर्चा ५ वन्दन ६ दास्य ७ सख्य ८ आत्मनिवेदन ९ व इन नवप्रकारमें से कई एक इसभक्तमालमें निष्ठानाम धरके लिखाहै फिर वहीभक्ति भूमिकाके निश्चयसे ग्यारहप्रकारकी है प्रथमभूमिका सत्संग दूसरी भक्तोंकीदया व प्रसन्नताके योग्यहोजाना तीसरी भक्तोंके आचरण जो शांत व दया इत्यादिहैं सो उसमेंश्रद्धा व विश्वासकरना चौथी भगवत्चरित्रोंको श्रवणकरना पांचवीं श्रवणकिया जो भगवत्स्वरूप तिसमें प्रेमकी उत्पत्तिहोना छठवीं यह कि भगवत्केस्वरूप और अपनेस्वरूपको यथार्थजानलेना जैसाहै व इस अवस्थाको अद्वैतवादी ज्ञानकहतेहैं सातवीं उसभगवत्के स्वरूपमें प्रेम अधिकहोना आठवीं उसभगवत्का प्रकाश दिन दिन हृदयमेंहोना नवींदया और सब ओरसे निर्मल इत्यादि जो भगवत्मेंधर्महैं उनधर्मोंकाआना प्रारम्भहोना दशवीं ईश्वरता और दयालुता और सर्वज्ञता इत्यादि ईश्वरके धर्मसेपूर्ण इसपुरुषमें आजाना ग्यारहवीं यहकि इसपुरुषको जितनीप्रीतिअपनेशरीरमेंहै तैसीहीप्रीति भगवत्में निश्चल कि कोईक्षण उसश्यामसुंदर रूप चितवनसे चलैनहीं है जानो फिरवही भक्तिदान इत्यादिके विभाग से क्रम क्रम अधिकहोती हुई तीसप्रकारकी है सो यह सबभेदभक्तिमें केवल इसहेतुहै कि जिस जिस भांतिसे भक्तोंकेमनलगे वह एकप्रकारकी होगई जैसे भगवत् से उद्धवनेपूछा कि हे महाराज तत्वको कोईचौबीस कोईसत्तरह कोई सोलह कोई तीन कोईपांच कोईआठ कोईसात कहतेहैं सो विरोधका हेतुक्या है भगवत्नेकहा कि वास्तवमें कुछविरोधनहीं कारण यहबातहै जिसने एकतत्वको दूसरेतत्वमें मिलासमझा तो उसकी गणनामें तो कम और जिसकिसीने अलगसमझा उसकीगणनामें अधिकहै जैसे जिसकिसीने ईश्वर औरमाया और जीवको अलगजाना उसगणनामें तीनहैं औरजिसने मायाको भगवत् की इच्छाजाना उसकी गिनतीमेंदोहैं और जिस किसीने तीनोंतत्व परमहित् तत्व व अहंकार व पंचमहाभूत को अधिक किया तिसकी गिनतीमें दसहैं इसीप्रकार छत्तीसतक संयोग पहुंचो है

कारणमूल एकभगवत्है दूसरा दृष्टांत औरहै कि किसीने वरगदकेवृक्ष को देखकर कहाकि दोशाखावालाहै किसीने चारशाखाकादेखाथा उसने चारशाखावाला बतलाया वास्तवकरके वह बरगद एकहै इसीप्रकारयह भक्ति एकहै भक्तोंकेमनकी लगनके अनुसारकई प्रकारकी दिखाईपरती है और तात्पर्य सबकायहहै किकोईहो किसीप्रकारसेकोईलाभकेनिमित्त किसी विधानसेकरो परंतु अनुरागकाहोना अतिही प्रयोजन है जबतक वहप्रीति सिद्धपदको नहींपहुंचती तबतक साधनरूपहै औरजब स्थायी भावको पहुंचगई वहीफलरूपहै औरवहदृढ़भाव जोकिसीऔर पदार्थका साधननहो जीवन्मुक्त उसीकोकहतेहैं और मुक्तिकास्पष्टवर्णनग्रंथकेअन्त में होगा॥

भगवत्भक्तों की महिमा॥

अब उन भगवत्भक्तोंको कि उसभक्ति के जो ऊपरकही हैं तिसके अभ्यास व साधना करनेवालेहुये और आगेहोंगे और अब हैं भगवत् रूप जानकर दण्डवत् करता हूं यद्यपि साधुसेवा निष्ठा में कुछ वर्णन उनकाहोगा तथापि यहांभी इसपोथीके मंगलाचरणकेहेतु उनका प्रताप थोड़ासा लिखताहूं भागवतमेंलिखाहै कि जिनके स्मरणकरनेसे लोग अपने परिवार सहित पवित्रहोजाते हैं उनके दर्शन और स्पर्श व सेवा करनेका क्याहीकहना है फिर भागवतके एकादशस्कन्धमें लिखाहै कि संसारसमुद्रमें जो डूबते उछलतेहैं तिनको भगवत्भक्ति नौकाके सदृशहै फिर भागवतमें भगवत्ने आपकहाहै कि मैं भक्तोंकेआधीनहूं औरभक्त आपस्वतंत्रहैं पद्मपुराणमें भगवत्का वचनहै कि जो मेरेभक्तों के भक्तहैं सो मेरेहीभक्त हैं गोसाईं तुलसीदासजी ने जो यह चौपाई लिखी है कि (बिधिहरिहरकबिकोबिदबानी। कहतसाधुमहिमासकुचानी) उसकेअर्थ बहुतप्रकारके हैं तिसमेंसे एकयहभीहै कि मनुष्यको भक्तोंके सत्संगसे ब्रह्मा विष्णु महेशकी पदवी प्राप्तहोतीहै इसहेतु उनकीवाणी सकुचती है किहम और हमारे स्वामी भगवत्भक्तों के सेवकहुयेहैं हम उनकी क्या महिमा वर्णनकरें उनकेप्रताप वर्णन सुननेसे चमत्कारहोजाताहै तो जिसकिसीको आपदा आईहै सो भगवत्भक्तोंके सत्संगसेहुई एक समय विश्वामित्र और पर्वतऋषीश्वर से वादहुआ विश्वामित्रजी तप को बड़ाकहतेथे और पर्वतऋषीश्वर सत्संगको बड़ाकहते थे पंचजनोंने

इसविवादिके तोड़नेके समयकहा कि एकमुहूर्त्त तुमदोनोंमेंसे कोईधरती को अपने शिरपर रखलेव विश्वामित्रजीने कईलाखवर्षका वरु अपने जन्मभरके तपकाफललगाया धरती न ठहरी पर्वतऋषीश्वरने एकमुहूर्त्त के सत्संगकाफल लगादिया कि धरतीठहरिगई और इसीसेन्यायहोगया (सत्संगतिमुदमंगलमूला । सोइफलसिद्धसबसाधनफूला) अर्थइसका यहहै कि सत्संगआनंद व सुखकामूल अर्थात्जड़है और वहीसिद्धफल है और सब साधनफूलहैं अब मनमें विचारकरना चाहिये कि भगवत् भक्तोंको कितनी बड़ाईहोगी कि जिनके सत्संगकी यह महिमाहै और ध्यानकरके देखनाचाहिये कि भगवत्को सबकोई देहधारी अपनास्वामी जानकर पूजन करतेहैं और भक्तकैसेहैं कि वहीभगवत् उनकेमें होकर आप उनकी सेवाकरताहै और एकदूसरा प्रसंगहै कि एककविनेचाहा कि जो सबसेबड़ाहो उसकामहत्व वर्णनकरूं धरतीको सबसेबड़ाजाना उससेबड़ा शेषजीको और शेषजीसेबड़ा शिवजीको और शिवजीसेबड़ा ब्रह्माजीको और ब्रह्मासेबड़ा भगवत्को फिर जब अच्छीप्रकारशोचा तब भगवत्से अधिक भगवत्भक्तकोजाना कि जिन्होंने भगवत्कोभीबलसे अपने वशकरलियाहै और अपने हृदयसे बाहरनहीं जानेदेते तात्पर्य्य यह कि भगवत्भक्तोंकी जो कुछपदवी व बड़ाईहै सो लिखने व वर्णन करनेके अभ्याससे बाहरहै और उनमें और भगवत्में कुछभिन्नतानहीं ॥

देवनागरी में भाषांतर होने का कारण ॥

अब यहपोथी भक्तमाल कल्पद्रुम जिसप्रकार देवनागरीमें भाषांतर हुई सो लिखाजाताहै इसका वृत्तान्त यहहै कि प्रथम मेरेचित्तको यह चाहहुई कि भक्तिमार्ग के सिद्धान्त के बचन भागवत व गीता व नारद पंचरात्र व गोपालतापिनी इत्यादिग्रन्थोंका संग्रहकरिकै पोथीबनावें सो बहुत से श्लोक भागवत इत्यादि के व भक्तिके पाँचोंरसों की सामग्री अर्थात्विभाव व अनुभाव व सात्विक व व्यभिचारी व स्थायीभाव इत्या-दिके संग्रहकरिके एकत्रकिये व इसपरिश्रममें प्रवर्तरहे तबतक सँव्वत् उन्नीससौसत्रह १९१७ श्रावण के शुक्लपक्ष में पड़रौना ग्राम में जो श्यामधाममें मुख्यभगवत् धामहै तहां श्रीराधाराजवल्लभलालजी ठाकुर हिंडोला झूलरहे थे उसीसमय उमेदभारती नामे सन्यासी रहने वाले

ज्वालामुखी के जो कोटकांगड़े के पास है भक्तमाल प्रदीपननाम पोथी जो पंजाबदेश में अम्बालेशहर के रहनेवाले लाला तुलसीराम ने जो पारसीमें तर्ज़ुमा करिकै भक्तमाल प्रदीपननाम ख्यातकियाहै तिसको लियेहुयेआये उनके सत्कार व प्रेमभावसे पोथीहम ईश्वरीप्रतापरायको मिली जबसब अवलोकन करिगये तोऐसाहर्ष व आनन्दचित्तको प्राप्त हुआ कि वर्णन नहींहोसक्ता साक्षात् भगवत् प्रेमखाकरके मनोवांछित पदार्थको प्राप्तकरदिया व लालातुलसीरामके प्रेम व परिश्रमकीबड़ाई सहस्रोंमुखसे नहींहोसक्ती कुछकालउसके श्रवण व अवलोकनका सुख लिया तब मनमें यह अभिलाषाहुई कि इसपोथीको देवनागरीमें भाषांतर अर्थात् तर्ज़ुमाकरें कि जो पारसी नहींपढ़ेहैं उनसब भगवत् भक्तों को आनन्ददायक होय सो थोड़ा थोड़ा लिखते लिखते तीसरे वर्ष सँव्वत उन्नीससौतेईस १९२३ अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा को श्रीगुरू स्वामी व भगवत् भक्तोंकी कृपासे यह भक्तमाल नाम ग्रन्थ सम्पूर्ण व समाप्तहुआ व चौबीसनिष्ठा में सत्रहनिष्ठातक तो ज्योंकात्यों क्रमपूर्वक लिखागया परंतु अठारहवींनिष्ठा से भक्तिरसके तारतम्यसे क्रमनलगा कर इसग्रन्थ में लिखाहै कोई पारसीवाले ग्रन्थ पढ़नेवाले हमारी भूल चूकन समझें हमनेंविचारसे यहक्रम इसप्रकारसे लगायाहै कि प्रथमधर्म निष्ठा जिसमें सात उपासकोंका वर्णन और दूसरी भागवत धर्मप्रचारक निष्ठा तिसमें बीसभक्तोंका वर्णन तीसरीसाधुसेवानिष्ठा व सत्संगतिसमें पन्द्रह भक्तोंकी कथा छठईं भेषनिष्ठा तिसमें आठभक्तों की कथा सातईं गुरूनिष्ठा तिसमें ग्यारहभक्तोंकीकथा आठईंप्रतिमाव अर्चानिष्ठातिसमें पन्द्रहभक्तों की कथा नवईंलीला अनुकरण जैसे रासलीला रामलीला इत्यादि तिसमें छवोंभक्तोंकीकथा दसवींदया व अहिंसातिसमें छवोंभक्तों की कथा ग्यारहवीं व्रतनिष्ठा तिसमें दो भक्तोंकी कथा बारहवीं प्रसाद निष्ठा तिसमें चारभक्तोंकी कथा तेरहवीं धामनिष्ठा तिसमें आठभक्तों की कथा चौदहवींनामनिष्ठा तिसमें पांचभक्तोंकीकथा पन्द्रहवींज्ञान व ध्यान निष्ठा तिसमें बारहभक्तोंकी कथा सोलहवीं वैराग्य व शांतनिष्ठा तिसमें चौदह भक्तोंकीकथा सत्रहवींसेवानिष्ठा तिसमें दसभक्तोंकीकथा अठार- हवीं दासनिष्ठा तिसमें सोलह भक्तोंकी कथा उन्नीसवीं वात्सल्य निष्ठा

तिसमें नवभक्तोंकीकथा बीसवीं सौलभ्यनिष्ठा तिसमें छवो भक्तोंकीकथा इक्कीसवींशरणागती व आत्मनिवेदननिष्ठा तिसमें छ्वभक्तोंकीकथा बाईसवींसख्यभावनिष्ठा तिसमें पांचभक्तोंकी कथा तेईसवींश्रृंगार व माधुर्य निष्ठा तिसमेंबीसभक्तोंकीकथाचौबीसवींप्रेमनिष्ठा तिसमें सोलहभक्तोंकी कथाकावर्णनलिखागया अब भगवत्भक्तोंसेमेरीयहप्रार्थनाहै कियह भक्तमालनामग्रन्थ परमानन्दका देनेवाला पढ़ने व सुननेपर तुम्हारे विचार में सत्यकरिकै यहमेरा परिश्रम तुम्हारे प्रसन्नताके योग्य होयतो इस अपने किंकरको यह प्रसन्नता दानदेव किजोग्रन्थके मङ्गलाचरणमें ध्यान लिखआयाहूं सोसदा अनुक्षण निश्चल मेरे हृदय में बसाएहै कदाचित् इसमें कोई दोबातकी शंका व प्रश्नकरै एकयहकि जो चरित्र तुमनेवर्णन कियाहै सो सबचरित्र भगवत् व भगवत्भक्तों के किये हुयेहैं सो सब प्रसिद्धहैं नईकोई नहींहै व दूसरी यह कि पारसी में जो ग्रन्थहै तिसको तुमने देवनागरीमें भाषांतर अर्थात् तर्जुमा करदियाहै तो इनदोनोंबातोंमें तुम्हारीकौन नवीनउक्ति व विशेषपरिश्रम सूचित है कि जिसकरिकै तुमको भगवत्भक्त लोग प्रसन्नतादान अर्थात् इनआमदेवें सो पहिलेप्रश्नका उत्तरतो यहहै कि जैसेराजा लोगोंके कियेहुये चरित्रोंको गायक व दसौंधी व कवि लोग गद्य पद्य व छंदप्रबन्ध में बांधकर उसीराजा को सुनाते हैं व मालाकारलोग राजाही की पुष्प वाटिका के फलोंके स्तबक व हार आदि आभूषण रचिकर उसी राजाके आगे धरतेहैं तो यद्यपि उनकेही कियेहुये चरित्र व उनकेही फुलवारी के फलहैं तथापि रचना पर प्रसन्न होकर वह राजाइनआम देताहै इसीप्रकार यद्यपि उनहीं के चरित्रहैं परन्तु मैं रचिके आगेनिवेदन करताहूं तो क्यानहीं वांछितरूप अनूपका चिंतवनरूप धनप्रसन्नदान मैं पाऊंगा और दूसरेप्रश्नका उत्तर यहहै कि जिसप्रकार कोई ऊंचे आम्रादि के वृक्ष पर अतिमीठेमीठे फल पके पके लटकि रहेहैं और किसीप्रकार हाथनहींआते और उसकेस्वाद लेनेकोजी तरसरहाहै और जो किसीने बड़ेश्रम से वृक्षपर चढ़कर उन फलोंको लाकर आगेधरदिया तो यद्यपि वहवृक्ष व फल उसका लगाया व बनाया नहींहै परंतु निश्चयकरिकै उसफलके स्वादप्राप्तहोनेपर उस पुरुषके परिश्रमपर प्रसन्नताहोतीहै तिसीप्रकार यद्यपि यहग्रन्थ पारसी

में रचना ओर का कियाहै मैंने केवल देवनागरीमें भाषांतरकरदियाहै तौभी इसके स्वादको लेकर भगवत्भक्त लोग क्यों न प्रसन्नहोकर मेरे वांछितको पूर्णकरेंगे कदाचित् कोई यहकहै कि जो भगवत्भक्त पारसी नहींपढ़ेहैं सोईप्रसन्नहोंगे व जो पढ़ेहैं सोनहीं सोयह बात कदापिनहीं वरुपारसी पढ़नेवाले भगवत्भक्त दो बातों से अधिक प्रसन्नहोंगे एक तोपारसीके पदोंकेअर्थ व भाषाभाषामें यथार्थवूझकरिके दूसरे परोपकार परदृष्टि करिके सोसवप्रकारसे दृढ़विश्वास है किमेरे वांछितको भगवत् भक्तलोग प्रसन्नहोकर निश्चय कृपाकरेंगे॥

मुख्यकर्ताभक्तमालऔरभाषान्तरकर्ताओंका नामवर्णन॥

नारायणदासनाम प्रसिद्ध नाभाजी मुख्यकर्ता भक्तमाल के हुये हनुमान् वंशमें उनकाजन्महुआ वृत्तान्त यह है किदक्षिणमें तैलंगदेशगोदावरीके समीप उत्तर में रामभद्राचल एकपहाड़ है श्रीरामचन्द्रजीने वनवासके समय कुछदिन उसपर निवासकिया तहाँरामदास नामब्राह्मण महाराष्ट्र हनुमान्जीके अंश अवतारहुये रामचन्द्रजीकी उपासनामें बहुत लोगोंको प्रासकिया बड़ेपण्डितथे उनकेपरिवार हनुमान् अवतारहोनेसे हनुमान्वंश करिकै प्रसिद्धहैंगानविद्याके अधिकारीहैं राजालोगोंके यहां नौकरी गानेपर करतेहैं नाभाजी जन्मसेसूरथे पिताके मरनेपर अकाल का समयथा कि उनकी माताने जंगलमें छोड़दिया कील्हदास व अग्रदासजीने देखा उनके नेत्रोंपर जलका छींटादिया नेत्र खुलगये वृत्तान्त पूछकर गलताजी में लेआये चेलाकरिके नारायणदास नामरक्खा सन्तसाधुओंकी प्रसादी खातेखाते दिव्यज्ञान होगया अग्रदासजीके मानसी पूजाके समय जो साहूकारके जहाज अटकनेकी दुचिताई मनमें उत्पन्न हुई सो बतलायदिया कि महाराज जहाजनिकलगया सेवामें सावधान हूजिये तबप्रसन्न होकर आज्ञादी कि जिनभक्तोंकी प्रसादीसे यहज्ञान तुमकोहुआ तिनका यशवर्णनकरो तबछप्पय छन्दमें नाभाजीने भक्तमाल बनाया यहमाला भक्तजन मणिगणसे भराहै जिसने हृदय में धारण कियातिसने भगवान्को पहिंचाना ऐसीयहमालाहै औप्रियादासजी माध्वसम्प्रदायके वैष्णव श्रीवृन्दावनमें रहतेथे उन्होंनेकवित्तमें इसभक्तमालकी टीकाबनाई तिसकेपश्चात् लाला शालग्रामसिंहने सन् १९५८ हिजरीमें

पारसीमें प्रियादासजीकेपोते वैष्णवदासके मतसेतर्जुमाकिया व तर्जुमेका नाम भक्तउरबसीधरा यह रहनेवाले कांधलेकेथे लछमनदास नामथा मथुराकी चकलेदारीमें सत्संग प्राप्तहुआ हितहरिवंशजीकी गद्दीकेसेवक हुये लालजीदास नाममिला राधावल्लभ लालजीके उपासकहुये दूसरा तरजुमा एकऔरकिसीने कियाहै नामयाद नहींहै तीसरातर्जुमा लाला गुमानीलाल कायस्थ रहनेवाले रुथकके संवत् १६०८ में समाप्तकिया चौथातर्जुमा लालातुलसीराम रामोपासक लालारामप्रसादकेपुत्र अगर वाले रहनेवाले मीरापुरअम्बालेके इलाकेकेकलक्टरीके सरिश्तेदारउस मूल भक्तमाल औरटीकाको संवत्१६१३में वहुतप्रेम व परिश्रम करिके शास्त्रके सिद्धांतके अनुसार वहुतविशेषवाक्यों सहित अतिललितपारसी में उर्दूवाणी लियेहुये तर्जुमाकरके चौवीसनिष्ठामें रचिकेसमाप्तकिया॥

भक्तमालकी महिमावर्णन॥

महिमा व वड़ाई श्रीभक्तमालकी कोईवर्णन नहींकरसक्ता अपारहै औरइसलोक व परलोककी कामना पूर्णकरनेको जैसेकल्पवृक्ष व काम धेनुहै जोकोई सर्वदा पढ़तेहैं निश्चय करिके तिसको भगवत्भक्ति प्राप्त होतीहै जोकोई संसारी कामनाके सिद्धहोने के निमित्त पढ़तेहैं तोवहभी वहुत शीघ्र सिद्ध हो जातीहै वहुतलोगों को परीक्षा मिली है जितना तीर्थोंके स्नान दानादिकसे पुण्य होताहै उससे दशगुणा अधिक इस भक्तमाल के पढ़ने से मिलताहै संसार में तीन प्रकार के मनुष्य हैं एक विमुक्त दूसरे साधक तीसरे विषयी सो बिमुक्त व साधककोतो यहपोथी प्राणसेभी अधिक प्यारीहै कि उनका अभिप्राय अच्छीभांति से निकलताहै और विषयीको इसनिमित्त लाभदेनेवाली है कि संसारीकामना इसके पढ़ने से प्राप्तहोती है और भगवत् की ओर मन लगजावे तो आश्चर्य नहीं व इसके सिवाय यहकि अद्भुत अद्भुत वार्त्ता व व्योराखोल करमर्यादा प्रेम औ वियोग ऐसेयोग व रस औ शृंगार के लिखे हुयेहैं यद्यपि वह सब सम्बन्ध कियेगये भगवत्के प्रेमके हैं तथापि रीति प्रेम वास्तवी औ मनमुखीको एकही भाँतिकीहै इस हेतु वे लोग उन मर्यादाओं को मनमुखी प्रेमक सम्बन्धी समझकर प्रेमकी रीति व मर्यादसे ज्ञानयुक्त होंगे और सुख आनंद पावेंगे तात्पर्य यहीहै कि तीनोंभांतिके

लोगोंको लाभ व प्रसन्नतादेने वालाहै औरक्योंन ऐसाहोय कि भगवत् को अपने भक्तोंके सदृश प्याराहै कि आप सुनतेहैं एक वैष्णव गुरुधन दासनामे ब्रजमण्डलमें कामाका रहनेवाला नगर जयपुरमें गया श्री गोविन्ददेवजीके मंदिरके पुजारीने कि नाम उनका राधारमणथा उस वैष्णवसे भक्तमालकी कथाका श्रवण प्रारम्भ किया कथा समाप्त नहीं हुईथी कि वैष्णव सांम्हरके दिशा चलेगये जब फिरआये तब पूंछा कि कथा कहांतक होचुकीथी कोई न बतलासका और श्रीगोविन्दजीने बतलाया कि फलाने भक्ततक कथा होचुकीथी इससे निश्चय होगया कि भगवत् आप इस भक्तमालको सुनते हैं दूसरा यह वृत्तांतहै कि प्रियादासजी कि जिसने मूल भक्तमालकी टीकाको कियाहै सो होडलगांवमें ब्रजसे बीसकोसहै तहां गये और लालदास महन्त ठाकुरद्वारे में कथा सुनाई संयोगवश मंदिरमें चोरी होगई और मूर्खों ने कारण चोरीहोने का कथाको समझा परन्तु महन्तजीको कुछ दुचिताई न हुई औरस्वामी प्रियादासजीके कथा कहनेको कहा स्वामीजी बोले कि श्रोता इसकथा के आप भगवत्हैं जबतक सिंहासन भगवत्का फिरन आवैगा तबतक कथा बंद रही और सबलोग ठाकुरद्वारके ठाकुरजीके वियोगसे उसदिन वे अन्न जल रहे जब रात्रिहुई तो भगवत्ने उन चोरोंको ऐसा भयदिया कि प्रातही सिंहासन भगवत् का शिरपर रखकर सब सामग्री सहित महन्तजीकी सेवामें प्रकटहुये सबको श्रीभक्तमालपर विश्वासहुआ और मूर्खलोगोंके मुहँमें धूलपड़ी और कथा प्रारम्भहुई यहबात कुछ अघट नहींहै काहेसे कि आप अपने भक्तोंकी सहायकेहेतु निज धामको छोड़ कर चले आतेहैं और अनेकप्रकारके अवतार धारण करतेहैं जो कथा उनकी सुनीतो क्या अनुचितहै अब दो एक बात यह लिखी जातीहैकि जिनके मनोर्थ केवल पोथीके विश्वाससे प्राप्तहुये सुमेरुदेव ब्राह्मण नर्मदाके किनारे कोड़बनेके रहनेवालेने गलताजीमें अति प्रेमसे भक्तमाल की कथा सुनी और पोथी को प्रतिएक लिखाय लेकर घरको चले राह में ठगोंने मारा व उनकी पोथी सब वस्तु सहितलेगये और वह पोथी जहां रहतीहै मनकीमैलको दूर करदेतीहै इसहेतु चोरों को अपने पाप कर्मका पश्चात्तापहुआ और श्रीभक्तमालने स्वप्नमें भयंकर स्वरूपमें द-

र्शन देकर यह आज्ञाकी कि सुमेरुदेव के शरीर को उसके घर पहुंचा दे और पोथी उसके शीशपर रखदे कि वह जीजायगा उन्होंने उसीभांति किया और तुरन्त सुमेरुदेव जी गया मानो सोतेसे उठबैठा यह चरित्र को देखकर सबको अचम्भा हुआ और भक्तमाल में विश्वास होगया व भगवत्शरण होगये और वैष्णव होकर कृतार्थ होगये इसी प्रकारएक बणिकने इस कथाको श्रीप्रियादासजीसेसुना और विश्वासकरके पोथी की नक़ल लेगया कुछकालपीछे उसकी मृत्यु आनपहुंची तब यमदूतोंके डरसे अपने लड़कोंसे कहा कि पोथी हमारी छातीपर रखदेव जबतक पोथीआवै तबतक उसकाप्राण निकलगया घरके सबने मरेपरपोथी उसके शिरपर रखदी उस प्रतापसे यमदूततो भागगये और बणिकउठ बैठा कहनेलगा कि यमदूततो यमलोकको लिये जातेथे भगवत्भक्तोंने छोड़ाया अबमैं वैकुण्ठको जाताहूं और उपदेश किये जाताहूं कि जोकोई मेरे वंशमें हो सो इस पोथीको पढ़ता सुनता रहै और अन्तसमयअपनी छातीपर राखै यह कहकर परमधामको गया और उसके वंशमें अबतक वह परम्परा वर्तमान है व लाला गुमानीलाल भाषान्तरकर्त्ता तीसरा अपना वृत्तान्त लिखतेहैं कि एक पुत्र उनको बड़ी प्रार्थना से प्राप्तहुआ उसको दुःख मृगीका रहताथा एक दिन लाला गुमानीलाल भाषान्तर लिख रहेथे कि रोनेकीध्वनि अपने घरमेंसुनी उठकर भीतरगये देखाकि लड़का ज्ञानचेष्टारहित धर्तीपरपड़ाहै और माता उसकी रोतीहै उसने शोककी पीड़ासे क्रोधभरी बातेंकहीं औरपोथीके ऊपरभी एकबात कठोर मुखसे निकलगई और लालाको बिस्वासदृढ़ इस पोथीपरथा इसहेतु बचन कठोर नहीं सहिसके और कहाकि पोथीको इसलड़केके शिरपर रखकर देखोकि भगवत्भक्तों और इसपोथीका कैसाप्रताप है उसने पोथी जो लड़केके शिरपररक्खी मानोप्राण शरीरमें डालदिये तुरन्त लड़का उठबैठा औरफेर वहदुःख उसको नहुआ प्रयोजन कहनेका यहकि जो कुछमहिमा और प्रताप औरबड़ाई इसपोथीकी लिखीजावै वहलघुसे लघुहै और कदापि आश्चर्यके योग्यनहीं क्योंकिअबइस पोथीकीकृपासे संसारके आवागमनके दुःखदूरहोजातेहैं औरदुःख संसारी क्यावस्तुहैं॥

इतिमंगलाचरणम्॥

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ भक्तमाल ॥

रसकेभेदकावर्णन ॥

मङ्गला चरण समाप्त होगया--परंतु जोचौबीस निष्ठालिखी जायंगी उनका सम्बन्ध रसोंसे है और मूल भक्तमालमें पांचरस भगवत्भक्ति केसंयोगी लिखेहैं परंतु किसीतिलक मूलमें स्वरूप रसों का और जड़ लिखी नहींथी सो निर्णय करके लिखताहूं जानलो जड़ रसोंकी वेदश्रुति है (रसोवैस) यही श्रुतिहै अर्थ इसका यहहै कि ईश्वर परमात्मा स्वरूप और अर्थ रसके यहहैं कि एकाग्र चित्त की वृत्ती जिस आनन्दके स्वादको चखकर सुखमें डूबके बेसुध होजाय तात्पर्य्य यहकि सच्चिदानंद घन परब्रह्म अपने स्वामीको जो स्वरूप ध्यानमें साक्षात्कारहुआ उसमें वहचित्त की वृत्तीदृढ़ होजाय वहरसहै फिर उसी का दूसराअर्थ है कि जो स्वरूप भगवत्का शृंगार अथवा वात्सल्य वो सखा इत्यादि रसोंकी सामग्री से कि वह सामग्री सब अपनी जगहपर लिखी जायँगी भक्तोंके हृदयमें प्रत्यक्षहुआ और उसस्वरूपमें चित्तकीवृत्ती दृढ़होजाय उसको रसकहतेहैं और कोई कोई रसभेदके वर्णन करनेवालोंने जोवह स्वरूप जो हृदयमें साक्षात् कारहुआउसका नाम भावलिखा औरउस भावमें मनकी वृत्ती दृढ़होजाने को रस निश्चयकिया सो वहरस एक और व्यापक पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घनहै उपकरण जोउसके प्रकटहोने के अलग अलगहैं इसहेतु पृथक् पृथक् नामहुये वास्तव में वहरस एक और व्यापकहै जिसप्रकार एक मिट्टीसे बहुत प्रकारके घट अलग अलग नाम और स्वरूप के होतेहैं परन्तु मिट्टी सबमेंएकही और व्यापकहै जैसे पानीमें जैसारंग मिलायाजावै वैसाही दिखलाई देताजाता है परंतु पानीका रंग कोईभाग नहीं इसीभांति यह रस जिस जगह सौन्दर्य्यता और माधुर्य्य और सुकुमारता और वातल्य इत्यादिक के

अनुकरण सहित प्रत्यक्षहुआ उसको शृङ्गार कहतेहैं और जहां शूरता व बल व शस्त्र व उत्साह इत्यादिकके अनुकरण सहित प्रकटहुआ उसको वीररस कहते हैं इसी प्रकार दूसरा अनुकरण वात्सल्य और सख्य-इत्यादिक के पृथक् पृथक् हैं अर्थात् रस एकहै अनुकरण के विरोधके कारणसे अनेक नामहुये अब एकशंकायह प्रकटहुई कि प्रथमतो चित्तकी दृढ़वृत्तिको रसलिखा और फेररसको व्यापक सच्चिदानन्द ईश्वरवर्णन न किया दोनोंमें ठीकक्याहै सो बातयहहै कि रसभगवत्रूप व्यापकहै चित्तकी दृढ़वृत्तिको जो रसलिखा तो हेतुयहहै कि जैसे कहने में आता है कि जीवका आहार जीवन नहींहै सो वास्तव में आहार जीवन नहीं परंतु जीवनका अनुकरण नलीहै इसीप्रकार वहदृढ़वृत्ती अनुकरण दृढ़ रसकाहै और उसीको रस कहाजाताहै रसोंकी संख्यामें आपुसमेंशास्त्रों में विरोधहै शृंगार उपासक कहतेहैं कि आनन्द स्वरूप केवल शृङ्गार से प्राप्तहोताहै दूसरेरसव्यर्थहैं उत्तरयहहै कि जोमूल आनन्दकाशृङ्गार होवे तो व्याघ्र वो मेढ़ा वो गजआदि की लड़ाई देखने और दूसराही ऐसे कार्यों से जीवनका शृङ्गारसे संबन्धनहीं आनन्द होनाचाहिये कोश शास्त्रवाले आठ रसकहतेहैंशांत रसवर्णन नहीं करतेहैं उपनिषद शास्त्र वाले शांतरसको मूल वर्णन करतेहैं व दूसरे रसों को उसकी शाखाव-तलातेहैं साहित्यशास्त्रवाले कि वह शास्त्रप्रेम व काव्य व रसभेदआदिक काहै सो नवरसइसनिवर्णसे कि शृङ्गार हास्य करुणा रौद्र वीरभयानक बीभत्स अद्भुतशांत कहतेहैं व भगवत् उपासक किसीकी हानिनहींक-हते परंतु उपासनाके योग्य संपूर्ण उन नौरसोंमेंसे दो रस एकशृङ्गार दूसरा शांत व तीसरा अधिक उसमें एकसख्य दूसरा दास्य तीसरा वात्सल्य सब लेकर पांचरस अंगीकार करतेहैं यद्यपिसब रसोंकेअव-लम्ब सेभगवत्का चिंतवन होसक्ताहै क्योंकि भगवत् सबरसोंमें व्या-पकहै परंतु उपासना व लानेयोग्य केवल पांचरस अंगीकार करे तो कारण यहहै कि उनपांचों रसोंको भगवत्के शीघ्र और निश्चय प्राप्त होजानेमें विशेषताहै दूसरेरसोंसे ऐसीशीघ्र भगवत्की प्राप्तिनहीं और कोई कोई उननवरसोंमें जैसेभयंकर औरबीभत्स कईएक ऐसेहैं किकोई उपासक उन रसोंके अवलम्बसे उपासना नहींकरता हिरण्यकशिपु और

रावण और कंसइत्यादिकको जोउसरूपसे भगवत्‌ने उद्धार करकेमुक्तिदी इसहेतु रसोंमें उनकोभी गिनतीहुई सिद्धान्त उपासनाके सम्बन्धी पांच रसहैं और इसग्रन्थमें वहपांचोंरसनिष्ठानाम करकेलिखे जावेंगेव दूसरी निष्ठासब उनरसोंके अंगभूतहैं कोईपुरुष किसीभाव और किसी प्रकार और किसीविश्वास और किसीरीतिऔर निष्ठासे भगवत् आराधन करे रसव्यतिरिक्त नहीं अबजोबातें कि संयुक्तसम्बन्धी सबरसोंकीहैं वह तो यहां लिखीजातीहैं और जोनिजरसकी सम्बन्धीहैं सोअपने प्रयोजनके स्थानपरलिखी जावेंगी परंतु अच्छेप्रकार समझनेके हेतुदृष्टांत सब शृ-ङ्गार रसके सम्बन्धके यहां लिखेजावेंगेअब जानना चाहिये किवहरस जिसका ऊपर वर्णनहुआ सोचार सामग्रीसे प्रकट होताहै एकतो विभाव दूसरा अनुभाव तीसरासात्विक चौथाव्यभिचारी अर्थात् प्रिय वल्लभादि रूपविभाव उसकोकहतेहैं जोकारण और मूल उसरसके प्रकटहोनेका होसो उसके दोप्रकारहैं एक आलम्बन विभाव दूसरा उद्दीपन विभाव सो आलम्बन विभाव दोप्रकारकाहै एकआश्रयालम्बन जोरसके रहने का स्थान अथवा रसके उत्पत्तिका स्थान सो वह ध्यानकरनेवाला अ-र्थात् भगवत्भक्त और स्नेहासक्त अर्थात् आश्रितहै दूसरा विषयालंबन अर्थात् मूर्त्तिशृंगार रस कि जिसका ध्यान कियाजावे तात्पर्य्य भगवत् स्वरूप व जिसपर स्नेहहोवे व दूसरा उद्दीपन सो चारप्रकारकाहै प्रथम गुण यह कि सौंदर्य्य व स्वरूपकी लावण्यता व नवयौवन व मनमोहन किशोर अथवा बालकस्वरूप व सुन्दरबोलन व प्रीति इत्यादि दूसराचेष्टा यह कि कांति व झलक व सुकुमारताका गर्व व हावभाव कटाक्ष व सु-कुमारताई इत्यादि तीसरा अलंकार यह कि वस्त्रकी सज व आभूषण व सजावट इत्यादि चौथातटस्थ यह कि अतरपान फूलइत्यादि यहविभाव का वर्णन होचुका दूसरी सामग्री अनुभाव यह कि स्नेह करनेवाला व जिसपर स्नेहहै दोनोंके एकत्रहोनेसे जो बात प्रगटमें आवे और उस कारणसे रहस्य प्रत्यक्षहोवे वहअनुभावहै वह कि परस्परमिलना गल-बाहीं देना और खेलना एकदूसरेपर हँसना हँसीठट्ठा चुम्बन व आ-लिंगन इत्यादि यह अनुभावमें कह रही सामग्री तीसरी व चौथी जो सात्विक व व्यभिचारी उनकावर्णन यहहै आगेलिखेंगे उनदोनोंकी

प्रीति करनेवाले की चंचलदशा समुझ करके बल व्यभिचारी एकनाम लिखा सो उनका निर्मूल कुछ वर्णन नहींहै जैसे भरतरिखीश्वर ने अपनेसूत्रोंमें लिखाहै परन्तु नवीनलोगोंने यहसूक्ष्मता निकाली कि जो एकदशा सबरसों में व्यापकता रखतीहोय उसकानाम सात्विकहै और जो दशाऐसीहै कि एकरसमें तो व्यापकहोतीहै और दूसरेरसमें व्यापक नहींहोती वह व्यभिचारीहै कि दशरूपक इत्यादि रसभेद के शास्त्रमें सात्विक व व्यभिचारी पृथक् २ लिखेहैं सो सात्विक उसको कहतेहैं कि अपनेप्रिय वल्लभको देखकर अथवा उसकीओरसे दुःखसुखके पहुंचनेसे जोमनकीवृत्तीको एकदशाप्राप्तहो और वह दशाआठहैं और जिस प्रकार सामग्री प्रथम व द्वितीय जैसे विभाव और अनुभाव सब रसोंके अलग अलगहैं तिसप्रकार यहसात्विक जो सामग्री तीसरी सबरसोंको भिन्नभिन्न नहीं एकहीभांति व्याप्त सबरसोंमेंहै प्रथमदशाका नामस्तंभ है ज्योंकात्यों रहजाना दूसरी दशा प्रलय नाम मूर्च्छा तीसरी रोमांच अर्थात् शरीरपर रोमखड़ेहोजाने चौथीदशा स्वेदपसीना होजाना पांचईं विवर्ण मुखकारंग और होजाना छठईं कम्पशरीर कांपना सतईं अश्रु आंशूबहना आठईं स्वरभंगशब्द में भेदपड़जाना और यह भी जानरह कि यह आठोंदशा और एकदशा मरण कि वह व्यभिचारी के वर्णनमें लिखीजायगी सो अत्यन्तहर्ष व अत्यन्तशोक अथवा वियोग व संयोग दोनोंअवस्थामें एकहीभांति बराबर होतीहैं और जोमृत्युदशा सबरसों में बराबर व्यापक नहीं होतीहै इसहेतुसे उसको व्यभिचारीकी सम्बन्धनीमें ज्ञातालोगोंने गिनतीकरीहै और सामग्री चौथीव्यभिचारी उसको कहतेहैं कि जो दशा रसके दृढ़होनेके पहिले अथवा पीछे प्रकट होकर फिरजातीरहै सोदशातेंतीसहैं और सबरसोंमें बराबर उनसबकी व्यापकतानहींहै ॥ प्रथम निर्वेद ॥ निर्वेद उसको कहते हैं कि प्यारेका वियोग अथवा दूसरेकेसाथ अपने प्यारेकीप्रीति अथवा कोईबात विपरीत समझलेनेका दुःख १ ॥ ग्लानि ॥ उसकोकहतेहैं कि बल घटजाना और उमंगका न रहना २ ॥ शंका ॥ यह कि प्यारेकेमिलनेमें किसीविघ्न के संदेहका ध्यानहोना ३ ॥ श्रम ॥ यह कि पंथचलनेसे अथवा संभोग के पीछे थकजाना ४ ॥ धृति ॥ मनकीसंतुष्टा ५ ॥ जड़ता ॥ यह कि वियोग

इत्यादिककी व्यथाके दुःखसे ज्योंका त्यों रहजाना ६ ॥ हर्ष ॥ यह कि प्यारेकोदेखकर अथवा उससे वार्त्तालापहोनेसे केकोई दूसरेहेतुसे हर्षितहोना ७ ॥ दीनता ॥ यह कि बेचैनीसे मनछोटा होजाना और वियोगहोनेको न सहसकना ८ ॥ उग्रता ॥ यह कि अवज्ञा जोप्यारेसेहुई उसकारण क्रोधका आजाना ६ ॥ चिन्ता ॥ यह कि प्यारे के मिलने के निमित सोचना १० ॥ त्रास ॥ यह कि अचानक किसीभयका आजाना ११ ॥ ईर्षा ॥ अपनेप्यारेमें दूसरेकीप्रीतिका साझीपना न सहिसकना १२ ॥ अमर्ष ॥ यह कि प्यारेमें अवज्ञाजोकिया उसकादुःखहोना और न सहारना इसदशामें और नम्रईदशामें भेदबहुतहैं १३ ॥ गर्व ॥ यह कि अपने से दूसरे को अधिक न जानना १४ ॥ स्मृति ॥ यह कि अपने प्यारेको अथवा उसके गुणोंको स्मरणकरना १५ ॥ मरण ॥ यह कि मरनेका उपायकरना अथवा मरजाना १६ ॥ मद ॥ यह कि हर्ष व गर्वके एकत्रहोनेसे जोदशा होतीहो अर्थात्कार्य्याकार्य्यकाविवेक न करना १७॥ निद्रा ॥ यह कि बाहर के अनुसंधान से अन्तरकीवृत्ती में एकाग्रचित्त काहोना जैसे स्वप्न १८ ॥ सुप्ति ॥ यह कि घोरनिद्रा १६ ॥ अवबोध ॥ यह कि यथानता बेसुधिभये पीछे सुधिहोनी२० ॥ व्रीड़ा ॥ यह किलज्जा २१ ॥ अपस्मार ॥ यह कि दुःख और आशा और अन्यसेवन को तापहोनी २२ ॥ मोह ॥ यह कि मनके डगमग और दुःख व भयसेजो अनवधानताहोय २३ ॥ मति ॥ यह कि आदिसिद्धांत जो पथहैं विचार करके निश्चय करलेना २४ ॥ आलस ॥ यह कि कार्योंमें उपायकी अनवधानता २५ ॥ आवेग ॥ यहकि मनकीरुचि अथवा अनरुचिका अचानक प्रकट होजाना और इसहेतु मनकाडगमग होना २६ ॥ वितर्क ॥ यहकि संदेह से नानाप्रकार का ध्यान होना २७ ॥ अवहित्था ॥ यह कि हर्ष अथवा शोकके कारण करके अपनेजाने हुयेको छिपाना २८ ॥ व्याधि ॥ यह कि वियोगमें शरीरसेदुखी होजाना २९ ॥ उन्माद ॥ यह कि जड़चैतन्य को बराबर जानलेना अर्थात् मतवारापनेसे ३० ॥ विषाद ॥ यहकि जो अपने मनके विरुद्धहै उसकेदूर करनेका उपाय दिखाई न पड़ना ३१ ॥ औत्सुक्य ॥ अपने प्यारेके मिलने में विलम्बका न सहारना ३२ ॥ चपलता ॥ यह किप्रेम और शृङ्गार कारणसे मनका स्थिर नहोना ३३ ॥ इति ॥

बर्णनचारो सामग्रीका होचुका अब स्थाईभाव उसको कहतेहैं किजो रस अपने सजाती व बिजातीसे दूरनहोसकै और बराबर अपनीदशा पर बनारहै वह स्थाईभावहै रसोंके बर्णनके आरम्भमें जिसकी चर्चा हुई सजाती यहकि रससे रसका मिटजाना जैसेलड़के हँसी और ठट्ठा अर्थात् हास्यरसमें मग्नहैं कि किसीबड़ेने क्रोध अर्थात् रौद्ररससे रस हँसीको निवृत्त करदिया और बिजाती यह कि जैसेलड़के हास्यरसमें मग्नहैं फ़िरशंटीखाने चलेगये और वहरसनिवृत्त होगातात्पर्य यह कि रससे रस निवृत्त न हुआ दूसरीबस्तुसे निवृत्तहुआ अभिप्राय यहकि किसी अभिघात और किसीप्रकार परमेन भगवत् स्वरूपके ध्यानऔर चिंतवनसे न हटै वहपदवी अन्तकी और दृढ़भावहै ॥ इति॥

अब तुलसीरामकी प्रार्थना॥ हेरघुनन्दनस्वामी कृपासिन्धु दीनवत्सल हे करुणाकर हे पतितपावन अधम उधारण महाराज मैं कैसा अधम और मतिमन्द हूं कि आपतो अनुक्षण व सर्बकाल स्पर्द्धा व कपट व क्रोध व अभिमान व मिथ्या बोलना व हिंसादिक सहस्रों अपराधमें प्रवृत्त रहताहूं भूलकरभी आपकीओर सावधान नहीं होता और दूसरे लोगोंके कर्म व आचरण पर व्यंग व दंशकरके उनके निमित्त शिक्षा लिखताहूं मेरा वही हालहै ५८ ॥ आप पापके नगर बसावत सहि न सकत परखेरो ॥ जो यह बिनतीकरूं कि कुछमेरे ऊपरभी कृपाकी दृष्टि हो तो कौनमुखलेकर निवेदन करूं कि एक बात भी अच्छी नहींहै जो बिनतीकरूं तो दूसरा उपाय नहीं सूझता सोअय एक बात दृष्टिमेंआईहै कि सब पापिनमेंअनूपमान वो अद्वितीयहूंसो राजसभामें सब प्रकारके कलाके बड़े प्रवीणोंका प्रयोजन होता है इस निमित्त जो यह गुण मनोवृत्त्यनुकूल होय तो संक्षेप यह प्रार्थना अंगीकार होवे कि कोई देहमें मेरा जन्महो और नरकमेंजाऊं अथवा स्वर्गमें परंतु यहस्वरूप आपका मेरेमनमें बसारहै सरयूके निकट अयोध्यानिजधाममें जोराजद्वारीऔर उसमें निजसभाका मंदिर बनाहुआहै जिसका द्वार और प्रकारं व भूमि भांतिभांतिके मणिगणसे जटितहै और तहांएक ऐसा मण्डपस्वर्णसूत्रकाहै कि जिसकी झालरों में दिव्यस्वर्ण सूत्रोंके गुच्छे और मोतीटँके हुयेहैं उसकेनीचे रत्नसिंहासनहै कि जिसके जड़ाऊ मणिगणको देख-

कर नेत्र को चकचौंधी होतीहै उससिंहासनके ऊपर आप इसशोभा से कि किशोर अवस्थाहै और मुखकी सुन्दरतासे भी सुन्दरता पातीहै कि किरीट मुकुटधारण कियेहुये कानोंमें कुण्डल और उस में श्रीमहारानी जीने फूलोंकेगुच्छे गूंथकरडालेहैं बड़ेसजावट के साथदिव्य वस्त्राभरण जगर मगरकी पहिरेहुये और उसपर माला मणिगण और फूलोंकी पड़ी हुई मोतियों के कण्ठे गलेमें हाथोंमें कड़े और पहुंची अँगुलियों में अँगूठी और चरण कमलोंमें घुंघुरू और कड़े बिराजमान और शोभित हैं और ऐसीही शोभा के साथ श्रीजनक नन्दिनी अखिल ब्रह्मांडेश्वरी वाम अंग शोभायमान हैं और छल्कमुक्त और आभूषण का परस्पर आभूषण वो मुखपर जो पड़ता है तो ऐसी एकधार वो शोभा की छटा है कि जो वहां प्राप्त हैं सो आपने को भूलकर सुखमें मग्न हो रहे हैं वशिष्ठ जी राजतिलक करते हैं भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न जी छत्र चवँर धनुष बाण इत्यादिक लिये हुये और हनुमान जी संमुख हाथ जोड़े खड़े हैं और शिव ब्रह्मादिक देवता और राजा सब देश देश के भेंटलिये हुये प्राप्त हैं और दूसरी सामग्री वो साज राजतिलक का जो भक्तोंके मनमें समायाहै सो प्राप्तहै और यह दासभी अपने ओहदे उपानतकी सेवापर प्राप्तथा॥

दो॰ कामिहि नारिपियारिजिमि लोभिहिप्रिय जिमिदाम।
ऐसे होयकै लागहू तुलसी के मन राम॥

आरम्भ निष्ठों की प्रथम धर्मनिष्ठा॥

प्रथम श्रीकृष्ण स्वामीके चरण कमलों के अंकुश रेखाको दण्डवतहै कि जिसका ध्यान करनेसे मनजो मतंग गजके समानहै तुरन्त वशमें होजाताहै और भगवतके मीन अवतारको दण्डवतहै कि जगतकी शिक्षा के निमित्त राजा श्रुतदेव को धर्म उपदेश किया और अपनी माया उसको दिखलाकर रक्षा करी वेद और सूत्रों के अनुकूल जो आचरण शुभकर्म लिखेहैं वह धर्महै और उसके प्रतिकूल अधर्म है तो अंगीकार करना आचरण शुभ और छोड़ना कर्मनिन्दित वेदकी आज्ञाके अनुरोध अत्यन्त उचितहै और जो कोई वेदआज्ञा विरुद्ध कर्म करतेहैं सो नरक-

गामी होकर अति कठिन यातनाकादुःख भोगतेहैं इसके ऊपर चौरासी लक्ष शरीरमें जन्म होनेका ऐसा कठिन दण्डहै कि वर्णन नहीं होसक्ता काहेसे कि नरकसे उद्धार होनेकालो काल का प्रबन्धहै परंतु आवागमन जन्म मरणके दुःखसे छूटने का कोई प्रबंध निबंध नहीं इसहेतु कि आवागमन रहँट के चक्रकी भांतिहै कि इस योगवश मनुष्यशरीर मिलता है व संसार समुद्र तरने के निमित्त नौकाके सदृशहै जो इस शरीर को पाकर अपने छूटने का उपाय किया तो बेड़ा पारहै नहीं तो फिर उसी दुःख में बद्ध होता है कर्मशास्त्र की आज्ञामें युक्त रहना सीढ़ी के सदृश है कि शीघ्र वो बिना परिश्रम उत्तम पदको पहुँच जाताहै और जो कोई इससे निराशहैं सोसदा उद्धारसे निराश हैं कोई कोई मनुष्य ऐसे देखे कि कर्म करनेमें तो प्रीति नहीं और उत्तम पदकीबातें बनातेहैं ऐसेलोग कदापि सिद्ध पदको नहीं पहुँचैंगे बिचार करना चाहिये कि आप भगवत् वेदआज्ञा व कर्मशास्त्रके प्रकाश व प्रवृत्ति कारणके निमित्त अवतार लेताहै जो कोई बिना कर्म करनेके उद्धारचाहै यह कब हो सक्ताहै व जब आप भगवत्ने अपने आपको कर्म करने से निवृत्त न किया और श्री गीताजीमें भगवत्का बचनहै कि मैं आपकर्म करताहूं जो कर्म न करूं तो दूसरेलोगभी छोड़ देवें तो मैंहीं जगत का वर्णसंकर व नाश करने वाला होजाऊं श्रीरघुनन्दनस्वामी को रावणके बिजयकिये पीछे यहज्ञात हुआ कि रावणका जन्म ब्राह्मणबंशमें था पाप दूरहोने के निमित्त एक अश्वमेधयज्ञ किया व कर्म शास्त्र की मर्य्याद से चरण बाहर न रक्खा तो इस मनुष्यकी क्या बातहै कि बिनाकर्म करनेके आवागमनके दुःख से छुट्टीपावे जो यह शंकाहोय कि कर्मतो आप जड़है इस मनुष्य चैतन्य को किस प्रकार छुड़ावेंगे सो उत्तर यहहै कि जिस प्रकार नौका जड़है कैवर्तके हाथके सहारेसे सहस्रों को पार उतार देतीहै अथवा सीढ़ीजड़ है परंतु बिना उसके कदापि अटारीपर न जासक्ता इसी प्रकार कर्महैं संसार सागरसे पार उतारनेके निमित्त सहाय होतेहैं व उत्तम पद को पहुंचाय देतेहैं जो यह शंकाहोय कि जो शुभकर्मकरैंगे तो उनके भोगने के निमित्त शरीर अवश्य होगा व जबकि शरीर हुआ उसको एक दिन मृत्यु आवेगी और इसी प्रकार जन्म मरण में रहेंगे शुभ कर्मसे छूटने

के प्रकारकी रचना क्या होगी सो वृत्तांत यहहै कि शुभकर्म दो प्रकार के हैं एक सकाम कि जो किसी कामनाके सिद्धके निमित्त कराजावे वह तो अवश्य आवागमनके कारण होतेहैं काहेसे कि जब उस कर्मका फल इतिश्री होगया तब स्वर्गादिकसे पृथ्वीपर जन्मलेताहै दूसरा निष्काम कि वह उद्धार व छूटनेका कारणहै निष्कामकेअर्थ यह कि बिना किसी कामनाके करनेमें आवे तात्पर्य्य यह कि जो कर्मकरै तो फल उसका कदापि न चाहे भगवत्के अर्पण करदेवै क्योंकि भगवत् अच्युत व अनंत व अविनाशीहैं इसकारणसे वहफल जोभगवत्को अर्पण कियागया सो भी अनन्त व अच्युत व अविनाशी होजाता है और उसी प्रसन्नता से भगवत् अपना स्वरूप उस मनुष्य के हृदयमें प्रकाश करता है अर्थात् भगवत् चरणोंमें प्रीति होजाताहै जिस प्रकार कोई कंगाल मनुष्य कि महाराजाधिराजकी सेवामें कोईवस्तु दो चार पैसेकी लेजावे तो राजा उसको उस वस्तुका मोल विचारके अथवा उस मनुष्यकी मर्य्याद के योग्यका द्रव्य नहीं देताहै किन्तु अपनी ओर देखकर देताहै और उस का दरिद्र दूर करदेताहै उसके अलग लोगोंकी रीतिहै किसीने किसी को कोई वस्तु बिनामोलदी तो उसके कृतको मानिके कार्य्य करदेते हैं इसीप्रकार यह भगवत् कि सब कृतज्ञताकी मितिके जाननेवालोंका मुकुटमणि है सब कार्य करदेताहै अभिप्राय यह कि जब इस मनुष्य की भगवत्में प्रीतिहुई और नित्यके कर्म सहायकहुये दिनदिन भगवत्की प्रीति बढ़ावतेहुये ऐसे अनन्त होजातेहैं कि हृदय निर्मल होकरभगवत् की भक्ति दृढ़ होजातीहै और उसभक्तिकी कृपासे कृतार्थहोकर भगवत् पदको पहुंच जाताहै और जन्म नहींहोताहै और फिर यह कर्म शास्त्र भगवत्का आज्ञाहै और रीतिहै कि जो कोई सेवक अपने प्रभुकी आज्ञा पालनमें तत्पर रहताहै तो वह प्रभु उस भृत्यपर प्रसन्न होकर सब मनोर्थ सिद्ध करदेताहै तो भगवत् कि जो सब प्रभुलोगोंका प्रभुहै जो सेवक उसकी आज्ञा को पालन करेगा उसपर प्रसन्नहोकर क्योंनहीं कार्य सिद्ध करदेगाऔर क्योंनहीं आवागमनकीपीड़ासे छुड़ावेगा और चमत्कार यह कि निष्काम कर्मोंके कारणसे संसारी कामनाभी आप भगवान् करदेतेहैं कि प्रह्लाद अर्जुन युधिष्ठिर ध्रुव इत्यादि भक्तोंकी कथासे

प्रकटहै अब शंका यह भारीहुई कि भला शुभकर्मतो इस हेतु न रहे कि भगवत्‌में जा मिले परन्तु अशुभकर्मभीतो इस मनुष्यसे होजातेहैं वह किस प्रकार जावेंगे सो बात यहहै कि कर्म दोप्रकारके हैं एक अज्ञात दूसरा ज्ञात सो अज्ञात कर्मतो नित्यके सन्ध्या व वलि बैश्व देव श्राद्ध व अभ्यागत पूजन इत्यादिकसे दूर होजातेहैं और वही भगवत्‌को पहुंचकर अनन्त फलकेदेनेवाले होतेहैं और ज्ञातकर्मरहा सो उनकाहाल यहहै कि जिसकी निष्ठा शुभ कर्मोंमेंहै उससे महापातक होताही नहीं और जोकोई दैवयोगहोभीगया तो जोभगवत् शुभकर्मका स्वामी होता है वहही अशुभकर्मोंके पातकको मार्जन करदेताहै सो वेद श्रुति प्रकट लिखतीहै और न्यायसे भी जानने योग्यहै कि जिसने शुभकर्मोंका तो फल भगवत्‌कोदिया अशुभकर्म उसकेनिमित्त क्यों रहैंगे इस व्योहार से काम और निष्काममें एकदृष्टान्त स्मरणहोआया कि जो कोई चाकर या ठेकेदार किसीका होताहै और उससे कुछवस्तुकी हानिहोजावै तो उसीके ऊपर देनउतरताहै औरजो घरके दासीपुत्रसे हानिहोजावै तो स्वामीपर उतरताहै दाससे कुछ सम्बन्धनहीं तात्पर्य्य यह कि सकाम कर्मकरनेवाला चाकर ठेकेदारके सदृशहै और निष्काम कर्म करनेवाला जैसे दासीपुत्र सिद्धान्त यह कि निष्काम कर्मोंका करना वेदकी आज्ञा के अनुसार उचितहै जो ज्ञानी और भक्त अगले समयमें हुये और जो कि अबहैं व जोआगेहोंगे केवल कर्मों के प्रभावसे वहपदउत्तम उनको प्राप्तहुआ औ होंगे जैसाकि भगवत्‌गीतामें लिखाहैकि कर्मोंही के प्रभाव से जनक इत्यादिको मनकी स्थिरता सिद्धिभई फिरलिखाहै कि विना कर्म करनेके कदापि नहींछूटते सर्व शास्त्र इसवातमें युक्त हैं कि विना कर्म उद्धारनहीं और वेदआज्ञामें बुद्धिसे तर्ककरके कहना कि यह वेद आज्ञाहै सो इसलाभकेहेतु होगी यहबातवर्ज्जितहै और यहबातस्मृति में भी लिखीहै परन्तु प्रयोजन पायकरके लिखाजाताहै कि विधिनिषेध जोहैं वेदाज्ञा सो यद्यपि परलोकके हेतुहैं तथापि संसारके लाभको भी विशेषहैं जैसे प्रभातकाउठना व स्नानकरना माता पिता गुरूकोवंदना सत्यबोलना सुहृदता मीठेबचन बिबेकीजननका सङ्गकरना बिद्यापढ़ना और किसीको बुरा न कहना जिसका लोनखाइये तिसपालन करनेवाले

की सेवा निश्छल धर्मसे करना मित्रसे कपट न रखना व जो कोईकुछ विद्या सिखलावै व शिक्षा करके भगवत्कीओर लगावै तिसको गुरू जानना व भगवत् भजन इत्यादि सहस्रों प्रकारके शुभकर्मका अंगीकार करना व मिथ्याबोलना चोरी परस्त्री गमन हिंसा जुवाकाखेलना मद्य-पान असाधु जनकासंग मिथ्या उत्पात कपटमिताई मूर्खता अकृतज्ञता इत्यादिका त्यागकरना व नदीमेंनहातेहुये पानीबरसतेमें चलतेहुये बार बनवातेहुये दूसरीओर चित्त न करना बासी अथवागरिष्ट किसीकाजूठा व तीक्ष्ण व खट्टा व क्षार इत्यादिकका न खाना स्निग्ध सुस्वादु मिष्ठ कोमल रंग अहारका भोजनकरना रातको पहाड़पर न चलना ऐसे २ सहस्रों आज्ञाधारण करनेके योग्यहैं कि इससंसारमें कैसे लाभकेदेने-वालेहैं इति कोईकर्म ऐसेहैं कि जो नित्य उसकर्मको न करै तो मनुष्य अपने ज्ञातिसे पतित होजातेहैं परंतु ऐसी दुर्भाग्यता ने बलबांधरक्खा है कि कदापि उसओर चित्तकीवृत्ती नहींहोती बरु बहुतलोग यहकहते हैं कि अजी साहब शास्त्रकेअनुसार किससे कर्म होसक्ताहै पायँधरनेका भी ठिकानानहीं कहा न कहीं का व्योहारहै सो समझ में आताहै कि उनलोगोंको उसआज्ञाका पालन तो अलगरहा सुननेकाभी संयोग न हुआ काहेको जो आज्ञा विधिनिषेधहैं ऐसीसहजहैं कि सबकोई उसपर चलसकै और जहां कोई ऐसी भी विधिकीगति लिखीहैं कि वह अति कष्टसे साध्यहोय तो उसीके समीपही दूसरीरीतिकी आज्ञा ऐसीलिख-दीहै कि सबकष्ट सुलझावै जैसे दीपक व तेल हाथमें लगजाय तो इ-तनी मट्टी लगाकर धोने को लिखाहै कि बड़ाकष्ट है तहांही यह बात लिखदीहै कि धरतीसे हाथरगड़के धोडाले बहुत जगह कि पापके प्रा-यश्चित्तकेनिमित्त चान्द्रायणव्रत लिखतेहैं और उसीजगहयहभीलिखाहै कि जो न होसकै तो कृच्छ्रनहीं तो तीनदिन अथवा एकदिनका व्रतकरै तात्पर्य यहहै कि शास्त्राज्ञा सबऐसीहै कि सहजसे होसकै परंतु प्रथम तो समझना और फिर करनेपर फेटबांधना कठिन होरहाहै और यह भी तो अनुमानकरना योग्यहै कि जो अंगीकार उनआज्ञाओंका नहीं-सकनेके योग्यहोता तो शास्त्रमें लिखीही काहेकोजाती बहुतसीजानोंजो नास्तिक औरम्लेच्छ कहेजातेहैं तो कारणयहहै कि वे लोग वेदकीआज्ञा

को नहींमानते और बिरुद्ध आचरणहैं तो जो कोई वेदशास्त्रकी आज्ञा पर प्रवृत्ति न करै सो नास्तिक और म्लेच्छहैं और जो कोई वेदशास्त्र को मिथ्याकहतेहैं अथवा अन्य सामान विद्याकेसदृश समझतेहैं उनकी दुर्गतिहोनेमें तो कुछसंदेहहीनहींहै और जो नरक स्वर्गको मिथ्याकहते हैं वहभी निस्संदेह दुर्गतीहैं यहसब बचनस्मृतिके वार्ताकरकेलिखेगये हैं अब कथा व नाम उनमहात्मा लोगोंका संक्षेपसे लिखेजातेहैं किजो इसनिष्ठामें दृढ़होकर और भगवत्भक्तोंको पाकर भगवत्पारायणहुये॥

दो० रूप राशि आनन्द घन गौर श्याम कमनीय॥
युगुलकिशोर बसो सदा जन प्रताप के हीय १॥

कथा राजा हरिश्चन्द्रकी॥

यह राजाहरिश्चन्द्र सूर्यबंशी अयोध्या के राजा बड़े प्रतापीहुये जिनकीकथा शास्त्र व पुराणमें प्रसिद्धहै विश्वामित्र को यज्ञकी दक्षिणा में राज्यादिक सबदेकर तीनभार सुवर्णकेहेतु राजा व रानी कुंवररोतास किसीनगर में बिकनेको गये वह भी नगर राजाका था विश्वामित्र ने बशिष्ठजीकी शत्रुतासे व धर्मकी परीक्षाकेअर्थ न अंगीकारकिया राज्यके अंतर्गत वहराजासे कल्पितठहराया बशिष्ठजीने राजाको सैनसेजनाया कि काशीके राज्यमेंनहींहै वहांजावो राजाकाशीजीमें चांडालके यहांबिके उसने मृतकघटियापर वस्त्र व करलेनेकी सेवासौंपी रानी व कुंवर एक ब्राह्मणके यहांबिके विश्वामित्रने तब सांपहोकर कुंवर रोतासको काटा रानी रोदनकरतीहुई मृतकको जलानेके हेतु घाटपरगई राजा ने वहां कर के निमित्तरोंका रानीने बहुत करुणावचन सुनाया पर राजाधर्ममें दृढ़थाऐसीदशामेंभी धर्म न छोड़ा रानीकेपास कुछनहींथा कि कर दे रात कोगंगाकिनारे बैठीरही तब विश्वामित्र काशीराज के लड़केको मारकर रानीके पासरखके प्रभातको काशीराजसे जनाया कि गंगाकिनारे एक स्त्रीरहतीहै लड़कोंकोखातीहै उसीने यहकर्मकियाहोगा लोगोंने उसलड़केको मृतक स्त्रीकेपासपाया काशीराजने बिनाबिचारे उसचांडालको स्त्रीके बधकरनेकीआज्ञादी उसने राजाहरिश्चंद्रके पास बधकरनेकेहेतु भेजदिया राजाकीआज्ञासुनतेही तुरन्त तरवार खींचकरउठा चाहा कि रानीके गलेपरमारे कि धरती कंपनेलगी व आकाशसे हाय हाय शब्द

हुआ ब्रह्मा विष्णु महेश और सबदेवताओं ने राजाकाहाथ पकड़लिया भगवान्ने प्रसन्नहोकरकहा बरमांग राजानेकहा भक्तिछोड़दूसरेकोचाह नहीं भगवान्ने भक्तिवरदानदेकर कुंवर रोतास व काशीराजकेलड़केको जिलाकर अयोध्याके राज्यकरनेकी आज्ञादी सम्पूर्णान्यक्रम न्याय अरु भक्तिमेंवर्तावकर और भगवत्भक्तिकीरीतिमेंप्रजालोगोंको प्रवृत्तकरके अंतसमय कुंवर रोतासको राज्यदेकर परमधामकोगया अब विचारनाचा-हिये कि धर्मकी दृढ़ता व निबाह कौनकौन पदार्थदुर्लभको नहींदेताहै॥

कथाराजाबलिकी ॥

ये राजाबलि विरोचनकेपुत्र व प्रह्लादकेपौत्र परम भगवत्भक्त व दातापीहुये जिसकेयहांआप भगवान्ने भीखमांगी व अपनीपीठको नपाय दिया व अबतकजिसकेद्वारपर आपभगवत् वामनरूपसे खड़ेरहतेहैं कथा लोकमें उनके यशकी प्रसिद्धहै यहांध्यान करके देखनाचाहिये कि भगव-न्ने अपने भक्तसे छल व कपटकिया तिसकेहेतु अपने उसरूपको पह रादिया कि राजाके द्वारपाल होगये तो भला औरकोई भक्तोंकेसाथ छल व कपटकरेगा तिसको नजाने कैसादंड करैगा ॥

कथाराजादधीचकी ॥

राजादधीच ज्ञानीभक्त परोपकारी ऐसेहुये कि अपनेअस्थिको देवता लोगों को देडाला और इन्द्रने वज्र बनवाकर उसीसे वृत्रासुर का वध कर सुख पाया कथाप्रसिद्धहै अब विचार करलेना चाहिये कि जोलोग ऐसे अवस्थाको प्राप्त कर्मकरने न करनेका प्रयोजन कुछ न था तिनको भी कर्म शास्त्रकी आज्ञा पालनमें कैसीनिष्ठाथी अब हमारीयहगतिहै कि शास्त्र आज्ञाको पालनकरना तो अलग है यहभी नहीं जानते कि कर्म शास्त्र किसको कहते हैं धन्य है ॥

कथास्वायंभुव महाराजकी॥

ये स्वायंभुव महाराजाधिराज परम भागवत धर्म कर्म निष्ठहुये इनकी बड़ाई व भाग्यका वर्णन किससे होसकाहै कि पूर्णब्रह्म भगवान्ने अव-तारले जिसके पुत्रहोकर बालचरित्र आदिकसे आनन्ददिये ये महाराज पहिले जन्ममें स्वायंभुमनुथे और मनरूपा उनकी रानीथी तप करके भगवान्से बरदानमांगा कि आपकेसदृश हमारे पुत्रहोय व हमारे जीवन

का सम्बन्ध आपके दर्शनसेरहै वही दशरथहुये व भगवत् आप उनके पुत्रहोकर प्रकटहुये अयोध्याजीमें रामरूपसे नानाप्रकारके चरित्रकिये वाल्मीक ऋषीश्वरने सौ कोटि श्लोकमें वर्णनकिये रामचन्द्र महाराजाधिराजके चरित्र तीनोंलोकमें सूर्यकेसदृश व्याप्त व प्रकाशितहैं केकयी रानीको पूर्ववरदान दियाथा राजाने तिसकारणसे श्रीरामचन्द्रने चौदह वर्ष बनवासकिया रावणादिक दुष्टोंका बधकरके अपने यशकासेतु संसार समुद्रमेंबांधा व दशरथ महाराजने रघुनाथजीके बनगवन होतेही तनको त्यागकरके स्वर्गवासकिया॥

कथाभीष्मपितामहकी॥

भीष्मजी परम भगवत्भक्तरहे और बारह महाभागवतोंमें उनकी गिनतीहै इस कर्मनिष्ठामें उनकोलिखा सोकारण यहकि प्राप्तहोनेभक्ति व ज्ञानकेभी प्रवृत्तिआज्ञा कर्मशास्त्रका कर्तव्य समझतेरहे कि श्राद्धके समय उनके पिताकाहाथ निकला परन्तु हाथपर पिण्डानदिया वेदीपर रखदिया और दुर्योधनके लोनसे पालित अपनेकोजानकर युधिष्ठिरकी ओर न गये गंगाजीके उदरसे उत्पत्तिउनकोहै जबगंगाजी स्वर्गचलीगईं व शंतनुमहाराज विकलहुये तबयोजन सुगन्धाको आपराजा न होनेका बाचाप्रबन्ध करके लेआये इसोहेतु अपना विवाह न कियाकाशीराजकी लड़की अम्बानाम तिससे विवाह नहींकिया परशुरामजी गुरूसे लड़ाई का संयोगपहुंचा परन्तु न विवाहकिया व दयालुता यहांतकरही कि युधिष्ठिर महाराज महाभारतमें रातको जाकररोये तबअपने बधकाउपाय आपबतलाया तबदूसरेदिन अर्जुनने उसीरीतिसे शिखण्डीको बीच में खड़ाकरके बानमारे तबशरशय्यापर शयनकिया और भगवत्ने अपना प्रणछोड़कर भीष्मजीकाप्रणरक्खा रथकाचक्रलेकरउनपरदौड़ेऔरअपने पिताके आशीर्बादसे मृत्यु उनकीउनके आधीनरही इसीकारणसे बावन दिनतक शरशय्यापर रहे और तनत्यागकर श्री कृष्णचन्द्र महाराजकी आंखोंके आगे देखते परमधाम को पधारे॥ इति

कथासुरथ सुधन्वाकी॥

येदोनों भाई सगेराजा नीलध्वजकेपुत्र परम भागवतरहे राजाने सुधन्वाको बिनाबिचारे आज्ञा भंगके अपराध का दण्ड मंत्रीकी शत्रुतासे

दियातेलके कड़ाहजलतेमें डलवादिया तेल ठंढाहोगयाजैसेप्रह्लादकीगति हुई सोई हुआ फिर सुधन्वाने अर्जुनसे अश्वमेधके घोड़े रोकनेमें अत्यन्त युद्धकिया अन्तदोनों भाई खेत आये भगवत् को प्राप्तहुये व शिर उनका महादेवने अपने मुण्डमाल में लिया॥ इति

कथाहरिदासकी॥

राजाहरिदास परमभक्तहुये धर्मशास्त्रकी आज्ञापर बहुत दृढ़रहे इस हेतु इसनिष्ठा में लिखेगये यहराजा पाटननगर के जाति राजपूततोदर शरनपाल राजासिबिर के समान व दानदेनेमें राजादधीच के सदृश अपने बचनके पालनेमें राजा बलि के समान व भगवत् भक्तिमें प्रह्लाद के तुल्य व रिझवारराजाजगदेवके समानहुये कि वृत्तान्त उसका इसजगहलिखा जाता है कि राजाजगदेव बड़ेशूरवीर व न्यायनिष्ठा व उदाररहे और रिझवार निष्ठाइतनीरही कि एकनटिनीने तमाशा राजाकेसन्मुख कियाउसके राग व नाचपर कलाइत्यादिक से प्रसन्न होकर कुछप्रसन्न द्रव्य देनेके हेतुचिन्ता करनेलगा॥ परन्तु उसके गुनके सन्मुख कुछ ध्यानमें न आया सिवाय इसके कि शीशअपना देडालें नटिनी ने निवेदन किया कि जबमुझको आपके शिरका प्रयोजन आनपड़ैगा तब लेजाऊंगी औरराजासे निश्चयकिया कि रिझवारता तुम्हारे ऊपर अंतहोचुकीअब मेरादहिनाहाथ किसीके आगेकुछ लेनेको नहीं फैलेगा पीछेदूसरेराजाके यहांउसका नृत्यकलाहुआ राजारीझकर कुछदेनेलगानटिनीने बायांहाथपसारा राजाने क्रोधकरके कारण पूछा नटिनीने कहा कि मेरा दहिना हाथ राजा जगदेव के भेंटहोचुकाहै उससे सिवाय कौन दानीहै जिसके आगे फैलाऊं राजानेकहा मैं दशगुन अधिक उससे देसक्ताहूं कहउसने क्यादियाहै पीछे बहुत बातचीत होने के राजाने प्रतिज्ञा किया कि दशगुन अधिक देऊंगा निश्चयजान तबनटिनी राजाजगदेव के पास आई उसका शिर लेकर राजाके पासआई कि राजाजगदेवने यह शिरअपना हमकोदान दियाहै यहकहकर शिरराजाके सन्मुखरखदिया व बोली कि तुम्भी अपनीप्रतिज्ञा पूरीकर राजा लज्जितहोकर उठगया फिर मुख न दिखाया व नटिनीने शिरराजा जगदेवकाउसके धड़परखकर यहगान कि जिसपरराजा रीझायागाया तुरंतजीउठा और यहरिझवारताकीबात

राजा जगदेवकी संसारमें फैली और एक प्रसंगराजा जगदेवका यह है कि कोईराजाकी लड़की उसपरआशक्तहुई विवाहका संवाद भेजा राजा जगदेवने अंगीकार न किया लड़कीकी माताने किसी बहाने से राजाको अपने नगरमें बुलाया व राजाको मन्त्रियोंकेद्वारा बहुत समझायाराजा ने न माना उस लड़कीनेभी अपनेप्रेम व आशक्तताके दुःखको प्रकट किया परन्तु उसजगदेवने न अंगीकारकिया यहांतकहुआ किउसलड़की दुष्टाने राजाजगदेवका शिरदेखनेके निमित्त कटवा मँगाया परन्तु इस दशामेंभी भगवत्‌ने राजाकी ऐसीप्रतिज्ञा पूरीकी कि मृतकशिरने उस लड़कीके मुखको न देखा कईबार वह शिरके सन्मुखगई परंतु जबसन्मुख आवे तबशीशउसके दूसरीओरफिरजाय तात्पर्य यहनिकला कि स्त्रीसे परांमुखहोयतो इसप्रकारहोय व निश्चय करके स्त्रिनकासंग मुमुक्षुको ऐसादुखदाईहै कि कबहींभगवत् प्राप्तकेआनन्दको समीप आनेनहींदेता अभिप्राय इसप्रसंग कहनेका यहकि यह राजाहरिदासभी रिझवारनि-ष्ठामें ऐसेहीरहे मानो तोदरकुलमें सूर्यकसमानहुये कलियुगमें धर्मात्मा रहे तिलकमालासे प्रीतिरही कि वर्णन नहींहोसकता बातयहहै कि एक बैरागी दुष्ट उसे लड़कीकेसाथ रातकोसोताथा आंखसे देखा परंतु क्षमा करगये वहदुष्ट डरकर भागनेलगा तब यहबोले कि ऐसे कर्मोंसे भेष की निन्दा होतीहै इतनाही कहनेसे उसबैरागीको ज्ञान होगया वनमें निवास कर भगवत् भजन करनेलगा ॥ इति ॥

निष्ठादूसरीधर्मप्रचारक ॥

श्रीकृष्णचन्द्र महाराजके व्यासअवतार को दण्डवत् है कि जगतके उद्धारके हेतुवेदोंको विशेष प्रकाशित औरब्रह्मसूत्रऔर महाभारत और अठारह पुराण व स्मृतिको बनाय के भागवत् धर्मकी प्रवृत्ति की और चरण कमलकी कुलिश रेखाको दण्डवत् है कि महाघोर रूप वृत्रासुर और पापके पहाड़ोंको नाश करने वालाहै भागवत धर्म उसको कहतेहैं कि भगवत्भक्तिके सम्बन्धसे जोकुछकियाजाय सेवा पूजा भजन स्मरण कीर्तन इत्यादि जोकिसीको संदेहहोय कि धर्मनिष्ठा और भागवत धर्म में क्याअंतरहै सो बातयहहै कि धर्मनिष्ठाका अभिप्राय कर्मसेहै चाहै वह

कर्मसकामहो अथवा निष्काम और भागवत धर्म उसको कहतेहैं कि जो निष्कामकर्म इसजन्ममें चाहेअगिले जन्मोंमेंकियेहैं और उनको भगवत् अर्पण करके भगवत्भक्ति प्राप्तहुई होय उस भक्तिके सम्बन्धसे जो कुछ करनायोग्यहै वह भागवत धर्महै जब किभागवत धर्ममें सावधान होकर भक्तका मन लगा और प्रतिक्षण उसीओर बाहर भीतरकी चित्तकीवृत्ति हुई तो और कर्म करने न करनेका स्वाधीनहै व बहुत आचार्य्योंका मत इस बातपरहै कि कर्मोंके प्रभावसे भगवद्भक्ति प्राप्तहुईहै जबतक देहानुसंधानको भूलिके मग्न न होजाय तबतक संध्या इत्यादिक जो आवश्यक कर्म उनको करतारहै और समझना चाहिये कि यद्यपि देखनेमें यह बात विरुद्धसी समझनेमें आतीहै परंतु सिद्धान्तमें कुछ विरुद्धनहीं काहेसे कि जो कोई भागवत धर्ममें एकाग्र चित्तहै वह जो कर्म करताहै सो सब भगवद्भक्ति के सम्बन्धकेहैं उनको कर्म न समझना चाहिये सो उस भागवत धर्मके कि जिसका वर्णन हुआ प्रचारक उसकी नौका के समानहैं कि आपभी पारजावै और दूसरोंको उतारदेवैं तरन तारनजो पद विख्यातहै सो ऐसेही भक्तोंके निमित्तहै यद्यपि भागवतधर्म के प्रचारक आप भगवत्है कि ब्रह्माजीको वेदका उपदेश किया और वेदके अनुकूल भागवत धर्मने प्रवृत्ति को पाया परंतु विशेष कृपालुता के हेतु उस धर्मकी प्रवृत्ति में इतनी निरन्तर कृपादृष्टिकी कि वेद और ब्रह्मा परभी प्रबन्ध उसका न रक्खा और कई युक्ति और प्रकट करदीं यह कि भक्तों और ऋषीश्वरोंके मुखसे सूत्र और तंत्र और स्मृति और वेदांत पातंजलि मीमांसा इत्यादि छओं शास्त्र व वाल्मीक रामायण व महाभारत इत्यादि इतिहास व पुराण वर्णन व रचना कराया कि उसके अनुकूल प्रवृत्ति उसकोहुई और लोग उनका श्रवण व कीर्तन करिके कृतार्थहुये और होतेहैं पश्चात् जब भगवत्ने देखा कि लोगोंके चित्तकी चाह काव्यकेपद पदार्थकीहैतो नाटक व चम्पू व काव्य व साहित्य शास्त्रों के योगसे शिक्षाको किया और उनके योगसेभी लोगोंकीबुद्धि अगिन व अगिन देखी तो टीका करनेका प्रचार चलाया और जब उनकोभी लोग अच्छे प्रकार न समझसके तो सूरदास तुलसीदास व नाभा व अग्रदास नन्ददास कृष्णदास इत्यादि को कलियुगमें प्रकट करके भाषामें चरित्र

व भागवत धर्मोंको रचना कराया व जगत्में प्रवृत्तिकिया उसके अलग उस भागवतधर्मके प्रवृत्त होनेके निमित्त दूसरा उपाय यह किया कि आप अपने मुखारबिन्दसे उन धर्मोंको स्पष्टकरके समझाया और लक्ष्मी जी व अपने पार्षद व ब्रह्मा व शिव व सनकादिक व नारद व शुक्राचार्य्य व वृहस्पति व वशिष्ठ व्यास इत्यादि सहस्रों को गुरु बनाकर उपदेश व विशेषताई उन भागवत धर्मोंकी करी और कलियुगमें शंकराचार्य्य और रामानुजस्वामी व निम्बार्कस्वामी व माधवाचार्य्य व बिष्णुस्वामी व बल्लभाचार्य्य व हित हरिबंशजी इत्यादिक सैकड़ों आचार्य्य अपनी बिभूति और कला व अंश व आवेश अवतारसे प्रकट करिकै अबतक जिनकी कृपासे करोड़ोंजीव महा पापात्मा सबोंका उद्धार होताहै फिर तीसरा बिचार यह किया कि अपना मन्दिर व मूर्त्ति और भजन व तपका स्थान जैसे बद्रिकाश्रम आदि और अपने धाम जैसे मथुरा अयोध्या आदि और तीर्थ जैसे गंगा यमुना पुष्पकरआदि प्रकट किये कि उनके प्रभावसे भक्तिका प्रचार हुआ तात्पर्य्य इस लिखनेका यह कि भगवत्को प्रवृत्त करना अपने भागवत धर्मका और दृढ़ रखना उसका इतना अङ्गीकारहै कि जबकभी थोड़ाभी उसमें बिघ्नआय पड़ता है अथवा कोई बिघ्न करनेको उद्यत होता है तो आप भगवत् अवतार लेकर उन बिघ्नकरने वालोंका वध करदेतेहैं और अपने धर्मको स्थिर रखते हैं गीता जी में भगवत् का बचन है कि अर्जुन जब धर्म में हानि होती है और अधर्म की वृद्धि होती है तो मैं आप अपने भक्तोंके सहाय के हेतु और नाश करने दुष्टों के और स्थिर करने अपने धर्मके अवतार लेता हूं तो आवश्यक व बहुत प्रयोजन है कि जहांतक होसके भगवत्धर्म्म के प्रचार करनेमें परिश्रम व यत्नकरै कि उससे प्रसन्नता भगवत् को होतीहै और प्रचार करने वाला इस धर्मका भगवत् की बिभूतअवतार में बिचार कियाजाताहै एक जगह शास्त्रमें लिखाहै किजोकोई एक जीव जिज्ञासुको भगवत् सम्मुख करदेताहै उसको दशहजारअश्वमेधयज्ञ का फलहोताहै भगवत् कथा कराना ठाकुर द्वारा भजन कुटी धर्म्मशाला बाटिकाकूप तड़ाग पाठशाला इत्यादि और ऐसेमन्दिरकि जिससे भगवत्भजन करनेवालों और संसार को आरामहो रचनाकरावना और भगवत्

चरित्रों की बनावना और प्राचीन पोथियों की टीका बनावना अधर्म से हटाकर भगवत्धर्ममें लगाना सदावर्त इत्यादि सब जगह और विशेष करिके जैसे बद्रिकाश्रम अयोध्याव हरिद्वारआदिक स्थानमें प्रवृत्तकरना व एकादशी आदि भगवत्के व्रत के दिन में जागरण करना व भगवत् कीर्तनका समाजहोना और जिसदिन भगवत्के अवतारहुयेहैं उसदिन और दूसरे त्योहार जो भगवत्केहैं तिनको भगवत्का त्योहार जानकर अति आनन्द और स्नेह और धूमधामकेसाथ उत्साहकराना और विद्याके पढ़नेपढ़ानेमें परिश्रम व उपायकरना ऐसेही और कामकि जिनके कारण करिकेलोगोंको भगवत्कीओर मन सम्मुखकरना यहसब सामग्रीबढ़ाने भागवतधर्मकी हैं जो कोई कि भगवत्भक्त हैं और केवल लोगोंके उद्धार व उपकारके निमित्त जिनकी मनोवृत्तिहै उनकीबड़ाई व वर्णनतो किससे हो सकती है कि वे कृतार्थ रूप हैं और जो कोई अपने यश व संसार के दिखाने केहेतु इस भगवत धर्म्म का प्रचार करता है वह भी भगवत् कोप्याराहै कि उसकेप्रभावसे सहस्रोंकी शुभगतिहुई व उसधर्मके पुण्य से अथवा किसीभक्तके आशीर्वादसे उसका मनभी भगवत्में लगिजायगा महिमा भागवतधर्म प्रचारकोंकी शास्त्रोंमें इसआधिक्यतासे लिखीहै कि जिसकावर्णन नहीं होसकता और एककथा अनन्ताचार्य्यकी जो पोथी प्रपन्नामृतमें लिखीहै स्मरणहुई कि उससेमहिमा ऐसेभक्तोंकी प्रकटहो-तीहै ठाकुरद्वार व नगरके मार्गजाने आनेकेबीचमें एकगड़हा पड़गया व रास्ता कठिनहोगया अनन्ताचार्य्यजी आप टोकरी और फावड़ालेकर उस गड़हेको भरनेलगे इसहेतु कि लोगोंको आने जानेका क्लेश नहोवै औरस्त्री उनकी कि वह गर्भवतीरही उसकोभी इसधन्धेमें शामिलकिया जब प्र-सवकाल समीपआया और उसस्त्रीको टोकरीके ढोनेसे क्लेशहोनेलगा तो भगवान्ने पण्डितका रूपबनाकर उनकीस्त्रीको आज्ञाकी तुम्हारेबदले में टोकरीढोताहूं तुमविश्रामकरो पश्चात् थोड़ेही विलम्बमें अनन्ताचार्य ने देखा कि स्त्रीकेबदलेपर कोईपण्डित टोकरीढोताहै पीछाकरकेदौड़े और कहाकि तुमकौनहो जो हमारेभागमें बलात्कार साझीहोताहै जब समीप पहुंचे तो भगवान्को एक भागनेबिना दूसरा उपाय न रहा और मंदिर में जा घुसे व अनन्ताचार्य्य जी सांवलिये पीछेहो जो मंदिरमें पहुंचे तो

भगवत्का श्रीअंग मिट्टी और धूलमेंभराहुआ देखकर बूझागया कि आप भगवत् आपरदया करके टोकरीढोतेरहे अनन्ताचार्य्यजी ने हाथजोरकर प्रेममें मग्नहोके बिनयकिया कि महाराज कृपाकरिके किंकरोंको उचित है न कि स्वामीको ऐसेबिचारसे सबलोगोंको उचित व योग्यहै कि अपने अपने अभिलाष व बिश्वासके अनुसार इस परम धर्मके प्रवृत्त करने में सब तनमन प्राणसे उपाय व परिश्रमकरें जिस किसीको जिसबोली में विद्याप्राप्तहुईहै और काव्यरचनामें चित्तकीवृत्तीहै तो भगवत् चरित्रोंही को रचना करै परंतु सैकड़ों काव्यकर्त्ता देखनेमें आये कि बिना अनाप सनाप बकवादके भगवत् चरित्रोंके ओर तनकभी एकाग्रचित्त नहींहोते और कोई कोई से बातकहने में आई कि तुम भगवत् यशवर्णन करके अपनीबाणी व अन्तःकरणको क्योंनहीं पवित्र करतेहो तो उत्तरदेतेहैं कि महाराज हम अभेदकावर्णन करतेहैं और कोईकहतेहैं कि समयका जैसा चलनहै वैसेहीपद पदार्थकी रचना का करना अच्छा होताहै और कोई कहते हैं कि कबिलोगोंका मन पद व अर्थकी रचनाके चिन्तन व्यतिरिक्त दूसरीओर नहींजाता यहभीतो भगवत् भजनहै बस ऐसेही ऐसे उत्तर अयोग्य निरर्थकदेतेहैं उनकावर्णन करनाव्यर्थहै तात्पर्य्य सब कहनेका यह कि जिसकाव्य व रचना व चित्रपदमें भगवत् चरित्रोंका वर्णननहीं वहकाव्य निराला निष्फल व अधमहै जैसेकोई परमसुंदरी चन्द्रवदनी स्त्रीहै औबिनावस्त्र नंगीहोवै व औरअधिक व्यवहार संसारका वैभव व धनपर निबन्धहै सो धनवानलोगोंको अच्छेप्रकार ज्ञात व प्रगटहै कि धन किसीके घर न पहिलेरहा न अब रहैगा शून्यहाथआये और इसी प्रकार चलेजावैंगे इस धनका नाममाया है और लक्ष्मी अर्थात् भगवत् पतिव्रता स्त्री है जहां उनका स्वामीरहैगा वहीं वह रहैगी नहीं तोतुरन्त चली जायगी अभिप्राय यहहै कि जो धनको सदा स्थिर करनेको चाहैतो भगवत् पंथमें उसको लगाके सदा सेवा वो भजन में काल व्यतीत करै सहस्रों शाहूकार औरऐश्वर्य्य मान होगये किसी कानाम भी कोई नहीं जानता और जिन लोगोंने ठाकुरद्वारा तड़ाग भजन कुटी इत्यादि बन- वाया अबतक उसका नाम प्रकाशित है और रहैगा अब बड़े शोच व मसोस की बातहै कि धनको पाइ कै भगवत् धर्मका प्रचार न करै ईश्वर

और जीव और संसार और स्वर्ग और नरक और भक्ति और ज्ञान और वैराग्य और सब रीति संप्रदाय व मतका जानना विद्या के आधीन है जबसे चारों वर्ण ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र में से शास्त्र का पढ़ना उठगया तबसे सब धर्मों का नाश होगया दक्षिणदेश चीनापट्टन व तिलंग व द्राविड़ व बारह मल्हार में रीति है कि जो किसी का लड़का शास्त्र पढ़ने में मन न लगा के क्रूरता करता है तो उसके बड़े लोग वहां के देशाधिपति से आज्ञा लेकर पैरों में बेड़ी डालकर पाठशाला में भेज देते हैं और जब तक शास्त्र न पढ़लेवे बेड़ी नहीं निकालते इस कारण से उसदेश के सबलोग धर्मोंमें स्थिरहैं और ब्राह्मणसे लेकर नीचजात पर्य्यंत कोई मनुष्य इष्ट उपासना से शून्य और अज्ञ नहीं और विरुद्ध धर्मी लोगोंके वचन फांसमें थोड़े फँसते हैं इसहेतु जहांतक होसके और अपने वो बिरानेको शास्त्र पढ़नेकी सहायता करे जो संस्कृत न पढ़सकै तो भाषा का पढ़लेना मनोर्थको पहुंचा देताहै सूरसागर तुलसीकृत रामायण को भगवत् ने ऐसा प्रतापदियाहै कि जो नेम करके पढ़ते हैं वो निश्चय भगवत्के प्यारे होजातेहैं और इसी प्रकार नन्ददास वो कृष्णदास वो परमदास वो छीतस्वामी इत्यादि की बानीको प्रतापहै औ भक्तमालकाबाक्य तो प्रारंभही में लिखागया भगवत् कथा कहलाना और उसके सुनने की शिक्षा देना और अपने अनुगामी व पुत्र पौत्रादि को जिसप्रकार व्यवहार संसारिक के सिद्धके हेतु प्रवृत्तमाना विद्याको पढ़ातेहैं वो शोच करते हैं इसीप्रकार भगवत् की ओर लगाना और भगवत् सहस्रनाम वो गीता वो स्तवराज इत्यादिक स्तोत्रों का पढ़ादेना अति प्रयोजन से है और जोकोई अपने वंशको और अनुगामी लोगोंको भागवत् धर्म में नहीं लगा देते व भगवत् धर्म के सम्बन्ध की विद्या नहीं पढ़ाते सो जोपाप जीवनपर्यंत उनसे होतेहैं उनके वहीकेशिर हैं क्योंकि पढ़ादेना उन विद्यार्थीका उनपर उपकारथा सो न किया व जिनकेवंशमें भगवद्भक्त होतेहैं तो अपनेपुरुषोंकोभी नरकसे उद्धारकरके मुक्तकरदेते हैं इनमें प्रह्लादआदिक भक्तोंकी साक्षीहै हे कृपासिंधु हे दीनबंधु हे भक्तन [illegible] इसनकंसाथे किंकरकी ओरभी निगाहहै कि जिनआपके भक्तजनों के और कोई शरण और रक्षकभी नहीं जो सेवकोंको और

दृष्टिकरोगे तो अगणित जन्मोंतक मेराठिकाना नहींलगैगा इसहेतु केवल कृपा व दयाका आसराहै व यद्यपि यह बातजानताहूं कि जितना विमुख व संसारीलोगोंकी स्तुति व आराधना व मुखजोहन व मनरंजन करताहूं व भयसे उनसे कम्पमान रहताहूं जोउसके सहस्रवें भागमें एकभागभी आपका भयकरिके भजन स्मरणमें व्यतीतकरूं तो एकक्षण में बेड़ापार होताहै परंतु यहमन ऐसाभाग्यहीन व दुष्टपापीहै किभूलकेभी उसओर नहींलगता जोअबभी मूर्ख मतिमंद मन ऐसाचिंतवन आपका करता रहै तो शीघ्रअपने परम मनोर्थको प्राप्तहैसकताहै श्रीयमुनाजीके किनारे एक बाटिका परम मनोहरहै कि जिसमें सुंदरमार्ग व क्यारियों में जलचल रहाहै और सबप्रकारके फल व फूलोंके वृक्षोंपर हरीलहलही डहडही बेलछायरहीहैं व बीचमें फुलवारी नानारंगके फूलोंकी छविदेतीहै मयूर कोकिल शुकसारिका कपोतसारस हंसआदिअपने मधुरशब्द व चहचहा हटसे बरबसमनको मोहितकरतेहैं उसबाटिकामें श्रीनँदनन्दन शोभाधाम अपनेसखनके संग भांतिभांतिके आनंद व खेलकररहे हैं मुखारविन्दकी शोभाकीउपमा सूर्य्यचंद्रमा मणिगण अथवा कोई फूल कमल व गुलाब आदिकी दीजाय तो उनमेंएकही एकप्रकारकी शोभाहै व इसमुखारविंद मनोहरमें उनसबकीशोभा एकहीजगहसम्पूर्णहै मुकुटजड़ाऊ मोरपक्षका शीशपर कानोंमेंकुण्डल कि उनमें फूलोंकेगुच्छेगुथेहैं बिराजमानहैं गलेमें मोतियोंकी कण्ठी व मणिगणकीमाला उसपरफूलोंकी मालाहै कड़े और पहुंची हाथोंमें सुबर्णतारी दुपट्टा जैसा कि खेलनेकेसमय बांधनाचाहिये बँधाहुआ व पीताम्बरकी धोती पहिनेहुये चरण कमलों में कड़े व झांझ शोभितहैं और खेलकी दौड़धूपमें जो पसीनाआगयाहै तिसकी छोटीछोटी बूंदें मुखपर झलकती हैं और अलकैं घुंघुरवारी जो पवनकेलगनेव दौड़ नेसेबिथुरिकै कपोलोंपर आईहुई हैं ऐसीशोभा व आनंद प्रगट करती हैं कि देखनेवालोंका मन बरबस हाथसे जाताहै॥

कथा ब्रह्माजी की॥

ब्रह्माजी जगतकेपिता व भगवत्भक्तों व सबधर्म प्रचारकोंमें श्रेष्ठहैं व भगवत् बिभूति स्वरूपहैं जबनाभि कमलसे उनका जन्महुआ व तप करनेके पश्चात् अपनी व संसारकी उत्पत्ति करनेकाज्ञान व सामर्थ्यपाई

तो भगवत्धर्मों को संसारमें प्रवृत्तकिया और अबतक ब्रह्माजीका उपदेश चलाजाताहै जिसप्रकार कि ब्रह्मलोकमें नारद सनकादिकोंको उपदेश करते हैं और जो कोई उत्तम कर्मकरके उनके लोकमें जाताहै उसको उपदेशभक्ति व ज्ञानका करतेहैं कि उसप्रभावसे मुक्तिहोजातीहै यहबात सब पुराणोंसे व्यवस्थितहै जबकबहीं उस भगवत् धर्ममें बाधापड़तीहै व उसकारणसे देवता व भगवत्भक्तोंको क्लेशहोताहै तब ब्रह्माजी भगवत्के अवतार होनेका उपाय करतेहैं और दुष्टोंका नाशहोकर भगवत् भक्ति की प्रवृत्ति होती ब्रह्माजी की कथा पुराणों में सब प्रसिद्ध लिखी हैं इसी हेतु यहां संक्षेप लिखा गया ॥ इति ॥

कथा शिवजी की ॥

शिव जी की पदवी भक्त राजहै व भगवत् धर्म प्रचार कों में राजा हैं भक्ति के प्रचार करने में यहां तक उद्यत हैं कि आप आचार्य्य होकर संसार को उपदेश करते हैं विष्णु स्वामी संप्रदाय के आचार्य्य शिव जी हैं व सेवड़े बढ़े तब स्मार्त संप्रदायमें शंकराचार्य्य का अवतार लेकर स्मार्त मत प्रवृत्त किया व क्षीर सागर से हलाहल निकला सब देवता भस्म होने लगे तब दयाकरके आप पान करगये ऐसी कृपालुता है व रसिक भक्त राज ऐसे कि सतीने वनमें रामचन्द्र की परीक्षा लेनेको जानकीजीका स्वरूप धारण किया तिस हेतु त्याग किया जब सतीने उस तनको छोड़ कर हिमाचल के यहां जन्म लिया तब बड़ी तपस्या करने से अंगीकार किया पार्वतीजीसे कहा कि राम नाम लेनेसे हजार नाम का फलहै पार्वती जीने बिश्वास दृढ़ करलिया व सहस्र नाम पाठ के पर्यांता को एक नाम लेकर शिवजी के बुलाने पर चली आईं आप अति प्रसन्न होकर अंगमें बायें ओर रखलिया एक समय भगवत् प्रसाद सनकादिकने दिया आनन्दसेबेसुधि होकर भोजन करिगये पार्वती को भूलिगये पार्वती ने शापदिया तुम्हारा निर्माल्य प्राज से जो खायगा नरकजायगा इस हेतु शिव निर्माल्य त्याग है एक समय शिवजी पार्वती के सहित चले जाते रहे एक जगह उजाड़में वाहनसे उतर और साष्टांग दण्डवत् किया पार्वती जीने कारण पूछा तबशिव जीनेकहा कि यहाँजनमहुआ एक सहस्र वर्षव्यतीत हुआ कि एक भगवत्

भक्त यहां हुआ रहा दूसरी जगह यह हेतुहै कि सहस्र वर्ष व्यतीतहो जायगा तब एक भगवत् भक्त यहां होगा इसहेतु यहदोनों खेरेदण्डवत् व पूजनके योग्यहैं ऐसे अनेकचरित्रहैं कोई कहते हैं शिवजी रामचन्द्र जीके बालस्वरूप के उपासक हैं सो ठीक है परन्तु जो दूसरी निष्ठाहैं उनसबमें भी वैसीही प्रीतिहै कि श्रीकृष्णचन्द्र महाराजके रास विलास के समय सखी रूप होकर पहुंचे व बीररसकी शोभा बड़ेउत्साहसे जाय के देखी इससे शिवजी महाराजज्ञानी भगवत्के भक्तहैं ॥

कथा अगस्त्यजी की ॥

अगस्त्यजी ऋषीश्वर परमभक्त रामोपासक वो बहुतविद्या के आचार्य्यहैं अगस्त्यसंहिता जिनकी बनाई हुई विख्यात है घट से जन्म है समुद्रको गंडूकमें धरके पानकरगये देवता दानवके बोझसे धरती उत्तर ओर नीची व दक्षिण ऊंचीहोगई तब अगस्त्यजी दक्षिणजारहे तब उन के प्रभावसे उत्तर ऊंची दक्षिण नीची होगई मन्दराचल पहाड़ पड़ा है खड़ा नहींहोता अगस्त्यजीने मांगा कि जब तक हम न आवें तबतक तू पड़ारह इसीकारणसे उत्तरको अगस्त्य जी नहीं आतेहैं वो मन्दराचल ज्यों का त्यों पड़ाहै ॥ इति ॥

कथा रामानुजस्वामी की ॥

जिसप्रकार भगवत्ने संसारके उद्धारके हेतु चौबीस अवतार धारण किये इसीप्रकार कलियुगमें चार अवतार धारण करके भागवत्धर्मको प्रकाश वो प्रवृत्तकिया व चारसंप्रदा को स्थापितकिया एक सनकादिक संप्रदा उसके आचर्य्य निम्बार्क स्वामी हैं दूसरा श्रीसंप्रदा कि उस के आचर्य्य रामानुजस्वामीहैं तीसराशिवसंप्रदा उसकेआचर्य्य विष्णुस्वामी हैं चौथे ब्रह्मसंप्रदा उसकेआचर्य्य माधवाचार्य्यहैं सबका वृत्तान्त संक्षेप से लिखाजायगा रामानन्द व्यासहित हरिवंशआदिने जिनसंप्रदाओंको प्रकटकिया तोअंतरगत चार संप्रदायकीहैं वो चारों संप्रदाय भक्तिरूपी भूमिके स्थिररखनेको दिग्गजोंके सदृशहैं चारोंसंप्रदाओं में श्रीसंप्रदाके आचार्य्य जो रामानुज स्वामीहुये कि जिनके प्रभाव करके कोटान कोट महापापी व पातकी संसारसमुद्रको तरिगये व तरतेहैं भक्ति व प्रताप की महिमा उनको सूर्य्य के समानप्रकट व विख्यातहै व जन्मसे लेकर

परमधाम जानेके तिनतक का वृत्तान्त स्वामी रामानुजजी के प्रपन्नामृत ग्रन्थमें सम्पूर्णलिखाहै व गुरुपरम्परा आरम्भ से रामानुजस्वामी तक यहां लिखा है और आगे केवल एकगादी कि रामानन्दजीकी कथा में लिखीजायगी और चौहत्तरगादीकी परम्परामिलनी अत्यन्तदुर्लभहै १ नारायण २ लक्ष्मीजी ३ विश्वकसेन ४ सटकोप ५ श्रीनाथ ६ पुण्डरीकाक्ष ७ राममिश्र ८ यमुनाचार्य्य ९ पूर्णाचार्य्य १० रामानुजस्वामी ॥

कथा स्वामीरामानन्दजी की ॥

यह रामानन्दस्वामी परम भगवद्भक्त व सिद्ध व आचार्य्य व भक्ति के प्रचार करनेवाले ऐसे हुये कि संसार समुद्र के उतरने के हेतु अपनी कृपा व सम्प्रदाका सेतु बांधा व अनन्तानन्द व सुरेश्वरानन्द व सुखानन्द व भावानन्द व पीपा व सेन व धनाजाट व रैदास व कबीरका उन्हींकी कृपा व प्रभाव और उपदेशसे हुआरहा यहस्वामी दक्षिणदेशमें एक संन्यासीका उपदेश लेकर स्मार्तकी रीतिसे भगवत् आराधन किया करतेरहे एकदिन फूलोंके लेनेको फुलवाड़ीमें गये वहां राघवानंदस्वामी जो रामानुज सम्प्रदाकेरहे उनका दर्शन हुआ उन्होंने कहा कि तुमको कुछ अपना वृत्तान्तभी ज्ञातहै कि तुम्हारा आयुर्बल शेष नहींरहा इस अन्तसमय में भगवत् शरण होजाना चाहिये रामानंदजीने अपने गुरु संन्यासीकेपास आयके सब बातकही उन्होंनेभी अपने ध्यानमें देखा कि सचहै रामानंदजीकी आयुबीत होगई परंतु कुछउपाय न होसका दोनों राघवानंदजीकी सेवामें आयके शरणहुये राघवानंद जी ने उनपर दया करिके मंत्र उपदेशकिया और रामानंदजीके प्राणको योगाभ्यास से दशवेंद्वार ब्रह्मांडमें पहुंचादिया जबमृत्युकी घड़ी टलगई तब फिर निकाल कर चैतन्य करदिया व बहुत आयुका वरदानदिया रामानंदजीने बहुत काल गुरुकी सेवाकी फिर तीर्थाटन करते बद्रिकाश्रमको और आयकुछ काल काशीवासकिया पंचगंगा घाटपर निवासरहा वहां खड़ाऊं उनकी विराजमानहैं फिरजब गुरुकी सेवामेंगये तब आचारी लोगोंने किया व आचारका वृत्तांतपूछा व जाना कि कहीं भी नियम आचार बनैंहैं पड़ताहै तब अपनेमेंसे न्यारेकरदिया राघवानंद उनके गुरुने आज्ञा दी कि तुम अपना पंथ अलग चलावो। रामानन्दजान करिके सम्प्रदा

चलाई वही रामानंदीभी कहलातेहैं इस संप्रदामें श्रीरघुनंदन व जान-कीमहारानीका ध्यान उपासनाहै व आचारी लोगोंकीरीति आचारनहीं है शास्त्रको मनसे यह सिद्धांत करलिया कि जोकोई भगवत्शरणहुआ उसको बंधनबरण आश्रमका नहीं सब अच्युतगोत्र होगये सबका भो-जन एक पंक्तिमें होताहै सो यह शास्त्र के अनुसारहै नारद पंचरात्रि इत्यादिकमें लिखाहै कि जैसेचारोंआश्रमहैं इसीप्रकार भगवद्भक्तिआश्रम है यह कि सब भगवद्भक्त एकबरणहैं भागवतमें लिखाहै कि जोब्राह्मण अपने सबकर्मोंमें सावधानहैपरंतु भक्तनहींतो उससे कोई नीचबरणजो भगवद्भक्त होय सो बरिष्ठहै और एक यहभी प्रमाण प्रसिद्धहै कि भग-वत्‌ने राजायुधिष्ठिरके यज्ञ होजानेकेपीछे बाल्मीकिस्वपचकोभगवद्भक्ति के कारण सब बर्णाश्रमवालों से अधिक प्रतिष्ठित किया इसबातमेंबहुत प्रमाणहैं सो यहरीति जो बरण आश्रम धर्ममें है तिनमें नहींहै जोकोई गृहत्याग कै किसी संप्रदामें भगवत् शरण होकर विरक्त होगये उनमें अबतक प्रवृत्तिहै व कपिलजीका स्थान गंगासागर में लुप्तहोगया रहा उसको रामानन्दजीने निर्देशकरके प्रकटकिया गुरुपरम्परा रामानुजसे लेकर गोबिन्ददास तक और दोगद्दी गलता व रामगढ़की अबतक की लिखीजातीहैं १ रामानुज २ देवाचार्य ३ प्रधानन्द ४ राघवानन्द ५ रामानन्द ६ अनंतानंद ७ कृष्णदास ८ कील्हदास ९ अग्रदास १० नारायणदास ११ गोबिन्ददास॥

कृष्णदास पयाहारी की कथा॥

कृष्णदासजी अनंतानंद के चेला व ब्राह्मणकुलमें जन्म ले ऐसे परम भगवत्भक्तहुये कि लाखोंको संसारसे उद्धारकिया कील्ह व अग्रदास केवलराम व हठी नारायण व पद्मनाभ व गदाधर व देवा व कल्याण इत्यादि सैकरोंचेले ऐसे सिद्ध व प्रेमभक्तहुये कि लाखोंका उद्धारकिया पहिले गलताजीमें योगीरहतेरहे कृष्णदासजीने अपनी सिद्धतासे नि-कालकर पृथ्वीराजराजाको चेताया व एकदरिद्री लड़के को राजा बना दिया ऐसे ऐसे अनेक प्रभाव व प्रताप जिनकेहैं॥

कथा गोबिन्ददास की॥

गोबिन्द दास नारायणदास जो नाभाजीका नामहै तिनके चेला रहे

व बड़ेभक्तहुये नाभाजीने प्रथम भक्तमाल उन्हींको पढ़ाई पीछे इन्होंने भक्तमाल को जगतमें प्रकाशकिया ॥

विष्णुस्वामी की कथा ॥

विष्णुस्वामी महाराज परमभागवत और प्रवृत्ति करनेवाले भगवत् भक्तिके हुये दक्षिणदेश ब्राह्मणवंश में हुये चारोंसंप्रदामें जो रुद्रसंप्रदा विख्यात है उसकेआचार्य्य स्वामीजीहैं यद्यपि यहसंप्रदाप्राचीनहै परंतु विशेषकरके प्रकाश विष्णुस्वामीसे है और शिवजी के नाम से विख्यात होनेकाकारण यहहै कि मुख्यआदि आचार्य्य इससंप्रदाके शिवजी महाराजहैं इसहेतु कि प्रथम इसउपासनाका उपदेश शिवजीने प्रेमानंदमुनि को किया इससंप्रदामें ईश्वरको शुद्धअद्वैत मानतेहैं और वह ईश्वर नंद नंदन वृन्दावनचंद्र गोलोक निवासी सर्वदा सातवर्ष की अवस्था अपने सखाओंके साथ खेलविहार करताहै ब्रजभूमि और गोलोकमें कुछन्यून विशेषनहीं तिलक व संन्यासकाहाल भेषनिष्ठामें वर्णनहोगा व जोरीति मुख्य इस संप्रदावालोंकी है उसके वैष्णव व तदनुवर्त्ती गुजरातदेश में विशेषहैं परंतु वल्लभाचार्य्यकी प्रवृत्तिकीहुई रीतिकेअनुसार अतिअधिक प्रवृत्ति इससंप्रदाकीहै यद्यपि रीति प्राचीन व विष्णुस्वामी व वल्लभाचार्य्य में कुछ भेदनहीं कि सब वालस्वरूप के उपासकहुये परंतु वल्लभाचार्य्यजीने कोई कोई भाव व रीति अपने अंतःकरण के प्रेमकी तरंगो के अनुसार ऐसीनिकाली कि बरबस चित्तको खोंजतीहै सो हालउनका कुछसूक्ष्मकरके वल्लभाचार्य्यकी कथामें व वात्सल्यनिष्ठामें लिखाजायगा और बाबालाल कि जिसका बड़ाविश्वास आलमगीर के भाई दाराशिकोह बादशाहको रहा सो वहभी इसीनिष्ठा और संप्रदामेंरहे कोईकोई माध्वीसंप्रदामें कहतेहैं परंतु निश्चयकरिके इसीसंप्रदाके अनुगामीहुये उन्होंने एक दोरीतिमें कुछ अदबदल करके अपनी रीतिपर प्रवृत्ति इस संप्रदाको किया व विष्णुस्वामी महाराजकी संप्रदामें करोड़ोंभक्त इस उपासना के प्रतापसे भगवत्पद को पहुँचे व मुख्य गुरुद्वारा विख्यात गोकुलमेंहै और गुजरातदेशमेंहै पर गोकुलकासानहीं ॥ गुरुपरंपरा १ शिवजी २ परमानंदमुनि ३ ज्ञानंदमुनि ४ प्रज्ञानमुनि ५ श्रीकृष्ण मुनि ६ नारायणमुनि ७ नमुनि ८ श्रीमुनि ९ शंकरभट्ट १० रुद्रभट्ट

११ गोपालभट्ट १२ श्रीधरभट्ट १३ श्यामभट्ट १४ रामभट्ट १५ सेत-
भट्ट १६ कृष्णभट्ट १७ दिवाकरभट्ट १८ कृपालभट्ट १९ विद्याधरभट्ट
२० दिनकरभट्ट २१ मधुनिधानभट्ट २२ ज्ञानदेवभट्ट २३ सुखदेवभट्ट
२४ शिवदेवभट्ट २५ शांतभट्ट २६ दयालदेव २७ क्षमादेव २८ संतोष
देव २९ धीरजलदेव ३० ध्यानदेव ३१ बिज्ञानदेव ३२ महाचार्य्य ३३
तत्वाचार्य्य ३४ नृसिंहाचार्य्य ३५ सुधाचार्य्य ३६ सुबुद्धाचार्य्य ३७
प्रबुद्धाचार्य्य ३८ प्रबोधाचार्य्य ३९ असूपाचार्य्य ४० रुद्राचार्य्य ४१
भगवंताचार्य्य ४२ रामेश्वराचार्य्य ४३ ब्रह्मविधिचरित्रा चार्य्य ४४
सुदयाचार्य्य ४५ लक्ष्मीनारायण आचार्य्य ४६ ज्ञानदेव ४७ नामदेव
४८ तिलोचनदेव ४९ श्रीविष्णुस्वामी ५० लक्ष्मणभट्ट ५१ ॥

वल्लभाचार्यजी की कथा ॥

वल्लभाचार्य्य परम भागवत व प्रेमी व संप्रदाके आचार्य्य संसार समुद्र सेपार उतारनेवाले हुये अपनेस्थान जन्मभूमिको छोड़करप्रथम गोकुलमें और फिर वृन्दाबन में आये भगवत् आराधन करनेलगे भगवत्से यह मनोर्थकिया कि वात्सल्य निष्ठा की रीति संसारमेंफैले इसहेतु गोकुलमें निवासकरके भगवत् सेवा पूजाकी ऐसीरीति व पद्धतिवात्सल्यनिष्ठाकी बांधी कि बखान उसभावका नहीं होसक्ता व स्वप्नमें भगवत्ने आज्ञाविवाह करलेनेकीदी हेतुयहहै कि जो कोई भक्त जिस दृढ़भावसे भगवत् आराधन करताहै तो भगवत् उसके हृदय में सिद्धपद को पहुँचजाने पर प्रेमभक्तिके साक्षात् उसी भावसे दर्शन देते हैं सो भगवत्ने एक ब्राह्मण को प्रेरणाकरके लड़की उसकी भेटकरायदी विवाहहुआ कुछदिन पीछे विट्ठलनाथ महाराजने जन्मलिया कि वात्सल्यनिष्ठाके भक्तोंमें उनकी कथालिखीजायगी उनके सातपुत्रहुये व सबपुत्रोंके नामसेसातगद्दी अब तकगोकुलमेंबिराजमानहैं कोईगद्दीमेंसातबार कोईगद्दीमेंनवबारसेवाकी रीतिहै श्रीराधिका महारानीको स्वकीयाभावसे भगवत् प्रिया जानकर आराधनकरते हैं परंतु पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन श्रीकृष्णमहाराज को मानतेहैं इससंप्रदाके अलौकिक भावकी कथा कुछकही नहींजाती जो बाबानंद और यशोदा महारानी लाड़लड़ाते होंगे उसी प्रकार गोसाईं गोकुलकाभावहै आंगनसे घरको बहुतऊंचा नहींरखते इसबिचारसे कि

ऐसानहो कि लड़का घुटुवन चलतेगिरपड़े शयनकेसमय ऊंचेशब्दसेनहीं बोलते इसहेतु कि प्रेमसुकुमार लड़का कच्चीनींदमें न जागपड़े ऐसे ऐसे सहस्रों अलौकिकभावहैं और यहांतक एक औरदृढ़भाव अपनी निष्ठामें है कि जिस समय भगवत् शयन करते हैं अथवा वे समय कोई मनुष्य संपूर्णसंसारकाधनचढ़ानेवाला आनावे तो क्याबात कि मन्दिरखोलें वरु जयपुरकेराजा इसबातकी परीक्षाभी लेचुके हैं और अबतक वहीभाव व रीति वर्त्तमानहै किसीगद्दीमें पचासहजार किसीमें तीसहजार चालीस हजार रुपैया सालकी आमदनीहै सबभगवत् आराधन और सजावट शोभा व सामग्री बालस्वरूप व रागभोग इत्यादिकमें उठायदेते हैं इस परं अगीरहतेहैं यहगोसाईं गोकुलस्थ पदवीसे विख्यातहैं जैसाउत्तम भाव इन गोकुलस्थ गोसाइयोंकादेखा औरसुना सो लिखनेमेंनहीं आ-सक्ता और उनके चेलोंको जैसी भावभक्ति गोसाइयोंमें है वहभी वर्णन नहींहोसक्तो मारवाड़ और गुजरातमें सेवक इससंप्रदाके बहुतहैं वल्लभाचार्य्यके कुलमें बहुतलोग भक्तपहुंचेहुये औरसिद्धहुये और जो उनके कृपाके अवलम्बनसे भगवत् पारायणहुये उनको गिनतीकौन करसक्ता है और वल्लभाचार्य्य स्वामीकेभावको ध्यानकरके देखनाचाहिये अपना नामभी अपने भावके अनुकूल विख्यातकिया यह कि वल्लभगोप जाति को कहतेहैं जिसजातिमें बाबा नन्दरायजी रहे सो अपने कुलको वल्लभ कुल अर्थात् गोपकुल विख्यात किया एकसमय एक साधु व्रजमें आया बटुआ शालग्रामका छोड़कर वृक्षकीडालपर झुलाकर वल्लभाचार्य्यजीके दर्शनोंको गया जबआया तब बटुआ न मिला तब आचार्य्यजी के आगे वृत्तांतकहा तबउन्होंने आज्ञादी कि तुमकैसे सेवकहो स्वामीको छोड़कर इधर उधर फिरतेहो साधुने विनय करके फिर आकर जो देखा तो सैक-ड़ों बटुआ एक भांतिके उस वृक्षपरदेखे फिर आचार्य्यजी से जाकर वृ-त्तान्त निवेदन किया आपने आज्ञाकरी कि तुम कैसे सेवक हो अपने स्वामीको नहीं पहिचान सक्ते हो साधुचुपरहा अन्तःकरणका अभिप्राय यह आचार्य्यजीका समझकर चरणोंमेंपड़ा और अपनाबटुआ शालिग्राम जी का लेकर भगवत् आराधनमें लगा अभिप्राय यह कि उपासक को चाहिये कि इष्टदेवको अपने शरीरसेअधिक जाने और यहकाम होताहै जबतो

भगवत्में निष्ठा व प्रीतिराखै यहनहीं कि स्वामी डारमें आप बाजारमें अब बल्लभाचार्य्यजी की गुरुपरम्परा लिखीजातीहै परंतु सातगद्दीमें कई गद्दीनहोने पुत्रके पुत्रीके वंशकेपासहैं दो तीनगद्दी निज बिट्ठलनाथजी के वंशकेपासहैं समझकर उनमें से एकगद्दी की परम्परा लिखना बहुतहै सो लिखीजाती है। बिष्णुस्वामी। लक्ष्मणभट्ट। बल्लभाचार्य्य। बिट्ठलनाथ। गोकुलनाथ। रघुनाथ। यदुनाथ। घनश्याम। बालकृष्ण। गोविन्दस्वरूप। गिरिधरराय। वृन्दाबनदास। कृष्णदास। दामोदरदास। स्वामीशुकदेव। स्वामीहरिचरण। स्वामीतुलसीदास। हरिशरणजीव। मोहनदास। सीताराम। मनसाराम। आदि विद्यमानहैं॥

कथा माधवाचार्य्य की॥

माधवाचार्य्य स्वामी ब्रह्मसंप्रदामें परम भागवत व भक्त आचार्य्य व प्रवृत्तिकरनेवाले इससंप्रदाकेहुये यद्यपिसंप्रदा प्राचीनहै परंतुमाधवाचार्य्यस्वामीने संपूर्ण संसारमें प्रकाशितकी माधवी संप्रदाकरिके बिख्यात इसीहेतुहुई ब्रह्मसंप्रदा इसहेतुसे कहतेहैं कि प्रथम भगवत्ने इससंप्रदा कीरीति ब्रह्माजीसे वर्णनकी ब्रह्माजीने गुरू चेलेकी परम्परा करिकै जो भक्तलोग परम्परामें लिखेगयेहैं तिनको उपदेश करिके प्रवृत्तिकिया और कोई कोई गोड़िये औरकोई महाप्रभु संप्रदावर्णन करतेहैं तिसका हेतु यहहै कि श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु गौड़देशके रहनेवाले इससंप्रदामें आचार्य्य और भक्तनामी भगवत् अवतार हुये सम्पूर्ण गौड़ बंगाले देशको शिक्षाकरिके भगवत् सन्मुखकिया इसहेतु महाप्रभु गोड़ियेनाम सेभी बिख्यातहुये उड़पी माधवाकरिकै भगवत् माधवाचार्य्य जी ब्राह्मण वेष द्राविड़देशमें उड़पी कृष्णागांव में कांचीपुरीसे पश्चिम दक्षिणकोने परहैं तहांहुये शारीरकसूत्र और गीताजी परभाष्य रचनाकिया निश्चय इस उपासनावालों का यहहै कि ईश्वर तटस्थहै उसकी प्रेरणासे माया जगत्को रचतीहै और यद्यपि इसनिष्ठा में ध्यान और आराधन बिष्णु नारायणका प्राचीनरीतिसे है परंतु अब वह माधवाचार्य्य महाराज के समयसे उपासना श्रीकृष्ण अवतारकी इससंप्रदामें बर्त्तमान हैं और ईश्वर पूरण सच्चिदानन्दघन श्रीकृष्ण कामी गोलोक निवासीको मानते हैं और माधुर्य्य निष्ठासे कि उसकावर्णन उन्नीसवीं निष्ठामेंहोगा ध्यान

और चिन्तवन करतेहैं यद्यपि माधुर्य्य निष्ठामें युगुल स्वरूप काध्यान और चितवन योग्यहैं और युगुल स्वरूपही का आराधन वा सेवा इस संप्रदा में प्रवर्तमानहै और राधिका महारानी में परकिया भाव रखते हैं परंतु ईश्वरता औ अद्वैतता और पूरण ब्रह्मता श्रीकृष्ण स्वामी में चिन्तवन करतेहैं कि उनके भाष्य और दूसरे ग्रंथोंसे वहबात प्रकाशितहै इस संप्रदा में लाखों भक्त और सिद्धनामी होगये और होते हैं और आवागमनके दुःख को दूर करनेके निमित्त भगवत् ने एक उपाय ऐसा विचारिके कियाहै किबिना परिश्रम इससंप्रदा के अवलम्ब से कड़ोरों महा अधम भगवत्को प्राप्त होते हैं यद्यपि दक्षिण देश में प्रकाश इस उपासनाका बहुतहै गुरुद्वारे बड़ेबड़े वहांहैं परन्तुइस समय ब्रजमें और बंगालेमें भी यहसंप्रदा विशेष प्रकाशितहै और वृन्दावनमें कई गुरुद्वारे विख्यात व प्रसिद्ध हैं जैसे मन्दिर गोविन्द देव और मदन मोहन वा शृंगार बट इत्यादि हैं किजिसका प्रभाव प्रसिद्ध है जिनको भगवत् के दर्शन और दीक्षा लेनेका विचार होता है वहवहां दीक्षा लेताहै परीक्षा माधवाचार्य्य स्वामीकी लिखनेका कुछ प्रयोजन नहीं इतनीही बहुत है किजिनकानाम लेकर और उनकी पद्धति सिद्धान्त के अभ्याससे कड़ोरों महापापी भगवत् भक्त होकर अपने वांछित पद को पहुंचे अब उनके घरकी गुरुपरम्परा गुरूचेलेके रीतिकी एकदो गुरुद्वारे की लिखी जाती है इससंप्रदामें सहस्रों गुरुद्वारे हैं सबकी परम्परा मिलना और लिखना कठिन है एक लिपिसे श्रीकृष्ण चैतन्य महा प्रभु के चेले स्वरूप दामोदर और उनके चेले गदाधरभट्ट और उनके चेले कृष्ण ब्रह्मचारी जाने जातेहैं यह थोड़ा विरुद्धहै सो कुछ बातनहीं परम्परामें भक्तमाल के अनुसार जो निश्चय समझनेमें आया सो लिखा। श्रीनारायण। ब्रह्मा। नारद। वेदव्यास। सुबुद्धाचार्य्य। नरहराचार्य्य। माधवाचार्य्य। अक्षोभ्यतीर्थ। विद्यामान। महानन्दतीर्थ। राजेन्द्रमुनि। जयधर्ममुनि। ईश्वरपुरी। श्रीमाधवपुरी॥

नित्यानंद जी की कथा॥

नित्यानंदजी महाराज ऐसे परमभक्त और भगवत् धर्म्मपरायणहुये जिनकी महिमा और प्रताप संपूर्ण संसारमें विख्यातहै जिन्होंने गौड़

देश बंगाले में पाषण्ड और अधर्मको दूर करके भगवत्भक्ति और उपासना का प्रचार चलाया जन्म महाराज का नदियाशांतीपुर बंगाले देशमें हुआ श्रीकृष्ण चैतन्य महा प्रभुके भाईरहे गौड़देश के लोगों को भागवतधर्मसे बिमुख देखकर दयाआई क्लिष्ट तपकरके भगवतको प्रसन्न किया वरदान हुआ तब भगवत्भक्ति को संपूर्ण उपदेश में नित्यानंदजी ने गुरू और महंत रूप होकर फैलाया अबतक उसदेश में इस प्रकार भक्तिका प्रचारहै कि बहुत भगवत् पारायण होते हैं व घर छोड़ कर श्रीवृन्दावन बास करतेहैं जो भाव औरप्रेम उसदेश के रहनेवालों का श्रीवृन्दाबन में देखा लिखानहीं जासक्ता अबभी वृन्दाबनमें आधे वेही लोगहैं भगवत्भजन और कीर्तनमें रहते हैं ॥

श्रीकृष्ण चैतन्य महा प्रभु की कथा ॥

श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु नित्यानंदजी के छोटे भाई श्रीकृष्ण महाराजके अंशावतार हुये गीताजी में भगवत् का वचन है कि जबधर्मका नाश और अधर्मकी प्रवृत्तिहोतीहै तब धर्मके स्थापन और अधर्मकेनाश के हेतु मेरा अवतार होताहै सोगौड़देश बंगाले में भागवतधर्म व भगवत् भक्ति नहींरही विपरीत धर्म प्रवृत्त हुआ रहा इस हेतु भगवत्ने वेदमार्ग स्थित करनेके लिये जैसे ब्रजमें अवतार लियाथा इसी प्रकार बंगाले में सचीजी के उदरद्वारा प्रकाश किया सातवर्षकेवय क्रम में केशव भट्ट काश्मीरी ब्राह्मण को वादमें क्षणमात्रमें जीतकर कृपाकरके भगवत्भक्त करदिया कि स्पष्ट वृतांत केशवकी माधुर्य्य निष्ठा में लिखाजायगा एक समय महाप्रभु जगन्नाथ रायस्वामीके आगे कीर्तन में ऐसे बेसुध प्रेम में होके तन्मयहोके चतुर्भुजी रूप होगये तब सबलोग कहने लगे कि इस पुरीका प्रभाव है सिद्धताई क्या है तब महाप्रभु ने अनुजाई व सेवक आदिके विश्वास व भक्तिके दृढ़ताके हेतु छः भुजा धारणकी अबतक सबको दृढ़विश्वास हुआ सो पुरीमें महाप्रभुके छः भुजा स्वरूप के अद्यापि दर्शन होते हैं ॥

कथा रूप सनातन जी की ॥

रूप और सनातनजी दोनो सगेभाई प्रेमभक्त वा भागवत धर्म प्रचारक हुये ये दोनोंभाई गौड़देश बंगालेके रहनेवाले और बादशाही अधिकार

वाले रहे धनवान बड़ेरहे एकरात रुपैया गिनते गिनते प्रभात होगया
तबदोनों भाइयोंको ग्लानि आई व आपसमें विचार किया कि देखो जो
भगवत् भजन व समाजमें बैठते तो घड़ी घड़ी बूझते रहते कितनीरात
गई इसव्यर्थ कार्य्य झूठेमें कुछ ज्ञान न रहा कि कितनी रात गई यह
विचारकर अपने गुरु नित्यानंद महाप्रभुकेपास आयके शिक्षामांगीगुरुने
आज्ञादी कि व्रजभूमिमें जाव वहांके वन और स्थान सब श्रीकृष्णस्वामी
के विहार के जो कालपायके गुप्त होरहेहैं तिनको प्रकटकरो और ग्रंथ च-
रित्र व लीला माधुर्य्य व रसविलास का फैलायो उसी आज्ञाके अनुसार
दोनोंभाई आयके व्रजभूमिमेंपहुंचे पहुंचतेही आपसे आपरम्यता उसभूमि
का कियां पवन सुखदाई व हरिआली आकर्षण करनेवालोंमें रूपमाधुरी
में श्रीप्रिया प्रीतमके उन्मत्त व बेसुधिहोगये और ऐसीगन्ध प्रेमप्रियाप्रीतम
महाराज की प्राणके मस्तकमें पहुंची कि दुःखसुख सबभूलके प्रेमआनंद
में मग्नहोगये जब सुधिहुई तब व्रजगांवके लोगोंसे पूंछा कि व्रजकहांहै
एकने उत्तरदिया कि तेराबाप अन्धा होगयाहै यह व्रजनहीं औरक्याहै
गोसाईं महाराज इसगालीसे बड़े आनन्दित हुए प्रेमआनन्द में छकेहुये
पहिले श्रीमथुराजी फिर वृन्दावनमें पहुंचेदेखा कि श्रीयमुनाजी प्रवाह
मानहैं बन सघन हरित ऐसाछायरहाहै कि सूर्य्य का उदय अस्त नहीं
दिखाईदेता बहुत ढूंढनेसे दुइचार घरों की बस्तीमिली और रहनेवाले
वहांके वृन्दादेवीकी पूजा करनेको गयेहैं तब वहांसे वृन्दादेवीको ढूंढ़ने
चलेदेखा कि वे लोग एकजगह भूमिपर दूध दही चढ़ाकरचलेगये उसी
जगह टिके रातको वृन्दादेवीने दर्शनदिया कहा कि हमारास्वरूप इसी
जगहहै निकालकर स्थापितकरो गोसाईंजीने स्थापित किया अब तक
विराजमानहैं गऊआदेतीहैं तब पहिले उनको दूध चढ़ातेहैं औरगोविंद-
देवजीने गोसाईंरूपजीको स्वप्नदिया तब गोसाईंजीने उनको निकालकर
स्थापितकिया और पूजाकरनेके निमित्त अपने भतीजेजीव गोसाईंको कि
सेवी त्यागकेकर आपनये रहे आज्ञादी फिरपीछे राजामानसिंह आमेर
के राजमन्दिर बनवाया इन्होंदिनों अकबरबादशाहका क़िलाबनताथा पत्थर
लाल कहींनहीं मिलताथा राजाने बादशाह से आज्ञा लेकर मन्दिर
लालपत्थर निर्माणकिया तेरहलाखरुपैया केवलमसाले मेंलगाथा अब

तक वह मन्दिर वृन्दावनमें प्रकटचो विख्यातहै और महम्मदशाह बाद-शाहके समय राजाजैसिंहने बाराहपुराणमें सुना कि गोविन्ददेवकेदर्शन करनेसे जीवका आवागमन छूटजाताहै बड़ीप्रीति व प्रार्थनासे वहमूर्ति जयपुरलेगया वहां बिराजमानहै वृन्दावनमें दूसरीमूर्ति स्थापितहुई व गोसाईं रूपजीने गुरूकीआज्ञा व शिवजीके स्वप्न देने से बहुतग्रन्थ भक्ति रसामृतके रससिद्धान्त व भगवत् अमृत इत्यादिसब पांच लाखश्लोकमें रचनाकिये एकश्लोकमें प्रियाजीकी वेणीकी उपमा लिखी कि नागिनीके सदृशहै गोसाईं सनातनजीका यह विचारहुआ कि रूपजीकीकाव्य अधिक मधुरहै परन्तुप्रिया प्रीतमकाभाव अच्छेप्रकार नहीं समझा क्रूरजन्तु की उपमावेणीकीदी कि वहपरम सुकुमारी चित्रके सांपकाभी देखते भय करतीहैं यहां ध्यानपर खटकतारहा एकदिनबनमें घूमतेदेखा कि एकवृक्षके नीचेएक लड़का परमसुन्दर व कईएकलड़कियां परमसुन्दरी तिसमें एक लड़की ऐसीसुन्दरी कि कभीऐसी सुन्दरी न देखीरही हिंडोरा झूलते हैं यहलड़की परमसुन्दरी चुनरीओढ़े है तिसमें वेणीश्याम नागिनिसीऐसी लहलहातीहै कि नागिनिमें औरउसमें तनकभेदनहीं गोसाईंसनातनजी देखके घबराये पुकारा मारमार करकहाकिकोई दौड़कर नागिनिको इस सुन्दरीकेशिरपरसे उतारो यहकहिके बेसुधहोगये जब सावधानभये तब श्लोकरूप गोसाईंजीका स्मरणहुआ और जाना कि लाड़िलीजीने उस श्लोककेभावके सन्देह दूरकरनेके कारण यहचरित्रकियाहै रूपजीकेपास आयेपरिक्रमा करिके सबबातकही देखियेगोसाईं सनातनजी बड़ेभाईरूप गोसाईंजीकेथे परन्तु भक्तिमें उनको बड़ाजानकर दण्डवत् औरपरिक्रमा करि गोसाईंरूपजी मोटेरहे औरगोसाईं सनातनजी सुकुमार औरनित्य परिक्रमा ब्रजकी कियाकरतेथे एकदिन परिक्रमा करेपीछे जोरूपगोसाईं के पासआये तोरूप गोसाईंको यहध्यान चित्त परआया कि सनातनजी अपनेघरपर ऐसेपदारथ भोजनदिव्य व मधुर खातेरहे कि सबकोनहीं मिलसक्ता अबसूखीरोटी मधुकरीवृत्तिसे कैसेतृप्तहोतेहोंगे यह ध्यानही थाकि श्रीलाड़िलीजी दूध व चावल व औरसब सामग्रीसमेत ब्रजबासी कीलड़कीका स्वरूपधरके लेआईं व अतिकोमल बचनसेबोलीं किहमारी गाय आज ब्याजना है मेरीमाने यह सामग्री तुम्हारे लिये भेजी है

दोनों गोसांइयोंने उससामग्रीका भोजन बनाकर भोगलगाया वहस्वाद पाया कि कभी अपनी अवस्था भरमें किसी वस्तुमें नपायाहुआ रहा सनातनजी ने रूपजी से इसका कारणपूछा तब उन्होंने मनकी बात सब कही तब सनातनजीने कहा कि सबऐश्वर्य्य वा संपतिके त्यागदेनेपरभी जिह्वा का स्वाद रहिगया कि जिसके हेतु लाड़िलीजी को परिश्रम हुआ अब आगेको चेतरहे एकदिन वृन्दावनमें समाजहुआ सब भगवत् भक्त व साधु इकट्ठे हुए ऐसे प्रेम व अनुराग के साथ कीर्तन व भजनहुआ कि जितने लोगरहे सोसब प्रियाप्रीतमके प्रेममें छकके बेसुधि होगये परंतु रूपजी गोसाईं अपने चित्तको दृढ़ करके खड़ेरहे गोसाईं करनपुरीजीने देखा कि रूपजी महाराज सब प्रेमियों के अग्रगण्य हैं उनको जो प्रेम भगवत् का न आया तो औरों के निमित्त अच्छानहीं रूपजी के पासगये समीप पहुँचे तो उनके श्वासकी ऐसी तप्त पवन गोसाईं करनपुरी के शरीर को लगी कि फफोले उपट आये गोसाईं रूपजीने आज्ञाकी कि जिनको कुछ शरीरका सम्बन्ध रहगयाहै असावधानताई उनकोहै और जिन लोगों को शरीरसे सम्बन्ध नहींहै उनका मनदेखना चाहिये शरीर नहीं यहांतक कथारूप गोसाईं की लिखीगई सनातनजी सिवायकमगडलु कौपीनके और कुछनहीं अपनेपास रखतेरहे विचारतेहुए एकभाट केघर पहुँचे उसके घरमें स्वरूप मदन मोहनजी का विराजमान रहा सनातनजी दर्शन करके आशक्त होगये और नित्य उसके घरपर जाया करते और आंखोंसे आंशूकाजल बहाकरते उस भाटने कि पहिले साहूकारी करतारहा अब दरिद्री होगया रहा समझा कि जैसा इस मूर्त्तिने हमकोदरिद्री व भिखारीकिया क्याजानेइनकोभी ऐसाही भिखारी किया हो कि इसमूर्त्ति को देखकर रोया करतेहैं भाटने गोसाईंजीसे पूछा कि महाराज क्याआपकोभी धनसम्पत्ति सुखोंसे इसमूर्त्तिने बेचैनकरदिया है गोसाईंजी व विश्वासताभाटकी सिवायके बोले कि भाईमेरेसाथ इस मूर्त्तिने कुछभी नहींकिया जो मेरे साथकियाहै भाटनेकहा कि क्याउपाय करूं गोसाईंजीनेकहा कि इस भगवान्को अपने घरसे बाहर निकाल देनाहीतो न जानिये क्याकरै उसनेकहा कि [illegible] ऐसाकुछ [illegible] तो कौन लेवैगा गोसाईंजीनेकहा कि मैंलेजाऊं जोकुछ इसको करनाहुआ सो

करचुका मैंलेजाउंगा सोलेआये और वृन्दावनमें विराजमान करके पूजा सेवाआरम्भकिया भिक्षामांगके भगवत् को भोगलगाया करते एकदिन भगवत्नेस्वप्नमें आज्ञादी कि थोड़ासा लोनभी लायाकरो जबलोन लाने लगे तब आज्ञादी कि थोड़ासाघीभी लायाकरो तब घीभी भिक्षामांगके लायाकरैं तबबोले कि बनमेंसे तरकारी लेआना सहजहै वहभी लायाकरो तब सनातनजीने प्रेमकीदृष्टिसे ध्यानकिया कि मदनमोहनजी चटोरे होगये मेरेबैरागको धूलमें लाकर मुझकोभी चटोराकिया चाहतेहैं तबवि-नतीकी कि जो ऐसाहीस्वाद जीभकाहै तो कोईधनाढ्य किंफिर ढूंढ़लीजिये और यहकहकर बाहरआयबैठे संयोगबश किसी साहूकारकी नावमाल भरीहुईअकबराबादको जातीरही जबवृन्दावनमें कालीदहके समीपपहुंची तो रुकिगई साहूकारने बिकलहोकर अपने आदमियोंको चारोंओरभेजा कि देखो इस बनमें कोई फ़क़ीर साधुहै कि जिससे इसकी निवेदन करें आदमियोंने जाकरकहा एकसाधु बैठे हैं साहूकार आयके चरणोंमेंपड़ा गोसाईंजीने उसको भगवत् के आगे लेजाकर कहा कि जोकुछकरतूतहै इसबाबाकीहै बिनतीकरलेसाहूकारहाथजोड़कर उसकीसेवाकीआज्ञाकी आशाकर खड़ाहुआ भगवत्की आज्ञाहुई किमन्दिरअच्छासङ्गीन बनवादे व रागभोगके बयानकरदे साहूकारने अङ्गीकारकिया नावरवानेहुई सा-हूकारने मन्दिर बड़ाभारी बड़ी भक्ति से निर्मित किया व राग भोगके निमित्तमहीना बन्धानकरदिया जबसब सामग्री भगवत्सेवाकी जुटिगई तबसनातनजी वहांका अधिकार कृष्णदास ब्रह्मचारीको देकर आपब्रज मण्डलकी परिक्रमा को चले गये एकबेर मानसरवरके तटपर नंदगांव के समीप एकहींसके वृक्षकेनीचे तीनदिन बैठेरहगये चौथेदिन भगवत् सुन्दरमनोहर स्वरूप एक ब्रजबासीके लड़केका स्वांगधर लालचीरा शिरपर महीन पीताम्बरी पहिने कटिपीत पटसेकसेहुये एकरङ्गीन छड़ी कुक्षमें दबायेहुये थाली दूधभातकी लेकरआये गोसाईंजीकोदो व कहा किसहेतु गांवके समीप जायके नहींबैठता यहांबनसें कौनतेरे निमित्त खानेको लायाकरै भगवत्ने हाथपांव दियेहैं बिना सुकृतकामाल खाना अच्छानहीं गोसाईंजी इनबातोंको सुनकर परम आनन्दमें मग्नहोगये इसीप्रकार तीनदिन भोजन ब्रजचन्द्रमहाराज पहुंचातेरहे तबगोसाईंजी

नष्प्यारेको अनदेना उचित न समझकर पतानाम गांवका पूछकर हु-
र दिन बहुतढूंढ़ा कहींपता न लगा तबबहुतविकलहुये और अनेकभांति
ोचकरनेलगे तबस्वप्नहुआ कि यह लड़का हमहीहैं जैसीतुम्हारी इच्छा
ैव हमकरें तबगोसाईंजीने विनयकिया और उसस्वरूप अनूपके ध्यान
रूपी आनन्दके समुद्रमें मग्नहोगये ॥

गोसाईंनारायणभट्टकीकथा ॥

गोसाईं नारायणभट्ट प्रेमीभक्त भागवत धर्मके प्रवृत्त करने वालेहुये
ौर यहगोसाईंजी चेले कृष्णदास ब्रह्मचारी चेले सनातनजीपुजारी ठा-
ुरद्वारे मदनमोहन के सेवकहुये गुरुसेकथा श्रीभागवत दशमस्कन्ध जो
ाल चरित्र इत्यादिक जोसुन सखनके संगजो खेल व गोपियोंके संग
ासविलास सब गोसाईंजीके हृदयमें समायगई तबयह अभिलाषहुआ
क वह सब स्थान जहां जहां जो क्रीड़ा कियाहै दर्शन करते सो उनका
ता मिल न सका क्योंकि पांचहजार वर्ष भगवत् अवतार को व्यतीत
ए गोसाईंजी परम भावसे आराधन भगवत्में लीनहुये भगवत्ने अपने
क्तका मनोर्थ पूर्णकरनेको हृदयमेंप्रकाश किया व सब स्थानवाराह
संहितामें जैसे लिखेहैं सब दिखलायदिये उसी अनुसार नारायण भट्ट
ीने बनउपबन व गृह कुंज व विहार स्थान प्रकट किये सो सबका
र्णन कौनसेहोसक्ताहै परंतु मुख्य २ स्थानों को लिखते हैं ॥

दर्शन स्थानों का गोकुल व महावन का ॥

रोहिणी मन्दिर व श्यामनन्दिर कि जहां जन्म भगवत् का हुआ किला महावनमें विख्यात है ॥

गोपकूप कि सोमवतीअमावसके दिन किनारे तक जल होकर फिर ज्यों का त्यों होजाता है ॥

ब्रह्मघाट जहां नन्दनन्दन महाराज ने माटी खाई व अपनी माता यशोदाजी को अपने मुख में सब ब्रह्माण्ड दिखलाये ॥

दर्शननन्द बाबा व यशोदा माता विहरनस्थान सबमथुराजी-अर्थात जहांकंसको मारकेविश्रामकिया ॥

कालसमुद्र कूप

पूतना खार जहां पूतना का प्राण दूध के बहाने खींच लिया ॥

दर्शन ह्यरुकायोग कि जो मन्द पातके नाम से कहूकार ने बनवाया

घाट सब जैसे बैरागघाट रामराजगाकुटी छाकबिहारी कृष्णगङ्गा घाट व अक्रूरघाट व बैकुण्ठघाट व कण्ठाभरण ॥

बङ्गालीघाट व सूरजघाट इत्यादि विवरन स्थान सब श्री वृन्दावनके ॥

मंदिर श्री गोबिंददेवजी व गोपीनाथजी व मदनमोहन जी व राधाबल्लभजी व बांकेबिहारी व अटलबिहारीजी व चौरासीखम्भाव आठखंभा दही बिलोवने यशोदाजीका स्थान ॥

रमनरेती जहां नन्दनन्दन महाराजने अपने सखनसंग भांतिभांति की लीलाकरी ॥

यमलार्जुन वृक्ष ऊखलसे अटकायके नंदनंदन महाराजने गिराये ॥

दर्शनसातगद्दी गोकुलस्थगोसाईं लोगोंकी जिनकावर्णन बल्लभाचार्य की कथामें हुआ ॥

रानीघाट व यशोदाघाट व बल्लभाघाट इत्यादिक मंदिर केशवदेवजी जहां चतुर्भुज रूप होकर प्रकट हुये रंगभूमि जहांकंसको मारा ॥

कंसखार जहां कंसको मारकर डाला ॥

दर्शन ठाकुर वाराहजी ॥

क्षेत्रादिक इधर उधरजेहैं मथुरा देवी भूतेश्वरमहादेव सप्तऋषि टीवी बलिटीवा दशाश्वमेध चक्रतीर्थ ध्रुवक्षेत्र सरस्वतीकुंड योगमार्ग ॥

ऊपर किनारे श्रीयमुनाजीकालीदहघाट व विष्णुघाट व लुकलुक व बिहारघाट व चीरघाट व केशीघाट व सूर्यघाट इत्यादिक घाटबहुतहैं रसिकबिहारीजी व राधारमन जी व शृंगारबट व छैलचिकनियांजी विख्यातहैं और दोमन्दिर नयेभारी हैं ॥

भारी एक कृष्ण चन्द्रमा जी का लालाबाबू बंगाली दूसरा रंगनाथ जी का राधाकृष्ण भाई लक्ष्मीचन्द साहूकार ने बनवाया अधिक इससे सहस्रों दूसरे हैं निधिबन व सेवाकुंज यह भगवत्के लीला और बिहारके कुंज हैं और जो राजोंने व अमीरोंने व साहूकारों इत्यादिकोंने जोकुंज व मन्दिर बनाये सो अलगहैं ॥

ब्रह्मकुण्ड व गोबिन्दकुण्ड व वेणुकूप इत्यादिके सैकड़ों कूपहैं ॥

धीरसमीर व वन्शीबट व ज्ञानगुदरी व मौनीदासजी कीटट्टी व दूसरेस्थान सब साधूलोगोंइत्यादिक का निवासस्थल विख्यातहैं ॥

राधाबाग व मधुबन व देवीसिंह वालाबाग और दूसरे बागजहां सब हरियाली छाई सघन दरशन योग्य बिराजमानहैं ॥

बिवरण उनस्थान इत्यादिका कि बनयात्रा के समय जिनके दर्शन

होतेहैं और यह जानिये कि वनयात्रा करनेवाले भादोंवदी छठितक मथुरा जीमें पहुंचजातेहैं जिनको जन्माष्टमीवृन्दावनमें करनी अंगीकार होती है सो मथुरा के घाटोंका स्नान व दर्शन करके वृन्दावन को चलाजाता है और जिनको गोकुलमें जन्माष्टमी करनी स्वीकार होतीहै वह गोकुल में और कोई कोई मथुरामें टिकरहतेहैं वे लोग जन्माष्टमी करके दशमी के दिन सांझतक मथुराजीमें आकेरहतेहैं और एकादशीसे यात्रा आरंभ होती है पन्द्रहदिनमें सम्पूर्ण यात्रा परिक्रमा व्रजमंडल चौरासी कोशकी करके भादोंसुदी दशमी अथवा एकादशी तक मथुराजीमें आजातेहैं और द्वादशीके दिन मथुराजीकी परिक्रमा होतीहै दूसरीयात्रा वल्लभाचार्यके कुलवालोंकी तात्पर्य्य गोकुलस्थगोसांइयोंकी होतीहै परन्तु प्रतिवर्ष का नियमनहीं यहगोसाईं आश्विनवदी द्वितीयाको यात्राके निमित्तउठते हैं दीपमालिका जो दिवाली सो गोवर्द्धनजीमें करिके कार्त्तिकसुदी द्वितीया को मथुराजीके मेलेमें आमिलतेहैं यहयात्रा बड़ेसुखवआनन्दसे होतीहै व बहुतलोगइनके अनुयायी इस यात्रामें मिलकेजातेहैं अबविवरन टिकांत व स्थान दर्शन यात्रा पन्द्रहदिन वाले की लिखीजातीहै ॥

पहिलेदिन ॥

प्रातःकाल विश्रांतघाट स्नान करिके यात्राके निमित्त पाँयपियादे नंगे पाँयन उठतेहैं और भगवत् भजनका नेम उचितहै पहिली मंजिलमें दर्शन व यात्रा मधुवन व तालवन व कुमुदवन की होजातीहै कल्याण नारायण व यशोदानन्दन व कपिलमुनि व गिरिधर रायजीके होतेहैं व सांतनुकुण्डके स्नान ॥

दूसरेदिन ॥

बहुलावनमें टिकानहोताहै औरवहांदर्शन ठाकुरबारेमोहनलालजीके हैं

तीसरेदिन ॥

गोवर्द्धनजीमें पहुंचतेहैं ॥

चौथेदिन ॥

यहां टिकान होताहै गिरिराज जीकी परिक्रमा होतीहै हरदेवजी व नाथजी विराजमानहैं एक मन्दिर व गुलदारा थो मंदिरवालोंकाभीहै मानसीगंगा व संकर्षणकुण्ड व चन्द्रसरोवर व पुच्छरीकुण्ड व राधाजी व

गांठोली व गुलालकुण्ड व हरजीकुंड व रुद्रकुण्ड व विजयनाम सकरी व राधाकुंड व कृष्णकुंड व कुसुम सरवर व नारदकुंड व ऐरावतकुंड व सुरभीकुंड और दूसरे सरवरकुंड और भरतपुरके राजा लोगोंके बनाये हुये स्थान दर्शन व स्नान होतेहैं व दीपमालिका को गोवर्द्धनजीमें मेला बड़ाभारीहोताहै व दीपदान ऐसाकहीं नहींहोताहै व कार्त्तिकशुदी प्रतिपदाको अन्नकूट व पूजा गिरिराजकी उत्साहपूर्वक धूमधामसे होतीहै ॥

पांचये दिन ॥

इस समय डीगमें टिकांतहोताहै वहांबहुत बड़ेबड़े स्थानराजाभरतपुरके बहुतहैं अगिलेसमयमें वहां टिकांत नहीं होतारहा ॥

छठवें दिन ॥

कामामें पहुंचतेहैं वहां दर्शन ठाकुर गोकुलचन्द व विजयगोविंदव गोपीनाथजी व वृन्दादेवी व राधाबल्लभवसीतारामजीकेहोते हैं व भोजन थाली वो घिसिनी शिला परिक्रमामें आतेहैं सातवें दिनतक रहकर ॥

आठयें दिन ॥

बरसानेमें जो जन्मभूमि श्रीलाड़िली जीकीहै वहां पहुंचतेहैं श्रीलाड़िलीजीका मन्दिर बहुतऊचा वो भारीपहाड़के ऊपरहै वो बाबावृषभान व कीर्तिजी व श्रीदामाजीके दर्शनहोतेहैं और दानगढ़ जहांदानलीला हुई औरमानगढ़ जहां वृषभानकिशोरीने नन्दकिशोर से मानकिया व विलासगढ़ जहां प्रिया प्रीतमने बिहार व बिलास किया व मोरकुटी जहां मोरकी नाईबोलके लाड़िलीजीको बुलाया वो सांकरीखोर जहां अकेली देख नन्दकिशोरने लाड़िलीजीको पकड़लिया और जो चाहा सो किया और गहवरबन जो वहभी बिहारस्थानहै और दूसरेस्थान वो मन्दिरों के दर्शनहोतेहैं वो भानुसरवर वो श्रीपोखर वो प्रेमसरवर इत्यादिकुण्ड वो लाड़िलीजीके झूलने और खेलने कीठौर सबहैं और ऊंचागांव जो जन्मभूमि गोसाईं नारायणभट्टजीकी कि जिनकीकथामे यहसब वृत्तान्त लिखाजाताहै बरसानेके समीपहै और एक मन्दिरमें बलदेवजी का भी दर्शनहोता है और देहकुण्ड वो त्रिवेणी वहां हैं ॥

नवें दिन ॥

नन्दग्राम बाबा नन्दजी के स्थानमें पहुंचते हैं वहां बाबा नन्दजी व

यशोदामाताजी व यशोदानन्दन व बलदेवजी व बिहारी बिहारनके मन्दिर व मानसरोवर व ललिताकुण्ड व विशाखाकुण्ड व यशोदा कुण्ड व मधुसूदनकुण्ड व मोतीकुण्ड व कृष्णाकुण्ड व कदमखण्डी इत्यादिक तीर्थहैं व मथानी कि जहां यशोदा महारानीने दूधबिलोया व हाऊ कि जहां नन्दनन्दनको हाऊ कहकर डरपाया वहांहै जावबट कि जहां लाड़िलीजीके चरणोंमें जावक लगाया कोकिलाबन कि जहां कोकिलाकी भांति बोलके लाड़िलीजीको बुलाया रासौली कि जहांरास किया बठेन कि जहां लाड़िलीजीकी बेणीगूंथी व रङ्गमहल व संकेत बिहारी ठाकुर व संकेतदेवी विराजमान ॥

दशवेंदिन ॥

शेष शायीमें पहुंचतेहैं वहां शेषशायी महाराज विराजमानहैं इस हेतु करके उसगांवकोभी शेषशायी कहतेहैं व विष्णुनारायणका मंदिर व क्षीरसमुद्र तीर्थ हैं व मार्ग में कदमखण्डी व क्षीरबन दर्शन होते हैं यहांसे बहुतलोग राधाष्टमी करने के हेतु बरसाने को चलेजातेहैं और कोई वृन्दावनको चलेआते हैं और लोग व्रजमण्डलको परिक्रमा पूरी करनेको यमुनापार उतरतेहैं ॥

ग्यारहें दिन ॥

सेरगढ़ होकर चीरघाट जहां कात्यायनी देवीके दर्शन होतेहैं सेरगढ़में दो मन्दिरहैं व चीरघाटके थोड़ीदूर नन्दघाटहै तहां उतरके भद्रबन व भांडीरबन व बेलबनकी यात्रा होतीहै ॥

बारहें दिन ॥

मांटबनमें विश्राम होता है भगवत्मन्दिर वहां है परंतु प्राचीन व विख्यातमंदिर कोई नहींहै ॥

तेरहें दिन ॥

लोहबनमें टिकान होतीहै व पथमें नन्दीदेवी व नन्दीश्वरीके दर्शन होतेहैं ॥

चौदहें दिन ॥

बलदेवजी में पहुंचते हैं व बलदेवजी महाराज के दर्शन होते हैं एक मंदिर भगवत्का व दो तीर्थभी यहांहैं ॥

पन्द्रहें दिन ॥

मथुरामें पहुंचतेहैं प्रथमें गोकुल व महावनके दर्शन होतेहैं कि वहां के स्थानों व तीर्थोंका बिवरन पहिलेही लिखचुकेहैं जो सब लिखआये ऊपर तिससे अधिक बन व स्थान बहुत हैं सब यात्रा के समय पंथमें नहीं पड़तेहैं ॥

जब सब स्थान व बन जो ऊपर लिखआये प्रकटहोगये तब नारायण भट्टजीको यह अभिलाषाहुई कि जिस प्रकार ब्रजचन्द्रमहाराज ने इन स्थानोंपर रास बिलास व चरित्रकिये वह सब प्रत्यक्ष व साक्षात् देखें सो भगवत्‌ने उनको आज्ञाकी कि बल्लभनामा नृत्यक बादशाही सेवा छोड़कर वृन्दाबन बास करताहै तुम और वह ब्राह्मणोंके लड़कोंको मेरा और गोपिकाओंका रूप बनाकर लीलानुकरन से मेरे चरित्रोंका अवलोकनकरो तब गोसाईंजीने बल्लभनामा नर्तकको आज्ञादी उसने एक ब्राह्मण बालकको श्रीब्रजचंदका रूप एकको लाड़िलीजीका रूप और आठ लड़कोंको ललिता बिशाखा इत्यादि सखियोंका रूप बनाकर सब साधना नृत्यगानेकी सिखाई और जहां जहां जो चरित्र और रास बिलास भगवत् कियेरहे सब चरित्रकिये मानो श्रीकृष्णअवतारको नवीन कर दिया और अबतक वहरासलीलाकी परम्परा प्रवर्त्तमान है जब यह सब उपकार जगत के वास्ते प्रगट करदिया तब इच्छा परमधाम गोलोककी और अपने सेवकनसे आज्ञाकिया कि हमारा शरीर त्रिवेणीपर लेजाना सबने बूझा त्रिवेणी कहांहैं बतलाया कि ऊंचागांवमें बरसानेके निकट त्रिवेणीहैं गोसाईंजी एकयहभी तीर्थप्रगट किया और अबतक गोसाईंजी के बंश उसगांवँ में बर्त्तमान हैं जब रास अथवा समाज होता है तब पहिले उनके बंश को अधिष्ठाता व मुखिया समझकर सत्कार पूर्वक आगे बैठालते हैं ॥

निम्बार्कस्वामी की कथा ॥

निम्बार्क स्वामी परमभक्त ऋषेश्वर भागवत धर्मप्रचारक हुये महाराष्ट्र ब्राह्मण मूंगेरमें गोदावरीके निकट अरुणऋषेश्वर की जयंती धर्म पत्नीके गर्भसे जन्महुआ सनकादिक संप्रदा जो विख्यातहै उसकेप्रवृत्ति करनेवाले व आचार्य्य ये स्वामीहैं यद्यपि परम्परा इससंप्रदाकी भगवत्

के हंस अवतार सेहैं परंतु इससंसारमें निम्बार्कस्वामीसे प्रकाशमानहुई इसहेतु निम्बार्कस्वामी के नामसे विख्यातहुआ और हंस भगवान ने प्रथम उपदेश सनकादिकों कियारहा इसहेतु सनकादि संप्रदा कहतेहैं गुरु परम्परासे वृत्तान्त गुरु व चेले शाखोपशाखा का ज्ञातहोगा यद्यपि सेवकलोग इससंप्रदाके शारीरक सूत्रोंपर निम्बार्क भाष्य बखानकरतेहैं परंतु इसदेशमें नहींमिलता औरस्तोत्र निजरचित स्वामीजीकेहैं वे विशेष करके मिलते हैं उनस्तोत्रों में रीति उपासना और ईश्वर मायाजीव का निरधार और पद्धति उपासनाकी कथितहै और व्याख्या उनकीविस्तार के सहितहै कि स्पष्टकरके वृत्तान्त उपासनाका उनसे ज्ञातहोता है उन स्तोत्रोंमें मुख्यतर दशश्लोकी स्तोत्रहै उनस्तोत्रों के अनुसार तात्पर्य निश्चय यह संप्रदाका यहसिद्धांत समझनेमें आताहै कि ईश्वरद्वैताद्वैतहै जैसे सर्पका कुण्डल सर्पसे भिन्ननहीं और पानीतरंगसे भिन्ननहीं इसी प्रकार यह जगत् ईश्वरसे भिन्ननहीं परंतु नाममात्र को भिन्नकी भांति दिखाईदेताहै वह ईश्वर एकपूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घन श्रीकृष्णगोलोक निवासी हैं और माधुर्य जो शृङ्गार की एकशाखाहै और अच्छीप्रकार उसका वर्णन तो दशवींनिष्ठामें होगा उसीमाधुर्य की रीतिसेध्यान व चिन्तन करतेहैं यद्यपि इस उपासना में युगलस्वरूप श्रीराधाकृष्ण का ध्यान और सेवाकीरीति पुष्टहै परंतु आदि आचार्यके बनायेहुये ग्रन्थोंसे प्रधानता श्रीकृष्णस्वामीकी और उनकाही ध्यानकरना पायाजाताहै क्यों कि संक्षेप सिद्धांत निम्बार्कस्वामीका यहहै कि नहींदिखपड़ती कोई गति बिनाकृष्ण चरणारविन्द के जैसेहैं वह कृष्ण कि ब्रह्मा और शिव उनको वन्दनाकरतेहैं और श्रीकृष्ण महाराज वेहैं कि भक्तोंके अभिलाषाके हेतु भांति भांतिके अवतार धारण करतेहैं और मन व बुद्धि के नहींसमझमें आतेहैं जिनकी मूर्ति और जिनका अवतार चित्तमें नहीं आसक्ताहै [illegible] जिनका एक [illegible] लिखाहै और दूसरी [illegible] श्रीकृष्णस्वामीका भी [illegible] सिं- [illegible] विचार करना चाहिये कि सब [illegible] सिद्धांतों [illegible]

लिखा जायगा व अलौकिक चमत्कार निम्बार्कस्वामी के बहुतहैं परंतु उनमेंसे एक चमत्कार वह लिखतेहैं जिस कारण से निम्बार्क नाम बिख्यातहुआ एक समय एक संन्यासी स्वामी के स्थानपर उतरा उसका सिष्टाचार स्वामीने किया परंतु रसोईके सिद्ध करनेमें संध्याहोगई संन्यासी संध्याभये पीछे भोजन स्वीकार न करे स्वामीजीको दया आई तब आंगनमें निम्बका वृक्षरहा उसपर अर्क अर्थात् सूर्यको दिखादिया कि संन्यासीने संतुष्टहोकर भोजनकिया जबभोजनकरउठा तबचारघड़ी रातबीती देखी उसदिनसे नाम स्वामीका निम्बार्क करके विख्यातहुआ और कोईमुख्यनाम अर्ककहतेहैं नामीगुरुद्वारा एकस्थान अरुण दक्षिण देशमें दूसरा स्थान सलेमाबादहै और तो हज़ारों स्थान हैं॥

हंस भगवान १	सनकादिक २	नारद ३	निम्बार्कस्वामी ४	श्रीनिवासाचार्य्य ५
बिस्वाचार्य्य ६	पुरुषोत्तमाचार्य्य ७	श्रीविलासाचार्य्य ८	श्रीस्वरूपाचार्य्य ९	श्रीमाधवाचार्य्य १०
श्रीपद्माचार्य्य ११	श्रीश्यामाचार्य्य १२	बलभद्राचार्य्य १३	गोपालाचार्य्य १४	कृपाचार्य्य १५
देवाचार्य्य १६	सुन्दरभट्ट १७	पद्मनाभभट्ट १८	उपेन्द्रभट्ट १९	चन्द्रभट्ट २०
वामन भट्ट २१	कृष्णभट्ट २२	पद्माकर भट्ट २३	श्रवण भट्ट २४	भूरि भट्ट २५
माधव भट्ट २६	श्याम भट्ट २७	गोपाल भट्ट २८	बलभद्र भट्ट २९	गोपीनाथ भट्ट ३०
केशव भट्ट ३१	गागल भट्ट ३२	केशवकाशमीरीभट्ट ३३	श्रीभट्ट ३४	हरिव्यासदेवजी ३५
परशुरामदेवजी ३६	हरिवंशदेव जी ३७	नारायणदेव ३८	गोविंददेव ३९	गोविंदशरणदेव ४०
ईश्वर शरणदेव ४१	श्रीनिम्बार्कशरण देव ४२	श्रीब्रजराजशरण देव ४३	गोपेश्वरशरणदेव ४४	विराजमान ४५

गोपेश्वर शरणदेव महाराज विख्यात श्रीजी--सम्वत् १९१३ में सलेमाबादकी गद्दीपर विराजमानहुये॥

हरिव्यासजी की कथा॥

हरिव्यासजी सुमुखनशुक्लब्राह्मणकेपुत्र निम्बार्क संप्रदामें परमभक्त ऐसेहुये कि अबतक जिनकी कृपासे लाखों को भगवत् प्राप्ति होती है तिलक मालासे अत्यन्तप्रीति जिनकीहुई पूर्वनाम उनका हरीराम रहा और रहनेवाले बोड़छेकेथे संवत् १६१२ में अपने घरको छोड़करपेंता-लीसवर्ष की अवस्थामें वृन्दावनमें आये भागवतधर्म की प्रवृत्ति चलाई हजारोंको सेवककरके भक्तकरदिया परंतु बारह सेवकतो ऐसेसिद्ध और परमभक्त और प्रतापीहुये कि जिनकेनामसे अलग अलग गुरुद्वारेचले और अबतक गुरुद्वारों से वढ़चारी भगवत् भक्ति की सबको है गुरुद्वारे सबआदि परंपराकी रीतिसे निम्बार्क संप्रदाके विख्यातहैं और कईप्र-कारकीरीति जो आप व्यासजीने चलाई सो गुरुद्वारे अलग बारह १२ गुरुद्वारेसेहैं यह कि निज जो वंशव्यासजी केहुये उसं पद्धतिकी रीतिसे उनका गुरुद्वाराहै और उनका पट्ट गोसाईं करके वृन्दावन विख्यातहै और इसगुरुद्वारेके सेवक हरिव्यास करके विख्यातहोते हैं जब व्यास जीने वृंदावनमें वासकिया तब ऐसीप्रीति उसपरमधाममें और भगवत् मेंहुई कि एकक्षणभी वृन्दावनसे अन्यत्र रहि न सकें वरन औरकोई जो जानेकोभी [illegible] कहता तो अत्यन्त उससेदुखितहोनेरहे मधुकरनामी बोड़छे का राजा व्यासजी का सेवकरहा अपने यहां लेजानेकी कामना करके वृन्दावनमेंआया और बड़ीविनय प्रार्थना की तब व्यासजीने कहा कि वृन्दावनकी [illegible] [illegible] न वनकीछायाके शरणमें सदारहाहूं उनसे [illegible] [illegible] सो विमुखहोनेके निमित्तचले न राजाभी साथहुआ [illegible] [illegible] हाथजोड़कर विनतीकरते कि महाराज तुम्हारी [illegible] [illegible] क्याआज्ञाहै राजाने अपनेमनमें समझा कि इसी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तबतक एक [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] हरिसकीला और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] व्यासजीने पूछा कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उससे लेकर भोजन करलिया राजाने यह जाना कि गुरुदेव महाराज को चित्तभ्रम होगयाहै जो देशमें जावेंगे तो लोगों का बेधर्म करेंगे इस हेतु बिदाहोके अपनेआप चलागया और व्यासजीने उसकाजाना भगवत्की बड़ी कृपा समझकर धन्यमाना सर्वकाल श्रीकिशोर किशोरीजी की सेवा पूजामें रहतेरहे एक दिन शृङ्गारके समय जरकसीका चीराबांधते रहे सो जरीकी चिकनाई के कारण से बांधते में सुन्दर नहींआता रहा कईबार बांधा परन्तु सुन्दर नहीं उतरा व्यासजी ने क्रोधित होके कहा कि जो लड़काईपनसे यह दशा ढिठाईकी है तो फिर न जानेक्या होगा जो मेराबांधना नहीं भावताहै तो आप बांधलेव और यह कहकर कुंजसे बाहर जा बैठे थोड़ेकाल पीछे जोलोग दर्शनकरके गये तो व्यास जीसेकहा कि आज भगवत्का चीरा बहुत सजीला बँधाहै व्यासजी अभिलाषभरे हुये आये देखकर कहनेलगे जहां अपने हाथ ऐसे प्रवीणता व सुघरताहै तो दूसरेकी कब मन भाय सक्ती है एक दिन हरिभक्तोंका समाज भोजनकरने को बैठाथा व्यासजी की स्त्री परोसती रही संयोग वश दूधकी मलाई व्यासजीके कटोरेमें गिरपड़ी व्यासजी ने यह जाना कि पतिभावकी प्रीतिकेवश हमको अधिक दियाहै तुरंत पंगतसे निकाल दिया स्त्रीने बिनतीकिया कुछ न सुना तबतीनदिन बिना दाना पानीरह गई और सब हरिभक्तों ने व्यासजीको समझाया तब अंगीकार किया परन्तु दण्डमें सब गहना बेंचके साधोंका भण्डाराकर दिया व्यासजीके लड़कीकी सगाईरही और पकवान कईप्रकार का बरातके निमित्त बना हुआ रहा व्यासजीने वह सामग्रीसुन्दरमधुर भगवद्भक्तोंके योग्य समझ तुरन्त छिपायकर भगवद्भक्तों को भोजन करादिया जब बरातआई और कोठे पकवानको रीतापाया तब तुरन्त लोगोंने पकवान बनाकर बरात को जिमाया घरकेलोग व्यासजीसे बहुत उदासहुये व्यासजी ने तुरन्त एक विष्णुपद बनाकर भगवत् भेंट किया अर्थ उसका यहहै कि जिन लोगोंको समधी प्यारेहैं और वे लोग भगवत्भक्तोंको सूखा आटा देते हैं और समधीको भोजन मीठे तो ऐसे बिमुखोंको यमके खींचते खींचते हारजाते हैं एक समय व्यासजी भगवत्के हाथमें बांसुरी चांदीकी देते रहे उसकी कोरसे उँगली छिलगई रुधिर निकल आया व्यासजी ने

चिंतासेहोकर भगवत् अँगुलीपरकपड़ा पानीसेभिगोकर बांधा किअबतक यहरीति किशोरमहाराजके शृंगारकेसमयवर्त्तमानहै इसचरित्रसेभगवत् अपनेभक्त के माधुर्य्यभावको पक्का व दृढ़करके उपदेश व प्रेमके पंथको दिखलातेहैं कि जिसभावसे मेरेभक्त मेराआराधन करतेहैं उसीभाव से प्रकट होताहूं एक ब्राह्मण ओड़छेका रहनेवाला व्यासजी के पास आया और जहां हरिभक्तों के निमित्त रसोई बनतीरही तहां भोजन करना अङ्गीकार न किया व्यासजीने उसको अन्नदिलादिया वह ब्राह्मण चर्म्मके छागलमें जललाकर रसोईकरनेलगा व्यासजी जूतीसेंवी उसके निमित्त लेगये और रसोईमें रखदिया ब्राह्मण क्रोधयुक्त उदासहोकर उठा व्यासजीने हाथजोड़कर कहा कि आपके उदासीकी कोईबात नहींहुई जिस धातुका बरतन पानीकेनिमित्त आप अपनेपास रखतेहैं उसीधातुके कटोरेमें खिलायाहूं वह ब्राह्मण लज्जित होकर अभिप्राय व्यासजीके मनका समझकर भगवत् शरणहोकर भगवत् भक्तहोगया एकसाधु बहुतदिन तक मन्दिरमें व्यासजीकी सेवामेंरहा किशोर किशोरीजीके संमुख कीर्तन अच्छाकियाकरताथा जबइच्छा चलनेकीकरता तबव्यासजी उसको समझाकर ठहरा लियाकरते कि वृन्दावनको छोड़कर कहांजातेहो एकदिन हठकरके बिदाहुआ और बटुआ शालग्रामजीका जोकि मन्दिरमें पधराय दियाहुआमांगा व्यासजीने एकगोरैया चिड़िया डिब्बेमें बन्दकरके साधूको दिया साधूलेकरके चलागया जब यमुनाजीके किनारेपर सेवा पूजाके निमित्त डिब्बाखोला तो चिड़िया उड़गई वहसाधु व्यासजीके पासगया कि महाराजमेरे ठाकुर स्वामी इसओरआयेहैं ढूंढ़वादेव व्यासजीने उत्तर दिया कि सत्यहै तुम्हारेस्वामी दरशपरस किशोर महाराजसे होगयेहैं बपागाने इसी तनसे चलेआयेहोंगे सो ढूंढ़ो और वह कहकर मन्दिरमें लायके साधूसेकहा कि तुम्हारे स्वामी किशोरजीके पासबैठेहैं तुम्हारे स्वामी वृन्दावनको छोड़ना नहीं चाहतेतो तुम किसहेतुजातेहो उससाधु ने सब ओरकी जाने आनेकी इच्छा त्यागकरके वृन्दावनमें बासकिया और प्रीतिपूर्वक भगवत्कारास समाज वृन्दावनमें होतारहा सब रसिक जन जिसे देखनेकी चोंपमें लगेहुये प्रेममग्न रहें नृत्यमें प्रियाजीके चरणसे नूपुर टूटगया और नाटकके समाजमें भेदपाने लगा व्यासजीने

तुरन्त अपना जनेऊ तोड़कर नूपुर गूंथकर पहनादिया और कहा कि अपनी अवस्थाभर इस यज्ञोपवीत को गलेका भार जानतारहा आज उसका रखना सुफलहुआ भक्तमालमें जो व्यासजीके वर्णनमें नाभाजी ने यह पद लिखाहै कि भक्त इष्टआदि व्यासके यह सुनकर एक महंत परीक्षा लेनेके निमित्त लाहौरसे आया जमात भारी साथमें रही सब साधू संगके भूख जनावने लगे व्यासजीने कहा अब रसोईं बनकर भगवत्को भोग लगाया जाताहै कुछ बिलम्ब नहींहै परन्तु साधुलोग मानेंनहीं व्यासजीपै जो भगवत्प्रसाद रहा साधुनकेआगेलाये वे लोग दो चार ग्रास भोजन करके औरकुछ दरदका बहाना करके उठखड़ेहुये व्यासजीने उन साधुओंकी सीथ प्रसादीको बहुत यत्नसे रखलिया और हाथ जोड़कर बिनयकिया कि आपने अन्तस्य दया से पालनकिया कि अपनी जूठनको कृपाकरके दिया और कुछदिनके भोजनके निमित्तपूंजी होगई अब कृपाकरैं कि दूसराभोजन बनताहै उसको अंगीकारकरैंसब महन्तोंको व्यासजीमें दृढ़ बिश्वासआया और जाना कि इस प्रकार निश्चय भक्तोंका बिना व्यासजीके और किसको होगा व्यासजीने एकपद भगवत् भेंट किया कि उससे महिमा सीथप्रसाद भगवद्भक्तोंकी प्रकट होतीहै अर्थ उसका यहहै कि जो हरिभक्तोंका सीथ नहीं खातेहैं उनके मुख शूकर और कूकरके मुखके सदृशहैंइसहेतु कि लड़का छोटीअवस्था का जिसके नाकसे रेंट बहताहै और गालोंतक लगाहुआहै उसका मुख चूमतेहुये और कामके वशमें होकर स्त्रीकीराल चाटतेहुये तो मनकोघृणा नहीं होती और भगवत्भक्तोंका सीथ प्रसाद खातेहुये घृणा करतेहैं तो क्योंन दुर्गती होंगे व्यासजीके तीन पुत्र रहे सो झगड़ा निवृत्तके हेतु बिभाग करदेना सम्पत्तिका उचित समझकर तीनभाग बनाये एकभाग तो सम्पूर्ण द्रव्यका और दूसराश्रीकिशोर किशोरीजो महाराजका और तीसरा तिलकछाप और श्यामबन्दनीका सो भागपहिला और दूसरा तो रामदास औ बिलासदास पहिले और दूसरे पुत्रोंने लिया औरकिशोरदासजीके बांटमें तिलक इत्यादिक आया उन्होंने वह तिलक और छापलेकर और स्वामी हरिदासजीसे छाप धारण कराकर भगवत्भजन आरम्भकिया और थोड़ेहीकालमें सिद्ध और शुद्ध चित्त होकर भक्त दृढ़

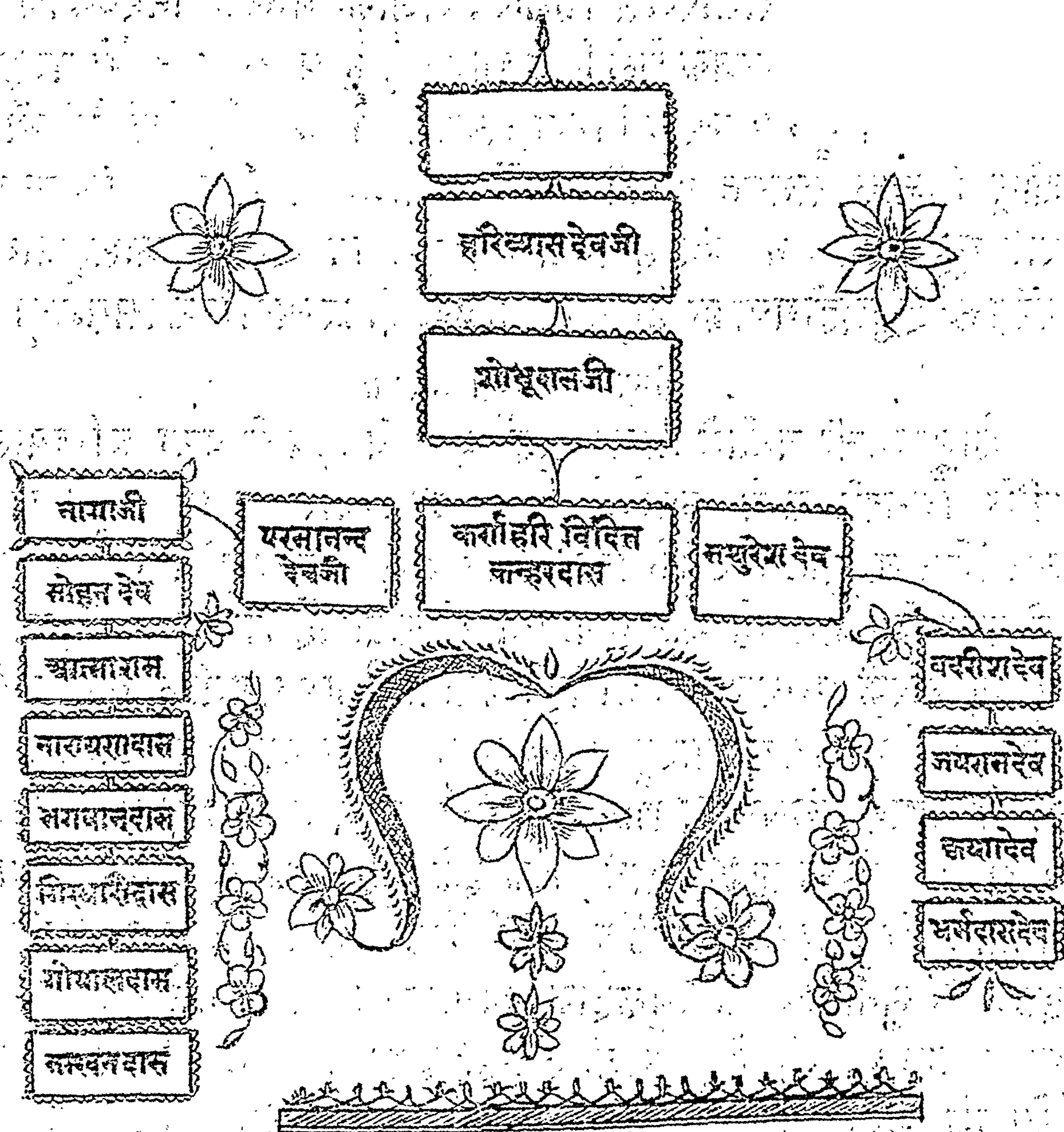
होगये एक दिन किशोरदासजी और व्यासजी स्वामी हरिदासजी के साथ यमुनापर गयेथे वहांएकविष्णुपद भगवत्केरासविलास का अपना बनाया हुआ गानकिया और चलेआये व्यासजी ने उसी विष्णुपद को नित्यरासके निजभगवत् पुराणमें ब्रह्माको ललिताजीके मुखसे कहाहुआ सुना व्यासजीने इसकारणसे किशोरदासजीकी भक्तिको निश्चय किया हरिव्यासजी महाराजके चेले सिद्ध और बड़ेयोग्य भये उनमेंसे परशुरामदेवजीकी गुरु परम्परा निम्बार्कस्वामी की कथामें लिखीगई और शोभूरामजीका वृत्तान्त उनकी कथामें लिखाजायगा और यद्यपिपरस्पर्शविन्दु वंश और नादवंश हरिव्यासजीकाभी विवर्णसहित प्राप्तहुआथा परंतु संदेहकुछहोगया इसहेतु न लिखा यही दोपरम्परा विशेषसमझना॥

शोभूरामजी की कथा॥

शोभूरामजी जातिके ब्राह्मण रहनेवाले बोड़ियाके चेला हरिव्यासजीके जिनकी कथा ऊपरहुई परमभक्त निम्बार्कसम्प्रदामें हुये अब तकमंदिर व वाटिका उनके निवास का बोड़िये जगाधरी के समीप एक कोसपर विराजमानहै और ऐसाप्रतापी गुरुद्वाराहै कि लाखोंकोजिसके प्रभाव करिके भगवत्भक्ति प्राप्तहुई व होतीहैशोभूरामजीकी कृपाकरके उस देशमें भक्ति का प्रचारहुआ एकबेर यमुनाजी चढ़ीं नगर डूबनेलगा सबने आपके पुकारा तब आपने विनयकिया व कहा कि ऐसीही इच्छा है तोमैंभी सहायताको प्राप्तहूं यह कहिके फावड़ालेके पानी आनेकीराह बनावनेलगे यमुनाजी हटगईं व आरतीके समय शंखध्वनि हुआ कारतीथी हाकिमने सुनी और क्रोधयुक्तहोकर विचारा कि इसको कालामुंह करगधे पर चढ़ाना चाहिये शोभूरामजी वैसाही रूप बनाकर उसके द्वार परगये देखिके आधीनहोगया व लज्जितहोकर अपराध क्षमाकराया व आत्माराम जिनके भाई उनकी कृपा व दीक्षासे सब गुण करके युक्त परमभक्त ऐसे मानों कृष्णभक्तिके रूप हुये व सन्तदास व माधवदास दो भाई दूसरे उनकीभी भक्ति और महिमा वैसीही हुई कि माधवदासजीने योगियोंको ज्ञानमतमें विजयकिया एकबेर योगियोंके स्थानमें उनके आगमनकरके बैठके योगियोंका स्वामी क्रोधयुक्तहुआ तब ब्रह्मज्ञान करतेहुये उनने अपनाहो उठाकर ऊंचाके [illegible] पानी पहुंचाके बैठकर आसीन

होगया चरणोंमें पड़ा इनदोनों भाइयोंने भक्तिके प्रकाश करने को मानो अवतार लिया था एकही समय में दोनों भाइयोंने यह प्रकाश किया ॥

अथ गुरू परम्परा हरि व्यास देव जी की ॥



हित हरिवंश जी की कथा ॥

हितहरिवंशजी गोसाईंजीकेभजनऔर भावको ऐसाकौनहै जोवर्णन करसकै किजिनसे राधिकामहानीकी प्रधानता करकेमनको दृढ़विश्वास सेलगाया और प्रियाप्रीतमके नित्यविहार और कुंजमहल में मानसी

ध्यानकरके प्राप्तहोकर सखीभावसे टहल व सेवा श्रृङ्गारआदिकी करी व भगवत्के महाप्रसादमें ऐसाविश्वासथा कि अपना सर्वस्व जानतेरहे व विधिनिषेधके व्यवहारसे अलगहोकर अनन्य दृढ़भक्तिमें मग्न रहतेरहे व्याससूनुके विश्वास और मार्गपर जोकोईहोवै वहभी अच्छेप्रकार उस पंथकोजानसक्ताहै नाभाजीने जोव्याससूनु यहपद मूलभक्तमालमें लिखा तो उसके अर्थसे शुकदेवजीका भी बोध होताहै और हरिवंश जी का भी क्योंकि उनके पिताका नाम व्यासरहा ये गोसाईं महाराज राधावल्लभी संप्रदाकेआचार्य्यहुये किजिसके प्रभावसे सहस्त्रों भगवत्सम्मुखहोकर सद्गतिको पहुंचे हैं व्यास उनके पिता गौड़ ब्राह्मण रहनेवाले देवनन्दन इलाकेसरकार सहारनपुर में बादशाही अधिकारीरहे परंतु वंशनहीं था नरसिंहआश्रम बड़ेभाई उपासकनृसिंहजीके आशीर्वाद व कृपासेहरिवंश जीतारानाम व्यासपत्नीके गर्भसेसंवत् १५५९ में उत्पन्नहुये पहिलेहीसे भक्ति श्रीराधाकृष्णमहाराज की रही राधिकामहारानीने पीपलके वृक्ष परमंत्रकापता स्वप्नमेंदिया व एकभगवत्मूर्तिका पताभीकूपमें जनादिया गोसाईंजीने वहमंत्र औरमूर्त्तिप्राप्तिकरकेमंत्रका तोजपआरम्भकियाऔर भगवत्मूर्ति व राधिकाजीकी गादीविराजमानकरके सेवापूजा करनेलगे रुक्मिणीनाम स्त्रीकेगर्भसे दोपुत्र औरएकपुत्री जन्मे जबविवाहादि उनका होगया तबवृन्दावन सेवन की इच्छा करके चले चरथावलग्राम में भगवत्आज्ञाकरके एक ब्राह्मणने अपनीदोलड़की और राधावल्लभजी की मूर्तिभेंटकरी वृन्दावनमें पहुंचकर मंदिरबनवाया और भगवत्मूर्ति व राधिकाजीकी जगह गादीस्थापनाकरके पद्धति राधावल्लभी संप्रदाकी चलाई इससंप्रदामें राधाकृष्णयुगुलस्वरूपकी उपासनाहै परंतुराधिका महारानीकीभावना विशेषहै अपने आपको सखी और दासीश्रीराधिका जीकीजानकर ध्यानयुगुल स्वरूपऔर श्रृङ्गारराधिका महारानीमेंमग्न रहतेहैं और यह उनका निश्चयहै कि कृपा व अनुग्रह राधिकामहारानी का होनाचाहिये श्रीकृष्णस्वामी आपसेआप कृपाकरेंगे वृत्तान्त श्रृङ्गार व निकुञ्जकीक्रिया नित्यश्रृङ्गार और भेदमें लिखाजायगा राधासुधानिधि ग्रंथमेंस्फुटहै कि इनकीप्रेमभक्ति व माधुर्यकी वर्णनाकी मधुरताई सं-स्कृतमें नहींपायसकीहै औरभाषामें हितचौरासी स्फुटनिरूपण गोसाईं

जीका प्रसिद्ध व विख्यात है गोसाईंजीको भगवत् प्रसादमें ऐसी निष्ठारही कि पानका बीड़ा भगवत् प्रसादीको कठोर एकादशीव्रतपर अधिकतर समझतेरहे कोई कोई माध्वसंप्रदावाले पूर्वकुछसेवक होनेसे माध्व संप्रदा का गोसाईंजीको कहतेहैं परंतु कुछबातनहीं हरिवंशजी राधिका जीकी कृपाकरिके स्वयंसिद्धभये इसमें कुछसंदेह नहीं व रीति भजनकीनई रस भक्ति प्रेममयी निकाली व निम्बार्कसंप्रदा व माध्व संप्रदासे सिद्धांतउपासना चुनकरिके अद्भुतरस भजनकी रीति पुष्टकरी इससंप्रदामें राधिका महारानीमें परकिया भावहै व वंश गोसाईंजीके देवनन्दन व वृन्दावन दोनों जगह बिराजमान हैं और श्रीराधाबल्लभलालजी के उपासनाका उपदेश प्रसिद्ध व प्रभाव संसारमें प्रकटहै ॥

चतुर्भुजजी की कथा ॥

चतुर्भुजजी चेले हितहरिवंशजीके भगवत्भक्त ऐसेहुये कि भगवत् भक्त और भजनका प्रताप बहुत लोगों के हृदयमें दृढ़करके भगवत्की ओर लगादिया और श्रीराधाबल्लभलालजीके ऐसे चरित्र पवित्र काव्य किये कि हज़ारों उनको पढ़ सुनकर संगति को प्राप्त हुये हरिभक्तों की ऐसी सेवाकरी कि उनके चरणरजको अपने शिरका भूषण समझा और सत्संगका यह बिश्वासरहा कि उसी में मगन रहते थे जिन्होंने गुरु चरणकी कृपासे गोंड़वानेदेशको भगवत्भक्त करदिया यह कि उस देश केआदमियों को कालीजीकी उपासना थी आदमी को मारकर चढ़ाते थे भगवत्भक्तिका प्रवेश निर्मल तनकनहींरहा चतुर्भुजजीका संयोग उस देश में जानेकाहुआ यह दशा देखी तो पहिले कालीही को भगवत्भक्त करना प्रयोजन जानकर भगवत्मंत्र सुनाया काली जब हरिभक्त हुई तब लोगों को स्वप्नमें शिक्षाकिया कि तुमलोग स्वामी चतुर्भुजजी के शीघ्रही सेवक होकर भगवत्भक्ति अंगीकारकरो नहीं तो सबका नाश होजायगा सबकोई दौड़े आये और चेलेहुये माला तिलक धारण करके भगवत्भक्त होगये और पूर्वके पापोंसे छूटगये स्वामीजीने कुछदिन उस देशमें रहकर भगवत् आराधना और उत्साह व साधु सेवा को अच्छा फैलाया और श्रीमद्भागवत सुनाकर भगवत्प्रेम में पूर्ण करदिया एक उचक्का किसी बनियेकी थैली उठाकर चला धनी पीछेपड़ा उचक्केने जब

कोई जगह छिपनेकी न देखी तो स्वामीजीकी कथामें जाबैठा उस समय यह कथा होतीथी कि जो कोई शास्त्रविहित दीक्षा लेताहै उसका जन्म नवीन होजाताहै यह सुनकर वह उचक्काभी चेला स्वामीजीका होगया तिसकेपीछे थैलीवाला बनियाभी जापहुंचा और लोहेकागोला तपाकर के हाथपर रक्खा साधुने राजाके सामने सौगन्दकी कि इसजन्ममें किसी का धन नहीं चुराया निदान साधु जीतगया राजाने बनियेको शूलीदेने की आज्ञादी जब साधुने सब वृत्तान्त वर्णनकिया तब राजाने बनियेको छोड़ा भगवत्भक्त होगया एकदिन स्वामीकाखेत पकाथा साधु आतेरहे उसमें घुसके खानेलगे रखवालेने पुकार किया कि स्वामीचतुर्भुजी काहै साधुओंने कहा तो हमाराही है शोर क्यों करते हो यह सुन स्वामी आयके साधुओं को लेगये भोजन कराये व आनन्द के जलआंखों से नहाये कि आजसाधुओंने हमारी चीज़ोंको अपना समझा॥

कथाशंकरस्वामीकी॥

शङ्करस्वामी कलिमें धर्म्मकेरक्षक और भागवत्धर्म्म के प्रवर्तक शिव जीका अवतार और आचार्य्य हुये जितने अनीश्वर वादी और जैनधर्मी और पाखण्डी और विमुख और दुर्बुद्धीथे सबको ध्वस्त करके शास्त्रोंकी पद्धति परचलाया दक्षिणदेशमें विक्रमादित्यके समयमें स्वामीका अवतार हुआ स्मार्तमतकी रीतिसे दण्ड धारणकर संन्यासी हुये और उसीधर्म्म कीपद्धतिसे भागवत्धर्म्मको फैलाया सैकड़ोंको परास्तकिया मण्डनमिश्र जिनको ब्रह्माका अवतार कहते हैं मीमान्सामत वादीरहे उनको वादमें निरुत्तर किया मीमान्सा कर्म्महीको ईश्वरमानताहै पीछे मिश्रजीकीस्त्री नेवाद आरम्भ किया और कामशास्त्रमें प्रश्न करनेलगी और येस्वामी यती संन्यासीरहे उसगलीसे तनकभी बोध न था इसहेतु राजा अमरुकके शरीरमें कि उसीदिन मरगयाथा योगबलसे अपनेप्राणोंको उसमें प्रवेश करके छः महीनेतक इसशरीरमें रहे एक ग्रंथ अमरुकशतक बहुतसोंदिन उन रानियोंसे रचना किया जितनी रानी राजा अमरुक की रहीं सब ने जानलिया कि यहकोई योगीहैं और जिसदेह इनका वर्तमानहोगा तो उसको जलादेना चाहिये कि जितने मुर्दे यहां पर और गाम और इलाका मुर्दा बनायके इसहेतु उन रानियोंने ढुंढवाके जलादेने की आज्ञा देदी

आगदिये हीरहे कि स्वामीके प्राणने राजाका तनछोड़कर निजशरीरमें प्रवेश किया और अग्निसे रक्षाके हेतु नृसिंहजीका स्मरणकिया प्रभुने उसअग्निको शीतल करदियां स्वामीने चितासे निकलकर मण्डनमिश्र की स्त्रीको निरुत्तर करदिया मिश्रस्वामीके चेलेहोगये पश्चात् चारवाक मतवालोंको परास्त करके धर्म्ममें प्रवृत्तकिया सो अबचारवाक मतका अनुगामी दृष्टान्त कोईभीनहीं मिलता मुसलमानोंमें सुनेजातेहैं जो कि दहरियाकहाते हैं फिर सांख्यशास्त्र और हठयोग वालोंको शिक्षा किया तबपीछेसे बड़ोंके साथ मतबाद युद्ध बड़ाभारी आनपड़ा निदान पहिले बादमें जीतकर फिर उनकी धुर्तई व मंत्रचेटक आदि को दूरकिया और इन्द्रजाल उन्होंनेकिया तो वहभी उनकेही गलेपरपड़ा इस प्रकार कि कोठेपरसे गिरकर मरगये और कुछ नदीमेंडूबे और जोरहेबचे तिनको उस समयके देशाधीश ने नावोंमें भरवाकर नदी में डुबवायदिया और जितने भगवत् के शरणमेंहुये वे सब उपद्रवसे बचगये तात्पर्य्य यह कि जोकोई भगवत्से बिमुखरहा अथवा वेद बिरुद्ध चलताथा उसको विद्या के बलसे व प्रभावदिखाके अथवा जिसप्रकार उसने बोधचाहा भागवत् धर्म्मपर दृढ़करदिया फिरपीछे ठौर ठौर मन्दिर व शिवाले आदि बनवाये और हरएक देवताके बर्णनमें स्तोत्र रचनाकिया और रीति पूजाइत्यादि की शिक्षाकरी गीताजी व शारीरक शूत्र व बिष्णुसहस्त्रनाम पर भाष्य अलग अलग रचनाकिया तिलकआदिकी पद्धतिका भेषनिष्ठामें बर्णन होगा बिस्तारकरके कथा स्वामी की शङ्कर दिग्विजयमें लिखीहै यहां एक नाममात्र सूक्ष्म वृत्तान्त लिखागया निर्गुण उपासक तो यहबात कहतेहैं कि यहस्वामी केवल निर्गुणब्रह्मके उपासकरहे और सगुणउपासकोंका यह बचनहै कि वैष्णवरहे और बाद सुष्टतर उनके वैष्णवहोने की ठानतेहैं कि स्मार्त सगुणउपासना की पद्धतियहहै कि अपने इष्टको अंगी और दूसरे देवताओं को अंग मानतेहैं एक तो भगवत् की जिस प्रकार दूसरी संप्रदाओंमें दृढ़है इसीप्रकार इससंप्रदामेंभी पूजा व स्मरण जप इत्यादि वैसाही व निर्गुणब्रह्म का बर्णन इसपोथी के अंतमें लिखा जायगा शंकरस्वामी के बहुतसे चेले ऐसेहुये कि उनसे इस संप्रदा की प्रवृत्ति अधिक तरहुई उनकी गुरुपरम्परासे उनके नाम खोलेजायँगे व

मठगुरुद्वारे भी बहुतहैं परंतु चारस्थान चारोंचेलों के सबमें मुख्यहैं कि उनमठोंकानामभी चारोंचेलोंके पास लिखाजाताहै और गुरुद्वारेसहस्रों हैं इसहेतु उनकी गुरुपरम्परा इस समयतक की नहींलिखी केवल शंकर स्वामीके चेलोंतक की लिखी ॥

आदि विष्णु
शिव
वशिष्ठ
शक्ति वशिष्ठ के पुत्र
पराशर
व्यास
शुकदेव
गौड़पादाचार्य
गोविन्द
शंकरस्वामी
पर्वत
वन
सागर
गिरि
तीर्थ
आश्रम
भारती
पुरी

निष्ठा तीसरी ॥

मधुसेवा व सत्संग जिसमें संतभक्तों की कथाहैं ॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरणकमल की चन्द्ररेखा को और वाराह अवतार को दृढ़करतेहैं कि जिसप्रकार ब्रह्मपुरीमें यह अवतार धारण कर के पृथ्वी को समुद्रसे निकाला और हिरण्याक्ष को वधकिया व सनका- दिकों [illegible] की आज्ञानुसार [illegible] अवतार और कुष्णावतार नहीं जिनके प्रभावसे बांध भगवत् भक्ति

होतीहै महिमासत्संगकी अपारहै तथापि किंचित्मात्र लिखीजातीहै और सत्संग की प्राप्तिसाधुसेवा करिकेहै इसहेतु साधुसेवाकी महिमाभी इस निष्ठामें लिखीजायगी और यद्यपि वास्तव अर्थसत्संग शब्दके यह हैं सत जोभगवत्भक्त तिनका संग परंतु कोई उस सत्संगके अर्थ कईप्रकार से वर्णन करते हैं उनमें दो प्रकारमुख्यहैं एकसत्संगशास्त्र और तीर्थों का दूसरा भक्तोंका शास्त्र सत्संगसे यहतात्पर्यहै कि उसका पढ़ना और बिचारना और अभ्यास रखना और उसके अनुकूल चलना जिससेसार और असार और ईश्वर मायाजीवका ज्ञानहोकर और नरकके दुःखोंसे डरकर रूप अनूप माधुरी और परमशोभा भगवत्में कि सबशास्त्रोंका सार और मुख्यलाभहै ऐसीबुद्धि लगिजावै कि दृढ़स्थिर होकर यह जीवकृतार्थ होकर सबदुख सुख भलाई बुराईसे अलगहोकर आनन्द होजायगा सो पढ़ने व अभ्यास रखनेयोग्य ये शास्त्रहैं कि जिनमें भगवत्चरित्र और भगवत् स्वरूप व गीताआदि पुराण स्मृति व वेदअथवा दूसरे ऋषीश्वरोंके रचित और हरिभक्तोंके कथित और जोउनके पदमें व अभ्यास में नहींजानने से वाणीसंस्कृतके हेतुसे दुर्बोधिता होय तो भाषाग्रंथ जैसे तुलसीकृत रामायण व बिनयपत्रिका व सूरसागर व दशम व ब्रजबिलास व कृष्णदास व नन्ददास की वाणी आदिका पढ़ना सदा कि उसके अवलम्ब से सँस्कृतसे जो बोधहोताहै सोई होजायगा व दो चार महीनेका परिश्रम करने से थोड़ेहीमें भाषापढ़ने की गतिहो जातीहै पर असावधानता व दुर्भाग्यताकी बातन्यारीहै बहुतलोग बिरुद्ध धर्मियोंके रचेहुये को भाषान्तर करने में बिशेषकरके कालव्यतीत करते हैं सो मेरेबिचारमें वे त्याज्यहैं जो वहबिवाद कि जिसहेतु से भाषान्तर ग्रन्थ धर्मबिरोधियों का पढ़ना अयोग्यहै विस्तारकरके लिखें तो बहुत हैं परंतु एकदोबात लिखीजातीहैं प्रथम उन भाषान्तर करनेवालों में मुख्य अभिप्राय उसग्रन्थका निर्वाह नहींहोसकता यहकि कोई श्लोक भागवत् व गीता व महाभारत का तरजुमा जिसको भाषान्तर लिखा है पढ़कर फिरअपनेधर्मके आचार्य्योंका तिलकहै तिससे मिलानकरै कि मुख्यअभिप्रायलुप्त व ध्वस्तहै दूसरेकोई तरजुमा ऐसानहीं कि तरजुमाकरनेवालोंने अपनेदीनके बिरुद्ध व द्वेषके कारणसे उनमेंप्रकट अथवा कोईब्याज करके

अथवा कटाक्ष लेकर हिंदूके दीनकी निन्दा न लिखीहोय जैसे अबुलफ़ज़ल ने महाभारत आदि ग्रंथोंके तर्जुमोंका प्रारंभकिया वह जलादेने योग्यहैं और उसमें विशेषग्रंथोंका तरजुमालिखाहै व तरजुमे योगवाशिष्ठ व भगवत्सेन्नकटहै और जो किसीने दूषणरहितका तरजुमाकरदियाहै तो इस भांतिकी लिखावटहै किभगवत् व महात्माओं के संबन्धमेंतनक मर्य्याद नहीं और वचन कठोर व तीक्ष्ण जैसेवाण हृदयमें लगतेहैं तीसरे ऋषीश्वरों व भक्तोंकी वाणीमें जोप्रभावहै अन्यमतवालों के तरजुमे में नहीं और प्रतिकूल होताहै यहकि जैसाविरुद्ध भावतरजुमा करनेवालों का है वैसाही पढ़ने सुननेवालों का होजाता है इसहेतु कोई आरूढ़ पदको नहीं पहुंचता व आजतक उन तरजुमों के पढ़नेवालों को भगवत् भक्त न देखा होगा परन्तु इतना विशेषहोगा कि ब्राह्मणोंको वादकरके दुःखित करना व सत्संग में विश्वासनहीं चौथे यह कि जो मंत्र ऋषीश्वर और भगवत्भक्तों ने मूलग्रंथोंमें गुप्त अथवा प्रगटलिखे हैं वे मंत्र उनतरजुमों में नहीं कि जिसके प्रभावसे मन भगवत में लगे इस भेदकरकेउनका पढ़ना उचित नहीं और अच्छेप्रकार विचारकर देखिये कि जिन लोगों ने संस्कृत व भाषा थोड़ीसीभी पढ़ीहै वे सबलोग थोड़े बहुत भगवत्के मार्गपरहैं और जिनलोगोंने केवल तरजुमे भागवत व रामायण व महाभारत व योगवाशिष्ठ व दूसरे सैकरों किताब तरजुमा की हुई विरुद्ध धर्मियोंकी पढ़ीं और अभ्यास किया कभी किसीको कुछभी गुण न किया भला यहबात रहनेदीजिये जो ऐसाही हठ है कि बिनातरजुमे फ़ारसी के हमारा अभिप्रायनहीं निकलता तो तरजुमा हिन्दुओंका कियाभी तो प्राप्तहै उनको क्यों नहींपढ़ते जैसे रामायण तरजुमाकिया टोडरमल्ल व तरजुमे भागवत कियाहुआ एक कोई कायस्थ का व तरजुमे गीताकिया कोई काश्मीरी का ऐसे बहुतलोगों के ॥ इति ॥

और तीर्थ सत्संगमें हेतु स्नानगंगा व यमुना व पुष्करआदि तीर्थों और धामआदिकोंहै उसमें कोई का यह सिद्धान्तहै कि तीर्थोंके जलको भगवत्नें यह प्रतापदियाहै कि उसकेदर्शन और स्नान और पानकरनेसे मनुष्य पवित्र होजाताहै और कोई यहकहते हैं कि भगवत् भक्तलोग एक कोई नियत समयपर एक जगह इकट्ठे होते हैं इस हेतु उस स्थान का

नाम तीर्थ कहाजाताहै और उनभक्तोंके संगका पुण्य और जलके स्नान आदिके प्रभाव कि जिसजलमें चरण उनभक्तोंकेपड़ें मनुष्योंको चित्तकी उज्ज्वलता प्राप्तहोतीहै इसबचनसे शास्त्रनेतीर्थोंसे अधिक बड़ाई भगवत्भक्ति की प्रकट की परंतु दोनोंदशा में निःसंदेह तीर्थोंके सत्संग व यात्रासे यहमनुष्य पवित्रहोकर भगवत् में लगजाताहै और रीति तीर्थ स्नानकी धामनिष्ठामें लिखीजायगी प्रथम प्रकारके सत्संगकानिर्णय तो होचुका अब वर्णन द्वितीयप्रकारका होताहै और जो महिमा सत्संगकी निष्ठाके प्रारंभमें लिखीगई और कुछ वर्णन ग्रन्थके आदिमें हुआ और सबशास्त्रोंने जो सत्संग वर्णनकिया उसका तात्पर्य्य भगवत्भक्तोंसे है निःसंदेह जिसकिसीने भगवत्भक्तोंका सत्संगकिया अपने वांछितअर्थ को प्राप्तहुआ भक्तोंकामिलना भगवत्हैं सो भगवत्का बचनहै कि एक क्षण सत्संगके संमुखपर स्वर्ग व अपबर्गकासुख बराबर नहीं होसक्ता दशमस्कन्धका बचनहै कि इससंसारसे छुटनेका और अपवर्ग व मुक्तिके प्राप्तहोनेको सत्संगही उत्तम उपायहै एकादश में भगवत् का बचनहै कि मैं योग इत्यादिसे बश नहींहोता परंतु सत्संग से व पद्मपुराण व स्कन्दपुराण व बिष्णुपुराण आदिमें भी यही निश्चय बचनहै अब यह संदेह उत्पन्नहुआ कि सब साधन तीर्थादिसे जो भगवत्भक्तोंके सत्संग को बड़ा व अधिकलिखा इसका कौन कारणहै सो यहहै कि प्रथम तो भगवत् और शिवजीका बचनहै कि जहां भगवत्भक्त रहतेहैं तहांआप भगवत् बिराजमान रहतेहैं सो जब इसपुरुषको भगवत्भक्तों का सत्संगहोगा निःसंदेह भगवत् मिलजायँगे कि यह वृत्तांत प्रचेता और नारदजीकी कथा जो भागवतमें लिखीहै उससे अच्छेप्रकार समझनेमें आसक्ताहै दूसरे अन्यसाधन जो तीर्थव्रत व जप तप व नेम व संयम आदि सबऐसेहैं कि अनुक्षण भक्तका मन उनमें नहींलगता दूसरीओर होकर संसारके स्वादमें जा लगताहै और भगवत्भक्तोंके सत्संग से अनुक्षण भगवत्में रहताहै इसहेतु कि वहां भगवत्चरित्र और कथा व सेवा व भजन कीर्तनआदिके बिना और कुछ कामनहींहोता जो किसी कालमें मनदूसरीओर गया तो फिर भगवत्के संमुख होजाताहै तीसरे अन्यसाधन तीर्थ शास्त्रआदि का यह वृत्तांतहै कि कहीं भगवत्भक्ति का

साधन वस्तु प्राप्तिहै पर साधनेवाले जो भक्तजन सो नहीं और कोई जगह भक्तसाधना करने को उद्यतहैं परंतु उनको पद्धति नहींमिलती और कोई जगह ऐसासंयोगहै कि भक्त और पद्धति सब एकत्रहैं परंतु संदेहनिवृत्त करनेवाला कोईनहीं अथवा कोई ठग एसपथका जैसे काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर ईर्षाआदि आयगया कि उसने सब पूंजी बटोरीहुईको एकनिमिषमें लूटलिया सो दूसरे साधन तो इसहेतु न्यूनतरहैं कि वहसब वस्तुके प्राप्तकरनेवाले नहीं और भगवत्भक्तोंके सत्संगको इसहेतु बड़ाकहै कि जिसवस्तु का प्रयोजन लगै वह सब वस्तु एकजगह प्राप्तहै और वास्तेपहुंचाने भगवत्पद तक भक्ति ज्ञान वैराग के घोड़ा लेकर सन्मुख हैं सो जिसकिसी को चाह भगवत्भक्तिकी है और इससंसार समुद्र को उतरना चाहताहै तो सत्संगकरै और यह भी जानले कि सत्संग सबजगह वर्त्तमान व प्राप्तहै परंतु यह अपनी कुतर्क व कुचेष्टा है कि सूझनहीं पड़तो काहेको आप पाप और अवगुण युक्त होनेके हेतु से दूसरे कोभी अपनेही सदृश जानते हैं और उसके अच्छे स्वभाव और भजन आदिपर दृष्टि न करिके और उसके अवगुण व शुद्ध स्वभावके अंगीकार की दृष्टिहोय तो सत्सङ्ग के सब जगह प्राप्तहोनेमें क्या सन्देहहै जो ऐसेहीदुर्भाव व अवगुण दूषणदेखनाहै तो कोई जड़चेतन अवगुण रहितनहीं इसकेसिवाय तीर्थस्थानोंमेंजैसे वृन्दावन व चित्रकूट व प्रयाग व अयोध्या व काशी व जगन्नाथपुरी व उज्जैन व कांची व हरिद्वार व पुष्कर आदि सैकड़ों स्थानपर सत्संग जैसाचाहै मिलताहैपरंतु भक्तयहबात समझरहैं कि सत्संगका यहअर्थ नहीं है कि चलो साहिब कोई साधु आये हैं दर्शन करआवैं सत्संग उसका नामहै कि भक्तों को भगवत्रूप जानकर उनके वचनपर ऐसा विश्वासपकाहो कि कबहीं वे विश्वासनहोवै और वह सत्संगका अनन्यता तबलग अत्यन्त प्रयोजन है कि जबतक अन्तःकरण दृढ़स्थिर भगवत्पदकोंमें न होजावे अब अधिकविस्तार करना प्रयोजननहीं नारद और व्यास वाल्मीकि अजामिल शबरी वानरी व सुदामा व प्रचेता व ध्रुव व प्रह्लाद आदिक बहुतों भक्तोंकीकथा जो पुराणोंमेंलिखीहैं औरकोई इसभक्तमालमें पढ़सुनलेवें कि सत्संगके प्रभावसे कैसेकैसे पापियोंको

क्या क्या पदवी प्राप्तहुईहै सो वहसत्संग इससमय इसमनुष्यको विना प्रयास मिलताहै जैसे भगवत्की सेवामें निष्ठा भगवत् भक्तोंको होतीहै जो वैसेही भगवत्भक्तों की सेवामें तनमनलगै भागवत् में भगवत्का बचनहै कि ऋषीश्वर मेरेभक्त मेरा शरीरहैं और वेहीपूज्यहैं और उपाय छोड़कर उनहींकी सेवाकर पद्मपुराणमें भगवत्का बचनहै कि मेरेभक्तों को भोजनकरावना व सेवाकरना वहभोजन व सेवा निज मुझकोहोताहै और जिसप्रकार मेरेभक्त मुझको भोजन करायेबिना कुछनहींखाते इसी प्रकार मैं बिना उनको भोजनकराये कुछनहींखाता और पुराणोंमें भगवत्नेकहाहै कि जो मेरेभक्तोंके भक्तहैं वे मेरेभक्तहैं फिर भगवत्का बचन है कि गङ्गा तो पाप और चन्द्रमाताप व कल्पवृक्ष दरिद्रको दूर करतेहैं और मेरेभक्तोंका दर्शनकैसा है पवित्रकिये तीनों दुःख क्षणमात्रमें दूर होजातेहैं फिर ऋषीश्वरोंका बचनहै कि तीर्थादि पवित्र नहीं करसक्ते जैसा कि संतशीघ्र इसलोक और परलोकसे निर्भय और पवित्रकरदेते हैं इसप्रकार शास्त्रों का बचनहै सो जिस किसी को चाहना भगवत् के नित्यानन्द और संसारसे छुटनेकीहै उसको भगवत् भक्तोंकीसेवा मन व प्राणसे उचितहै और कुछविचार जातिपांति आदिका तनकनहीं चाहिये जो कोईभीजाति भगवत्भक्त होवै वह भगवत्रूपहै महाभारतमें भगवत् बचनहै कि जोकोई हरिभक्तों में जाति आदिका विभेद करिके उनकीसेवा नहीं करते वे नास्तिकहैं साधुसेवाके पंथमें पांचठगहैं एकतो जातिकागर्व कि साधुको छोटीजाति जानकर सेवा न करै दूसरे विद्याका गर्व कि नहींपढ़ेहुये साधुको छोटाजानै तीसरे ऐश्वर्य्यका गर्व कि उसके मदमें कुछ भलाबुरा समझ न पड़े चौथा साधूका कुरूप देखकर सेवासे विमुखरहै अथवा रूपके गर्वसे कुछध्यानमें न लावै पांचवां बलशरीरका कि उसके गर्वसेभी भलेबुरेका विचारनहीं रहताहै सो इनपांचो गर्वको तो ताकपर रखदेवै और वे चरित्र भगवत्के अनुक्षण स्मरणरक्खे कि भगवत् ने आप वाल्मीकि श्वपचको युधिष्ठिरकी निज रसोई के घर में बैठाकर द्रौपदी के हाथ से सेवा कराई और आप श्रीरघुनन्दन स्वामी ने भीलनी के जूठे फल खाये एक साधुसेवी वृत्तान्त है कि वहदुःखी या अपनीस्त्रीकी साधुकीसेवाके निमित्त हढ़ायके कहा उसने अपने शिर

दुखने का बहाना किया संयोगवश उसीसमय दामाद आगया वह स्त्री तुरंत उठी और मोहनभोग आदिक बनानेलगी साधुसेवी ने तुरंत उस स्त्रीको घरसे निकालदिया और कहा कि जब मेरा दामाद आया तबतो शिरदुखनेलगा और जब तेरा दामाद आया तब वह शिरका दुखना तुरन्त दूरहुआ तात्पर्य यह कि जिसप्रकार कामी और झूंठका स्त्री और लोभीको द्रव्यप्याराहै इसीप्रकार भगवत्भक्तों को अपना निजप्यारा समझकर और सांचीप्रीति जानकर तनमनसे सेवाकरै जिसको भगवत् भक्तोंमें प्रीतिनहीं कदापि कोईमनोर्थ इसलोक और परलोक का सिद्ध न होगा और आजतक ऐसासंयोग कबहीं नहींहुआ कि भगवत् भक्तों की सेवाकरनेवालेका मनोर्थ इसलोक व परलोकका सिद्ध न हुआहो जो कोई भक्तोंसे विमुखहैं और निन्दाकरते हैं वे भगवत् के घरसे निकाले हुये हैं जो भक्तोंकेसाथ शत्रुता करते अथवा दुःखदेते हैं उनकानाश होजाताहै रसातलको जातेहैं रावण दुर्योधन कंसआदि भगवत्भक्तों के साथ वैरठानकर ध्वंसकोप्राप्तहुये भगवत्को हिरण्यकश्यप पर कबहीं क्रोध न आया देवता सबदुःखराये भी परंतु जबप्रह्लाद भक्तको दुःखदिया तब नहींसहिसके तो दूसरोंकी क्याबातहै भगवत्भक्तों के द्रोही तीनों लोकमें दुःखपातेहैं जिसप्रकार दुर्वासा कि जहांगये किसीने शरणानहीं दिया अब इस दासकी विनती भगवत् भक्तोंकी सेवा में यहहै कि कुछ कृपाकी दृष्टि इस अपराध कर्मीपरभी होवै जो मेरेअपराधोंपर निगाह करोगे तो उसवचनमें विरोधआवेगा कि साधुसजल मेघके सदृशहैं शत्रु मित्र साधु असाधुपर बराबर दयाकरते हैं इसहेतु अपने ऊपर कृपादृष्टि योग्यहै मेरे अपराधोंपर दृष्टि योग्य नहीं सिवाय इसके एकप्रकार से आश्रितभीहैं कि तुम्हारा भाटभीहूं कदाचित् यह कहोगे कि यहविरद रचना तेरे अन्तःकरणसे नहीं ऊपरही गावता है तो यह विनयहै कि सबभाट ऊपरही स्तुतिविरदकी किया करते हैं परन्तु यजमान उनको विमुखनहीं करता व इसके ऊपर एक सम्बन्धभी तुम्हारे चरणोंसे है कि श्रीकृष्णमहाराज का घरजाया चेराहूं जो यह कहोगे कि ऐसे पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घनको दासहोकर हमसे क्यानाहना करताहै और किस कामपर सो विनय यहहै कि घरजाया चेराहूं स्वामीकी आज्ञाके अनु-

कूल आचरणनहीं और भूलकरभी सम्मुख कबहूं नहींहोताहूं सबबातें बताने से मेरा तात्पर्य्य यह कि कोई प्रकार से यह दुष्टभाग्यहीन मन भगवत्चरणों में लगै और जोमन उससमाज के चिंतवन में लगै तो आनंदपदके प्राप्तमें क्या संदेहहै कि अयोध्या निजधाममें कल्पवृक्ष के नीचे महामण्डप है वहां पुष्पकसिंहासन पर कि जिसका प्रकाश करोड़ों सूर्य्य के समानहै आप बसन आभूषण समाजी अंगपर सजेहुये वीरासन विराजमान हैं और वामभाग श्री जनकनन्दिनी शोभित हैं ऐसा मनोहररूप अपार है कि लक्ष्मी और विष्णुभी लज्जित होकर क्षीरसमुद्र में जा छिपे भरत लक्ष्मण शत्रुघ्न सेवा में तत्पर हैं चारों वेद व नारद व सनकादिक व ब्रह्माआदि स्तुतिकरतेहैं और एकओर सुग्रीव बिभीषण आदि और दूसरे ओर सब राजमंत्री और सामने हाथ बांधे हनुमान्जी खड़े हैं ॥

बिदुरजीकीकथा॥

बिदुरजीरहनेवाले गांवछटेरा राज्य जोधपुर साधुसेवीहुये एकसाल अवर्षण हुआ खेत सूखगये साधुओं के भोजन की चिन्ता करके घबराने स्वप्नमें आज्ञाहुई कि सूखा खेत काटके मलके झाड़ो दोहजार मन अन्न होगा वैसेहीकरनेलगे सबलोग हँसीकरतेरहे दोहजारमन अन्नढेरलगा क्या आश्चर्य्य कि साधुसेवा इस लोक व परलोक में सूखे वृक्षको फल फूल लगादेती है ॥

भगवानदास की कथा॥

ठाकुर भगवानदास भीमसिंहराजपूत तोदरकेबेटे परमभक्त भगवत्भक्तोंकी सेवामेंसावधान व दृढ़ बिश्वास करनेवालेहुये प्रतिवर्ष मथुराजी में जायके साधु ब्राह्मणोंका भण्डारा बड़ा करतेरहे और रास बिलास उत्साहमें बड़ारुपया उठायकै घर चलेआते रहे समय के फेर करके व धनके बहुत उठावने से धनका संकोच आयगया तौभी ऋण लेकरके मथुरा आये कुछ कमकरके देनेका बिचारकिया तब चौबेलोग अड़े कि जितना मिलतारहा उतनाही मिलेगा तो लेंगे ठाकुरसाहबने सब रुपया जो पासथा सबकेआगे रखदिया तब यह ठहरा कि अब इसका सूका अन्नसाधु ब्राह्मणोंको बँटजाय एक कोठरीमें नाज व रुपया इकट्ठेकरके

बँटनेलगा भक्तोंके द्रोहियोंने यह विचारा कि इनकानाम हँसाजाय सो एक सांधकीजगह दश सांध दिखानेलगे प्रभुभक्त वत्सलने ऐसीलज्जा भक्तकीराखी कि अनगिनित लूट चांदीसोनेकीहोगई द्रौपदीकेचीरकेनाईं कोई वस्तु न घटी सब द्रोही लज्जितहुये भक्तिपर सबको निश्चय हुआ ॥

वारमुखी की कथा ॥

एक नगर वल्लाद दक्षिणदेश में वारमुखी बड़ी धनवाली रहती थी उसके द्वारपर एक वृक्ष हरितछाया नीचे सुन्दर वेदी बड़ी विमल बनी हुई रही एकदिन साधुलोग टिक गये संध्याके समय वारमुखी द्वारपर निकली देखा बिचारकिया कि मेरानाम सुनेंगेतो साधु उठजायँगे अपने घरमें छिपगई और रातकेसमय कुछ मोहर रुपैया एकथालीमें रखकेभेंट लेकर साधों को दण्डवत किया साधोंने जब सब वृत्तान्त जातिका व धनका सुना तब उपदेशदिया कि एक मुकुट बनाकर रंगनाथकीभेंटकर तब धन शुद्ध होजावेगा तब उसने तीनलाखरुपयेका एक मुकुट जड़ाऊ बनवाया और बड़ी प्रीति व विश्वास से नाचती गाती बाजे बजवाती मुकुट लेकर चली जब श्रीरंगनाथके मन्दिर के समीप पहुंची तब रजो-धर्महोगया तब शोकसे विकलहोकर गिरपड़ी उसके प्रेमको अन्तर्यामी प्रभुने देखातो पुजारियोंको आज्ञाहुई उन लोगोंने सामने प्रभुके पहुंचा दिया जब मुकुट पहिनाने को हाथ उठाया तो सिंहासन ऊंचा तिससे हाथ न पहुंचा शोचतीहोरही तबतक रंगनाथजी ने अपना शिर झुका दिया उस बड़भागीने पहिनादिया और महा बड़भागियोंकी गणना में विख्यातहुई अहो धन्यहै कि एक क्षणमात्रके सत्संगकी यह महिमाहै है मेरेमन कठोर तुझकोभी धन्य है कि ऐसे चरित्रों को लिख पढ़के भी कोमल होकर प्रभुकीओर सन्मुख न हुआ ॥

तिलोकजी की कथा ॥

तिलोकजी जातिके स्वर्णकार पूरबदेशके एक नगरमें हुये भगवत् भक्तोंकी सेवामें बड़ीप्रीति रही जो कुछ उद्यममें लाभहोता सो सेवामें लगादेते रहे उस देशके राजाने लड़की के विवाह समय बहुत रुपया गहना बनानेको दिया सो सब साधुसेवामें उठादिया तगादा हुआ तब राजा लालकरके ऐसी सुनारोंकी चालहै टालनेपै तब सन्मुखपहुंचा

तब परभातको देना निश्चयकरके चलेआये साधु आये उनकी सेवा में लगे रातको राजाका डरहुआ भोरही एक जंगलमें छिपकर बैठरहे भगवत् अपने दासोंकी लज्जा रखनेवाले सब गहना तिलोकजीका रूप धर राजाके पास लेगये इनाम लेआकर तिलोकजीके घर महोत्सव करके साधु ब्राह्मणको भोजन कराया प्रसादलेकर तिलोकजीको जाकर दिया तिलोकके घर महोत्सवहुआ तुमको प्रसादहै उन्होंने पूछा कौन तिलोक जवाबदिया जिसके बराबर तिलोकमें कोईनहीं समझगये प्रभु के चरित्रहैं घरआये साधुसेवा व भजन सुमिरणमें मग्नहुये ॥

तिलोचनदेवकी कथा ॥

तिलोचनदेव बैश्यबरण चले ज्ञानदेव के भगवत्भक्त विख्यातहुये विष्णुस्वामी संप्रदा के थे साधु सेवा में बड़ा प्रेम रहा एक स्त्री व आप दोहीरहे चिन्तना करतेरहे कि एक चाकर ऐसा मिलता कि साधुओं के मन की जान जान सेवा करता भगवत् आप एक टहलुआ का रूप बना कर टूटी जूती फटी कमली से आन पहुंचे तिलोचनजी ने उनका घर मा बाप सब पूछा तब उत्तर दिया मा बाप घर बार कुछ नहीं रखता टहलुआहूं पांच सात सेर खाताहूं चारों बर्ण की पद्धति मेरे हाथ में है भक्तों की सेवा अच्छी करसक्ता हूं अन्तर्यामी नामहै तिलोचन बहुत आनन्द हुये नहलाकर कपड़े बदलाकर रक्खा सेवाभक्तोंकी सौंपी स्त्रीसे भोजन को बहुत समझाय के दृढ़ाय दिया अन्तर्यामी ने सब प्रकारसे साधुओं की ऐसी सेवा करी कि तिलोचनजीका नाम विख्यात हुआ तेरह महीने इसी प्रकार से व्यतीत हुये एक दिन तिलोचनजीकी स्त्रीपरोसिनके घर गई उसने दुर्बलताका कारण पूछा इसने कहा कि रातदिन आटा पीसते रोटी पोते गत होताहै मेरेस्वामीने एक टहलुआ रक्खाहै बहुत खाताहै इतना मुखसे निकलतेही अन्तर्यामी अन्तर्धानहोगये इसहेतु कि पहिले दिनवृत्त भोजनका गिलाहोनेपर नहींरहनेका प्रबन्धकरलियाथा पीछे तिलोचनजी शोकयुक्तहुये तीनदिन बिना अन्नजल पड़ेरहे तब आकाश वाणीहुई कि तिलोचनजीतुम्हारे मनकाहेतु बूझकर वह टहलू मैंथा जो तुम्हारीइच्छा अबभी हो तो हमको अंगीकारहै तब तिलोचनजीको बड़ा पश्चात्तापहुआ संतोंनेसमझाया सेवास्मरणभगवत्की करनेमेंलीनहुये ॥

जम्बूस्वामी की कथा ॥

जम्बूस्वामी रहनेवाले दुआबे गङ्गा व यमुनाके बीचके भगवत्भक्त हुये जितनेसे जो लाभहो सो साधुसेवामें उठादेते एक समय चोर उनके बैल चुरालेगये भगवत्ने जैसे ब्रह्मासे वैसेही बछराबालक रचकर ब्रह्मा का मोहदूरकिया तैसेही बैल जम्बूस्वामी के यहां प्रातकरदिये फिरचोर सबआये यहांदेखा कि वहीबैलहैं तब घरदौड़गये वहां वहीबैल देखा फिरदौड़आये यहांवहीदेखा कईबारदौड़े तब चकितहोकर स्वामीसे सब वृत्तान्तकहा स्वामीनेकहा यहभगवत्के चरित्रहैं तुम अपना काम करो हम अपनाकाम करतेहैं चोरोंको दृढ़बिश्वास हुआ बैललौटाकर स्वामीको दिये तब मायाकेबैल गुप्तहोगये वो चोर चोरीका धंधाछोड़कर स्वामीके चेले होगये और भगवत्भजन करनेलगे ॥

रामदासजी की कथा ॥

रामदासजी रहनेवाले ब्रजके परमभागवत और साधुसेवी ऐसेहुये जिसप्रकार कमलसूर्य्यको देखकर फूलताहै इसीप्रकार हरिभक्तको देखकर प्रसन्नहुआ करतेथे एकबेर कोईसाधु रामदासजीकी बड़ाई सुनकर आया पूछा रामदास कहांहैं रामदासजी उठे और उससाधुके चरणधो चरणामृत लेकर बिनयकिया कि रामदासभी आयाजाताहै आप भोजन प्रसादकरें साधुनेकहा हमको रामदाससे मिलनाहै तबबिनयकिया कि रामदास यही सेवक है साधु बहुत प्रसन्नहुआ चरणों को पकड़लिया रामदासजीके लड़कीके बिवाहमें पकवान बनके धराथा साधुकी जमात आगई तालातोड़कर साधुओंको भोजन करायदिया साधुसेवा व बिहारी लालजीके स्मरण भजनमें सारा वयक्रम व्यतीतकिया ॥

सन्तभक्त की कथा ॥

सन्तभक्त रहनेवाले जोधपुरके भगवत्भक्त साधुसेवीहुये गावोंमें से भीखमांगे साधुसेवा करते निर्धन होगये एकदिन साधुआये तो सन्त भक्तकी घरमेंस्त्री से पूछा सन्तभक्त कहांहैं उसने उत्तरदिया दूकानमें हैं साधुओं ने सुनकर [illegible] उधरसे सन्तभक्त [illegible] आतेहैं वहां साधुओं ने पूछा कहांगये रहे सन्तभक्तकी स्त्रीने जो उत्तरदियाथा सो कहाकि [illegible] करके [illegible] लानेको कोई बातहो कि उन्होंने

गये थे साधुचकित हुये तबकहा कि चूल्हेमें जाने से यह तात्पर्य्यहै कि प्रभातही से साधुओंको रसोईकी चिन्ताहोतीहै कि कबहोगा कि उनका सीथ प्रसाद मुझको मिलैगा साधुलोग सुनके बहुत आनन्दहुये उनके घरगये भोजन भजन सत्संगके सुखमें मग्नहुये॥

सेनभक्त की कथा ॥

सेनभक्त जात हज्जाम चेला स्वामीरामानन्दके रहनेवाले माधवगढ़ के ऐसेप्रेमी भक्तहुये कि जैसे गऊ अपने बछड़ेकी पालना करतीहै इसी प्रकार उनकीपालना और सहाय प्रभुनेकरी वृत्तान्तयहहै कि सेनसाधु सेवीरहे एक दिन तेल लगाने राजा के जातेरहे बाटमें साधु मिलगये उनको अपनेघरपर लाकर भोजन आदि सेवामेंलगे राजा का भय कुछ न रहा जब राजाकी सेवाका समयहुआ तब आप भगवत्सेनभक्त का रूप धरके राजाकीसेवा तेल मर्द्दन आदिकरके राजाको प्रसन्न कर चलेआये पीछे सेनपहुंचे बिलम्बहोने का अपराध क्षमाकराने लगे भगवत्स्पर्श होनेसे राजाने प्रभावभक्तिकाजानलियासेनके चरणोंमेंगिरा उनकाचेला होकर भजनकरनेलगा अबतक उनके बंशमें सबसेनबंशके चलेहोते हैं ॥

सदाव्रती की कथा ॥

साहूकार सदाव्रती वैश्यबर्णा परम भगवत्भक्त हुये साधु सेवा बड़ी प्रीति व विश्वाससेकिया करतेरहे एकसाधु उनकेघरपर टिका था साहूकार का एक छोटालड़का कि जिसकी साधुकेसाथ प्रीतिहोगई उससाधु के पास खेलाकरता था उसको एकदिन साधुने जंगल में लेजाके मार कर गाड़दिया जब सांझतक लड़का न आया तब उसकी मा ने पुकार करी ढूंढ़नेदौड़ी तब एकसंन्यासी ने साहूकारको वहजगह जहां लड़का गाड़ारहा दिखादी और कहा जो साधु तुम्हारेघरमें रहताहै उसीने यह कर्मकियाहै साहूकारने मरनालड़के का अपनेकर्मका फल समझ दण्ड देना उससाधुका सेवा धर्म से अयोग्य जानकर उसबात के छिपानेकी यह युक्तिबिचारी कि उसीसंन्यासी को पकड़ा कि तैंनेही माराहै जब संन्यासी व्याकुलहुआ तब साहूकारने कहा कि यह बात मतकह और इसनगरसे चलाजा तो तुझको छोड़देंगे उसने अंगीकारकिया तब छोड़ दिया जबसाहूकारने उससाधुको लज्जितदेखा तब उसके संकोच मिटाने

के हेतु अपनीस्त्री से विचारपूछा उसने कहा कि जो लड़की विनब्याही है उसकेसाथ ब्याहदीजाय तो भरोसा साधुके रहनेकाहै दूसरी उपाय देखनहींपड़ती साहूकार अपनीस्त्री पर बहुत प्रसन्नहुआ और धन्य मान कर उससाधुको बुलाकर पहिले अपने भाग्यकाखोट व हरिकीइच्छाकी बात सब कहकर अपना बिचारथा सो कहा वहसाधु अपने अपकर्मसे महाग्लानिको प्राप्तरहा बोला हमारे ऐसे अधर्मपर ऐसीदया अयोग्यहै जातनाके साथ वधउचितहै साहूकारने समझा बुझाके सावधान करके अपनी लड़कीसे विवाह करदिया यहवृत्तान्त व यश संसारमें फैला तो साहूकारके गुरूनेभी भगवत्की आज्ञासे आयके साहूकारका घर पवित्र किया साहूकारने सेवापूजाको बड़ेआनंद व हर्षसेकिया गुरूने पूछा कि तुम्हारा लड़का कहांहै साहूकारने जवाबदिया कि थोड़ेदिनहुये मरगया पूछा कैसे मरा साहूकार बोला कि महाराज आप तो जानतेहीहैं कि संसार इसजगत्का नामहै मृत्युका कौन कारण वर्णनकरूं गुरूने उसी की परीक्षाकरी तब लड़का धरतीसे निकलवाकर जिलादिया सबलोगों को विश्वास भक्ति और साधुसेवा का हुआ ॥

केवलकूवां की कथा ॥

केवलकूवां जातकेकुम्हार ऐसे परमभक्त साधुसेवीहुये कि अपनेकुल को पवित्रकरके भगवत्को प्राप्त करदिया एकबेर उनके घर साधु आये घरमें कुछ न था उधारभी न मिला नितान्त कुवां खोददेने के प्रबन्धपर एक दूकानदारने सामग्री रसोईकीदी साधोंकी सेवाकरी जब कुवां खो-दनेलगे तबछब्बीस गजपर रेतनिकला टूटके सबकेवलजी परपड़ा मरा जानकर सबलोग चलेआये कि हजारोंमन मिट्टीके नीचे कब जीतेहोंगे एकमास पीछे किसीने वहां शब्द रामराम सुनकर गांवमें सबसे कहा सबगांव आया हाथोंहाथ मिट्टीटालकर देखा केवलजी आसन लगाये बैठेहैं एकलोटा जल धरेंगेपराहै एकओर महीनेदिनके भोजनके पनवाड़े हैं बाजा बजाते थकजाते नहींफिरनेके कुछकुछहै होगये तबसे केवल कुवां विख्यातहुये किसीनेतब साधु भगवत् नहीं स्थापन करनेकोलिये आतिरहे केवलजीके घर उनके बहुतमोहिनरूप देखकर केवलजीको इच्छा हुई कि हमारे यहांरहते तो अच्छा था अपनेको साधुसेवीको उठ चले

ने उठी वहांहीरही स्थापनेकरके सेवाकरनेलगे झसेरगांव जहां केवल
जी रहे वहमूर्त्ति विराजमानहै अबतक केवलजीके घरमेंहै अपने भक्तके
हृदयकी प्रीतिजानकर रहगये इससे जीनराय उसमूर्त्तिका नामहै एक
बेर केवलजीको शंखचक्रलेनेको द्वारावती जानेकी इच्छाहुई भगवत् ने
आज्ञाकी तुमको घरबैठे सब होजायगा कहीं मतजाओ शरीर पर सब
चिन्हहोगये ऐसेऐसे कितनेहीप्रभाव केवलजीकेहैं समुद्र वा गोमतीकेबीच
में बड़ीरेतीहै जब लहरआवै तब समुद्र गोमती मिलकर रेतीजलमें हो-
जाय फिर खुलजाय एकसमय लहरआना बन्दहोगया रेतीखुली रहगई
हवासे रेतीके उसदेशके लोग दुखीहुये केवलजीकी मालागई तबसे स
मुद्र गोमतीमें मिलनेलगा यह प्रभाव देखकर बहुतलोग चेले केवलजी
के हुये भक्तिकीरीति उसदेशमेंचली एकदिन केवलजीके घर साधुआये
उनके निमित्त उनकी स्त्रीने सूखीरोटी बनाई संयोगवश उसस्त्रीका भाई
इसीसमय आगया उसके निमित्त खीरबनाई केवलजी देखकर उसको
पानीलानेको भेजा खीर साधोंको खिलादी स्त्री ने आनकर क्रोधकिया
उसको घरसे निकालदिया उसने दूसरा खसमकरके बेटाबेटी जन्माया
एकसमय अकालपड़ा तब अन्नको बिलकती केवलजीके यहांआई देखा
भंडारा चलरहाहै केवलजीको दयाआई बोले कि अरीनिगोड़ी जो खसम
करना अंगीकार था तो ऐसा खसम क्योंन किया जैसा मेराखसमहै कि
तेराखसमभी जिसका भिखारीहुआ केवलजी साधोंके आनेजानेकी राह
में झाड़ूदेना उसको कहदिया सुकालहुआ तब बिदाकर दिया॥

ग्वालजी की कथा॥

ग्वालजी परमभक्त साधुसेवीहुये अपने उद्यमसे जो कुछ लाभहोता
साधुओंको सेवाकरते एकसमय बनमें साधुसेवामें रहे उनकी भैंस चोर
लेगये घरमें आपती आसे कहा कि एक ब्राह्मण घीकेदाम समेत भैंसको
लेनेका प्रबंध करके लेगयाहै मा उनकी जानगई पर कुछ न बोली पुत्र
स्नेहकरके एकदिन दीपदानको चोरोंने भैंसके गलेमें चांदी की हँसुली
डाली भगवत् जोकि ब्राह्मणोंके ब्राह्मणहैं रस्सी तोड़कर भैंसको ग्वाल
जीके घर पहुंचाया ग्वालबोले देखो कैसा सच्चा ब्राह्मणहै घीके दाम
की हँसुली समेत भैंस पहुंचायगया॥

गोपालजी की कथा ॥

गोपाल जी भक्त कृष्णउपासक जयपुर के राज्यमें हुये साधुसेवाकी उनकी बड़ी ख्यात हुई तब उनके कुल में कोई विरक्त होगया रहा सो परीक्षा लेनेको आया अच्छेप्रकार उनकी सेवाकरी घरमें भोजनकराने को लेगये उन्होंनेकहा स्त्रीको हमनहीं देखते गोपालने कहा सबअलग होजायँगी भोजन करनेलगे तो झरोखेसे भक्तकी स्त्री दर्शन करनेलगी तब विरक्तने एक तमाचा गोपालके मुहँपर एकओर मारा दूसरी ओर बाकीरहा उसे लेकर बिनय किया कि इसकोभी पवित्रकरिये वह विरक्त बोला कि ऐसेही वंशसे कुलका उद्धार होताहै ॥

गोपाल विष्णुदास की कथा ॥

गोपालजी रहनेवाले बाबली काशीके समीप व विष्णुदास रहनेवाले काश्मीर देश दक्षिणके दोनों गुरुभाई भक्तोंकी सेवा परमभावसे करतेथे और जो कुछ धर्म अच्युतगोत्रके कुलको चाहिये सो दोनों भाइयोंनेऐसा पालन किया कि बिख्यात होगये भंडारे महोत्साह में जोकोई उनको बुलावे तो गाड़ोंमें सामग्री भरके लेजाते कि कोई बातकी घटीआने से भंडारेवालेकी निन्दा न होय गुरु उनके सिद्धथे दोनों भाइयोंने विनय किया कि आज्ञाहोतो महोत्साहकरें गुरुने आज्ञादी औ बुलानेकेनिमित्त अपने चारोंओर जल डालकर बोले कि तुम सामा महोत्साहकी बनाओ जोदिन उत्साहकाहै उसदिन सब साधु आवेंगे गुरुकेवचनपर निश्चय कर किसीको बुलानेको कहीं न भेजा सामग्रीको इकट्ठा किया उसदिन पर सारे संसार के साधु पहुंचे सबकी रीति मर्य्यादकर भण्डारा बड़ी धूम धामसे हुआ पांचदिनतक भांति भांति के भोजन करवाये सबको वस्त्र द्रव्य भेंटकिया गुरूने आज्ञाकी कि इस मेलेमें नामदेवजी व कबीर जीभी आयेहैं पता बतलादिया व कहा कि दोनों महापुरुषोंका दर्शनकर आओ दोनोंभाई ढूंढे नामदेवजीका बड़ी प्रीतिसे पकड़लिया नामदेवजी मुसकराके बोले कि जहां भगवद्भक्तोंकी प्रीतिनहीं तहां हमनहीं जाते जहां प्रीति व सेवा भक्तोंकी होती है तहां निश्चयकरके जातेहैं तुम्हारी साधुसेवा देखकर बहुत प्रसन्नहुये अब तुम कबीरजीकाभी दर्शन करो तब दोनों भाइयोंने राहमें कबीरजी का दर्शनकिया उन्होंने भी

वैसेहीकृपाकोबिदाहोकर दोनोंभाई गुरूके निकट आये भगवत्से मिल
ने का दृढ़ अवलम्ब साधुसेवाको समझकर स्मरण भजन करतेरहे ॥

गणेशदेईरानीकी कथा ॥

रानी गणेशदेई मधुकरसाह राजा वोछड़ेकी धर्मपत्नी भगवत्भक्तिमें अहंतरही राज्यसे जो मिले साधुसेवामें लगाती एक साधुने धनके ठिकाने की जगह रानीसे पूछा रानीनेकहा साधुसेवा धन्यहै तिसपर रानी की जानुमेंछुरी मारकर वह साधु भागगया कितने दिनों रानी वहाना रजोधर्म व वेषैनी शरीरकी करके राजाकीसेजपर न गई इसहेतु कियह घाव देखकर राजा सब साधुसे भावघटादेगा नितांत राजाकेपासगई देख कर राजानेपूंछा तब वृत्तांतकहा राजाअतिप्रसन्नहुये अपनाभाग्यसराहा॥

लाखाभक्तकी कथा ॥

लाखाभक्त हनूमानवंशमें रहनेवाले मारवाड़देशके हंसके सदृशहुये राममंत्रोपासक साधुसेवी विख्यातहुये आकालपड़ा साधोंका आनाजाना वहुतहुआ दूसरी जगह कहीं जावैठनेका विचारकिया भगवत् ने स्वप्न में कहा कि इसीजगह रहो प्रभात एकगाड़ी गेहूं और एक भैंसआवेगी गेहूं तो कोठीमें रखना जितना प्रयोजनहोगा उतना निकलता रहेगा घटगानहीं व घी दूध सदा भैंससेहोगा जब प्रभातहुआ तब गेहूं व भैंस एक आदमी पहुंचायगया लाखा शुचि जीते होकर साधुसेवा करतेरहे उस भैंस व गेहूं के पहुंचाने केहेतु भगवत्ने यह चरित्रकिया कि किसी ने किसीको बोलमारा कि देखेंगे तू गेहूं व भैंस लाखाभक्तका देआवेगा वही देगया फिरलाखा साष्टांग दण्डवत्करते एक सुमिरनी भेंट लेकर जगन्नाथजीगये थोड़ीदूर जब मन्दिर रहा जगन्नाथरायने पालकीभेज कर दर्शनदिये सुमिरनी अंगीकारकी कुछदिन पुरीमें रहे एक लड़की कुंवारीरही साधुसेवाके लालच ब्याहमें चितउठा विना रुपया कौन करे जगन्नाथजीने आज्ञादी हमारे भण्डारसे लेकर ब्याह करो अंगीकार न किया पुरीसे चलखड़ेहुये तब जगन्नाथजीने एकराजाको स्वप्नदिया तब उसने एकहजार मुद्रा भेंटकिया भगवत् आज्ञाजानी अंगीकार कियाघर आनिकै लड़कीका ब्याह कर जो बचा साधोंकी सेवामें लगाया ॥

कथा रसिकमुरारि की ॥

रसिकमुरारिजी परम भक्तहुये सेवा पूजा उत्साह सहित करते व प्रियाप्रीतमके रंगमें रँगे युगुलछवि माधुरीके आनंदमें मग्नरहा करते सदा चरणामृतपीते जलनहीं एकसमय भंडाराहुआ चरणामृत संतोंका लिया स्वाद न पाया कारण लेआनेवालेसे पूछा तो एककुष्ठी साधुका चरणामृत घृणासेनहीं उताराथा उसकाभी चरणामृत उतरआया तबस्वाद पाया एकसाधुने अपने सोंटेकाभी पारसमांगा न पाया तबजाकर पत्तल आधीखाई रसिकमुरारिजीके शिरपर मारा उससमय बारह राजा चेले मुरारिजीके उसको मनानेको उठे सबको मनाकरके आपजाकर विनय करी कि आज सीथप्रसाद कृपाकर आपने दिया और दिन चरणामृत मिलताथा यहकहकर कईपारस दिलवाये एकबेर बगीचेमें साधुउतरे आप के जानेपर एकसाधु हुक्कापीतारहा संकोचकर छिपाया आपने देखकर आदमियोंसेकहा हुक्काभरलो दरदहोताहै जबआया तब थोड़ापीकरउस साधुकोदिया उसे साधुनेपिया एकबेर जागीरके गांव दोचाररहे सो राजा ने निकाललिये श्यामानन्द गुरुदेवने लिखा जिसदशामेंहो वैसेहीआओ भोजनकर उठेथे जूठेही हाथमुंह गुरूकेपास पहुंचे गुरूने प्रसन्न होकर राजाकेपास जानेको आज्ञादी जब राजासे भेंटकरनेचले पालकी में तब राजाने एक बौड़हा मत्तहाथी राह में छुड़वादिया सब भागगये कहार भीभागे तब हाथीसेकहा कि हरे कृष्ण हरे कृष्ण क्योंनहीं कहता सुन-तेही वहहाथी सोरगुल सबछोड़कर चरणोंपर मस्तक झुकाकर आंखों से जलप्रेमका गिरानेलगा गोसाईंने माला गलेमें पैन्हाकर भगवन्नाम कानमें उपदेशकर गोपालदास नाम रखदिया राजा सुनके दुष्टताछोड़ चरणों में आनकरगिरा अपराध क्षमा कराया चेलाहुआ गांवछोड़दिये औरभीदिये हाथी साधुसेवा करनेलगा बनजारोंका जिनिसलाकर भंडारा महोत्साह करता सबकी हानिकावृत्तान्त जबपहुंचा तब गोसाईं जीने हाथीको समझादिया तबसे पांच सातसौकी जमात साथलेकर महंतके ठौरमें रामतकरनेलगा जहांपै है वहांभेंट न मानती सबठौर पहुंचापदेसी यहवृत्तान्त संसारमें ख्यातहुआ देखो यवनिक नें भी सुना लकड़ीका उपायकिया हाथ न आया एककोई साधुकारूप बनाकर महन्त

में लेआया कारागारमें बन्धनकिया वह गोपालदास बिना भगवत्प्र-
साद व सीथप्रसादके कुछ और नहीखातारहा तीनदिन बिन अन्नजल
खड़ारहा आमिलनेकहा कि गंगाजी में लेजाव गंगाजलतो पानकरैगा
जब गंगामेंगया तो शरीरकोछोड़ परमधामकोगया यहां एकबात अति
कोमल व सूक्ष्म भीहै एककारण करके वर्णननहीं करसक्ता सबकोई अपने
अभिलाष व विश्वासके अनुकूल समझलेवें गोब्राह्मण व हरिभक्त और
हरिभक्तों की कृपा॥

मनसुखदास की कथा॥

मनसुखदासजी जाति कायस्थ ऐसेभगवत् भक्तहुये जिनको भगवत्
ने साक्षात् दर्शन दिये साधुसेवा में बड़ी प्रीतिरही कंगालता आयगई
उपवासोंसे दिनकटते थे ऐसीदशामें किसीदुष्टके बहकाने से एकसाधुने
मिठाईका भोजनमांगा तबस्त्रीसे आपने उपायपूछा उसने नाकमेंसे नथ
उतारकर हाथपररखदी गहने धरके साधुसेवाकी भगवत् मनसुखदास
के रूपसे रुपैयादेकर नथ बनियाके यहांसेलयाये वह बड़भागिनी चौ-
कादेतीरही बोली पहिनादेव प्रभुने श्रीहस्तसे पहिनाई मनसुखदाससे
स्त्रीकीभक्ति अधिकजानकर स्त्री को दर्शदिया क्योंकि ऐसी दरिद्रतामें
तनमें केवल एकगहना सोभीनाकका जिसकरिके सुहागिन कहलातीहैं
सो उतारदिया साधु सेवाकोकिया तो भगवत् क्यों न दर्शनदें जब मन-
सुखदासने देखा सब वृत्तान्तसुना तो जाना भगवत्के चरित्रहैं सबबातें
समझकर आनन्दमें मग्नहोगये अब अपने भागको शोचनेलगे स्त्री के
भागको धन्यमाना अन्नजल छोड़कर दर्शनकी अभिलाषकर भजनकरने
लगे स्वप्नहुआ काशीमें दर्शनहोगा वहां जाकर काशीमें भजनकरनेलगे
चतुर्भुज रूपसे प्रभुने दर्शनदिये वर यहीमांगा कि यहीरूप मनमें बसा
रहे अंतमें उसीरूपको प्राप्तहुये॥

हरिपाल निस्कञ्चन की कथा॥

हरिपाल ब्राह्मण ऐसेभक्त और साधुसेवीहुये कि धनसब साधुसेवा
में उठायदिया ऋणसे जहां तकमिला वहभी साधुसेवामें उठाया भग-
वत्भक्तोंको खिलादिया निस्कञ्चन विख्यातहुये तबचोरी ठगी करने
लगे जिसको तिलक कंठी अथवा भक्तजानैं तिससे न बोलैं भगवत्सेवी

तुच्छ जानते तिसको हाथ न लगाते एकजमात साधुओंकी आई टिकाकर भोजनकी सामग्री के चिन्तामें निकले कुछहाथ न लगा विकलहुये भगवत्को भी भक्तोंके विकलहोनेसे चिन्ताहुई द्वारकासे रुक्मिणीजी समेत चले श्रीकृष्णजी साहूकारके रूप रुक्मिणी साहूकारनी केरूपसेआये निष्किञ्चनजी से कहा कि उस गांवतक पहुंचादेव एक रुपैयादिया निष्किंचनजी तीर कमान लेकरचले पंथमें सोचनेलगे कि यह साहूकार अच्छा चिकना चांदना मोटा ताजाहै और भगवत्से विमुख दिखाई पड़ताहै कि तिलकमाला नहींरखता इसका माललेना चाहिये जंगलमें पहुंचे तब तरवारखींच डरवाकर सबआभूषण उतरवालिया एकछल्ला साहूकारनी की उंगुलीमें रहगया निष्किञ्चन जी उसको भी बलकरके उतारनेलगे साहूकारनी बोली अरे निगोड़े तू बड़ा बेदरद व कठोरहै कि मेरासारागहना लेलिया अबएकछल्लेके कारण मेरी अंगुलीमरोड़ता है निष्किंचन जी बोले चल बावली कहांकी कठोरता और कोमलतालाई है तेराखसम तुझको सौ छल्ले गढ़ादेगा मैं इसछल्लेबिना दशहरि भक्तोंकी सेवा कहांसे करूंगा यहसुनतेही आपप्रभु प्रगटहो छातीसेलगा कर राजायह पदवी निष्किंचन को देकर अन्तर्धान होगये अब विचारना चाहिये साधुसेवा की महिमाको जिसके प्रभावकरके पापकर्म पुण्यरूप और भगवत् जो कालका भी काल और भयकाभी भयहै सो वशीभूत होकर भक्तके मनोर्थ पूर्णकरने को निजधाम छोड़कर आताहै ॥

हरीराम की कथा ॥

हरीरामजी ऐसे भगवद्भक्त रहे कि भजनके आगे सर्वसाधन तुच्छ समझते रहे बड़े प्रतापी व बुद्धिमान चतुर व प्रेमकीमूर्तिरहे और प्रिया प्रीतम के ध्यान में दिन रातव्यतीत होतारहा व साधुसेवा का प्रण [illegible] कौन कथनहै एकसाधुको [illegible] संन्यासी ने राजाके समीप [illegible] राजाको [illegible] गांवमें डौंड़ी [illegible] [illegible] साधुको अन्न न मिले और [illegible] हरीराम जी ने [illegible] हरीरामजी ने राजा के आगे जाकर [illegible] [illegible]

हिरण्यकस्यपादिका कह धरतीसाधुको दिखाई सचहै किसन्तजन काल यम किसीसे नहींडरते राजाकी कितनी बातहै ॥

रानी व राजाकीकथ॥

एकराजा परम भागवत साधुसेवी ऐसाहुआ कि साधोंकी भीड़उसके यहां बनीरहतीथी अपनेहाथ सेवाकरता एकमहंत परमभक्त औरज्ञानी से बड़ीप्रीति होगई जानेनहींदेते एक वर्ष पर्यंत महंत टिकेरहे प्रभात जानेका निश्चयकिया राजाने बहुत विकल होकर रानीसे कहा रानी ने देखाकि महंतके जानेसे राजानहीं जीवेगा तब बिचार किया कि लड़के को बिष दे कि इसहेतु कुछदिन महंत ठहर जायँगे सोई किया राजमन्दिरसे महारुदनकी धुनिहुई महंतभी दौड़कर गयालड़केको श्यामदेखा जानाकि बिषदियाहै वृत्तान्त पूंछते पूंछते राजाने कहा तब महन्त उनके प्रेमको समझकर बेसुधहोकर मग्नहोगया सबसाधों को बुलाकर भजन प्रारम्भ किया थोड़ीबिलंबमें लड़का जीउठा खेलनेलगा फिरमहंतसाधुओंको बिदाकर आपराजा रानीके प्रेममें बँधकर रहगया सचहै जोजन भगवत् भक्तोंकी महिमा और सत्संग के सुखको जानते हैं उनको बियोग भगवत् भक्तोंका करोड़ नरकके दुःखसभी अधिक दुःखदेनेवालाहै॥

एकराजाकी लड़की की कथा ॥

एकभक्त साधुसेवी राजाकी लड़की जो ऐसे बिमुखके साथव्याहीगई कि वहकुछ न जानताथा कि भगवत् व भक्ति व साधु किसकोकहते हैं अपने ससुराल में गईतब अति बिकलभई साधुका दर्शन दुर्ल्लभहुआ तब एकलौंड़ीसे कहाकि जब साधुआवें तबकहना एकजमात साधुओंकी वाटिका में उतरी सुनकर उसलड़कीने अपना दोतीन बरसका लड़का रहा उसको बिषदिया मरगया राजा उसका खसम रोदन करनेलगा तब वहलड़की बोली कि मैकेमें हमनेदेखाहै साधुके चरणाम्रतसे लड़का निस्संदेहजियेगा उसने कहा साधुकैसे होतेहैं तबलौंड़ीके साथकरदिया उसने दण्डवत्आदिकी बिधिजनादिया वह जाकरसाधुओं को दण्डवत् बंदनकर साधुओंको घरलायाउसलड़कीने दरशनकर धन्यमाना साधु लोगोंने चरणाम्रत मुखमें लड़केके देकर भगवत्ध्यान व भजन प्रारंभ किया लड़का उठबैठा वह राजा भगवत् भक्त होकर उसदेश को भक्त

कियादेखाचाहिये सत्संगकी महिमाकोएक लड़की बड़भागी के प्रताप से कितने लोगोंका उद्धारहुआ और भगवत्भक्त जन्म व मरणकादुःख दूरकरके लाखोंकरोड़ों को अमर करदेते हैं एक लड़का जिलादिया तो क्याबड़ी बातहै ॥

नीवांजीकी कथा ॥

नीवांजी राजपूत ऐसे भगवत् भक्त साधुसेवीहुये कि जोभक्त उनके घर आवें अतिप्रेमसे उनको दण्डवत् कर चरणों को धोकर अपने घर ठहराते जगह जगह कथाबैठाकर अपनी मधुरवानी और सेवासे प्रसन्न रखते इसीप्रकार जबतकरहे वयक्रमभर उनकेप्रेमकोभगवत्ने निबाहा ॥

कृष्णदासजी की कथा ॥

कृष्णदासजी गलताजी जयपुरके राज्यमें भगवत्भक्त हुये रघुनन्दन स्वामीके चरण कमलमें मन भवँरकी भांति लगायेरहते सुख दुःख शत्रु मित्र बराबर जानते स्त्रीकोनहीं देखते अभ्यागत सेवा करते कलियुगको मानाजीतलिया जो दधीच ऋपेश्वर ने कियासोकिया एक दिन गुफामें बैठे भजन करते द्वारपर व्याघ्रआया अभ्यागत जानकर अपने जानुका मांस काटके डालदिया भगवत्ने प्रसन्न होकर दर्शनदिया विचारकरना चाहिये इसधर्मको अबहमलोगथोड़ासापानी और चुटकी आटादेतेरोतेहैं॥

रानाबाई की कथा ॥

रानाबाई धर्मपत्नी रामराजा पुत्रखेमाल भगवत् और गुरू और भक्तों की ऐसी भक्त व सेवाकरने वाली हुई कि संतोंने कृपा करके दोनोंलोकसे निर्भयकरदिया और जिसने अपने स्वामीकी शिक्षाके अनुकूल आचरणकिया और नवधाभक्तिको मुख्यतर समझकर अन्यधर्म्म सब छोड़दिये और उसभक्तिके प्राप्तिका हेतु सिवाय भगवत् भक्तोंकी प्रीतिके दूसरा न जानकर सार असारके मूल तत्त्वको अच्छे पहुंचकर भगवत्की अनन्यदासतामें दृढ़हुई उदारता इतनीरही कि एकबेर अपने पतिके संग मथुराजी गई वहां सब धन जो पासरहा साधु ब्राह्मणों को देदिया कुछ राहके निर्वाहकाभी न रक्खा इसीसमय नाभाजी कृतभक्तमालके प्रताप हाथों में केवल कड़े एकसौपांच रुपयेके दामके रहगये थे जो बेचकर घरजानेका विचार कियाथा उनको रानीसाहबने बेचकर

दिया और राजासेकहा आजतक शरीरपर बोझरहा आज काम आया राजा प्रसन्नहुये किसीप्रकार करके राजधानीपर पहुंच सत्यहै कि जिसने साधुसेवाके समय कलहकी चिन्ता को किया सो साधुसेवा क्याकरैगा ॥

नन्ददासजी की कथा ॥

नन्ददासब्राह्मण रहनेवाले बरेली केपरमभक्त साधुसेवी हुये खेतीसे जोलाभ होता साधुसेवा भगवत् उत्साहमें लगादेते एक दुष्ट बिमुखने एक मरी बछिया उनके खेतमें डालकर उनको हत्यालगाई नन्ददासजी ने उसको जिलादिया सबको भक्तिका निश्चय व विश्वास हुआ ॥

हरिदासजी की कथा ॥

हरिदासजी योगानन्द महाराजके बंशमें परमभक्तहुये बावनजीकी भांति उनकी भक्ति थोरेहीकालमें बढ़गई साधुके अपराधकबहूं चित्तपर न लाये भक्तोंको गुरुतुल्य जानते तिलकमालासे अत्यन्त प्रीतिरही रघुनन्दन महाराजके उपासक व गृहमें रहनेपर बैराग्य जनक महाराज के सदृशरहा ॥

कान्हड़जी की कथा ॥

कान्हड़ बिट्ठलदासजीके पुत्र जातके चौबे रहनेवाले मथुराके भगवत्महोत्साह ऐसा करते रहे कि चारोंबरण चारों आश्रम और कंगाल व राजा सब इकट्ठे उस महोत्साहमें होतेरहे सबका शिष्टाचार करते कोई बिमुख न जाता चन्दन पान व बस्त्रसे भगवत्भक्तों की सेवा सत्कार करते और समाज ऐसीहोती मानो अमृतकी वर्षा होतीहै जब भगवत् भक्तोंकी सेवा सत्कार करके बिदा करते तो प्रेम से बेसुध होजाते रहे सो कारण दो प्रकारका समझ में आता है एकतो भक्तोंका बियोग कि अपनेको बड़भागी जानकर प्रेममें मग्न होजातेरहे और उसी महोत्साह में सबकोई इकट्ठेहोकर नाभाजी जिसने भक्तमाल रचना किया उनको गोसाईं पदवीदी थी ॥

माधवग्वाल की कथा ॥

माधवग्वाल ऐसे भक्त साधुसेवीहुये कि दिनरात भगवत्भक्तों के सुख के हेतु चिन्ता रहतीथी व नवप्रकारकी नवधाभक्ति दशवीं प्रेम लक्षणा सोई मानसरहै तिसके मरालथे सबकी भलाईकी चाहना सदा भगवत्

चरित्रोंके स्मरणमें रहते क्षमा शील सबसे बराबर सबके मित्र निर्मल चित्त प्रेमकी खानहुये ॥

गोपाली की कथा ॥

गोपाली गिरिधरग्वाल कि जिसका वर्णन भेषनिष्ठामें होगा तिस की माता भगवत्भक्तोंके पालनको यशोदाका अवतारहुई मनमोहन महाराजसे ऐसीप्रीति रही कि व्रजचन्द महाराजके माधुर्य्यरस और प्रेम भक्तिके रंगमें भरीहुई दिनरात श्रीगोविन्द श्रीगोविन्द यही ध्वनिलगी रहती थी संतोंके चरणोंमें दृढ़प्रीतिरही ॥

निष्ठाचौथी

माहात्म्यश्रवण जिसमें श्रोताभक्तों की कथा ॥

श्रीकृष्णस्वामीके चरणकमलकी कमलरेखाको और कपिलदेव अवतारका वचनहै कि जगत्के उद्धारके हेतु सांख्यशास्त्रका तत्त्वविचार करके ऐसाकहा भगवत् चरित्रोंका सुनना उद्धार व भगवत्पद प्राप्तके हेतु और जबतक उन चरित्रोंको न सुनेगा तो भगवत्में मन किस प्रकार लगेगा ध्यान व मंत्रका जप और पूजा व मनन व व्रत व नेमआदि सब साधनोंका सम्बन्ध केवल श्रवणसेहै कि जब गुरु और शास्त्रोंसे सुना तब उसके अनुकूल साधनकिया और अच्छेप्रकार विचार करके देखा जाताहै तो सम्पूर्ण कार्य्य यहलोक व परलोक के श्रवणका पाय कर [illegible] हुए व होतेहैं ब्रह्माजीको भगवत्ने सृष्टिरचनेकी आज्ञा दी [illegible] तब शब्द तपकरनेका सुना और उसके अनुकूल साधनकिया तब इन संसारकी रचनाकी कोई मतांतरवाले नाहक [illegible] [illegible] कहतेहैं कि भागवतमें इनका वृत्तांतलिखाहै और यहां [illegible] [illegible] नहीं समझा क्योंकि यह पथ [illegible] और यह [illegible] अभिप्राय यह कि बिनासुने कुछनहीं [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] और कोई [illegible] [illegible] [illegible] शास्त्र व पुराणोंमें लिखाहै [illegible] [illegible] कि [illegible] और [illegible] भगवत्पदको [illegible] [illegible] [illegible] कि [illegible] [illegible] [illegible] व [illegible] [illegible] लिखा है [illegible] लिखा है कि जहां भगवत् कथा

को सुनतेहैं वहांवेद और सब शास्त्रप्राप्त रहतेहैं जिनको मुक्तिकीचाहना होवे भगवत् कथासुनैं भागवत्का वचनहै कि जोभगवत्कथारूपी अमृत को कर्णपुटकरिकै पानकरतेहैं वे सब पापोंको दूरकरि भगवत् परम्पद को जातेहैं फिरभागवतमें लिखाहै किजोकोई भाग्यहीन भगवत् कथाको छोड़कर निन्दित सारहीन कथा श्रवण करतेहैं वेलोगऐसेहैं जिसप्रकार शूकरकी बिष्ठामें रुचिहोतीहै और अच्छेप्रकार बिचारकरनाचाहिये किजो कोई भक्तहुये अथवाअबहैं व आगेहोंगे वहसब प्रतापश्रवणकाहै यद्यपि सुनना भगवत्चरित्रों का सबप्रकार मंगलरूपहै परन्तु जो बिधिपूर्वक विश्वासकरिकै सुनै तो उसका क्या कहनाहै यह कि व्यासको भगवत् रूपजानै व हरिचरित्रों और उसशास्त्रमें हृदयसे प्रेमहो व सुनकर समझकर अच्छेप्रकार मननकरै और उसके अनुकूलवर्त्ते भागवत्कथासे तृप्ति न होय ऐसी प्रीतिहोवै हरिचरित्रोंको नितनवीन समझे यहनहीं कि एकबार जो सुना उसके सुननेका क्या प्रयोजनहै पृथुमहाराज ने भगवत् चरित्रोंके सुननेको दशहजारकान मांगे भागवत्से नवधाभक्ति में जो प्रथम श्रवणलिखाहै सो यहीअभिप्रायहै कि बिनाश्रवण भगवत् चरित्रोंके भक्तिप्राप्ति नहींहोती यद्यपि आपसकी वार्त्तालाप में भगवत् चरित्रोंका सुनना व बिष्णुपद आदि का श्रवण सब श्रवण निष्ठाही में प्राप्तहोतेहैं पर दुष्टनर श्रवणवहहै कि भगवत्भक्तोंके सत्संगमें चरित्र सुनेजावैं किसहेतु कि उसश्रवणका साधनभी वहांप्राप्तहोताहै और जो कुछ सन्देह व भ्रम होताहै सो तुरन्त निवृत होजाता है अथवा पुराण आदिकी कथाकराना यहभी अच्छीरीति श्रवणकीहै किसहेतु कि आपसे आप सत्संग लाभहोताहै सो कथाकराने की रीति कहीं कहींहै पर जो लोग ऐश्वर्य्यमान और सरदार और मुलाज़िम सरकारहैं उनकीकथा करानेका वृतान्त अद्भुतहै थोड़ासालिखताहूं प्रथम तो भगवत्चरित्रोंमें किसीकी प्रीतिहीनहो वरु कोई कोई मन्दभागियों का यह वचनहै कि साहब कथासुननेसे क्या होताहै करणी प्रमाण है और उनदुष्टों असुर बुद्धियोंको इसबातका बिचारनहीं कि लिखनापढ़ना व व्यवहारके काम करने व चतुराई सम्पूर्ण कार्य्य लेनदेन व कार्य्य सरकारी आदि सब श्रवणके अवलम्बसे उनके ज्ञानध्यानमें आयेहैं तो जबतक भगवत्कथा

न सुनेंगे तबतक भगवत्‌कारूप किसप्रकारसे बुद्धिमें आवेगा और किसी के कुलमें यह वृत्तान्त अपनी आंखोंसे नहींदेखा कि कभी उनके कुलमें कथानहींहुई वरु अमंगल और कारण आजाने किसीउत्पात और मरजाने किसी प्रियबन्धु का समझते हैं सो ऐसीबुद्धि और चालन उनकी उनके सत्यानाश जाने के निमित्त हैं जो किसीने गलादबाने से अथवा संकोचसे किसीकीकथा कहलाई तो ऐसेआदमीसे कि इकट्ठेकारहनेवाला भड़कदार अथवा पुरोहित अथवा लड़काई की जवानीका यार अथवा सदासेवीहोवे किसीप्रेमी व भगवत्‌भक्तको ढूंढकर कहलानेकी तो कुछ बातहीनहीं भला अब जब कथाआरंभहुई तो कोई सुननेको नहींआता कोई सावकाश नहींपानेकी बातकहताहै कोईकार्य्यकी भीड़का परिश्रम बतलाताहै कोई कहताहै कि क्या हमने पापकियाहै जो कथासुनें और कोई कहताहै कि जिसदिन सम्पूर्णहोगी उसदिन आजावेंगे और कोई अपने आपको बड़ाआदमी अथवा बड़ा ओहदेवाला समझकर कंगाल अथवा छोटेओहदेवाला जानकर उसकीकथामें नहींजाता और देखिये तो उनसाहिबों को सिवाय सतरंज व गंजीफा खेलने व कुत्सित कथा कहने व खेलकूद नाचतमाशा देखने और ऐसेही ऐसेप्रकारके निष्फल आचरणोंके सिवाय और कुछकामनहीं और जो भागवश कोई संयोगसे चलाभीगया तो तनकमन न लगा और जातेही निद्राविवशसमें प्राप्तहुये और जब और किसीनेपूछा तो कथा और पण्डित दोनोंकी निन्दाकरने लगे बस वह कथा कहलानेवाला अकेला सुनतारहा जब समाप्तहोनेका दिनआया और उनलोगोंको बुलाया तो दूसरीसवार के बुलानेसे निज रुपया चढ़ानेकेसमय आये इसहेतु कि कोई अक्षरकानमें न पड़जाय और जो कथाकेसमाप्तहोनेमें कुछ विलम्बहुआ तो बुलानेवाले आदमीपर क्रोध किया कि इतनापहिले क्यों बुलालाया और कोई पण्डितजीसे कहताहै कि महाराज शीघ्रताकरो संध्या निकटआई और कोई गरदन उठाकर घड़ीकीपानी देखताहै कि घड़ीपानी अन्तकोआई कि नहीं और कोई उन घरके अधिष्ठातासे कहताहै कि आरतीआदिकी सामा सावधानीसे तय्यार करखखो कि विलम्ब न हो औरकोई मनहीमनमें कहताहै कि किस उपाधिमें आनफंसे और किसीने मुद्राहीमनमेंलिया और चढ़ावेको तुरन्त न

दिया किसीप्रकार इसवृत्तांतसे कथापूरीहुई पर इतना और भी अधिक है कि जो बशचला तो खाटारुपैया चढ़ागये वाह क्या बड़ाई कीजिये कि जो नाचमेंजावें तो स्वप्नमें भी नींद न आवे और उसकेप्रेम में भूख प्यास सब भूलजावें और सबसे पहिले जावैठैं और भगवत् चरित्रोंके सुन्नेका और कथामेंजानेका यहवृत्तान्त कि मानोंकिसीने तोपकेमुखपर खड़ाकरदियाहो हाथ बांधकर यह विनतीहै कि इसअवगुणीने अपना वृत्तांत लिखाहै किसीको दुःख न होय यहवृत्तान्त मेरा कड़ारभागोंमेंसे एकभागहै हे श्रीकृष्णस्वामी हे दीनवत्सल हेप्रणतारत भंजन हे दीनबन्धु कोईदिन ऐसाभी आवेगा कि आपके चरित्र पवित्र तो चन्द्रमाके सदृश होंगे और मेरामन चकोरकी भांति और कौन वह घड़ी होगी कि आपके रूप अनूप का चिन्तवन और ध्यान ऐश्वर्य्य व धनसदृश होगा और मेरा मन लालचीपुरुष के सदृश है हे करुणाकरमहाराजजो अपनीभाग्य हीनता और अपराधोंको विचार करताहूं तो करोड़ों जन्म तक कुछ ठिकाना नहीं दीखता और पतित पावन दीनवत्सल अधम उधारन करुणानिधान आदि नामों पर दृष्टिहोतीहै तो कोई चिन्ता औरभयका स्थाननहीं पर इसमेंभी एककटाक्ष यहहै कि यहलिपि मेरी केवल नाममात्रकोहै कुछमनसे नहींजो अपनी इसलिपि पर दृढ़होकर संतुष्टरहा तो भीबेड़ापारहै कहांतक बिनयकरूं जो कर्ममेरेहैं उनमेंऐसा एकभी नहीं कि जिसके अवलम्बसे आपके अंगीकार योग हूं अबइतनी हीबिनय बहुतहै कि जैसाहूं आपकाहूं यहरस समाज आपके चरित्रका जो मेरेहृदय के नेत्रोंमें झलकै तो मेरेबाराबर भागकौन काहै कि वृषभान नंदिनी ब्रजचंदिनी जीको यहसमाचारपहुंचा कि नंदनंदन ब्रजचंद महाराज सामा होली खेलनेको लेकर बड़ी धूम धाम से सहस्रों लाखों अपनेसखा औ मित्रोंके सहित समीप आनपहुंचे तो तुरंतकरोड़ों सखियों और रंगगुलाल आदि सहितपरम आनंदमें भरीहुई गाती बजातीचलीं जब मानसरवरके निकट पहुंचीं तो नंदनंदन महाराजका यूथआन पहुंचा और दोनोंओरसे वर्षा रंगकी कि जिसमें गुलाब व केवड़े व कस्तूरी व केसर व चंदनआदि की सुगंधसे सुगन्धित था आरम्भ हुआ तिसपीछे कुमकुमें जोकि अबीर और गुलाल लालश्वेत पीले हरे अब्बासी व गु-

गुलाल भरे हुयेथे चलाये यहवृत्तान्त तो दूरसे बीता जबदोनों यूथमिल गये तो इसधुन व धनधनगड़से रंगकी वर्षा और गुलाल मलने और आपसपर डालनेकी धीड़हुई कि धरती व आकाश रंगीनहोकर आनंद-रूपहोगया और सामा सबप्रकारकी लाड़िली जीके यूथमें बहुतथी और सेना बिनयरूप भी बहुत सजीहुई कि उनमें ललिता व विशाखा व श्यामला व श्रीमती व धन्या व पद्मा व भद्रा व चन्द्रावली हजारों लाखों सखी मंडलियों की यूथेश्वरियों सहितरहीं इसहेतु ब्रजकिशोरीजी का यूथ प्रबलपड़ा और यद्यपि नटनागर महाराज की ओरभी श्रीदामा व मधु व मंगल व सुबल व सुबाहु व अर्जुन व भोज व मंडल यूथेश्वर बहुतसखा और बालगोपाल सहितथा पर लाघवता व चटकई व हस्त-क्रियाकी तीक्ष्णताके कारण दूसरीओर किये सबनिबल पड़े और ब्रज-किशोरीजीकी ओर सहाय भी पहुंची कि ब्रह्माणी और पार्वती व इन्द्रा-णीआदि जो विमानोंपर आरूढ़ होकर इसआनंद के देखने के निमित्त आईथीं ब्रजनागरीजी की प्रसन्नताके हेतु रंग व गुलाल और कल्पवृक्ष के फूलोंकी वर्षा करनेलगीं यह वृत्तान्त हुआ कि एक एक नंदनंदनजी केमध्यमें दशदश ब्रज नागरियोंने घेरलिया और रंगडारने व गुलाल मलने से सबका हाथ बंदकरके अपनी लाघवता व हस्तक्रिया की ती-क्ष्णता व अनूप सुन्दरता व मन्द मुस्कयान व कटाक्ष तिरछी चितवन की फांस में सबको बांधलिया नटकिशोर महाराज को वृषभाननंदिनी जीने पकड़ा और गले में हाथडालकर अपनीओर खींचलिया और ल-लिता विशाखा व धन्याआदि जो समीप रहीं उनकी सहायने ब्रजचंद्र कुंवर न पाये सबने मिलकर रंग व गुलालसे अच्छी भांति सेवा करी तब चन्द्रावली कि लाड़िली जीके प्रतिकूल रही यहदशा देखकर आप आई और नटकिशोर महाराज से कहा कि सावधान हो हम तुम्हारी सहायको आई सहित आन पहुंची सो चन्द्रावली जीकी कृपासे ब्रज-नागर महाराज नागरी जी को पकड़कर मनभाया अपना बदला लिया और ऐसे धूमधाम से रंगकी वर्षा व हँसी व ठट्ठा व बातें कीं और शोभा [illegible] हुई कि [illegible] [illegible] कहा है कि [illegible] समयकी शोभा [illegible] ब्रजकिशोरीजी की [illegible] कि मानों

शोभा स्वरूपमान धरतीपर आकर करोड़ों चन्द्रमाकी शोभाको लज्जित करतीहै गोरेमुख और तड़पदार मुखाकृतपर अलकें बिथुरीहुई चन्द्रिका और शीशफूल शिरपर भालमें तिलक और केसर कस्तूरी का टीका जड़ाऊ झुमक और कर्णफूल कानों में शोभित नथ और बेशर नाकमें महीन स्वर्णतारीका दुपट्टा हरित व अन्य पहिराव लहँगा आदि की अति चमकदमक सहित व यथायोग्य आभूषण सब अंगन पर लगेहुये एकहाथ ब्रजकिशोर महाराजके गलेमें और दूसरे हाथमें गुलाल और इसीप्रकार नंदनंदन महाराज बड़े सज व धजके साथ श्यामसुन्दरके मुखारबिंदपर अलकोंके बाल बिखरेहुये शीशपर मुकुट कानोंमें कुण्डल और झूमकके अन्य आभूषण सब अंगअंगपर बिराजमान सूक्ष्म दुपट्टेसे कमर कसेहुये एकहाथतो ब्रजनागरी जीके गलेमेंबाईंओर दूसरे हाथमें गुलाल इसछबिसे प्रिया प्रीतमको देखकर ब्रह्मा और शिवआदि देवताओंकी तो क्याबात व बलहै कि सावधानीकी सुधबुधमें रहसकें जहां आप प्रिया प्रीतम आपसके रूपको देखकर बेसुध व मग्न होगये ॥

नारदजी की कथा ॥

नारदजी महाराज भगवद्भक्तिकी सबनिष्ठाओंमें अग्रणीयहैं परभागवत धर्मप्रचारक और कीर्तन में बिशेषतर हैं पर उनको जो उत्तम पदवी मिली तो श्रवण के अवलम्ब से इस हेतु श्रवणनिष्ठा में लिखा नारदजी भगवत्के मनहैं औरब्रह्माजीके पुत्रहैं जगत्केउपकारमें इतनी प्रीतिहै कि दोघड़ीसे अधिक बिलम्ब कहीं नहींकरते बाल्मीकि रामायण व श्रीमद्भागवत येदो जहाज संसारसमुद्र से जीवोंको पारलगाने कोजोबने सोनारदजीहीने उपदेश कियाहै जिनपर कृपाकिया वे भगवत् रूप होगये जैसे प्रह्लाद ध्रुव साठहज़ार दक्षप्रजापति के पुत्र व प्रचेता आदि लाखों जिनकी गिनती नहीं होसक्ती जिसपर क्रोधकिया वहभी अन्तमेंभगवत् को प्राप्तहुआ चरित्र नारदजी के अपारहैं पर पूर्ब्बका चरित्र जिसकरके श्रवणनिष्ठामें लिखेगये सो लिखाजाताहै भागवतमें लिखाहै कि पहिलेकल्प में नारदजी दासीपुत्ररहे दुःख पड़नेसे माता उनकी ऋषीश्वरोंकेयहां टहल करके अपनी व नारदजीकीपालनाकरती थी जबकामकोजाती तब ऋषीश्वरोंकेपास छोड़जाती तहां जो कथाका

सत्संगहुआ करता उसको सुनते सुनते ज्ञान वैराग्य भक्तिको प्राप्तहुये जबमाता उनकी मरगई तो वनमें जाकर भगवत्का ध्यान करनेलगे एक वार भगवत् के रूप अनूपका प्रकाश उनके हृदयमें प्रकट होकर फिर अंतर्द्धान होगया नारदजी उसीरूप अनूपके प्रेममें विकल होकर भगवद्भजनमें प्रवृत्तहुये अन्तमें फल यहनिकला कि इसकल्पमें ब्रह्माके पुत्र ऐसेहुये जिनकी महिमा ब्रह्माजी भी वर्णननहीं करसक्ते ॥

गरुड़ जी की कथा ॥

गरुड़ जी भगवत् पार्षदोंमें हैं इसहेतु सेवानिष्ठा में लिखना उचित रहा पर एकसमय उनको मोहहुआ सो कागभुशुण्डि के यहां कथासुनी तब ज्ञानहुआ इसहेतु श्रवणनिष्ठा में लिखा जब श्री रामचन्द्र महाराज लंकाके विजयको चढ़े और रावणका बेटा लड़ाई करनेआया तो सम्पूर्ण सेना और दशरथराजकुमार महाराज को कि जिसकी माया के पाशमें अनगिणत ब्रह्माण्डोंके ब्रह्मादिक देवता फँसेहुयेहैं और जिसके एकबार नामलेने से जीवकी जन्म मरणकी फांसी कटजातीहै नागफांसमें बांधलिया नारदजीने गरुड़कोभेजा तबउन्होंने सबसांपोंकोखाया इन्द्रजीत की मायादूरहुई तो गरुड़को मोहभ्रमहुआ ब्रह्माकेपासगये तब शिवजी के पासआये उन्होंने कागभुशुण्डि के पासभेजा कि पक्षीकी बोली पक्षी अच्छेसमझेगा वहांगये तबसमीपनीलाचलकेजातेही मोहदूरहुआ फिर रामायण वहां संपूर्णश्रवणकिया नित्यज्ञानकोप्राप्तहुये सत्यकरके भगवत्चरित्र अज्ञानतमको सूर्य्य हैं और कामनाके कल्पवृक्ष औरकामधेनु॥

राजा परीक्षित की कथा ॥

राजापरीक्षित अभिमन्युके पुत्र अर्जुनके पौत्र श्रवणनिष्ठा में मुख्य अग्रगण्यहुये इन्होंने श्रीमद्भागवत की प्रवृत्ति संसारमेंहुई जिससे कोटोंजीवोंको परमपद प्राप्तहुआ औरहोताहै व होगी जबपाण्डवोंनेसंसार त्याग किया परीक्षित को राज्य देदिया परीक्षितने नीतिपूर्वक प्रजाका पालनकिया दिग्विजय व धर्मके पालनको निकले कुरुक्षेत्रमेंकलियुगको दण्डकिया निकले राजा को ऋषिबालक का शापहुआ तब राजा ने [illegible] [illegible] श्रीशुकदेवजी [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

बश शुकदेवजीआये श्रीमद्भागवत श्रवण कराया जब विरामकिया तब तुरन्त राजा अपने शरीरकी सुधिभूलकर भगवत्के चरणोंमें लीनहोकर मग्न व समाधिमें होरहा उसीसमय तक्षकनागने ऋषिकावचन पूराकर दिया राजा शरीरछोड़कर उस परमधामको गया कि फिरनहीं फिरता सत्यकरके जो ऐसामन भगवत् चरित्रोंमें लगावै उसको अर्थ धर्म काम मोक्ष सबपदार्थ इसीशरीरमें प्राप्तहैं॥

लालदासजी की कथा॥

लालदासजी ऐसे परमभक्त हुये कि हृदय उनका भगवत् चरित्रों का स्थान होगया जैसी भगवत् में प्रीति उसीभाँति गुरूमें और लोभ निकट न आया जैसे कमलपत्र जलमें रहताहै तिसप्रकार संसारमेंरहे भगवत्चरित्रों में राजापरीक्षितकी भांति थे और उसीप्रकार भगवत् धामको गये अर्थात् बघेरागांवमें कथा श्रीमद्भागवतकी होरहीथी जब सम्पूर्णहुई उसीसमय भगवत्के ध्यानकी समाधि लगाकर शरीरत्याग उसी परमपदको पहुंचे जहांराजा परीक्षित गये॥

पांचवींनिष्ठा॥

कीर्तन के वर्णनमें पन्द्रह भक्तों की कथा है॥

श्रीकृष्णस्वामीके जबचरणकमलोंको औरदिति अवतारको दण्डवत् है किअत्रि ऋषीश्वरके घरचित्रगिरि पहाड़पर वहअवतार धारणकरके अलर्क और प्रह्लादआदिको भगवत्का ज्ञानउपदेश किया यद्यपिकीर्तन शब्दका अर्थ यहहै कि जो कहने में आवै परशास्त्र व पुराणके अभिप्राय करके यहपद निज भगवत् चरित्रोंके विषयहोगयाहै दूसरे बोलचालके हेतुनहीं रहा सोवह कीर्तन कई प्रकारकाहै आपसमें भगवत् की चर्चा अथवागाना अथवाभगवत् चरित्रोंको काव्यमें रचना करना अथवाकथा कहनी अथवामंत्र और नाम का मुख से उच्चारण करना अथवा स्तोत्र आदिका पाठ अथवा पढ़ाना इसहेतु कि जिसप्रकार भक्तकोई प्रकारसे पारायण होवै उनको इसनिष्ठामें लिखा पर यह भी जानरक्खो कि सब भक्त जितने आगेहुये और अब हैं और आगेहोंगे कीर्तननिष्ठामें सबको बिश्वास दृढ़हुआ और इसीनिष्ठाके अवलम्बसे भक्तहुये सो सबका लिखना इसनिष्ठामें होनहींसक्ता इसहेतु थोड़भक्तोंकी कथा इसनिष्ठामें लिखीगई

और नामनिष्ठा अलग वर्णनहुई इसहेतु नाम उपासकों का वर्णन उस निष्ठामें होगा इस कीर्तन निष्ठाकी महिमा और बड़ाई किससे वर्णन हो भक्तोंहें तरगा तारगा पद जो संसारमें विख्यातहें सो इसीनिष्ठाके उपासकोंके निमित्त सत्यहें निश्चयभक्ति और मुक्ति सब इसीनिष्ठा अर्थात् भगवत् चरित्रोंके कीर्तन परहें जो कोई जिस पदवी का पहुंचा केवल कीर्तनके अवलम्बसे पहुंचा दूसरप्रकार नहीं श्रवणनिष्ठामें जो यहवर्णनहुआ कि श्रवणके प्रभावसे भगवत् मिलताहै तो तात्पर्य्य यहहै कि जब भगवत् की महिमा और भगवत् चरित्रोंका श्रवणकरेगा तब भगवत् चरित्रोंका कीर्तनकरेगा और किसीने भगवत् चरित्रों को केवल सुनि मात्रलिया और फिरि कीर्तन नहींकिया तो कैसे भगवत् मिलेगा सिद्धान्त यहहुआ कि भगवत् कीर्तनके हेतु श्रवण एकसाधनहै और फल उसका कीर्तन और इसीहेतु श्रवणको पश्चात् कीर्तन शास्त्रोंमें लिखाहै और यह बात देखने में भी आतीहै कि हजारों आदमी भगवत् कथा आदि सुनते हैं पर सुनेपीछे जो भगवत् कीर्तन नहीं करते इसीहेतु कोई वांछितफल को नहीं प्राप्त होते और बुद्धिसेभीजानाजाताहै कि जबतक देखे व सुने हुये सौन्दर्य्य अथवा दूसरीकोई वस्तुका वर्णन न होगा तो किस प्रकार मनमें रहेगा भगवत्का वचनहै और पुराणमें लिखाहै कि मैं न वैकुण्ठ में रहता हूं और न योगियोंके हृदयमें केवल मैं वहां रहता हूं जहां मेरे भक्त कीर्तन करतेहैं भागवतके एकादशमें लिखाहै कि सतयुगमें ध्यान से और त्रेतामें यज्ञसे और द्वापरमें भगवत्पूजासे मुक्ति होतीरही और कलियुगमें भगवत्कीर्तन प्रमाणहै विष्णुधर्म्मोत्तर में लिखाहै कि भगवत्का कीर्तन सब सुखोंका देनेवाला और पापों का नाश करनेवाला और मनका निर्मल करनेवाला और धर्म्मकोबढ़ानेवाला और भक्तिमुक्ति को देनेवाला और परमपदहै यह विरुद्ध मतवाले [illegible] इसबात में पूछतेहैं निश्चित यह कि बिना भगवत्कीर्तन कोई उपाय अन्य [illegible] [illegible] पानीके मथनेसे घी और रेतमेंसे तेल प्राप्त होजाय तो हो जाय पर बिना भगवत्कीर्तन संसार सागर से उद्धार नहीं [illegible] और भगवत्कीर्तनके विधानमें यह लिखाहै कि भक्त [illegible] कीर्तनमें मग्नहोकर [illegible] भूलजाय [illegible]

होआई कि दो आदमी ने निरन्तर में भगवत्कथा कही सुनी दोनों बे-
सुध होकर वहीं मरगये लोगोंने दोनोंको इकट्ठे जलादिया उनकीस्त्रियों
ने आकर अपने अपने पतिकी हड्डियां अलग चुनलीं किसीने पूछा कि
तुमको अपने अपने पतिकी हड्डियों की प्रतीति किसप्रकार हुई कीर्तन
करनेवालेकी स्त्रीबोली कि मेरापति भगवत्चरणों के रसमें ऐसा मग्न
होगयाथा कि हड्डीतक गलगईथी इसीसे पहचानकर चुनलिया दूसरी
ने कहा कि भगवत् चरित्रों के तीर जो कीर्तन करनेवाले के मुखरूपी
चुटकीसे छूटे तो मेरेपतिके हृदयमें ऐसेलगेथे कि हड्डियोंमें वेधहोगयेथे
इससे पहचानलिया सो इसप्रकार कीर्तन और श्रवणमें प्रीतिहोवै पर
यहवचन शास्त्रोंमें लिखाहै कि कीर्तन भगवत् का अन्तःकरणसे अथवा
ऊपरसे देखलाने के हेतु अथवा कोई फलके हेतु किसी प्रकार से होवै
निश्चय करके भगवत्भक्ति प्राप्त होजायगी व मन भगवत्सन्मुख हो
जायगा इसबातका बर्णन कुछ नामनिष्ठामें होगा सब कीर्तनके प्रकार
में एकप्रकार भगवत्कथा कीर्तनकी जो बिख्यातहै तो इससमय उसका
आश्चर्य्य वृत्तान्तहै कि कीर्तन करनेवाले तो बिनाहेतु केवल भगवत्
भजनके निमित्तसे कीर्तन नहींकरते व पढ़नापुराणोंका जीविकाके प्राप्त
के हेतु समझते हैं व श्रवण करनेवालों का वृत्तान्त थोड़ासा श्रवणनिष्ठा
में लिखागया है बहुत करके ब्राह्मण जो भागवत कांख में दबाये कथा
की आड़करके फिरते हैं और उनकी कथानहीं होती तो कारण यह है
कि जिसदिन से उन्होंने उस कथाको पढ़ा तो फिर नहीं कबहूं उसको
बिचारा नदेखा जो नित्य उसका कीर्त्तन करें तो विना घूमने फिरने
के आपसे आप हजारों पुरुष कथा करने निमित्त उनको बुलाया करैं
इसकारण से कि भागवत व रामायणआदि पुराण सब भगवत्रूप हैं
जोकोई भगवत् कीर्तन आराधन करैगा निश्चयकरके उसकी कामना
सिद्धहोगी अर्थात्सुननेवाले जोयहबात कहतेहैं किआजकल्ह कोईकथा
कहनेवाला प्रेमी और भगवत्भक्त नहींमिलता यहबचन उनका निपट
झूठहै हजारोंलाखोंपण्डित प्रेमीमिलते हैं परहमलोगोंको उनका ढूंढ़ना
नहीं औरअपने अवगुणके कारणसे उनकेगुणोंको अवगुणके समान
करलेतेहैं प्रेमऔरभक्ति परदृष्टिनहींजाती जिसप्रकार दोपुरुषएकसराय

में रातकोटिककर सारीरात अपनेअपने प्रेममें जागतेरहे प्रभातको जो दोनोंने परस्पर देखा विषयीमद्यपान करनेवालोंने भगवत्भक्तको यह समझा कि इनने सारीरात हमसेभी अधिक आनन्दकिये होंगे और जो पुरुष भगवत्भजनमें जागतारहा उसने उसविषयीको अपनेसे अधिक भजनआनन्दमेंजाना इसकेसिवाय जोहमलोग भगवत्भजन करनेवाले और प्रेमीहोवैं तो कथाकरनेवाले अनायास मिलजावैं व वेलोग आपहमको ढूंढ़लेवें जैसे शुकदेवजीने राजापरीक्षितको और सूतजीने शौनकआदिको आप ढूंढ़लिया यहरीति सिद्धहै कि जैसेको तैसा आमिलताहै इसके ऊपर जो प्रेमी और भक्त नहीं मिलते हैं उन्हीं पर विश्वास उचित है व योग्यहै कि हमसे अधिक ज्ञाता हैं पहिले तो शास्त्रको अच्छे जानते हैं दूसरे ब्राह्मण हैं ब्राह्मणों की महिमा वेद और शास्त्रोंमें लिखी हुई है कि भगवत् रूपहैं व भगवत् का वचन है कि ब्राह्मण विद्यायुक्त होवै अथवा विद्याहीन होय वहमेरा अंगहै कोई कोई दोचार पारसी तरजुमे की पोथियोंको पढ़कर और अपने पापको ज्ञानवान् व सर्वज्ञ समझकर अथवा बड़े ओहदेपर होकर और धन ऐश्वर्य्य पाकर कहतेहैं हम में और ब्राह्मणों में क्याभेदहै ब्राह्मण वहहै जो ब्रह्मको जानै जैसे वहमनुष्यहैं वैसेही हमहैं सो जानरक्खो ब्राह्मण मनुष्य नहीं देवताहैं भूसुर और भूदेव उनकानाम है और जो वे विश्वासियों को आदमी देखने में आवै तो दूसरे आदमियोंसे इतना भेदहै जैसे तारोंसे सूर्य्यको और दूसरे पशुओंसे गऊको एकवृत्तान्त स्मरण होआया यह कि कोईपीपलके नीचे लघु शंकाकिया करताथा ब्राह्मणोंने मनाकिया नमाना फिरअधिक तर बरजनकिया तो क्रोधकर कहने लगा कि सब वृक्ष बराबर हैं एक ब्राह्मणपक्ष बोलनेवाले ने कहा कि तुम्हारी जोरू और तुम्हारी मा में क्या भेद वहभी बराबर है तात्पर्य्य यह कि ब्राह्मणों को सबप्रकार से बड़ाईहै सिवाय इसके सब विधिविधान दोनोंलोकका ब्राह्मणोंने विस्तार कियाहै और पूर्वयुगमें अथवा अब जिनको बड़ाई प्राप्तहुई और भगवत् भक्तिको प्रकाशहुआ तो सबको ब्राह्मणोंहीकेकार्य्य और सेवकाईसेमिला और अबभी मुख्य आचार्य्य ब्राह्मण हैं तो यही भगवत्की चाहहै कि इनमें निश्चय न होय जो किसी के आचरण व कर्म कलिके प्रभाव करके दुष्ट

भी देखने में आवैं तौभी वे बिश्वासता अयोग्य है यद्यपि राख में अग्नि
दब जाय तौभी तेज मिटनहीं जाता जितने महापरुष व साधु आदि कह-
लाते हैं सब ब्राह्मणों के प्रभाव करके हुये कि उनको अथवा उनके गुरू
अथवा परमगुरूको ब्राह्मणों से उच्चपदवी उपदेशहुआ जिस किसीको
ब्राह्मणों में बिश्वास नहीं है भगवत्के घरसे निकालेहुये हैं और दोनों
लोकसे भाग्यहीन हैं जिसने ब्राह्मणोंसे द्रोह किया सो सुगति को नहीं
प्राप्तहुआ जिसने सेवकी सो इस संसारमें यशी होकर भगवत्भक्तों में
गिना गया सो कथाकरनेकेहेतु जैसेही ब्राह्मणमिलतेहैं वैसेही आचार्य्य
और भगवत्रूपहैं बिश्वास तत्त्वहै अभिप्राय यहसब लिखनेका इतना
है कि भगवत्कीर्तन मुख्योंपर मुख्यतरहै कि बिना परिश्रम लोक पर-
लोक दोनोंप्राप्त होतेहैं हे नन्दनन्दन दीनबन्धु हे करुणाकर हाय कि यह
मतपापी पतिमन्दन आजतक कबहीं आपके कीर्तन और चरित्रोंमेंचित्त
लगाने नहीं दिया लड़कपनतो खेलतेखातेमें खोया और जवानी भांति
भांति के अपकर्म और संसारके स्वादमें अब वृद्धापनपहुंचा तौभी किसी
प्रकार आपकेचरणकमलोंकी ओर सावधानता नहींकरता यद्यपि भली
प्रकार यह बातजानताहै कि बिना आपके शरणहुये ब्रह्माभी इस संसार
से नहीं छुटासक्ते हैं परमायाके जालमें ऐसा फँसरहाहूं कि अपनीहानि
लाभ पर तनकु दृष्टिनहीं करता और सिवाय चरणारविन्द के और कुछ
रक्षाका ठिकाना नहीं रखता इसहेतु दया व करुणाकी आशाकरके कुछ
निवेदनकरता हूं कि यह समाज आपका मेरे हृदय के दुःखको दूर करके
नित्यानन्द का देनेवाला होय यह कि सरयूके किनारे पर अखाड़ापरम
शोभायमान कि दिवारें उसकी छोटी और उन पर चित्र बिचित्र चित्राम
और स्वर्णजल से बेल बूटे बने हुये हैं सांझ सवेरे आप भाइयों और
अपने छोटे बयस्कामियों के सहित वहां जाकर भांति भाँति की बाजी
और खेल में तत्पर होते हैं कबहीं तो सारुक और शुक और कबूतर
और लाल और हंस और सारस व मयूर आदि पक्षियों के खेल और
नाच और लड़ाने का मन बिश्राम है और कबहीं पतंग उड़ानेका और
कबहीं घोड़ोंके फेरने दौड़ाने और सवार होने पर परिश्रम करनेका प्रेम
करते हैं और कबहीं गुरुजबठाटा बनेजा व तीरंदाजीका और कबहीं

चौगान को अपनेमित्रोंकेसाथ खेलतेहैं और कबहीं मल्लयुद्धको और कबहीं तमाशा हाथी मेढ़ा आदिकी लड़ाईको देखतेहैं और कबहीं उमङ्ग अपने चचकामियों केसाथ हँसी और ठट्ठा दङ्गा मुस्तीको कभी नाव पर सवार होकर अवलोकन सरयूका और कबहीं नाच राग इत्यादि देख सुनकर मन वांछित द्रव्य और आभूषण प्रसन्न होकर देते हैं कबहीं गजशाला और घुड़शालाका अवलोकनहै और कबहीं सत्रशाला और सामग्रीशा-लाकी निरीक्षण और कबहीं ब्राह्मणों और भक्तोंकेऊपर दया और कृपा की दृष्टिहै और कबहीं दास औ घर जायें चेरों पर पालनाकी चितवन ब्रह्मा व शिव व सनकादिक व नारदादि दर्शनोंकेनिमित्त आतेहैं और मन को चरणारविन्दोंपर निछावरकरके वियोगके दुःखसे आखें आंशूचुचाती और जलतीहुई छातीसहित चलेजातेहैं व मुखारविन्दोंपर कि करोड़ों कामदेव और चन्द्रमा वार जाते हैं अलकें घूंघरवाली छूटीहुई कानों में कुण्डलऔर शिरपरजड़ाऊ किरीट मुकुट छोटासाबुलाक नाकमेंबाजूबन्द कड़े पहुंची हाथोंमेंकी अँगुलियों में अँगूठी और छल्ले पीताम्बरी बागा की उसपर मुकैशआदि जगह जगह टँकाहुआहै शोभायमान औरजरी के दुपट्टेसे कटिकसीहुई बनमाला के ऊपरमणि और मोतियोंकी माला पड़ीहुई हैं कल्पहिने हुये धोती पीताम्बर विराजमान चरणकमलों में घुंघुरू और प्रांमित वयस बारहवर्षकी और ऐसीहीसाज और शृङ्गारके सहितभरत लक्ष्मण शत्रुघ्न और दूसरे राजकुमार व सखासंग हैं छोटी छोटीकमान और तीरहाथों में मानोंशोभा और शृङ्गार स्वरूपवान होकर धरतीपर आयेहैं और शोभा और सजावट सवब्रह्माण्डोंकी इकट्ठीहोकर अयोध्या पुरीमें देखने वालोंके चित्तको अपने बलात्कारसे लूटतीहै ॥

वाल्मीकिजीकी कथा ॥

वाल्मीकिजी ब्राह्मणवंशमें जन्मे किसी संयोगसे लड़काईमें भीलके साथ जानेसे उनने पुत्रभावसे पालनाकरी और भीलकी लड़कोंके साथ शिकारको [illegible] आदिसे उनने [illegible] व चोरियादि कर्म करते थे एकबार कश्यप अत्रि भरद्वाज गौतम [illegible] विश्वामित्र वसिष्ठ सातऋषि उस ओर आये वाल्मीकिजी ने उनके लूटनेका इरादाकिया ऋषियोंने पूछा कि किस कारण [illegible] कर्म करता है उसने कहा [illegible]

कि बालबच्चों के पालनके निमित्त फिर पूछा कि वेसब तेरेपाप व दुःख में साझीहोंगे तबपूछनेगया तबसबने साझा पाप में अंगीकार नहीं किया तबआनके वर्णनकिया तबऋषीश्वरों ने कहा कि वेतेरेपापमें साझीनहीं होते तोतूउनके हेतु अपना परलोक क्यों बिगाड़ताहै इतनेही सत्संग और उनके दर्शनसे बाल्मीकिजीको वैराग्य और भयउत्पन्नहुआ अपने कल्याणकी राह हाथजोड़कर पूंछी नेत्रोंमें जलभरआया ऋषीश्वर दया करके रामनाम उपदेश करके चलेगये पर रामराम के स्थान मरामरा स्मरण रहा एकाग्रचित्त करके जपनेलगे कुछकाल पीछेफिर सप्तऋषि जो उधरको आनिकले व बाल्मीकिजीकी अन्वेषण करीतो यह लीला-देखी कि एकबामीके समीप जोपशुपक्षी जाताहै रामनाम कहनेलगता है इसचिन्हसे जाना तबनिकाला और देखा कि सबप्रकारसे शुद्ध और सिद्ध होगये और किसीवेद व शास्त्र व धर्मकर्म सिखाने का प्रयोजन नहींरहा कि आपसे आप नामके प्रताप से सब जानलियाहै बिदाहुये और बल्मीकिजीके शरीरपर मिट्टीजमकर बामीकेस्वरूप होरही थी स-र्पोंदिने उसमें घरकरलियाथा इसहेतु बाल्मीकि नामरक्खा बाल्मीकिजी सर्वज्ञ व त्रिकाल दर्शीजब होगये बिचारा कि जिसके नामके प्रभावसे यह हुआ तिसका बर्णन करनाचाहिये यहध्यान करतेही भीलरूप से भगवत्ने आज्ञादी व नारदजीने आनकर उपदेशकिया और भविष्यराम चरित्र ध्यानमें बाल्मीकिजी के दिखला दिये उसी अनुकूल रामावतार से दशहजार वर्ष पहिले सौ करोड़श्लोक में रामचरित्र वात्सल्य उपा-सना अपनीभाषामें रचना किया अर्थात् राजपुत्र करिके श्लोकोंसे कहा उस रामायण को शिवजीने तीनोंलोक में फैलाया देखना चाहिये कि पहिले बाल्मीकिजी तो ऐसेथे कि छायास्पर्श ऋषीश्वरनहीं करते और फिर रामनामके प्रभाव और कीर्तनसे सोईबाल्मीकि उसपदवीको पहुंचे कि जिनकी कथा व कथन संसार तापके दूरकरनेको छत्रछाँह होगया व बालचरित्र देखनेकी अभिलाषा बाल्मीकिजी को हुई तब जानकीजो उनके आश्रम में लवकुश सहित रहीं नाना प्रकार बालचरित्र किये अश्वमेधमें घोड़ाबाँध लिया हनुमान आदि सबको जीतके बंदमें किया पोछे बाल्मीकिजीके साथ अयोध्याजी में गये यह रामाश्वमेध में कथाहै

सो रामनाम की महिमा जहांतक कोई वर्णन करै वह सब थोड़ी है ॥

शुकदेवजी की कथा ॥

ऐसा जगत्में कौनहै जो शुकदेवजीकी महिमा वर्णनकरसकै जिनके मुखसे श्रीमद्भागवत रूप अमृतकी नदीनिकली वो सब पानकरनेवालों को अमर करदेती है एकसमय देवस्त्रियोंने स्नान करते शुकदेवजी से लज्जा न की और व्यासजीकोदेख लज्जितहोकर वस्त्रलिया व्यासजीने पूछातब उत्तर दिया कि शुकदेव जी सिवाय भगवत्रूप के जगत् को दूसरा नहींदेखते और आपको नानाप्रकार का ज्ञानहै इस हेतु तुमसे लज्जाहै शुकदेवजी माताके गर्भही से भगवत्भक्त और ज्ञानवान् हुये कारण यहहै किपार्वतीजीने शिवजीसे तत्त्वज्ञान पूछा तब शिवजी अपने आश्रमके सबजीवों कोअलग करके उपदेश करनेलगे पार्वती को नींद आगई भगवत् इच्छा करिके एकशुकाका बच्चा उस आश्रममें रहिगया और पार्वतीजी की जगह हूंहूं करतारहा वह ज्ञानसुनकर अमरहोगया पीछे शिवजीने जाना तबतो पकर मारने के हेतु उद्यतहुये तब वह भागा व्यासजीकी पत्नीके उदरमें बारह वर्षरहे पीछे देवता और ऋषीश्वरोंकी प्रार्थना से शुकदेवमहाराजने जन्मलिया और तुरंत वनको गमनकिया व्यासजी पीछेपीछे हेपुत्र हेपुत्र करते मोहवश चलेतब सबओरके वृक्षों से शब्द यह निकला कि मैं और तू दुःख और सुख यहसबभ्रम है इस संसारमें न जाने तुमकेतेर बेरे पिताहुये और हमतुम्हारे और जो देखने में आताहै सोसब भगवत्रूपहै विद्याका जानना भगवत् के जानने के हेतुहै [illegible] न हुआ तोविद्या सबनिःफलहै व्यासजी यह उत्तर पाकर [illegible] पर इसीविचार व उपायमें रहे कि शुकदेवजी फिर आवैं इसहेतु सिखाके लड़कोंको श्रीमद्भागवत के श्लोक सिखाकर जिसवन में शुकदेवजी रहाकरतेथे वहांभेजदिया एकदिन शुकदेवजीने किसीलड़के के मुखसे यह श्लोक [illegible] किया वह पापकर्ता पूतनाजन के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] शुकदेवजी [illegible]

श्रीमद्भागवतकोपढ़ा पीछे यहइच्छाहुई कि किसीप्रेमीको सुनानी चाहिये परकोई अधिकारी देखने में न आया नितान्त राजापरीक्षित को योग्य समझा और गंगाकेकिनारेपर राजाको सुनाकर सातदिनमेंभगवतपरा यण और मुक्त करदिया और जिसजिसने उससभामेंसुनी सब भगवत्परायणहुये और अबभी जोकोई सुनताहै परमपदकाअधिकारीहोताहै॥

कथा जयदेवजी की॥

सबकबि मण्डलीक राजों के सदृश हैं उनके राजा चक्रवर्ती स्वामी जयदेवजी हुये गीतगोबिन्द तीनों लोकमें ऐसा प्रकाशित किया कि कोक और काव्य और नौरस और शृङ्गार का समुद्र है जिसकी अष्टपदी को जोकोई पढ़ताहै निश्चय बुद्धिमान और ज्ञाता शास्त्रोंका होजाता है और जहां जोकोई कीर्तन करताहै अरुसुनने के निमित्त निश्चयकरके भगवत् प्रसन्न होकर आते हैं और भगवतभक्त जो कमल सदृशहैं उनके फूलने और आनन्दके हेतु सूर्य्यके सदृश हैं और भगवत्काआनन्द देनेवाला भी वैसाही है और यह जानरक्खो कि कोक और शृङ्गारपद से बिषयी लोगोंके मन व बुद्धिमें जोकोक व शृङ्गारबर्ति रहाहै उसका निश्चय न होवै शृङ्गारपद से भक्तमालआदि की रचना करनेवाले का यह तात्पर्य्य है कि वह शृंगार जिसका बर्णन केवल भगवत् शोभा व भगवत्में होवे कुछकुछ इस ग्रंथके आदिमें लिखा और तेईसवीं निष्ठामें लिखा जायगा और रसराज जिसका नामहै और जिसके बर्णन में वेदकी यह श्रुति है कि जिसको प्राप्त करके निश्चय भगवत् का आनन्द मिलता है सो रस जयदेवजीने इस गीतगोबिन्द में वर्णन कियाहै और कोक उसकी एक शाखाहै स्वामी जयदेवजी कुंडबिल्वमें कबिराजहुये रसराज जोशृङ्गार तिसके मूर्ति थे पर उस रसका स्वाद अपनेही मन में लेते रहे कारण यहकि बैराग्य इतना था कि किसी रात एक पेड़के नीचे नहीं रहतेरहे और सिवायएकगुदरी व कमण्डलुके कुछ अपनेपास नहींरखतेथे मसि-हानी लेखनी व पत्रिका तो कौनबातहै भगवत्को उसरसराजकीप्रवृत्ति अंगीकारहुई इसहेतु यहउपायकिया कि एकब्राह्मणको प्रतिज्ञा रही कि अपनी लड़की जगन्नाथजीको भेंटकरूंगा जबलड़कीलाया तबस्वामीकी आज्ञाहुई कि जयदेव मेरास्वरूपहै यहलड़की उसीकोदेवतबजयदेवजी

केपास लड़कीसहित जाकर प्रभुकी आज्ञाका वृत्तान्त निवेदन किया उन्होंने कहा कि लड़की योग्य धनवानको देना उचितहै विरक्त फकड़ों को नहीं ब्राह्मण न बोला भगवत् आज्ञा में मेरा क्या वश जयदेवजी बोले वे प्रभुहैं हजारों लाखों स्त्री उनकी गोमितहैं हमको एकपहाड़के समानहै नितान्त समझाते समझाते ब्राह्मण न हारा तब लड़की छोड़कर चलागया व धर्म्म लड़कीको छुड़ायगया जयदेवजी लड़कीकोभी समझायके तब भगवत् आज्ञा से येन गहाकर एकछोटीकुटी बनाकर भगवत्सेवा पधराकर भगवत्सेवा में रहनेलगे और गीतगोविन्दकी रचनाके प्रारम्भमें एकअष्टपदीमें प्रियाजीके मानकेवर्णनमें यहभाव ध्यानमेंलाये कि श्रीकृष्णस्वामी मनावनेके समय इस दीनतासहित प्रियाजीसे विनतीकरते हैं कि कामदेवका विष दूरकरनेवाला जोआपका पवित्र चरणकमल उसकोमेरे मस्तकपर शोभायमान करो पर ढिठाई सोचकर न लिखसके दूसरे भावको चिन्तनकरते स्नान करने चलेगये भगवत् आप जयदेवजी के रूपसे आकर जो भाव जयदेवजीने पहिले अपने मनमें विचाराथा उसीको रचिके लिखगये कि भाव उसका ऊपर लिखागया जब जयदेवजी स्नान करिके आये और अपने विचारित भावको सुन्दर पदनसे रचिके लिखा देखा तब पद्मावती अपनी स्त्रीसे पूछा तब उत्तर दिया कि आपही अबहीं आयके लिखगये फिर पूछोहीं जयदेवजीने भगवत् चरित्र जाना व गीतगोविन्दको परम पवित्र समझा इस गीतगोविन्द की ख्याति थोड़ेदिनमें जहां तहां होगई और सबका अंगीकृत हुआ जगन्नाथ पुरी का राजा पण्डित रहा उसने भी एक गीतगोविन्द रचना किया जयदेवजीका गीत व राजा का दोनों जगन्नाथ के मन्दिरमें रखदियेगये जगन्नाथ रायजीने जयदेवजीके गीतगोविन्दको छातीसे लगालिया राजा लज्जितहोकर समुद्रमें डूबनेचला प्रभुने आज्ञाकी कि यहकर्म उचित नहीं न्याव उचितहै जयदेवजीकी भक्ति और कविताई को तुम्हारी नहीं पहुंचती अच्छा जयदेवजी के गीतगोविन्दमें प्रति सर्गमें एक श्लोक तुम्हारा भी रहैगा परन्तु जयदेवजी का ख्याति हुआ यद्यपि सर्व गीतगोविन्द है एकमाली की लड़की यह अष्टपदी पढ़ती गीतगोविन्द को गातीहुई बैंगन तोड़ती फिरतीथी जगन्नाथ स्वामी उसकेपीछे निराधार यह गातीथी सुनतेहुये फिरतेथे

कांटेसे झंगा फटगया राजा दर्शनके समय झंगादेखकर चकितरहा पंडों
से पूछा नितांत जगन्नाथ स्वामी ने राजाके हृदयमें वृत्तान्त प्रकाश कर
दिया राजाने निश्चय करिके डौंड़ी फेरवा दी कि जोकोई गीत गोविन्द
पढ़े तो पवित्र स्थान व शुद्ध में पढ़े कि आप भगवत् सुनने को आया
करतेहैं एक मुगल बड़ेप्रेमसे इस पोथी का पढ़ा करताथा एकदिन घोड़े
पर सवार और प्रेम भाव से मग्न होकर अष्टपदी को गाता था उसको
दर्शन हुये कि सुननेको साथहैं इस गीतगोविन्दकी महिमा और प्रताप
कौन वर्णन करसक्ताहै स्वर्गलोक में देवकन्या गानकरती हैं एकसमय
जयदेवजी को राहमें ठगलगे तब यहशोचा कि पापकामूल धन है और
रोगका मूल अत्यन्त भोजन है व दुःखका मूल स्नेह है सो इनतीनों का
त्याग उचितहै यह शोचकर जो कुछ पासरहा सोठगोंको देदिया ठगोंने
जाना कि यह बड़ाधोखाजहै कुछ उत्पात पीछेकरैगा अनेकबात बि-
चारनेलगे निदान हाथपांव काटकर एककुवेंमें जयदेवजीको डालदिया
एकराजा भगवत्इच्छासे आयगया निकाला हाथपायँ नहींदेखकर पूछा
जयदेवजीनेकहा कि माताकेगर्भसे ऐसेहीजन्म मेराहुआ बार्त्तालापहोने
से राजा जानगया कि कोई प्रतापी भगवत्भक्तहै भाग्यसे मुझेदर्शनहुआ
अपनीराजधानीको लेगया हाथजोड़के कुछसेवाके निमित्त विनतीकिया
जयदेवजीने साधुसेवाकी आज्ञादी राजा अङ्गीकारकरके साधुसेवाकरने
लगा जब रूपातहुआ ठगभी साधु का रूपबनाकर पहुंचे जयदेवजीने
राजासेकहा कि यहलोग हमारेबड़ेभाई व बड़े महापुरुषहैं अच्छेप्रकार
सेवाकरो राजाने वैसाहीकिया परठगोंनेभी जयदेवजीको पहिंचानलिया
इसहेतु त्रासयुक्त बिदाहोनेकी बिनती नित्यकरतेथे निदान एकदिन ब-
हुतरुपया दिलादिया व बिदाकरादिया कुछसिपाही घरतक पहुंचानेको
पठये सिपाहियोंने पूछा कि स्वामीजीसे कैसीप्रीति व सम्बन्धहै जोऐसे
सत्यादस बिदाईहुई ठगबोले कहनेयोग्य बातनहीं सिपाहियोंने बचन
दिया कि किसीसे न कहेंगे वेठगबोले कि एकराजाकेयहां हमलोग और
तुम्हारेस्वामी चाकरथे किसीअपराध करनेकेकारण बधकरनेकीआज्ञादी
सो हम लोगोंने हाथपांव काटलिये जानछोड़दी इसीहेतु यह सेवा हम
लोगोंकीकराई यहअपवाद भक्तका प्रभु न सहिसके धरतीतुरन्त फटगई

व ठगसब पातालमें चलेगये सिपाहियोंने सबवृत्तान्त जयदेवजीसेत्र्या-
करकहा व दयासे कम्पमान होकर हाथपांव मलनेलगे तो हाथपांव
निकलत्र्याये जैसे पूर्वहीरहे वैसेहीहोगये यह दोनोंवृत्तान्त सिपाहियों-
ने राजासेकहा राजाने त्र्यायके स्वामीजीसेपूछा कुछ न बोले जब बहुत
पूछा तब सबवृत्तांत कहसुनाया राजा त्र्यतिविस्मययुक्त सेवाकरनेलगा
सचकहिके भगवत्भक्तोंकी रीतिहै कि जो कोई उसकेसाथ दुष्टताकरै व
त्र्यपनीसाधुतासे चूकतेनहीं जैसे दुष्टत्र्यपनी दुष्टतासे नहींचूकता जयदेव
जीने त्र्यपने देशके जानेका विचारकिया तब राजाने बहुतप्रार्थना करके
न जानदिया त्र्याप जाकर पद्मावती जी स्वामीजी की पत्नीको लेत्र्याकर
राजमन्दिर में निवासकराकर रानीको सेवामें पद्मावतीजी के बहुत दृढ़
किया उसरानीकाभाई मरगयाथा उसकीस्त्री साथसती होगईथी रानीने
एकदिन पद्मावतीजीके त्र्यागे एकत्र्याश्चर्य्य सहित त्र्यपनेभाई भावजकी
बातकही पद्मावतीजी सुनकरहँसी रानीने कारणहँसनेकापूछा तोउत्तर
दिया कि शरीरका जलादेना पतिकेसाथ इसमें प्रीतिकीरीतिकी हानिहै
मुख्य प्रीति व स्नेह यहहै कि तुरन्त त्र्यपने पतिकी मृत्यु सुनतेही उसी
क्षण त्र्यपना प्राण निछावरकरै रानीबोली इस समय लें तो ऐसी सती
त्र्यापहीहैं त्र्यौरपद्मावतीजीकी परीक्षालेनेकोपीछेपड़ी राजासेभाकहा कि
स्वामीजीको एकदिन फुलवाड़ीमें लेजाव त्र्यौर नगरमें विख्यात करदेव
कि स्वामीजीमरगये राजाने उसरानीको समझाया कि ऐसीबात जिसमें
मेरा शोककरै न करनीचाहिये निदान न माना राजाने वैसही सब किया
तब त्र्यांखोंमें त्र्यांसू भरे रानीपद्मावतीजीके पास जाबैठी उन्होंने कारण
दुःखितहोनेकापूछा रानीनेनकहा पद्मावतीजीने कहा स्वामीजीत्र्यानन्द
सेहैं तब रानी लज्जितहुई दूसरीबारदिन पीछे फिर वैसीही बात उठाई
पद्मावतीजीनेसमझा रानीपरीक्षाकेहेतु पीछेपड़ीहै रानीकेमुखसे यहबात
सुनतेही प्राणको छोड़दिया यहदशा देखकररानी व राजाको बड़ा
दुःखहुआ और इतने ग्लानियुक्तहुये कि जीना विषहोगया व त्र्यपनेजलने
का निश्चय किया स्वामीजी यह समाचार सुनतेही तुरन्तआये
रानीको मूर्छितपाये देखा व लोगोंके कहनेको सुनकर बहुत समझाया
न माना स्वामीजीने विचारा कि बिनाजिये पद्मावतीके राजा का जीना

कदापि नहींहोगा अष्टपदी गीतगोविन्दकी गाई कि पद्मावती जी उठ बैठी और साथ गानेलगी तौभी राजा सावधान न हुआ स्वामीजी ने बोध करके अपघातसे बचाया कुछदिनपीछे अपने स्थानपर गये कुण्ड-बिल्व गांवमें घर था वहांपहुंचे गंगाजी अठारह कोसपर रहीं नित्य-स्नानकोजाते वृद्धतादेखि गंगाजीकी एकधारा जिसकानाम जयदेईगंगा है स्वामीजी की कुटीकेनीचे बहनेलगीं अद्यापि बहतीहैं जयदेई गंगा नाम विख्यात है॥

कथा तुलसीदासजी की॥

गोसाईं तुलसीदासजी को भक्तमाल के कर्त्ताने बाल्मीकिजी का अवतार लिखा है सो इसमें कुछ संदेह नहीं कि उनकी वाणी में प्रभाव दिखाई पड़ता है कि हृदयमें चुभिजाती है और रामचरित्र रूपी अमृत की धाराको इस कलियुग में प्रवाहमान कियाहै व सबको सुलभ है और चौदह रामायण अर्थात् चौपाईबन्द जो विख्यातहैं व बिनयपत्रिका व गीतावली व कबितावली व दोहावली व रामशलाका व हनुमानबाहुक व जानकीमंगल व पार्वती मंगल व कड़काछन्द॥ व बरवाछन्द व रोलाछन्द व झुलनाछन्द एक दूसरा कि प्रेमियों को व उपासकों को सबजगह मिलसक्ते हैं और भक्तोंके मुखसे निश्चय होचुकाहै कि जो कोई नेमकरके नित्य किसी रामायणका पाठकरताहै निश्चय श्रीरघुनंदन स्वामीके चरणों में प्रीति होजाती है व कामना करिके कांडका पाठ करै तो सिद्धि होजाताहै व रामशलाकामें जो प्रश्नकरै तो ऐसे दोहे निकलैं कि जो होनेवालीबात हो सो ज्ञात होजाय और तुलसीकृतरामायणको काशीजीके सब पण्डितोंने सभा करके सम्पूर्णपढ़ा आदि अन्त सब वेद शास्त्र पुराण गीताजीके अनुकूल देखकर सबने अंगीकार लिख दिया कोई कोईने द्वेष करिकै वाद ठाना तो बिश्वेश्वरनाथजीके अंगीकार करनेसे सबको अंगीकृत हुआ गोसाईं तुलसीदासजी कान्यकुब्ज ब्राह्मण रहे अपनीस्त्रीसे स्नेह विशेष रखतेथे एकदिन स्त्री अपने मैकेमें मा बापसे मिलने को गई गोसाईंजी को इतना बियोग हुआ कि सहन न होसकी अपनी ससुरारिमें पहुंचेस्त्रीको लज्जाआई क्रोधकरके गोसाईं जीसे बोली कि यह शरीर अस्ति मांसका अनित्यहै रघुनन्दन स्वामी

नित्य निर्विकार पूर्णब्रह्महैं तिनसों क्यों नहीं स्नेहकरते कि दोनों लोकमें लाभहो इतने कहनेसे गोसाईंजी पण्डित और ज्ञानवान्थे पूर्व पुण्यके पुंज उदयहुये ज्ञान वैराग्यकी आँखें खुलगईं काशीजीमें आकर श्रीरघुनंदनस्वामी के भजनकीर्तनमें लगे गोसाईंजी दिशाफिरने वनमें जायाकरते तो पानी शौच शेषको एक जगह नित्य डालदिया करते थे वहां एकभूत रहताथा उस पानीसे उसको तृषा मिटतीथी एकदिन प्रसन्न होकरबोला कि तुमको कामनाहो सो कहो गोसाईंजीने कहा रघुनन्दनस्वामी का दर्शन करादे भूतने कहा कि यह सामर्थ्य मेरेमें नहीं पर हनुमानजीका पता यहबतलाताहूं कि अमुकस्थानमेंकथा रामायण होतीहै और हनुमानजी सबसे पहिले ऐसे कुरूपसे कि जिसको देखते डरलगै और घृणाहोयआतेहैं सबसेपीछे जातेहैं इसपहिंचानसे गोसाईंजी हनुमानजीके पीछे चलेगये वनमें चरण पकड़लिया न छोड़ा हनुमानजीने दर्शनदिया कहा जो चाहनाहो कहो बिनयकिया रघुनन्दन स्वामीका दर्शन चाहताहूं आज्ञादी कि चित्रकूटमें दर्शनहोगा गोसाईंजी अतिअभिलाषसे चित्रकूटमें आये एकदिन इसस्वरूपसे दर्शनहुआ कि रघुनन्दनस्वामी श्यामसुन्दर राजकुमार के स्वरूपसे वसनभूषण वनमालायुक्त पहिने धनुषबाणलिये घोड़ेपर सवार और लक्ष्मणजी गौर मूर्ति वैसेही सजावटके सहित साथ एकहरन के पीछे घोड़ा डालेहुये जातेहैं यद्यपि स्वामीकी मूर्तिमन और आंखोंमें समायगई पर यह न जाना कि ये स्वामी हैं पीछे हनुमान जी आये गोसाईंजी से पूछा कि दर्शनकिये गोसाईंजीने बिनयकिया कि दो राजकुमार देखेहैं हनुमानजी बोले कि वही रामलक्ष्मणथे गोसाईंजी उसीरूपका ध्यानकरतेहुये सुख्य मनोरथको प्राप्तहुये एक हत्यारा पहिले रामका नाम लेकर कहाकरता कि हत्यारेको भिक्षादेव गोसाईंजीको आश्चर्यहुआ कि यह कैसापुरुष है कि पहिले रामनाम लेताहै फिर अपने आपको हत्यारा कहताहै य ठहराहै बुलाया और नेम गुरु मानकर उसको अपने साथ भोजन प्रसाद दिया था काशीके पण्डितोंने ब्राह्मणों ने गोसाईंजीसे कहा- कर पूछा कि हत्यारेकेसाथ किसतरह एकपांति हुई गोसाईंजी ने कहा पढ़कर रामनामके [illegible] सब [illegible] देखो इसके तो

सैकड़ोंबेर नाम उच्चारणकिया तो शास्त्रके बचनपर जो बिश्वासनहीं तो अज्ञानका अंधकार दूर नहींहोसक्ता पंडितोंने यद्यपि शास्त्रकोमाना तथापि वे बिश्वाससे यहठहराया कि बिश्वेश्वरनाथ का नाँदिया इसके हाथसे भोजनकरै तो सत्यमानैं सो नाँदियाने उसकेहाथसे धराहुआ प्रसादको भोगलगाया सब पण्डितों ने लज्जितहोकर नामकी महिमा व गोसाईंजीकी भक्तिपर निश्चयकिया एकदिन गोसाईंजीके स्थानपर रातको चोरचोरी करनेकोआये तो श्रीरघुनन्दनस्वामी धनुषबाण लेकर चोरोंको डरवातेफिरे चोरीकरने न पाये गोसाईंजीसे प्रभातको आकेपूछा कि महाराज वह श्यामसुन्दरकिशोर मूर्त्ति परममनोहर कौनहै जोरात को चौकीदेताहै गोसाईंजी सबवृत्तान्तसुनकर प्रेममेंडूबगये फिरबिचारा इससामग्रीकेहेतु परिश्रम व रातको जागरण स्वामीको अच्छानहीं बहुत रोनेलगे उसीघड़ी सबधन सामग्री दानकरदिया चोर यहवृत्तान्तदेखकर घरबार छोड़कर भगवत् शरणहोगये और एक ब्राह्मण मरगया उस कीस्त्री बिमानकेसाथ सतीहोनेजातीथी गोसाईंजीको दण्डवत् किया गोसाईंजीके मुखसेनिकलगया सौभाग्यवती उसनेकहा मेरापति मरगया यहदासी सती होनेजातीहै सौभाग्य कहांहै गोसाईंजीने उसके कुलमें भगवत्भक्ति करनेकी प्रतिज्ञाकरायके पतिको जिलादिया जब यहबात बिख्यातहुई तोबादशाहने बड़ेआदरसे बुलाकर उच्चआसनपर बैठालकर सिद्धाई देखलानेको बिनयकिया गोसाईंजीबोले सिवाय रघुनन्दनस्वामीके दूसरीसिद्धाई कुछनहीं जानताहूं और न इसझूठे खेलसे कामरखताहूं बादशाहने कहा कि अपने स्वामीहोके दर्शनकरादेव यह कहकरबंद में किया गोसाईंजीने हनुमानजीका स्मरणकिया उसीघड़ी बानरोंकीअगणितसेनाने बादशाहीक़िलेमें ऐसाउत्पातकिया कि प्रलयकालदेखलाई पड़ाबादशाह जब पलंगपरसे उलटागया तब ज्ञानशुद्धसे गोसाईंजीकी शरणमें आया चरणपर गिरा तब सब बानरीसेना अन्तर्द्धान होगई तब तुलसीदासजीने आज्ञाकिया तुम दूसराक़िला रहनेकोदेखलेव यहस्थान रघुनाथजी काहुआ बादशाहने तुरन्तछोड़दिया तुलसीदासजी काशीको चलेआये एककोई भक्तोंकेवैरी ने गोसाईंजीके मारनेको अनुष्ठान जपका किया गोसाईंजी ने एकपद महादेवजी का बनाया कुछ नहुआ वहआप

रुचिनतहोरहा फिर गोसाईंजी वृन्दावनआये नाभाजीसे मिले उनकी रचना भक्तमालकोदेख सुनकर बहुत प्रसन्नहुये और यहबात जो फैली है कि गोसाईंजीने मदनगोपालजी के दर्शनके समय यहबात कहीथी कि धनुषबाण धारणकरोगे तब दण्डवतकरूंगा सो यहबात निपटझूठ और बिना शिरपैरकीहै काहे कि कृष्णावली में कृष्णयश गोसाईंजी ने गायाहै सो प्रसिद्ध है सिवाय इसके सबजगत्को दण्डवत् किया है- सियाराम मय सबजगजानी । करौंप्रणाम सप्रेम सुबानी ॥ यह चौपाई जिसकीकहीहै भलासो कब भगवत्के साम्हने ऐसीहठबानी कहसक्ताहै इसबातके फैलनेकी बातयहहै कि उपासक जिसदेवताके मंदिरमें जाता है अपने इष्टकारूप ध्यानकरता है यहरीति शास्त्रके सम्मत्के अनुकूल गृहीतहै सो गोसाईंजी दर्शनकोगये व परम मनोहर मूर्त्तिकोदेखा तो श्रीरघुनन्दन धनुषबाणधारीका ध्यानकरके दण्डवत्किया सो गोसाईंजी भक्तसांचे व सिद्धथे इसहेतु मदनगोपालजीने भी उनके ध्यानके अनुकूल रूपदिखादिया जोकोई उससमय दर्शन करनेवालेथे उनको भी धनुष बाणधारी दृष्टिआये इसहेतु यह बातफैली और किसीने एकदोहराभी बनालिया वृंदावनमें किसीने गोसाईंजीसे प्रश्नकिया कि श्रीकृष्ण महाराज पूर्णब्रह्म और अवतारीहैं और नृसिंह,वामन,परशुराम,रामचन्द्र आदि उसअवतारी के अंशकलासे अवतारहैं तुम श्रीकृष्ण महाराज की उपासना क्योंनहींकरते यद्यपि शास्त्रप्रमाण से गोसाईंजी उत्तरदेनेको समर्थथे पर माधुर्यभावमें प्रेमभक्तिको दृढ़करतेहुये ऐसाउत्तरदिया कि यह पूछहोरहाऔरसिद्धांत बनारहा सो यहबातहै कि श्रीरामचन्द्र दशरथनन्दन की बहुत सुन्दर सुकुमार अंग मनोहर मूर्त्ति परम शोभायमान देखकर हमारामन लगगयाहै कि नहींछूटता अब जो तुम्हारे बचन से उनमें कुछ ईश्वरताभी है तो और अधिक व सनमाई भई ॥

कथासूरदासजीकी ॥

सूरदासजी की रचना सुनकर किसकोनहीं शिरकम्पन प्रेमसे न उमगी और शिर न हिलाया जिसमें यमकानुप्रासउपमा और कठिन पदार्थोंकी रीति और अनुप्रास और यथार्थ निरूपण विदित व पहिला

अर्थ व तुलेहुये व बिकलित बहुतहैं और भगवत् ने जो चरित्रकिये ऐसा विस्तारसहित वर्णनकिया कि मानों देखतेथे ऐसाबिमल हृदय जिसका है अथवा भगवत्ने आप उनचरित्रोंका प्रकाश उनके हृदयमें झलकाय दिया भगवत्के जन्म औरकर्म औरगुण औररूप ऐसे प्रकटकिये कि जो उनको पढ़ताहै अथवा सुनताहै निश्चय बुद्धिनिर्मल व मनपवित्र होकर भगवत् परायण होजाताहै उद्धवजी जो श्रीकृष्ण महाराज के सखा व मित्रथे उनके अवतारहैं यद्यपि बिष्णुस्वामी संप्रदामेंरहे व बालचरित्रों में चितकीचाह बहुतथी पर शृंगारनिष्ठा और सखाभावका प्रेमभी अत्यंत था कि सूरसागरसे प्रकटहै महिमा सूरदासजी की और सूरसागरकी किससे वर्णनहोसक्तीहै कि जिनकीकृपा से सहस्रों अपराधी सिद्ध और शुद्ध भगवत्भक्त होगये उनका संकल्प यहरहा कि सवालाख विष्णु पदमें भगवत् चरित्रोंका कीर्तनकरैं पर जबपचहत्तर हज़ार रचना कर-चुके तब परमधामको चलेगये पचासहज़ार आप श्रीकृष्ण महाराज ने रचना करिके अपने भक्तकासंकल्पपूराकर दिया और सूरश्यामके नाम से भोगरखदिया खानखाना वज़ीर बादशाह अकबरका विद्या संस्कृत व भाषामें पण्डितरहा कबिभीथा उसने सूरदासजीके पद जहां तहांसे ढूंढ़ ढूंढ़ कर इकट्ठे किये और एकपद एकमोहरका ठहरगया बहुतलोग मोहरके लोभसे नयेपद बना बनाकर सूरदासजी के भोगमें नामडालकर लेगये जबभीड़हुई तो यह बिचारकिया कि एकपद सूरदासजीका तौ-लका बाटखरा रखलिया नयेपद जोआवैं उसीसे तौलना आरंभकिया जोपद नयाहोता सो काग़ज़मोटाभी हो व पदभीबड़ाहो तौभी बराबर न तुलता व सूरदासजीका बनायापदछोटापदभीहो व काग़ज़महीन तौभी बराबर होजाता इसीपरीक्षा से सूरसागर को रूपमान ग्रन्थकिया किसीकी यह कहावतहै कि अकबर बादशाहने सूरसागर इकट्ठाकिया और दोलाख बिष्णुपदका संयोगपहुंचा तब अग्निमेंडालदिया सूरदास जीका न जला औरोंका बनाया जलगया तो दोकहावतों में जो सचहो पर बड़ाई व प्रभाव से व्यतिरिक्त सूरसागरनहीं और यह कहावत न बिख्यातहोती तो क्यासूर्य्य छिपारहता है सूरसागरको भगवत् ने वह प्रताप व प्रभाव कृपाकियाहै कि एकएक अक्षर मंत्रके सदृशहैं ॥

कथा नन्ददास जी की ॥

नन्ददासजी पुत्र चन्द्रहास जाति ब्राह्मण रहनेवाले रामपुरके भगवत्भक्त प्रेमी व नामीविख्यातहैं कि अनुक्षण सिवाय भगवत् व कीर्तनके दूसराकाम नहींथा रचना उनकी जैसे पंचाध्यायी व रुक्मिणी मंगल व दशमस्कंध व नाममाला व अनेकार्थ व दानलीला व मानलीला आदि हज़ारों विष्णुपद उनकी भक्तिके सदृश सारे संसार में विख्यात हैं उनके काव्यकी श्लाघामें कविलोगोंको यह कहाहै कि । और सब घड़िया, व नन्ददास जड़िया, अष्टछापके भक्तोंमें इनकीभी गिनती है जानरक्खो आठभक्त जिन्होंने श्रीकृष्णस्वामी के चरित्र कीर्तनकिये और उनके विष्णुपद ब्रज में भगवत् के सम्मुख कीर्तनकिये जातेहैं उनकी गिनती अष्टछाप में है और नाम मंगलरूप उनके यहहैं १ सूरदास २ कृष्णदास ३ छीतास्वामी ४ नन्ददास ५ परमानन्द ६ चतुर्भुज ७ व्यासजी ८ हरिदास ॥

कथा चतुर्भुजजी की ॥

चतुर्भुजजी भगवत्भक्त परमरसिक हुये नित्य श्रीवृंदावनमें बिहारी जीके मन्दिरमें अत्यन्त प्रेम व भावसे नृत्य करतेथे एकदिन नृत्यकरतेमें लँगोटी खुलगई दोनों हाथोंसे झांझ बजारहेथे ताल व समके भंगहोने के भयसे लँगोटी न सम्हाली व लोगोंके ठट्ठाकरनेकी चिन्ताभीहुई तब तक परम रिझवार बिहारीने दो भुजाओर उत्पन्नकरदीं और अपनेभक्त की लज्जा रखली ॥

कथा मथुरादासजीकी ॥

मथुरादासजी जो चेले हनुमानजीके ऐसे भगवत्भक्त धर्म में सावधानहुये कि नन्दनन्दन महाराजका दृढ़ विश्वासऔरबलरखतेथे प्रीति ऐसीकी कि अपने शिरपर कलश जलका रखकर लेआते और ऐसेप्रेम व भक्तिसे रासचरित्रका शृंगार कियाकरते कि मानो उनका हाथ भगवत्-चरित्र और माधुर्यके दरशानेको सूर्यके सदृशथा एक समय कोई साधु श्रीवृन्दावनमें आया देखकर यह कहा कि शालिग्राम सिंहासन पर शोभितहुये तो मथुरादासजीनी चेलोंके कहनेसे नये आनेसे [illegible] होगया तब उसने गुरुकेप्रसाद सोभी उठकर उसीपर पड़ा मरनेके योग्यहुआ तब मथुरादासजीने [illegible] ॥

कथा सुखानन्दजी की ॥

सुखानन्दजी संसारके आवागमनके भयके दूर करनेको एकही हुये काव्यरचना उनकी गुरुमंत्र व तंत्र शास्त्रकेतुल्य विख्यातहै भोगमेंजहां अपना नाम लिखा तहां भगवत्का नाम सुखसागर लिखा जैसे जैसे चन्द्रसखीने बालकृष्णनाम व मीराजीने गिरिधरनागर नाम लिखा है भगवत्गुण चरित्र कीर्तन भजन अति प्रेमसेकरते व भक्ति कमलके सेवा करनेमें मानोसरोवर थे॥

कथा श्रीभट्टजी की ॥

श्रीभट्टजीने आनन्दकन्द ब्रजचन्द महाराज औ वृषभानकिशोरीके भजन स्मरणका ऐसा सामान दृढ़ इस संसार में करदिया कि संसार समुद्रके उतरनेको नौकाके सदृशहै अर्थात् माधुर्य्य उपासनाके जो शो-भायमानचरित्र प्रिया प्रीतमकेहैं सो अपनेयुगल शतआदिग्रंथमें रचना इसमिठाई व मधुबानी व सुन्दरताके सहित बर्णनकी कि निश्चयकरिके मनद्रवीभूत होकर नवलकिशोर और नवलकिशोरी महाराज के चरित्र और प्रेममें मग्नहोताहै और अज्ञानरूपी अन्धकारके दूरकरनेको जि-नका सुयश चन्द्रमा है॥

कथा बर्द्धमान गंगलकी ॥

बर्द्धमान व गंगल दोनोंभाई बेटे भीष्मभट्ट परमभक्तकेथे दोनोंभक्ति के दृढ़करनेवालेहुये भगवत्चरित्र और श्रीमद्भागवत के कीर्तनकी नदी बहाई और इससंसारको पापोंसेपवित्र और निर्मलकरिदिया व भक्तों से ऐसीप्रीतिरही कि सर्बकाल भीड़ रहतीथी और यशोदानन्दन महा-राजके स्मरण भजनसे प्रेम था व दीनजनोंपर कृपा अत्यन्त थी ॥

कथाकृष्णदासजीकी ॥

कृष्णदासजी विख्यात चालक की रचना चर्चरी छन्द व बिष्णुपद आदिकी ऐसीविख्यातहुई कि समुद्रपर्य्यंत पहुंची अलगअलग ग्रंथसब चरित्र जैसे गुरधनचरित्र व पंचाध्याई व रुक्मिणीमंगल भगवत्भोजन बिधि इत्यादिकी रचनाकी सुखदेनेवाले घटाके सदृशहुये भगवत्सन्मुख करनेके हेतु उनका अवतार हुआ ॥

नारायण मिश्रकी कथा॥

नारायणमिश्र नवलाकगमें परम भक्तहुये भागवत के कीर्तन में तो मानो वेही एकजन्मथे क्योंकि जिनको बद्रिकाश्रमकी ओर शुकदेवजीने आप भागवत पढ़ाई जिनकेपास भक्तोंकी समाज नित्य रहा करती थी नवधा भक्तिको जिसने भलीप्रकार साधा सब शास्त्रों को अच्छे समझ कर तत्व चुनलियाजो बृहस्पति और शुकदेवओर सनकादिक व व्यास और नारदादिकों को अंगीकार व हृदयस्थहें सुधाबोधथे गंगातुल्य जिनकादर्शनथा॥

कथा कमलाकर की॥

कमलाकरभट्ट परमभक्त और पण्डित सर्व शास्त्रोंकेज्ञाता हुये उपासना शास्त्रके तो ध्वजाहीरहे कि भक्ति विरोधियोंको शास्त्रार्थमेंजीतकर भगवत्भक्तिपर स्थिरकिया माध्वसंप्रदामें मानो माधवाचार्य्यके अवतार हैं माधवाचार्य्यने जो दिग्विजयटीका भागवतकी रचनाकरीहै उसीके अनुकूल भागवतका कीर्तन और वर्णनकिया करतेथे स्मृति व पुराणके अनुकूल भगवत्के शंखचक्र की महिमा वर्णन करके आपचिन्ह उनके धारणकरे व सब अवतारोंको पूर्ण समझा किसीमें कुछभेदनहींकिया॥

कथा परमानन्दजी की॥

परमानन्दजी गोपियों के सदृश श्रीकृष्णजीके स्नेह व प्रेममें बेसुध व मग्नरहते थे ब्रजकिशोर स्वामीके चरित्र बारहवर्षकी अवस्थाके ऐसे कीर्तनकिये कि विख्यातहैं और जो उन्होंने शोभा व सुन्दरता और माधुरीरूप और लीलानटनागर महाराजकी अतिप्रेमयुक्त वर्णन करी तो कुछ आश्चर्यनहीं कि वहशोभा व चरित्र उनके बाहर भीतरकी आंखोंके आगेथा प्रेमकाजल आंखोंसे बहता और रोमांच अनुक्षणरहताथा व स्वरूपमें गोपाल महाराजकी शोभामेंपगेहुये व उमंगमें रंगेहुयेथे और अपनेकाव्यमें सारंगनाम भगवत्का वियोगकरके लिखते व रचनाउनकी भगवत् भक्तिकरानेवाली ऐसीहै कि भगवत् के ध्यान व प्रेममें मनको एका देतीहै॥

निष्ठा छठवीं

भेदके निर्णयकी कथाओं की है॥

श्रीकृष्णस्वामी के स्वरूपमहिमाकी प्रशंसाकी रूपचन्द्र जौहियन

अवतार को प्रणाम करताहूं जिससे वैवस्वत आदिराजालोग यज्ञ और धर्मका उपदेश पायकर संसार समुद्रसे पारहुये जानरक्खो कि भगवत् के मिलनेके निमित्त दो प्रकारका भेषहै एकतो आंतरीय अर्थात् अंतर का बिचार दूसरे शोचना और समझना सार और असार कामवैराग्य अर्थात् त्यागकरना ब्रह्मलोक पर्यन्त सुखका २ समअर्थात् मनकानिग्रह करना ४ दमअर्थात् संयम और नेम अवलम्ब से इन्द्रियोंको अपनेवश में करना उपरति अर्थात् मनकोफिर उनस्वादों की ओरन जानेदेना ५ तितिक्षा अर्थात् दुःख सुख भलाई बुराईका सहना श्रद्धाअर्थात् गुरूका उपदेश ६ और भगवत्में बिश्वास समाधान अर्थात् ७ भगवत्केध्यान की समाधि दूसराभेष बाह्य अर्थात् बाहर ८ जोदेखनेमें आवैकि जिन को पांचसंस्कार कहतेहैं। प्रथमउर्द्धपुण्ड अर्थात् तिलक दूसरा २ मुद्रा अर्थात् शंख चक्र भगवत् शस्त्रोंके चिन्हशरीरपरलगाना ३ तीसरामाला ४ चौथामंत्र ५ पांचवांनाम और कोई नामकी जगह बिचारभीकहतेहैं॥ और यहपांचो संस्कार गारहस्थ आश्रममेंहोके त्यागीहीकोसबउचित है कि पद्मपुराण और हारीतिस्मृति और परासरस्मृति आदिपुराणों व स्मृतिका बचन इसकेबिधान में युक्तहै और वेदश्रुतिकीनिज आज्ञा मिलतीहै भेदइतनाहै कि जोगृहस्थहैं उनका नाम प्रकट नहीरहताहै जो गृहमें धरागयाथा और गृहस्थाश्रमको त्यागकियाबिरक्त होगये उनका नामवही बिख्यातहोताहै जो संस्कारभये के समय गुरूने कृपाकरिके दिया भेषकी महिमा व बड़ाई क्यालिखूं कि भगवत्केमिलनेकेहेतुसबसे दृढ़ अवलम्ब मुख्ययहहै पद्मपुराणमेंलिखा है कि जिनके गलेमें तुलसी लगीहुई अर्थात् कंठीकीमाला और कमलके फूलोंकीमाला पहिनेहुये भगवत् शस्त्रोंका चिन्ह बाहुपर तिलक मस्तकपर है ऐसे बैष्णव शीघ्र संसारको पवित्रकरदेतेहैं आगमसार तंत्रकाबचन है कि जो केवल माला धारी बैष्णवहै वह ब्रह्माआदि करिके भी पूज्यहै मनुष्योंकी कौनबातहै फिर मंत्रशास्त्रका बचनहै कि माला और तिलक और भगवत् शस्त्रोंका चिन्ह जिसकिसीके शरीरपरहै जो वह चांडालभीहै तौ भी पूजनके योग्य है महाभारतके भीष्मपर्व में लिखाहै कि ब्राह्मणहै अथवा क्षत्री अथवा वैश्यकी शूद्र जिसनेभेष बैष्णव धारणकियाहै वहपूज्यहै और दण्डवत्

करनेके योग्य और वहही कर्म्मोंमें युक्तहै जो शूद्रभी है तौभी ऐसाहै कि ब्राह्मणोंकी धरतीपर मिलना क्लिष्टहै ऐसेसैकरों हजारों श्लोकहैं और क्योंनहीं ऐसीमहिमा और बड़ाई इसभेषकीहोवै कि बिना इसके कोई मार्ग उद्धारकेनिमित्त देखनेमेंनहीं आता भला किसीने संप्रदायके भजन कीर्तनकी इच्छाकी तो वहभजन कीर्तनकी पद्धति और पथसे करेगा कैं तो यह बात होगी कि नहीं मिलने कोई राह और पद्धति के कारणसे भजन कीर्तन की इच्छा छोड़देगा और जो इच्छा दृढ़ होगी तो हारि अखनारकर किसी न किसीसंप्रदायकोअंगीकारकरेगा काहेसे कि जिस रीति व पद्धतिको लेकर भजन आरंभकरेगा वह निश्चयकरके किसी न किसी संप्रदायके अनुकूलहोगा और जबकि किसीसंप्रदायके मतकेअनुसारहुआ तो निश्चयपद्धति उससंप्रदायकी अंगीकार करनीपड़ेगी और जबकि पद्धतिको अंगीकारकिया तो सबसे मुख्यरीति सँस्कारकीहै और सब वैष्णव और शैव व स्मार्त व शाक्तआदि इस बात में एकमत हैं सो जितने ऋषीश्वर और भक्त ब्रह्मातक जो हुये हैं सबको पहिले सँस्कार और गुरुमंत्र उपदेश हुआहै बिना मंत्रादि किसीका उद्धार आजतक न हुआ न होगा और शास्त्रकी आज्ञाप्रसिद्ध सबठौर परहै कि ब्राह्मण बालकका सँस्कार आठ वर्ष की अवस्था में और क्षत्रीका ग्यारह बारहबर्ष के और वैश्यका सोलह वर्षके वयक्रममें न होजावै तो वह अपने वर्णसे पतित होजाताहै तो सबप्रकार से सँस्कारों का होना सिद्धांत व मुख्यकरके करतव्यहै जो किसीको यहकथन होय कि ऊपरका भेषबनानेसे क्या लाभ होगा मनका भेष सँवारना चाहिये तो जानरक्खो कि पहले तो इससिद्धान्त में बोलचाल व प्रश्न व सन्देहकी सनवाई व पहुंचही नहींहै क्योंकि शास्त्रकी आज्ञामें किसको पराक्रम वादकरनेका है कान लटकाकर उसआज्ञाके अनुकूल साधनाकरना उचितहै नहींतो विचार लेनाचाहिये कि किसीको आजतक जन्मके दिनसे संसार में [illegible] बिनाकारणके भेष व भजनको [illegible] उत्कण्ठा आताहै अब [illegible] [illegible] [illegible]

शरणके अवगुणोंको दूरकरदेगा फिर तुलसी और भगवत् के शंखचक्र आदिका सत्संगहै और सत्संग का माहात्म्य पहिले लिखचुकेहैं फिर तीर्थके सदृशहै कि हृदयको पवित्रकरदेना तीर्थोंकास्वभावहै व सिपाही तब कहलाताहै कि जब तरवार बांधताहै बिनाध्वजा अलग अलग के ठाकुरद्वारे व शिवालेकी समझ नहींहोतीहै बैलपर त्रिशूलकाअंक लगा देतेहैं शिवजीकानँदिया विख्यात होजाताहै कालूकहार जो कहारोंका गुरुहै उसकीवार्त्ताहै कि किसीराजा धर्मात्माके राजमें मछली पकड़ता रहा राजाको आवते देखकर जालपोखरमें छोड़दिया अपनेप्राणके भय से तालावकीमिट्टीको तिलकलगा व जालके दानोंकी मालालेकर साधों के रूपसे बैठगया राजाने उसको साधुजाना दण्डवत्कर और कुछभेंट धर चलागया व कालू उसीघड़ी भगवत् शरणहुआ और यह दोहरा पढ़ा ॥ दोहा ॥ बानाबड़ोदयालुको तिलकछापअरुमाल । यमडरपैकालू कहै भयमानो भूपाल ॥ इसहेतु बहुत उचित व करनी यह चाहिये कि भेषसद्गु रुसेले सो पांचोसंस्कारमें पहिले ऊर्द्धपुण्ड तिलकहै उसके नि-मित्त अथर्वणवेदके उपनिषद्में यहआज्ञाहै कि भगवत्चरण के चिह्न अर्थात् तिलकजीव के कल्याणकेहेतु जो कोई धारण करताहै और वह तिलकमध्य में छिद्रहोवै और खड़ाहो वह मनुष्य भगवत् का प्याराहै और धर्मात्मा व मुक्तिवालाहै दूसरेपुराणोंका वचनलिखदेनेसे वेदश्रुति के प्रमाण लिखनेपर प्रयोजन न समझा सो वेद व पुराणों की आज्ञाके अनुकूल चारोंसंप्रदायमें प्रनाली तिलककीहै पर तिलककेस्वरूप बनाने में आपुसमें कुछभेदहै श्रीसंप्रदायमें दोनोंओर बीचमें ललाटके भगवत् चरणों के चिह्न बनाकर दोनों भौंह के बीचमें सिंहासन लगाते हैं और बीचमें रोलीकी पीलीकै लाल लकीर दीपकज्योति के आकार खींचतेहैं कि उसकानाम श्रीहै और कारण अधिककरने श्रीकेनिमित्त कै दोविचार इसमेंहैं कि यहचिह्न उन चरणकमलोंका है जिनका सेवन श्री अर्थात् लक्ष्मी अनुक्षण करतीहैं माध्वसंप्रदायमें दोलकीर महीन ऊंचीलगाकर दोनोंभौंहके नीचे सिंहासन लगातेहैं और सिंहासनके नीचे एकचिह्न कटारके फलकेआकार नाकतकदेतेहैं निम्बार्कसंप्रदायमें दोलकीर महीन के बीचमें एकबिन्दी छोटी श्यामबंदिनी अथवा श्वेतलगाने की रीतिहै

इसको कमल कहतेहैं और सिंहासन नहींलकीर का जैसातिलकका
और विष्णुस्वामी संप्रदायमें दोलकीर महीन और नीचे उसके सिंहासन
लगाकर बीचमें ग्रन्थछोड़देतेहैं व्यासजीने जो नईपरिपाटी अपनी सं-
प्रदायकी की तो निम्बार्क सम्प्रदायसे उनके तिलकमें थोड़ाभेदहै यह कि
निम्बार्क सम्प्रदायमें तिलकका सिंहासन दोनोंभौंहकेनीचे लगायाजाता
है और व्यासजीकी संप्रदायमें सिंहासन नासिका के अग्रभागसे तिलक
आरम्भकरतेहैं हित हरिवंशजीकी संप्रदायका तिलकनिम्बार्कसंप्रदायके
आकारहै और रामानन्दजीकी संप्रदायका श्रीसंप्रदायके अनुसार है चारों
संप्रदायोंमें द्वादश अंगपर तिलककरना लिखाहै और सब तिलकोंके मंत्र
अलगअलगहैं निम्बार्कसंप्रदायमें दोनोंलकीरकेबीचमें बिन्दीकालगाना
और माध्वकी विष्णुस्वामी संप्रदायमें रिक्तका और श्रीसंप्रदायमें गोपी
चंदन छोड़कर और तीर्थों के जैसे चित्रकूट व ताताद्री आदिकी मृत्तिका
का तिलकलगाना विधिहै व तैसेही रामानन्द संप्रदाय में और तीनों
संप्रदाय में गोपीचन्दनका व केवलकेसमय दूसरे तीर्थोंकी मृत्तिकाका पर
विष्णुस्वामी संप्रदायमें केशरआदिका भी लगातेहैं ॥ तिलकनिम्बार्क
संप्रदाय का ॥ तिलक ॥ माध्वसंप्रदाय का ॥



दूसराप्रकार यहहै [illegible] कि जो कोई [illegible]

[illegible]

के श्लोकके प्रमाणमें शीतलकी मुद्राकी रीतिहै और यद्यपि अगिलेआचार्यों ने पुराण के प्रमाण से तप्तमुद्रा धारणकरना एकस्थान द्वारकामें लिखाहै पर गृहस्थोंमें यह चलन नहीं गृह त्याग के पश्चात् उचित व अवश्य करनी यहहै तीसरा संस्कार माला है तुलसीकी अथवा कमल के फलकी विहितहै तुलसीजीका माहात्म्य बहुतजगह पुराणोंमें लिखा है इसहेतु बिस्तार करके तरजुमा लिखना प्रयोजन नहीं समझासारांश यहहै कि तुलसीके धारणकरने वालेको निश्चय भगवत्की प्राप्तिहोती है और मरणके समय तुलसी की माला कै तुलसी दल अथवा कण्ठी जिसके शरीरपर होय तो यमराजका भय नहींहोता सद्गतिको जाताहै पद्मपुराण में जो कदम्बआदि वृक्षोंके काष्ठकी माला वृन्दाबन की बनी हुईका माहात्म्य तुलसी के मालाके सदृश देखने में आया चौथा संस्कार मन्त्रहै सो उसकी महिमा सबकोई जानतेहैं कि सब सम्प्रदायों की जड़ और सब वेद शास्त्रोंका सारांश और शीघ्र भगवत् को मिलादेनेवाला और भुक्ति मुक्तिकी कामना पूर्णकरनेवालाहै भगवत्में और मंत्रमें बाल बराबरभी भेदनहींहै भगवत् मंत्रकेआधीन हैं सब वेद व पुराण उसमंत्र की महिमाको वर्णनकरतेहैं इसहेतु किसी श्रुतिका तरजुमाकरना प्रयोजन न समझा सो मंत्र चारों सम्प्रदायका अलग अलग है जो यह बाद हो कि एक स्वरका मंत्र अलग अलग किस हेतुहै तो यह दृष्टान्त अच्छे प्रकार उस बादको बिरवार देताहै नाम व रीतिसे पुकारतेहैं और वह मनुष्य सबनाम व रीतिसे सावधान व सम्मुख होताहै इसीप्रकार वह भगवत् जिसनाम और मंत्रसे स्मरणकियाजावे सम्मुख होताहै पाँचवां संस्कार १ नाम २ दूसरा करनेकाहै उसके निमित्तकुछ प्रमाण व बाद का प्रयोजननहीं जिसबर्गमें जोकोई होताहै उसीभांतिका नाम रक्खा जाताहै पलटनमें भरती हो तो सिपाहीकहते हैं और सवारों में हो तो सवार चारों सम्प्रदायके जो संन्यासी होतेहैं त्रिदण्डी कहलाते हैं एक दण्ड लकड़ीपलाशका दूसराशिखा तीसरासूत्र अर्थात् यज्ञोपवीतविशेष करके नाम गिरि पुरी तीर्थ मुनि संन्यासधारणके समय रक्खेजातेहैं व कपड़ा श्वेत अथवा गेरूके रंगका कै सिंगरफी रंगका पहिरते हैं और संन्यास लेनेके पहिले सब संप्रदायमें सब रंगकी पहिरन सिवाय नील

आदि जो शास्त्रमें निषेदहैं पहिनतेहैं स्मार्त सम्प्रदायजो चारों सम्प्रदायों से अलगहै और उसके आचार्य्य शंकरस्वामीहुये उसके तिलककी रीति त्रिपुण्ड अथवा वटाकार अर्थात् चिह्न बरगदके पत्रके सदृश चन्दन अथवा भस्म के गोपीचन्दन या तीर्थकी मृत्तिकासे है ॥


वटाकार


त्रिपुण्ड तिलक



और माला तुलसी व कमलाक्ष व रुद्राक्ष व जया पुता आदिकी व गायत्री आदि सबप्रकारके मंत्रहैं मुद्रा लगानेकीरीति नहीं स्वाध्यजानते हैं नामवही रहताहै जो जन्म होनेपर धरागया औरयज्ञोपवीतके समय जो संस्कारहुआ उसीको सब प्रयोजनके अर्थ बहुतकर समझते हैं फिर गुरु नहीं करतेहैं संन्यासकी इस सम्प्रदायमें यहरीतिहै कि शिखा सूत्र दूर करदेतेहैं केवल एक दण्ड लकड़ीका रखते और नामभी उसीसमय दूसरा धराजाताहै और इसकी सम्प्रदायमें संन्यासियोंके दश नामहैं जो कि शंकरस्वामीकी कथामेंलिखेगयेहैं गेरू या सिंगरफ के रंगका कपड़ा पहिनना व तिलक त्रिपुण्ड भस्मका ब्राह्मण से सिवाय और किसीके हाथका भोजन न करना कर्मोंका करना न करना बराबर समझना और दूसरेधर्म सब संन्यासियोंके बराबरहैं मुख्य संन्यासी वे हैं जो दण्डधारण रखतेहैं और सब सम्प्रदायमें दण्डी स्वामी बोलेजातेहैं विशेषकरजो काशीजी व मथुराआदिमें आतेहैं हे श्रीकृष्णस्वामी हे दीनवत्सल हे दीनदयाल हे करुणाकर कबहीं कृपाकरके इसअपने परनाथचेरेकी ओरभी कृपादृष्टि करोगे हेनाथ भलाहूं कि बुरा जैसाहूं आपकाहूं जिस प्रकार लाखों करोड़ों जन्मतक इस मेरे मनने मुझको अपनेवशमें रक्खा है इसीप्रकार कभी मुझकोभी ऐसा करदेव कि मैं मनको अपनेवशमें रक्खूं और आपकरके जो मनुष्यका अपराधोंसेभराहूं पर मेरी ओर देखना क्या उचितनहीं आप अपने बिरदपतित पावनताकी ओरदेखें कि कोटान कोटि महापापी और पातकी एक नामके उच्चारणसे शुद्ध और पवित्र

हुये और होतेहैं औरयह निवेदन मेरी ऐसी नहीं कि जिसका पूरा करना कुछ क्लिष्टहो थोड़ीसीबात यह चाहताहूं कि वह समाज आपका जो आरम्भ ग्रंथमें लिखआयाहूं सदा मेरेमनमें बसारहै स्वर्गमें कै नरकमें कहीं रहूं ॥ कवित्त ॥ बसी रहै शशिछवि ज्यों मनचकोरनके अलिमतिमालती सुमनमें बसीरहै । बसीरहैगजमनरेवाकीरुचिरेणु मोरनकीरुचिघनाघनमेंबसीरहै ॥ बसीरहै श्रीपतिसदनकमलाजू जैसेमदनक्षुधाज्योंयुवायोनिमें बसीरहै । बसीरहै त्योंहींतेरे छबिकी लगनकृष्ण मूरतितिहारी मेरे मनमें बसीरहै ॥ कथा रसखानकी ॥

रसखान जो परमभक्त भगवत्केहुये पहिले मुसलमानथे अपनेपीर केसाथ राहचलते श्रीवृन्दावनमें आपहुंचे तो अनेकजन्मोंके पुण्य उदय हुये अर्थात् श्रीव्रजचन्द महाराजके दर्शनहुये दर्शनहोतेही कुछऔरही दशाहोगई उसरूप अनूपमें छककर बेसुध होकर गिरपड़े उनका पीर उसपीरको न समझा मूर्छा समझकर औषधि करनेलगा और पुकारा आंखेंखोलीं रसखानकी उसीक्षण सबबिद्या व काव्य सबगुणकेखान होगये उसमनोहर मूर्त्तिकी छबि एककबित्तमें बर्णन की अन्तमें कहा कि आंखें क्या खोलूं वहमूरति मनमें बशगईहै पीरनेकहा काबेकोचलो तब बोले कि जोहै सो सबयहांही प्राप्तहै मैंब्रजका होचुका अबकहांजाताहूं और एककबितमें कहाहै कि पत्थरहूं तो गिरराजका जो पशुहूं तो नन्दरायकी धेनुमेंचरूं जो मनुष्य शरीर मिले तो ब्रजके ग्वालबालमेंरहूंगा जो पक्षीहूं तो ब्रजकेवृक्षोंका उनकेपीरने चाहा कि बलसेरथमें डालकर लेजावें वृन्दावनके बनोंमेंभागकर जाछिपे वृन्दावन बासकरिके हजारों कवित्त वृन्दावनकी शोभाकेबर्णन और प्रियाप्रीतमकी शोभाबिहारकी रचनाकरी वैष्णवीभेष रखतेथे मालाबहुत पहिनते थे किसीने पूंछा कि एक दो मालाबहुतहैं इतनीमालाका क्या प्रयोजनहै उत्तर दिया कि माला संसारसमुद्र से पारउतार देतीहै सो जोछोटेपत्थरहैं उनको एकही दो माला बहुत हैं और मैं कि बड़े पत्थरके सदृशहूं मुझको बहुत माला रखनाचाहिये ॥ कथा भगवानदासजीकी ॥

भगवानदास जी रहनेवाले मथुरा भगवत्भजन भावमें दृढ़ व बड़े गुणवान् भगवत्केप्रेमी श्रोता और रहस्य व रसके ज्ञाता भगवत्भक्तों

में सिन्दूर और ऐसे सुन्दर कि जिनके देखनेसे मनको सुखहो और भ-
गवत्के ओंधामेंहैं उनके टहल करनेवाले सबभावकरके श्लाघ्यहुये एक
बेर बादशाहने परीक्षाकेहेतु डौंड़ीको फेरवायदिया कि जो कोई माला
तिलक धारणकरैगा गरदनमाराजायगा इसबातपर बहुतोंने छोड़दिया
पर भगवानदासजी न डरे अपनेअनुगामियों समेत और दिनसे अधिक
प्रकाशिततिलक दोहरीमाला धारणकर बादशाहके सामने जानके आये
बादशाहने बुलवाकर आज्ञा न माननेका कारण पूछा भगवानदासजी
ने अंगीकारकरदिया कि हमारेदीनमें मालातिलक सहित प्राणजायतो
उद्धारहोताहै अब इससमय कि हमको अपनी मृत्युज्ञात होगई तो तिल-
क और माला इसप्रकार धारणकिये कि बिनापरिश्रम उद्धारहो बा-
दशाह यह विश्वास दृढ़देखकर अति प्रसन्नहुआ कहा कि जो चाहनाहो
सो मांगो भगवानदासजी बोले मथुराजी से बाहरजाना नहीं चाहता
बादशाहने लिखदिया कि मथुराकी आमिली जबतक मनचाहै तब तक
करैं सो बहुतकाल मथुराकी आमिली भगवानदासजीने करी हरदेवजी
का मन्दिर और मानसीगङ्गा पोखरा गोबर्द्धनजीमें उनका बनवायाहै ॥

चतुर्भुजजीकी कथा ॥

चतुर्भुजजी राजा करौली ऐसे भगवत् भक्तसाधु सेवीहुए कि उनके दृष्टान्तको कोई राजानहीं मिलताहै भक्तोंके आनेका वृत्तान्त सुनकर इस प्रकारलेनेको आगेजातेथे कि जैसेसेवक व चाकरअपने स्वामीकी सेवामें जाताहै बरकाकर राजा व रानी अपनेहाथोंसे चरणधोते पूजाकरते नगर के चारोंओर चारचारकोसपर चौकीथी कि जो कोई मालाधारीआवै उस का समाचार पहुंचावै एकदूसराकोई राजायह वृत्तान्त भेषनिवाका सुन करकहनेलगा कि केवल अयोग्यकी समझनहीं तो भक्तिकीबड़ाई क्याहै उसकेपण्डितने उत्तरदिया कि मनमेंसमझ लेनेहोंगे राजानेभाटविमुख को परीक्षाकेहेतुभेजा व समझादिया कि मालातिलक धारणकर स्वामी हरिदासजी बनकर राजाके पासजाना वहभाटआया अपने स्वामी का कहनामूलगया भाटोंकी रीतिरैलाई जबअदेख राजातक दृष्टदेखा तब अपनेराजाकी किताबयह कहुई न इसीभांति मैंगया द्वारपालने कुछ-कोक न किया जब सामनेगया तो राजाने अपने स्वभावके अनुकूल

आगतस्वागत सबक्रिया भगवत् प्रसादजिमाया भगवत् चरचा आरंभ किया वहभाट हूं हां करतारहा राजाने जानलिया किसीने परीक्षा को भेजाहै बिदाईदिया और एकडिबिया में एककूटी कौड़ी धरके ऊपरसे कीनखाप व मुसज्जरसे लपटकर ऊपरमुहर छापलगा उसको देदिया भाटजब अपने राजाकेपास आया तो सब वृत्तान्त भक्तिभावका राजा चतुर्भुजका बर्णनकिया व सब बिदाई समेतडिबिया राजाके आगेधरदी डिबिया खोलकरदेखा भेद न पाया तब उसी पण्डितने समझाया कि खुलीबातहै किऊपरभेषऐसा और भीतर भाटहै भक्तिनहीं राजाचतुर्भुज यहीकहताहै वहराजा लज्जितहुआ उसपंडित को भेजा पंडित सत्संग को धन्य मानिगया राजा चतुर्भुज सुनकर आदरसे दण्डवत करलेगया बहुत दिनतक सत्संगका सुखलिया निश्चय जब चलने की इच्छाकरी राजाने भण्डार खोलकरकहा जो इच्छाहो सो लेजाइये पंडितने कुछ न लिया एकमैनापक्षी राजाको प्याराथा राजा साधुसेवीने देदिया मैना लेकर राजाके समीपपहुंचा मैनासभाको भगवत्बिमुख देखकर कहने लगी कि कृष्णकृष्ण कहो जो तुम्हारा उद्धार हो यहसंसार असार व आगमापायीहै बिनाकृष्णभजन किसीप्रकार उद्धार नहींहोगा राजाने सब वृत्तान्त पूछा पंडितने कहा कि एकमैनासे सब समझलेव औ हम करोड़ों मुखसे भक्तिभाव राजा चतुर्भुजका बर्णननहीं करसक्तेहैं राजाको बड़ा बिश्वासहुआ भगवत्भक्ति साधु सेवा अंगीकारकी पीछे जब भाव-भक्ति राजाको होगई तब मैना बिदाहोकर राजा चतुर्भुजकेपास पहुंची राजा बड़ा प्रसन्न हुआ॥

एकराजाकीकथा॥

एकराजा भगवत्भक्त ऐसाहुआ कि संसारके सुखऔर ऐश्वर्य्यकोअनित्य समझकर सदाभगवत्के स्मरण भजनमें रहताथा जिसकोकंठी तिलक धारणकिये देखता भगवत्रूप जानके दण्डवत्करता व धन भगवत्उ-त्साह व भक्तोंके हेतु लगाता व भांड़आदि जो भगवत् बिमुख हैं इनको कुछ न मिलता भांड़मंत्र नाकरसाधों का भेषबनाकर आये राजाने अपने भावके अनुसार पूजन व सत्कारकिया भांड़साज सम्हाल रागनाच व हँसनेका रूप बनानेलगे राजा प्रसन्नहोकर बोला धन्यहै भगवत्भक्तोंको

कि अपने सेवकोंको ढोलबजाकर नाच गायकर कृतार्थ करतेहैं बड़ेआदर पूर्व्वक प्रसाद जिमाया एक थाल में मुहर भरकर विदा के समय आगे धरदिया भांडों ने विश्वास राजा का देखकर और सत्संग जो हुआ तो सब भगवत् शरण होगये॥

गिरिधरग्वालकीकथा॥

गिरिधर ग्वालजी भगवत्में सखाभावरखतेथे और अनुक्षण भगवत् केसमीप और हंसी खेलमें मिलेरहते थे अपने अन्तरके प्रेमको बहुतछिपायेरहते पर भगवत् चरित्रोंको कीर्तनकरते गद्गद वाणी होजाती प्रीति कहां छिपसकती है तब वन में जाकर कीर्तन व नृत्य करनेलगे एकबेर मौज़ेमल्लिपुरामें भगवत्कारासचरित्र कराया व प्रेममें बिवशहोकर सब धनव वस्तु भगवत्भेंट करदी भक्तोंमें ऐसीप्रीतिरही किजिसको साधुभेष देखते भगवत्रूपजानते एकबेर कोईसाधुमरादेखा उसकाभी चरणामृत लिया दूसरे ब्राह्मणोंने यहस्वभाव अयोग्य विचारकर मनाकिया पर न माना उत्तर दिया कि भगवत्भक्त को कबहूं मृत्यु नहीं यह तुम्हारा वे विश्वास है जो मृतक कहते हो और ग्वालपद इस कारण से विख्यात हुआकि सखाहै॥

लालाचार्य्यकी कथा॥

लालाचार्य्य रामानुजस्वामीके जमातमें ऐसेभगवत्भक्त हुए किजिनकी कथासुनकर निश्चय भगवत् चरणोंमें प्रीतिहोतीहै गुरुनेआज्ञादी कि भगवत् भक्तोंमें जितनी प्रीति व विश्वास हो सो अच्छा पर बड़ेभाई से कम उनको न जानना सो उसआज्ञाके अनुकूल वर्तते रहे एक समयकोई माला तिलकधारी को नदीमें बहतेजानेसे निकाल करअपने घरलायेओ बिमान बनाकर भगवत् कीर्तनकरते नदी पर लेजाकर दाहक्रिया करके फिर महोत्सव में ब्राह्मणों सबोंकोनेवतादिया ब्राह्मणों ने अंगीकार न किया कहनेलगे कि इनका कोई नहीं जानै कौन जातिका है तब लालाचार्य्य सुनकर चिन्ताकरने लगे और अपने गुरु के पास गये कि स्वामीरामानुज के पासजाके दंडवतकर सब वृत्तान्त निवेदन किया व स्वामीने कहा कि वे लोग भगवद्भक्तों की महिमा नहीं जानते हैं तुम चिन्ता मतकरो भोजनकी सामग्री बनाओ भगवत्पार्षद वैकुण्ठ से आकर भोजन करेंगे सो उसदिन पर भगवत्पार्षदों का झुंड [illegible] कि

किसीने स्वप्नमेंभी न देखाहो आकर जो प्रसाद बनाहुआथा अतिप्रेमसे भोगलगाया ब्राह्मणोंको पहिले तो आश्चर्य्यहुआ कि ऐसेब्राह्मणकहांसे आयेहैं फेर द्वेषबुद्धिकरके यहमंत्रठहराया कि जब भोजनकरके आवें तो ऐसीहँसीकरो कि लज्जितहों भगवत्पार्षद उनकेकुमंत्रको जानगयेभो-जनकरके आकाशमार्गहोकरचलेगये ब्राह्मणोंने जोयहचरित्र औरप्रताप देखातो बहुतलज्जितहुये औरअहंकारको छोड़कर आयेऔर लज्जाकरके लालाचार्य्य के सामनेआवें बराबरन करसके और पनवाड़े भोजनकिये हुये पार्षदोंके पड़ेथे उनमेंसे सीथप्रसादलेकर खानेलगेफिरलाला चार्य्य के चरणोंमें दंडवत्करके प्रार्थनाकी कि अबहमकोअपनासेवक करोऔर कृपाकरोलालाचार्य्य ने कहाकि तुम्हारे ऊपरतो भगवत्कीकृपाहुई कि भगवत् पार्षदोंके दर्शनतुमको हुये इससेअधिक क्याकृपाचाहतेहोब्राह्म-णोंने बिनयकिया अबहमको लज्जितकरना क्याप्रयोजन अनुग्रहकरना प्रयोजनहै सोसबभगवत् शरणहुये और भगवत्भक्ति और भष निष्ठा काप्रताप सबसंसारमें प्रकाशित और प्रकट हुआ ॥

मधुकरसाहकीकथा ॥

राजाओड़छे भगवत्भक्ति में भी राजाहुये साधुभेषमें अत्यन्तप्रेम व विश्वासथा सचकरके जैसा मधुकरनामथा वैसीही रीतिभी रही अर्थात् भ्रमर सारग्राहीहोताहै वैसेही सारग्राहीथे उनकीरीतिथी कि जोकोई कण्ठी तिलक मालाहो तिसका चरणामृतलेते और परिक्रमा करतेराजा के भाईबंधुओंको यहबात अच्छीनलगी एकगदहेको बहुतसी मालापह-नाकर तिलककरके महलमें भेजदिया राजाउठाउसकाचरण धोकरपरि-क्रमाकरिके कहाकि आजनिहालकरदिया पीछे प्रसाद जिमाकर बिदा करदिया दुष्टोंको लज्जाहुई और बिश्वासहुआ राजानेजोबचन निहाल करनेका कहा तो अभिप्राय यहहै कि मेरेबड़ेभाग्यहैं जोमेरेराज्यमेंगदहे भी मालातिलक धारण करतेहैं जोकोई माला तिलकधारणनहीं करते निसँदेह वेउसका गदहाहै बरु गदहेसेभी बत्तर ॥

हंसप्रसङ्गकी कथा ॥

एकराजाको कुष्टथा औषधबहुतेरी हुई रोग न छूटा किसीवैद्यके कह-नेके अनुसार राजाने ब्याधोंको हंसपकड़नेको मानसरोवरमें जहांरहते

हुमैना जब हंस इनव्याधोंके हाथ न आवैं तबतब साधुकारूप बनाकर यदि हंसव्याधोंका कपट जानजावे गुरूमेपको न मानना भागवत धर्मसे चुरालानकर जानिके पकड़ावेंगये व्याध उनको बन्धमें करिके राजाके पासलाये तबतक भक्तवत्सल महाराजवैद्य बनकरआये नगरके बाजार में अपनी वैदाईकी दूकानअच्छी लगाई फिरराजाके पासपहुंचे राजाने अपनेदुःखका वृत्तान्त और हंसपकड़वा मँगानेका सबवर्णन किया वैद्य महाराजने उनको आश्वासन करकहा कितुम्हाराबहुत शीघ्रदुःख दूरहो जायगा इनपक्षियोंको बन्धनसेछोड़ो बन्दोमें डाररखना कुछ प्रयोजन नहीं कुछऔषधको शरीरपर लगवादिया तुरन्त शरीर निर्मल होगया राजाने तुरन्तआनन्द होकर हंसोंको छोड़दिया राजानेवैद्यके आगेहाथ जोड़कर विनयकिया कि यहराज्य व सम्पति सबआपकाहै वैद्यनेकहा सबकरिके सब हमाराहै अबतुम भगवत्‌भक्ति और साधुसेवा अंगीकार करके मनुष्यशरीर जोकि बड़ेभाग्यसे मिलाहै उसको सुफलकरो फिरतो राजाऐसा भक्तहुआ कि सबराज्यमें भक्तिकी प्रवृत्तिहुई यह हंसप्रसंग समझनेयोग्यहै कि जानवरोंको तो ऐसीभक्तिहो और मनुष्य जोकिज्ञान करिकेयुक्तहै सो विमुखहोवै तो वहमनुष्य जानवरहै कि नहीं और वह नरकगामी होगा कि नहीं॥

—— ※ ——

निष्ठा सातवीं ॥

गुरुकी महिमा वर्णन जिसमें ग्यारह भक्तोंकी कथा॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरणकमलोंकी गोपद रेखाको दंडवतकरके पृथु [illegible] को दंडवत करताहूं कि अयोध्याजी में प्रकट होकर सब धर्मको [illegible] फेरसे नवीनबांधा और धरतीको बराबरकरके सबओषधी नि- [illegible] शास्त्रकाबचनहै कि गुरुतीनहैं प्रथमगुरुपिता दूसरा संस्कारकर्ता कि जिसने यज्ञोपवीतआदि दियाहो तीसरा भगवत्‌मंत्र और भगवत्‌- धर्मका उपदेश करनेवाला और [illegible] [illegible] इनतीनोंमें जो [illegible] और महिमामें बराबरहै [illegible] इनगुरुका वर्णन [illegible] कि जो गुरु भगवत्‌के [illegible] [illegible] जो जानेंगे वह न [illegible] इसबातपर [illegible] कि गुरु और भगवत्‌में कुछभी [illegible]

भागवतके एकादशमें भगवत्का बचनहै कि गुरूकोमेरा रूपजान भक्त-
मालके करताका बचन पहिलेही लिखागया कि भक्त और भक्ति और
गुरू और भगवत् कहनेमात्र कोचारहैं परसत्यकरिकै एकस्वरूपहैं गुरू
कैसाहीकामी क्रोधी लोभी मोही बुद्धिहीन कुरूपहोवे उसकोभगवत्स्वरूप
जाननाचाहिये किसी पुराणमें वर्णनहै कि जो गुरू कामीहै तो श्रीकृष्ण
स्वरूपहै जोक्रोधीहै तो नृसिंह जो लोभीहै तो बामन स्वरूप और जो
धर्मात्माहै तो रामरूप भागवतमें लिखाहै कि जोकोई मनुष्य भगवत्के
ज्ञानदेनेवाले गुरूके अन्यमनुष्यके सदृश जानताहै उसकीबुद्धि हाथीके
सदृशहै कि अन्हायके फिर धूलमस्तकपर डालताहै आजतक न किसीको
देखानसुना कि बिनागुरूईश्वरको प्राप्तहुआहो और बिचारकरनेकी ठौर
है कि प्रकटबिद्या सब बिनागुरूके प्राप्तनहीं होती तो भगवत्बिना गुरू
कैसेमिलैगा महाभारतमें लिखाहै कि जबतक गुरूनहींकरते तबतक कुछ
प्राप्तनहींहोता इसहेतुगुरूकरना निश्चयप्रयोजनहै और आज्ञाहै कि वेद
पुराणशास्त्र जपतपआदि बिनागुरू निष्फलहैं और वेदकी आज्ञाहै कि
बिनागुरू उपदेशके जो पूजाइत्यादि करतेहैं सबव्यर्थहै तो उचितहै कि
जोभगवत् और भक्तिके प्राप्तकी चाहना होतो गुरूकेचरणगहो कोईजातों
में परम्पराहै कि संस्कारहोने पीछे गुरू नहींकरते और कोईजातमें यह
रीतिहै किसंस्कारभये पीछेभगवत् प्राप्तकेअर्थ गुरू अलग करतेहैं सो
ज्ञातहोजाने प्रयोजन व नहींप्रयोजन दूसरे गुरू करनेका व लाभहानि
के निमित्त एकदृष्टान्त स्मर्णहोआयाहै कि अंधेरीकोठरीमें एकसुई सूक्ष्म
हैउसको एक तो इसभांति जानताहै कि निश्चय सुईइसकोठरीमेंहै और
दूसरेकोयह कि वहसुईठीक२जिसजगह दीवारमें गड़ीहुईहैज्ञातहैदोनों
केचेले उससुईके ढूंढ़नेकोगये पहिलेका चेला तो ढूंढ़ता फिरनेलगा मिल
गई तो मिलगई नहींतोहारकर चलाआया जोढूंढ़ता रहगया तो जानै
मिलैकैन मिलै और मिलैतो जानैकबतक और दूसरेकाचेला अपनेगुरूका
पतावतलाये हुयेके अनुसार सीधाचलाआया और बिनापरिश्रम वहसुई
मिलगईऔरयहनहींहोसक्ता कि न मिलैअभिप्रायइसलिखनेसेयहहै कि
संस्कारहोजानेपीछे जबकुछसमझहो तोभगवत्के जाननेवालेकोगुरूनि-
श्चयकरिकैकरै बिनागुरूकुछनहींहोसक्ता औरजोउसगुरूसे भीकुछसंदेह

रहजाय अपनेलाभ व इच्छाकी पूर्णताको प्राप्तनहो तो दूसरागुरुकरतेहैं कुछ हानि नहीं शास्त्रकी आज्ञाहै जैसेदेखो दत्तात्रेयने चौबीस गुरु किये यद्यपिधर्ममेंगुरु और चेलेके शास्त्रोंमें बहुतलिखे हैं परगुरुकेचारधर्मआवश्यकनिश्चयहैं एकतोशास्त्रका जाननेवालाहो दूसरेभगवत्भक्त तीसरेसमदरशीचौथेवेदकी आज्ञाके अनुकूल वर्त्तनेवाला इसकेऊपर एकधर्मसबजगहलिखाहै कि गुरु अज्ञानके दूरकरनेके निमित्तहै तो जिसप्रकारहोसके चेलेको भगवत् सन्मुखकर देवेंऔर इसआज्ञाको आप गुरुशब्दका अर्थनिश्चयकरताहै गुरुजो अज्ञान व अंधकारको दूरकरै वहगुरुहैइसीप्रकार चेलेकेनिमित्त चारधर्मदृढ़हैं प्रथमसेवा गुरुकी तनमनसेकरै सेवाके समय सुख स्वादुकात्याग तीसरे गर्वकात्याग चौथे गुरुमेंदृढ़ विश्वास सो वेदकीश्रुती कहती हैं कि जिसकीभक्ति भगवत् और गुरुमें बराबर हैं तो उस महात्माको सबमनोर्थ आपसे आप प्राप्तहो जातेहैं सो यह विश्वास ऐसाहो जैसे भगवत्भक्तोंको भगवत्में होताहै औरसेवा ऐसी हो कि जिसप्रकार अज्ञानी अपने शरीरकी करतेहैं महाभारतके आदिपर्वमेंलिखाहै कि धूम्र ऋषेश्वरके चारचेलेथे चारोंदृढ़ विश्वास व गुरुकी सेवाकरके केवलगुरुके आशीर्वादसे सब विद्याकेज्ञाता और दोनों लोकके फलको प्राप्त होगये जो यह प्रतिवाद हो कि विना परिश्रम केवल विश्वाससे कैसे सबविद्या इत्यादि लाभहुई तो जानरक्खो कि गुरुमें जो विश्वासकिया तो भगवत्रूप जानकरकिया सो भगवत् ने गुरुद्वारे से उनके मनोर्थ सिद्धकरिदिये व सिवाय इसके कई जगह वर्णनहोता है कि अमुकऋषि ऐसे प्रतापवान थे कि उनकेस्थानमें बकरी व व्याघ्र एकजगह पानीपीतेथे सो व्याघ्रका ऐसास्वभाव होजाना यहप्रभाव उस स्थानकाहै जो व्याघ्रको व्यापिगया इसीप्रकार गुरुकाभी अपने प्रताप के प्रभावकरिके एकक्षणमें चाण्डालपदको पहुंचा देताहै बहुत ऐसाहुआ औरहोताहै औरकुछ अचम्भानहीं कि निर्मलजल कपड़ेके मैलको दूरकर विमल करदेताहै मैलको आशीर्वाद व श्राप शीघ्र व्यापि जाता है इस सिद्धांतसे यहसिद्धहुआ कि गुरु महात्मा योग्य चाहिये और ऐसे गुरु इस समयमें नहींमिलते परंतु ऐसे हैं कि उनको केवल द्रव्य चाहियेइससे प्रयोजनहै चेलाचाहै नरकमें जायके स्वर्गमेंजाय अथवा सातमेंपयाके

और उसपर दुकानदारी फैलाई जो हाथ आगया सो लेगये और जो किसीचेलेने कोईबात अपनेसंदेह निवृत्तिकेहेतु पूछी तो उसके उत्तरका तो कुछठिकाना नहीं और उसको बे बिश्वास व नास्तिक व कथनी कथनेवाला ठहराया व सबसे उसकी निन्दाकहते फिरनेलगे औचेलोंका यहवृत्तान्तहै कि गुरूजीकी शिक्षा ग्रहणकरना और मंत्रको जपना तो कुछ बातही नहीं जो वर्षदो वर्षपर गुरूजी रामभक्त करते पधारें तो मानों यमदूत दिखाईपड़े इस हेतु कि पांच चारदिन रहेंगे भोजन अच्छे लेंगे और बिदाईभी देनीपड़ैगी भला जब इस समयके गुरू चेलों की यह गतिहो तो कहां गुरू व कहां चेला और यहभी जानोकि गुरू बहुत मिलतेहैं पर चेलोंको आँखैं बन्दहैं किउनको देखैं जो थोड़ासाभी परलोक का भय करके भगवत् और गुरू को ढूंढ़ैं तो ऐसा नहीं कि न मिलैं लोकोक्ति है कि जिनढूंढ़ा तिनपाया और जब कि घरसे पांवबाहर नहीं निकलता और परलोक का भय नहीं और न भगवत्की चाह है तो कहांसे गुरू मिलै कि किसी को छप्पर फाड़कर धन नहीं मिलता अब इस लिखने से कोई ऐसा न समझ लेवै कि जब गुरू योग्य मिलैंगे तबही गुरू करेंगे यह समय का वृत्तान्त है निज अभिप्राय इस लिखनेकायहहै कि गुरूनिश्चय करनाचाहिये जैसामिलै केवल इतना देखलेना बहुतहै कि उपासना का जाननेवाला हो और उसकोमंत्र गुरूदीक्षा से मिला हो यहनहीं कि पोथी देखकर मंत्र देदिया चेला बनालिया और गुरू के उपदेश वचनपर दृढ़ बिश्वास हो बस वह गुरू है तिसको हाथोंहाथ संसार समुद्र में उतारदेगा धर्म कर्म उसगुरूके बुरे हों कै भले इसपुरुषको सब धर्मरूप हैं काहेसे इसको बिश्वास दृढ़ है व गुरूरूपभगवत् आपहैं वहीराह दिखाकर दोनोंलोकके अर्थको सिद्धकरदेगा जो बिश्वास न होगा तो कैसाहीमहात्मागुरू हो मिलै कुछलाभन होगा और बिचारलेना चाहिये कि जो मनुष्य भगवत्से विमुखहो उनको तो गुरूके अवलम्बसे ईश्वरमिलसक्ताहै और जो गुरूनकिया अथवा उसके वचनपर बिश्वास न किया तोफिरकहांठिकानाहै बहुधाऐसाहुआ है कि चेलोंकेबिश्वाससे गुरूभी तरगयेहैं कि गुरुभक्तिकोई कोई की इस निष्ठामें लिखीजावेगी उनसे सिवायएक औरबाताहै किसीखत्रीके लड़के

ने अपनेगुरूसे सुना कि श्रीनन्दनन्दन महाराज ब्रजमें नित्यरहतेहैं जो मनलगाकर ढूंढ़ैतो मिलजाते हैं यहलड़का अत्यन्त दर्शनका आकांक्षी होकर ब्रजमेंगया और ढूंढ़ा कुछपता न लगा लोगोंसेपूछा किसीनेकहा गो-लोकमें हैं और किसी ने वैकुंठको बतलाया और किसीनेकहा कि जो ब्रज में हैं तो देखनेमें नहीं आते और किसीनेकहा परमधामको गये इसलड़केको किसीकेवचनपर विश्वास न हुआ और कहनेलगा कि मेरेगुरूकावचन कभी झूठनहीं परमेरे ढूंढ़नेकाआलसहै तब खानासोना सब छोड़कर बेचैनहो-कर ढूंढ़नेलगा जबकुछदिनबीता न खाया न सोया नबैठा जहांतहां फिर-ताहीरहा तो कृपाकर दीनवत्सल प्रकटहुये और कहा कि जिसको तू ढूं-ढ़ता फिरताहै वह मैंहूं यह लड़का रूपमाधुरी और छबि अनूप देखकर चरणोंमेंगिरपड़ा और विनय किया कि कुछ संदेह नहीं आपवहीहैं कि जिसकोमैं ढूंढ़तायापरमैंने सुनाहै कि आपचोर और छलियाभीहैं जबतक मेरेगुरूतुमको पहिंचानकर निश्चयनकरदेंगे तबतक हमको विश्वासनहीं भक्तवत्सलमहाराज उसके प्रेम व विश्वासके वशहोकर कुछ न कहसके साथ होलिये और उसलड़केने छल व कपटके डरसे हाथ पकड़ लिया यहांतुरन्त जहांउनके गुरुरहते आनपहुंचे आधीरातथी गुरूजीशयन करते उसलड़केने पुकारा कि महाराज ब्रजसुन्दर मनमोहन महाराजको लायाहूं आप पहिंचानकरलें दो चारबेरके पुकारनेमें गुरूजीको सुनपड़ा उन्होंने उसको निश्चयसमझा पर जो अनूप अलक व आभूषण शोभाधा-रणों की [illegible] चांदनीसी छिटक रहीथी [illegible] के राहसे देखा तो [illegible] और दर्शनके [illegible] कि [illegible] कि नटनागर [illegible] कि गुरुगोविन्दके [illegible] और [illegible] और [illegible] छूटीहुई [illegible] की [illegible] में काजल की [illegible] कि [illegible] और [illegible] [illegible] कि [illegible] [illegible] और [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible]

रङ्ग दोपट्टाजरीका उसकोकटिमेंकसेहुये हाथोंमेंकङ्कनपहुंची और बाजूबंद जड़ाऊ अंगुलियोंमें अंगूठी घुटन्ना गुलेनारी गुलबदनका कि गोटे और पटुकीगुलकारी उसपरहोरहीहै शोभायमान चरणोंमेंमहाउर लगाहुआ उसपरघुंघरू और कड़े हैं और किसीगोपिका के साथ जोकुछ छेड़छाड़ करीथी और उसने केसरकेछींटे देदियेथे वहमुखारविन्दपर झलकरहेहैं और उसगोपिकाके छेड़नेकी और उससेउत्तरपाने कीहँसी अबतकनहीं गई फूलजहांतहां गुथेहुये हैं और मुरलीफेंटमें बस यहदेखकर गुरूजी बिवशहोकरपुकारे कि अरेतूकिसढिठाईसे हाथपकड़रहाहैयहनन्दनन्दन महाराजपूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघनहैं और मैंभीआताहूं यहकहकरगुरूजी तो आतेहीरहे कि आप नटनागर महाराज उसलड़के सहित अन्तर्द्धान होगये गुरूजीजोआये तो कुछनहींदेखा कभीअपनेऊपरधिक्कार और कभीदर्शनपानेसे अपनेभाग्यको धन्यक[illegible] करिकै अपनेचेलेके विश्वासपरदृष्टि कर त्यागीहोगये व अपनेचेलेके निश्चयके प्रभावकरिकै भगवत्को प्रा[illegible] हुये सो गुरूमेंविश्वास करनाहीं उद्धारका कारणहै ऐसमन मूरख कभीतं उसस्वरूपकीओर तूसन्मुखहो जो ऊपरलिखआया और बिचारकर कि भगवत्चरणकमलोंके बिनाकिसीकोभी कुछप्राप्तहुआहै ब्रह्मादिकदेवत[illegible] तो जिसकेचरणकमलोंकी रजकोअपने धन्यभाग्य समझतेहैं और तू ऐसा असावधान कि कभीउसओर न लगै तो तेरीअभाग्य दशायहहै दूसरी बातनहीं सोतू अबभीसमझ और कृपाकरके उसरूपअनूपका चिंतवन कियाकर कि सबसेपहिले तेरीनाव उसकिनारेपर पहुंचे ॥

पादपद्माचार्य्यकीकथा ॥

पाद पद्माचार्य्यजी परमभगवत्भक्त गुरुनिष्ठ गङ्गाजीकेतटपर गुरू सेवामेंरहाकरते एकसमय गुरूतीर्थको जानेलगे तब पाद पद्माचार्य्यको अपनेबियोगसे बिकलदेखकर आज्ञाकी कि गङ्गाजीकोहमाराहीरूप ध्यान करना पद्माचार्य्यजी गङ्गाजी का पूजनकरते व चरण गङ्गामें नहींरखते कूपजलसे स्नानादिक्रियाकरते दूसरेसाधु वहांथे वेलोगइसबातमें प्रसन्न न थे जब गुरू आये तब सबने निन्दा करी गुरू पद्माचार्य्य के हृदयकी जान गये कि मर्य्याद के भयसे चरण गंगामें नहीं देते पर [illegible] दूर करनेको एकदिन गुरूने गंगामें [illegible]

मांगा पद्माचार्य को इधर गुरुरूप गंगामें चरणदेना ढिठाई उधरगुरु आज्ञा साधना इसी चिन्तामें शोचतेही थे कि कमलकेफूल गंगामें प्रकट हो आये उसीपर चरण देते जाकर अँगोछा दिया व फिर तटपर लौट आये गुरुने यह विश्वास व प्रभाव देख छाती से लगाया व चरण भी पकड़ लिये पाद पद्माचार्य नाम धरा ॥

विष्णुपुरीकीकथा ॥

विष्णुपुरी ऐसे भगवत् भक्त हुये कि भागवत धर्मके आगे और सब धर्म असार समझते थे श्रीमद्भागवत जो समुद्र है तिसमें से श्लोकरूपी अमोल्य रत्नों को निकाला और कलिके जीव इसधनके दरिद्रहैं तिनको निहाल करदिया यह विष्णुपुरी जो माध्व संप्रदा में श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु के चेलेहुये जगन्नाथपुरी में बात चले पर दूसरे साधोंने प्रतिवाद किया कि मुक्तिहोने के हेतु काशीपुरी में टिके हैं श्रीकृष्ण महाप्रभुजीने उत्तर दिया कि उनको न मुक्ति से प्रयोजन है न किसी देवता से न काशी से सिवाय श्रीकृष्ण चरण कमलों के किसी ओर भूलकर भी उनके चित्त की वृत्ती नहीं जाती केवल सत्संगके अर्थ काशीमें टिके हैं पर लोगोंने न माना तब महा प्रभुने विष्णुपुरी से रत्न की माला के भेजने के हेतु चिट्ठी भेजी विष्णुपुरी जीने हृदय की समझकर भागवत समुद्र से पांच सो श्लोक रूपी रत्नचुनकर और भक्तरत्नावली नाम रखकर अपने गुरु को भेजा साधोंने जो देखा पढ़ा भक्ति रस में मग्न होगये विश्वास हुआ कि विष्णुपुरीजी परम अनन्य भक्तहैं तैसेही गुरु निष्ठामें हैं जाने रहो भक्त रत्नावली के तेरहे अध्याय में अलग अलग क्रम से नवधा भक्ति वो ज्ञान वैराग्य का बर्णन है ॥

कथा पृथ्वीराज की ॥

पृथ्वीराज कछवा हैं आमेर के राजा ऐसे भक्तौ गुरुनिष्ठ हुये कि घर बैठे द्वारकानाथ महाराजके दर्शनपाये और शंखचक्रका छाप शरीर पर प्रकट हुआ और कृष्णदासजी की कृपासे मंत्रहूं व उपासना के ज्ञाता होगये भीष्मपितामह के सदृश निष्काम व युधिष्ठिर के सदृश धर्मात्मा व पूजा करनेवाले प्रहलाद के सदृश हुये जैसे चेले कृष्णदासजी के हुये सो कृष्णदासजी की कथामें कहा है पृथ्वीराज ने जब

कृष्णदास जी के साथ द्वारका जाने की इच्छा व सजाव सब किये तब राजमंत्रियों ने कृष्णदास जी से बिनय किया कि राजाके जाने से इस देशमें भक्तिका प्रकाश बढ़ता जाता है सोघटतीहोने लगैगी कृष्णदास जीने अपने राज्यपर रहने की आज्ञादी राजाने बिनय किया वा उदास होकर बोले कि एकतो आपके चरणका संग दूसरे द्वारकानाथ का दर्शन गोमती का स्नान व भगवत् शस्त्रोंका चिन्ह प्राप्त होने का लाभ था सोअब मैं उनलाभों से बिमुख होताहूं कृष्णदासजीने आज्ञा कीकि शोच करना कुछ प्रयोजननहीं वह सब तुमको इसी जगह प्राप्त होजायगा यह कहकर चलेगये राजा साथके वियोग से धारधार रोने लगा तीन दिन बीतेथे अर्द्धरात्रि के समय राजा ने कृष्णदास जी का पुकारना सुना दौड़कर गया देखा आप द्वारकानाथ महाराज हैं प्रेम में विवश हुये दण्डवत् परिक्रमा करी फिर आज्ञापाकर गोमतीमें स्नान किया शरीर पर शंख चक्रके चिन्ह अंकित होगये रानी भी राजा की आज्ञा से गोमती में स्नान करके कृतार्थ होगई प्रभात को यह वृत्तान्त सारे संसार व देश देशमें फैला नगर के लोग व जहां तहां के सन्त महन्त दर्शनों के लिये भेंट नानाप्रकार की आगे धरे गुरुभक्ति व भागवत भाव का बिश्वास दृढ़ हुआ पीछे राजाने मन्दिर बनवाया मूर्त्तिविराजमान करके दिन रात सेवा पूजामें रहने लगा एक अन्धा ब्राह्मण बैजनाथजी के द्वार पर सूझने के लिये पड़ा रहा बहुतदिन बीते तब शिवजीने दया करके कहा कि पृथ्वीराजका अँगौछा आँखो पर मलदे खुलजायँगी ब्राह्मण आया राजाने नवीन अँगौछा अपने शरीरपर लगा करदिया कि तुरन्त आँखेंखुल गईं ॥

तत्वाजीवा की कथा ॥

तत्वाजीवा दोनों भाई ब्राह्मण पद्मनामदेश जो कमल के सदृश है तिसको प्रफुल्लित अर्थात् भक्त करनेको सूर्यके सदृश हुये अथवाभगवत् भक्ति जो अमृत का समुद्र है तिसके दोनोंतट हुये जिनके प्रभावकरिकै लाखों को भगवत् भक्ति प्राप्ति हुई रघुकुल वालोंके सदृश भये एक लकड़ी सूखी द्वारपर गाड़े थे व प्रणथा कि जिसके चरणामृत से यह लकड़ी हरी हो जावै उसको गुरू करैंगे सो कबीरजी के चरणामृत से

हरी होगई कबीर जी के चेला हुये कबीरजी चलते समय कहगये जब प्रयोजन पड़े तब हमको स्मरण करना तिसके पीछे ब्राह्मण व उनके सगोतियों ने जुलाहे के चेला होनेसे उनको जाति से निकालदियाऔर उनकी लड़की का व्याहलेना अंगीकार न किया चिन्तामें होकरसंदेशा गुरू के पास कहलाभेजा कबीरजी ने उत्तर भेजदिया कि यह लोग भगवत् से विमुख हैं तुम्हारे सम्बन्ध योग्यनहीं तुमलोग दोनों भाई आपसमें अपने लड़कोंका सम्बन्धकरलेव उस आज्ञाके अनुसार इच्छा को किया सबघबराये और सबने एकट्ठे होकर दोनों भाइयों से कहा कि ऐसी रीति उचित नहींहै उत्तर दिया कि हमको सिवाय गुरू की आज्ञाके अपने दूसरा कुछ करना अंगीकारनहीं है वे सबलोग इसविश्वासके वश होगयेफिरइस बातके बन्द करनेको विनयकिया तबदोनों भाइयों ने कबीरजी से जाकर कहा तब कबीर जी ने आज्ञा की कि जो वे लोग भक्ति अंगीकार करें तो करो चिन्ता नहीं सो उन लोगों ने भगवत् भक्ति स्वीकार करी तब नातेदारी होने लगी जब सब ने भक्तों का समाज व प्रभाव भक्ति का देखा तब सब भगवत् शरण होकर कृतार्थ होगये ॥

॥ खोजी की कथा ॥

खोजीपरम भगवत् भक्त और गुरू निष्ठ हैं उनके गुरूने एकघंटा स्थान में लटका दिया था,वो चेलों को समझा दिया रहै कि हम जब परमधाम को जावेंगे तब यह घंटा बजेगा जब गुरूने देहत्यागातोघंटा न बजा चेलोंको चिन्ता हुई खोजी वहां उससमय न थे जब आये तो सुना तब जिस जगह गुरूने देह त्याग किया लटकर देखातो एक आम पका लगा है उसको तोड़कर टुकड़ा किया तो देखा कि एक कृमि उस में है और उसी समय वह कीड़ा मरगया और घंटा बजा सब को निश्चय हुआसो इसमें गुरूने चेलोंको एक उपदेश कर दिया कि अन्तकाल में जहां मन लगेगा सोई होगा गीताजी में भगवत् वचनहै तिस को निश्चय कराया ॥

॥ गुरुनिष्ठकी कथा ॥

एक गुरुनिष्ठ भगवत भक्त ऐसे हुये कि गुरुके सिवाय दूसरे साधु सन्त की सेवा नहीं जानना गुरु की इच्छा यहहुई कि साधों की भी सेवाकरें तो अच्छी बातहै परन्तु परीक्षा इस बातकी कि यथा करें व

न करें कह नहीं सके यह परीक्षा बिचारी कि जब वहतीर्थ को जाने लगा तब उससे कहा कि जब तुम आवोगे तब एक बातकहकर शिक्षा करेंगे तीर्थ करके जिस दिन वह पहुंचने को था तब गुरू ने प्राण छोड़दिये लोग जलानेको लेगये तबतक गुरुनिष्ठ पहुंचा सुनकर रोता दौड़ा लोथको रोंकाकि हमारे गुरूका वचनहै जबतीर्थ कर आवेगा तब कुछ शिक्षा कहूंगा सो वचन मेरेगुरूका मिथ्यानहीं नितान्त किसीप्रकार गुरूके शरीरको फेरलाकर सिंहासनपर धरायके बिनय किया कि अपने बचनको पालन करिये मेरीआशा लगीहै गुरूजी उसके बिश्वासपरअति प्रसन्न होकर जीकर उठबैठे साधु सेवाके निमित्त शिक्षा करी गुरुनिष्ठने बिनय कियाकि आपतो परमधाम कोजातेहैं मेरीसाधु सेवाकौन देखैगा गुरूइस बचन वो चतुराई से प्रसन्न होकर एकबर्ष औरजीते रहे ॥

कथा घाटमकी ॥

घाटमजात के मीना रहनेवाले गांवघोड़ी राज जयपुर के गुरूभक्ति व बचनके निश्चय से उत्तम पदको पहुंच और कृतार्थ होगये ठगीका रोजगार करते थे कुछ मनमें बिबेक आया किसी हरिभक्त के पास गये उसने शिक्षा किया चोरीठगी छोड़देव घाटम ने कहा मेरी जीविका यही है हरिभक्तने कहा उसके बदले चारबात अंगीकार करो १ एक सत्य बोलना २ दूसरी साधु सेवा ३ तीसरी भगवत् अर्पन किये पीछे कुछ चीज खाना ४ चौथी भगवत् आरती में जा मिलना सुनतेही चारोंबातों को अंगीकार किया तब हरिभक्त ने घाटमको भगवत् मंत्र उपदेशकरके चेला किया घाटम गुरूकी चारों बातोंपर अभ्यास रखतेरहेएकदिनघर में कुछ न था साधुआगये खलिहान से किसीके गेहूं चुरा लाकर साधु सेवा को कियापर सेवा करते में कुछ डर मनमें होजाताथा कि पतालगाकर गेहूं वाला आकरपकड़ न ले नहींतो साधों की सेवामें बिघ्नहोगा सो आंधी पानी ऐसी आई कि पता पांवका सब मिटगया सुचित्त होकर सेवाकिया एकसमय गुरूने भगवत् उत्साहमें घाटमको बुलाया उस समय साधु सेवा के करनेसे कुछ पास न था चिन्तामें हुये राजा के मकान पर आये डेवढ़ी दारोंने पूछा तब उत्तर दिया चोरहूं घाटम मेरा नाम है वे लोक पहिराव उत्तम उनका देखकर जान गये कि हँसी

की राह अपने को चोर कहताहै कुछ न बोले घोड़सार के भीतरजाकर एक उत्तम घोड़ा मुशकी रंग चुन करके सवार होकर चले द्वारपर द्वार-पालोंने रोंका फिर उसी प्रकार सांच सांच कह कर चले आये गुरू की ओर चले संध्या के समय एक नगर में किसी ठाकुरद्वारेमें आरती होती थी वहां गये भजन करने लगे राजाके यहां उस घोड़ेकी ढूंढ़ पड़ीकोत-वाल बहुत सिपाहियों सहित घोड़े के पांव का पता लगाताहुआ उसी मन्दिर के द्वारपर जहां घाटम आरती में थे पहुंचा भगवत् भक्त वत्सल महाराज को चिन्ताहुई कि यह कोतवाल घोड़े को पहिचानकर मेरे भक्त को दुःख देगा इस हेतु घोड़े को नुक़रारंग करदिया वो घाटमजब सवार होकर निकले तब कोतवाल देखकरलज्जित व शोच में भरगया कि घोड़ा वही पर रंग दूसरा अब राजा जाने हमें कैसा दण्ड करैगा घाटम जीने उनसे वृत्तान्त सबसुनकर दयाकरके बोले कि वह चोरमें हूं और यह घोड़ा भी वहीहै भगवत् इच्छासे यह रंग होगया मेरी रक्षा के हेतु सो चिन्ता न करो घोड़े समेत तुम्हारे राजाके पास में चलता हूं यह कहकर राजाके पास आये राजा सब वृत्तान्तसुनकर चरणपरपड़ा और रुपया मोहर सब देने लगा घाटमजी ने कहा घोड़े से प्रयोजन है और कुछ न चाहिये राजाने और कुछ सहित घोड़ा घाटमजी को भेंट किया घाटमजी ने वह सब लेजाकर गुरूजीको भेंट करदिया कुछसं-देह नहीं किया भगवत् भक्तिकाऐसाही प्रतापहै सो आपगीतानीमेंभग-वत् ने कहा है कि किसीके आचार दुष्टभीहैं पर मेरा भजन ऐसाकरता है कि दूसरेको कदापि नहीं जानता उसको निस्संदेह साधु जानना चाहिये काहेसे कि जो निजतात्पर्य्य और सारान्श शास्त्रों का है उसको वह पहुंच गया है व निश्चय करि के बुरे आचरण भी उसके शीघ्रछूट जावें गे और मुझको प्राप्त होगा और अर्जुन सचजान मेरे भक्तका कभी नाश नहीं होता ॥

नरवाहनकीकथा ॥

नरवाहनजी राजाचलभी रहने वाले भोगांव के हित हरिवंश जी के चेले भगवत् भक्त साधु सेवी परम गुरु निष्ठ हुये एक साहूकारकी नावको लूटलिया और उसको और धनको लेने के हेतु बंधन में डारा नरवाहन जीकी लौंड़ी दयावान थी उस वणिक को खाना पहुंचाया

करती उसने उसको यह उपाय बतलायाकि आधीरात के समयराधा-वल्लभ हित हरिवंश राधावल्लभ हित हरिवंश पुकार पुकार कहता जिसमें नर वाहन के श्रवण में पहुंचे और जब कुछ पूछें तो हित हरिवंशजी का चेला अपने को कहना उसने वैसाही किया नर वाहन जी सुनतेही नाम राधावल्लभ और हित हरिवंश जीके बेसुधि दौड़े साहूकार को दण्डवत् करके वृत्तान्त पूछा उसने कहा कि हितहरिवंशजी का चेलाहूं और राधावल्लभ जीका बिना मोलका चेराहूं नर वाहनजी लज्जितऔर ग्लानि युक्त हुये और सब धन उसका फेरदिया और अपने अपराधको क्षमाकराया व चरणोंमें पड़कर बिनय किया कि तुम बड़े भाईहौ मुझको अपना दास जानकर इतनीमेरी पालना करोकि यहवृत्तान्तस्वामीजीतक न पहुंचे वह साहूकार यह दशा नर वाहनजीकी देखकरउसी घड़ीभग-वत् के शरण हुआ और हितहरिवंशजी के पासआया और चेला होकर भगवत् भक्त होगया गोसाईंजी भी नरबाहनजी के निश्चय पर बहुत प्रसन्नहुये अब यहां एकप्रतिबाद यहखड़ा हुआ कि एककथा तो घाटम की लिख आये किवहचोरी किया करताथा यह नरबाहनजीकी लिखी कि ठगथे तो क्या भगवत् भक्त चोरी और ठगी को पापनहीं समझते उत्तर यहहै कि भगवत् भक्त निश्चय करिके चोरी और ठगीको पापकर्म समझते हैं औरऐसे कर्मों के निकट नहीं जाते भगवत् भक्तों के बराबर संयमी कोईनहीं और यह चरित्र जो घाटमजी से वा नरबाहनजी से हुआतोचोरीमें नहीं गिनाजाता चोरी वहहै जो अपने शरीरके हेतुहोय औरउससे लड़केवालोंका खाना कपड़ाचलता हो अबऔर शंकाउत्पन्न हुई कि इस लिखनेसे चोरी करना अच्छा कर्म ठहरा कि लोगोंका धन भले लूटाकरै औरशंख झांझबजै साधुसेवा कियाकरैं उत्तर यहहैकि कदा-चित् चोरी करके साधु सेवा करनी उचित नहीं सुकृत के धनसे साधु सेवा करनी उचित है और अभिप्राय मेरायहनहींथा कि जोकुछ समझ कर शंका करदिया तात्पर्य यहथा कि जब अन्तष्करण की निर्मलता प्राप्त होतीहै और यह सन्सार अनित्य दिखाई देनेलगा और द्वैतताका आवरण उठगया उस समय जो कर्म भक्तोंसे होतेहैं वहसब अच्छे है जोचोरी व ठगी करैंतो उस दोषमें वहभक्त दंडके योग्य नहीं होता

निश्चय इसका गीताजीके अध्याय पांचवें व श्लोक सातवेंसे अच्छेप्रकार होता है और घाटम की कथा भी निश्चय करानेवाली है कि भगवत्ने पांवके चिन्ह दूर करने निमित्त केआंधी और मेंह बरसादिया और घोड़ेका रंग कुसकी से सुपेद करदिया और अपने भक्तके कर्म धर्म व पुण्यरूप समझ कर उसके पक्षपरहुये सिवाय इसके सब धर्मकर्म भगवत् भक्ति की प्राप्तिके अर्थ हैं जिस कामसे भगवत् भक्ति हो वह चोरीमें गिनती नहीं बरु जैसे अन्य साधन सब हैं तैसे हैं सो घाटम व नरवाहन दोनों से प्रसन्नता भगवत् औरगुरूकी हुई जो वे लोग चोरवोठग होतेतो भगवत् कब प्रसन्न होते सिवाय इसके समर्थ को कुछ दोषनहीं होता जिसप्रकार गंगाजी में सब प्राकरजल मिलकर गंगाजल और प्रज्वलित अग्निमें सब वस्तु अग्नि होजातेहैं तो जान रखना कि साधुसेवायह परम धर्म है कि उसके निमित्त भगवत् भक्तोंने निज भगवत् का आभूषण उतार कर बेंचडाला है दूसरे कर्म की कौन बातहै बरु आप भगवत् साहूकार बनकर अपने भक्तोंके हाथसे ठगी करातेहैं और उसचरित्र से प्रसन्न और संतुष्ट होते हैं कि निश्चय इसका हरिपाल निष्कंचन की कथा से होताहै प्रीति सांची और बिश्वास दृढ़ उचित है घाटमके बिश्वासको देखनाचाहिये कि कैसे गुरुके वचन पर स्थिर वो सच्चेथे कि प्राणका भी लोभ न किया और नरवाहनजी के विश्वास को देखना चाहिये कि अपनेगुरू व इष्टका नाम सुनकर तीन लाख व तीस हज़ारका धन फेरदिया और अपने आपको भक्त के दुःख देने व सताने का अपराधी समझानितान्त अर्थ यह कि भगवत् भक्ति में विश्वास होना सब सुकर्म से शिरोमणि है सिवाय इसके एक यह है कि जिस अपराध से बाली और रावण भगवत् के करसे निकाले गये और बधको प्राप्तहुये सोईअपराध सुग्रीव और बिभीषणसे हुआ पर वे भक्तिके प्रताप से महाभागवत और भगवत् सखाओं में गिने गये तो भगवत् भक्ति का यहप्रतापहै कि सब अपराध उलट के पुण्य होजाता है ॥

गजपतिकी कथा ॥

गजपति राजा पुरुषोत्तम पुरीके भगवत् भक्त हुये गोसाईं श्रीकृष्ण चैतन्य अपने गुरू में ऐसा विश्वास दृढ़ रखते थे कि जब दर्शन करलेते

तब राज्य काज किया करते एक दिन गुरू गोसाईंजी ने उनको दर्शन करनेको आना बर्जित किया राजा संन्यासी रूप होकर दर्शन के हेतु इधर उधर फिरने लगा पर दर्शन न पाया एक दिन रथ यात्राकेसमय देखा कि रथके आगे गोसाईंजी नृत्य कररहे हैं दौड़ के चरणोंमें पड़ा गोसाईं जीने राजा का प्रेम वो बिश्वास देख कर छाती से लगा लिया व प्रेम आनन्द में मग्न कर दिया॥

चतुरदासजीकी कथा॥

स्वामी चतुरदास परम भक्त व बैराग्यवान हुये भगवत् भजन के आनन्द में मग्न रहकर सदा भगवत् के रंग में रँगे रहतेथे मथुरा और ब्रजमण्डल में फिरते हुये ठौर ठौर सत्संग के सुखको लेतेरहे गुरुभक्ति में ऐसे हुये कि कोई न होगा उनके गुरू सदा घर पर आया करते भगवत् रूप जानकर सेवा पूजा किया करते स्त्री स्वामीजी की नव यौबना व रूपवती थी उसको गुरू की सेवा में तत्पर करदिया कि जो आज्ञा होसो सम्हारना और आप अपने धर्म पर ऐसे दृढ़ रहे कि कभी बिश्वास में तनक भेद न आया नितान्त सब सामग्री और धन व स्त्री गुरु की भेंट करके दंडवत करके आज्ञा से ब्रजमंडल में आये प्रभात की मंगल आरती के दर्शन गोबिन्द देवजी के किया करते और शृंगार आरती केशवदेवजी की औ राज भोग नन्द गांव का देख कर गोवर्द्धन जी में राधाकुंड पर होते हुये वृन्दावन में आते एक बेर नंदगांव में मानसरवर पर बे अन्न जल रहे सो नन्दगांव के स्वामी नन्द बाबा हैं सत्कार पथिक लोगोंका कि जो उनके स्थान पर आवें उनहींपर उचित है इस हेतु नन्दजी के कुमार सुकुमार भक्तवत्सल महाराज अपने मेहमान को बिन अन्न जल न देख सके बारह बर्ष के लड़के के स्वरूप से दूध लेकर कटोरे में स्वामी चतुरदास को दिया स्वामी चतुरदास ने उस रूपके फिर देखनेके लालच जल मांगा जबबहुतदेर तक वहनिडर चंचल लड़का पानी न लाया तबबहुत बेचैन व बिकल हुये भगवत् ने स्वप्न में आज्ञा की कि पानी का कुछ प्रयोजन नहीं तुमको दूध सबब्रज बासियों से मिलता रहैगास्वामी ने बिनय किया कि दूध ब्रजबासियों को बड़ा प्यारा है कि यशोदा जीने दूध के हेतु आपको छोड़ दिया था

फिरफिरवह लोगदूध किसप्रकार देंगे भगवत्‌ने आज्ञा की कि निश्चय कर मिलैगा सो स्वामी चतुरदासको दूध सब कोई देने लगे और अब तक स्वामीके वंशमें चेलेजहां चहैं ब्रजमें तहां दूधलेते हैं सत्य है गुरु सेवा से कौनपदार्थनहीं मिलता है॥

राघवदासकी कथा॥

राघवदास जी परम भक्त भगवत् के हुये अपनी रचना में अभोग दुबरिया रखते थे इसहेतु लोग दुबला कहते थे पर भक्ति भाव में मोटे व महन्त थे शास्त्रोक्त जो भगवत् धर्महै सो साधना अच्छे प्रकारसे की और गुरू चेलेका धर्म ऐसा निवाहा जो किसीसे न होसके अर्थात् वायु पुराण में लिखा है कि जो मंत्र है वहही गुरूहै और जो गुरू है वही भगवत् है जब गुरू प्रसन्न होगा तो भगवत् आपसे आपप्रसन्न व वशी भूत हो.जावैगा सो राघवदासजी ने अपने गुरूकी ऐसी सेवा करी कि गुरू और भगवत् को संतुष्ट करलिया और जिसको अपना चेलाकिया उसको आवागमनसे छुड़ाकर भगवत् में मिलादिया और अन्तर बाहर ऐसे बिमल हुये कि कलियुगकी काई समीप न आई दिन रात सिवाय भगवत् चरित्र कीर्तनके दूसरा कार्य्य न था कठोरवचन कभी मुखसेन निकला नाभाजीने जो दृष्टांत उनकेनिमित हीराका लिखासो अभिप्राय यहहै कि जिसप्रकार हीराको अहरनपर रखकर घन मारतेहैं और वह टूटता नहीं उसअहरनमें धसि जाताहै जबदूसरा हीराउसका सजाती सन्मुख करते हैं तो अहरन से निकल आता है इसीप्रकार राघवदास जी थे कि पवन सरदी व गरमी दुःख व सुख संसार का उनके हृदय को चलायमान न करसका और सत्संग को देख इस प्रकार आमिलते थे कि जिसप्रकार हीरा अपने सजातीको देखकर आमिलता है॥

निष्ठा छाठवीं॥

प्रतिमा व अर्चा के वर्णन में पन्द्रह भक्तों की कथा है॥

श्रीकृष्ण स्वामी के चरण कमलों की गंख रेखाको दण्डवत् करके फिर हंसअवतार को दण्डवत् करताहूं कि ब्रह्मपुरीमें प्रकट होकर ब्रह्मा को उपदेश किया शास्त्रों का सिद्धान्त है कि भगवत् की प्राप्ति के

हेतु भगवत्‌ही की पूजा अर्चा जप मंत्र आदि साधन हैं और पूजाअर्चा बिना उसके कि जिसका पूजन करना चाहिये नहीं होसक्ती और बिना पूजा अर्चा भगवत् की प्राप्ति दुरूह है इसहेतु करुणा कर दीनवत्सल महाराज को यहशोच हुआकि मेरी प्राप्ति जो मेरी पूजा के ऊपर सिद्धान्त ठहरा तो बिना प्राप्ति के पूजानहीं होसक्ती तो उद्धार जीवों का किसप्रकार होगा तब आप भगवत् ने जिसप्रकार भक्तों के हेतु-अवतार धारण किये थे और करता है उसीप्रकार प्रतिमा रूप होकर इस संसार में प्रकटहुआ सो बारह प्रतिमा जैसे बद्रीनारायण व रंग-नाथ स्वामी व गोबिन्द देवजी आदि स्वयं व्यक्ति हैं व जगन्नाथराय जी व बरदराज आदि कई प्रतिमा ब्रह्मा व शिवादिक देवताओंकीस्था-पित की हुई हैं और कोई मुनीश्वर व ऋषीश्वरोंकी स्थापितहैं जबइन मूर्त्तियोंसे भी भगवत्‌ने सब किसीको प्राप्त न देखा तब शालग्राम रूप होकर प्रगट हुये कि अधिक करके सबको प्राप्त हो पीछे जब यह देखा कि यहभी सब किसी को प्राप्त नहीं है तब आज्ञा की कि सोने चांदी और पाषाण आदिकी प्रतिमा बनाकर और वेदमंत्रोंके अनुकूल प्रतिष्ठा करकेपूजन करें और सब प्रतिमाओंके पूजन और दर्शन में चमत्कार दिखाया कि जिसने अनन्य होकर आराधन किया सिद्ध पदको पहुंच गया और यहांतक करुणा और दयालुता को बिस्तार किया कि जो कोई चित्र लिखवाकर औ भगवत् जानकर पूजन करता है भगवत्‌को प्राप्त होताहै सो इस भगवत् बिग्रह पूजन दर्शनको भक्तोंने कई प्रकार पर मानाहै कि कोई तो उस प्रतिमाको निज स्वयं भगवत्‌की प्रतिमूर्त्ति जानकर इस प्रकार पर पूजन करते हैं कि पहले मानसी पूजन और फिर उस मूर्त्ति का और किसीका यह विश्वास है किउस प्रतिमा को पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द घनमानते हैं मानसी पूजन आदिका कुछ प्रयोजन नहीं और तीसरे यूथ का यह बचन है कि बास्तव मूर्त्ति उस सच्चिदानन्द घनकी लोगों के ध्यान में शीघ्रनहीं आयसक्ती इसहेतु मुख्य भगवत् स्वरूप में इस मनके जमजाने के निमित्त इस मूर्त्ति का दर्शन और पूजन करते हैं औ सबकोई अपने बिश्वास व निश्चयके अ-नुसार मनोर्थ को पहुंचते हैं सो जब कि यहबात प्रगट होगई कि आप

भगवत् ने जगत्के उद्धारके निमित्त अपना रूप प्रतिमा स्वरूपसे प्रकट कियाहै तो अत्यन्त उचित हुआ कि भगवत् विग्रह को ईश्वरजान कर दृढ़ विश्वास से दर्शन और पूजन कियाकरैं हजारों और करोड़ों का उद्धार प्रतिमाओं के विश्वास के प्रभाव से हुआ और होता है भागवत का वचन है कि मुकुन्द भगवानकी मूर्त्ति का दर्शन और उसमूर्त्तिके दर्शन करने वालेका मिलना अथवा मूर्त्ति के चढ़े हुवे फूलोंका सूंघनाओर तुलसी दलका खाना और भगवत् मन्दिरमें जाना और दण्डवत्करना यह सब भगवत् लोकको प्राप्त करते हैं नारद पंच रात्र में लिखाहै कि शालग्राम जी का स्नान जिस बर्तन में कराया जाताहै उसका सातवीं बेरका घवन गंगाजल के बराबर का महात्म्य रखता है सो महात्म्य दर्शन आदिका इसीसे बिचारिलेना चाहिये कि कितना होगा पर यह पूजन आराधन भगवत् मूर्त्तिका कुछ ऐसी सहज बात नहीं है कि राह चलते उत्तम पदको पहुंचायदेवै अर्थात् बहुत कठिन है--क्याबातहै कि शास्त्रों के अनुसार भगवत् एक व्यापक और ब्रह्म स्वरूप है जबतक अन्य विश्वास को और भांति भांति के शंका संदेह और मनकीकचाई को हृदय से दूरकरके निज उसमूर्त्ति में मन न लगेगा तब तक किस प्रकार मिलना भगवत् का होसक्ता है और वह मन ऐसालगै कि दूसरीओर न जाय और न दूसरे की शरण का भरोसा होवे एक बार्त्ता है कि एक कोई अर्थार्थी को भगवत् पूजन से धन न मिला तो किसी के उपदेश से भगवत्मूर्त्ति को ताख में रखकर दुर्गा मूर्त्तिका पूजन करनेलगे एक दिन यह बिचारा कि धूपजो दुर्गा को देताहूं पहिलेभगवत्को पहुंचती होगी इस हेतु भगवत् प्रतिमा के नाक में रुई भरने लगा उस क्षण भगवत् प्रसन्नहुये और बोले कि जो चाहना हो सोकहो उसने बिनय किया कि पूजासे कबहीं प्रसन्न न हुये और इस ढिठाईसे बहुत कृपायुक्त हुये इसका क्या कारणहै बोले कि जब तू पूजन करता रहा तब पत्थरकी मूर्त्ति जाना करता था और इस समय सब ओर से मनको खींचकर भगवत् मूर्त्ति को पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घन जाना इस हेतु प्रसन्न हुये एक बाई की कथा है कि गुजरात में भगवत्मूर्त्ति की आराधन वात्सल्य भाव से करतीथी जहां रहती रही उस गांव में

भेड़ियों की प्रबलता हुई और कई लड़कोंको भेड़िये उठा लेगये यह सुनकर इसबाई की सुधिगई और मूसल हाथमेंलेकर सारीरात जागने लगी बहुत दिन यह दशा रही कि दिनको भोग व रसोई व शृंगार में भगवत् के रहती व रातको रखवारी में भेड़ियेकी भगवत् को बड़ी करुणाहुई और साक्षात् प्राप्तहुये बाई ने जो धुनि झम झमाहट घुंघरू आदि आभूषण की सुनी तो मूसल उठाकर दौड़ी देखा कि कोईलड़का श्याम सुंदर मोहनी रूप है पूछा कि तू कौनहै उत्तर दिया कि मैंवही ईश्वर परमात्माहूं कि जिसकी मूर्त्ति को तू बालक जानकर आराधन करतीहै सो जो तुमको चाहनाहो मांगो बाई प्रसन्नहोकर बोली कि तू ईश्वर है तो यह बर मांगती हूं कि इस मेरेलड़केको भेड़िया न लेजाय वाह २ बाई यशोदा के कौशल्यारूप तात्पर्य्य यहकि निश्चय दृढ़भगवत् मूर्त्ति में इसप्रकार का हो कि जो आप भगवत् प्रकट होकर आवें तब भी अपना इष्ट उस मूर्त्ति कोही समझता रहै और जो दूसरी ओर मन गया तो प्रेम कहां और स्त्री को जिसप्रकार दूसरे पुरुष की शोभा वर्णन करना बर्जितहै इसी प्रकार अपनी सेवा मूर्त्ति की बराबर और किसीकी शोभा मनमें न लावै कि मूर्त्तिकी पूजा प्रकारमें यहबात लिखी है और जिसप्रकार कोई सेवक अपने स्वामीको प्राणसे अधिक जानता है और सबप्रकारकी सामग्री बनाकर बार बार उसके आगे धरता है इसी प्रकार अपनी सेवा मूर्त्तिकी सेवा उचित है जैसे ग्रीष्मऋतु है तो टट्टी या खसखस और पंखा औ सुगन्ध औ पानीका छिड़काव और मन्दिर हवादार औ फूल औ बस्तु अलंकार उत्तम चमक दमक वाले बना करके एक दिन में कई बार भगवत्का शृंगार करै और इसी प्रकार वर्षा ऋतु और जाड़े की ऋतुमें सामग्री सब उस ऋतुके अनुकूल किया करै अर्थात् जो कुछ अपने प्राण औ सुख और अपनी शोभा के हेतुजो सजाव औ बनावट सामग्री औ शृंगार की बस्तु हर प्रकार की और खाने पीने के पदार्थ इत्यादि की बार्त्ता है उसमें दश गुणित भगवत् के निमित्तकरै और जिसदिन कोई त्योहार जैसेहोली औ दिवाली औ दशहरा औ बसन्तपंचमी आदि अथवा सांझीका समय या सावनके महीने में हिंडोरा झुलाने के चरित्र औ भगवत्जन्म उत्साह जैसे राम-

नौमी औ जन्माष्टमी औ नरसिंह चतुर्दशी वामनद्वादशी इत्यादि अथवा तीर्थ और व्रत का दिन होय ऐसी धूमधाम के साथ उत्साह औ शोभा की सजावट इत्यादि कियाकरै कि जिसप्रकार अपने लड़केके विवाहमें अथवा पुत्रके जन्महोनेके दिन किया करतेहैं कहांतक वर्णन कियाजाय कि यह बात अपनेहृदय की प्रीतिसे सम्बन्ध रखतीहैऔर भगवत्कृपा भाग्यके उदयसे होतीहै यह उत्सव और देशमें स्वप्न प्राय व आश्चर्य है दक्षिणमें अथवा मथुरा वृन्दावन व अयोध्याजीआदि में है एक कोई गोसाईं वृन्दावनीने एक कोई कामवालेके स्थानपर देश पंजाबमें बसंत पंचमी के दिन फूलडोल बनाया वेश्या सब जो कारदारके घरपर उस त्योहारके इनामके लिये आईं तो उसने गोसाईंजीके संकोचवश राग न सुना और बिदा करदिया गोसांईजी ने कहाकि भगवत् के सामनेराग क्यों नहीं होता कारदार ने पूछा कि क्या भगवत् के सामने भीवेश्या कानाच राग होता है गोसाईंजीने कहा कि जो भगवत् नाच और राग के प्रेमी न होतेतो संसारमें यहफैलने क्यों पावता जो कुछ सुख आनन्द का साज व समाज गुप्त व प्रगट की आखों को जहां तक देखने में आताहै सब भगवत् के हेतु है कि मूल सब कार्य्यों का भगवत् से है सोलह उपचार जो पूजनका विख्यात है सो भगवत्मूर्त्ति और मानसी पूजन के निमित्त बराबर हैं भेद इतना है कि मूर्त्ति पूजनके निमित्ततो सामग्री प्रकट करनी पड़तीहै और मानसी पूजन के निमित्त मनमेंसब सोलह प्रकार में पहिले आवाहन सो आवाहन उस देवता का करना पड़ता है कि जिसकी कभी कोई दिन पूजा करनाहो और भगवत् पूजन का आवाहन इतनाही मानते हैं कि प्रभात अपने स्वामी को जगाना और दण्डवत करना और श्लोक व पद जगानेका पढ़ना गान करना दूसरा आसन सिंहासन पर बिछावना सुन्दर बिछावना और मन्दिर की झाड़ू बहारी करनी तीसरा पाद्य भगवत् का चरणअँगोछेसे पोंछना अर्घ हाथ मुंह धोलाना पांचवा आचमन दतवन कुल्ली करना छठवां स्नान कराना अँगोछे से शरीर पोंछना धोती कछाना सातवां वस्त्र अलंकार से भूषित करना आठवां यज्ञोपवीत स्वर्ण का अथवा पाटका केसूत्र का पीला रंगकर पहिराना नवां गन्ध अर्थात् सुगन्ध जैसे चन्दन और

केसरव कस्तूरी व अतरइत्यादि लगाना दशवांपुष्प अर्थात् फूलभगवत् के मुकुट और झूमक आदिमें गूथना और माला फूलोंकी बनाना ग्यारहवां धूप अगर आदिकी धूमको देना बारहवां दीप दीपक गोघृत कर्पूरादि से प्रकाशित करना तेरहवां नैवेद्यअर्थात् सबप्रकारके पवित्रमधुर भोजन कराना व आचमन कराना जल पिलाना कुल्ला कराना हाथ धुलाना अँगोछेसे हाथमुंह पोंछना बीड़ी बनाकर देना चौदहवांद क्षिणा अर्थात् भेंट आगे धरना पन्द्रहवां नीराजन अर्थात् आरती करनी प्रदक्षिणा करना अर्थात् अपनपो को वारिजाना और पुष्पांजलि देना अर्थात् फूलऊपर बखेरना शोलहवां बिसर्जन और यहां अभिप्रायबिसर्जन से यह है कि पलंग व तोशक बिछौना व तकिया चादर व दुलाई आदि सजना अतर पान व कुछ भोजन के पदार्थ व पीने के पलंग के समीप रखदेना औरनशयके समय भगवत्का चरण पलोटना जानेरहो कि इस सोलह प्रकार का आराधन जैसे जगन्नाथरायजी व बद्रीनारायण जी अयोध्या व रंगनाथ व वृन्दावन में नित्य सातबेर होता है और कोई जगह पांचबेर और बहुत जगह तीनबेर अर्थात् एक प्रभात काल मंगल आरती द्वितीय मध्याह्नकाल राजभोग तृतीय सायंकाल नियत आरतीसो पूजन और दर्शन करनेवालेको सातबेर आराधनअति प्रयोजन है नहीं तो तीनबेर से कम न हो और जानेरहो कि तंत्र शास्त्र व पुराणों के बचन के अनुसार जो मूर्ति स्वयंव्यक्त जैसे बद्रीनारायण व रंगनाथ स्वामी व गोविन्ददेव इत्यादि शालग्राम मूर्ति व पुष्कर व निम्बखार आदि तीर्थ हैं वे बारह बारह कोशतक शुद्ध व पवित्र करतेहैं और जो मूर्तिकी देवताओं ने स्थापित किया वे चार चार कोशतक और जिन्हें ऋषीश्वर और सिद्ध लोगोंने बिराजमान किया वे दोदो कोश तक और जो मूर्ति दूसरे लोगोंसे शास्त्र बिहित मंत्रोंके अनुसार स्थित हुई वे एक एक कोश तक और जो मूर्ति केवल घरमें बिराजमान करलेते हैं वे उसी घरको पवित्र और शुद्ध करती हैं भगवत् ने कृपाकरके सब सामग्री को इस जीव के उद्धार के हेतु बनायदिया कि किसीप्रकार मन चरणारबिंद में लगे पर कोई ऐसाकर्मकठोर और न करे आगेआये रहे हैं कि ऐसे सुगम मार्गपर भी मननहीं लगता कोई नगर और ग्राम

नहीं कि वहां भगवत् मन्दिर और ठाकुर द्वारा न हो परन्तु पुजारी के सिवाय क्या बात है कि कोईदर्शनों के निमित्त जावें विशेष करके धनवान और उनमें भी नौकरी करने वाले घूमने और देखने शोभा चकले के हेतु जहांतक कोई लेजावै हजारमन और चरणों से चले जायँ और जो कोई ठाकुरद्वारे के चलने को कहै तो मानो दम निकल गया है और घूमते फिरते जो राहमें कोई मन्दिर आजायतौ यहकहैं कि अजीसंध्या होगई अवकाश नहीं फिर किसी समय दर्शन करेंगे और जो घुनाक्षर न्याय कभी जाने का संयोग होभी गया तो सारे संसार के झगड़े औ बकवाद डिगरी डिस मिस आदि की बातें वहां स्मरण हो आई जब तक बैठे रहें यहीबात रही कौन बातहै कि एकबेर भगवत् नाम मुख से निकलै वरुजो दूसरा कोई भजन करता होयतो उसको भी अपनी ओर सावधान युक्त करलें यह वृत्तान्त कुछ सुनाही नहीं है आंखोंकी देखीहै कहांतक लिखूं कि ग्रंथके विस्तार भयसे और अप्रसन्न होने उनलोगोंके कि जो मेरेलिखे को अपने ऊपर समझा लेवें व्यापमान है उनमेंपहिले गणना इस मतिमन्दकी है सो क्या वर्णन करूं कि कर्मतो ऐसेसुन्दर और कामना वह कि निश्चय परम धामको जावेंगे क्यों न सद्गति होगी अरे मन पापी अबभी लजावो ध्यान करके देखकि मनुष्य शरीर बार२ नहीं मिलता न जाने कौन पुण्यसे यहशरीर मिलाहै इसदेहको पायके श्रीनन्द नन्दन स्वामीके चरणकमलोंमें न लगा तो तुझसे अधिक और कौन भाग्यहीनहै बहुतरुपया उत्पन्न करना झूठ सच बोलकरलोगों को वशीकर लेना तुलसी दासजीने कहाहै कि यहढंग वेश्यावोंकोभी अच्छे प्रकारआताहै और जो यहशरीर संसारसे विषयभोगहीके निमित्त समझ रक्खाहै तो शूकर और कूकर व गर्दभ आदिको भीसबसुख विषय भोग के प्राप्त हैं मनुष्य शरीर और उन शरीरोंमें इतनाभेदहै कि इसशरीरके प्रभावसे भगवत् की प्राप्ति होतीहै जोभगवत् चरणोंमें मन लगातो शूकर और कूकर आदिसेभी अधिक अधर्मीवपापीहै क्योंकि उन शरीरोंमें आगेके निमित्त पाप नहींलगतां केवल अगिले पापों को भोगते हैं और मनुष्यको जो नहीं करते भगवत् भजनके हजारों पाप मूड़पर चढ़तेहैं तोइसले अब तुमको उसरूप अनूपकाचिन्तवन करना उचित है॥

कवित्त॥

मोर पखाशिर ऊपर राजत केशरखौर दिये रचिभालहि।
अंजनसंदोउ रंजितकीन्हे जुखंजनकंजसेनयन बिशालहि।
गोल कपोलनपै कल कुण्डल रूप अनूप प्रतापरसालहि।
रेमनमंद अनन्दकोकंद तूक्योंनभजै नँदनन्द गोपालहि॥१

राजाचन्द्र हास्यकी कथा॥

राजा चन्द्रहास्य बालपने से ऐसे भगवत् भक्तहुये कि महाभागवतों में गिने गये और अबतक उनका यश चांदनी की भांति शास्त्रोंमेंलिखाहै च्यवनअश्वमेध में लिखाहै कि मेधावी नाम राजा केरलदेश के घरजब चन्द्र हास्य का जन्महुआ तो एक पांवमें छः अँगुलीथीं कि सामुद्रिक में अप लक्षण लिखे हैं जन्मसे थोड़ेही दिन बीतेपर कोई शत्रु चढ़ आया और मेधावी उस लड़ाई में मारागया चन्द्रहास्य की माता सती होगई और धाय उनको लेकर कुन्तल पुरमें चली आई कुन्तल पुर के राजाके वज़ीर का नाम धृष्टबुद्धि था उसके घर रहने लगे फिर वहां धाय भी मरगई और चन्द्रहास्य जी अनाथ पांच वर्षके नगरमें फिरने लगे जो कोई कुछ देता उसीसे उदर पालन कर लेते एक दिन नारद जी आये एक शालग्राम जी की प्रतिमादेकर आज्ञा कीजो कुछ भोजनआदि करो सो इस प्रतिमा को दिखला लेना चन्द्रहास्य जी उस मूर्तिको मुख में रखते और नारदजी की आज्ञा के अनुकूल बर्तते रहे थोड़े दिनमें भगवत् की प्रीति होगई एक दिन उस वज़ीरके घरमें ब्रह्मभोज में ब्राह्मण आयेथे उसने ब्राह्मणों से पूंछाकि मेरी लड़की को बर कौन और कैसा मिलेगा उन्होंने चन्द्रहास्य जीको बतलाया कि यह लड़का इसकापति होगा वजीर को बड़ीग्लानि आई कि हाय मेरी लड़की दासी पुत्र की भार्य्या होगी बध करनेवालों को बुलाकर कहाकि इसलड़के कोजंगल में लेजाकर मारडालो वे सब जंगल में लेगये और वज़ीरकी आज्ञासुना कर कहाकि अब तुम्हारा रक्षक कौन है चन्द्रहास्य जी को तनक शाच व चिन्ता अपने बधकी न हुई और कहाकि एकघड़ी मेरे बधमें धीरधरो पीछे शालग्राम जी का पूजन किया और बधिकों को संज्ञा बधकरने को करके भगवत् ध्यानकी समाधि को लगाय [illegible]

भगवत् [illegible]

रक्षक महाराज ने उन बधिक निर्दइयों के हृदय में ऐसीदया डालदी कि एक अंगुली अधिक जो रही वज़ीरके दिखलानेको काटलेगये और चंद्रहास्य जी को उसी जंगल में छोड़गये चंद्रहास्य जी तीन दिन- तक भगवत् ध्यान में मग्न और आनंदित फिरतेरहे जिससमय धूप लगती तो पक्षीअपने परोंसे छायाकरते और रात्रिके समय व्याघ्रादिक उनकी रक्षाके निमित्त चौकी देनेको आते संयोगवश कलिंद नामे राजा चन्दनावती नगरी का शिकार खेलता उस बनमें आया चन्द्रहास्य जी को अपने घरलेगया उसके कोई लड़का नहीं था इन्हीं कोअपना बेटा जानकर सब विद्या पढ़ाकर युक्त किया और पीछे राज्यतिलक देकर सम्पूर्ण राज्यभार सौंपदिया और आप भगवत् भजन करने लगा यह राजा कलिंद कर देनेवाला राज्य कुंतलपुर का था जब समय पर कर न पहुंचा तो धृष्टबुद्धि वज़ीर सेना सजिके आया राजा कलिन्द सुनकर मिलनेके निमित्तगया बड़ी रीति मर्य्याद से नगरमें लाया चंद्र- हास्यजीसे भेंट कराई और राज्य देनेका वृत्तान्त सबकहा वह धृष्टबुद्धि चन्द्रहास्य जी को पहिंचान कर बड़ेशोच में होकर मारने के उपाय में हुआ और यह उपाय सूझा कि चंद्रहास्य जी को कुंतलपुर में भेजकर वहां मरवा डालना चाहिये इस हेतु राजा कलिंद को डरपाया कि तुमको उचित नहीं था बिना हमारे राजा की आज्ञा चंद्रहास्य को राज्यतिलक कर देना अब चन्द्रहास्य को अपने मदन नामापुत्रके नाम के पत्र सहित कुंतलपुर भेजताहूं कि वह राज्यतिलक अंगीकार करा- देगा सोचंद्रहास्यजी पत्रीसमेतचले और कुंतलपुरके निकट उसीवज़ीर के बागमें ठहरे स्नानपूजा करि भगवत् प्रसाद भोजन करिकै पथिश्रम सेसोगये संयोगवश उसी वज़ीरकी लड़की विषयानामा बागकी शोभा देखने को आई सखियोंसे अलग होकर जहां चंद्रहास्य जी सोतेथे तहां पहुंची चंद्रहास्यजी की शोभा देखतेही तुरंत आशक्त होगई और भगवत् से प्रार्थनाकी कि यह पुरुषमेरा पतिहोवै फिरजो निगाह उस- की चंद्रहास्यजी के कमरकी ओर गई तो एक पत्री कमरमें देखकर निकाललीं और पढ़ा अर्थ उसका यहथा किहे मदन मिट्ठीलानेवालेको तुरंत विषदेना जो विलम्ब होगा तो हमारे क्रोधका हेतु होगा वज़ीर

की लड़कीने पढ़कर शोचकिया कि हाययह महबूब मनोहर वृथा बिन अपराध माराजायगा और फ़िर यह बिचार किया कि मेरा बाप बहुत दिनोंसे सुन्दर पुरुषके ढूंढ़नेमें मेरे निमित्तथा और चलतीबेरबहुत शीघ्र बिवाह करदेनेका मुझसे बचन देगयाथा सो इसपुरुषको मेरे निमित्त भेजाहै और जल्दीभी लिखाहै इसहेतु अक्षर (या) जोबिषके पीछेलिखना था सो भूलगया सो अक्षर बनादेना चाहिये सो अपनी आंखोंके काजल की स्याहीसे बनाकर पत्री चंद्रहास्यजीकी कमरमें रखकर चलीआईचंद्र हास्यजी मदनके पासपहुंचे और पत्रीदी वह बहुतप्रसन्नहुआ और उसी घड़ी चंद्रहास्य का बिवाह अपनी बहिन के साथ करदिया जब वज़ीर ने अपनेबेटेके पत्रसे यहवृत्तांत सब जानातो अत्यंत खिन्नमन व क्रोधयुक्त हुआ और दुःखसेदुःखीहो उसीक्षणचलके अपने घरआयाअपनेलड़केको धिक्कार आदि कहनेलगा मदन उसके लड़केने उसकी पत्री आगे धरदी और अपना कुछ अपराध नहीं जो लिखा सोकिया वज़ीरने अपने मनमें यह निश्चयकियाकिलड़की बिधवाँरहैतोरहै पर चन्द्रहास्यकावधकरना उचितहै इस हेतुबध करनेवालों को बुलाकर आज्ञादी कि प्रभातसमय जोकोई दुर्गाभवनमेंआवै उसको मारडालना और चन्द्रहास्यजीसे कहा कि हमारे कुलमें बिवाहके पीछे दुर्गापूजन उचितहै तुम प्रभात दुर्गा पूजनकर आवो वज़ीर दुर्बुद्धीने तो यह उपायरचा और भगवत् की यह इच्छाभई कि कुन्तलपुर का राज्यभी चन्द्रहास्यजी को मिलजावै इसहेतु कुन्तलपुर के राजाके मनमें ज्ञानदिया कि राज्य और शरीर दोनों नाशवानहैं और भगवत् भजनसे अधिक दूसरा कोई काम नहीं आता सो यह राज्यतो वज़ीरका लड़का चन्द्रहास्य जोकि लायक और योग्यहै देना चाहिये और जो कुछ बयक्रम शेषहै सो भगवत् भजनमें लगाना उचितहै प्रभातको जिस प्रकारसे चन्द्रहास्य दुर्गा पूजन को चले तो राजाने मदन जो वज़ीरका लड़काथा उससे बुलाकर कहा कि हम राज्य तिलक चन्द्रहास्यको देतेहैं उसको शीघ्रलाओ वहइस आनंद से कि राज्य अपनेघरमें आताहै शरीरमें न समाया और चन्द्रहास्य जी के पासआकर उनको तो राजाके पास भेजदिया और दुर्गाभवनमें पूजा करने को गयाराजाने चन्द्रहास्य जी को तुरन्त राज्यतिलक कर दिया

मदन नाम वज़ीरका बेटाजब दुर्गाभवन में पहुंचा तो मारागया और वज़ीर मदनका माराजाना सुनकर शिरपर धूल डालता हुआ उसके शरीरके पास पहुंचकर पत्थरसे शिर मारकर मररहा यह वृत्तान्त चन्द्रहास्य जीने सुना औदुर्गा भवनसे आकर दया और करुणासेविकल होगये पीछे उन सब के जीने के हेतु दुर्गा जी की स्तुति की जब कुछ उत्तर न पायातो तरवार निकालकर अपनेको घातकरने को उद्यतहुये दुर्गा महारानी प्रकटहुईं हाथ पकड़ लिया और कहाकि धृष्टबुद्धि सठ दुष्ट सदा तुम्हारे मारनेके उपायमें रहताथा कि उस कर्मके फलसे पुत्र सहित मारागया अब जिलादेना उचित नहीं चन्द्रहास्यजी ने विनय किया कि सत्यहै पर आपको यहभी तो सामर्थ्यहै कि उनके मनको निर्मल करके भवगत् भक्तकर देवैं कि फिर किसीके साथ दुष्टता न करै दुर्गामहारानी प्रसन्नहुईं दोनोंको जिलादिया वज़ीरने जोप्रताप भगवत् भक्ति और भक्तोंका देखातो विश्वास युक्तहुआ और चन्द्रहास्य जी के चरणोंमें बड़ी प्रीतिसे गिरकर भगवत् शरण होगया चंद्रहास्य जीने तीनि सौवर्ष राज्यकिया भगवत् भक्तिका प्रचार चलाया कि सब देश भक्त होगया जब राजायुधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया और घोड़े को चंद्रहास्य जीने पकड़ लिया तो भगवत् श्रीकृष्ण महाराज ने समझा कि भक्त को कोई जीत न सकैगा तब अर्जुनसे मेल कराके घोड़ा छुड़ादिया पीछे चंद्रहास्यजी अपने बड़े पुत्रको राज्यतिलक देकर आप राजा युधिष्ठिरके यज्ञमें आनिमिले अब विचार करना चाहिये कि कैसी शिक्षा भक्तोंके निमित्तहै पहिले तो प्रतिमा निष्ठाका फल दूसरे यह कि भगवत् भक्त मृत्युसेभी नहीं डरते तीसरे यह कि कोई कठिन आपत्ति के आनेपर भी भगवत् भजन नहीं छोड़ते चौथे यह कि कोई उनकेसाथ दुष्टता करताहै उसको भी सुखही देतेहैं सिवाय इनके यह बात तो विदितहै किभगवत् अपनी प्रसन्नतासे अधिक मानतेहैं सो चंद्रहास्य जीसे आपयज्ञके घोड़ेको छुड़ाया जायके मेलकराया बलको कुछ न चलने दिया नहीं तो एक क्षणमें करोड़ों ब्रह्मांडको सृष्ट और लय करसकतेहैं ॥

कथा नामदेवकी ॥

नामदेव चेले ज्ञानदेवजी के विष्णु स्वामी संप्रदा वाले संसार में

भक्तिकी प्रकाश करनेको सूर्य्यके सदृशहुये बालपन में अपने भक्तिभाव से भगवत्को बशकर लिया भगवत् अंशसे उनका जन्महै उसका वृत्तांत यहहै कि पांडरपुर में बामदेव नामे जातिका छीपी भगवत् भक्त था उसकी लड़कीबाल बिधवा होगई जब बारह वर्ष की हुई तो बामदेवने भगवत् सेवा पूजनकी शिक्षाकरके कहा कि जो हृदयकी प्रीति होगी तो तेरा सब मनोर्थ व चाहना भगवत् पूरण करदेगा उस लड़की ने उसी दिनसे अति भक्ति व विश्वाससे ऐसी पूजा अंगीकार करी कि थोड़ेही दिनोंमें भगवत् प्रसन्न होगये यहां तक कि जवानी के आने से जो उसको चाहना कामकी हुई तो वह भी भगवत् ने पूरणकरी और उस लड़कीके गर्भरहगया सारसंसार व जाति भाईमें यह बातविख्यात हुई और लड़कीसे पूछा कि यह क्या अभाग्यता तेरीहै उसने कहाकि तुमने कहाथा कि सबचाहनातेरी भगवत्से प्राप्तहोगी सो जो कुछहुआ वह भगवत्से हुआ बामदेव इससुख समाचारसे ऐसेआनंदहुयेकि शरीर में न समाये और जब लड़का उत्पन्न हुआ तो सब धन संपत्तिको उसके जन्म उत्सवमें लुटादिया नामदेव नाम रक्खा और प्राणसेअधिक प्यारा जाना व विश्वासी व और अयोग्योंके शंका व संदेहदूरकरनेके हेतु पुराणोंकी कथा आदिसे अलग भगवत्का बचन स्मरण होआया भागवतके दूसरे स्कंधमेंलिखाहै किनिष्काम अथवा कामना अथवामुक्तिके हेतु मुझ कोदृढ़भावसे जो सेवन करतेहैं तो आपमें सब कामनापूरणकरताहूं एका दशमें लिखाहै कि अपने भक्तोंको मुक्ति पर्य्यंत सबदेताहूं संसारीकामनाकी तो कितनी बातहै और इसको अलग रहने देव जब कि भगवत् अपने भक्तोंके हेतु अपना निजधाम छोड़करके चले आते हैं और ऐसे शरीर बनालेतेहैं कि जो बुद्धि व बिचारमें न आसके तोगो किसी अपने भक्तकाम सुखकीचाहना करनेवालेकी कामना पूरणकरीतो क्याआश्चर्य है जो भगवत् के अवतार व गोपिका वो कुब्जा आदि के चरित्रों पर विश्वास है तो नामदेवका जन्म होना निज भगवत्से सर्वथा सच और युक्तहै कथा संक्षेप जन्महीसे नामदेव जीको भगवत् का प्रेमहुआ जब दो चार वर्ष के हुये तो खेल भगवत् आराधन के खेलतेअर्थात् भगवत् मूर्ति बना कर आभूषण वस्त्र पहिनाकर जिस प्रकार उनका नानासेवा

आरती किया करता था तब यह कहता था कि यह भगवत् मूर्ति मुझको दे देव और वह बालक जानकर वहाना करदिया करता एकदिन कहा कि मैं किसी गांव जाता हूं चार दिन में आऊंगा तुम सेवा पूजा कीजियो जो भगवत् ने तुम्हारा भोग लगाना अंगीकार कर लिया तो सेवा तुमको सौंपदेंगे नामदेवजी बहुत प्रसन्न हुये और दिन गिनने लगे नानासे नित्य जाने का दिन पूछा करते और बहुत अपने मनमें आनन्द हुआ करते जब वह दिन आया उनका नाना सब रीति भगवत् सेवा की समझाकर चलागया नामदेवजी को संध्याही से प्रेम हुआ और जब गऊ के आने में बिलम्ब हुआ तो आप बन में जाकर लाये फिर माता ने अनुसासन किया कि दूध पिलाने का समय आगया इस हेतु दूध बहुत शीघ्रता से उष्ण किया और सुगन्ध व मिश्री मिलाकर बड़े प्रेम और उत्साह से कटोरा भगवत् के आगे लेगये पर यह डर मनमें रहा कि मुझसे कुछ अपराध न होगया हो भगवत् के सामने हाथ जोड़ कर बड़ी दीनता से विनय किया महाराज दूध है मुझको अपना दास जान कर पान कीजिये और अपने दास को परम आनन्द दीजिये दूध न पिया नामदेवजी लड़के थे यह बात जानते थे कि भगवत् भी जैसे सब लड़के दूध पिया करते हैं पीते हैं इस हेतु भगवत् के चुप रहने से बहुत उदास हुये और सामने से अलग होकर बहुत शोच करने लगे जब निराश हुये तो रोने लगे और कहा कि महाराज अच्छे प्रकार गरम कियाहै मिश्री बहुत डालीहै जब न पियेतो रोतेरोते बिना भोजन किये भूखे प्यासे पड़े रहे इसी प्रकार दो दिन बीते तीसरे दिन कि उनके भोर उनका नाना आने वाला था यह विकलता हुई कि दूध न पियें तो सेवा मुझको न मिलेगी इस हेतु दूध बनाकर सामने लगये कई बार विनय किया नहीं माने तब छूरी निकाल कर अपना गला काटने पर उद्यतहुये भगवत् ने जो यह दृढ़ विश्वास देखातो एक हाथसे उनका हाथ पकड़ लिया और दूसरे हाथ से कटोरा दूध का उठाकर पीने लगे जब कटोरे में दूध थोड़ा रहा तब नामदेव जी ने कहा नित्य भर भर कटोरा पीते हो मैं तीनि दिन का भूखा हूं कछु भी तो छोड़ो भगवत् ने वह अपना अधरामृत युक्त महा प्रसाद दिया निश्चय रक्कन्ध

पुराण का बचन है कि भगवत् न काष्ठ की मूर्ति में हैं न पाषाण की न दूसरी जगह केवल इस पुरुष के बिश्वास में बिराजमान हैं इस हेतु बिश्वास दृढ़ चाहिये और को नामदेव जी का नाना जब आया तब सब वृत्तान्त सुना तो परम आनन्द से मगन होगया और कहा कि हमको भी तो दिखलाओ नामदेव जी उसी प्रकार कटोरा दूध का सँवार कर लेगये कुछ बिलम्ब हुआ तो वही चाकू दिखलाया कहा कि मेरे पासहै भगवत् ने तुरन्त पान किया वाह वाह भगवत् वत्सलता और प्रेमकी रिझवारता कि जिसको वेद नेति नेति कहते हैं और शिवादिक जिस हेतु भांति भांति की समाधि लगाते हैं वह अपने भक्तों की भक्ति और प्रीति के ऐसा बशमें है कि उनके मनोर्थ के अनुकूल सब कुछ करताहै इस बात की ख्यात होगई बादशाह ने बुलाकर कहा कि तुमको ईश्वर मिला है सो हमको भी दिखाओ अथवा अपनी सिद्धाई दिखादेव नामदेव जी ने कहा हमारे में सिद्धाई होती तो छीपीकी अजीविका क्यों करते और दिन भरते जो कोई साधु सन्त आजाता है आधसेर आटा बांट खाते हैं कि उसके प्रभाव करके आपने बुलालिया है बादशाह बोला कि तेरी कपट की बातें कुछ नहीं सुनते गऊ मरी है इस को जिलादेव नहीं तो तुम को कतल करदेंगे नामदेवजी ने एक विष्णु पद बनाया पहिला तुक यह है ॥ विनती सुन जगदीश हमारी ॥ तुरन्त सुनतेही उस विष्णु पद के गऊ जी उठी और बादशाह चरणों में पड़ा कहा कि द्रव्य व गांव परगना जो आज्ञा हो नामदेव जी बोले कि हमको कुछ प्रयोजन नहीं बिदामात्र का प्रयोजन है बादशाह ने एक पलँग सोने का जड़ाऊ भेंट किया उसको मूंड़पर रखकर चले और बादशाह के भृत्य लोग जो साथ आये थे सब को बिदा करदिया राहमें एक नदी थी उसमें पलँग को डाल दिया बादशाह ने सुन कर उसी पलँग को मांग भेजा इस बहाने कि उस नमूने का बनवाया जायगा नामदेव जी ने उस पलँग से उत्तम उत्तम पलँग अगणित नदी से निकाल कर डाल दिये और आदमियों से कहा कि अपना पहिंचान कर लेजाव तब तो बादशाह की बुद्धि गई आकर चरणों में पड़ा नामदेवजी ने कहा कि फिर किसी साधु का क्लेश न देना और न कभी हम को बुलाना एक दिन पण्डर

पुरके ठाकुरद्वारे में दर्शन को गये बड़ी भीड़ लोगों को देखकर दर्शन में दुचिताई रहे यह विचार करके जूती कमर में बांध कर मन्दिर में गये संयोग वश किनारा जूती का किसी ने देख लिया मारते मन्दिर से बाहर करदिया नामदेव जी मन्दिर के पीछे बैठ रहे और भगवत् से विनय करी कि दण्ड किया तो उचित किया पर मुझको आपके सिवाय कुछ ठिकाना नहीं और न कुछ चाहना है जो दर्शन और लोगों को है तो कान मेरे कीर्तन की ओर हैं यह विनय करिके कीर्तन करने लगे और विष्णुपद व्यंग लिये और अपनी हिनाई को भी गावा पहिली तुक यह है ॥ हीन है जाति मेरी यादव राय ॥ भगवत् सुनतेही करुणा से विह्वल होकर मन्दिर को नेड़ से फेरि के द्वार उसका नामदेव जी की ओर करदिया यह चरित्र देखकर सब चकित होरहे और महन्त आदि ने चरणों में पड़कर अपराध क्षमा कराया अब तक द्वार उस मन्दिर का दक्षिण मुंह है एक दिन अचानक नामदेव जी के घर आगि लग गई तो जो वस्तु घरसे अलग थी आग में डालने लगे और विनय किया कि सब को अंगीकार करिये भगवत् बहुत हँसे और कहा कि क्या आग में भी मुझको जानता है कहा कि यह घर आपका है दूसरा कौन स्पर्श कर सक्ता है भगवत् ने प्रसन्न होकर आप नवीन छप्पर ऐसा सुन्दर छादिया कि किसी ने न देखा था लोगों ने पूंछा कि कि किसने यह छाया है और मजूरी क्या लेता है और नामदेव जी ने कहा मजूरी बड़ी कड़ी है अर्थात् तन मन चाहता है औ पहिले यह मजूरी ले लेताहै तब दिखाई देता है पण्डरपुर में एक साहूकार ने तुलादान किया सारे नगर में सोना बहुत बांटा किसी के कहने से नामदेव जी को भी बुलाया नामदेव जी ने दो बार कहला भेजा हमको द्रव्य का प्रयोजन नहीं तीसरी बार गये साहूकार ने कहा कि कुछ थोड़ा आप भी अंगीकार करें कि मेरा भला होय नामदेव जी ने मन में शोचा कि इसका गर्व धनका दूर होगा तब भला होगा इस हेतु एक तुलसीदल पर (रा) अक्षर कि भगवत् का नाम है लिख कर उसके बराबर सोना मांगा पहिले साहूकार ने जैसे बलि बावन जीसे कहा उसीप्रकार बोला पीछे घर काय औरों से मांग मांग कर धरा बराबर न तुला तबलज्जित

हुआ नामदेव जी ने बिचारा कि धन का गर्व तो दूर हुआ पर पुण्य इसने किया है तिसका गर्व दूर किया चाहिये बोले कि जो तूने अपनी अवस्था भर पुण्य किया है सो भी संकल्प कर दे क्या जानें बराबर होजाय साहूकार ने वह भी संकल्प कर दिया जब तराजू में बराबर न तुला तो संकुचित होकर कहने लगा कि जो है सोई ले जाव नामदेव जी बोले अरे अज्ञानी यह धन हमारे कौन काम का है एक भगवत् भक्ति धन चाहिये कि जिसके आधीन सबदेवता और सब ऐश्वर्य्य दोनो लोक के हैं साहूकार लज्जित होकर बिश्वास युक्त भगवत् भक्त होगया इसके पश्चात् भगवत् ने एकादशी ब्रतकी परीक्षा के हेतु एक अति दुर्बल ब्राह्मणके रूपसेआय नामदेवजीसे भोजनमांगा उन्होंने एकादशी ब्रत जानकर नदिया ब्राह्मण बोला भोजनबिना अब मेरा प्राणनिकला चाहता है शीघ्र भोजन देव नामदेवजी कहैं किआज एकादशीको नदेंगे इसी हठाहठी में दोनों झगड़ पड़े शोर गुलहुआ लोग बटुरआयेसबने कहारसोई बनवाय के खिलादेवनामदेव जीनेनमाना संध्याके समयब्राह्मण मरगया लोगोंने कहा नामदेव जी को हत्याहुई नामदेवजी कोकुछ भय न था चितामें ब्राह्मण की लोथ समेत बैठकर लोगोंसे कहा आग लगादेव इतने में भगवत् हँसपड़े बिश्वास पर नामदेवजी के प्रसन्नहुये लोग यहचरित्र देखकर नामदेव जी के चरणों में पड़े नामदेव जी के घरपर एकादशी को जागने में हरिभक्तों को जलतृषा हुई बावली में एक बड़ा प्रेत रहताथा उस डरसे कोई न जासका नामदेवजी कलशलेकर आधीरात को वहां गये वह प्रेत बिकराल वभयंकर रूपआयानामदेवजीने यह पदताल लेकरकिया तुकउसका यहहै॥ ये आयेमेरेलम्बकनाथ॥ धरतीपांव स्वर्गलो माथो योजन भर २ हाथ॥ भगवत् उसीभूत मेंप्रकटहुये औरवहभूतभी नामदेवजीकी कृपासे भगवत् धामकोपहुंचा नामदेवजी एकादशीके जागरण में ऐसे दृढ़प्रेमी शिरोमणि हुयेकि अब तकरीति है किजहां जागरण एकादशी का होताहै पहिले नामदेवजीका पद मंगला चरणमें गातेहैं॥

अल्हजी की कथा॥

अल्हजी परम भगवत् भक्तहुये तीर्थ यात्रा में कहीं एक राजा के

बागमें उतरे सेवा पूजाको किया आमके नीचे बागवान से आम मांग भगवत्को भोग लगानेको उसनेकहा जो आम खायेबिनानहींरहाजाता है तो तुम तोड़लेव बस तुरन्त आमकी डाली सब ऐसी झुकगई कि आम सिंहासन पर व भूमिपर आय गये आम ठाकुरजीको भोगलगाया उस बागवानने जाकर राजासे यह चरित्रकहा राजा दौड़ाआया चरणोंमेंपड़कर बिनयकिया आपके चरणोंके प्रभावसे मैं और यह बाग व सबदेश पवित्रहुआ अब कुछ कृपा विशेष करना चाहिये अल्हजी ने दया करिके उसको भगवत्शरण व भक्त करदिया जानेरहो भगवत्भक्ति और भक्तों का यह प्रताप है कि शिव ब्रह्मादिक जिनके चरणों में अपना मस्तक झुकातेहैं जो एक वृक्ष झुका तो क्या आश्चर्य्यहै ॥

कथा पृथ्वीराज की ॥

पृथ्वीराज राजाबीकानेर बेटा कल्याणसिंहके भगवत्भक्तहुये कवित्त दोहा भाषामें श्लोक संस्कृतमें रचना करिके अति प्रेमसे कीर्तन किया करतेथे पिंगल इत्यादि के बड़े ज्ञाता व काव्य बड़ी ललित उनकीथी भगवत्सेवा में बड़े निष्ठये और त्यागी इन्द्री सुखके ऐसेथे कि अवस्था भर स्त्रीकी ओर नहीं देखतेथे कहीं परदेशमें संयोगवशगयेथे तो मंदिर में सेवा मूर्तिका ध्यानमानसीकरतेथे दोदिन ध्यानमें वह स्वरूप न देखा तीसरेदिन दर्शन मानसमेंहुआ पर वृत्तांत बूझनेके हेतु साड़नी दौड़ाई तो राजमंत्रियोंने पत्री लिखो कि मन्दिर की मरम्मत होने से दोदिन श्रीजी दूसरे स्थानमें थे मन्दिरमें नहींगये राजाका तब सन्देह दूरहुआ और बड़े आनन्दहुये राजाने अपने मनमें मथुराजीमें देह त्यागनेकाप्रण कियाथा इस वृत्तान्तको बादशाहनेसुनकर द्वेष करिके उनको काबुलकी लड़ाईपर तैनात करदिया राजाको इस यात्रासे एक एक दिन कल्पके समान बीततेथे क्योंकि अवस्थाजानेकी थोड़ीआयरहीथी जब दिनउनके प्रयाणका निकट आया तो भगवत्ने उसदिन राजाको जनायदिया तुरन्त साड़नीपै बैठकर मथुराजीमें आये और प्रणपूर्णहुआ शरीर त्यागकरके परमधामको पहुंचे जयजयकीधुनि भारतसंसारमें पहुंची और निर्मलयश भगवत्भक्ति और भक्तोंका संसारमें विख्यातहुआ एक दृष्टान्त राजाका औरभी सीतारे तर्जुमा करनेवाले ने लिखाहै कि नूरुद्दीन विश्वयात्रा में

संयोगबश जंगलमें बासहुआ और वहां लशकरको कुछ सामा खानेपीने को न मिली भगवत्‌ने भक्तबत्सलता करिकै एक नगर बड़ाभारी प्रकट करदिया कि सब प्रकारसे सुख सारे लशकरको हुआ॥

धनाभक्त कीकथा॥

धन्ना जातिके जाट परमभक्तहुये उनकेभक्त होनेका वृतान्त यहहैकि जब लड़केथे तब उनके घर एक ब्राह्मण भगवत्‌भक्त आया भगवत्‌की सेवा पूजा करताथा धनाभक्त ने उससेकहा कि मूर्ति हमकोभी देव कि जैसी तुम सेवा पूजा करतेहौ हमभीकरैं पहिले बहाना किया जब हठदेखा तो एक छोटासापत्थर काला देदिया धनाजीने बड़ी प्रीतिसे शिर व नेत्रों से लगाया सेवा प्रारम्भकी पहिले आप स्नानकिया और फिर भगवत् को स्नान कराकर तालाबकी मिट्टीका तिलक लगाया और तुलसीदल के स्थानपर हरीपत्ती चढ़ाई और बड़ीप्रीति और हर्षसेसाष्टांग दण्डवत् की जब उनकी माता रोटीलाई तो भगवत्‌के आगे रखकर और आँखें बन्दकरके बैठगये बड़ीदेर तक बाट जोहतेरहे कि भगवत् भोग लगावें पर जब न खाई तब उदास व दुखित होकर बारबार हाथजोड़े तब फिर लड़कई हठ करके बहुत प्रार्थना किया तौभी न भोजन किया तो रोटी को तालाबमें डालदिया और आपभी बे अन्न जल रहगये कईदिन इसी प्रकार बीते और भूख प्याससे बिकलहोकर मरनेकेनिकट पहुंचे भगवत् को द्रवहुआ प्रकट होकर रोटी खाना प्रारम्भ किया जब आधा भोजन किया तब धनाजीबोले क्यासब तूहीं खायजायगा कुछ मुझकोभी देगा कि नहीं भगवत् ने हँसकर बचीरोटी धनाकोदी इसी प्रकार नित्यकी व्यवस्थाहोगई धनाजीने जो परम मनोहर रूप भगवत्‌का देखा तो ऐसी प्रीतिहोगई कि एकक्षण उस रूपको ध्यान में अथवा प्रकटमें न देखें तो बेचैन होजाते भगवत्‌ने देखा कि जिसकीरोटी बेपरिश्रम खातेहैं उसकी टहलभी कुछ कियाचाहिये कि बिना परिश्रम किसीकाखाना अच्छीबात नहीं सो धनाभक्तसे पूंछकर गऊ चुगाय लायाकरते एकबार वहीब्राह्मण आया सेवा पूजा धनाको करते कुछ न देखा कारणपूंछा धनाजीने कहा कि महाराज भलीपूजा देगयेथे कि कितनेदिनों मुझको भूखोंमारा अब बड़ी कठिनसे ऐसा सीधाहुवाहै कि गायतक चुगायलाता है ब्राह्मणको

आश्चर्य्यहुवा कहा कि हमको भी दिखला धनाजीने ब्राह्मणकोभी दर्शन कराया वह ब्राह्मणभी कृतार्थ होगया औ धनाभक्तजी भगवत्‌की आज्ञा से काशीजीमें रामानन्दजीसे मंत्र उपदेश लेकर गुरूकीआज्ञाके अनुसार घरमें आयके साधुसेवामें लीनरहे एकदिन खेत बोनेको गेहूं लियेजाते रहे साधुआयगये वह गेहूं साधुसेवामें लगादिये माता पिताके भयसे खेतको जैसा बोनेपर बनाके छोड़देतेहैं वैसाहीकरके छोड़दिया भगवत् ने बिचारके सबसे अच्छा उस खेतको जमाया कि सबलोग बड़ाईकरने लगे धनाजीने लोगोंकी बड़ाईकरना खेतके जमनेकी हँसी ठट्ठा समझा एक दिन जो खेतकी ओरगये तो कहना सबका सत्य देखा भगवत् की कृपासे वारबारजाके प्रेम व आनन्दमें डूबगये और अधिक भगवत्‌और भक्तों की सेवामें लौलीनहुये और राजाइन्द्र तू कैसा ज्ञानमान व बुद्धिमानहै कि वज्रके बनानेके हेतु दधीचऋषेश्वर को दुःखदिया मेरेइसमन अभागेको क्यों न उठाकर लेगया कि कठोर वज्रसेभी कठोरहै जो यह कथा धनाभक्तकी कहकर और करुणा और भक्तवत्सलता और रिझवारता परमदयालुकी सुनकर तनकभी नरम नहींहोता॥

कथा देवाकी॥

उदयपुरके निकट एक मन्दिर रूपचतुर्भुजस्वामीकाहैवहांका पुजारी देवानाम ब्राह्मण वृद्धहुआ एक दिनजब राना उदयपुरका गद्दीकामालिक आयगया और देवा रातको शयनके समय भगवत्‌को शयन कराकेमाला फूलोंकी उतारी तो अपने शिरपर लपेटकर कपाट मन्दिर के बन्दकर- चुकेथे देवाने वह माला उतारकर जब राना मन्दिरमें पहुंचगया रानाके गलेमें डालदी संयोगवश एक केश सुपेद उस मालामें रानाको देखपड़ा देवा पुजारीसे पूंछा क्या भगवत् के केश श्वेतहोगये देवानेकहा हां महा- राजसुपेद होगये रानाने कहा हमभी प्रभातदेखेंगे यहकहकर चलागया देवाजीके मुखसे जो यहबात निकलगई तो भययुक्त होकर सिवाय भ- गवत्‌के और दूसरा रक्षक न देखा बहुत दुःखीहोकर कहनेलगे कि हे हृषीकेश हे स्वामिन् आपकोभक्ति मेरेनहैं न सेवा पूजामें विश्वास पर आपके चरणकमलोंके सिवाय कोई शरण व रक्षाका स्थानभी नहीं कि वहां जाऊं अब मेरी लज्जा आपहीकोहै चाहोसो करो भगवन् यह बि-

विती अपने भक्तकीसुनकर करुणायुक्त होकर उसीक्षण अपनेश्रीअंगपर श्वेतकेश धारण करलिये प्रभातको देवाने मन्दिरके कपाट खोले और श्वेतकेश श्रीअंगपर देखतेही भगवत्के करुणा व दयालुता के प्रेममें ऐसे बेसुधि होगये कि कुछसुधि बुधि शरीरकी न रहीपीछे सुधिभई भगवत् के करुणा दीनबत्सलता आदि गुणोंको और अपनी बिमुखताको शोचते भक्ति और भावमें छकेहुये भगवत्की महिमा अपनेमनमें बर्णन कररहे थे कि राना आया और भगवत्के शरीरपर केश सुपेद देखकर ध्यानमें आया कि इस ब्राह्मणने किसीके बाल लगादियेहैं परीक्षाकेहेतु एककेश खींचा भगवत्को क्लेशपहुंचा और नाशिकाको चढ़ाई फिर वह केश टूट गया और रुधिरकीधार इस बेगसे निकली की रानाके कपड़ोंतकपहुंची राना यह वृत्तांत देख मूर्च्छाखाकर गिरपड़ा एकपहरतक अचेतपड़ारहा फिर उठ कर देवाके चरणों में पड़ा और क्षमा करने अपराध के निमित्त विनय व प्रार्थनाकी तब आज्ञाहुई कि अबसे रानाकेवंशमें जबतककुँअर रहैं तबतक दर्शनको मन्दिरमें आवें और जबसे राज्यतिलक होय तब से मन्दिरमें न आवें जावें सो अबतक यहरीति बर्तमान है ॥

कथा दो लड़कियों की ॥

एक लड़की किसी ज़िमीदारकी और दूसरी राजाकी भगवत्कृपा के प्रभाव करिके उस पदवी और भक्तिको पहुंची कि जिनकीकथा अब-तक भक्तोंके मुखसे होतीहै वृत्तांत यहहै कि एकबेर राजाकेगुरू आयेथे दोनों लड़कियों ने भगवत्मूर्ति मांगी उन्हों ने बालापन देख कर एक टुकरा पत्थरकादेकर नाम शिलपली बतलादिया और इतना उपदेशकर दिया कि मन लगाकर सेवा पूजा करती रहो संसार समुद्रसे पार होजाओगी वे दोनों बड़भागिनी अत्यन्तबिश्वास और प्रेमसे सेवा पूजा करनेलगीं यहांतक कि भगवत्कारूप उन्होंके हृदय में प्रकाशित हुआ इतनीकथा दोनोंकी एकट्ठी बर्णनहुई अब अलग अलग लिखी जातीहै ज़िमींदारकी लड़कीका चचा अपने भाईसे अर्थात् उस लड़कीके बापसे शत्रुता रखताथा वह उसपरचढ़ि आया गांवकोलूट लेगया उसलूटने में उस लड़कीको सेवाकी मूर्तिभी गई वह लड़की अत्यन्त बिकल भई व सारा संसार उसको अँधियारा होगया और जीमें प्राण पीड़ाहोगई

जब सोना, खाना, पीना सबछूटगया तबसबके कहनेसे अपनेचचाकेपास जहांवह अपने चौबारेमें बैठाथा औरगांवके सबआदमीभी थे वहलड़की गई और मूर्तिमांगी वहबोला पहिचानकर लेजा किसीने कहातूटेरदे जो ठाकुरको तेरेसाथ प्रीतिहोगी तो आपचले आवैंगे वह लड़की कि रोते रोते आँखें सूज आईथीं व गलापड़ गयाथा बड़े कष्टसे दीनहोकर पुकारीहे शिलपलीमहाराज अपनीदासीको क्योंछोंड़आये कहांहोभगवत् सुनतेही शब्दके तुरंत आकर उसबड़भागिनीकी छातीसे लिपटगये और उसको प्राणदान देकर जिवायलिया और दोनोंगाँव वालों को निश्चय अपनी भक्तिकाकिया और राजाकीलड़की भगवत् प्रेममें ऐसीरँगिगई कि रंगीन होगई परंतु एकआदमी भगवत् बिमुखके साथ उसकाबिवाह होगयाथा वह लेजाने को आया उसको बड़ी चिन्ता भगवत् सेवाकी हुई नितान्त जब नाताने बिदाकरदिया अपने प्राणप्रीतमको डोलामेंबैठालिया और कोईलौंडी बांदीको साथनलिया राहमें वह बिमुख पासआया औरबोलने चालनेकी चाहसे बोलाया वह कुछ न बोली तबउसने कहा तुम क्यों नहींबोलती हो और तुमको कौन दर्द है कि उसका उपाय कियाजाय उस लड़कीने उत्तर दिया कि तुमको चाहनाहमसे बोलनेकीहै तोभगवत् भक्ति अंगीकारकरो नहींतो हमकोस्पर्श न करो उसको क्रोधआया और पिटारी भगवत् सेवाकी नदीमें डालदिया वह लड़की अतिव्याकुल व स्वामीके वियोग से दुखितहुई और अन्न जल बिष होगया उस बिमुख ने उसको प्रसन्न करनेको अनेक उपायरचे पर कुछकाम नआया अपने घरमेंआया तब राहका यह वृतान्त सब जनादिया स्त्रियोंने बहुतभांति समझाया और सासुअपने हाथसे भोजनकरानेलगी परंतु उसबड़भागी का मनभगवत् चरणोंमें दृढ़ लगरहाथा किसीकी कुछ न सुनी और न कुछखाया पिया जब सबउपाय करके सासु इत्यादिहारी तब सब उसी नदीपर आयेजहां पिटारी को पानीमें डालदियाथा और वह बड़भागी करुणा से भरीहुई रुदन करतीहुई पुकारी कि हेस्वामी शिलपली महाराज कहांहो आपदासी से किसहेतुरूठ गयेहो जो बहुतपानीमें नहाना आपको था तो गंगाजीमें स्नानकराती अब कृपाकरो दर्शन देव भगवत् अपने भक्तके पराधीन ऐसेहैं जैसे कामीपुरुष सुन्दरी नायकाके आधीन

व वशीभूत होता है वह शब्दकरुणा से भरा हुआ सुनकर तुरंत अपने वियोगिनी विरहिन को दर्शनदेकर प्राण को रखलिया सबको भक्ति का विश्वासहुआ और भगवत् भक्ति व साधुसेवा सबकोई करकेकृतार्थहो गये॥

सन्तदासजीकी कथा॥

सन्तदासजी निवाईगांवमें बिमलानन्दके प्रबोधनवंशमें परमभक्तहुये जिस प्रकार राजापृथुने अपनीस्त्री समेत भगवत् सेवाकरी उसीप्रकार संतदासजी ने करी अपनीवाणी की रचनामें भगवत् और भक्ति और भक्तों का प्रताप बराबरलिखा और काव्यउनका सूरदासजीके बराबर था भगवत् के जन्म व कर्म व लीला व चरित्रों कोऐसी मधुर व ललित वाणी में बनाया कि निश्चय मननरम होहोकर भगवत् चरणों में लग जाताहै एकबेर उनके मनमें यह आया कि भगवत्को छप्पन प्रकारका भोगलगा चाहिये सो ध्यानमें भोग लगायाजगन्नाथ रायजीने अपने सच्चेभक्तका मानसी भोग अंगीकारकिया और पुजारियों का धराथाल भोग न लगाया और राजाको स्वप्नमें आज्ञा की कि सन्तदास के घर हमारा नेवताथा उसने ऐसाभोजनकरायाकिस्वादिष्ट व मधुरतासे बहुत खागये कि भूख नहींहै राजाने संतदासजीकेभक्ति व प्रतापका विश्वास किया और भक्तोंको भगवत्भक्ति और भावकी वृद्धिहुई॥

साखीगोपालकी कथा॥

दोब्राह्मण गौड़ देशके रहनेवाले उसमेंएकबूढ़ा व कुलीन औरदूसरा जवान और सामान्य कुल का तीर्थयात्रामें एकसाथरह जहांतहां दर्शन करके जबवृन्दाबनमेंआये तो बूढ़ाब्राह्मण बीमार होगया जवानब्राह्मण ने उसकीसेवाको अच्छेप्रकार से किया जबआरामहुआ तो उसनेप्रसन्न होकर ब्याहकरदेने अपनी लड़कीका बचनदिया और जवान् ब्राह्मणने बहुत कहते सुनते अंगीकारकिया साक्षीचाहातोवृद्धब्राह्मणनेश्रीगोपाल जीको साक्षीदिया जब दोनों अपनेघरआये तब उसयुवाब्राह्मणने कहा कि बचन पूराकरो तो स्त्री व पुत्रने बूढ़े ब्राह्मणको अपनी कुलीनता व प्रतिष्ठाके कारणसे न माना तब पंचाइतबटुरी पंचोंने साक्षीमांगा उसने उत्तरदियाकि जहां गोपालजी साक्षीहैं तो और साक्षीका क्याप्रयोजनहै पंचोंने कहाकि जो गोपालजी आयकर गवाहीदेवें तो निस्सं

देह विवाह होजावे और इस बातका लिखना भी होगया वह ब्राह्मण वृन्दाबनमेंआया श्रीगोपालजीके मन्दिरमें जाकर चलनेके निमित्तनिवेदनकिया कितने दिनतक इसीआशामें फिरतारहा जब भगवत्नेअच्छे प्रकार विश्वास मनका देखलिया तवबोले किप्रतिमाभी कहींचलतीहै तव ब्राह्मण ने विनयकिया कि जो चलती नहीं तो बोलती कैसीहै योगीश्वरभगवान निरुत्तरहुये और साथहोलिये परउसब्राह्मणसे कहनेलगे कि जबतू पीछे फिरकरदेखेगा उसीजगह खड़ाहोजाऊंगा उसनेकहा कि जो ऐसाठगोहो कि हज़ारहों उपाय और परिश्रमसेभी महादेव इत्यादि के मनमें से भागजाता है और जिसने गोपियों का माखन और दही चुराकर अच्छे प्रकारसे खाया और उन्होंने पकड़ने का मनकिया फिर भागगया उसकाकैसे विश्वासहोवै किपीछेपीछे आताहै या नहीं इसहेतु साथ साथ चलनाचाहिये भगवत्ने हँसकरकहा किहमारे नूपुरकीधुनि तेरेकानमें पड़तीरहैगीउसने मानलियाजबघरकेसमीप पहुंचाताब्राह्मण को कामनाहुई कि अबतो रूप अनूपको आँखभरदेखलेनाचाहिये सोइस चाहना में प्रबंध की बातको भूलगया और पीछे फिरकर देखा तो भगवत् वहीं खड़े होगये और ब्राह्मण आज्ञापाकर गांवमें गया वृत्तान्त आवनेआप श्रीगोपालजी महाराजका कह करके पंचोंको लेआया और भगवत् ने दोनो ब्राह्मणोंमें जो प्रबंधथा सो कहदिया सबको भगवत् और भक्ति और भक्तोंका विश्वासहुआऔरउसब्राह्मणका विवाह बड़ेहर्ष सेहुआअबतकश्रीगोपालजीमहाराज घुड़दानगाँवमें श्रीजगन्नाथरायजी के मन्दिर में पांचकोशपर विराजमान हैं और नाम साखी गोपाल विख्यातहैं जो कोईजाता है दर्शनपाता है॥

सीवांकी कथा॥

सीवांवेदा सांगन राना अपनी कावा जाति के द्वारका देशमें परम भक्तहुये यद्यपि कामध्वजजी बड़ेत्यागी विख्यातहैं परंतु यह राज्यकाज करतेहुये और सबपदार्थ ऐश्वर्यपायके कामध्वज से अधिकत्यागीरहे से वे वीर व उदार व पराक्रमीऐसेथे कि भगवत्की सहायकरी वृत्तान्त यहहै कि मुर्जाजखां नामीबादशाही नौकर बड़ा कटककेकर द्वारकापर चढ़आया रनछोड़जीके मन्दिर और पुरीमेंआगको लगादिया और लोगों

पर नाना प्रकार का उत्पात प्रारंभकिया भगवत्ने सीवां से सहायता चही सीवांने कुछ सवारों समेत द्वारका में पहुंचकर सबोंका बधकिया बड़ा युद्ध करा अजीजखां को यमलोक में पहुंचाय के आप भगवत् लोकमें वासकिया॥

सदनकी कथा॥

सदनजी जातिके कसाई परम बैराग्यवान भक्तहुये जिसप्रकारसोना कसौटीसे अवगुणरहित होजाताहै इसीप्रकार सदनजीने पिछलेजन्मोंके पापदूर करदिये मांसऔरोंसे मोललेकरबेंचा करतेथे हिंसानहींकरते थे शालग्राम मूर्ति पासथी उसीसे सेर अथवा मनजो चाहताथा तोलदेते थे एकवैष्णवने देखकर मनमेंकहा कि यह मूर्ति ऐसेवृत्ति वालेके पासकहां उचितहै इसहेतु सदनजीसे मांगीउन्होंने तुरंतदेदी साधुको स्वप्नमें कहा कि जहांसे लाया तहांहीं पहुंचादे साधुने कहा कि महाराज कसाई के यहां आपका निवासअयोग्य है तबआज्ञाहुई कि हमकोउससे बड़ीप्रीति है हमको पलरे पररखताहै तो हमझूला झूलतहैं व मोलकी जोजोबात चीत करताहै सो हमकीर्तन मानतेहैं साधने जाकर सदनजी से सब वृत्तान्त कहकर शालग्राम मूर्तिको देदिया सदनजी घरबार त्याग कर उसमूर्तिको शिरपर रखके जगन्नाथरायजी को चले राहमेंकहीं एक स्त्री सदनजी को सुन्दर व युवादेखकर आशक्त होगई अपने यहां टिकाया अच्छा भोजन कराया रातको कहाकि हमको अपनेसाथ लेचलोउन्होंने कहा कि मेरीगरदन काटडालो तबभी यहनहीं होगा उसने कुछ और ही समझकर तुरंतघरमें जाकरअपने पतिका शिरकाटिकर फिर आकर वृत्तान्त कहा कि अब बेखटके तुम साथ लेचलो सदनजीने कहा कि ऐसमतिहीन यह हमसे कदापिनहोगी उसने शोरकिया कि इसआदमीको साधुजान करटिकाया सो मेरे पतिका शिरकाटकर हमको साथ लेजाने को कहताहै सदनजी पकड़कर हाकिम के यहांगये पूंछागया तबसदन जीने कहा हां हमसे अपराधहुआ हाकिमने हाथ सदनका कटवादिया ऐसेकष्टमें भी सदन अपने पूर्वपापका फलसमझकर भगवत्के ध्यान स्मरणसे आनंदरहे व जगन्नाथजीको चले जगन्नाथराय महाराजप्रसन्न होकर निज सवारी की पालकी सदनजी के निमित्त भेजी पर सदनजी मर्य्यादको देखकर न चढ़ेजब सबने बहुतकहा तब आज्ञाभगवत्की उलंघ

करना उचित न जानकर सवारहोके श्रीदरबारमें पहुंचे और भगवत् के दर्शनको पाकर कृतार्थ अपने आपको जानकर दण्डवत् किया उसी क्षणहाथ जैसेथे वैसेहोगये और सबदुःख जन्मांतरके दूरहोगये निश्चय करिके भगवत् भक्तिका ऐसाहीप्रताप है सो महाभारथ में भगवत् का वचनहै कि जिसको मेरीभक्ति नहीं और चारोंवेदपढ़ाहो वहहमको प्यारानहीं और जो कोईमेराभक्तहै और यद्यपि वह चांडालभीहै परहमको अत्यन्तप्याराहै और वहीपूजा योग्यहै और एकादशस्कन्धमें भगवत्ने उद्धवसे इसकोश्लोककी भांतिकहा है ॥

कर्म्मानन्दजीकी कथा ॥

कर्म्मानन्द जी जातिचारण रजवाड़े में भगवत् भक्त वैराग्यवानहुये काव्य उनका ऐसा प्रभाव युक्तहै कि कैसाही कठोर चित्तहो पढ़सुनकर द्रवी भूतहोजाता है उन्होंने संसारको असार व अनित्यजानकर त्याग किया और तीर्थयात्रा को चले भगवत् सिंहासन शिरपर और हाथ में एकछड़ी लेली जहांकहीं टिकते वहछड़ी धरतीपर गाड़देते और बटुवा शालग्रामजीका उसीकी शाखापर झूलकेभांति बिराजमान करदेते एक बेर वहछड़ीभूलगये चित्तभगवत्चरणोंमें था इसकारण राहमेंभी सुधिन हुई टिकान्तपर पहुंचे जब प्रयोजन भगवत्के बिराजमान करनेका हुआ तब स्मरण हुआ और अत्यन्त प्रेमसे कहनेलगे कि झाड़ूदेने वाला व पानीभरनेवाला व रसोई व सेवाकरने वाला व सवारीदेने वालानिश्चय करिके यह दासहै क्या जो कार्य्य कि आपको अधिकार है वह भी इस सेवकको सौंपागया अर्थात् अन्तष्करणके प्रेरकतो आपहैं छड़ीभूलगई न स्मरण हुआ तो विचार करलेंकि इसमें दोषकिसका है भगवत् ने जो बोलन प्रेमयुक्तकी सुनी तो प्रसन्नहुये व तुरंतछड़ी को मँगादिया ॥

कूल्हअल्ह की कथा ॥

कूल्ह व अल्ह दोनोंभाई रजवाड़े में हुये कूल्हभाई बड़ेआदिसे भगवत्भक्त व वैराग्यवान व त्यागी व भगवत् रूप माधुरी के ध्यानमें मग्न और भगवत् चरित्र और गुणोंके कीर्तन करने वालेहुये व अल्हजीछोटे भाई मधमांसके पीनेखाने में रहकर बहुतसे राजाओं के यशके कवित्त बनाया करते और कभी बनावटस्वाद भगवत् चरित्रकाभी कीर्तनकर

परबड़ेभाईकी आज्ञामें रहतेथे एकदिन बड़ेभाई ने कहा कि यह मनु
जन्मदुर्ल्लभ वृथाजाताहै और यहसंसार अनित्यहै उचितहै कि द्वार
जीमें भगवत्के दर्शनकरआवें सो दोनोभाई द्वारकामेंआये कूल्हबड़े भ
नेअपने बनाये कबित्त और छन्द भगवत् रनछोरजी की भेंटकिये अ
अल्हछोटे भाईने अतिलज्जासे शिर नीचेकरके आंखोमें आंशू भरलि
औरअपने अपकर्म्मोंको शोचके विकलचित्तहोकर दोचारकवित्त पढ़े भ
वत्ने जोअत्यन्त प्रीतिहृदयकी देखी और अपने पापकर्मोंकी लज्जासे
लज्जित देखा तो प्रसन्नहोकर अल्हजीके कीर्तन परसावधान हुये और
हुंकारीभरनेलगे अभिप्राययह कि हमसुनतेहैंकुछ औरकहो और पुजारी
को निजमाला देनेके निमित्त आज्ञाकोकिया अल्हजी ने बिनयकिया
कि कूल्हजी बड़ेभाई इसकृपायोग्यहैं मैंअपराधी इसयोग्यनहीं पुजारी
ने उत्तरदिया इस दरबारमें बड़ाई छोटाई हृदयकी प्रीतिकी देखीजाती
है और हमको केवल आज्ञा पालन उचितहै यहकहकर मालाको अल्ह
जी के गलेमें डालदिया कूल्हजी को अति दुस्सह हुआ और अपनी
बेमर्य्यादी समझकर बड़े दुःख व ईर्षासे डूबनेका मनोर्थकरिके समुद्रमें
कूदपड़े मुख्यद्वारका में जापहुंचे भगवत् का दर्शनपाकर कृतार्थ होगये
जब भोजन करनेगये तब भगवत्ने आज्ञाकी कि दो पनवाड़ोमें पारस
करो कूल्हजी ने पूंछा दूसरा पारस किसके निमित्त है भगवत् ने कहा
तुम्हारे छोटे भाई के हेतु सुनते ही बड़ा दुःख फिर हुआ और बिष के
समान होगया भगवत् ने कहा दुःखकी कुछ बात नहीं है तुम्हारा छोटा
भाई मेरा परमभक्तहै और वृत्तान्त उसकायहहै कि अगिलेजन्ममें राजा
था और राज्य छोड़कर जंगल में हमारे स्मरण भजनमें रहाकरता था
संयोगबश एक राजा वहां आय के टिका और उसकी सजावट भोग
बिलास व रागरंग इत्यादि को देखकर उससुखकी चाहनाको किया इस
हेतुयह शरीर पाया अब वह तुम्हारे श्लेषसेखाना पीनासोना सब छोड़
करमृतक प्रायहै शीघ्रजाकर सुधिलेव कूल्हजी प्रसाद लेकर अपनेडेरे
परजहां टिकेथे एकक्षणमें पहुंचे और अल्हजीको वहां न पायाघर जाने
की सुधिपायकर गृहकोचले अल्हजी अपने भाईके बियोग से महादुखित
रोयाकरते थे कूल्हजी को कुशलपूर्बक पत्थर के साथ आतेसुनकर अति

हर्षित होकर आगे जाकरलिया दण्डवत्करके दोनोंभाई प्रेमसे भरेहुये मिले कूल्हजीने सब वृत्तांतकहा दोनोंभाई ऐसेप्रेममें पूरणहुये कि घरबार त्यागकरके वन में चलेगये भगवत्सेवा भजन में शरीर समाप्तकिया ॥

जगन्नाथकी कथा ॥

जगन्नाथजी रहनेवाले थानेसर परमभक्त और श्रीकृष्ण चैतन्यमहाप्रभुके सेवक पार्षदके सदृश हुये सेवक होनेका यह वृत्तान्तहै कि तीन दिनतक महाप्रभुको अपनेघरपर विराजमान देखा और उनके प्रताप का प्रभाव घरमें प्रकटपाय कै आधीन व विश्वासयुक्त हुये और सेवक होकर कृष्णदासनाम पाया परलोग कृष्णनाम कहाकरतेथे बहुतकाल मानसीपूजा और ध्यानकरते रहे एकदिन यहअभिलाषहुआ कि जोचर्चा मूर्ति भगवत्की मिले तो स्थापनकरके सर्वकाल सेवापूजामें रहाकरूं भगवत्ने कृपाकरके अपनास्वरूप एक कुएमें बतलाया उसको लाकर स्थापनकिया और ऐसो सेवा पूजामें लवलीनरहाकरते कि रात्रि दिन भगवत्के शृङ्गार व राग भोग व उत्साह और लाड़ लड़ाने के सिवाय दूसराकुछ काम न था उनकेपुत्रका नाम रघुनाथजी था वह लड़काई से ऐसाभक्त और प्रेमी हुआ कि भगवत्ने स्वप्नमें एक श्लोकअपनेप्रेमऔर भक्तिका शिक्षाकिया ॥

रामदासजीकीकथा ॥

रामदासजी रहनेवाले डाकोर द्वारका के निकट बड़े प्रेमी भक्त हुये एकादशी व्रत बड़ीप्रीतिसे रहकर जागरणके हेतु रनछोरजीके मन्दिरमें द्वारका जायाकरते जब वृद्धहुये तब रनछोरजीने आज्ञाकी कि अब तुम घरहीमें स्मरण भजन कियाकरो रामदासजीने यद्यपि वचन अंगीकार किया पर जब तरंगप्रेमकी उठै तो बेबशहोकर चलेजाते भगवत्को राह का परिश्रम व क्लेश आनेजानेका अपने भक्तकासहानहीं गया और आज्ञा की कि तुम एकगाड़ी लेआवो हम तुम्हारेघरचलेंगे रामदासजीअगिली एकादशीको गाड़ीलिये आपहुंचे और लोगोंने जाना कि बुढ़ाईके कारण से गाड़ीपर आयाहै द्वादशी के दिन बतलाये हुये भगवत्मन्दिरमें गये और गाड़ीपर सवार कराकर चले पर गहनेसब भगवत्केमन्दिरमेंछोड़ दिये प्रभातको पुजारीलोगों ने मन्दिर खोला व भगवत्को न देखा तो जानगये कि रामदास लेगये सबपीछे पड़े और रामदासजी को उनके

आनेसे चिन्ताहुई भगवत्ने कहा कि समीपही एक बावड़ी है उसी में हमको छिपादेव रामदासजीने वैसाहीकिया वे लोग जो आये तोपहिले रामदासजीको मारापीटा घायलकिया जब गाड़ीमें न देखा तो लज्जित होकर पश्चात्ताप करनेलगे पीछे किसीके बतलानेसे बावड़ीको देखा कि रुधिरसे भरीहै चकृतहुये भगवत्ने कहा कि रामदास हमारीआज्ञा से हमको लायाहै तुमने जो उसको घाव दिया सो हमने अपने शरीर पर रोकाहै इसहेतु बावड़ी रुधिरसे भरीहै अब तुम फिरजावो तुम्हारे साथ न जायँगे पुजारियोंने बड़ीप्रार्थना व करुणासेबिनयकिया कि महाराज जो आप न चलें तो हमारी क्या गतिहोगी भगवत्ने कुछ न सुना बहुत कहते सुनते यह ठहरा कि भगवत्मूर्ति बराबर सोनातौलदें सो पुजारी लोग इसबातपर मानिगये रामदासजी ने कहा महाराज मेरेघर सोना कहांहै भगवत्नेकहा कि तुम्हारीस्त्री के कानमें बाली सोनेकीहै हमारे तौलकी बराबर वही बहुतहै जब उससोनेकी बालीकेसाथभगवत्मूर्ति को तौलनेलगे तो बाली वाला पलरा धरतीपर होगया व भगवत्मूर्ति वाला पलरा स्वल्पतासे ऊपर उठगया पुजारी सबलज्जितहोकरअपने घरको चलेगये रामदासजीने भगवत्को अपने घरपर लाकर विराज-मान किया और सेवा भजन करनेलगे इस चरित्रसे प्रकटहै कि राजा बलिकेयहां तो उसके बांधलेनेके पीछे उसकेयहांटिके और यहांतो राम दासजीके घायलहोनेके पीछेटिके और सदा भगवत्केयहां रहनेकायह चिन्हहै कि अबभी भगवत्मूर्ति किसी और आदमीसे नहींउठती जब कोई रामदासजी के बंशमेंका उठाताहै तो तुरन्त उठआती है मंदिरकी मरम्मतके समय इस बातकी परीक्षा होचुकीहै ॥

निष्ठा नवी

जिसमें महिमा लीलानुकरण अर्थात् रासलीला व रासलीला इत्यादि जिसमें सब भक्तोंकी कथाहै ॥

श्रीकृष्णस्वामीके चरणकमलों के चक्ररेखाको दण्डवत् करके कमठ अवतारको दण्डवत् करताहूं कि समुद्रमथनेके समय वहअवतार समुद्र में प्रकट करके मन्दराचल पहाड़ को अपनी पीठपर धारण किया और

देवताओंके दुःखदूरकियेरासलीला व रामलीला व नृसिंहलीलाबनाकर जो भगवत्का आराधन पूजनकरतेहैं उसका नामलीलानुकरण है यह निष्ठा परमपुनीत ऐसीहै कि सैकड़ों हजारों महापापी जिसके प्रभाव करिके भगवत् परायणहुये और भागवतसे प्रसिद्धहै कि जबरासलीला का प्रारम्भमें भगवत् गोपियोंसे अन्तर्द्धानहोगये तो वे मतवारी विरह व बावरी रूप अनूप की होकर बन और कुंजन में सबद्रुम और लता गुल्मसे पूछतीहुई ढूंढ़नेलगीं और रोना व आंसूबहाना व विनय प्रार्थना व गिड़गिड़ाना व स्तुति जो कुछउपाय सूझपड़ा सबकरी पर भगवत् प्रकट न हुये नितांत सब गोपियां भगवत्के कियेभये चरित्रों को करने लगीं अर्थात् कोईगोपी तो श्रीकृष्णरूपबनी और कोईबालक औरकोई गऊ और कोईबछड़ा और जिसप्रकार जन्मोत्सवसे लेकर जोजो लीला भगवत्नेकरीथी सबकरीं भगवत् प्रसन्नहोकर प्रकटहुये तो सिद्धांत यह बातहोगई कि भगवत् अपने लीलानुकरणसे ऐसेरीझतेहैं कि आपप्रकट होजातेहैं किन्तु रासलीला भगवत्ने आप आज्ञा देकर संसार में प्रकट करी कि यह वृत्तान्त नारायणभट्ट जी की कथा में लिखागया इससेभी निश्चयहोताहै कि भगवत्को अपनी लीलानुकरण अपने निजचरित्रोंके सदृश प्याराहै और प्रसिद्धहै कि शास्त्रोंमें मूर्तिकी उपासना व पूजनके निमित्तआज्ञाहै और वहमूर्त्ति पाषाण व दारु व धातुइत्यादिकी होतीहै और आदिमी आपउनको बनालेतेहैं और बहुत भीतइत्यादिपर चिन्ह खींचकर अथवा वेदी व पीठबनाकर पूजाइत्यादि करतेहैं और उसीके प्रभावसे अपने विश्वासके अनुरूप अपने वांछितफलको प्राप्तहोतेहैं अब विचारकरना चाहिये कि यहलीलानुकरण मूर्ति पहिले तो ब्राह्मण बालकहोतेहैं कि भगवत् व वेदके वचनसे जन्मसेही भगवत्रूपहैं फिर उन्होंने अपनाशृङ्गार भी भगवतके सदृश बनाया तो जो कोई विश्वास करिके उनका पूजनकरैगा तो क्यों न अपनेमनोर्थको पहुंचैगा बरु दूसरी मूर्तिसे तो विलम्बकरिके मनोर्थ सिद्धहोताहै और इनलीला मूर्तियोंसे तो शीघ्र हृदयकी निर्मलता व भगवत की प्राप्ति होजातीहै इसहेतु कि और मूर्ति आदि से भगवतकीप्राप्ति तबहोतीहै कि पहिले तो उसमूर्ति में भक्तिप्रकार मनलगै कि दूसरीओर नजाय दूसरे भगवतचरित्रोंका

श्रवण कीर्तन व सत्संगहोय सो दूसरेमूर्ति शिलाआदिमें ऐसामन बड़ी प्रीतिसे कम लगता है कि जिसको दृढ़स्नेह कहते हैं सो घुनाक्षर न्याय और श्रवण व कीर्तन व सत्संग यह खोजनेसे मिलताहै और लीलानुकरण मूर्तिपूजन सेवनसे वह सबबात एकजगह एकसमय प्राप्तहोजातीहैं क्या अर्थ कि प्रत्यक्ष सुन्दरताई और वस्त्रालंकार चमक दमक के कारणसे प्रीति तो तुरन्त उत्पन्नहोतीहै और भगवत्चरित्रों का कीर्तन श्रवण और भगवत्भक्तों का सत्संग बिना खोजे प्राप्त रहताहै सिवाय इसकेपूजन भगवत्मूर्तिका इसहेतुहै कि उसके सहारेसे मुख्य भगवत् मूर्तिके ध्यानमें मनदृढ़होजाय सो जब कि लीलानुकरणमूर्तिके अवलंब से मुख्यभगवत्की प्राप्तिहोना बहुतशीघ्र निश्चयहोय तो इसलीलानुकरणनिष्ठासे और कौनसीमूर्ति व निष्ठाउत्तमतरहै इसहेतु बहुतउचित औ अतिप्रयोजन होनेवाली बातहै कि भगवत् लीलानुकरण मूर्तिको निजमूर्ति भगवत्की जानकरके मन बिश्वासयुक्त करिके पूजाकरै बिना संदेह अपनेबांछित अर्थको पहुंचजायगा कलियुगके महापापात्मालोगों के उद्धारकेहेतु भगवत्ने सबकुछ उपाय सहजसे सहजबनाया कि तुरंत बेड़ापारहोजावै पर हमारेलोगों की अभाग्यताको हजारधन्यहै कि उन मूर्तियोंको भगवत्रूप जानना और चरित्रोंमें चित्तलगाना तो एकओर रहा ढिठाई व बेबिश्वासी इसप्रकार अधिकहै कि जिसकावर्णन बिस्तार का कारणहै बरुवकेहैं अच्छाबिना संदेह ऐसे महापापी बिश्वासहीन व ढीठ नरकमें जापड़ैंगे और किसीप्रकार पापोंसे न छूटैंगे और जानेरहो कि मनुष्यको बिश्वासही मुख्यसाधनहै जोअच्छा बिश्वासहुआ तो उत्तम पदको गया जो अनिष्ठ हुआ तो पातालको पहुंचगया क्योंकि वेद शास्त्रों ने भगवत्को अच्छे व बुरेकर्मोंके फलदेनेमें कल्पवृक्षके सदृश लिखाहै इसहेतु एकदृष्टांत कल्पवृक्षकालिखना उचितहुआ कल्पवृक्षका स्वभाव है कि बांछित फलदेताहै एकपथिक संयोगवश कल्पवृक्ष के नीचेपहुंचा और मनोर्थकिया कि ठंढीपवन चलती तो अच्छाथा सो पवनठंढी चलने लगी फिर शीतलजलसे पूर्ण एकतड़ाग व एक हरेबागकी चाहनाकरी वहभी प्राप्तहोगया फिर दिव्यबस्त्र आभूषण व सामग्री भोगबिलास व रागरंग व सुन्दरी नायकाओंकी चाहनाहुई वोहभीसबप्राप्तहुये जबउन

नायकाओं के साथ सुख व बिलासमें लीनहुआ तो यहचिन्तनाहुई कि ऐसानहो कि इनकामालिक दण्डदेनेलगे सो तुरन्त जूतीपड़नेलगीं और शिरपिलपिला होगया इसीप्रकार भगवत् बिश्वासके अनुसार सबफल देताहै और गीताजीमें भगवत्का वचनहै कि निश्चयमनहीं मनुष्योंको बंध और मोक्षकाकारणहै भगवत्कावचनहै कि जो कोई जिस बिश्वाससे मनलगाताहै वैसाहीफलउसको मिलताहै बिश्वासहीमूलहै यद्यपि कथा उनभक्तोंकी कि जो लीलानुकरणके प्रभावकरिकै परंपदकोगये बिस्तार करिके लिखीजाँयँगी पर दोएकबात यहां भीलिखताहूं मीरमाधवजी जो भगवत्भक्त बिख्यातहैं उनकी भक्तिकाआरंभ व कारण लीलानुकरणसे हुआ वृत्तांतयहहै कि अमीर कबीरथे व मज़हब महम्मदी रखतेथे राह चलते मथुरा वृन्दावनमें पहुंच अपने मुन्शीसे कि भगवत् उपासककथा बड़ाई रासलीला की सुनकर देखने की चाहहुई मुन्शीने उनकी बड़ी प्रीतिदेखकर पूजाकरना व मर्य्यादसे बैठालना व बैठना यहसब ठहराकर रासकरने वालोंको बुलाया और अमीरने प्रेम व मर्य्यादसे सब भगवत् चरित्रोंको देखा मन और प्राणसेचाह करनेवाले वास्तव स्वरूप श्रीनन्द-नन्दन महाराजके होगये औरमाल व रुपैया सब भगवत्के आगे भेंटकर दिया पीछे गृहबार संसार ब्योहार त्यागकरिके पीछे कपड़े पोशाक सब को त्यागकरदिया श्रीकृष्ण श्रीकृष्णकहते श्रीवृन्दावन की कुंजनमें निज अपने प्राणप्यारेको ढूंढ़ते फिरनेलगे अनुक्षणनाम जो भगवत्का मुखसे निकलताथा इसहेतु लोगोंने मीरमाधवनाम रखदिया और भगवत्भक्तों मेंगिना काव्यरचना उनकी में बालचरित्र भगवत् के बहुत हैं उसमें से एककसीदे की पहिली तुक फ़ारसी में है सो यहहै ॥ ताके जे खुदरानी सखुन श्रीकृष्ण गो श्रीकृष्णगो। बुगजारकत्र व मावोमन श्रीकृष्ण गो श्रीकृष्णगो ॥ अर्थ इसकायह है कि जबतक वचन बोलना तेरे आधीन है श्रीकृष्ण कहु श्रीकृष्ण कहु अभीमान व हम व हमारा यह सबछोड़ श्री कृष्णकहु श्रीकृष्णकहु ॥ थोड़ेदिनोंमें भगवत्का रूप उनके हृदयमें प्रकट हुआ और सिद्धहोगये उसरूप अनूपके रसमें मनरहनेलगे और श्रीम-द्भागवत् सुननेकी इच्छाहुई पर किसीने मन्दिरमें जानेनदिया भगवत् ने एक अपनेभक्त गोसाईंको सुनानेकी आज्ञादी उन्होंने बड़ेआदरसे कथा

सुनाना आरंभकिया एकबेरकथाकहते बहुत रातबीतगई और मीरमाधव मंदिरमें सोरहे आधीरातको भूखलगी भगवत् ने बिचारकिया कि आज मीरमाधव हमारे पाहुनहैं बड़े शोचकीबात कि भूखेरहैं इसहेतु अपने निजभोगके थालमें लड्वा व जलेबी और लोटेमें जल दशबारह बर्ष के लड़केके स्वरूपसे लेकरआये और कहा कि गोसाईंजी ने भेजाहै मीरमाधवजी ने लेकर खालिया और सोरहे प्रभातको थालसोनेका व लोटा न पाया तो पुजारी खोजनेलगे मीरमाधवजी के पास पड़ाहुआ देखकर पुजारियों ने अज्ञानसे अच्छामारा फिर जो भगवत् मंदिरमेंगये तो सब वस्त्र भगवत्के टुकड़े टुकड़ेपाये और भगवत् मूर्त्तिकीभी चेष्टा अतिउदास व क्रोधयुक्तदेखी तुरन्त गोसाईंजी के पासगये सब वृत्तान्तकहा गोसाईं जी नंगेपाय दौड़आये और मीरमाधवजी के चरणोंमें शिररखकर बहुत विनय व प्रार्थनाको किया जब मीरमाधव जी ने पुजारियों का अपराध क्षमाकिया तब भगवत्भी प्रसन्नहुये शिक्षाहुई कि मेरेभक्तको मुझसे कम न समझाकरें कथाके श्रोतालोगोंका गोसाईंजी पर संदेहहुआ कि मुसल्मानको अपनेपास बैठाकर कथासुनातेहैं एकदिन गोसाईंजीने परीक्षा के हेतु श्रोताओंसे पूछा कि कल्ह कथा कहांतक हुई थी किसीने कुछ न बतलाया मीरमाधवजीने कथाके आरम्भसे अन्ततक सबश्लोक और अर्थ और जो अक्षर गोसाईंजी के मुखसे निकलेथे सुनादिये सबसंदेह करने वाले लज्जितहुये एकबेर किसी राजा ने अतर श्री बिहारीजीको भेजा मीरमाधवजीने हरिकारेसे लेकरधरतीपर डालदिया सबमंदिरके भीतर सुगन्ध छायगई व बिहारीजी का श्रीअंग व वस्त्र अतरसे तर होगया जैसे हरिदासजी का वृत्तान्त लिखाहै वैसीही बातहुई दूसरी एकबात चन्दानामे डाकूकी यहहै कि वहठगी व डाकामारा कियाकरता था एक बड़े आदमीके यहां रासचरित्र होनेका समाचारपाया और यहभी सुना कि लाखरुपये का जेवर व असबाब रासहोनेके समय इकट्ठाहोगा पीठ ठोंक पांचसौ आदमी हथियारबंद के समेत आय पहुंचा और उसके आतेही राहमें हलचल व शोरपड़ा देखनेवाले अपना अपना जीवलेकर भागगये भगवत्स्वरूप जो रासमें थे उन्होंने उसबड़े आदमी से पूछा कि क्या शोरगुलहै उसने वृत्तान्त डाकके आनेकाकहा भगवत् मूर्त्ति ने

कहा कि क्याडरहै आनेदेव इसीकहने सुननेमें थे कि डाकूसीधा बेडर निर्भय सिंहासन के समीप आपहुंचा और चाहाथा कि गहने व असबाब पर हाथडालें आप भगवत्मूर्त्तिने सिंहासन परसे उठकर और हाथ चन्द्राका पकड़कर एकमुष्टिक मुंहपरमारी औरकहा कि इतनी ढिठाई सों यद्यपि भगवत् स्वरूपका दशबारह वर्षसे अधिकनथा पर वह पहलवान डाकू मुष्टिककी चोटसे ऐसालोटगया कि लंगोटकी भी सुधि न रही और उसकेसाथी ज्ञानहाथ से खोकर पांवसे माथेतक चित्रकीपुतली होगये पीछे जब उसडांकू की मूर्च्छाजगी तो अपने हथियारों को भगवत् के आगेरखकर चरणकमल इस प्रीति व प्यार से पकड़लिया कि फिर हृदयसे न छोड़ा और सब त्यागकर भगवत्भक्त व परायणहोगया तीसरा और एक वृत्तान्त कि किसी बड़े आदमीने यमुनाजी के किनारे पर रासलीला कराई काली के नाथनेका जो चरित्र आरम्भहुआ तो उसने लोगों से पूछा कि क्या भगवत् स्वरूप यमुना में कूदेंगे जो कम्मर कसते हैं यह बात भगवत् स्वरूप के भी कानमें पड़ी और आप बोले कि हां और यह कहकर यमुनाजी में कूदपड़े और एकसांप ऐसे भारीको जो दशबीस आदमीसे न उठसके पकड़लाये उसघड़ी उसबड़े आदमीने भगवत्स्वरूपीका प्रकाश व झलकऐसा देखा कि आंखें चकचौंध के चौंधगई और बेसुध होकर गिरपड़ा पीछे जब शरीरका ज्ञानहुआ तो कृष्णचरण का ध्यान हृदय में धरके सब त्याग दिया भगवत् परायण होगया काशी जी में पाठक जी परमभक्त रघुनन्दनमहाराजके हुये भगवत से साक्षात् दर्शनों की वांछा की शिक्षाहुई कि रामलीला में दशहरेके दिन भरत मिलापमें दर्शनहोंगे और परीक्षा इसकी तब जानना कि जबकोईवस्तु हमआप तुमसेमांगें तोजिसदिन भरत मिलापकादिन आया पाठकजी भी देखनेगयेथे मिलापहोने पीछे जिससमय भरतजी आंखोंसे आनन्द व प्रेमका जलबरसातेहुये श्रीरघुनन्दन स्वामीके चरणारविन्द पकड़रहेथे उसीसमय उस रामपूर्ति ने पाठकजी को बुलाया क्योंकि हुक्मसे आये भगवत् स्वरूपने आज्ञाकी कि कुछमिठाई प्रसाद दो [illegible] पाठकजीने सुनकर [illegible] भगवत्ने [illegible] और भक्तलोग पाठकजीको यह महाप्रसाद दिया

और ऐसीझलक उसमनोहर मूर्तिकी कि जैसीशास्त्रोंमें लिखीहैं पाठक जीने देखी कि बेसुधहोगये इसीप्रकार की कितनी कथाहैं कि विस्तार के भयसे नहींलिखते और दो चारबेर रामलीला में कितने मनुष्यऐसे देखनेमें आये कि अत्यन्त प्रेमकरकेअचेत व बेसुधहोजातथे और कितने मनुष्य ऐसेदेखनेमें आये कि प्रेमसे रासलीलामें अत्यन्त बेसुधबुध होजातेथे और कितने ऐसे देखनेमें आये कि पहिलेकेवलदेखनेके निमित्त सांझीबनाने रामलीलाके हुये पीछे उसीप्रभावसे निन्दितपथ छोड़कर कुछभगवत्की ओर सन्मुख होगये क्याअच्छी बातहो कि यहमेरामन पापीअपने चंचल स्वभाव को छोड़कर इसीलीलानुकरण के अवलम्बसे भगवत्के सम्मुखहो और बड़ाआश्चर्य यहहै कि संसारके सहस्रों प्रकारकेदुःख प्रतिदिन देखताहै परकबहीं उनकाभय करके भगवत्चरणों में नहींलगता जोसुख और धनइत्यादिक आपसेआप प्राप्तहोने वालेहैं उनकेहेतु सहस्रोंप्रकार के उपाय और अधर्म्म व मिथ्याबोलना इत्यादि करताहै और जोभगवत् कि करोड़ों जन्मोंतक नहींमिलता उससेऐसा असावधान व बिमुख कि निर्मूलउसका चिन्तनभी नहींकरता वाहरेमन तेरीबुद्धि व चतुराई अरेअभागे अबभीचेत और उससमाज और शोभा को कि जोग्रंथके मंगलाचरणमें कहिआयेहैं सदाचिन्तवन कियाकरता कि यहजन्म मरणकी अपारनदी सूखजाती और दुःखसुख संसार का छूटकर परम आनन्दरूप होजाता ॥

दो०—नील सरोरुह नील मणि नील नीर धर श्याम ।
लाजहिं तन शोभानिरखि कोटिकोटि शतकाम ॥

अलीभगवान् की कथा ॥

अलीभगवान् पहिले रघुनन्दन स्वामीमें निष्ठारखतेथे परवृन्दाबन में आकर उनकी कुछऔरही गतिहोगई अर्थात्जब रासचरित्रमें भगवत्का मनमोहनीस्वरूप देखा तो वहछबि माधुरीके प्रेमसे अपनी इष्ट उपासना सबभूलगये और श्रीप्रियाप्रीतमके रूपअनूपमें लग्नहोके उसी ओर केहोरहे बिहारी जीका चरित्र और रासलीला के चिन्तन और पूजा में मनलग गया और वही स्वरूप हृदय में बसिगया उनकेगुरुने जोयह वृत्तान्त सुना तो वृन्दाबनमें आये अलीभगवान् किसी बनमें चले

गये औरवहां गुरूके दर्शन हुये दण्डवत् करके विनय किया किमहाराज मेरे गुरू और स्वामी आप हैं पर बरबस ब्रज नागर जीने मेरे मनको अपनी ओर लगालिया है गुरूने जो दृढ़ प्रीति देखीतो प्रसन्न हुये और श्रीकृष्ण स्वामी के चरित्रों और प्रेमका उपदेश करके चले आये जाने रहो कि गुरूके आनेका अभिप्राय यह था कि अलीभगवान् पहिले तो श्रीराम उपासक था अब रासलीला को देखकर कृष्ण उपासक होगया कलह को किसी और मत मतान्तरवाले के पास बैठेगा तो उसी ओर होजायगा इसमें किसी ओरकाभी न होगा और दोनों लोक से जातारहेगा काहेसे कि स्वरूप भक्तिका शास्त्रों में यह लिखा है कि मनको दृढ़ी अचल एक ओर लगीरहै सो जब अलीभगवान् के मनको दृढ़देखा तो प्रसन्न हुये ॥

विपुल विठ्ठलकी कथा ॥

विपुलविठ्ठल जी स्वामी हरिदासजीके चेलेनिधवन में भगवत् भक्त माधुर्य्यउपासक हुये जब स्वामीहरिदासजीभगवत्केपरमपदकोगये तो उनके चरणकमलों के वियोगसे अत्यन्त शोकयुक्त रहा करते एकदेर रासलीलामें हरिभक्तोंने उनकोभी बुलाया हरिभक्तोंकी आज्ञा उल्लंघ न करसके जब वहां गये और प्रिया प्रीतमके स्वरूपको देखा तो भगवत् का नृत्य और कीर्तन और भाव मनमें समाय गया और निज भगवत् स्वरूपमें मग्न और तद्रूपहोगये स्वामी हरिदास जीके दर्शन उसी दशामें हुये और परमआनन्द द्विगुणाहुआ फिरतो भगवत्के छविसमुद्र में ऐसी डुबकियां लगाईं कि फिर न निकलसके उसीरूप और भावमें मिलकर भगवत् के नित्यविहार में जामिले ॥

राम राय की कथा ॥

रामराय राठौरबेटा राजाखेम्हाल केपरमभक्तहुये भगवत्भक्ति औरभावको ऐसादेशमें प्रकटकिया सबकोभक्ति सहजहोगई जिस प्रकार शिवजी महाराज ने इसपरमधर्मकोसंसार में फैलाया और आप आचरण किया इसी प्रकार रामराय भी हुये जो कोई भगवत् भक्तिसे विमुख थे उनका त्यागकिया और जिनको बोधक उपदेश के योग्य जाना उनको उपदेश करकर सही पक्कीपर किया प्रताप राजाभक्त के सदृश

था कि जिनका बेटा लड़काई में व्याघ्रका कान पकड़कर जंगल से ले आयाथा अर्थात् उससमयमें और कोईराजा उनके दृष्टान्तके योग्यनथा और किसप्रकार उनके भाव की बराबरी किसी से होसके कि अपनी लड़की को गन्धर्वबिबाह की रीति से भगवत्मूर्ति के अर्पण करदिया वृत्तान्त यहहै कि शरद्पूनों अर्थात् जिसरात ब्रजचन्दमहाराज ने रास चरित्र कियाथा राजा ने समाज रासलीला का कराया भगवत् के स्वरूप और चरित्र और राग रंग और नृत्यको देखकर प्रेममें बिह्वल होगये एक ब्राह्मण जोमंत्रीथा उससेपूछा कि भगवत्को क्या वस्तुभेंट करनी चाहिये ब्राह्मणनेकहा जो वस्तुआपको प्यारीहो राजाचुपहोगया विचार करके बोला म्हाको म्हांकी छावरी प्यारीछे अर्थात् हमकोअपनी लड़की प्यारीहै यह कहकर महलमें गये और लड़कीको शृङ्गार आभूषणआदिसे शृङ्गारकरके लेआये और गांधर्वी रीतिसेभेंटकिया पीछेधन व असबाव इतना किजीवन पर्य्यंत सैकरों बर्षवह लड़की को दुःख ना होय नेछावरि करकेभक्तिभावका अन्त इससंसारमें सूर्य्यके सदृश प्रकाशित करदिया ॥

खड्गसेनकी कथा ॥

खड्गसेनजी जातिकायथरहनेवालेग्वालियर भगवत् भक्तरासनिष्ठ और प्रेमीहुये पदरचना बहुतललित करतेथे ब्रजगोपिका व ब्रजग्वालों के मा बापका नाम ग्रन्थसे ढूंढ़ ढूंढ़कर एक ग्रंथ बनाया और दानलीला और दीपमालिका का चरित्र ऐसा ललित बनाया कि जिसके पढ़ने सुनने से भगवत् में निश्चय करिके प्रीति होजाती संपूर्ण अवस्था को श्रीब्रजचन्द महाराज के और उनके सखा सखियों के चरित्रों में व्यतीत किया औ श्रीनन्दनन्दन स्वामीके चरणकमलोंमें ऐसीप्रीति और लगन थी कि सिवाय उनके चरित्रों के और कोई बात नहीं रुचती थी और रासलीला और दूसरे चरित्रों का समाजउत्साह सदारहा करताथा पर शरद्पूनों को यह प्रण दृढ़था कि बहुत द्रव्य लगाकरके रासलीला कराय़ाकरतेथे एकबेर प्रिया प्रीतमके रासविलासकी दशामें हँसी और खेल व राग व नृत्य और परस्पर देखना व मुसक्याना व सकुचाना और श्रीलाड़िलीजीका मान और आप श्रीलालजीका मनाना देखकर ऐसेबेसुध व तदाकारहोगये कि देहको उसरासलीलाके प्रिया

प्रीतमके नेछावर करिकै प्राणमुख्य रसरास और नित्यबिहारमें प्राप्त किये और प्रेमकीदशा और रासनिष्ठाकी महिमाको उसके प्रभावकरिके नित्यरासबिलास और भगवत्स्वरूप प्राप्तहोताहै लोकमें प्रकटकरके भगवत्भक्ति और भावको शिक्षाकिया॥

वल्लभ की कथा॥

वल्लभजीचेले नारायणभट्टजीके ऐसेभक्त और प्रेमीहुये कि जिन्होंने उस व्रजवल्लभ महाराज परमानन्द घनको जो आनन्दका भी आनन्द और सुखकाभीसुखहै रासचरित्रमें नृत्य और कीर्तनसे और अपनीआंखों के हाव भाव और मन्द मुसक्यान से आनन्द और सुखदिया अर्थात् रासचरित्रमें कबहींललिता और कबहीं बिशाखाकारूप बनाकरते और ऐसेप्रेम और प्रीतिसेभगवत्को रिझायाकरते कि तद्रूप ललिता व बिशाखाके होजाते वृन्दाबन बासकरके अपने भक्तिभाव और उदासता व प्रभाव से लोगोंका उद्धारकिया और भगवत् के महोत्साह करके लोगों को परम आनन्द दिया॥

नाथ भट्ट की कथा॥

नाथभट्टजी फणी अर्थात् शेषजीके बंशमें परमभक्तहुये फणीबंश का यह अर्थहै कि बलदेवजी महाराज शेषका अवतारहुये और बलदेवजी का अवतार नित्यानन्दजी सोनित्यानन्दजीके बंशमेंजाहोय उसकोफणी बंश अर्थात् शेषजीका बंशकहना योग्यहै सो नित्यानंदजीके चेले सनातन जी और सनातनजीके कृष्णदास कृष्णदासजीके नारायणभट्ट और नारायणभट्ट के चेले सनातनजी और सनातनजी के कृष्णदास और कृष्णदासजी के नारायणभट्ट और नारायणभट्ट के चेले व पुत्र गोपाल भट्ट और गोपालभट्ट के पुत्र नाथभट्ट जो हुये ऊंचेगांव में रहतेथे तंत्र शास्त्र व वेद व पुराण और सबशास्त्रों को विचारकर उनका जो सार व अभिप्राय भगवत्भक्ति और प्रेमहै उसको अपनेमनमें दृढ़स्थितकिया रूप और सनातन व जीवगोसाईं व नारायणभट्ट ने जो कुछ अपनी काव्य रचनामें भगवत्का माधुर्य व शृङ्गार रस बर्णन कियाहै उसको अपना सर्वस्व जानकर उसके अनुसार आचरण किया और शृङ्गार व माधुर्यताके स्वरूपहुये रसिकबिहारी महाराजकी रासलीला आनन्द

व विश्वास से बनाते और रासनिष्ठामेंपरमप्रेम और निश्चय था विमल हृदय व प्रियबचन बोलनेमें एकहीथे व रास उपासनाके भक्तोंमें मुख्य अर्थात् राजाहुये और जानेरहे कि रास निष्ठानाथजीके घरानेमें प्राचीन इसकाल पर्यंत संगृहीत बनाहै॥

———※———

दशवीं निष्ठा॥

दया व अहिंसाके वर्णनमें कथा छः भक्तों की है॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरण कमलके स्वस्तिक अर्थात् सथियेकी रेखा को दण्डवत् करके धन्वन्तरि अवतारको दण्डवत् करताहूं कि जगत के उद्धार के हेतु समुद्र में अवतार धारण करके फिर इस संसारमें प्रगट हुये दया भगवत् का स्वरूप है महाभारत में लिखा है कि सब धर्मों में दया परमधर्म है जब तक दया नहीं तब तक कोई धर्म नहीं गिने जाते हैं भगवत् व स्कंद पुराण में दया के गुण बर्णन करके अन्त में कहाहै कि जिसको दयाहै उसने सब धर्म करलिये नारदजीसे भगवत् ने सबधर्म बैष्णवोंके बर्णनकरके कहाहै कि दया व भजन व साधुसेवा सब धर्मोंमें मुख्यतर है और उनमेंभी दयाका स्वरूप यहहै कि दूसरे किसी जीवके दुःख देखकर हृदय द्रवीभूत और दुःखित होना और वह दुःख व द्रव्य बिनाकारण व सम्बन्धके हो और जबतक उसकादुःखदूर न होलेवे तबतक द्विगुण दुःख उस दयावानकोरहै उसदयाके दोप्रकार हैं एक संसारी दुःख देखकर किसीका अपनेको दुःख व दयाहोना और उसके दूरकरनेका उपाय मनक्रम बचनसे करना और क्रोधको न आना व मधुरबचन बोलना और किसीको दुःख न देना और उदारता व दातव्य और किसीका न्यून शोचना धरती को देखते चलना इसीप्रकार और दूसरे कार्य्य सब कि जिससे किसी को दुःख न होय और अथवा किसीकादुःख दूर होताहोय यहसब अंग दयाके हैं दूसरा पारमार्थिक दया अर्थात् पारलौकिक दुःख देखकर दयाहोना और वह यहहै कि अनादिकालसे जो जीवजन्म मृत्यु नरकादि अनेकभांतिके दुःख व यातनामें फँसाहै उनदुःखोंको देखकर दयाहोना और जिसप्रकारसे होसकै

भगवत् के सन्मुख उसजीवको करिके जन्म मरणके दुःखोंसे छुड़ाकर कृतार्थ करदेना सोई दोनों प्रकारमें पहिला प्रकार तोसाधकको होताहै और सिद्ध और भगवत्भक्तों और विरक्तोंको दोनों प्रकारका शास्त्रोंमें महिमा दान व कृपाआदि एकअंग दयाके इसभांतिलिखे हैं कि उनमें से किसी एकपर दृढ़होजाय तो उसके सहारेसे भगवत् मिलजाता है जो कोईदयापर दृढ़है उसकी महिमा किससे वर्णनहोसक्तीहै एकसाहूकार कालके फेरफारके दरिद्रीहोगया चार यज्ञ उसने किये थे किसी ऋषीश्वरके उपदेश से एकयज्ञके फललेनेको धर्मराज के पासचला एक कालके भोजनकी सामग्रीपासथी उसकीरसोई बनाकर जबखानेकोबैठा तब एककुतिया उसी घड़ीकी जनीहुई भूख से बिकलआई साहूकारको दया उत्पन्नहुई चौथाई भोजन उसको देदिया पर भूखनगई तब दूसरी चौथाई दी फिरभी वहीदशारही फिरचार बेरमें सब भोजनदेदिया और पानी पिलादिया संतुष्टहोकर चलीगई और साहूकार भूखा प्यासा धर्मराजकेपास पहुंचा हिसाबकेसमय धर्मराजने कहा कि पांचयज्ञमें एक यज्ञ अक्षयहै जिसका कबहीं नाश न हो तू किसका फल चाहताहै साहूकारने चकित होकर विनय किया कि महाराज मैंने चार यज्ञकिये हैं पांचवां यज्ञ कौनसाहै धर्मराजनेकहा कि पांचवां यज्ञ अक्षय वहहै कि तूने कुतियापर दया करके अपना सब भोजन देदिया अभिप्राय यहहै कि थोड़ीसी दया यज्ञके फलको देतीहै कोईका सिद्धान्त यहहै कि जो दयाहोगी तो जीवघात करनेसे आपसे आप किनारा करैगा और कोई यह कहतेहैं कि दया अहिंसाका एकअंग है और गीताजीमें भगवत् ने अहिंसा धर्मअलगगिना और दया अलग सो इनके विरोधका निर्णय व वाद लिखना सब व्यर्थहै शास्त्रमें जो दया व अहिंसाकेअंगसब सुनने में आवें तो बराबरहैं इसहेतु दोनोंको घट व बढ़ती न न्याय समझलेना चाहिये सो यह अहिंसाधर्म वहहै कि जिसके वर्णनमें शास्त्रोंने यहकहा है कि अहिंसा सब धर्मोंका नायकहै सोरह अध्याय भगवद्गीता में भगवत्ने सब धर्मोंमें प्रथम अहिंसा को वर्णनकिया और इसीप्रकार पातंजलशास्त्रमें पतंजलि महाराज ऋषीश्वर ने जहां आठ सिद्धि वर्णन की तहां सबमें प्रथम अहिंसा सिद्धि लिखीहै इस कारणसे कि जो अ-

हिंसासिद्धी सिद्धिहोजावे तोअन्यसिद्धि आपसेआप प्राप्तहोजावें किस कारणसे कि जब अहिंसा सिद्धीकीओर मन दृढ़हुआ तो सबजीवभगवत् रूप विचारमें आवेंगे और जब भगवत्कोसबजगहप्राप्तदेखा तोभगवत् मिलगया और जबभगवत् मिला तो सबकुछ मिलगया जानेरहो कि अहिंसाआदि आठसिद्धी पातंजलिमें भगवत्की प्राप्ति होनेकेहेतुहैं और अणिमादिक आठसिद्धी संसारकेअर्थ उनसे अलग ठग व डांकू भगवत् प्राप्तिकीराहकेहैं अरेमन बिचारकर कि यहसमय फिरहाथनहीं आवेगा जो अबभी श्रीकृष्ण स्वामीके चरणमें न लगा तो फिरकहीं ठिकानानहीं औरबिचारकर कि हिरण्यकश्यप व रावण व सहस्रबाहु आदिक सैकरों ऐसेऐसे होगये कि जिन्होंने यमराजकोभी अपने बशमेंकरलिया था जब कि वे सब मृत्युसे न बचे तो तेरी क्या गिनतीहै जिनके साथ तू प्रीति करके अपना जानता है वे केवल इसशरीर और अपने सुखके साथीहैं संसारसमुद्रके उतारनेमें कोईतेरा सहाय करनेवालानहीं फिर तू उनके हेतु क्योंअपने परलोकका नाशकरताहै अब अपनी हानि लाभकोसमझ और इस समाजके चिंतवनमें रहाकर कि दोनोंलोक तेरे बनें जिससमय जनकपुरबासियों के करोड़ोंजन्मों के जपतप पुण्यके फल उदय भये और राजा जनकके ज्ञानबैराग्यके वृक्षफले अर्थात् श्रीरघुनन्दन स्वामी शोभाधाम ने उनलाखों राजोंकी सभामें कि जो सुमेरु व कैलासको राई के दानेके सदृश उठासक्ते थे और उस राजमण्डप में कि जिसकेद्वार व दीवार सब स्वर्णमयभांतिभांतिके जवाहिरातसे जड़ेथे और चँदोवाजरी का कि जिसमें झालरें मोतियोंकी लगीथीं छाईथीं शिवजीका धन्वा तृ-णके सदृश तोड़कर डालदिया और धरती आकाश से फूलोंकी बर्षा व जयजयकार व नेवछावर व बधाव बजना आरम्भहुआ उस समय जनक-नन्दिनी अखिलब्रह्मांडेश्वरी जयमाला पहिराने को चलीं शोभा जग-ज्जननी की यह मतिमंद तो क्या लिख सक्ता है इस ध्यानमें शारदागूंगी और शेषजी बिनाजीभ हैं सखियों के समाज में कि वह सब शोभा व छबिकी मूर्त्तिथीं धीरे धीरे बड़े उत्साह और उमंग समेत परमानन्दसे भराहुआ गुरुजन लोगोंको लज्जासे लजातीहुई शोभाधाम महाराजके संमुखपहुंची और कहनेसे सखी सहेलियोंके दोनों हस्तकमल उठाकर

जयमाला दशरथनंदन महाराज के गलेमें पहिराई जिससमय दोनोंका मुख चन्द्रमा एकसे एक बराबरहुआ सबओरसे मन एकाग्र होकर परस्पर रूप अनूप देखनेमें नयन एकसे एकका मिलकर रहगये उस समयका समाज और सभा देखकर देवताआदि तो अपने अपने स्थानपर भीतके चित्रसे होगये और जनकआदि को महाआनंद व प्रेमसे बेसुधिता होगई दशरथनन्दनके श्यामसुन्दर कपोलोंपर कुण्डलके मोतियों की झलक ऐसीछविदेतीथी कि बरबसमन हाथसे जाताथा और ऐसाही भाल पर केशर व गोरोचन का तिलक विराजमान शिरपर जवाहिरात जड़ा किरीटमुकुट आंखें अरसीली व रसीली की चंचल चितवन गले में कंठी व फूलों की माला बागा धानी जरीका शोभायमान कमरकसे हुये हैकल जड़ाऊ दोनोंओर पड़ेहुये एकओर तरकस शोभितहै और दूसरी ओर कमान व जनकदुलारी के दोनों हाथ मालालिये कांधेपर आयेहुये और मंदमुसक्यान दोनों सन्मुख परस्पर विराजमान ॥

शिवि की कथा ॥

राजा शिविकी कथा पुराणों में और विशेषकरके महाभारतमें लिखी है कि दयादान व शरण देनेवाले और धर्मात्मा हुये अश्वमेधादिक बहुत यज्ञ करके ब्राह्मणों को हरएक प्रकारके दानदिये भगवत् प्रेरणा करके राजाइन्द्र को दया व शरणागतवत्सलताकी परीक्षाकी चाहनाहुई अग्नि देवताको कबूतर बनाकर आप बाजका रूप धरके आया कबूतरने बाज के भयसेकांपता राजाके दामनमें शरणली व बाजसे व राजासे बड़ावाद हुआ बाजकहे कि हमाराआहार छीनतेहो राजाकहे कि शरणमेंआयेको न रक्षाकरना अधर्महै नितान्त अपनेशरीरके मांसदेनेपर बाजमान रहा जब मांसपलरेपर काटकेधरा तो कबूतर का पलरा धरती न छोड़े मांस काटकाट धरतेधरते नहीं बराबरहुआ तब राजा शिरकाटकर धरनेलगा तब दोनोंदेवता प्रकटहुये वरदानदेकर स्तुतिकी व शरीर जैसाथा वैसा करके चलेगये भगवत्भक्तभी भगवत्रूपहैं तोकुछकरें आश्चर्यनहीं ॥

राजा मयूरध्वज की कथा ॥

राजामयूरध्वज और उनकीधर्मपत्नी और ताम्रध्वज उनकापुत्र ऐसे परमभक्त दयावान्हुये कि भगवतने घरबैठे दर्शनदिया और परीक्षा से

दृढ़देखा वृत्तान्तयहहै कि जब राजायुधिष्ठिर ने अश्वमेधयज्ञकिया और अर्जुनको रक्षाके निमित्त साथ करके घोड़ा यज्ञकाछोड़ा तो उसी समय राजामयूरध्वजने भी यज्ञ आरम्भकियाथा व ताम्रध्वज घोड़के साथ था राहमें दोनोंका भटभेराहुआ ताम्रध्वजने उस अर्जुनको कि जिसनेमहाभारत में विजयको पाया था और उन श्रीकृष्ण महाराज को कि शुद्ध सच्चिदानन्द घन पूर्णब्रह्म हैं और जिनके नामकी कृपासे जयकानाम भी जयहै जीतकेघोड़ेको बलसे छीनलिया भक्तानुकूल महाराजनेदेखा कि यहां दोनोंभक्तहैं एकको जय दीजाय तो दूसरे की अभिलाषा भंग होगी इसहेतु परीक्षा के निमित्त आप वृद्ध ब्राह्मणबनि और अर्जुन को लड़केका रूपबनाकर राजामयूरध्वजके द्वारपरगये राजायज्ञशालामें था दण्डवत् करके आदर व बिनयपूर्वक पूछा कि आगमन का हेतुक्याहै ब्राह्मणनेकहा कि जंगलमें एकब्याघ्रहै उसने इसबालकके खानेकीइच्छा की बहुतमैंनेकहा कि इसकेबदले हमकोखाले पर उसने न माना कहा कि तू बूढ़ाहै तेरामांस मेरेकाम का नहीं नितान्त बड़ीप्रार्थना व रोदन करनेसे यहठहरा कि जो राजाका आधाशरीर लादे तो इसबालक को छोड़देवैंगे इसहेतु तुम्हारेपासआयाहूं जोबनसकै तो इसबालककीरक्षा करो राजाको बड़ीदयाआई और कहा कि निश्चय यहशरीर एकदिन जानेवालाहै ऐसे काममेंआवे तो इससेअच्छा क्याहै ब्राह्मणने कहा कि एकबचन ब्याघ्रका यहभीहै कि जिसआरेसे राजा का शरीर चीराजाय वहआरा एकओर राजाकेबड़ेबेटेके हाथमेंहोय और दूसरीओर राजाकी स्त्रीके हाथमेंहोय और किसीप्रकारका किसीकोशोक व दुःखनहो राजा ने इसबातकोभी अंगीकारकिया ताम्रध्वजने ब्राह्मणसे कहा कि शास्त्रके मतसे बेटाभी बाप का रूपहै जो मेरा आधाशरीर लियाजाय तो अच्छी बातहै ब्राह्मणने कहा कि तू राजानहीं फिर राजाकीस्त्री ने कहा कि मैं भी राजाकी अर्द्धांगीहूं जो राजाकेआधेशरीरके बदले मुझकोलेजावे तो ब्याघ्रकी और अधिकसंतुष्टताहोय ब्राह्मणनेकहा कि तू स्त्रीहै राजानहीं फिर तो ब्राह्मणने ताम्रध्वजको राजाके साम्हने इसकारण कि परस्पर देखकर मोह उत्पन्न होजाय व पीठपीछे स्त्री को खड़ाकिया और दोनों आरा राजा के शिरपर रखकर खींचनेलगे जब आरा राजाकी नाकतक

पहुंचा तो वामनेत्र से राजाके पानी निकला ब्राह्मणने कहा बस यह शरीर मेरे कार्य्य के योग्य नहीं कि राजा दुःखितहोकर देता है राजाने विनयकिया कि महाराजकृपाकरो क्रोध न करिये जिसओर की आंखसे पानी निकलाहै उसओरके शरीरको यहदुःख है कि मैं बड़ापापी हूं कि किसीकाममें न आया दाहिनाअंग बड़ा बड़भागीहै कि ब्राह्मण के काम आया भगवत् करुणासिंधु इस बचनके सुनतेही भक्ति और बिश्वाससे अत्यन्त प्रसन्नहुये कि प्रेममें बिह्वल होगये और राजाको आरेके नीचेसे उठाकर छातीसेलगालिया और निजरूपसे राजाको दर्शनदिया भगवत् के स्पर्शहोतेही राजाके शिरका घाव अच्छाहोगया और भगवत्‌ने कहा कि तुम्हारी धर्मनिष्ठासे बहुत प्रसन्नहूं जो चाहनाहो सो कहो पूर्णकरूं-गा राजा ने हाथ जोड़कर निवेदन किया कि हे करुणासिंधु महाराज आपने अनुग्रहकिया तो और कौन पदार्थ अब रहगया जो मांगूं केवल चरणकमलोंकी प्रीति चाहताहूं और एक प्रार्थनायह है कि कलिकाल आगेपर आनेवालाहै सो अब ऐसी परीक्षाओंसे भक्त बचेरहें भगवत्‌ने अंगीकारकिया और फिर अर्जुन और राजाका भेंट मिलाप कराकरमेल करादिया राजाने बहुतहर्षसे घोड़ा फेरदिया इस चरित्र से भगवत्‌को कुछ अर्जुनकागर्व दूरकरना प्रयोजनथा सोभीहोगया॥

भवनकीकथा॥

भवन राजपूत चौहानके राना सरकार में दोलाख रुपया के उत्तम पदवीवाले राजसेवक और भगवद्भक्त दयावान् और साधुसेवीहुये एक बेर रानाकेसाथ शिकारमें एक हरिणीके पीछे घोड़ाडाला और उसको तरवारसेमारा वह गर्भसेथी बच्चे सहित दोटुकड़े होगई भवनको बड़ी दया और लज्जाहुई मनसे कहनेलगे कि प्रकटमें तो मैं ऐसा कि भग-वत्‌भक्तोंमें गिनाजाताहूं और आचारणयह कि जो भगवत्‌बिमुखभी न करें उसीसमय प्रणकिया कि लोहेकी तरवार रखनी प्रयोजननहीं सो एक तलवार काठकी और मूठउसकी लोहेकी बनवाली जबकबहींराना के दरबारमें जाते उसी तरवारको साथ लेजाते एक पट्टीदारभाईकोयह वृत्तान्त ज्ञातहुआ राना से कहदिया राना को बिश्वास न आया उसने सौगन्द खाकर कहा तबभी रानाने इसके निर्णयकरने में एकबार प-

ताया जबउस चुगुलीखोर ने यहहठकिया कि जो झूंठ ठहरे तो मुझको बधका दण्ड दियाजाय तब एक जगह सभा की और सब उत्तम राजसेवक इकट्ठेहुये पहिले राना ने अपनी तलवार निकालकर लोगों को दिखलाया फिर बारीकेसाथ सबकी तलवारदेखी जबबारी भवनमहाराजकी पहुंची तब तलवार निकालकर यह कहा चाहतेथे कि जो चाहो सो करो तलवार मेरी दारु अर्थात् काठकी है पर भगवत्इच्छा से यह बचन मुखसे निकला कि सार अर्थात् पोलादकी है यहकहकर तलवार को मियानसे ईंचा और ऐसी निकली कि मानों हज़ार बिजुरी एक बेर बादलसे निकली उजेरी व तड़पसे सबकोआंखें बन्दहोगईं रानाने कहा कि मारो चुगुल अभागेके शिरपर और यह कहकर उसके बधकी इच्छा की भवनने बिनय किया कि इसने कुछ मिथ्यानहीं कहा है भगवत्की इच्छासे यह तलवार पोलादकी होगईहै नहींतो बास्तव करके लकड़ी कीथी रानाको भक्तिका बिश्वास हुआ और चाकरी के परिश्रमसे छुट्टी करके पट्टा जागीरका सदाकालका लिखदिया और बिनतीकी कि जो दर्शन देनेको आयाकरो तो मेरा निस्तारहै जानेरहो कुछ आश्चर्य्यनहीं जो काठकी तलवारको भगवत्ने पोलादी करदी किसहेतु कि भगवद्भक्तोंकी इच्छा व बचन तलवार से अधिकहैं कि पापियोंके पापकी सेना को वधकरके दृढ़ राजभक्ति देशको कृपाकरके देदेते हैं जो उनकेमुखसे एक लकड़ी के निमित्त बचन पोलाद निकलगया और उसीप्रकार वह होगया तो क्या आश्चर्य्य है ॥

कथारांकाकी ॥

यह रांका परमभक्त भगवत्के जातिके कुम्हार हुये जो कुछ अपनी जाति वृत्तिसे उत्पन्नकरते सो सब हरिभक्तोंकी सेवामें लगादेते एकबेर कच्चे बरतनोंका आवां बनाकर तैयारकिया और किसी कारणसे दिनमें आग न डाली रातकेसमय एक बिलाईने बच्चेदिये और एक कच्चेबरतन में रखकर चलीगई रांकाजीको यह बात मालूम न हुई प्रभातको आग लगादी जब आगने अच्छाप्रकाश व बल किया तब यह बातजानी बिकलहोकर बच्चोंके निकालनेके उपायमें लगे पर कुछ न होसका अधिक दुःख व शोकहुआ उस रोदनकरनेके समय सिवाय एक भगवत्केऔर

कोई रक्षा करनेवाला न सूझा जानेरहो कि जो रांकाजीकासब घर जल जाता अथवा उनके प्राणोंको संकट कोई आता तो भगवत्से कबहीं न कुछ कहते किस हेतु कि जब भगवत्भक्त अपने स्वामी से मुक्ति तककी याचनानहींकरते दूसरी बातें तुच्छकीकब चाहनाकरतेहैं और विनामांगे जांचे उनकीइच्छा सब पूर्ण होजातीहै भगवत्से मांगनेकाप्रयोजन नहीं इस लिखनेका प्रयोजन यह कि भगवत्भक्तों की दया और करुणा पर दृष्टिकरना चाहिये कि एक तुच्छजीवका दुःखनहीं सहिसक्के और बिकल-ताईकी अवस्थामें जोकाम कबहीं न किया सोभी करबैठतेहैं जबभगवत्ने विकलदशा अपनेभक्तकी देखी तो यहचरित्रकिया कि सबआँवाँ पकगया परवहबरतन जिसमें बच्चेथे कच्चारखदिया अग्निकी उष्णताभी न पहुंची रांकाजी उनबच्चोंको कुशलदेखकर तनमेंनसमाये और भगवत्को अति प्रेमसे दण्डवत् प्रणामकिया तबसे कुम्हारोंमें यह रीतिहै कि जबआँवाँ तैयारहो उसीदिन आगलगा देतेहैं ॥

केवलराम की कथा ॥

केवलरामजी ऐसेपरमभक्त और भागवतधर्मके प्रवृत्ति करनेवालेहुये कि जिनलोगोंने कहींभक्ति और भगवत् और गुरू और भक्तोंके नाम कोभी नहींजानाथा ऐसेलोगोंको पवित्रकरके भगवत्में लगादिया दुःख सुख मित्रशत्रुसे अलग और तिलकमाला नवधाभक्तिके वशीभूत बड़दृढ़ थे भगवत्के चरणोंमेंप्रीति और भक्ति निष्कामहुई और लोगोंपर दया और कृपाविना कारण सबके घरपरजाकर कियाकरतेथे कि श्रीकृष्ण स्वामीकीसेवा और नाममें मनलगाओ यहदान हमकोदेव और भागवत् धर्मउनको समझायाकरते जहांकहीं दशबीस साधुदेखते उनको शाल-ग्रामजी और भगवत्मूर्ति अपनेपास से देकरपूजा और सेवाकी रीति उपदेशकियाकरते एकवेरवनजारेने अपने बैलपर कोड़ामारा स्वामीजी बेसुधि व बिकलहोकर धरतीपर गिरपड़े लोगोंने दौड़कर उठाया जो शरीरपर निगाहकिया तो साठकोड़ेकी मारका उपड़ाहुआ साफदिखाई पड़ा सबको आश्चर्य्यहुआ कि यहरीतिदयाकी जानेकिसीने सुनीहोगी ॥

हरिपाल की कथा ॥

हरिपालजी ऐसेभगवत्भक्तहुये कि वैष्णवों को अपनापिता का-

रके भगवत् का भक्तकरदिया भगवत् भक्तोंसे ऐसीप्रीतिथी कि कबहीं उनसे अलगनहींहोते और जिसप्रकार राजाजनक ऋपीश्वरोंके सत्संग और जमावड़ीमें रहाकरतेथे इसीप्रकार हरिव्यासजी रहाकरते साधोंकी सेवाकरनेवाले ऐसेहुये कि संसारमें कदाचित् कोईहुआहो सिवाय भगवत् और भक्तों के चरित्र से दूसरी ओर मननहीं देते एकबेर चरथावल ग्राममें हराबाग देखकेटिके और इच्छाथी कि भगवत्की सेवापूजा करके भगवत् प्रसाद बनावेंगे उसी बागमें एक दुर्गाका मन्दिर था किसी ने वहां बकारा मारा हरिव्यासजी को दयालुता करके कि स्वभाव हरि भक्तोंका है बहुत करुणा आई और मनकोव्यथा हुई भूखेव्यासे भजन करतेरहे दुर्गा महारानी भगवत् भक्तोंके दुःखको न सहिसकीं साक्षात् होकर हरिव्यासजीसे कहा कि भगवत्प्रसाद करैं हरिव्यासजीने उत्तर दिया कि जहांऐसा अन्याय होताहै तहांरसोईं किसप्रकार होसक्ती है दुर्गाने कहा कि मेरे ऊपर कृपाकरके अपराध क्षमाकरो और भगवत् मंत्र उपदेश करके इसनगरको पवित्र करदेव हरिव्यासजी ने देखा कि दुर्गाके चेलेहोनेसे सबलोग दुरुस्तहोते हैं इसहेतु भगवत् मंत्रका उपदेशकिया जबदुर्गा बैष्णवहुई तब नगरको बैष्णव करना उचित जाना जो सरदार था उसको रातके समय पलंगसे डालदिया और कहा कि जो अपना भलाचाहताहै तो हरिव्यासजीका सेवकहोकर भगवत्भक्ति अंगीकार कर नहीं तो सबनगरको नाशकरदेऊंगी तुरंत सबलोगआये चेले होकर भगवत्भक्त होगये और जो अपराध किये थे सबसे छुट्टी पाई हरिव्यास जी कुछदिन वहां रहे ऐसा उपदेश किया कि भंगीतक हरिभक्त होगये॥

ग्यारहवीं निष्ठा॥

वृत व उपासके वर्णनमें जिसमें कथा दोभक्तों की हैं॥

अम्टत कुलिशरेखा श्रीकृष्णस्वामीके चरणकमलों को दण्डवत्करके नृसिंह अवतार को प्रणाम करताहूं कि अपने परमभक्त प्रह्लाद के निमित्त मुलतान नगर में नृसिंह रूप धारण करके हिरण्यकश्यप को परमधाम दिया उपासक भगवत् प्राप्तिके निमित्त उपायदृढ़ है कि सब कोई बिनाअन्य परिश्रम भगवत् को पहुंचसक्ताहै लिखाना श्लोक श्रुति

व पुराणोंका कुछप्रयोजन नहीं कि एकादशी व जन्माष्टमी व रामनवमी आदिके माहात्म्य की पोथियां और अन्यव्रतों की विख्यात व सबकोई जानते हैं निश्चय निर्णयव्रत एकादशी का दशमीके ऊपरहै इस कारण से कि दशमीविद्धाव्रत सबस्मृति व पुराणोंमें वर्जितलिखाहै और कारण वर्जने का यहहै कि दशमी के दिनदैत्योंने जन्मलिये जो दशमी विद्धा व्रतहो तो दैत्य और राक्षसों की वृद्धिहोकर धर्मका नाशहोजाय और एकादशीके दिन देवता उत्पन्नहुये इसहेतु एकादशी व्रतसे देवताप्रसन्न होतेहैं और भगवत् प्रसन्न होकर व्रतकरनेवाले के हृदय में प्रकाशित होतेहैं वेधमेलको कहतेहैं अर्थात् पहिले दिन आरंभ में दशमीहो फिर एकादशी सो वेधके निर्णयमें कईविरोधहुये स्कंदपुराण में चालीसघड़ी का वेधलिखाहै अर्थात्जिसके आरंभ में चालीसघड़ी दशमीहोय तो उसके प्रभातव्रत करनाचाहिये जो चालीस घड़ी से अधिक दशमी होय तो दूसरेदिन अर्थात् द्वादशी का व्रतहोगा सो इस वचन पर निश्चय कालीकंठी वाले रखते हैं जानेरहो कि कालीकंठी वाले बहूजी के चेले कहलाते हैं मत उनका वैष्णवी है दुआबे यमुना व गंगा से सिवाय दूसरे देशमें इस पंथवाले नहीं हैं मौज़ेरनदेवा सहारन पूरके इलाक़े में उनका गुरद्वारा है आचार्य्य इस पंथका योग्य व सिद्ध था रीति उपासनाकी उचित व अंगीकार योग्यहै व शास्त्राज्ञा के अनुसार है पर इस समय इस पंथ में कोई पण्डित योग्य व सिद्धि और जाननेवाला भेद उस उपासना का नहीं इस कारणसे प्रकाशकम है बरु बहुत घराने से न जानने के कारणसे वह उपासना त्याज्य होगईहै अब स्कंदपुराण में बीसप्रकार का निर्णय इसव्रत में आया अर्थात् जो किसीने इकतालीस घड़ी दशमी को उचितजाना तो वह एक प्रकार ठहरी और इसीभांति किसीने पैंतालीसघड़ीको सिद्धान्तकिया तो वह दूसरीप्रकारहुई इसीक्रम से साठघड़ी तक बीसप्रकारकी होगई और नाम हरएक के ज्वाली व हाहाली व भया व महाभया इत्यादि लिखेहैं सो सिवाय कालीकंठी वालों के और कोई उनपंथका प्रवर्तकनहीं इसहेतु विस्तार व वर्णनकरना प्रयोजननहीं समझा और चारों संप्रदाय के वेधकानिर्णय यह है कि निम्बार्क संप्रदायवालोंने श्रुति व स्मृतिकीआज्ञाके अनुसार पैंतालीसघड़ीके

बेधको अंगीकारकिया अर्थात् आरंभ अगिलेदिनका पिछली अर्द्धरात्रिसेहै जो आधीरातके उपरांत दशमीहोय तो अगिलेदिन व्रतकरना न चाहिये क्योंकि दशमी का बेधहोगया और इसरीतिको कापालिक वेध कहतेहैं बिशेषकरके सिद्धान्त जाननेवालों को उपासना का यह निश्चयहै कि ग्रीष्मऋतु में संतालीस घड़ीपर आधीरात होतीहै और हेमन्तऋतु में तेंतालीसघड़ी पर सो जिसतिथिमें जितनी रातगत होनेपर आधीरात हो उसको मुख्यजानना चाहिये पैंतालीसघड़ी के प्रबन्ध का प्रयोजन नहीं पर सामान्य बिख्यात पैंतालीसघड़ीके बेधकीहै और रामानुज संप्रदायमें स्मृति व पुराणकी आज्ञाके अनुसार पचपनघड़ी तिथि आजके बीतनेपर अगिलेदिनको ग्रहणकियाहै अर्थात् ब्राह्मीमुहूर्त्त का आठवां भाग रातकाहै जबसे प्रारंभहो तबसे तिथिका आरम्भहै व प्रमाणरात का भारतखण्डमें चालीसघड़ीतक है इसहेतु आठवांभाग रातका पांच घड़ीहुआ सो इससंप्रदायके अनुगामी पचपनघड़ी से अधिकहोय तौ अगिलेदिन व्रतनहींकरते जो कमहोयतो करलेतेहैं और रही दोसम्प्रदाय एक बिष्णुस्वामी व दूसरी माध्व सो उनका निश्चयभी ऊपरकीलिपिके अनुसारहै पर कोई कोई ने आठवांभाग रातका चारघड़ी भी अंगीकार कियाहै इसहेतु छप्पनघड़ी दशमी का बेधमानतेहैं व स्मृतिलोगोंमें न होने एकनिश्चय व निष्ठाकेकारणसे कईमतहैं अर्थात् कोई तो पैंतालीस घड़ी और कोई पचपनघड़ी कोई छप्पनघड़ी मानतेहैं और कोई अरुणोदय बेधमानतेहैं अर्थात् अट्ठावनघड़ी से अधिक दशमीहोय तो अगिले दिन व्रतनहींकरते और कोई तिथिका प्रारंभ सूर्य्योदयसे मानतेहैं उस समय दशमी हो तो व्रत नहींकरते नहीं तो साठ घड़ी दशमीतक बेध माननेका प्रयोजननहीं और कोई ग्यारहका आंक मुख्यजानतेहैं यह कि पत्रमें जिसदिन ग्यारहका आंकहो उसीदिन व्रतकरतेहैं और जो पंद्रह दिनमें एकादशी घटजाय और पत्रमें ग्यारह का आंकनहो तो व्रतनहीं करते कश्मीरइत्यादि देशोंमें पश्चिम पांचघड़ी दिनचढ़ेतक जो दशमीहो तो उसीदिन व्रतकरतेहैं पश्चिमदेशमें दशमी विद्धाव्रतकरने का कारण यहहै कि शुक्राचार्य्य दैत्य अरु राक्षसोंके गुरूथे उनको अपनेशिष्योंकी वृद्धि करनीथी इसहेतु उसव्रतकी प्रवृत्तिचलादी पर बिष्णु नारायण ने

दशमी विद्धाव्रतको त्याज्य किया और इसका निषेध आपवैकुंठसे आय कर ऋषीश्वरोंसे कहा कि यहवृत्तान्त पद्मपुराण इत्यादिमें विस्तारकरके लिखाहै सो उसशुक्राचार्य्यकेमतको मूर्खोंने अबतक अंगीकारकररक्खा है कोईका यहमतहै कि एकादशीको नाजखानावर्ज्जितहै सो जिसघड़ी एकादशी प्रारम्भहो अन्नजल छोड़देनाचाहिये और जब द्वादशी प्रारंभ हो पारणकरना उचितहै इसके आचरण न करनेवाले दक्षिणदेशमें सुने जातेहैं सो हरएक देशकी रीति व उपासना का विरुद्धजोहै सो लिखा गया पर शास्त्र के जाननेवालों से विशेष करके तीन प्रकार के वेध की रीतिहैं एक पेंतालीसघड़ी दूसरी पचपनघड़ी तीसरी छप्पन घड़ी और यहभी जानेरहो कि शास्त्रों में जो तृस्पर्शक व्रत का पुण्य बड़ालिखा है उस तृस्पर्शक का है कि जो प्रारम्भतिथि में घड़ी दोघड़ी एकादशीहो और फिर द्वादशी आरंम्भहोकर तिथिके बीतनेके पहिले त्रयोदशी आ-रंभहोजाय और उसतृस्पर्शक का पुण्य नहींलिखाहै कि जिसकेआरंभ में दशमीहो पीछे एकादशी उसीतिथिमें भोगकरके फिर द्वादशीप्रारम्भ करजाय वह दशमीके वेधके कारणसे यह तृस्पर्शक त्याज्य और निषेध है ॥ जन्म अष्टमी व्रतमें श्रीसंप्रदायवाले सिंहके सूर्य्यमें जो अष्टमी हो उसको जन्मअष्टमी मानते हैं और उस अष्टमीमें कृत्तिका नक्षत्र अथवा सप्तमीका वेध एकादशीके वेधकी रीतिसे मानना योग्य है जाने रहो कि जन्म उत्सव व सालग्रह इत्यादि में जन्मके नक्षत्रपर दृष्टि होती है सो भगवत् का आविर्भाव रोहिणी नक्षत्र में हुआ इसहेतु कृत्तिका का वेध माननायोग्यहै और जो सिंहका सूर्य भादोंमहीने में पांचदिन पीछेतक अष्टमी से न हो तो आश्विन में व्रत करते हैं और दूसरे संप्रदाय वाले तीनों भादोंवदी अष्टमीको मुख्य मानते हैं पर सप्तमीके वेधपर निश्चय करलेतेहैं जातीहै जो एकपल भी सप्तमी और सारादिन और रातको अष्टमीहो तो उसदिन व्रतनहोगा अगिले दिनहोगा कृत्तिकाके वेधपर निगाहनहीं विष्णुस्वामी संप्रदायमें वल्लभकुलवालोंके भावकीबात निरा-लीहै कि वेसब प्रेमप्रधानहैं स्मार्त मतवाले चन्द्रोदय के समय अष्टमी काहोना सिद्धान्त समझते हैं सप्तमी के वेधपर कुछदृष्टि नहीं रघुनन्दन महाराज का अवतार चैत्रशुदी नवमीको और श्रीवामनजी का अवतार

भादों शुदी द्वादशीको हुआ और नृसिंहजी का प्रादुर्भाव बैशाख शुदी चतुर्दशीको हुआ उनव्रतोंमें भी बेध अष्टमी व एकादशी व त्रयोदशी का मानना चाहिये और इसीप्रकार चैत्रशुदी द्वीजको सीता महारानी का औरभादोंशुदी अष्टमीको राधिकामहारानीका जन्म उत्सवहोताहै उनके जन्म उत्सव व अनन्त चौदशआदि व्रतोंमें बेधकोरीतिहै पर जानेरहो कि कोई तो भगवत् अवतार और महारानीजी के जन्मके दिनको व्रत मानते हैं और एकादशीकी भांति निर्जल उपासकरते हैं और भगवत् उपासक उत्सव समझकर उत्साह जैसे भगवत् जन्म और शालगिरह को करतेहैं औरजन्मके समयकेपीछे पञ्चामृतलेकर सबप्रकारके व्यंजन पकवान अपनी सामर्थ्यकेयोग्य भगवत्को अर्पणकरके भोजनकरतेहैं और जोलोग जन्मअष्टमीके दिन यहबाद करते हैं कि अर्द्ध रात्रि पीछे भोजनकरना निषेधहै उनको यह उत्तरदेतेहैं कि वह रातनहीं करोड़ों दिनसे अधिक प्रकाशितहै और यहभाव उनका सत्य व सिद्धान्तहै जन्म उत्सवकी उमंग जिसप्रकारभक्त और उपासकलोग करतेहैं कोई लिख नहींसक्ता अपने अपनेभाव औरभक्तिके आधीनहैं कितनेलोगों का ऐसा भाव देखनेमेंआया कि पुत्र अथवा पौत्रकेजन्म अथवा बिवाहमें जो एक रुपया खरचकिया तो भगवत्जन्मउत्सवमें उससे दशगुण उत्सवकिया और वह धूमधाम व आनन्दकिया कि अनायास निश्चयकरिके भगवत् चरित्रोंमें मनलगजाय जोलोग एकादशी नेमकेसाथ करतेहैं उनकी यह रीतिहै कि नवमीकेदिन एकभक्त हविष्यान्न जैसे चावल व मूंग व जव व गेहूं व तिल व घीखातेहैं और दशमीकेदिन एकभक्त फलाहार और एका-दशीको निर्जल व्रत करते हैं व्रतके दिनको प्रभात से भगवत् भजन में व्यतीत करना उचित है दूसरी ओर चित्तनजाय गवाही और मुनसफी राहचलना शतरंज गंजीफ़ा यहसब खेलना दिनकासोना स्त्री व मित्रका देखना और दूसरीनिषेध सब जैसेपान व अंजनइत्यादि जो कि बिस्तार करके एकादशी माहात्म्यमें लिखाहै यहांबिस्तार करके लिखना व्यर्थ समझा क्रोध व मिथ्याबोलना इत्यादिका तो लिखनेका प्रयोजननहीं कि वे सर्वथा वर्जित हैं रात्रिको जागरण करना उचित है और जो किसी कारणसे समाज भगवत्कीर्तन और भगवत्भक्तोंका प्राप्त न होसके त

आपत्रकेला भगवत्भजनमें जागतारहै द्वादशीकेदिन भजन पूजनकिये पीछे ब्राह्मणोंको यथाशक्ति श्रद्धा भगवत् प्रसाद भोजन कराकर और रुपया व वर्तन व अन्नवस्त्र यथा श्रद्धादाम देकर औरफल उसन्नत आदि का भगवत् अर्पणाकरके तब आपभोजनकरै पारणाद्वादशीमें उचितहैऔर जिसदिन कि वेधके विचारसे व्रत द्वादशीकोहोगा तो पारणा त्रयोदशीमें आपसेआप उचितहोगा औरजानेरहो किद्वादशीशुक्लपक्षआषाढ़ व भादों व कार्तिकमें बीस बीस घड़ी अनुराधा व श्रवण व रेवती नक्षत्रोंकी पारणा के निमित्तत्याज्यहैं जो उनबीस घड़ी में पारणाकरै तो बारह एकादशी के व्रतका फलजाता रहता है बीस बीस घड़ी तीनोंनक्षत्रोंके निषेध का निर्णय कईप्रकारपर लिखाहै पर बहुतलोगोंका सम्मत शास्त्रके प्रमाण से निश्चय इसबातपर है कि अनुराधा नक्षत्रकी बीसघड़ी नक्षत्रकेप्रारम्भसे पहिलीमें व श्रवणनक्षत्रकी बीसघड़ी बीचलीमें व रेवतीकी बीस घड़ी अन्तवालीमें पारणानिषेधहै उन बीसघड़ीके आगेपीछे किसीसमय करलेवै औरयहभी जानेरहो कि जो निर्जल व्रतनहोसके व निर्बलतासे भगवत् भजनमें बाधादेखपड़े तो ऐसीदशामें इतना फलाहार औरदूध अथवा जललेना उचितहै कि सामर्थ्य जागरण और भगवत् भजन कीबनीहै और जो एकादशी व्रतकेदिनशरीर ज्वरादिक करिके क्लेशित होजाय तो मूंग औरगेहूंका भोजनकरना वर्जितनहीं है ऐसीरीति और भगवत्प्रीति से जोकोई व्रतकरतेहैं उनके मुक्त व सद्गतिमें क्या संदेह है और एकादशी व्रतका जन्म व फल और व्रतों से सद्गतिहोने का हेतु व सबवृत्तान्त एकादशी माहात्म्य इत्यादिमें लिखाहै इसकारण यहांनहीं लिखा और जितनीबातें प्रयोजनकीहैं उनकोलिखदिया अबहमारे व्रत का वृत्तान्त सुनिये कि प्रीतितो ऐसी कि कबहींयाद नहींरहता जोयाद पड़जाय तो दशमीसे चिन्ता उपजी यथा रात्रिके समय अच्छे प्रकार पेटभरकेखाया औरफिर विचारहुआ कि प्रभातको क्या क्या फलाहार होगा जब प्रभातहुआ तो बनाना फलाहारका प्रारम्भहुआ औरदोपहर के पहिले खानेको बैठगये और इतनाखाया कि द्वादशीकेदिन भी कबहीं न खायाहोगा जिसकेपीछे खातेही पलँगपर आरामकिया और जो कहीं न कूटू व सिंघाड़ा व तरकारी अथवा पेड़ा हलुवाभोजन उत्तम व साहि

व तीक्ष्णखाया था इसहेतु कईबेर पानीपिया कि पेटफूलगया और चा-रपाईपर लोटतेरहे व अबहीं भोजन पचानहीं तबतक औरउसऋतु के मेवे तथा दवायें उसीसमयमँगाकरखाये पीछेरातहुई दूध औरपेड़ाखाये और ऐसीशीघ्रतासे चारपाई परगिरे कि एकक्षण न बैठ सके सारीरात गदहेकी भांति लोटतेरहे अगिले दिन चारघड़ी दिनचढ़े सुधि भई और भजनइत्यादिकी बातक्याहै यहभी न बना कि एकबारभी भगवत्कानाम मुखसेनिकलाहोवै वाहवा यहतोव्रत और भजन तिसपरचाहना सद्गति और भगवत्धामका हज़ारधिक्कार ऐसेजन्म और समझ और बेविश्वासी पर अरेमनपापी अबभीसमझ और तनकबिचारकर कि भगवत्चरणोंसे विमुखकिसीनेभी सुखपायाहै जोतू इससमाजमें दृढ़होजाय तो तेरेउद्धार में क्यासन्देहहै कि मौसमबरसातमें जो सावनका महीनाआया तोप्रिया प्रीतमको उमङ्गझूला झूलनेकीहुई तो सबसखियोंके सम्मतसे बरसाने कापहाड़ इससमाजके निमित्तठहरा जिसकेचारोंओर वनकी हरियाली और कल्पवृक्ष व तमाल व कदम्ब व पाढ़ल व मौलसिरी व चम्पाआदि वृक्षोंपरबेलिछाईहुई सुगन्धवारेफूल मौसमी व बेमौसमी भगवत्सेवाके निमित्त फूलिरहेहैं और जहांतहां झरनेझररहेहैं घटाउमड़ीहुई बादलों की मन्दमन्द गरजन में कभीकभी बिजलीकी चमक मयूर व सारस व कोकिला व चकोर इत्यादि पक्षियोंकाशब्द मनोहर शीतल मन्द सुगंध पवन अर्थात् किशोरकिशोरीके आनन्द व प्रसन्नताके निमित्त वहपहाड़ ऐसाशोभायमान व आनन्द बढ़ानेवालाहुआ कि बरबस स्नेह व शृङ्गार व प्रेम व प्रीति सबजगहसे उत्पन्नहोतीथी वहां एक कल्पवृक्षके पेड़में सखियोंने व स्वर्णसूत्र आदिकी डोरकाझूलाडाला और उसमेंसिंहासन रत्नजटितडालकर ज़री व मखमल व क़ीमखाबका बिछौना मोतियोंकी झालरलगाहुआ बिछायकैसँवारा उसमेंपियाप्रीतम बिराजमानहुये और एक व चन्द्रावली व ललिता व विशाखा व श्यामला व श्रीमती और दूसरीओर धन्या व रङ्गदेवी व पद्मा व भद्रा और अन्यसखी सबपखा-व जबबीणा व बांसुरी व सारङ्गी व सितार व तम्बूरा, झांझइत्यादि साज व समाराग का दुरुस्तकरके झुलाने और गानेके निमित्त खड़ीहुईं राग मलार आरम्भकरिके प्रियाप्रीतमको झुलानेलगीं औरवहसमा वसमाज

दरसा कि ब्रह्माणी व पारवती व इन्द्राणी आदि सबभीतकी चित्रहोगई
और सबराग व रागिनी बेसुधिबुधिहोरहीं उससमयकीशोभा व शृङ्गार
व सामान व बहार व हँसी ठट्ठा व आनन्दका किससे वर्णन होसक्ताहै
साराबन व पहाड़ परम आनन्द व मङ्गलका देनेवाला होरहाथा और
हरएकसखी मोहिलेने के निमित्त उसेमनमोहनके कि जिसकी मायाके
कटाक्षमें करोड़ों ब्रह्माण्डनाचतेहैं मोहनीरूपसबके गोरेमुख चन्द्रमापर
अलकोंकीलटें छुटीहुई माथेपरटीका व बेंदी उसकेऊपरचन्द्रिका कानोंमें
करणफूलऔर झुमका,पचलड़ी व चम्पकली व हैकलआदि गलेमेंहाथों
मेंबाजूबन्द व चूड़ी व कङ्कन जड़ाऊ व अंगुलियों में अंगूठीछल्ले आरसी
औरदुपट्टे लहँगसुरुख व सब्ज व गुलेनारी व धानी व बैंगनी व नारङ्गी
आदि रङ्गोंको अपनेअपने अङ्गों व रूपरङ्गके जरीगोटेपट्ठेसे भरे पहिने
हुये पांवोंमेंपायजेब व झांझें व बिछुए व सजिके पगफूल उनसबसखि
योंके समाजमें नटनागर ब्रजचन्द्रमहाराजकी कैसीशोभाहै कि जिसप्रकार
करोड़ों छवि मूर्तिमानों में शृंगार विराजमान हो शोभा व सजावट
दमक, झमक, वस्त्र, अलंकार ऐसा मनोहर व चित्तको हरै है कि सब
सखियां मुख चंद्रमा की चकोर होरही हैं एक हाथ किसीगोपीजीके गलेमें
और दूसरेहाथ से अलकें जो पवनके झोंकेसे उरझगई थी सुलझाते हैं
कबहीं चन्द्रावली व ललिता आदि से ठट्ठा व छेड़छाड़ है और कबहीं
तिरछे नयनों से नयनमिलाकर सुंदरता व बिलास देखतेहैं और कबहीं
राग गाने व सुनने पर चित्तहै और कबहीं वृषभाननन्दनी से हँसी
खेल व अंकमेलहै इसके आगे इस रसका अंतनहीं जो इतिश्री लिखूं

अंबरीष कीकथा ॥

राजाअंबरीष चक्रवर्ती परमभक्तहुये जिनकेगुण व दान व यज्ञकार्य
पुराणोंमें प्रसिद्धहै और सर्वसुख जो इन्द्रादिकको कठिनसे मिलैंसो सब
प्राप्तथा पर कबहीं उनमें मन न लगाथा भगवत् सेवा में ऐसी प्रीति
निश्चयथाकि सबकेकर्त्ताभगवत्को अपनेहाथसेकरतेथे किसीसेवकसे
नहींकरनेदेते और एकादशीव्रतकी जो आज्ञा शास्त्रकीहै तिसको राजा
अत्यंतपालनकिया नवमी व दशमीकोनेम व संयमकेपश्चात्एकादशीव्रत
कर के जागरणकियाकरतेथे औरद्वादशीकोदिनसबप्रकारकाद्रव्य व सवारी

व कई करोड़ गऊदान करके और ब्राह्मणोंको सबप्रकार के भोजन प्रसाद जिमाकर के तब आपपारण करते एकबेरदुर्बासा ऋषीश्वर आये राजाने सत्कार व दण्डवत् करके भोजनके निमित्त बिनयकिया दुर्बासा नेकहा कि स्नानकरआवें सो स्नानकरनेगये संयोगबश उसदिन द्वादशी दोदंडरही राजाको पारणकी चिन्तापड़ी व ब्राह्मणोंके सम्मत व आज्ञा से नारायणका चरणामृत पानकरलिया जब दुर्बासाजीआये और यह वृत्तान्तसुना तो क्रोधाग्निसे ज्वलित होकर राजाके मारनेको उद्यतहुये और अपनी जटासे कालकृत्यानामी अग्निकोज्वाला ऐसीउत्पन्नकरी कि वह राजाके भस्मकरनेको दौड़ी भगवत् जो कि सर्बकाल अपने भक्तोंकी रक्षाके चिन्तामें रहतेहैं दुर्बासाके गर्बको न सहिसके चक्रसुदर्शनको आ-ज्ञादी उसनेपहिलेतोकालकृत्याको ऐसीसुधिली कि भस्मकरदिया फिर दुर्बासा ऋषीश्वरकीसेवाकी सुधिलेनेकोचले दुर्बासाजी अपनेप्राणकेभय सेभागनिकले और चक्रसुदर्शनजीने रगेदलिया सारेसंसार व ब्रह्मलोक और कैलासआदि में सब लोकपाल व देवता आदिकीबिनय व प्रार्थना करते फिरे पर कोई उनकी रक्षाकरनेको सामर्थ्य न हुये और निश्चय यह बातहै कि ऐसा कौनहै कि भगवत्भक्तकेद्रोहीको रखसकै जबकहीं शरण न पाई तब बैकुण्ठनिवासी बिष्णुभगवानके पासगये और वहांसे यह उत्तरपाया कि यद्यपि मैं तुम्हारी रक्षा करसक्ताहूं पर बिचार करना चाहिये कि जो मेरे भक्त सब सुखछोड़कर मेरे शरणहुये हैं और मुझ से सिवाय और कुछ आश्रय उनकोनहीं तो किस प्रकार उनका अपमान हमसे सहाजाय कि तुम्हारी रक्षाकरूं सो तुमको उचितयही है कि तुम राजा अम्बरीषकी शरण जाकर अपना अपराध क्षमाकराओ यह सुन-कर दुर्बासा निराशहुये फिर राजाकी शरणमेंआये दंडवत्करिकै त्राहि त्राहि पुकारे राजाने स्तुति व प्रार्थनासे सुदर्शनचक्र को शीतल करिकै दुर्बासाजीका मान सन्मान ऐसाकिया कि सब दुःख भूलगये और यह जानिये कि दुर्बासाजी एक बर्षतक व्याकुल भ्रमतेरहे पर राजा ज्योंका त्यों दयाकरिकै युक्त एक स्थानपर खड़ारहा और दुर्बासाकेक्लेशकाशोच करता रहा सत्य है कि भगवत् भक्तों को किसी के साथ बैरनहीं होता क्योंकिउनकी दृष्टिमें यहजगत् भगवत्रूपहै अथवा भगवत्भक्त रूपहै

पीछे राजाने दुर्वासाजीको भोजन कराया आप भोजनकिया यह दया-लुता भक्तोंकी देख यशगातेहुये अपने आश्रम को गये इस कथामें एक सन्देह उत्पन्नहुआ कि भगवत्का प्रणहै कि कैसाही पापी शरण आवै अभय करदेताहूं अब दुर्वासा शरणगये न रक्षाकी तो प्रणमें विरुद्धपड़ा सो जानेरहो कि पहिलेतो भगवत्ने आप दुर्वासाको उत्तरदेनेकेसमय संदेह यह दूर करदिया सो ऊपर लिखआये के सिवाय इसके भगवत् कावचनहै कि सब पाप क्षमाकरताहूं पर दो पाप नहीं एक यह कि मेरे भक्तोंका जो अपराधकरै जैसा दुर्वासानेकिया और दूसरा जो मेरेनाम का अपराध करै अर्थात् इस नियतसे पापकरै कि पाप करने पीछे नाम अथवा मंत्र जपकर शुद्ध व पवित्र होजायँगे तो जब भगवत्का ऐसा वाचा प्रबन्धहै तो प्रणमें विरुद्ध कहांहै जो यह कोई न मानै तोभीअच्छे प्रकार विचारकर देखाजाताहै तो शरणागतिमेंभी कुछ विरुद्ध भगवत् के प्रणमें नहींहुआ क्योंकि दुर्वासा अपने प्राणकी रक्षाकेहेतु भगवत् शरणहुये सो उपायभगवत्ने बतलाया व दुर्वासाकाप्राणबचा तो संदेह को ठौरनहीं है और यह भी जानेरहो कि दुर्वासाजी पर राजाअंबरीष का कुछ क्रोध नहींआयाथा वरु भगवत्काक्रोधहुआथा कि चक्रसुदर्शन को आज्ञा दण्डकी दीथी यह प्रताप शरणागतिकाहुआ कि दुर्वासाका प्राणबचा नहींतो कहांउसप्रभुका क्रोध व कहां दुर्वासा बिचारा और मुख्यकारण इसचरित्रका यहहै कि भगवत् अपने भक्तोंके सब अप-राधों पर तनक अवलोकन नहीं करते पर एकअहंकारपर तुरंत दृष्टि होतीहै किसहेतु कि गर्व व अहंकार से भजन व सेवामें बड़ाविघ्नहोता है इसहेतुसे अपने भक्तके गर्वको दूर करदेते हैं कि गरुड़ मारकण्डेय व नारदआदिकी कथा साक्षी इसबातकीहै सो दुर्वासाजीको गर्वअपनी सिद्धता व बड़ाईकाहुआथा कि राजाकी परिक्षा केहेतु गयेथे इसकारण भगवत्ने राजाहीके शरणभेजकर दुर्वासाजीका गर्वदूर करदिया इस चरित्रसे एक उपदेश भगवत्का औरभीहै और वहयहहै कि जबभग-वत्ने दुर्वासाजीको शरणसे निराश करदिया तो दुर्वासाजी को क्रोध आया भगवत् को शापदिया और उसके कारण से दशबेर भगवत्को अवतार धारण करनापड़ा उपदेश इससे यहहुआ कि जबहमारे ईश्वर

कोभी शरणनहीं देनेसे दशदेह अंगीकार करनी पड़ी तो दूसरे मनुष्य जो शरणआयेकी रक्षा न करेंगे तो न जाने उनकी क्या गतिहोगी जब राजाकी भक्ति और भावबिश्व में बिख्यातहुई तब एक कोईराजा की लड़कीने कि भगवत् भक्तथी राजा अंबरीष से अपने बिवाह की बात चलाई राजाने उत्तर दियाकि हमको भगवत् सेवासे छुट्टीनहीं व न स्त्री की चाहनाहै वह लड़की अधिक प्रेमयुक्त होगई बारम्बारहठ किया राजा उसके प्रेमके बशहोकर आप तो न गये पर अपनी तरवार भेज दी उसीसेबिवाहका नेगचार सबहुआ जबवह रानीआई तब एकमहल अलग बना उसमें रहने लगी एकदिन वहरानी पूजाका मन्दिरराजा कादेखने कोगई राजाजगेनहीं थे रानी मंदिर बहार लीपकर जलशुद्ध रखकर सबसाज पूजाकी तैयार करके चलीआई राजाजब पूजाकरने आये तबसामग्री सजीदेखी बड़े आश्चर्य्यमेंहुये जबकितने दिन ऐसेही वृत्तान्त देखा तो एकरातराजा जागतेरहे और जब रानीआई तो पूछा कि तू कौनहै जो मेरीसेवामें चोरी करतीहै उसनेउत्तर दिया कि नई दासीहूं राजाने उसकीभक्ति देखकर आज्ञाकी कि अलगसेवा कियाकरो सो उसने ऐसे प्रेमसे सेवा पूजा को किया कि भगवत् व राजा दोनों प्रसन्न होगये बिस्तार करके कथाइसनारी की प्रेमनिष्ठा में लिखीजा-यगी दूसरी रानियों ने भी राजाकी प्रसन्नता देखकर सबने भगवत् सेवापधराई सबकोई के प्रेमको देखकर राजासब के महलों में जाने-लगे पुरबासियोंने भी ऐसेही प्रेम सेवा उठाई वहां भी राजाजाते सब नगर भगवत परायण होगया अर्थात् जबराजा भगवत् धामको जाने-लगे तोसंपूर्ण अयोध्याबासियोंको अपनेसाथलेतेगये और सबउसपदको पहुंचे कि योगीजन अनेक जन्मतक परिश्रम व क्लेश करके नहींपहुंचते॥

रुक्मांगदकीकथा॥

राजारुक्मांगद की कथा एकादशी माहात्म्य व पुराणों में प्रसिद्धहै उनकी एक फुलवारी ऐसी सुगन्धित व शोभायमान थी कि देवताओं की स्त्री वहां के सुखलेने को उतरती थीं एकदिन उनमें से किसीके पैर का कांटालगगया उसकी अशुद्धता से उड़ न सकी मालीको लड़कीसे कहा कि कोई एकादशी ब्रत जो किया होतो उसका पुण्य मुझको दिला-

देव कि स्वर्गजाऊं यहबात सुनकर राजाआया देवांगनासे कहा यहांव्रत कोई जानता नहीं उसने बतलाया तब राजाने एकसाहूकारकी लौंडी जो मारनेसे भूखी प्यासी सारादिन व रात जागतीरही बुलवाकर पुण्यदिला दिया कि देवांगना स्वर्गगई व राजाने सारेदेश व नगरमेंडौंड़ी एकादशी की फेरवायदी हाथी घोड़ेतक उपास करतेथे अंतमेंसबसमेत राजा बैकुंठ गया राजाकी लड़कीभी एकादशी व्रतकी निष्ठायुक्तऐसीथी कि एकादशी के दिन उसका पतिआया देखादेखी व्रतरहा पीछे भूख से विकल होकर भोजनचाहा उसने माहात्म्यसे अबोधथी न दिया दोचार घड़ीपीछे वह मरगया भगवत्धामको गया उसकी स्त्रीने बड़ा उत्साहमाना स्तुतिकरते करते वहभी भगवत्धामको चलीगई ऐसी ऐसी कथा एकादशी माहात्म्य में बहुतहैं जिसकी इच्छाहो सो देखले ॥

निष्ठा बारहवीं ॥

महिमा महाप्रसाद जिसमें चारभक्तों की कथाहै ॥

श्रीकृष्णस्वामीके चरणकमलोंके जम्बूफल रेखा को दण्डवत् करके हयग्रीव अवतार को दण्डवत् करताहूं कि कामरू देश में देवताओं की सहायता व दुष्टोंके नाशकेहेतु अवतार धारणकिया गीताजी में भगवत् की आज्ञाहै कि जोकुछ करै जो भोजनकरै जो यज्ञकरै जो देवै जो तपकरै सब मेरे अर्पणकरके शुभ अशुभ कर्मोंके बंधनसे छूटजावेगा इसहेतु उचितहै कि जोकुछ खाना पीना व सामा नवीन तैयार हो सो सब पहिले भगवत् अर्पण करै तब अपने अर्थ लगावै कि भगवत् वह अर्पण किया हुआ भक्तका अंगीकार करतेहैं सो गीताजीमें भगवत् ने कहाहै कि पत्र पुष्प फल जल जो वस्तु भक्तिसे हमको निवेदन करते हैं प्रसन्न होकर खाताहूं भगवत् प्रसादके भोजनमें व शास्त्रोक्त कर्मोंके करनेमें कितना गुण भरोहै कि बहुतशीघ्र अन्तःकरण निर्मलहोकर भगवत् चरणों में प्रीति होजातीहै और पुराणों में लिखाहै कि हजार एकादशी और सौ द्वादशीका फल भगवत् प्रसादके एक कणके सोलहवें अंश के माहात्म्यको नहीं पहुंचताहै गरुड़पुराणमें भगवत्की आज्ञाहै कि जो भगवत् प्रसादकरके भोजन करतेहैं उनके मनके सब रोगोंकानाशहोजाता

है और पवित्र होतेहैं फिर लिखा है कि जोकोई सामग्री खाने पीनेकी मेरा प्रसाद करके खाते पीतेहैं वे मेरे समीप पहुंचतेहैं भगवत्की आज्ञा है कि जोकोई बिना भगवत्को भोग लगाये खाते पीतेहैं तोभक्ष्य उनका शूकरके भक्ष्य सदृश व पानी रुधिरके सदृशहै और ऐसाहीवचन विष्णु-पुराणकाहै सो देखो भगवत्अर्पण करनेसे कुछ उस वस्तुमेंसे घटती व हानिभी नहींहोतीहै केवल इतनीही बातहै कि जब रसोई खानेको बैठे तो भगवत्का ध्यानकरके भगवत् अर्पण करदिया और इतना औरभी ध्यान करलिया कि भगवत् ने इस भोज्यवस्तु व पानीको भोग लगाया पीछे भोजन करलिया इसीप्रकार सम्पूर्णसामा व वस्तु जब बनके व सजके आवें भगवत् भेंट कियाकरें जो भगवत्मूर्ति न होय तो ध्यानमें भगवत्अर्पण करके तब अपनेअर्थ व काममेंलगावें और जो ऐसासंयोग पड़ै कि रसोईकी सामग्रीको पहिले कुछ किसीनें खालियाहो तो ऐसा विचार करलेना कि पहिले भगवत्अर्पण होगयाहै उसमेंका शेष यहहै पर भगवत्ध्यान करके कुछ भोग लगानेका चिन्तवनकरलेना निश्चय चाहिये क्योंकि बिना भोगलगाये भगवत् प्रसाद नहीं होसक्ता अर्थात् सर्बथा कोईवस्तु बिना भगवत् अर्पणकिये त्याज्य व महा हलाहलबिष है महा हलाहल इससेहै कि बिष खानेसे एकबेर मरताहै व इस बिषसे चौरासीलाख बेर मरना पड़ता है एक किसीको संदेह हुआ कि सैकड़ों हजारों लोग भगवत्प्रसाद व चरणामृत ठाकुरद्वारोंमें खातेपीतेहैं और बहुतलोग शालग्राम मूर्ति अपनेपास रखते हैं और बिना भोग लगाये कुछ नहीं खाते परन्तु हृदयकी निर्मलता और भगवत्की प्राप्ति किसी किसीको होतीहै इसका कारण क्याहै सो जानेरहो कि इसमें बिश्वास कारणहै जैसे जैसे बिश्वासकी वृद्धिहोगी तैसे तैसे हृदयभीनिर्मलहोता जायगा अन्तको निर्मलता व भगवत्प्राप्ति होजायगी जैसे पारसमणि अर्थात् पारस व लोहेके बीचमें एक महीन बस्त्रकाभी अन्तर जबतकरहै-गा तो लोहा सोना नहींहोगा परन्तुलोहा व पारसमणि एकत्र रहैंगेतो वह बस्त्र थोड़ेहीकालमें रगड़े खाकर उड़जायगा वह लोहा सोना नि-श्चय करके होगा और यहभी जानेरहो कि भगवत्प्रसाद व चरणामृत खाने पीनेवाला यद्यपि दृढ़ विश्वास युक्त नहीं है तथापि यमयातना

व नरकों का दुःख नहीं पावेगा भगवत् चरणामृत व महाप्रसाद की महिमा तो कौन वर्णन करनेसक्ता है भगवत्भक्तों का चरणामृत व जूठन का यह प्रतापहै कि जिसके प्रभाव करके हजारों परमपातकी व अधम शुद्ध भी भगवत् निकटनिवासी होगये कथा नारदजी व नाभा जिसनेभक्तमालको रचनाकिया इसकेनिश्चय व साक्षीके निमित्त प्रत्यक्ष हैं सिवायइसके भगवत् अपने महाप्रसाद व चरणामृतकी महिमा द्रौपदी व अम्बरीषआदि की कथासे प्रकट दिखातेहैं अर्थात् दुर्वासाजी ने चरणामृतके लेनेके अपराधसे अम्बरीष को दुःखदिया था उनकी क्या गतिहुई और द्रौपदीकीकथामें लिखाजावेगा कि बनबासके समय राजा युधिष्ठिरको सूर्य्य ने एकटोकनी दी गुण उसमें यह था कि नित्यजबतक द्रौपदी भोजन न करती बांछित भोजन अपार उसमेंसे निकलता जाता एकदिन द्रौपदीके भोजन करलेनेपीछे दुर्वासाजी दशहजार शिष्योंसहित आये राजा चिन्तामेंपड़े श्रीकृष्ण महाराज पधारे एकपत्ता शाक का टोकनीमेंसे ढूंढ़केखागये उसका यह प्रभावहुआ कि दुर्वासाजी दशोंहज़ार अपने चेलोंकेसहित ऐसेअघायगये कि बाहर बाहर भागखड़ेहुयेविचार करना चाहिये कि क्या भगवत् बिनाशाकके खाये दुर्वासाजी को नहीं अघायसक्ते थे अक्षय अघायसक्ते पर हठकरके शाकखाने का अभिप्राय केवल यह था कि भगवत् अपने महाप्रसादका प्रतापदिखाते हैं कि जो कुछ मेरे अर्पणहोताहै वह ऐसा अनन्त होजाताहै कि जैसा मैं हूं और करोड़ोंको अघवाकरसक्ताहै द्रौपदीने पहिलेजन्ममें थोड़ासा कपड़ा एक ऋषीश्वरको भगवत्की राहपरदिया था वह ऐसाअनन्तहुआ कि दुःशासन खींचते खींचते हारगया एकबुन्द जो सिंधुमेंडाले तो बुन्दभीसिंधु होजाताहै इसीप्रकार जो पदार्थ अनन्तको अर्पणकियाजाय अनन्त होजाताहै और जब ऐसा अनन्तहुआ तो उसके खानेपीनेसे हृदय निर्मल क्यों न होगा होवेहीगा विस्तारकरके लिखाजाता है अर्थात् रीतिहै कि जो पवित्रवस्तुहै सो अशुद्ध व अपवित्रको शुद्ध व पवित्र करदेतीहै यह बात अग्नि व जल व पवनके दृष्टांतसे अनेकप्रकार निश्चयहोतीहै इसीप्रकार यहभोजन व जल जिससमय भगवत् परम शुद्ध व परमपावन को पहुंचा तो उसीसमय शुद्ध व परमपावन होगया उसशुद्ध और पा-

वन भोजन व जलको जबभक्तने सेवनकिया तो उसभक्तको भी शुद्ध व बिमल व अनन्त करदिया बिश्वास मूलहै देखो प्रसिद्धहै कि महात्मा सिद्ध राहचलते बहुतआदमी पापी व अपावनको अपनाजूठन खिलाकर अथवा शरीरसे शरीर मिलाकर एकक्षणमें अपने ऐसा निर्मल व पापोंसे मुक्तकरदिया तो कारण इसका यहीहै कि वह महात्मा सिद्ध पावनव निर्मलथा अपनी बिमलतासे दूसरेके हृदयका मल क्षणमात्रमें दूरकर दिया तात्पर्य्य कहनेका यहहै कि कोई वस्तु विना भगवत् अर्पणकिये कदापि अपनेअर्थ न लगावै और यहभी लिखागया कि कुछ बड़ेक्लेशकी बातनहीं एकबातकी बातहै और केवल मनमें ध्यान करलेनाहै पर यह दुर्भाग्यता हमलोगोंकी और कलियुगका प्रतापहै कि थोड़ीसी बातनहीं होसक्ती हाय अफ़सोस कि मन भाग्यहीन ने मुझको बहुतभ्रमाया और इसीदुष्टकेकरनेसे इसदशाको पहुँचाहूं कि जानेकबसे करोड़ोंजन्म भांति भांतिके लेकर अनेकप्रकार की पीड़ामें फँसाहूं पर अबमेरा भी अच्छा दांवलगाहै कि श्रीकृष्ण स्वामी के चरणकमलों की छांहमिलगईहै देखूंगा कि इसमनदुष्टका बलचलताहै कि मेरेस्वामी पतितपावन दीन-बत्सलके बिरदकी रे मन तेरे बुरेचलनपर जो दृष्टिकरूं तो तू कदापि इसयोग्यनहीं कि तेरी भलाईके निमित्त परिश्रम कराजावे परन्तु सदा मेरेपास रहताहै इसहेतु शिक्षाकरताहूं कि इसरूपअनूप का चिन्तवन कियाकरे कि तेरे दोनोंलोक सुधर जावैं--दशरथ महाराजाधिराज का परमसुन्दर मंदिरहै और दर व दीवार व क्षिति व छत्रआदि सुवर्ण व रूपमयी तिसमें हीरालाल पन्नाआदि रत्नोंसेजड़ाऊ शोभायमान उसमें चारोंभाई मानों चारोंमुक्ति अथवा चारोंफल अथवा चारोंब्यूह अथवा चारोंउपासना अर्थात्नाम १ धाम २ लीला ३ रूप ४ स्वरूपवान अपनेखेल व बालचरित्रोंसे सबमाता व दशरथमहाराजको परमआनन्दसे पूर्णकरतेहैं कबहीं तो माताकेसाथ कोईखिलौना मांगनेकीहठहै कबहीं दशरथ महाराज के साथ घोड़ेपर चढ़ाने व तीर व कमान्न मँगादेने की हठ कबहीं दीवारोंमें चित्र व रंगरंगकेजड़ाव व बेलबूटा सुनहरे देखकर प्रसन्नहोतेहैं और मातासेपूछतेहैं कि यहक्याहै और कबहीं रत्नोंमें अपने प्रतिबिम्बको देखकरबूझतेहैं कि यहकिसके लड़केहैं कबहीं खातेखेलते

फिरतेहैं और पक्षियोंको बटोरकरके खिलाते हैं कबहीं उनके पकड़नेको दौड़तेहैं और उड़जानेपर मातासेहठहै कि तू पकड़करलादे और कबहीं चारोंभाई परस्पर हाथपकड़कर नाचतेहैं कबहीं रातकेसमय चन्द्रमाको देखकर मातासेकहतेहैं कि हमकोभी ऐसाहीमँगादे अर्थात् वहलीला व चरित्र परममनोहरहैं कि ब्रह्माशिवादिक देखकर कबहीं तो परमआनंद में मग्नहोतेहैं और कबहीं मायाके जालमें फँसजातेहैं चारोंभाइयों के मुखकीशोभा ऐसीहै जिसको देखकर आनन्दको भी आनन्द होताहै व सम्पूर्ण शोभा व शृङ्गार व दृष्टान्तभालके श्रीपर निछावरहोकर दर्शनमें बेसुधिहोजातेहैं ज़रदोज़ी काम व गोटेपट्ठे व जवाहिरातसे भरीहुईटोपी शिरपर घूंघरवाली जुल्फैं छुटीहुई भालपर गोरोचनका तिलक कानोंमें छोटेछोटे कुण्डल और झुमका बुलाक जिसमें सबजा पड़ाहुआहै पहिने हुये झलकदार कपोलों पर डिठोना लगाहुआ गले में कंठो व कठुला जड़ाऊ व बगनखा व जुगनूशोभित हाथोंमें बाजूबन्द पहुंची कड़े चरण कमलोंमें घुंघुरू व झांझें व नाजुक अतिसुकुमार शरीरोंमेंजर्द सबुजधानी शुरुखकुरतेमहीन कौशल्या कैकेयी सुमित्राआदि माता बालचरित्रोंको देखतीहुई आनन्दमेंमग्न व बेसुधि अपनेभाग्यकी बड़ाई करतीहुई चारों-ओर विराजमानहैं ॥

अंगदकी कथा ॥

अंगदजी चचाराजे सिलहदीरायसेनकिल्लेमेंजातिराजपूतपरमभक्त भगवत्केहुये प्रथमका वृत्तान्तयहहै कि भगवत् से विमुखथे स्त्री उनकी परमभक्त साधुसेविनीथी एकसमय उसस्त्रीके गुरूआये महलमें भगवत् उपदेश व कथा कररहेथे अंगदजी आयगये बुरामाना गुरू चलेगये स्त्री भगवत्कथा व गुरुकेदर्शन बंदहोनेसे खानापीना कहनासुनना त्यागकर दुःखितरहनेलगी अंगदजी उसकेरूपमें आसक्तथे विकलहुये बहुतउपाय किया यहांतक कि शिरअपना उसके चरणोंपर धरदिया परंतु प्रसन्न न हुई तब अंगदजीने भी खानापीना त्यागकिया व वचन प्रबंधकिया कि जो तूकहैगी सोईकरूंगा तब राजीहुई और कहा कि भगवत्भक्ति अंगीकार करो और गुरूजी के चेलेहोकर उनकीसेवा कियाकरो अंगदजी जाकर उसगुरूके चेलेहुये माला तिलक धारणकिया फिर उनको अपने घरपर लेआये और भगवत्भजन व साधुसेवा ऐसी आरंभकी कि थोड़ेदिनों में

हृदय विमल व भगवत्की सच्ची प्रीतिहोगई एकबेर राजा किसीशत्रुसे युद्धकरनेको चढ़ा व बिजयपाई शहर लूटनेकेसमय अंगदजीको एकताज अर्थात् बादशाही टोपी ऐसीमिली कि उसमें एकसौ एकहीरेलगे थे सौ हीरे तो बेचके साधुसेवा व भगवत् उत्साह में लगाये और एकहीरे को बहुतमूल्य व उसकेसदृश मिलनेयोग्य दूसरानहीं तिसको पगड़ीमें अपने यत्नसे बांधलिया श्रीजगन्नाथराय की भेंटके निमित्तरक्खा इसहीरे की ख्यातहुई राजाने सबलूट को माफ़किया उसहीरे को मांगा अंगदजी ने लोगोंके समझानेपर भी न माना व उत्तरदिया कि यहहीरा श्रीजगन्नाथ रायजीको भेंट होचुकाहै अब किसीकोनहीं मिलसक्ता अंगदजीकी बहिन थी उसके हाथकीरसोई भगवत्को भोग धराकरते थे और उसकी एक छोटीलड़की भोजनके समय साथखातीथी राजाके लालचके फन्दमेंआय के उसस्त्रीने रसोईमें बिषडाला अंगदजी भगवत्को अर्पण करके प्रसाद भोजनकरनेबैठे तबउसलड़कीको बुलाया उसको उसकीमाने छिपारक्खा जब वह न आई तब अंगदजी ने भी भोजन न किया तब उसलड़की की मा धिक्कार अपनेको मानकर रोनेलगी व अंगदजी से सब वृत्तान्त बिष मिलाने व लड़कीको छिपारखने का कहकर मिलकररोई अंगदजी अपने को बिष देने पर कुछ मनमें न लाये परभगवत् को अर्पण होनेकाक्रोध हुआ उसको निकालदिया और आप उसप्रसादको अमृत जानकरभो-जनकरगये प्रेम व आनन्दमेंमग्नहोकर भगवत् भजन में लगे राजाको यह सब समाचार पहुंचे इस अभिलाष में रहा कि अब अंगदजी के मरने की खबरआती है और अंगदजी को महाप्रसाद में अमृतका दृढ़ भाव रहा इस हेतु उसने अमृत का फल दिया और क्षणक्षण शोभा सुख की और हृदय को आनंद अधिकहोता गया और बिषदेने दिलाने वाले अभागों को लज्जा व शोक प्राप्तहुआ पीछे अंगदजी उसहीरे को जगन्नाथरायजी को भेंटकरने के निमित्त लेकरचले राह में राजा के चाकरोंने घेरलिया कहा कि कि हीरादेव नहींतो लड़ो हमारेसाथ अंगद जी ने कहा कि एकक्षणमात्र बिलम्बकरो यहकहकर तालाब के किनारे परगये और भगवत्से बिनयकिया कि महाराज यहआप की अमानत मेरेपासथी सो आप सम्हाललें यहकहकर और सबको दिखाकर उस

होगको तालावमें डालदिया भगवत् अपने भक्तकी विनती सुनकर सात सौकोस आनकर पानीतक पहुंचने न दिया लेगये और अपनीभक्ति और भक्तोंकाप्रताप प्रकटकिया सो अबतक भुजामें शोभितहै दर्शनहोतेहैं और राजाके चाकरलोग व आप राजाने उसतालाव का पानी उलचवाय के तलाशकिया कराया पर हाथनलगा लज्जितघरगये औरअंगदजी अपने घर चलआये राजा अंगदजी को विश्वास करके माननेलगा और पुजारियों ने जगन्नाथरायजी की आज्ञापाकर उसहीरेके पहुंचनेका समाचार अंगदजीके पास भेजदिया अंगदजी अतिहर्षित होकर जगन्नाथपुरीको गये उसहीरे सहित दर्शनकरके आनन्द में मग्नहोगये राजा अंगदजीके जानेसे अतिविकलहुआ ब्राह्मणोंको वास्तेलेआने अंगदजीके भेजा अंगद जीने न माना तब सबअन्नजल छोड़कर धरनावैठे तब अंगदजीआये व राजाने आगमन सुनकर आगे जाकरलिया व देखकर चरणोंसे लिपट गया अंगदजीने उठाकर छाती से लगालिया राजाको भगवत्भक्ति व साधुसेवाका उपदेशकिया राजाने धनसंपत्ति अंगदजीपर निछावरकिया और भगवत्शरण होकर कृतार्थ होगया ॥

पुरुषोत्तमपुरीकेराजाकीकथा ॥

पुरुषोत्तम पुरी के राजा परमभगवत्भक्त हुये और महाप्रसाद में ऐसी निष्ठाथी कि थोड़ी अवज्ञासे अपना हाथ कटवाडाला वृत्तान्त यह है कि एकवेर चौसरखेलते थे पुजारी जगन्नाथराय जी का महाप्रसाद लेकरआया राजाने दहिनेहाथमें पांसारहनेसे बांयाहाथ फैलाया पुजारी महाप्रसाद की अवज्ञा समझकर क्रोधयुक्त होकर महाप्रसाद फेरले गया राजा इस अपराधसे लज्जित होकरदौड़े पुजारी से बिनयप्रार्थना करके महाप्रसाद लिया शिर पर धारण किया चूकके पश्चात्ताप में बहुत चिन्तायुक्त बिना खायेपिये त्राहि त्राहि करते घरमें जाकरपड़ रहे इस उपायमेंहुये कि किसीप्रकार से दाहिने हाथको दूरकरनाचाहिये कि भगवत् प्रसाद से विमुखहुआ फिर चिन्ताकरें कि मेरेहाथ को कौन काटडाल सकताहै इसशोच में मनमलीन चिन्तायुक्त रहते थे एक दिन मालीसे इस मानसीव्यथा का मर्मीने राजाने पूंछा मालीने कहा कि बागके सबब एकफूल आताहै उसीमेंहाथडाल कर जोरचूल किया

करताहै सोतुम रातको मेरे मकानमें रहो जबवह प्रेत अपनाहाथ झरो-खेमें डाले तबकाट डालो किउसीरात मंत्री चौकीपररहा राजाने झरोखे में हाथडालकर शोरकिया मंत्रीनेऐसी तरवारमारी कि हाथसाफअलग जापड़ा जब मंत्रीको मालूमहुआ कि राजाका हाथहै बड़ेशोच व लज्जा में पड़ा राजाने कहाकि भूत व प्रेतवही है जो भगवत्से विमुखहै तुम चिन्तामतकरो हमको यह करना योग्यथा भगवत् करुणासिंधु ने अपने भक्तकी ऐसी निष्ठादेखके आज्ञाकी कि राजाको महाप्रसाद ले जावो व कटाहाथ उठालावो पुजारीलोग दौड़े व इधर से राजा दर्शन को चले राहमें पुजारी लोग जबमहाप्रसाद आगे लेकर देनेलगे तो राजानेबड़े भाव व भक्तिसे लेनेको दोनों हाथउठाये उससमय भगवत् कृपासेकटा हाथभी नयानिकल आया व राजाने दोनोंहाथों से महाप्रसाद लेकर अपनी छातीसे लगाया और दर्शन करके प्रेमआनन्दमें पूर्णहोकर भग-वद्भजन में रहनेलगे भगवत् ने कटाहुआ हाथ अपने बाग में लगवा दिया कि वहदौना का वृक्ष सुगंधवान फूलोंका होगया कि अबतक उस के फूल जगन्नाथ रायजीकोचढ़ायेजातेहैं एकपुराणमें लिखाहै किभगवत् जगदीश का प्रसाद अन्न जलके सदृश नहीं भगवत्रूपहै जोकोई और विचार करतेहैं सोपापीहैं और उनका नाश होजाता है॥

सुरेश्वरानन्दजी की कथा॥

सुरेश्वरानन्दस्वामी चेले रामानन्दजी के परम भगवत्भक्त हुये और महाप्रसाद की महिमा ऐसी इस संसार में प्रकाशित की जिसके प्रभाव करके हजारों को दृढ़विश्वास होगया अर्थात् एकबेर राहचलते में किसीद्वेषी ने दारू व मांसका बरा बनाहुआ आगेले आकर कहा कि भगवत् का महाप्रसाद है सुरेश्वरानन्द जी ने भगवत् महाप्रसाद का नाम सुनतेही भोजन करलिया और चलखड़े हुये पीछेसे जो चलेआते थे उनलोगों नेभी देखादेखी वही आचरणकिया स्वामीजीने उनसेक्रो-करके आज्ञाकी कि तुमने क्या खाया उत्तर दिया कि जो आपने स्वामी जी बोले कि हमने महाप्रसाद का भोगलगाया है यह तो मांस निकला और स्वामीजी के उदरसे तुलसी और गंगाजी की रेणुका निकली तब चेले चरणों में पड़े और भगवत्भजन व महाप्रसाद का विश्वास हुआ

निश्चयकरके समर्थको विषभीअमृतहै और असमर्थको अमृत विषतुल्य है सोशिवजीने हलाहल पानकरलिया अबतक उनकेकंठका आभूषणहै और राहुने अमृत पानकिया कि उसका शिरकाटा गया ॥

श्वेतद्वीप निवासी भक्तों की कथा ॥

श्वेतद्वीप भगवत् का विहारस्थानहै और जो भगवत्भक्त शास्त्रों में चिरंजीव लिखेहैं विशेषकरके इसीद्वीपमें रहते हैं एकबेर नारदजी उस द्वीपमेंगये और ज्ञानउपदेश करनेको चाहा भगवत्ने रोकदिया कि यहां के रहनेवाले मेरेप्रेम और भक्तिभावमें आनन्द रहतेहैं उससे अलग नहीं होसक्ते तुमअपनी ज्ञानकहानी कहींअन्यत्र आरंभकरो नारदजी उदासीन बैकुंठमेंगये और वृत्तान्त कहा नारायणने आज्ञाकी कि सत्यकरके श्वेत द्वीपके रहनेवालोंका यही वृत्तान्तहै सो चलके अपनीआंखों से देखलेव और भगवत् नारदसमेत वहांआये सरोवरके किनारे एकपक्षीको देखा कि भगवत्ध्यानमें था नारायणने नारदजीसे कहा कि यह पखेरू ऐसा भक्तहै कि हज़ारवर्षसे इसने जलपान नहींकिया इसहेतु कि भगवत्को भोग लगाहुआ जलनहींमिला और बिनाभगवत् प्रसाद के कुछ खाता पीतानहीं परीक्षाके निमित्त भगवत्ने थोड़ासाजल अपना प्रसादीकरके सरोवरके किनारे डालदिया कि उसभक्तने तुरंत उसजलको अपनीचोंच में उठाकर पानकिया नारदजीने उसपक्षीकी परिक्रमाकरी औरसेव्य व पूज्य समझकर प्रेममें पूर्णहुये फिर आगेचले और भगवत्मन्दिर देखा कि उससमय आरतीहोकर मन्दिरका द्वारताला मंगल होगयाथा एक जनको उसमन्दिरकी ओर शीघ्रतासे आतेहुये देखापूछा कहां जाताहै उत्तरदिया कि भगवत् आरतीके दर्शनोंके लियेजाताहूं नारायणने कहा कि आरती होचुकी और द्वारमन्दिरका तालामंगल होगया वह तुरंतसु-नतेही धरतीपर गिरपड़ा और मरगया तिसकेपीछे उसकी स्त्री आई नारायणने कहा कि तेरापति मरगया उसका क्रियाकर्म करना चाहिये स्त्रीने उत्तरदिया कि तुम्हारा मनवचन से विरुद्धहै कि भगवत्के दर्शनों पर क्रिया कर्मको पतिके वियोगताई बतलाता है नारायण ने उत्तरदिया कि भगवत् आरती होचुकी वह स्त्री सुनतेही तुरन्त अपने पतिके सहगमन कर होगई तिसके पीछे पुत्रादिक गृहके लोगआये और उनकोभी वही

गतिहुई नारायण व नारदजी यहप्रेम व भक्ति उनकीदेखकर आगेचले और विचरते विचरते फिर उसी ओर आये संयोग वश भगवत् मन्दिर खुलकर दूसरेसमयकी आरती आरम्भ हुई और लोग शङ्ख व झांझकी ध्वनि सुनकर भगवत् दर्शनोंके लिये दौड़े वह लोग जो मरगये थे उठकर आरतीमें जामिले भगवत् दर्शनकरके बहुत हर्षित अपने घरको चलेगये नारदजीने जोयह चरित्रदेखा तो बिश्वासयुक्तहोकरभगवत्भक्त हुये और उसद्वीपको तीनोंलोकका पूजास्थान व बैकुण्ठके सदृशजाना॥

तेरहवीं निष्ठा॥

जिसमेंवर्णन व महिमा भगवद्धाम व आठभक्तों कीकथा है॥

श्रीकृष्णस्वामीके चरणकमलों और अर्द्ध चन्द्ररेखाको दण्डवत् और श्रीबामनअवतारको कि देवताओंकेसहायकेनिमित्त प्रयागमेंधारणकिया व ब्रह्मचारी रूपसे बलिराजाके द्वारपरगये उसको छलकरके पातालमें भेजदिया प्रणाम व बन्दना करके धामनिष्ठा लिखताहूं भगवत्काधाम भगवत् रूपहै सोधाम शब्दकाअर्थ किसी जगह भगवत्रूपसे सम्बन्ध रखताहै और किसीलोक अर्थात् बैकुण्ठादिकसे सम्बन्धहै और जबकि धाम भगवत्का अच्युत अनन्त और मायासे न्याराहै और यहभीगुण भगवत्केवेद और पुराणोंमेंलिखेहैं तो भगवत्रूप होनेमें क्यासन्देहहै और विख्यातहै कि जब जीव मायासे अलगहोजाता है तब उसधाममें पहुंचताहै तो निश्चय करके वहधाम भगवत्रूप ठहरगया कि भगवत्की प्राप्तिभी माया छूटनेपर शास्त्रोंमें लिखीहै जिसप्रकार भगवत्की महिमा और उसकेरङ्ग रूपकावर्णन अतर्क्य व अनिर्बचनीयहै इसीप्रकार भगवत्धामका बर्णनभी नहींहोसक्ता परन्तु भगवत्ने जिसप्रकार अपनारूप शास्त्रोंमें बर्णनकियाहै इसीप्रकार अपनेधामका रूपभी वर्णनकरदियाहै कि तात्पर्य्ययहहै कि वहधामसच्चिदानन्द घनरूपहै मंदिर व अट्टालिका व बाटिका फुलवाड़ी व द्रुमलता व बिमान व सरोवर बावड़ी नाली इत्यादि सब वहांकेदिव्य रूपहैं अर्थात् सच्चिदानन्द घन तत्त्वबिना किसीअन्य बस्तुकाबना अथवा बनायाहुआ वहधाम नहींहै जिसप्रकार हलवाईखिलौने बनातेहैं और सबआकारसहित बाहन व

वाहनी व साज शृङ्गार अच्छेप्रकार उसखिलौने में रचितहोतेहैं परन्तु सबखांड़हीखांड़है दूसरीवस्तुनहीं इसीप्रकार उसधामका वृत्तान्तहै कि यद्यपि केवलएक भगवत् मय प्रकाशका वहधामहै परन्तु सब मन्दिर आदिक जो जिस प्रकारके बुद्धिकीदौड़ और चिन्तनासे समावे सो वहां प्राप्त व रचितहोरहेहैं जानेरहो वहधामकिसीलोक और ब्रह्माण्डमें नहीं असंख्यात ब्रह्माण्डोंमें जिस किसीको मुक्ति मिलतीहै तिसको यह धाम मिलताहै और इसधाममें पहुंचकर आवागमन से छूटजाताहै सो गीता जीमेंलिखाहै कि जहांजायके फेरनहीं संसारमें गिरताहै वहधाम मेराहै भागवत में लिखाहै कि भगवद्धाम में पहुंचकर जीवनिश्चल होजाता है और फेर जन्म नहींहोता पद्मपुराण व स्कन्दपुराण व बाराहीसंहितामें लिखाहै कि भगवद्धाममें पहुंचकर मुक्तहोजाताहै और दूसरे पुराण सब इससंयुक्तहैं और वेदकीश्रुति और कितनेही उपनिषदहैं वेऐसीहीआज्ञा करतेहैं बहुतविस्तारका प्रयोजननहीं जिसकिसीने एकपुराणभीसुनाहो- गा उसकोमहिमा व बड़ाई भगवद्धाम की अच्छीप्रकार समझमें आगई होगी सोवह परमधाम श्रीसम्प्रदाय वालोंके निश्चयमें वैकुण्ठहै व राम उपासकोंके विश्वासमें अयोध्या व साकेत व सांतानक व कृष्णउपासकोंके विश्वास व सिद्धान्तमें गोलोक इसीप्रकार सब उपासक अपनेअपनेइष्टका धामउसीगुण व महिमासहित वर्णनकरतेहैं जो स्मार्त्तमतवालोंका सि- द्धान्तयहहै कि वेलोगउसधामको ब्रह्मलोककहतेहैं और उनकानिजइष्ट जोदेवताहोताहै उसकाधाम सबसे अतिऊपरमानतेहैं और दूसरेदेवता- ओंकानीचे जैसे मनुष्य शरीरमें हाथपांव अर्थात् अङ्गअङ्गी भाव रखतेहैं और कोईकोईको यहनिश्चयहै कि वहधाम सच्चिदानन्दघन भगवत्रूप एकहै कोई अन्यस्थान नहींहै जिसप्रकार भगवत् अपने वाक्य के अनु- सार कि जिसभावसे जो कोई उसका भजन सेवनकरताहै उसको उसी रूपमें उसीप्रकार मिलताहै इसीभांति वह धामभी जब भक्त उस धाममें पहुंचतेहैं उनके भाव व विश्वास के अनुरूप दिखाई देता है भगवत् ने गीताजीमें कहाहै कि जो जिसभावसे मेरेसन्मुख होतेहैं उनको उसीभाव से मिलताहूं नारायण उपनिषद् और कईउपनिषद् व सहस्रगीता आदि सेभी यही बात प्रकट होतीहै सो जब कि भगवत् अपने भक्तोंके भावके

अनुसार प्रकट होताहै तो भगवत्‌काधामभी कि भगवत्‌कारूपहै वैसाही होना उचित है भगवत् की प्राप्तहोने में जो आनन्द है वही इसधाम में सर्व्वकाल व सब घड़ी सबको प्राप्तरहता है कि जिसका वर्णन किसी प्रकार किसीसे नहींहोसक्ता शास्त्रोंमें जो स्वर्ग्ग व पृथ्वीपर धन व राज्या दिक हजारों सुखलिखे हैं वह सब उसधामके करोड़वां अंशके सुखको नहीं तुलते अब यह वर्णन बिस्तारसहित व निश्चयकरना उचितहुआ कि मधुपुरी व अवधपुरी व काशी आदि जो धाम व पुरी धरतीपर हैं क्या हैं सो जानेरहो ये धाम वहही हैं जिनका वृत्तान्त ऊपर लिख आये तनक बाल बराबरभी उसधाम और इन धामों में भेद नहीं वरु वैकुण्ठधाम से इनधामोंको एकप्रकारसे विशेषताहै काहे से कि वहधाम तो ऐसा है कि जब मनुष्य अच्छे प्रकार विश्वास दृढ़ करके उपास नाकरै और सबओरसे मनको एकाग्र करके लगावे तब न जाने कितने जन्मोंमें मिलताहै और यह धाम वहहै कि कैसेहीपापी व अधमनेउनको शरणकोलिया वहभगवत्‌को जामिला और किसीजन्ममें एकबेरभीउन धामोंमेंरहा उसकेप्रतापसे संगतिको पहुंचा और विचार करनाचाहिये कि वहईश्वर जिसकोवेद नेतिनेति कहते हैं अपने निजधामको छोड़कर इनधामोंमें आताहै और अबभी विराजमानहै तो बड़ाई इनधामोंकी है कि उसधामकी जो यहकहो कि भला जो यहधामभी उसीपरमधाम के सदृशहैं तो जो आनन्द और सुख वहांहै वह क्योंनहीं सो जानेरहो कि संपूर्णसुख व शोभा इनधामोंमें सदाहै और इनहींधामोंके प्रभाव करके उसधामका सुख व शोभा और आनन्द जीवको मिलताहै जितना आ-राधन व प्रीति उसधामके प्राप्त निमित्त होतीहै उससेआधा व चौथाई भी इन धामोंमें विश्वास करकेहोय तो तुरन्त बेड़ापार होजावै विश्वास और हृदयकी आंखोंको खोलकर देखना चाहिये कि तनकभी भेदनहींहै जीव गोस्वामीकी कथामें वर्णनहोगा कि वृन्दाबनकी शोभाकी तनक झलक बादशाहको दिखलाई और हरिदासजी का वर्णनहै कि उसस-मयके बादशाहको उन्होंनेभी ब्रजकी छबि और शोभाको दिखाया था और एककोना सीढ़ी किसीघाटका टूटाथा कि सातोंबादशाहत के धनसे भी उससीढ़ी का बनना बादशाह ने कठिन समझाथा सो बिश्वास और

प्रीतिदृढ़ यहीमुख्यहै और जैसे जैसे मननिर्मल और विश्वासकी बढ़ती होतीजातीहै वैसेही तैसे शोभा और सुखकी बढ़तीहोतीहै अर्थात् हृदय के नयन से दिव्यरूप की शोभा धामकी देखने में आवेगी यह कहो कि भला इनधामोंको परमधाम के सदृश लिखतेहो और यहां के रहनेवाले ऐसे शठ और धूर्त व कुचाली बहुत देखनेमें आतेहैं कि सारे संसार के पापियों के शिरोमणि हैं और उचित यह था कि यहलोग ऐसेहोते कि जिनके दर्शनकरतेही पापीलोग पापोंसे छूटजाते सो इसका क्याकारण है सो जानेरहो कि रहनेवालोंके बुरे आचरण देखनेसे भक्तोंको विश्वास से शिथिल होना नहीं उचितहै क्योंकि धाम बासियों के अपकर्मसे भी भगवत् रूपहोना उनधामोंका अच्छेप्रकार निश्चयहोगया अर्थात् भगवत् कल्पवृक्षके सदृशहैं सबके भावके अनुसार फलदेतेहैं सो उनबसने वालोंकी रुचि समय के कारण करके पापमेंहुई तो भगवत् ने उनकी चाहनाके अनुसार पापोंकी बढ़तीको करदिया और इसबिवादसे निश्चय होगया कि यहधाम कल्पवृक्षके सदृश भगवत्रूपहै अब यहशंका उचित आई कि जो इनलोगोंके पापोंकी बढ़तीहुई तो ताड़न व शासनभी बहुत होगा और जब कि दूसरोंसे अधिक ताड़नाहुई तो यह धामहीदुःखदायी हुआ मुक्तिदायक प्रभाव क्या हुआ और जो दण्ड न होगा तो शास्त्रोंमें जो आज्ञा विधि निषेध लिखीहै वह सबव्यर्थ होजावेगी सो जानेरहो कि रहनेवाले लोगों को पूर्ण फल भगवद्धाम सेवन का मिलैगा और शास्त्रोंकी मर्य्यादभी बनीरहेगी किसप्रकार कि शास्त्रोंके बचनसे प्रसिद्ध है कि जो और जगह के रहनेवाले पापी पातकीहैं वह लाखों करोड़ों वर्षतक नरकोंमेंरहेंगे और चौरासीलाख योनिमें न जानें कितने कितने बेर जन्मपावेंगे और नानाप्रकार का दुःख भोगनाहोगा और इनरहने वालों को एकही शरीरमें थोड़ेहीकाल जो कि प्रमाण शास्त्र में लिखाहै दण्ड घोरहोकर उनपापोंसे छूटजावेंगे और भगवत्को प्राप्तहोंगे जाने रहो कि पहिलेयेही उनलोगोंके पापोंकी और मुक्तहुईरही इसहेतु पापों की वृद्धि पहिलेहुई पीछे उसको धामने अपनायह प्रतापकिया कि सब पापोंसे शुद्धकरके परमधामको पहुंचाय दिया विचारकरना चाहिये कि जो कर्मजालहोंगे और भगवद्धाम में विश्वास दृढ़होगा तो क्यों बिना

दण्डकै वह परमधामको प्राप्त न होगा और बढ़तीविश्वास और पुण्यों की पहिले क्यों न होगी अब इसबातका उत्तर लिखनाचाहिये कि बहुत यात्री ऐसेदेखनेमें आये कि यात्राकरनेपर आगेसे और अधिक स्वभाव कठोर व पापोंकीचेष्टा करनेवाले होगये सो जानेरहो कि कल्पवृक्ष का वृत्तान्त यहां भी समझलेना चाहिये जैसे विश्वास और मनसे वे लोग यात्राकरतेहैं वैसेही कार्य्यमें बढ़ती होजातीहै प्रीति धामोंकीयात्रा और वहांके रहनेकी बिधि थोड़ेमें यहहै कि विश्वास शुद्ध उसधाम में होय और जिसदिनसे यात्राकरै कामक्रोध लोभ मोह इत्यादि मनसेदूरकरै मुखसे भगवत्का नाम और हृदयसे भगवत् चरित्रों का चिन्तवनहोय और सत्संग हरिभक्तोंका होवै संयम नियम शम दम तितिक्षा व सत्य व दया व मैत्री व उदारता निश्चयचाहिये और जब वहांपहुंचे तो वहां के रहनेवालों और सबद्वार व दीवार को भगवत्मय समझ और जो कुछ दानपूजा स्नान ब्रतआदि कर्मकरै सब भगवत्अर्पणकरकेफलकीचाहना न करै और ढूंढ़के भगवत्भक्तोंकासत्संगकरै कि तीर्थयात्रामेंसत्संग सारहै जब इसप्रकार यात्रा और वहांबासकरैतो पूर्णफल मिलनेमेंक्या संदेहहै और जो ऊपरलिखनेके अनुसार न होसकैतोधाममेंविश्वास और भजन व सत्सङ्गमेंप्रीति और अपकर्म्मोंसे निवृत्तरहना उचितहै कि भला कुछ ठिकानालगै और उत्तम गतिको पहुंचै अब उन लोगोंकी यात्राका वृत्तान्त सुनिये कि जोलोग साधारण व थोड़ी पूंजी वालेहैं उन्होंने तो जब समय यात्रा व पर्ब्बकीआई तो यहचरचा आरम्भकी कि अबकीबेर बड़ाभारी मेलाहोगा और अच्छा नयन विश्राम होगा कि चारों ओर से सब भांतिके लोग चलेजातेहैं यह मन करके दश पांच एकसंग के मिल कर चले पथमें सिवाय व्यर्थालाप और हँसी व ठट्ठे व वाहियातबोलने व अनाप सनाप बकने व हुक्का पीनेके और कुछ न किया जब धाममें पहुंचे तो मेलेके देखने में लगे और जब तीर्थस्नान को गये तो स्त्रियों के देखने व ताकने में मनलगाया और चले तब किसीस्त्रीके पीछे पले कुत्ते के सदृश होलिये और उसके टिकांततक पहुंचायआये और जो भगवत् मन्दिरमें दर्शन को गये भजन ध्यान इत्यादि न बना कोठा अटारी और दूसरी दूसरी लीला देखतेफिरे फेर क्रय बिक्रय करनेलगे और सत्संग

न ढूंढ़ा अपने मनके रुचिके अनुसार भंगेरे व चरस वाले व दूसरे कुसंगियों को ढूंढ़नेलगे व हरिभजन व कीर्तन को न किया नाच राग लड़कों आदिका देखते फिरे जब टिकांतपर आये तो आपुस में बैठकर जो स्त्रियां कि दिनमें देखीथीं उनका चरचा करतेरहे अथवा वहां के रहने वालों की निन्दा व वणिक लोगोंके ठगपने का बर्णनकरि फिरि सोरहे जेदिन वहांरहे यहही आचरणरक्खा और जो स्नान व यात्रा के फल को मांगा तो अपनेभाग्य व कर्मके अनुसार और धनवान यात्री ऐसे हैं कि जब यात्राकी मानसकरी तो पहिलेही उसके फलकी चाहना करली कि अमुककार्य्य हमारा होगा अथवा बेटा होगा व धनमिलैगा अथवा चाकरी व द्रव्य उत्पन्न की जगहमिलैगी और रास्ते में सिवाय बार्ता डिगरी डिसमिस मुक़द्दमा अथवा जवाबदावी व रद्द जवाबका बर्णन अथवा स्तुतिनिन्दा मित्र शत्रु व बादशाहों के व हाकिमोंकी करनी की कथन व रसकी काव्य व बिरहकी जलन व खाने पहिरनेकी रचना व सुन्दरताकी इसीप्रकार की बेटौर ठिकानेके औरकुछ मुखसेन निकला जो हजारमें एकदोको बिष्णुसहस्रनाम या महिम्न कंठहुआ तो न्हानेकेपीछे कबहींपाठ करलिया नहीं तो कुशलक्षेम और जबधाममें पहुंचे तो घोड़े औरबैल व दुशाले व सामग्री आदिककालेनदेन प्रारंभकिया अथवाकोठा अटारी फुलवारी देखतेफिरे के मित्र व हाकिम व ओहदेदार चाकर के बड़ेलोग जो मेलेमें आयेरहे उनको ढूंढ़ ढूंढ़मिले के औरलोग मिलने को आतेरहे और जो स्नानको किसी तीर्थपरगये तो मांगने वालोंके डरसे शरीरको भिगोकर तुरंत चलदिये जो कुछदान दिया तो हज़ार आदमियोंको दिखलादिया और हज़ारोंसे बर्णनकिया और यह चाहनाकी कि इस दानके प्रभावसे अमुक अमुक कार्य सिद्ध होयँ और जो कोई साधु ब्राह्मण मांगनेको आया तो रुपया पैसा देनेकी जगह गालियांदीं और कहा कि देखो कैसा मोटासंडाहै घास खोदकर नहीं खायाजाता संतके धनपर कमर बांधरक्खीहै और जो मन्दिर व शिवालय में दर्शनों के निमित्तगये तो नव मनोरथमांगे और शेष आचरण पहिले लोगोंकीभांति तात्पर्य कहनेका यह कि जब ऐसे आचरण से यात्रा होवे तो वहफल जो शास्त्रोंमें लिखाहै किस प्रकार इस जन्ममें प्राप्तहोवे और क्योंन वे

लोग कठोरहृदय होजावें अभिप्राय विस्तार करनेका यहहै कि भगवत् धाम अर्थात् मथुरा अयोध्या आदिनिज परमधामकेसदृशहैं विश्वासऔर भगवत्भजन और धाममें प्रीति उचितहै जो थोड़ीसी प्रीति और भगवत्के मिलनेकी चिन्ताहोगी तो निश्चय करके बहुत शीघ्र भगवद्भक्ति की बढ़ती होकर भगवत्की प्रीति सहज में होजावैगी हेमन जोबात कि ऊपर लिखआया स्मरणरखना योग्यहै नहींतो सबसेअधिकतेरीदुर्दशा होगी वह समाज जो ग्रन्थके प्रथम भूमिका के अंत में लिखआया जो अनुक्षण हृदयके नयनोंके आगे रक्खेगा तो किसी यात्राआदिके बिना कियेही सबकुछ तेरेआगे हाथबांधे आज्ञाके अनुवर्त्ती है व न तेरेसमान दूसरा कोई होगा किसहेतु कि भगवद्धाम उसीका नामहै कि जहां भगवत् बिराजमान हैं॥ कवित्त॥

श्यामघन तनपर बिद्युसे दशनपर माधुरी हँसनपर फसनखगीरहै।
घुरवाले भालपर लोचन बिशालपर अरुबनमालपर जुगुन जगीरहै॥
जंघयुग जानुपर मंजुल सुखानपर श्रीपति सुजानमति प्रेमसों पगीरहै।
नूपुर नगनपर कंजसे पगनपर आनंद मगन मेरी लगन लगीरहै १॥

कागभुशुण्डिजी की कथा॥

महिमा औरकथा कागभुशुण्डिजी की जितनी पुराणोंमें लिखीहै उतनी थोड़ेमें लिखनेकी समवाईनहीं है परंतु प्रयोजनमात्र धाम निष्ठाके लिखताहूं कि वे पूर्व शूद्रवर्ण अयोध्याबासीहुये किसीदुःख पड़नेसे उज्जयनमें जारहे शिवमन्दिरमें जपकरते समय गुरुआये दण्डवत् न किया शिवजीने शापदिया कि दशहज़ारबर्ष सर्प्पादिक योनि में इसका जन्म होय पीछेगुरुने स्तुतिबहुतकरी शिवजीप्रसन्नहुये बाणीभई किहे ब्राह्मण परउपकारी बरमांग ब्राह्मणने प्रथम भक्तिमांगी फिर उसशूद्रके कल्याण की बिनयकरी आज्ञाहुई कि तथास्तु और शूद्रको आज्ञाहुई कि तेराजन्म अयोध्या पुरीमेंहुआ है व अयोध्या पुरीका यहप्रतापहै कि किसीजन्ममें एकबेर अयोध्या बसजावै निश्चय रघुनन्दन स्वामीका भक्तहोकरकृतार्थ और जन्ममरणके दुःखसे छूटजाताहै सो भगवत् का बचनहै कि यद्यपि सबने बैकुंठका बर्णन कियाहै परंतु अयोध्या के बराबर प्यारानहीं सो उस अयोध्यापुरीके प्रताप और मेरी कृपासे वह परमगति तेरी होवेगी

कि जिसका कबहूं क्षय न होवे अर्थात् श्रीरघुनन्दन स्वामी के चरण कमलोंमें निश्चलाभक्तिहोगी परंतु आगेपर किसीसाधु ब्राह्मणका निरादर न करना ईश्वरके तनुहैं जोकोई इन्द्रकेवज्र व हमारे त्रिशूलसेभी न मरे सो ब्राह्मणोंकी क्रोधाग्नि से भस्म होजाताहै तिसके पश्चात् शिवजीकी आज्ञाके अनुसार कागभुशुण्डने वह देहपाया अन्तमें ब्राह्मण के वंशमें जन्महुआ माता पिता मरगये तब बनको गमन किया जहां कोई ऋषेश्वर मिलता तो उनसे श्रीरघुनन्दनस्वामीके चरित्रोंको पूछते फिर लोमशऋषेश्वर के दर्शनहुये और उनसे वही अभिप्राय अपने मनका पूछा ऋषेश्वरने पहिलेकुछ सगुण उपासना का वर्णन करके निर्गुण ब्रह्मका वर्णन आरम्भकिया कागभुशुण्ड ने कहा कि महाराज सगुण उपासकहूं रामचरित्ररूपी जलसे मेरा मन मीनकेसदृश अलग नहीं होसक्ता ऋषेश्वर ने थोड़ीसी सगुण उपासना वर्णन करके फिर निर्गुणब्रह्मका वर्णन आरम्भकिया कागभुशुण्ड ने उस निर्गुणमत को खंडन करके फिर सगुण उपासना को दृढ़किया इसी प्रकार से संयोग बाद विवादकी पहुंचगई तबतो ऋषेश्वर क्रोध करिके बोले कि कौआकी भांति अपनीही कांव कांव करता है मेरी सांचीबात को नहींसुनता इस हेतु तुरन्त कागकीदेह तेरीहोजाय सो उसीघड़ी कागका शरीर होगया व भगवत् भक्तोंको किसीकेसाथ वैर व शत्रुता नहीं इसहेतु कुछ शोच व चिन्ताको न किया और ऋषेश्वर को दण्डवतकरके अपनी राहली श्रीरघुनन्दन स्वामीने इस परीक्षामें जब कागभुशुण्डजी को सच्चापाया तो लोमश ऋषेश्वर के मनमें दया को उपजायदिया अर्थात् ऋषेश्वर यह सहिष्णुता व धीरता कागभुशुण्डजी की देखकर लज्जित हुये और अपने पास बुलाकर आश्वासनकिया बालरूप भगवान्की उपासना व राममंत्र का उपदेशकिया व रामचरित्र सुनाकर यह आशीर्वाद दिया कि रामभक्ति दृढ़ तुम्हारे हृदयमें बनीरहैगी व रघुनन्दन स्वामीके प्यारेहोगे व जो इच्छा करोगे सो सम्पूर्ण हुआकरैगी व ऋद्धि तुम्हारे आधीन रहैंगी ज्ञानवैराग्य स्वरूप होगा और तुम्हारे स्थानके चारचार कोश तक माया नहींव्यापैगी रघुनन्दन स्वामीके गुप्तचरित्रहैं सो अनायास सब तुमको मालूम होंगे जब यह आशीर्वाद ऋषेश्वरने दिया तो आकाशवाणीहुई कि

ऐसाहीहोगा कि यह मेराभक्त अनन्य है पीछे कागभुशुण्डजी ने ऋषेश्वर के चरणों को दण्डवत् करके नीलाचल पर्ब्बतपर जोकि सुमेरुके निकट है जाकर निवासकिया और बहुतकल्प व्यतीतहुये अबतक वहां बनेहैं रघुनन्दन स्वामीके कीर्त्तन में सदा रहते हैं जिनके सत्सङ्ग से महाअधम जीव भी जीवन मुक्तिकी पदवी को पहुंचगये और शिवजी महाराज ने हंसरूप होकर रामचरित्र सुना और गरुड़जी भगवत् के नगीची होकर ऐसीमायामें पड़गयेथे कि शिवजी व ब्रह्मा भी उपदेश न करसके परन्तु कागभुशुण्ड जीने ऐसी कृपाकरी कि माया दूरहोगई एकबेर कागभुशुण्डजी को यद्यपि बरदान सब प्रकार का पायेरहे पर भगवत्माया ने ऐसा नचाया कि बुद्धिका दीपकठण्ढा होगया और यह कथा सबपुराणों में लिखीहै परन्तु हरिकीमाया भगवत्भक्तों का कुछ बिगाड़ नहींसकती काहेसे कि भगवत् आप रक्षाकरतेहैं इसीकारण उसमाया से भी परम कल्याण कागजीकाहुआ जानेरहो कि जब भक्तको थोड़ा भी अभिमान उत्पन्न होजाता है तब भगवत् अपनीमाया से उस अहङ्कारको दूर करदेते हैं जो ऐसा न करें तो वह भक्त दोनोंलोक से जातारहै जैसे बालक के गुमड़े को उसकी माता चिरवाती है और वह थोड़ीसी पीड़ा होने से सदाका दुःख दूरहोजाता है सो भक्तोंको किसीप्रकार का कष्ट और दुःख होना कारण बढ़ती भक्ति और परमकल्याण का दायक है भगवत्धाम की यह महिमा है कि जिस पद को ब्रह्मादिकभी नहीं पहुंचते सोपदवी सहज में प्राप्त होती है ॥

भगवन्तकीकथा ॥

भगवन्तजी आगरे के सूबा के दीवान भगवत्भक्त ऐसेहुये कि पुंजविहारीजी के चरित्र व उनकास्वरूप व प्रिया प्रीतम के आपुसकी प्रीति व प्रेममें दिनरात मग्न रहतेथे और सिवाय प्रियाप्रीतम के दूसरीओर भूलकेभी चित्त नहींजाताथा बिधि निषेधसे न्यारेहोकर युगुलस्वरूपके माधुरी रसमें छके रहतेथे वैष्णवीरूप धारण कियेहुये भजन व भावका मन बिश्राम रखते और श्रीवृन्दावन धाम में प्रियाप्रीतमके तुल्य भाव था जोकोई वहांका रहनेवाला उतरता तो उसको भगवत्रूप जानकर द्रव्य व अच्छे पदार्थ आगे धरते एकबेर स्वामी हरिदासजी अधिकारी

मंदिर गोविंददेवजीके प्रेम व भक्तिमें अद्वैत व भावमें अनन्य व भगवंत जीके गुरुरहे व भगवत् ने आप जिनसे दूध व भात मांग करके भोग लगाया आगरेकी ओर आये भगवंतजी सुनकर बड़ेआनंदितहुये अपनी स्त्रीसे मंत्रनाकिया कि भेंट क्या दियाचाहिये उस बड़भागिनी ने उत्तर दिया कि एकएक धोतीशरीरपर रखलेव औ सबघरबार सम्पति हाथी घोड़े भेंट करदेव यहसुनकर भगवंतजीस्त्री से बहुत प्रसन्नहुयेऔर बोले कि प्रेम और भक्तिका रस भगवत्ने तेरेही भागमेंदियाहै यहबिचार इन दोनोंका स्वामी हरिदासजी ने भी सुना अतिप्रसन्नहुये परंतु उनका धन सम्पत्ति लेना अनुचित समझकर उनके यहां न गये श्रीवृन्दावन को लौटआये भगवन्तजी गुरू के नहीं आने से बड़े उदासीन व शोक युक्त होकर सुबेसे बिदामांगि वृन्दाबनको आयेयात्रा इत्यादिकरकेभांतिभांति भगवत् भाव व चरित्रोंके सुन्ने से आनन्दितहुये व आप भगवत्चरित्रों की रचना करिके भगवत् भेंटकिया एकबेर ब्रजबासी सब चोरीके कारण आगरेके कारागारमें बद्धरहे भगवन्तजी ने जाकर छुड़ा दिया एक बेर ब्रजबासियोंने भगवन्तजी की सब बस्तुको चुरालिया बड़े आनन्द व प्रेममें मग्न होगये कि उस चित्तचोर मनमोहन नन्दकिशोर ने मेरे धनको गोपियोंके माखनके सदृश समझा ऐसा भाव भगवन्तजी का अब उनके पिता माधवदासजी का वृत्तांत सुनिये कि जब उनके देहांतका समय आया चेष्टा पहिंचानकर लोग पालकीमें डालकर वृन्दावनको ले चले आधी दूर जब पहुंचे तब सुधिभई पूछा कहांलियेजातेहो उत्तरदिया कि जिसधामका रातिदिन ध्यान करतेरहे तहांहीं लियेजातेहैं माधवदास जीने कहा कि शीघ्र लौटचलो मेरा शरीर बृन्दावनके योग्यनहीं विचार करो कि जब यह शरीर जलाया जायगा और दुर्गन्ध उठेगी प्रियाप्रीतमके खेल और बिहार में भंग होगा कदापि इस शरीर को वृन्दावन में लेजाना उचित नहीं और वृन्दाबन में जानाही है तो आपसे आप जानेवाला युगुल स्वरूपको पहुंच जावेगा यह कहिकर तनको छोड़दिया व नित्य बिहारमें जामिले ॥

हरिदासजी की कथा ॥

हरिदासजी जातिके क्षत्रिये रहनेवाले काशीके निकटके राधावल्लभी

संप्रदामें परमभक्त व अगणित गुण व गूढ़ भगवत् चरित्रोंका सार जाननेवाले हुये मानों पलरेसे मुख्य अभिप्राय शास्त्रोंकी घटती बढ़ती देखा करते रहे जिन्होंने डंका देकर अपने प्रणको पूराकिया और राधा वल्लभ जी के भजनका प्रताप दिखाया भगवत् भजनमें दृढ़ व कलियुगमें कामधेनुके सदृशरहे हरिदासजी ने प्रणकियाथा कि वृन्दावनमें देहत्याग करैं संयोगबश ज्वरहुवा और वैद्यलोगोंने औषध देनेसे हाथखींचा तब डोलीमें बैठकर भगवत् चरणारविन्दमें मनलगाकर वृन्दाबनचले बीच में तन छूटगया परन्तु प्रण पूर्णकरने के निमित्त वैसाही शरीर बनाकर वृन्दाबन में आये और श्रीराधावल्लभ लालजी व गोसाईं सुन्दरदास अपने गुरूके प्रेम और भावसे दर्शनकरके सत्संग और भगवत्चरित्रोंके सुखलिये और चीरघाटपर स्नान करके उसदेहको छोड़दिया व साथी सब लाशको दग्धकरके रोते व शोकयुक्त वृन्दाबनमें आये सब वृत्तान्त उनके गुरू और सबसे कहा गोसाईंजी ने कहा कि तुम उनके प्रणकी चिन्ता कदापि मतकरो कलह हरिदासजी हमारेपास आये बोलबतराय करके व भगवत् दर्शनकरके स्नान यमुनाजी का किया व देहत्यागदिया सबको भगवत् भजनका बिश्वासहुआ इसचरित्रमें जो किसीको शंकाहोय कि जो हरिदासजी ऐसे समर्थरहे कि दूसरा शरीर धारण करलिया तो पहिले शरीरसे क्यों नहीं वृन्दाबनमें आये सो जानेरहो कि हरिदास जी को कुछ ऐसीलाग अपने प्रण पूरेहोने की नहींरही चाहै पूराहोय नहो परन्तु आप भगवत्को उनके प्रण पूर्णहोने की लागपड़ी क्योंकि पद्मपुराण आदिकमें बचन भगवत्काहै कि मेरेभक्तजो चाहनाकरतेहैं सो पूर्णकिया करताहूं सिवाय इसके भगवत् को यहबात फैलानी जगत्में थी कि मेरेभक्तोंका प्रण कबहूंनहीं बिचलताहै एक तनछूटातो क्याहुआ दूसरे तनसे वृन्दाबनमें पहुंचगये॥

मधुगोसाईं की कथा॥

मधुगोसाईंजी मधु श्रीरंग बिख्यातथे परम रसिकप्रिया प्रीतम व श्री वृन्दाबनके हुये दर्शनकी चाह व वृन्दाबन बासके निमित्त घरबार छोड़ कर बंगालेसे वृन्दाबनमें आये जब यात्रा व दर्शन करचुके तब चाहना साक्षात् दर्शनोंकी हुई और ब्रजकिशोर किशोरीकी परम मनोहर मूर्ति

के ध्यानमें छकेहुये सब वन व कुंज में ढूंढ़ने फिरने लगे दिनरात खाना सोना शीत उष्णका विचार निर्मूल मनसे दूरकिया जबमहाराजने भक्तिभाव व प्रीति ऐसी अपने भक्तकीदेखी तो यमुनाके किनारे वंशीवटके निकट इस स्वरूप से दर्शनदिया कि परम शोभायमान श्यामसुन्दर स्वरूप माथेपर मुकुट कानोंमें कुण्डल स्वर्णतारोंका बागा व घुटन्ना पहिनेहुये व मणिगणके आभूषण सब अंगोंपर शोभित एक हाथमें मुरली और दूसरे में छड़ी अपने सखाओं के संगहँसी खेलकर रहे हैं गोसाईंजी को यह रूप अनूप देखकर कुछ सुधि न रही ब्रह्मानन्दमें मग्नहोकर बेसुध दौड़े व चरणारविन्दमें लिपटगये उनके भागकी बड़ाई किसप्रकार लिखीजावे कि जिस पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घन के चरणरज को ब्रह्मादिक वांछा करते हैं सो उनके भक्ति व प्रेमकेवश होकर आप प्रकट हुये ॥

भूगर्भकी कथा ॥

भूगर्भजी गोसाईं परममाधुर्य्य उपासकहुये घरबार छोड़कर विरक्त होगये और वृन्दावन में आयकर निश्चल व दृढ़ वास किया अर्थात् सिवाय उस परमधाम के दूसरी किसी ओर चित्त व चाहना न हुई किसी पुराण का वचन है कि वृन्दावन से बाहर जो करोड़ों चिन्तामणि मिलतेहों अथवा आप भगवत् मिलताहो परन्तु वृन्दावनकी रज व धूलि से यहशरीर कबहीं अलग न होय सो ऐसेही दृढ़भाव से गोविंददेव जी की कुंज में वासकरके मानसीभावसे रूपमाधुरी प्रिया प्रीतम की तिसमें बेसुध व मग्न रहाकरते खानेपीने की सुधिभी विशेष करके भूलि जाते मन व प्राण व बुद्धि व सुधि और जितनी चित्तकीवृत्तिहैं सब रूपअनूप के चिन्तवनमें ऐसीलगी कि दूसरीओर कदापि न चलायमानहुई ॥

काशीश्वर की कथा ॥

गोसाईं काशीश्वरजी परमभक्तहुये पहिलेअवधूतरहे पुरुषोत्तमपुरमें आये व श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु के चेलेहुये फिर आज्ञासे गुरुके वृन्दावनमें आये प्रेम व आनंदमें मग्न व कृतार्थहोगये थोड़ेहीदिन में उनकी भावना व प्रीति ऐसीविख्यात हुई कि श्रीगोविन्ददेव जी महाराज की सेवा पूजा उनको मिली उसी सेवामें रातदिन रहने लगे ॥

प्रबोधानन्द की कथा॥

प्रबोधा नंद सरस्वती संन्यासी चेले श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु के परम रसिक भक्तहुये प्रिया प्रीतम का बिहार व कुंजखेल के रसको अपनी काव्यरचना में ऐसावर्णनकिया कि जिसको पढ़ सुनकर करोड़ों प्रेम व आनंदमें मग्नहुये व होते हैं युगुलस्वरूप मुखचंद्र में मनको चकोर की भांति लगाया और वृन्दबनबास की दृढ़ शिक्षा जगत्को लखाई कि किसीप्रकार वृन्दावन के बाहर न जावैं॥

लालमती की कथा॥

मनुष्य तनको पाकर जो लाभ होनाचाहिये सो लालमतीजीको हुआ कि गौड़स्वामी के चरणकमलों से अन्यत्र किसी ओर चित्तकी वृत्तिनही जातीरही और लालमती जी वात्सल्य उपासक जनाईपड़तीहैं इसीहेतु भक्तमाल में नाभाजी ने गौड़स्वामी की प्रीति से यह पद धरानहीं तो प्रियाप्रीतम अथवा किशोर किशोरी यह पदधरते लालमतीजी को जैसी प्रीति युगुलरूपमेंथी वैसीही यमुनाजीसे व ब्रजकी कुंजोंसे और बंशीबट इत्यादिक भगवत् के खेलस्थान व ब्रजमण्डल से रही व अचलबास श्री वृंदाबनमें करके भक्तिभाव को दृढ़किया व यद्यपि वात्सल्य उपासना लालमतीजीको रही और गोकुलस्थों की सेवक रहीं परन्तु धर्मनिष्ठा का बिश्वास और जिस विधिसे वहांबास चाहियेसो सबलालमती जीमें रहा इसहेतु धामनिष्ठामें लिखागया॥

निष्ठा चौदहवीं॥

भगवत् नामकी महिमा जिसमें पांचभक्तों की कथा है॥

श्रीकृष्णचंद्रस्वामी महाराजके चरणकमलोंके षट्कोण रेखा व परशुराम अवतारको दण्डवत्है कि पृथ्वी केभार दूरकरनेकेहेतु इक्कीसबार क्षत्रियों को बधकरके ब्राह्मणों को राज्यदिया और यह अवतार जमीनागांव में वैशाखशुक्ल तृतीयाको हुआ यद्यपि भगवत् नामकालेना कीर्तनमें है परन्तु स्मरणसे संबंध अधिकहै इसहेतु अलग निष्ठा स्थापितहुई और जोचार प्रकारकी उपासना अर्थात् नामधाम लीला रूप शास्त्रोंमें लिखीहैंतो नाम की उपासना प्रथम अग्रगामीहै इसहेतु नामनिष्ठा लिखना उचितसमझा

महिमा भगवत् नामकी यद्यपि सर्ववेद व पुराणोंमें वर्णन की है परन्तु पार न पायसके जैसेभगवत्की महिमा व चरित्रअनन्तहैं उसीभांति नाम की महिमा भी व नाम अनंतहैं शेषजी जिसनामको नित्य नवीन वर्णन करतेहैं परन्तु पारनहींपाते शिवजीका प्राण आधारहै व संसार से उद्धारके निमित्त भगवत् नामही वहुतहै और साधनका प्रयोजन नहीं और विशेषतायहहै कि कौन२ भावसेनाम स्मरणकरैं निस्संदेह भगवत् प्राप्तहोता है स्कन्दपुराणमें लिखाहै कि भक्तिसे अथवा वे भक्तिसे भगवत् नाम का उच्चारण सवपापोंको नाशकरदेताहै जिसप्रकार महाप्रलयकी अग्निसारे संसारको भस्मकरदेतीहै भागवतमें लिखाहै कि औषधीजानेकै विनजाने जिसप्रकार अपना गुणकरती है तिसी प्रकार भगवत् नाम व नृसिंह पुराण में भगवत्का वचनहै कि जो मेरे नामका जपकरते हैं सो अपने करोड़ों पुरुषों सहित मेरे धाम को पहुंचते हैं विष्णुरहस्य में लिखा है कि वही परमज्ञानवाला है और वहीपरम तपवालाहै जो भगवत् का नामलेवे रामरक्षामें विश्वामित्रजी का वचनहै कि राम राम अथवा रामचन्द्र रामभद्र जोकोई स्मरण करतेहैं उनको कभी पापस्पर्श नहीं करता दोनों लोककी कामना सिद्धहोती है स्कन्दपुराण का वचनहै कि राजसूय यज्ञ व अश्वमेध और अध्यात्म ज्ञान इत्यादि का सारांश श्रीकृष्ण स्वामी ने अपने नाममें रखदियाहै अर्थात् सवका फल नामसे होजाता है जोयह शंका कोईकरै कि जिसआदमीका नामलेकर पुकारते हैं तो तुरंत आजाताहै और ईश्वरका नाम हजारों लोगलेते हैं ईश्वर नहींआता है इसका क्या कारणहै सो यह हेतु कि जिसमनुष्य को पुकारा जाता है किसी प्रकारकी वे विश्वासी उसके जानलेने और पहिचानमें नहींहोती है इसी प्रकार जवनाम व नामीमें दृढ़विश्वास होगातो निःसंदेह तुरंत भगवत् साक्षात्कार होजायगा और एकदृष्टांतभीहै कि धर्मात्मा व न्यायकर्ता राजाकी सभामें हजारों दुःख कहनेको व न्यायके निमित्त जातेहैं उसमें वहुतलोग ऐसेहैं कि न न्याय करवानेकी रीति जानतेहैं और न राजसभा में जानेकी रीतिजानते व न कोईपक्ष उनकाहै और न राजाका स्वभाव पहिंचानते केवल अपनी दुहाई तिहाई शोरगुल से कामहै सो यद्यपि राजाकेन्याय व धर्मशील स्वभावसे अपने न्यायको पहुंचतेहैं परंतु

जो बिलम्ब होताहै सो अज्ञानतासे उनलोगोंके राजाका कुछदोष नहीं और कितनेलोग ऐसेहैं कि राजसभाकी रीति व्यवहार जानते हैं और राजसेवकोंसे पहिचानहै ऐसेलोग जब सभामें गये उसीघड़ी अपने परिश्रम व राजसेवकोंकी कृपासे अपनाअर्थ सिद्ध करिलाये और केवल राजाकी प्रसन्नताके हेतु सभामें जातेहैं व किसी प्रकारकी कुछ यांचना नहींकरते ऐसेलोग बहुत थोड़ेहैं सो ऐसेलोगोंका अर्थ राजा आप सिद्ध करदेताहै उनकीविनय व प्रार्थनाका प्रयोजन नहींहोता तैसेही यहनाम भीहै जापकके विश्वासके अनुकूल अर्थको सिद्ध करदेताहै यद्यपि तरवार में यहशक्तिहै कि लोहेके तवेको दोटुकड़े करदे परंतुनिर्बलके हाथसे चिन्ह भी नहीं उखड़ती और बलीके हाथसे तुरंत दोटुकड़े होजातेहैं यहीवृत्तान्त नामके विश्वासका है अब यह शंका उत्पन्न हुई कि बिना मनके लगाये नामके लेनेसे भगवत् कैसे मिलजायगा सो जानेरहो कि किसी प्रकार नाम लियाजावे निश्चयकरिके भगवत् प्राप्तहोजायगा किसहेतु कि नाम और नामी भिन्ननहींहैं और रीतिहै कि नामके पुकारने से नामी पहुंच जाताहै सो भगवत् सबजगह प्राप्त रहनेवाला नामके पुकारनेसे क्यों न आवैगा प्रेमसे पुकारै कै बिनाप्रेम पुकारै सो श्लोक सबइसके साक्षीही हैं पर अजामिलकी बात इसनिष्ठामें लिखी जायगी कि धोखेसे भगवत् का नामलियाथा सो परमधामको गया और बाल्मीकिजीकी कथाकीर्तन निष्ठामें वर्णन हुआहै कि उनको भगवत्की महिमा का निर्मूल ज्ञाननहीं रहा और न नामकी महिमा जानतेरहे और जो किसीको हठ इसबातका हो कि जब प्रीतिदृढ़ व एकाग्र चित्त लगैगा तबही भगवत् प्राप्तहोगा तो जानेरहो कि परम्पराकी रीतिके अनुसार प्रारम्भमें प्रीति व एकाग्र चित्तकीवृत्ति किसीको नहींहोती और जोहोतीहै तो बहुतकम पर नामहीं वह विश्वास व मनकी लगनको दिनदिन अधिक करके भगवत् पदको पहुंचाय देताहै जैसे बालपनकी विद्या के अभ्यास में प्रथम न मन लगै व न प्रीति उपाध्याय के भय से अक्षर घोखते घोखते पण्डित होजाता है इसी प्रकार भगवत् नाम की रटना व विश्वासकर मन की लगन बढ़ायके पदको पहुंचाय देतीहै इससमयमें बहुतलोग प्रकट भजन और नाम लेनेको अच्छा नहींकहते हैं व यहबात बनाते हैं कि बिना मनलगे

क्या होताहै सांचेलोग कबहीं किसी मनोरथके सिद्धताको नहींप्राप्तहोते व उनकेसंदेह निवृत्तहोते हैं निश्चय करके बौड़हे कुत्तेके सदृश हैं भूंक भूंकके मरजावेंगे प्रथम तो उनके नाशकरने को अपराध शास्त्रकी आज्ञा को नहींअंगीकार करना महाप्रबलहै अर्थात् शास्त्रोंमें तो यहआज्ञा हो- चुकी कि विनामन ऊपरही से नाम लेनेसे उद्धार होताहै और वे लोग उसके प्रतिकूल वर्णनकरें तो निश्चयकरके असुर व अपराधी हुये और ऊपरहीके भजनसे मनभी लगनेलगताहै सोजब कि उनअसुर बुद्धियों को पहिलेहीपदसे अरुचिभई तो उनको दूसरापद कबप्राप्तहोगा और इसीसे सदा जन्ममरणके दुःखमें बँधेरहैंगे और बौड़हे कुत्तेके दृष्टान्तसे यहअभिप्रायहै कि पापकर्मोंके मदसे उनकी बुद्धि जातीरही सूक्ष्मअर्थ समझना तो अलगरहा मोटी बातोंपर भी उनका विचार नहीं पहुंचता अर्थात् शीतल जलका स्नान और अग्निका सेवन अथवा ऊपर की सुन्दरताई या किसीकी बात अथवा सुगन्ध व ठंढीपवन व दुर्गन्ध इत्या- दिक तो ऊपरसे हृदयके भीतरभी न जावै और भगवत्नाम ऐसा हुआ कि वह ऊपरसे कहाहुआ कभी गुण न करे धन्य उनकी समझ व बुद्धि और शोचकी बातहै कि प्रकटविख्यात बातपर दृष्टिनहींहोती कि पारस पाषाण को लोहा जानिके लगिजावे अथवा विनाजाने परभी निश्चय सोना करदेताहै और आगमें कोई वस्तु जानिके डालें अथवा बेजाने नि- श्चय करके भस्म होजाती है अमृतको कोई जानिके पीवे अथवा बेजाने निश्चय अमर होजायगा इसीप्रकार भगवत्नामको कोई मनुष्य विना जाने ऊपर से लेवे अथवा जानिके हृदय से परन्तु निश्चय भगवत्रूप होजायगा तात्पर्य यह कि चारों फलके देनेको और संसार सागर से उद्धारके निमित्त मेरे स्वामीका नाम समर्थहै और किसी साधनका प्रयो- जन नहीं और इससेअच्छा कोईशरण या अवलम्ब दिखाई नहींदेता है सतयुग में भांतिभांतिके कर्म व त्रेतामें यज्ञ आदिक और द्वापरमें भग- वत्पूजन इत्यादि व्यवस्थित रहा और कलियुगमें कि पापरूपहै विना कृपा नामके कोई उपाय अच्छा व मुख्य साध्य भगवन्त और शास्त्रोंने नहीं ठहराया भगवन्तका वचनहै कि जब महापापी घोरदेन नामलेकर संसार समुद्रसे उतरजाते तो धार्मिक नामलेंगे उनका क्याकहनाहै तात्पर्य

राज में लिखाहै कि रामनाम ब्रह्महत्या का दूरकरने वालाहै भगवत्का वचन है कि कैसाही किसीको दुःखहो और कैसाही बिषयी पापीहो भगवत्नाम के प्रभावसे सब पापों व दुखों से छूटकर परम आनन्दको प्राप्त होताहै सो दोनों लोकका साधन भगवत् नामसे अधिक दूसरा दृष्टिमें नहींआता और यहबात विख्यातहै कि जब किसीको कुछ दुःख होता है अथवा कुछकामना होती है तो वरण बैठलाते हैं और मनोरथ को प्राप्त होतेहैं ताजानेरहो कि अभ्यास और जप भगवत् नामका सर्व्वदा व सब घड़ीअत्यन्त प्रयोजनहै व अवश्यक करणीयहै परन्तु अत्यन्त आवश्यक से आवश्यक यह है कि साढ़ेतीन करोड़ शरीरपर रोमहैं सो अपने जीवते भरमें एकबेर प्रतिरोम एकनाम के गणना से साढ़ेतीन करोड़ नाम पूरा करदेना उचितहै और इक्कीसहज़ार छःसै श्वासा रातदिनमें चलताहै सो इतनाही नामनित्य जपलेनाचाहिये इसहेतु कि कोई श्वासानाम व्यतरिक्त गणना में न आवै इक्कीसहज़ार छःसौ नाम तीन सवातीन घड़ीमें पूरे होजाते हैं अर्थात् सवा घंटेमें और यह कुछ प्रयोजन नहीं कि एकजगह बैठकर लियेजावें चलते फिरते बात करते जिस प्रकार होसकै पूरे करदेने चाहिये सो यह दोनों प्रकारका कर्तव्य उनलोगोंके निमित्त लिखा गया कि जिनको नाम लेनेमें प्रीतिनहीं और जिनको भगवत् नाममें प्रीतिहै और अनुक्षण नाम को रटे हैं उनको एकपल नाम बिना नहींजाता उनके हेतु कोईरीति लिखनी क्या प्रयोजन कि उनका जीवन धन भगवत् नामहै अरे मन तनक तू समझ और चेतकर कि तू भगवत् अंशसे हुआ सदा एक रस प्रकाशमान और ज्ञानानन्द स्वरूप है कभी ऐसा नहीं हुआ कि तू न रहाहो व आगे न होगा न कभी तुझको मृत्यु है और न कभी जन्मता है परन्तु श्रीकृष्ण स्वामीके चरणकमलों से बिमुख होकर इसगति को पहुंचाहै कि भांति भांतिके दुःखनरक व स्वर्ग नानाप्रकार की पीडा चौरासी लाख योनि की तेरे मुण्डपड़ी है स्त्री व लड़के व धन व गृह मित्र आदि इनको तू अपना और नित्य समझकर उनके चिन्ता व शोच में दुःखित व मग्न रहता है सो अब तू अपनेऊपर दया और उस स्वरूप के चिन्तवन में रहाकर जो कि ग्रन्थारम्भ में लिखाहै कि जिसकरके मायाके जालसे तेरी छुट्टी होकर परमानन्द की प्राप्तिहोय॥

अजामिलकी कथा॥

अजामिल पूर्वजन्म का ब्राह्मण था और वनमें तपकिया करता था मरतीसमय एक चाण्डालीमें उसका ध्यानगया और मरगया इस जन्म में भीकान्यकुब्ज नगरमें ब्राह्मणके घर जन्मपाया परन्तु पहिलेही से पाप कर्म्ममें रतरहा एक पुंश्चली स्त्री को देखकर आसक्त होगया उसके साथ रहनेलगा व पक्षी मृगा मारना मद्यपान व चोरी व जुआ खेलना ऐसा ही पापकर्म्म उसकी जीविका थी कि वर्णन उन कर्म्मों का अच्छानहीं एक वेर भगवत्भक्त लोग बिनाजाने उसके घरआये उसने प्रेमसे सब सेवा रसोई इत्यादि की अच्छेप्रकार से करी और दीनहोकर अपनासब वृत्तान्त कहकर चरण पकड़लिया हरिभक्तों को दयाआई चलतीवेर उपदेश करगये कि अबकी लड़का उत्पन्न होय तो नारायण नामधरना अजामिल ने वैसाहीकिया और नारायणनामलड़के को प्यारबड़ाकरता था जब मरणसमय यमदूतों करके पीड़ितहुआ तब पुकारा हे नारायण तबतक नारायणके पार्षद पहुंचे यमदूतोंको मारकर निकालदिया अजा-मिल को वैकुण्ठमें लेगये यमदूतोंने जाकर यमराजके पास दुहाईदी कि ऐसापापी सो अपनेबेटे को पुकारा कुछ भगवत् को जानकर नहीं सो पार्षद लोगोंने हमकोमारकर निकालदिया उसको वैकुंठमें लेगये यम-राजनेकहा कि जब मरनेकेसमय किसीप्रकार भगवत् नामलियातो अब कौन धर्म्म कर्म्म करने को शेष रहगया तुमको इतनाज्ञान नहीं अच्छा हुआ जो तुम्हारा दण्डहुआ आगे पर जानेरहो कि जहां भगवत्नामका उच्चारण किसीप्रकार हो वहां न जाना क्योंकि जहां भगवत्नामहै तहां यमदूतोंका क्याकाम है अजामिल जब परम धाम को गया तब उसकी पुंश्चलीस्त्री भी मनकोलगाकर उसीगति को पहुंची धन्यहै भगवत्नाम की महिमा व प्रतापको कहां अजामिलके पाप घोर व कहांपदवी केवल धोखे से नामलेने के प्रभाव से मिली तो जानकर नाम लेने से कैसी गति मिलेगी इसनिमित्तमें महिमा भक्तकी और नवें अध्याय गीताजीमें जो दृढ़ निश्चय करके कहा है कि मेरे भक्तका नाशनहीं सोभीप्रकट है॥

एकराजाकी २ कथा॥

एक राजा अम्बरीष परम भागवत ऐसेहुये कि भगवत्का स्मरण

भजन इत्यादि सर्व्वकाल मनहीमें कियाकरते औ बाहरकी वृत्ती ऐसीथी कि सबलोग महाविषयी व संसारी जानते थे और रानी हरिभक्त रही उसको भी राजाके अन्तर्निष्ठाका वृत्तान्त ज्ञात नथा इस शोचमें रहा करती थी कि राजाको किसीप्रकार भगवत्में प्रीतिहोती एकदिन निद्रा में राजाकेमुखसे भगवत्नाम निकलगया रानीने उसदिन नौबत बजवाई दानपुण्य बड़ा उत्साह किया राजाने उत्साहकाहेतु पूंछा रानी ने विनयकिया कि रात आपकेमुखसे भगवत्नाम निकला इसीहेतु उत्साह किया राजानेकहा कि मूलप्राणकातौ भगवत्नाम शरीरमेंथा जोवहही निकलगया तो तन किसकामकाहै यह कहकर तनछोड़दिया तुरंत परम पदको जा पहुंचा रानीने जो यहअति गुप्तभक्ति और भावराजाका देखा तो ऐसे परमपद परमभक्तके वियोग और अपने अज्ञानता के शोक से अत्यंत विकल व बेसुधहुई कि राजाकेप्रेमाव भगवतभाव में मग्नहोकर प्राण त्यागिके जिस परमधामको राजा पहुंचे तहांहीं पहुंची निश्चय करकै जिसको भगवत्नामसे प्रीतिनहीं सो मृतक प्रायहै और जिसको उस नामसे प्रीतिहै सो सदा अमर है॥

एक ब्राह्मण की कथा॥

एकब्राह्मण भगवत्भक्त अपनी स्त्रीको मैकेसे लिये आताथा राह में ठगोंसे भेटहुई और ठगोंने पूंछनेपर कहा कि जहां तुम जातेहो तहांहीं हमभी जातेहैं सो हम सीधीराह देखेहैं तुमभी इसीराहचलो ब्राह्मणको बिश्वास न आया तब उनसे चोरों ने रामचन्द्रके नामकी सौंह दिया तब उसस्त्रीने ब्राह्मणको समझाया कि अब न माननां अयोग्यहै तब दोनों उनठगोंके साथचले जब महा घनबनमें गये ठगोंने ब्राह्मणकोमारकर बस्तु सब और स्त्रीको ले चले वहस्त्री पीछे फिर फिर देखतजाय ठगोंने पूंछा कि अबपीछे कौनको देखतीहो खसमतेरा तो मारागया उसने उत्तरदिया कि जो हमारे तुम्हारे बीचमेंहै उसको देखतीहूं व सबोंनेकहा कि कहने की बातहै कहां अब रामचन्द्र हैं परन्तु उसस्त्रीको दृढ़बिश्वास था तबतक धनुषधारी महाराज धनुष बाणलिये घोड़ेपर सवार पीठठोंक आन पहुंचे ठगोंकोमार व ब्राह्मणको जिवाय उनदोनोंको घरकेसमीप पहुंचाय आप अंतर्द्धान होगये॥

कबीरजी की कथा॥

कबीरजी काशीमें भगवत्‌भक्त ऐसेहुये कि जिनकीभक्ति और प्रताप जगतमें विख्यातहै जिन्होंने भगवत् भक्ति से व्यतरिक्त कर्मको अधर्म जाना अर्थात् योग यज्ञ व दान व व्रत इत्यादि बिना भगवत् भजन व भावके वृथासमझा और निश्चयकरके शास्त्रोंका भी यहही अभिप्राय व सिद्धांतहै कि और साधन शून्यके सदृशहैं और कृष्णनाम अंककेसदृश हैं जो कृष्णनाम अंकप्राप्तहै तो योग यज्ञदान इत्यादि शून्य कृष्णनाम अंकपर अधिक होकर सब दशगुने होजाते हैं और जो कृष्णनाम रूपी अंकनहीं तो सब व शून्य व्यर्थ व रिक्त किसीप्रयोजन के नहींरहते तात्पर्य्य इसलिखने का यहहै कि जो साधनकर्महो सो भगवद्भक्ति प्राप्ति के अर्थ व कृष्णनामके प्रीतिके निमित्तहो संसार के कार्य्य व स्वर्गादिके निमित्त न होय कबीरजीने एकऐसा ग्रन्थबनाया जिसको सबमतवादी अंगीकारकरैं और सबके उद्धार के निमित्त काम आवै व भगवत् भजन में ऐसे दृढ़थे कि भजनके आगे वर्णाश्रमके धर्मको सब वृथाजाना और उनकी कथा यद्यपि बहुत जगतमें लोगकहतेहैं परंतु जो कुछ भक्तमाल के तिलकसे ज्ञातहुआ सो लिखी जातीहै प्रारम्भही से अपने जाति व मतकी रीतिको छोड़कर भगवत् भजन में रहाकरतेथे आकाश वाणीहुई कि माला तिलक धारणकरो व रामानन्दजीके चेलेहो कबीरजीने विनय किया कि रामानन्दजी मुसल्मानोंकी परछाहींभी नहींदेखते हमकोचेला किसप्रकारकरेंगे तब उसकाभी उपाय भगवतने बतलादिया तब कबीर जी उसीप्रकार कुछ रात बाकीरहते राहमें पड़ेरहे रामानंदजी स्नानको जातेथे उनका चरण कबीरजी पर पड़ा और रामराम मुख से निकला कबीरने उसीको उपदेशसमझा और तिलकमाला इत्यादि धारणकरके उस महामंत्रकाजप और भजनकरनेलगे कबीरजीकी माताने जो अपने मतके विरुद्ध आचरणदेखा तो शोर व चिल्लाहटकिया व समझाया कबीर जी ने कुछ न सुना अपनेस्मरण भजनमें रहते रहे नितान्त इसबातकी पुकार रामानन्दजी तक पहुंची रामानन्दजी ने आज्ञादी कि कबीर को पकड़लाओ हमने कब उसको चेलाकियाहै कबीरजी गये रामानन्दजीने परदा डलवाकर वृत्तान्तपूछा कबीरजी ने सब वृत्तान्त उपदेश का वर्णन

किया और यह भी बिनयकिया कि सबशास्त्रोंका मतयुक्त इसबातपरहै कि रामनाम महामंत्रहै सो तंत्रशास्त्र रामस्तव राज में लिखा है कि श्री रामनाम परम जाप्यह महामंत्र ब्रह्मस्वरूप है और शिवजीने पार्वती को रामनाम परममंत्र सहस्रनामके तुल्य उपदेश कियाहै सो उसनाम से कि जिसका उपदेश आपके श्रीमुख से मुझकोहुआ दूसरा बड़ामंत्र कौनहै कि जिसका उपदेश आपकरते तब चेला कहवावते और जब कि उसनाम का उपदेश आपके मुखसेहुआ तो आपको गुरू और मुझको चेलेहोनेमें क्या संदेह अबरहा रामानंदजीने प्रसन्नहोकर परदा उठाके कबीरजीको छातीसे लगाया व भगवत् भजन स्मरण व साधुसेवा का उपदेशकिया व बिदाकरदिया कबीरजी प्रयोजनमात्र को उद्यम कपड़ा बुननेका करतेथे व मन अनुक्षण रामनाम में रहता था एकदिन कपड़ा लेकर बाजारमें बेचनेगये किसीसाधु ने जांचा वह कपड़ा दे दिया और खालीहाथके कारणसे घर न गये छिपरहे घरके सब चिन्तामेंपड़े भगवत् उनके घरवालोंके दुःख न सहसके तीन दिन बीते बनजारे का रूप धर बैलोंपर सब प्रकारके अन्नलादे आये कबीरजी के घरडालकर चले गये पीछेलोग कबीरजीको ढूंढकर घरलाये जो नाजजमादेखा भगवत् चरित्र समझकर आनन्दितहुये साधोंको बुलाकर बांटदिया पीछे अपना उद्यम भी छोड़दिया ब्राह्मणों ने अन्नमें कुछ न पाया तिसकरके बटुर के कबीर के घरआये और कहनेलगे कि सुनरे जुलहे तुझको धनका बड़ा गर्व होगया है कि बिनाहमको जनाये बैरागियोंको कि छोटीजात और शूद्र थे नाज बांटदिया तू इस नगर को छोड़कर दूसरी जगह जाकर बासकर कबीरजीने कहा क्यों दूसरीजगह छोड़जावें किसीकेघर चोरी करीहै कि राहलूटी है ब्राह्मणोंने कहा कि भला इसीमें है कि कैतो तू कुछ हमारी भेंटकर नहींकाशीसे बाहरजा कबीरजी उनको अपनेघर में बैठालकर आप कहीं जाछिपे भगवत् को अपने भक्त का प्रताप सारे काशी में विख्यात करना था इस हेतु कबीर जी का रूप बनाकर घर आये और रुपैया व नाज ब्राह्मणोंको इतनाबांटा कि सारी काशीमें यश कबीरजीका हुआ और भगवत्ने ब्राह्मणके रूपसे कबीरसे जाकर कहा कि बनमें क्यों दिनभर रहताहै कबीरके घरजाना रुपैया सबको बँटता

हैं कबीरजी अपने घरआये देखकर भगवत् कृपाके प्रेमसे आनंद हुये जबयह सिद्धता भगवतकृपा सारी काशीमें फैली तो भीड़ लोगोंकी होने लगी तबयह उपायकिया कि एकहाथ वेश्याके गलेमेंडालकर और दूसरे हाथमें शीशा गंगाजलका मदिराका भ्रम करावते उन्मत्तकी भांति काशी में फिरनेलगे भगवत् भक्तोंने देखा तो कुसंगसे भयमाना व कहनेलगे कि कबीरजी परम भागवतहैं वेश्याके साथ लेनेसे उनको लोगोंने वि- षयी समझलिया तो दूसरे लोगों को यह वेश्याओं का कुसंग क्यों न रसातलको पहुंचावेगा और विमुख देखकर हँसे व कबीरजीकी निन्दा करनेलगे तबवहभीड़तो आनेजाने लोगोंकीसम न हुई परनिन्दाकरने के अपराधमें बहुतलोग वधहोनेलगे तब कबीरजीने यह उपायकिया कि उसीप्रकार वेश्या व शीशालिये राजदरबारमें पहुंचे सभामेंबैठगये परराजा व सभाके लोग किसीने आदरसत्कार जैसा करतेथे न किया वेविश्वास होगये कबीरजी ने उठकर थोड़ासा गंगाजल धरती पर डाला व रामराम कहकर शोचकिया राजा ने कारण डालने व शोचक- रनेका पूंछा कबीरजीने उत्तरदिया कि इससमय रसोइया श्रीजगन्नाथ जीका आगमें जलनेलगाथा मैंने यह पानी डालकर आगको बुझाके रसोइयाकोबचायाहै राजाको आश्चर्यहुआ हलकारा भेजकर समाचार मँगाया तो सत्यठहरा राजा बहुत लज्जित हुआ कि ऊपरके आचरण देखकर ऐसे परमभागवतका आदरसत्कार न किया नितांत लकड़ियों काभार शिरपरधरे रानीसहित नंगेपायँन आयके अति दीनहोकर कबीर जीके चरणोंमें पड़ा कबीरजीने अपराध क्षमा करके भक्तिका उपदेश किया उससमयका बादशाह सिकन्दर नामीथा काशीजीमें आया और ब्राह्मणों और मुसलमानोंके लगानेसे कबीरजीपर क्रोधकरके तलबीकी कबीरजीआये लोगोंने बादशाको सलाम करनेको कहा कबीरजीने कहा कि हमको न सलाम करने आताहै न बादशाहसे कुछकामहै एक राम नामको जानताहूं वहीमेरा सबकुछहै और मेरा प्राणका आधार वहीहै बादशाह ने सुनकर क्रोध करके जंजीरसे बंधवाकर गंगाजीमें डलवा दिया न डूबे तब आगमें डलवादिया न जले तब मतवाला हाथी उनपर छोड़ा हाथीभी भागगया यहसब प्रभाव कबीरजीका देखकर बादशाह

चरणोंमें गिरा अपराध क्षमाकराया और कहा कि मैं आपका किंकर हूं धनसंपत्तिराज्य जो आज्ञाहो सोभेंटकरूं कबीरजीने कहा कि हमको एक रामनाम छोड़ और किसीसे कुछ कामनहीं यह कहकर अपने घरचले आये भक्तोंको आनन्ददिया काशीके ब्रह्मणों ने जो यहवृत्तान्त सुना तो लज्जितहोकर कबीरजी के दुःख देनेके उपायमें हुये बहुतआदमियों को साधु वेष बनाकर सारेमुल्कमें कबीरजीकी ओरसे नेवता फेरदिया कि फलानेदिन कबीरजीके यहां भण्डाराहै और उसीदिनपर साधोंकी ज-मात आनिपहुंची कबीरजीको जब समाचार मालूमहुआ तो छिपि रहे भगवत्आप कबीरजीके रूपसेआये और ऐसी धूमधाम आदर सत्कार से भंडारा पूर्णकिया कि वैसा भंडारा भगवत्से बनिआवै फिरपीछे साधु रूपसे कबीरजीके पासगये सबवृत्तांत भण्डारे का वर्णनकिया कबीरजी भगवत्कृपाके आनन्दमें मग्न होगये एक अप्सरा स्वर्गकी कबीरजीकी परीक्षाके हेतु मोहनीरूप बनाकर आई कबीरजीने तनक उसकी ओर निगाहकोभी न किया ऐसे भगवत्रूपमें छकेथे नितांतचलीगई भगवत्ने प्रसन्नहोकर चतुर्भुजरूप प्रगट होकर दर्शनदिया और हस्तकमलउनके मस्तकपर रखकर आज्ञाकी कि शरीरसमेत परमधाम को चलो कबीरजी भगवत् रूपकी माधुरी देखकर आनंद होगये और जाने को तैयारहुये परंतु भगवत्भक्त का प्रभाव प्रकटकरने हेतु एकआश्चर्य्य चरित्रकिया अर्थात् काशीके उसपार मगहदेशहै वहां जो कोई मरताहै उसको गदहे का तनमिलताहै सो कबीरजी परमधामके जानेकेसमय उसीदेश अर्थात् गंगापार गये और वहां जाकर शरीरसहित परमधाम की यात्राकी इस चरित्रसे यहदिखाया कि जोकोई केवल कर्मशास्त्र निष्ठहै मगहदेशमें मर-नेसे गदहे का शरीर उनको मिलताहै और जोकि भगवत्भक्तहैं उनको सबदेश व सबस्थान हजारों काशी के समानहैं और भक्तिकी यह पदवी व प्रभावहै कि मगह देशमेंमरकर भगवत्भक्त शरीरसहित परमधामको जाताहै तिसके पीछे मुसलमानों ने चाहा कि लाशको कबुरदें क्योंकि कबीरजी मुसलमानथे और हिंदूलोगोंने कहा कि कबीरजी साधु थे हम उनकी लाश जलावेंगे इसपर तकरार हुई चादरा उठाकर देखैं तो लाशके स्थान सुगंधवान फूलमिले भगवत् भक्तिका बिश्वास हुआ॥

पद्मनाभ की ५ कथा ॥

इस संसारमें भगवत् का नाम महामंत्र व महाधन और सेवा और पूजा और जप और तप औ योग और ज्ञान व वैराग्य का सार और भगवत्रूपहै नामसेसिवाय और कोईदूसरा नहीं नामहीसे दोस्ती और नामही से नेह और नामही से नाता व नामही से विश्वास चाहिये कि यहही भक्तिहै और यहीज्ञान और नामही नामीहै और नामही नामहै आप श्रीकृष्ण महाराज अपने नामकी बड़ाई नहीं कहसक्ते इस बात पर सबका मत युक्तहै पद्मनाभजी का वृत्तान्त सुनिये कि उनको कबीर जी अपने गुरूकी कृपासे राम नामकी अच्छे प्रकार परीक्षाहुई काशी जी में एक साहूकारको कुष्ठका रोगथा और कृमि शरीर में उसके पड़ गये थे गंगामें डूबने को चला संयोग वश पद्मनाभजी भी वहां आगये उसका कष्ट देखकर दयाआई कहा कि तीनबेर राम नाम लेकर गंगामें स्नानकर कि अच्छा होजावेगा वैसाही उसने किया कि तीनबेर राम राम कहकर डुबकी लगाई अच्छा होगया पद्मनाभजी ने उसको भक्ति का उपदेश किया और वृत्तान्त अपने गुरू कबीरजी को सुनाया कबीर जीने क्रोधयुक्त होकर कहा कि तुमको अबहीं तक राम नामकी महिमा मालूम नहींहुई कि एक रोग तुच्छके दूरकरनेको तीनबेर रामनाम कह लाया रामनाम ऐसा महामंत्र है कि उसके एक बार भी शब्द कानमें पड़जावें तो करोड़ों जन्मके महापातक दूरहोजातेहैं एककुष्ठी का कुष्टरोग कौन बड़ीबातहै पद्मनाभजीको यह महिमासुनकर और विशेष विश्वास दृढ़हुआ दिनरात उसी नामके स्मरण भजनमें रहनेलगे ॥

———※———

पन्द्रहवीं निष्ठा ॥

ज्ञानध्यानकीमहिमा जिसमें चारहूभक्तों कीकथा है ॥

श्रीकृष्ण स्वामी के चरण कमलोंकी सीन रेखाको और सनत्कुमार अवतारको कोटान कोटि दण्डवतहै यह अवतार भगवतने ब्रह्मपुरी में धारण किया व ब्रह्मज्ञान की विशेष प्रवृत्ति इसी अवतार से हुई वेद श्रुति व सब शास्त्रों व पुराण इस बात में युक्त हैं कि बिना ज्ञान के मुक्तिनहीं तो वेदान्त १ सांख्य २ पातंजल ३ मीमान्सा ४ तर्क ५ वै-

षिक ६ शास्त्रोंने कि बेदके अर्थके कथन करनेवाले व बेदके अंग कहलातेहैं और जहांतक जो कोई मार्ग मतमतान्तर किसीके ध्यानमें आवें और जो प्रवर्तमानहैं उनसबका मूल कारण किसी न किसी एकशास्त्रमें निश्चय करके मिलताहै यह बात कदापि नहीं कि किसीमत व पंथका मूल शास्त्रसे बाहररहाय उसके निश्चयके निमित्त सबने मथन व परिश्रमकिया तो सबने ज्ञानही को मुख्यतरजाना परन्तु सब शास्त्र अपने अपने मत व रीतिसे मुक्तिका वर्णन करतेहैं इसहेतु उसज्ञानका स्वरूप देखनेमें छः प्रकारपर देखाई देनेलगा अर्थात् हरएक शास्त्रोंके आचार्य्य ने अपने मूलमत के अनुसार अर्थ ज्ञान शब्द का लिखा व अभिप्राय अपने ज्ञानका ठहराया परंतु परिणाम व फलसबका बिचार करके देखा जावै तो एकही निकल आताहै जो सब शास्त्रके मिलानेसे थोड़ा भी अर्थ व वृत्तान्त ज्ञानशब्दका लिखाजावै तौभी बात बहुत बढ़जाय और देखनेमें कुछफल बिशेषभी लाभ नहींहोता इसहेतु सबशास्त्रोंके मतबाद से किनारा करके जो मुख्यअर्थ व अभिप्राय बेद व बहुत से शास्त्रों के मतयुक्तहैं वह लिखताहूं जानेरहो कि ईश्वर माया जीव इन तीनोंका स्वरूप यथार्थ जानकर और ईश्वरके अद्वैततापर मनको दृढ़करके उसी को देखना और जानना यह ज्ञानका स्वरूपहै अर्थात् ईश्वर एक असहाय सबसे असंग और जोगुण वेद व शास्त्रोंने कि सत् चित् आनन्दघन व अच्युत अनंत व नित्य व निर्विकार व व्यापक व अबिनाशी इत्यादि वर्णन कियेहैं तिन गुणोंसेयुक्तऔर सब गुणोंसे न्यारेहैं भक्तजन उसकी उपासना पांच स्वरूपसे करतेहैं प्रथम परम अर्थात् श्रीबिष्णु नारायण बैकुंठनिवासीका उस स्वरूप व सामा व समाजसे कि जो वेद व शास्त्रों ने भगवत्ध्यान के वर्णनमें लिखाहै ध्यान व आराधनकरना परन्तुयह जानेरहो कि जो श्रीरघुनंदन व श्रीकृष्ण स्वामी के उपासक हैं वह श्री रघुनंदनस्वामीको परम व अयोध्यानिबासीऔर श्रीकृष्णस्वामी गोलोकनिवासी को परम अर्थात् परमात्मा मानते हैं अभिप्राय यह कि जो जिसस्वरूप अर्थात् राम अथवा कृष्ण अथवा बिष्णु अथवा नृसिंह के उपासकहैं वह अपनेइष्टको परम मानतेहैंमालूम रहै कि यह वह सगुण रूपहै कि जिसको शिव व ब्रह्मा इत्यादि सब योगीजन भांति भांतिकी

समाधि लगाकर ध्यान करतेहैं और भेदनहीं पावते वेद और शास्त्र व पुराण व स्मृतीइत्यादिमें हजारहों उपाय धर्म व कर्म व ज्ञान व वैराग्य आदि लिखेहैं सो इसी स्वरूपके प्राप्तकेहेतुहैं इसी स्वरूप के प्राप्तहोने से मुक्त व निश्चल व कृतार्थ व कृतकृत्य कहलाते हैं दूसरा व्यूह २ स्वरूप इस संसारको पालन करताहै और फिर नाश करदेताहै अर्थात् वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध तीसरे विभूति अर्थात् अवतार सो अधर्मके दूरकरने और वेद मर्यादके दृढ़करने और अपने भक्तोंकी रक्षा करनेके निमित्त होताहै सो दोप्रकारका है एक मुख्यअवतार रामकृष्ण इत्यादिहैं जिनका शरीर मायाका रचाहुआ नहीं वे मायाके अधीश हैं और पांच उपनिषद् वेदके उनके उपासना में गोपालतापिनी व राम तापिनी इत्यादि विख्यातहैं परन्तुयह सिद्धांत श्रीसंप्रदाय वालोंका लिखा है और जोलोग राम कृष्ण नृसिंह आदिके उपासकहैं वे अपने इष्टको अवतारी मानतेहैं व विष्णु व दूसरे लोगोंको अवतार दूसरा गौणअवतार उसमें दोभांतिहैं एकतो संसारीलोगोंके अज्ञान दूर करनेकेनिमित्त व धर्मकी प्रवृत्ति करनेको होताहै जैसे व्यास व वलि व पृथु इत्यादि दूसरे परशुराम व शिव व गणेश इत्यादि और कुछ वर्णन अवतारोंका दूसरी निष्ठामें किनारे लिखागया है और चौथा अन्तर्यामी उसके दो प्रकारहैं एक निरूपअर्थात् ज्ञानानंद अलख अविनाशी निरीहनिरंजन निर्गुणब्रह्म सर्वव्यापकहैं जिस प्रकार तिल व काष्ठके सब अंगमें तेल व अग्निप्राप्तहैंपरंतु दिखाईनहींदेते इसीप्रकार वहसबजगहप्राप्त व व्यापकहै औरजिसकी सत्ता व प्रेरणा से माया अनन्त ब्रह्माण्डों को रचतीहै दूसरारूपवान अर्थात्सगुणस्वरूप शंखचक्रधारी मायासे निर्लेप वासुदेवस्वरूपहै और यहही भगवत्विग्रह संकर्षणआदिव्यूहस्वरूपके साथ कि जिनका वर्णन दूसरे स्वरूपमें हुआ गिनती होताहै अर्थात् वासुदेव संकर्षण प्रद्युम्न अनिरुद्ध पांचवांअर्चास्वरूपहै कि जिसका वर्णन आठवीं निष्ठा प्रतिमा व अर्चामें लिखागया इतना भगवत् स्वरूप का वर्णन होचुका मायाका स्वरूप यहहै कि जड़ अर्थात् अचलहै स्वतंत्र किसी प्रकार का कुछ पराक्रम नहींरखती भगवत् की इच्छासे सब कार्यकरती है कोईका यहवचनहै कि वहमाया अनादि अनन्तहै अर्थात् नहींआदि

नहीं होसक्ता कि कबसेहै और कब उत्पन्नहुई परंतु अंतउसका होजाता है जब वेद व शास्त्र सिद्धान्तके अनुसार छूटने के निमित्त उपाय किया जाताहै तो वह माया दूरहोजाती है और कोई यहकहते हैं कि माया नित्यहै व सदारहैगी कि भगवत्की शक्तिहै दूरहोना उसका असंभवहै परंतु जब वेदके अनुसार यह जीव भगवत्आराधन करताहै तो भगवत्की कृपासे वहमाया उसजीवपर अपना बलजैसा औरोंपर करतीहै नहीं करसक्ती इसबात में मूलअर्थ दोनोंका एकहै केवल बोलन मात्र हैं वहमाया दो प्रकारकी है एकबिद्या कि जिससे अनंत ब्रह्माण्ड व ब्रह्माण्डों के स्वामी उत्पन्न होतेहैं दूसरी अबिद्या कि जिसके जाल में यहजीव फँसाहुआ है जीवका स्वरूप कि जिसको आत्माभी कहते हैं कुछ नामनिष्ठाके अंतमें वर्णनहुआ अर्थात् भगवत् अंशनिर्विकार प्रकाशमान ज्ञानानन्द स्वरूप व तीनोंकाल भूत भविष्य बर्तमान में प्राप्तहै परंतु भगवत् के सदृश अनंत नहीं भगवत् शेषहैं और जीव शेषीहै शेष पदका बर्णन बिस्तारसे सेवा निष्ठा में होगा सो जीवपांच प्रकार के हैं पहिले नित्यहैं कि उनका जन्म दूसरे जीवोंकी भांतिसंसारमें नहींहोता जैसे बिष्वक्सेन व गरुड़आदि दूसरे मुक्तहैं कि भगवत्आराधन व ज्ञानके अवलंबसे मुक्तहुये तीसरे केवलहैं कि मुक्तहोनेके किनारे अपने तप व परिश्रम से पहुंचगये अर्थात् जीवन्मुक्त चौथे मुमुक्षू कि जोमुक्ति चाहतेहैं उनके दो प्रकारहैं पहिले वह कि जिन्होंने नवधा भक्तिकरके भगवत् चरणोंमें चित्तलगायाहै ॥ दूसरे शरणागतकी भक्ति इत्यादिसे कुछसंबंध नहीं सबप्रकारसे केवल भगवत् चरणों की शरणलीहै और अपने को सबकार्य्य व साधन में निराला परतंत्रसमझ कर सबबोझ व भार भगवत्पर डालदियाहै उनके दो प्रकारहैं एकतृप्त कि जोचाहना भगवत् सेवा भजन इत्यादिकी रखतेहैं दूसरे आरत कि जोभगवत् की सेवा भजन इत्यादिमें रतहैं॥ पांचवें बद्धहैं कि जो संसार के बिषय भोगके स्वादमें भ्रमित व लीनरहकर सदा आवागमनकी फांसीमें फँसे रहतेहैं और यहीदशा रहैगी यद्यपि कोई पांचों प्रकार जो लिखिआये तिसको तीन प्रकार बर्णनकरते हैं पहिले बिमुक्त जोकि संसार से छूटि गये दूसरे मुमुक्षू अर्थात् साधक जोकि छूटनेके हेतुउपाय करतेहैं तीसरे

विषयी जोकि संसारके सुखस्वाद में भूलरहे हैं परंतु जो विचार किया जाताहै तो अभिप्राय दोनोंका एकहै जीवका वर्णन होचुका ॥ इसज्ञान के निर्णय में कोई यह कहते हैं कि ईश्वर व माया व जीव के स्वरूप जानिलेने के पीछेईश्वर जीवको एक समझके अभ्यास व वैराग्य केवल चित्तकी वृत्तिसे दृढ़होय और हृदयसे द्वैतकाभाव मिटजाय इसका नाम ज्ञानहै और इसीको विज्ञान कहते हैं तात्पर्य्य उनका यहहै कि भीतर बाहर व मन जहांतकपहुंचे सोसब भगवत् निर्विकार ज्ञानानन्द स्वरूप है सिवाय भगवत् के न कबहीं कुछहुआ न है न होगा और यह जो संसार दृष्टिमें आताहै सो स्वप्नजायहै वास्तवमें सबईश्वर है और कोई का यह वचनहै कि निश्चय करके जहांतक मन व इन्द्रियोंकरके देखनेमें आताहै वहसबभगवत् रूपहै और यहजीव दास उसभगवत् काहै और कोई ऐसेहैं कि उनको न पहिले वचनसे कुछ प्रयोजन है न दूसरे से वे यहकहतेहैं कि अपने सच्चेप्यारे के ध्यानमें चित्तकी वृत्तिऐसी मग्न होजाय कि सिवाय उसरूप अनूपके और कुछ तनकभी भीतर बाहर शरीरमें बाक़ी न रहै वहीज्ञान है और वहीवैराग्य है और वहीभक्ति है और वहीशरणागती सोजाने रहो इसीप्रकारके वचन थोड़ेथोड़े अंतरसे उनके मतान्तर के विचारनेसे बहुत हैं परंतु परिणाम सबसिद्धांत व वर्णन का एक होजाताहै काहेसे कि जिसने जीव ईश्वरको एकजाना तो उसकी दृष्टिमें सिवाय एकईश्वरके दूसरा न रहा और जिसने अपने आपको दास और भगवत् को स्वमीबिचार किया तो वहभी भगवत् रूपके माधुरी में मग्न होजाने के समय अपने को भूलजायगा सिवाय उसरूप के और कुछदृष्टि में न आवैगा सो सबको परीक्षा मिलीहोगी कि कोई समय किसीकाममें चित्तकी वृत्तिऐसी एकाग्र लगिजाती है कि तनक सुधबुध अपने बिराने व तनबदन की नहीं रहती तो भगवत् के चिन्तवन व रूप माधुरीका सुख व आनन्द जबलाभहोगा तो कब दूसरा कोई और सिवाय इसरूपके शेषरहि सकताहै अबतात्पर्य्य व मूलअभिप्राय सबबातों का लिखताहूं कि जिसप्रकार होसके यहजीव भगवत् चरणोंमेंलगै सबमनोरथ इसलोक व परलोकका और सबज्ञान व वैराग्य इत्यादि आपसेआप प्राप्तहोजावैंगे सो भगवत्ने गीताजीमें आप श्रीमुख

से कहाहै कि हमको एक जानकर अथवा पृथक् जानकर अथवा बहुत प्रकारका जानकर जो भजन सेवनकरतेहैं उनको निश्चयकरके मिलता हूं काहेसे कि सबओर मैं प्राप्तहूं सो जानेरहो कि जबतक भगवत् चरणोंमें मननहीं लगता तबतक सबबुद्धिमानी मूर्खताहै और सब जानकारी पर धूल क्या अच्छीबातहो कि मेरामन सबभ्रमनाको छोड़कर श्रीकृष्ण स्वामीके चरणकमलोंमें मग्नहोजावे और क्यासुंदर भाग्यखुलै कि उस समाजको जो कि ग्रंथारम्भमें नीचेलिखाहै रातदिन चिन्तवन करतारहै कि यहसंसार समुद्र गोपद जलसे भी तुच्छहोजाय ॥

बशिष्ठजी की कथा ॥

बशिष्ठजीदशोपुत्रोंमें ब्रह्माजीके भगवत्भक्त और सबबिद्याके आचार्य्यहुये ज्योतिष बिद्या व चिकित्सा व संगीत इत्यादि में संहिता उनकी बनाई बिख्यातहैं पिछलेलोगों ने उनकी संहिताको प्रमाण करके नई परिपाटी रचना की परन्तु विशेष करके उनका अधिकार धर्मशास्त्र व भक्ति व ज्ञानशास्त्रमें अधिकहै जिन्होंने अंतरिक्ष में निरावलम्ब स्थिति करके भगवत्भजन व ध्यानकिया और फिरदूसरे ब्रह्माण्डमें जाकर वहांकी ब्राह्मणीकी सहायके निमित्त ब्रह्मासे बिज्ञापनकिया औरधर्मकी प्रवृत्तिके सहायकेहेतु अबतक यह बिचारहै कि तीनस्वरूपधारण करके तीन जगह एकब्रह्मलोक दूसरे धर्मराजकी सभामें तीसरे सप्तऋषीश्वरों में रहतेहैं जिनके प्रतापको देखकर राजा बिश्वामित्र ने अपनाराज्य छोड़ दिया व भगवत्भक्तिको अंगीकारकिया और तितिक्षा ऐसीथी कि नहीं देने नन्दिनीगऊ व नहीं कहने ब्रह्मऋषिके बैरके कारणसेबिश्वामित्र ने सौपुत्र उनके एकराक्षससे बधकरवायदिये परंतु समर्थहोकर उसकेबदले कुछनकिया उनका बचन ब्रह्मा बिष्णु शिव और सारेजगत्को ऐसा अंगीकारथा कि जब बिश्वामित्रजीने ब्राह्मण होने के निमित्त बहुतकाल तपकिया औरउनके ब्राह्मणहोने का निश्चय बशिष्ठजीके बचनपरथा जब बशिष्ठजीने अपने मुखसे ब्राह्मणकहा तबसब के निकट उनकी गणना ब्राह्मणोंमेंहुई भगवत् चरणोंमें ऐसीप्रीतिथी कि ब्रह्माजीसे यहबातसुनी कि पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घन सूर्य्यबंश में रामावतारहोगा बड़ी प्रसन्नतासे पुरोहिताई सूर्य्यबंश की अंगीकारकिया जब भगवत्अवतारहुआ

तो कबहीं वात्सल्यभाव में व कबहीं चराचर में व्यापक देखकर प्रेमके रंगसे रंगिजातेथे ॥

विश्वामित्र की कथा ॥

विश्वामित्र पहिलेक्षत्री राजा गाधिकेपुत्र थे जबनंदिनी गऊसे वशिष्ठजीकेहेतु सेनाप्रबल हारिगई औरराजा से ब्राह्मणोंका प्रताप औरपदवी भगवत्भक्ति के कारणसे अधिकदेखा तो राज्यको छोड़कर भगवत् भजन में लगे और कईलाख बरसतक ऐसा घोरतपकिया कि क्षत्रीसे ब्राह्मण होगये भगवत्भक्ति और तपकरके ऐसाबल व प्रतापरखते थे कि दूसरा ब्रह्माण्ड उत्पन्नकरदेवें सो एकबेर ब्रह्मा से क्रोधकरके नवीन ब्रह्माण्ड रचनेका विचार किया और बहुतलोग कईप्रकार के उत्पन्नकिये कि ब्रह्मा औरदूसरे देवता सबनेआय के बहरिस निरबाणकी कि नवीन ब्रह्माण्ड की रचना से शांतभये सो जो वस्तुको उत्पन्नकिया सो अबहींतक हैं व त्रिशंकुनामे अयोध्याके राजाको शरीरसहित स्वर्गको भेजदिया जबइंद्र ने उसको धरतीपर गिरादिया तो उसने आकाशसे पुकारकरी विश्वामित्रजीने अपने तपबलसे धरतीपर गिराननेदिया कि अबतक निराधार लटके हैं औरइन्द्रको स्वर्गसे निकालनेकी इच्छाकी तब देवताओंकी प्रार्थना से फेर दयाकोकिया इसप्रकारके चरित्र विश्वामित्रजीके बहुतहैं भगवत् के निष्कामभक्त और कर्मशास्त्रके प्रवर्तक ऐसे थे कि एकबेर बहुतकाल पर्यंत अकालपड़ाथा कुछभोजनको न मिला बहुतदिनपीछे एकचाण्डाल से कुछ अखाद्य वस्तुमिली और असमय में उसकोखाद्य विचार करके लाये स्नान संध्याआदि करके चाहाथा कि भगवत् अर्पण व पितृकर्म करके भोजनकरें परंतु भगवत् को अपने भक्तोंको ऐसाक्षुद्र भोजनखाने देना अंगीकार न हुआ इसहेतु जब विश्वामित्रजी ने अर्पण करनेको भगवत्का ध्यानकिया तो समाधिलगिगई और ऐसीदृष्टिभई कि सबवन व खेत भांति भांतिके फल व धान्यसे हरितहोगये और उस मांसका भी दलकटहल व बड़हलका जनिआया जब समाधिसे जगे तो दण्डवत् व स्तुति भगवत्की करके फलादिक से क्षुधा को शांतकिया श्रीरघुनन्दन स्वामीके चरण कमलोंमें जो प्रीतिथी उसका वर्णन तो कबहोसक्ता है कि आप औरभक्तिके वशीभूत होकर उनके साथगये और आप उनके मखकी रक्षाकरके अपनेरूप अनूप भक्तिसे दत्त व कृतार्थकिया ॥

राजाभरत की कथा॥

राजाभरत जो कि जड़भरतकरके विख्यातहैं तिनकीकथा ऐसीप्रसिद्ध है कि सब कोई जानता है इसहेतु बहुत सूक्ष्मकरके लिखताहूं राजा थे संसार अनित्यजानकर राजछोड़दिया बनमें नदीगंडिकीके तीरवास करके भगवत्आराधन करनेलगे एकहरिणके बिरहसे प्राणत्यागकिया हरिण का तनपाया फिर वह तन छोड़कर ब्राह्मण का तनमिला और पूर्बजन्मों का स्मरण बनारहा व हरिणके स्नेहसे दोबेर जन्मलेना पड़ा इसहेतु महाबिरक्त होकर सदा भगवत् भजन में लीनरहे व किसीसे न कुछबोलें न उत्तरदें इसकारण जड़भरतनामहुआ एकबेर कोई भीलोंका राजा कालीके बलिदान के निमित्त पकड़कर लेगया जब तरवार मारने का मनकिया तो दुर्गाने वही तरवार लेकर उन दुष्टों का बधकिया व अपना अपराध क्षमाकराया एकबेर राजारहूगणने पालकीमेंलगाया चेंटी बचायके चलनेसे पालकीउचकै कहारोंके साथ चाल न मिले राजाक्रोध करके बोला कि ऐसीमोटाई पर अच्छेप्रकार क्यों नहींचलता क्या दंड देनेवाला मुझको नहीं पहिचानताहै भरतजी ने ऐसे ऐसे उत्तरदिये कि राजाको कुछ ज्ञानहोगया चरणोंमेंपड़कर अपराध क्षमाकराया भरतजी को दयाआई भगवत् का ज्ञान उपदेश किया राजा कृतार्थ व ज्ञानवान् होगया भगवतभजन स्मरणमेंलगा भरतजी परमधामको जानेलगे तो योगाभ्यास से देह त्यागकिया व उस परमपद को पहुंचे कि जहां से फिर नहींफिरते बिचार करनाचाहिये कि थोड़ीसी भी प्रीति किसीबस्तु की कैसी दुःखदाई होती है॥

अलर्कमंदालसासुबाहु की कथा॥

अलर्क राजा रतिध्वजका बेटा अनन्य भक्तज्ञानीहुआ वृत्तान्त यहहै कि मंदालसा अलर्क की माता बड़ीज्ञानी व वैराग्यवान थी उसनेअपने मनमें प्रणकिया था कि जो मेरे उदरसे जन्मले फिर उसको जन्ममरण का दुःखनहो सोजब अलर्कजीने जन्म लिया उनको उपदेश भागवतधर्म का ऐसाकिया कि घरबार छोड़कर बनको चलेगये और भगवत् भजन लगे पीछे और लड़केजोहुये तोउनकीभी मति अलर्कजीके सदृशहुई अंत में जो छोटा बेटा सुबाहुनामी हुआ तो राजाने राजके निमित्त मंदालसा

से मांगा मन्दालसा ने अंगीकार किया परन्तु अपने प्रणकी शोच और चिन्तनारही और एकपत्री यंत्रकी भांति लिखकर सुबाहुको देदी कि जब बड़ाकष्ट कुछ आनपड़ै तो खोलकर पढ़ना जबसुबाहुको राज्य-गद्दी का अधिकारहुआ उसके सुखमें मग्नहुआ तो मन्दालसाने अलर्क जीसे कहा अलर्कजीको सुबाहुपर बड़ीकरुणा व दयाहुई और चिन्ताकी किया कि कौनप्रकारसे सुबाहुको संसारकेजालसे छुड़ाकर भगवत् स-न्मुख करनाचाहिये सो काशीकेराजा को आधाराज देनेको वाचा बोल दिया फौजचढ़वाई युद्धभये पीछे सुबाहु को सामर्थ्य युद्धकी न रही शोच में पड़ा तब उसयंत्रको जो माताने दिया था पढ़ा उसमें लिखाथा कि जब बहुतदुःखहो सत्संगकरना चाहिये और यहसंसार अनित्यहै भग-वत् नित्य और सच्चिदानन्द घनहैं ऐसे स्वामी को छोड़कर जो अनित्य संसारमें मन लगातेहैं सदा आवागवन के जालमें फँसेरहते और जो भगवत् शरणहोकर भजन सुमिरणमें रहतेहैं सो भगवत्के परमपदको प्राप्तहोतेहैं सुबाहुको इसवचनसे कुछ ज्ञानहोगया परन्तु सत्संगकोभी विशेष जानकर दत्तात्रेयजी के पासपहुंचा उनके थोड़ेही उपदेशसे पूर्ण ज्ञानको प्राप्तहोकर सब राजकाज छोड़ अपने बड़ेभाई अलर्क के पास गया हाथजोड़कर विनयकिया कि आपकी कृपासे राज और संसार के बखेड़ेसे छूटकर भगवत् शरणहुआहूं आप राजगद्दी अंगीकार करिये अलर्कजी बहुतप्रसन्नहुये और कहा कि हमको कुछ चाहनानहींहै केवल तुम्हारे छुड़ानेके हेतु यह उपायकिया था अलर्कजी ने काशीके राजासे कहा कि सुबाहुने तो राजको त्यागकरदिया तुमराजकरो उसने जो सब वृत्तान्तसुना व संसारके अनित्यतापर विचारकिया तो उसनेभी अंगी-कार न किया अपने राजकोभी छोड़कर भगवत् के शरणमें आया और सबने ऐसा भगवत् के भजन व सेवामें मनलगाया कि थोड़ेही कालमें परम आनंद व परमपद को प्राप्तहुये ॥

श्रुतिदेव बहुलाश्व की कथा ॥

श्रुतिदेव ब्राह्मण व बहुलाश्व राजा दोनों परम भक्त भगवत् के व दोनों अयोध्यामें हुये जैसे अपने भक्तों के हेतु भगवत् अवतार धारण किया करतेहैं तैसाहीचरित्र इन दोनोंभक्तोंके निमित्तकिया अर्थात् जब

श्रीकृष्ण महाराज जनकपुर से द्वारिकाजाने को बिदाहुये तो अयोध्या
जीमें आये ब्राह्मण व राजा दोनों आगे जाकर मिले व दर्शन पाकर
कृतार्थहुये और दोनोंने अपने अपने गृहके पवित्र करने को हेतु विनय
किया भगवत्‌ने बिचारकिया कि दोनोंभक्त बराबरस्नेह किसकेजाऊं कि-
सकेनहीं कृपायुक्तहोकर सबऐश्वर्य व सबसामान सहित दोरूप होकर
दोनोंभक्तोंकेगृहको पवित्रकिया चारमहीनेतक दोनोंभक्तोंकेघर अयोध्या
जीमें रहे एक का भेद दूसरेने न जाना रातदिन नित्य नयेभाव प्रेमसे
सेवाकरतेरहे बिदाके समय अनपायनी भक्ति का बरदान पाया॥

॥ उद्धव की कथा॥

उद्धव परमभागवत और ज्ञानीहुये यद्यपि श्रीकृष्ण महाराज कृपा-
सिन्धु उनको मंत्री व एकांतीमित्र व नगीची नातेदार समझतेथे तथापि
उद्धव जी सदा अपने दासभाव से सेवन करतेरहे जब श्री कृपासिन्धु
महाराजने ब्रजगोपियोंके बोध व समझानेके हेतु ब्रजमेंभेजा तो गये व
ब्रजसुन्दरियों को कि ब्रजचन्द्र महाराज के वियोग से बिना जलके जैसे
मीन तड़फड़ाती हैं सो दशाथी उन बिरहिनियों को ज्ञान व योगका उ-
पदेश करनेलगे परन्तु ब्रजकिशोरियों के नयन व मनप्राणसब श्रीमन-
मोहन श्यामसुन्दर के रूप व माधुरी के अमृत सिन्धु में मग्न और प्रेम
व स्नेह के रससे छकी व मतवारी थीं वह उपदेश उद्धवजी का तनक
उनको न लगा और यह बचनबोलीं॥

सो० सजल मेघ तन श्याम, अधर सुधर मुरलीधरे।
सोही सबब्रजबास और न जानति ब्रह्महम॥

ऐसे ऐसे उत्तर प्रमाणिकदिये कि उद्धवका ज्ञान व योग धूरिमें मिल
गया और प्रेममें बेसुध व बिह्वल होकर ब्रजबल्लभाओं के चरणों में लो-
टनेलगे क्याजाने उस अपनेज्ञान और योग भूलेहुये को ढूंढनेलगे होंगे
कभी उनके दर्शन से अपनेआप को कृतार्थ मानकर अपनेभाग्य की ब-
ड़ाई करते थे और कभी उस परमानन्द से कि जो गोपियों को प्राप्तथा
अपने आप को भाग्यहीन जानकर अपने भाग्य से लड़ते थे कि मैं इस
ब्रज में गोपवधू क्यों न हुआ सो उद्धवजी गोपियोंकेप्रेमसे बेसुधहोगये
तो कुछ आश्चर्यनहीं क्योंकि आप ब्रजभूषण महाराजने ऐसीईश्वरता

व प्रभुता से भक्तकी कि ब्रह्मादिक भी जिसकापार नहींपाते ऐसे उनके प्रेममें मग्न हैं कि अपने परमधाम को छोड़कर उनकेहेत नरशरीर धारण किया फिर उनकी प्रसन्नता को अपनी प्रसन्नता पर भी अधिक से अधिक जानकर सबप्रकार से उनकी इच्छा व चाह को पूरणकिया और उनके अनुकूल चरित्र किये और अब तक ऐसे वशवर्ती हैं कि जो कोई उनके चरित्रों को कैसाही पातकी व अपराधी पढ़ता है अथवा सुनता है उसके हृदय में आजाते हैं निश्चयकरके ब्रजसुन्दरियों का चरित्र संसार समुद्र से पार उतारने के हेतु ऐसाबड़ा जहाज़ है कि अच्छे व बुरे कर्म रूप पवन की झोंक नगीच नहींआती नहीं मालूम कि कितने असंख्य जीव उसकेप्रभावसे इस जन्ममरणरूपी घोर नदीसे पारहुये और आगे होंगे जब उद्धवजीने ऐसाप्रेम ब्रजनागरियों का देखा तो अपने ज्ञान व योगको तुच्छजानकर मथुराकोसिधारे और सबवृत्तान्त श्रीनटनागर ब्रजचन्द्र महाराज से निवेदन किया वाह वाह धन्य है गोपियों का प्रेम कि जब आपने वह वृत्तान्तसुना तो यद्यपि हर्ष शोक दुख सुख व माया और मनसे पार हैं परन्तु उसप्रेम में ऐसेमग्न होगये कि जिस प्रेम का प्रवाह हृदयसे उमड़कर नयनरूपी झरना से प्रवाहमान होकर निर्गुण निराकार निरञ्जन निर्द्वन्द्व निर्मोह निर्लेप नाम और गुणों को बहाता हुआ कपोलोंपरसे होकर बैजयन्ती और पीताम्बर को भिजोताहुआ वक्षस्थल से चरणकमलों तक पहुंचा पीछे जब कृपासिन्धुमहाराज मथुराको छोड़कर द्वारकाको पधारे तो उद्धवजीने चरणसेवा न छोड़ी व साथगये जब यादवकुलकोशाप हुआ तो भगवान्ने कृपाकरके ज्ञानउपदेशकिया व भक्तिका वरदानदेकर बद्रिकाश्रमको भेजदिया॥

कथा वाल्मीकि स्वपच की॥

वाल्मीकिनाम भगवद्भक्त अन्तर्धान हुये जब राजायुधिष्ठिर ने अश्वमेधमें यज्ञसंपूर्णकिया तो भगवान्से पूछा कि कैसे परीक्षा हो कि यज्ञपूर्णहुआ भगवान् ने कहा कि जब शंख आपसे बजे तब समझो कि यज्ञपूर्ण और सिद्धहुआ राजा ने श्रीभगवान् की आज्ञा अनुसार [illegible] से [illegible] जितने [illegible] व [illegible] व [illegible] व राजा व [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मानसेकरके राजायुधिष्ठिर ने संतुष्टकिया व सबको यथायोग्य रीतिसे भोजनकराया परंतुशंख न बजा तब संदेहसे युक्तहोकर श्रीकृष्ण महाराजसे कारणपूछा तब आज्ञाहुई कि मालूम होताहै कि किसी भक्त ने अपनी जूठनसे इसयज्ञको सफलनहींकिया इसीकारणसे शंखनहींबजा राजा ने बिनयकिया कि महाराज सबदेशोंके ऋषेश्वर और ब्राह्मणआये क्या उनमें कोई तुम्हारा भक्तनहीं था भगवत् ने कहा कि उनऋषेश्वर और ब्राह्मणोंसे पूछनाचाहिये सो राजाने सबसेपूछा तो किसीने ऋषेश्वर और किसीनेपण्डित और किसीने बेदपाठी और किसीने ब्रह्मवादी और किसीने कर्म्मेष्ठी अपने आपको बतलाया परंतु भगवत् उपासक किसीने नकहा तबराजा व द्रौपदी व अर्जुन सबनेबड़ीप्रार्थनासे भगवत्से पूछाकि महाराज भक्तकोबतलावो तब उन्होंने बाल्मीकि स्वपचको बतलायातब अर्जुन व भीमआदि राजाकेभाई उनकेघरगये व प्रणामकरके अपनेघरआनेकेहेतु बिनयकियाबाल्मीकिजी ने पहिलेबहुतप्रार्थनाही से नाहींकिया पीछे भगवत् की इच्छा समझकर राजा के घरआये राजा युधिष्ठिर व भक्त बत्सल महाराज ने बड़े आदर व सन्मान से उनको बैठाला द्रौपदी आप थाल भोजनका तैयार करके लाई व जब बाल्मीकिजीने भोगलगाया शंखथोड़ाबजा भगवत्ने छड़ी शंखपरमारी व आज्ञा को किया कि अब किसहेतु थोड़ाबजताहै शंखने बिनयकिया कि महाराज द्रौपदी से पूछनाचाहिये द्रौपदीने हाथ जोड़कर बिनयकिया कि मेरा अपराध सचकरकेहै किसहेतु कि जितनेभोजन अलगअलगकई प्रकारके बाल्मीकिजीके आगेगये उनसबको एकमेंमिलाकर भोगलगाया हमको बुरा मालूमहुआ और मनमेंकहा कि बाल्मीकिजी नानाप्रकार के भोजन के स्वादको कुछ नहीं जानते हैं इसीसे सबको एकमें मिलाकर खाते हैं भगवत् ने कहा कि अब आगेपर भूलकरभी भगवत्भक्तों से बुरा और उनके आचरणपर पर दोष बिचार करना न चाहिये पीछे शुद्ध व बिश्वास युक्त चित्तसे भोजन कराया तो शंख अच्छे उच्चधुनिसे बजा व राजा का यज्ञपूर्ण हुआ शोर भगवत्भक्ति व प्रताप भक्तोंका सारेसंसार में पहुंचा भजन भावकी प्रवृत्ति अच्छेप्रकार हुई सचबात है ॥

चौ० हरिको भजै सो हरिको होय । जाति पांति पूंछै नहिं कोय ॥

महाभारतमें भगवत् का वचन है कि जो चारों वेदका जानने वाला है परन्तु मेरा भक्तनहीं तो उससे जोकि चांडाल और पतितभी है और मेरा भक्त है तो वही मेरा प्यारा है उसीको देना चाहिये और वही मिलनेके योग्यहै और उसीका पूजन उचित है जैसा मेरा॥

ज्ञानदेवकीकथा॥

ज्ञानदेवजी परम भागवत् विख्यात हैं जिसके चेले नामदेव व तिलोचन जी सूर्य्य व चन्द्रमा के सदृशहुए काव्य उनका सरस्वती व गंगाकी भांति जगत्को पवित्र करता है ज्ञानदेवके पिता घरको छोड़ करकिसी संन्यासी के पास गये व यह कहा कि हमारेघर स्त्री नहीं है हम संन्यास लेंगे यह कह के संन्यासी होगयेउनकी स्त्री पीछे पहुंची व संन्यासी से झगड़ा बखेड़ा करके उनको घरले आई दूसरे ब्राह्मण सजातियोंने उनको जातिसे अलग कर दिया कि यह संन्यासी होगया जातिमें नहीं मिल सक्ता सो अलग रहे तीनलड़के जन्मेबड़ेबेटे जो ज्ञानदेव थे लड़काई से श्रीकृष्ण महाराज के चरण कमलों में उनकी प्रीति थी ब्राह्मणों के पास जा वेद पढ़ने के हेतुगये तो किसीने न पढ़ाया कि जातसे बाहर है वेद पढ़ने का अधिकार नहीं ज्ञानदेव जीने कहा कि ब्राह्मण होना कुछ वेद पढ़नेपर सिद्धांत नहींहै कि पशु पढ़ सकते हैं सिवाय इसके वेदको भगवत् से अधिक कोई नहीं जानता और वह सबमें सब जगह प्राप्तहै यहकह कर एक भैंसेको वेद पढ़ने की आज्ञा दी उस भैंसेने पढ़ना वेदका आरम्भ किया और कई शाखाको ऐसी शुद्ध बाणीसे कि किसी ब्राह्मणको स्मरण न था पढ सुनाया वे लोग यह वृत्तांत देख कर भगवत् भक्तमें विश्वासित होकर चरणों में गिरे ज्ञानदेवजीने उनपर दयाकी और भगवत् भक्तकी शिक्षा की॥

लड्डूस्वामीकीकथा॥

लड्डूस्वामी परम भागवत् भगवत् रँगमे रँगहुये और सबमें उसी भगवत् रूप के चिंतवन के करने वालेहुये दुखसुखमें अलग होकर जहांतहां विचरते रहतेथे संयोगवश ऐसे देशमें पहुंचे कि जहां तनकभी लेश भगवत् भक्तिका न था और वहांके लोग दुर्गाके प्रसन्नता केहेतु मनुष्य बलि दान देते थे लड्डू स्वामीको मोटा चिकना देखकर कालीके भेंट

के हेतु लेगयेसो भगवती अपने भक्तोंके सहायके हेतु सदा साथरहते हैं सिवाय इसके लड्डू स्वामीके दृष्टिमें दुर्गाजी भगवत्रूप थी इसहेतु वह प्रतिमा कालीकी फटगई व दुर्गाभयंकर रूपसे प्रकट हुई सब दुष्टोंको तरवारसे बधकिया और भगवत्भक्तके दृष्टांतसे अति प्रसन्नहुई भगवत् भक्तिका प्रताप दिखानेके हेतु उनके सन्मुख नृत्यकिया और चरणोंको दण्डवत्किया यह वृत्तांत दुर्गामहारानीके बिश्वास व सहायका वहांके रहनेवालोंने देखातो आधीनहुये और भगवत्भक्तिकोअंगीकारकिया ॥

नारायणदास की कथा॥

नारायणदास उत्तरदेश में बदरिकाश्रम के निकट परम भागवत नारायण स्वरूप हुये भक्ति व भजन में अत्यन्त निष्ठथे मनतो भगवत् स्वरूपके चिन्तवनमें मग्न रहताथा और मुखसे अनुक्षण भगवत्चरित्र और नाम लेतेथे भगवत्भक्तिकेप्रवृत्त व गुप्तचरित्र व भावके कहनेवाले एकही हुये भक्तोंकीसेवा भगवत्के सदृश किया करतेथे बदरिकाश्रम से दर्शनके हेतु मथुराजीमें आये केशवदेव जी के दरबारमें रहने लगे एक दिन शोचा कि जो लोग केशवदेवजीकेदर्शनको आतेहैं उनकामन जूतियों की चिन्तामें रहताहोगा सो उनका रखवारीकरना आरंभकिया व उनके प्रताप व महिमाको कोई जानतानहीं था इसहेतु किसीने इससेवा के करनेमें बर्जना व प्रार्थनाको न किया एकबार एकदुष्ट बहीमारीगठरी उनके शिरपर रखवायके लेचला राहमें किसी ने पहिचानकर साष्टांग दण्डवत किया तब वहदुष्ट लज्जित होकर अपराध क्षमाकराने लगा आपनेकहा कि इसशरीर से किसी का कुछ कामनिकले सोई लाभहै तुम शोचमतकरो तब वह रोनेलगा चरणोंमें गिरपड़ा नारायणदासजी ने उसको भगवत्भक्ति का उपदेशकरके एकक्षणमें भगवत्भक्त व सब अपराधोंसे निर्मल करदिया सत्यकरके भगवत् भक्तोंको सबकुछ सामर्थ्यहै जो चाहैं सो करदिखलावैं जो किसीको यहशंकाहोय कि ऐसे अपराधी पर ऐसीकृपा किसहेतुकरी सो यहलक्षण व धर्म शुभ दर्शन व साधुताकाहै जैसे मधुकी दृष्टि गालीदेनेवाले व स्तुति करनेवाले को बराबरहै इसीप्रकार भगवत्भक्तोंको कृपा सबपर बराबर होतीहै ॥

किल्हरदास की कथा॥

किल्हरदास परम भागवत भजनानंद हुये भगवत्भक्तोंकी कृपासे निज भगवत्स्वरूप की माधुरीका उनको लाभहुआ गुरुके शरण होकर भगवत् भक्ति फल स्वरूप अच्छा जानकर संसार के सब धर्मछोड़ दिये वस्तु व अवस्तु झूठसांच ज्ञान व अज्ञान सार व असारको विचारकर सारे जीवन को भगवत्रूप जानकर निश्चय किया जैसे लोग बतलाया करते हैं कि फलाने वृक्षकी शाखापर वह दिखाई देता है चन्द्रमा और चन्द्रमा उस शाखा से लाखों कोशपर है इसीप्रकार किल्हरदास कहते मात्रको संसारमें होकर वास्तव करके अलग थे कबहीं किसीको कठोर व दुर्वाच्य न कहा भगवत् और भक्तोंके चरित्र सदा वर्णन करते थे॥

पूर्णदास की कथा॥

पूर्णदासजी की महिमा कौन वर्णन करसकै जिन्होंने हिमाचल पर्वतमें गंगाकिनारे योगके प्रकार से समाधि लगाकर भगवत् के ध्यानमें मनलगाया और सिद्ध न कराञ्च आदिका कुछडर न किया प्राणायाम की विधिसे प्राणको जीतकर जीवन निर्गुण आपलेव पूर्ण करलिया सो शीशके व पदनिवास उपासनाके उनके बनायेहुये बहुतहैं व विख्यात हैं॥

तीसरी निष्ठा॥

छप्पय छन्दोंके वर्णनमें जिसमें चौदह भक्तों की कथा है॥

[illegible]

कि अभ्यास व बैराग्यसे मन पकड़ाजाता है इसहेतु त्यागमुख्य साधन है सो स्वरूप उसबैराग्य का सूक्ष्मयहहै कि सारको ग्रहणकरना व असारको छोड़देना परंतु ब्यासशूत्रोंमें उसबैराग्यकी दो अवस्थालिखीहैं पहिली अपर कि उसको बशीकार कहतेहैं उसका स्वरूप यहहै कि संसारी सुख आनन्दसे लेकर स्वर्ग व ब्रह्मलोक पर्य्यन्तके सुख आनन्द से बैराग्य व त्यागहोय व यद्यपि शूत्रके अक्षर से प्रगट कोईअर्थ इस अवस्था का मालूम नहींहोता परंतु तात्पर्य्य उसशूत्रका चारप्रकार के निर्णयपर है प्रथम यतिमान अर्थात् सार और असारका बिचार और उसके त्यागका उपाय १ दूसरा ब्यतिरेक अर्थात् यहमन न करना कि इतना अवगुण अन्तर व बाहर का मिटगया और इतना और बाकीहै उनकाभी त्यागचाहिये २ तीसरे इन्द्र अर्थात् जहांतक स्वाद व सुख व चाह सबदेखे या सुनेहैं उनकीओरसे मनको ऐसारोंकना कि फिर मन उनकीओर न जाव ३ चौथे बशीकार अर्थात् सुख व स्वाद के चाहकी तनकलशमनमें बाकी न रहै ४ दूसरी अवस्थाका नामपरहै उसमेंकोई विशेषनिर्णयनहीं स्वरूप उसकायहहै कि मायासेमिलेहुये जो तीनगुण अर्थात् सत्व रज तम उनको त्याग करके केवल भगवत् सच्चिदानन्द घन पूर्णब्रह्म परमात्मा के साक्षात् स्वरूपमें मग्नहोजाना और मायाके गुणोंसे सर्वप्रकार बैराग्यहोना इसनिर्णयसे लाभ यहहुआ कि भगवत् की प्राप्ति केवल बैराग्यसेहै जबतक सबस्वाद व सुखकीचाहसे बैराग्य न होगा तबतक कदापि भगवत् न मिलैगा और बिचारसे भी मालूम होताहै कि मन एकपात्रके सदृशहै जबतक वहसंसारी सम्बन्ध व सुख भोगके चाहसे भराहै तबतक भगवत्के आनेकी व निवासकी कहांठौर है जो भगवत्को उसमनरूपी पात्रको पूर्णकरना अंगीकारहै तो दूसरे सब सम्बन्ध व सुखभोगकी चाहनासे खालीकरना चाहिये शास्त्रोंमें जो यहबात लिखीहै कि गृहस्थाश्रम के पश्चात् गृह त्यागकरके बनबास करै तो अभिप्राय उसका यहहै कि गृहस्थीदशामें भगवत् भजननहीं होसक्ता जब सब संसारके कार्य्यसे अलगहोगा तब मन एकाग्र होकर भगवत्में लगजायगा जिसकिसीका मन संसारसे त्याग व भगवत्की ओर लगजाय तो वह त्याग इस परम्परा के अनुसारहोय जो ऊपर

लिखआये अर्थात् सारका ग्रहण व असार का त्याग और उनदोनों के विचारमें लगारहे नहीं तो केवल इसका नाम वैराग्यनहीं कि घरवार स्त्रीको छोड़कर फ़क़ीर होगये और बावा जी कहलानेलगे जो इसी का नाम वैराग्यहो तो वनजंतु सदावनमें मग्नरहते हैं अथवा हजारोंमनुष्य ऐसेहैं कि दरिद्रता के कारणसे शरीरपर वस्त्रनहीं न एककौड़ी पासहै व न स्त्री न बेटातो क्या वे भगवत्‌को पहुंचजाते हैं वरु सदाआवागमन के जालमें फँसेरहते हैं और जिनको सार व असारका विचार अनुक्षण रहताहै और उनके ग्रहण व त्यागमें लगे रहते हैं उनको जो गृहस्थ धर्मभीहै तो सव संसारी सम्बन्ध बनके सदृश हैं और सब लड़के वाले सत्संग व साधुसेवीहैं सो पुराणोंमें जनक व प्रह्लाद व राजावलिआदि की हजारों कथा व इसभक्तमालमें सैकड़ों भक्तों की साक्षीहै और जिन लोगों का मन कुटुम्ब व परिवार में फँसाहुआ है और सार असार का विचार नहीं तो वे सब वस्तुको छोड़कर जंगलमें चलेजावें तौभी हजार दुनियांदारोंके वरावरहैं व मुमुक्षूसाधक को एकवात यहभीजानकारीहै कि सार व असारके विचार व गृह कुटुम्बके त्याग करनेसे मन निर्मल होकर भगवत्स्वरूपका प्रकाश जिस जिस भांति प्रकट व साक्षात् होता जाता है उसी उसीभांतिपरोक्ष व अभूत वातका जानना व सत्यहोजाना वचन आशीर्वाद व शाप और प्राप्त होजाना सामा मनवांछित जो कि अणिमादिक अष्टसिद्धि प्रसिद्धकी सम्बन्धी हैं यह सब अधिक होजाताहै जो तो उस विरक्त योगीका मन उन सिद्धियोंकी ओर लगगया तो सब जातारहा फिर ठिकाना लगना कठिनहै सो उससमय मनको ऐसा सम्हाले कि तनकभी मन उन सिद्धियों में न लगे ऐसा त्यागकरे कि जैसे वांत व विष्टाको घिनावना जानकर छोड़ देते हैं जो उस समय सम्हल गयातो तुरन्त वांछितपदको पहुंचगया जो उन वटमारोंने लूटलिया तो सातवें पाताल को गया व यद्यपि शांतरसका स्वरूप वैराग्य में मिला प्रकट होताहै परंतु उपनिषद् और रस शास्त्रके अनुसार शांतरस अलग स्थापित कियाहै इसहेतु रसोंकी पद्धतिके अनुसारसे इस शांतकावर्णन लिखाजाताहै आरम्भमें प्रकटहोने सब रसोंके हेतु चार सामग्री अर्थात् विभाव व अनुभाव व सात्विक व व्यभिचारी लिखीगई सो इसशांतको

प्रथम सामग्री बिभावमें भगवत् सब मंगल व आनंदकी खानि अनगिनत ब्रह्माण्डों का नायक व रचनेवाला असंख्यातजीवोंको व सबजानने वाला तीनोंकाल में बिराजमान जिसकानाम पाप व महाकष्ट से छुड़ाने वाला परमानंदके देनेवाले जोगुणहैं तिनका राशि जिसके बराबरअथवा अधिक दृष्टान्तको कोई नहीं पूर्णब्रह्म परमात्मा सच्चिदानन्दघन भगवत् अपना इष्टदेव वहतो बिषयालंबन है और शिव सनकादिक नारद अथवा दूसरेभक्त आश्रयलंबनहैं व सामग्री दूसरी अर्थात्अनुभावदृष्टि नासाके अग्रपर व ध्यान अनुक्षण व सबओरसे निर्मल व दुःख सुखका त्याग इत्यादि व सामग्री तीसरी अर्थात् सात्विककी जोजो आठ दशाहैं उनमेंसे एकदशा मूर्च्छाकीनहीं होती और सात यथा कथंचित् समयपर होतीहैं व सामग्री चौथी व्यभिचारी मेंसे स्मृती व निर्वेद इत्यादि कई दशा योग्य इस रसके किसी समयमें प्रकटहोकर जातीरहती हैं स्थायी भाव इस रसका वहहै कि सबमेंबराबर दृष्टिहो व ब्रह्मलोकतकके सुखों से अनरुचिहोय जिन भगवद्भक्तोंकी बैराग्य के प्राप्तहोने पीछे शांतरस में दृढ़ स्थितका संयोग पहुंचा उनकेलक्षण यहहैं कि किसीजीवसे बैर नहीं रखते सबके मित्र सबपरदया करनेवाले होतेहैं अहंकार व गर्बसे रहित व दुःख सुख दोनोंको बराबर जानतेहैं सहनशील व सबओर से चित्त संतुष्ट भगवत्के ध्यानमें अनुक्षण मन लगाहुआ दृढ़ और अनन्य बिश्वास भगवत् चरणों में सब इंद्री भगवत्स्वरूप में मग्न किसीको उनसेदुःख नहींपहुंचता व आप किसीसे दुःखी होतेहैं सुख व क्रोध व भयसे जो भांति भांतिकी चिन्तना मनमें उत्पन्नहोतीहैं उनसे छूटेहुये न कबहीं प्रसन्न होतेहैं न अप्रसन्न न कबहीं किसीबातका शोचकरते हैं न किसी बस्तुकी चाहना मन बिमल व एकाग्र अच्छे व बुरेसे अलग बुद्धिमान व पवित्र शत्रु मित्र दोनोंसे बराबर संसारसे व संसारीकार्यकरने से अलग व अनरुचिमान व अपमान निन्दा व स्तुति दुःख सुख शीत उष्णकालको सम करके मानते हैं क्षुधा शांतके हेतु थोड़ेहीसे संतुष्टहोते हैं घरबारसे न्यारे बुद्धिनिर्मल व तीक्ष्ण यह सिद्धान्त श्लोकोंमेंसे थोड़े से श्लोकों का अर्थ लिखागया स्तुति व बड़ाई शांतरस व बैराग्य की लिखने व कथनमें नहीं आयसक्ता जिसकिसीको जानने और सुननेकी

विशेष प्रीति होय सब पुराणोंसे मालूम करसक्ता है हे श्रीकृष्णस्वामी कहां मैं और कहां शांतरसकी पदवी यद्यपि आपकीकृपासेसबकुछलाभ होसक्ता है कि एक निमिषमें मशकको ब्रह्मा और ब्रह्मा को मशक और तृणको कुलिश और कुलिश को तृण करसक्तेहैं परंतु अपने अपराध व अपकर्मकी ओर देखताहूं तो किसी बात के निमित्त नहीं कहसक्ता जो निर्लज्ज होकर वैराग्य व शांत मांगूं तो यह शोच होताहै कि उस श्यामसुन्दर नवलकिशोर रूप अनूपके चिन्तवनकेहेतु क्यों न प्रार्थनाकरूं कि जिसके ज्ञान और वैराग्य दोनों सेवक व दासहैं अरेमन इस रूप और समाज के चिन्तवन में जो तू लगै तो तेरी पदवीका कोईनहीं कि चित्रकूट के निकट मन्दाकिनी के किनारे पर एकबन परम शोभायमान तमाल व कदम्ब व आम व चम्पा व मौलसरी इत्यादि वृक्षोंका है और उन वृक्षोंके मध्यमें जो चारवृक्ष एकबट दूसरा पीपल तीसरा प्लक्ष चौथा तमालहैं उनपर भांति भांतिकी बहुत ललित हरी लता रंगरंग के सुगन्धित फूलोंकी छाईहुई उन वृक्षोंके नीचे इन्द्रादिकदेवताओंने भीलरूप बनाकर परम शोभन कुटी रचीहै और उस कुटीके आगे बड़ी एक वेदी है कि श्रीजानकी महारानी अखिल ब्रह्मांडेश्वरी ने देवताओं के बनाने पीछे अपने श्रीहस्तकमल से उसकी शोभा को रचा है उसके चारोंओर फुलवारीमें रंगरंगके फूल रायबेल व चमेली व दवना व मरूआ व मदनबाण आदिके ऐसी सुन्दरताई के साथ हैं कि जिसओर दृष्टिजाती है बरबश मन अटकता है उसके बीच में श्रीरघुनन्दनस्वामी शान्तस्वरूप शोभाधाम कि जिनके मुखकी शोभाके आगे नीलमणि व कमल व घन व चन्द्रमाकी उपमा फीकीहै मुनिवेष बनायेहुये जटामुकुट शिरपैहै और उसमें फूल जगह जगह श्रीमहारानीजी ने गूंथेहैं कानों और हाथों में फूलोंके आभूषण बनमाला गलेमें धनुष बाण धारणकिये विराजमानहैं वामअंग श्रीजनकनन्दिनी शोभित लक्ष्मणमहाराज शस्त्र धारण किये सेवामें हाथबांधे तत्परहैं चारोंओर मुनिबैठे हैं कुछअवसर होरहाहै ॥

दो० लसतमंजु मुनि मण्डली मध्य सीय रघुनंद।
ज्ञानसभा जनु तनुधरे भक्त सच्चिदानंद॥

रन्तिदेव की कथा ॥

रन्तिदेवजी राजा दशकन्तके वंशमें ऐसे परमभागवत हुये कि राज्य करते समय सम्पूर्ण राज्य की आमदनी को ब्राह्मण सेवा व यज्ञ दान इत्यादिमें लगादिया और जब राज्य व संसार को असार जानकर त्याग किया व स्त्री पुत्र सहित बनमें जाकर भगवत् भजन करनेलगे तो उस दशामें भी जोकुछ मिलजाता तो याचक व भूखे को उठादेते थे एक वेर अट्ठाईस दिन पीछे थोड़ासा नाज भगवत् इच्छासेमिला उसके तीनभाग करके भगवत्अर्पण करके भोजनकरने बैठे तबतक एक ब्राह्मण आगया और भोजन यांचा राजाने अपना भाग उठाके दिया तिसपीछे एक शूद्र आया राजा ने अपने लड़के का भाग देदिया फिर एक म्लेच्छ ने यांचा उसको स्त्रीकाभाग उठादिया और आनन्दहोकर भगवत्भजन करनेलगे भगवत्ने जो राजाको भजन व बैराग्य व दयामें दृढ़देखा तो प्रसन्नहुये साक्षात् दर्शनदिये बड़ीकृपाकरके आज्ञाकी कि जोचाहनाहोय सो मांगो राजा ने बिनय किया कि सिवाय भक्त के और कुछ चाहना नहीं है सो अपनीभक्ति दीजिये और यहसंसार भांतिभांतिके दुःख व पीड़ामें फँसा है तो दूसरा बर यह मांगताहूं कि सबकादुःख मुझकोमिलै व मेरेभाग्य में जो कुछ सुख हो सो सबको मिलै भगवत् इस परोपकार व दयापर अधिकप्रसन्नहुये व जोपद परम योगियों को मिलता है सो उनकोदिया जानेरहो कि जो कोई भगवत्भजन से बिमुख हैं उनको सब सुख व ऐश्वर्य्य संसार के दुःखरूपहोजाते हैं और जोभगवत्भक्त व भजनानन्द हैं उनको सबदुःख व पाप सबसुख व पुण्य परमानन्द के सदृश हैं ॥

परशुराम जी की कथा ॥

परशुरामजीने अपनीभक्तिके प्रतापसे जङ्गलदेशके जङ्गलीलोगोंको इस प्रकार सत्सङ्गी व पार्षद रूप करदिया कि जिस प्रकार चन्दन के वृक्षोंकीहवा सारेबनको चन्दन करदेती है अथवा जैसे बहुकाल का अन्धकार दीपकसे तुरन्त दूरहोजाय श्री भट्टजी व हरिब्यास जी का जो परम्परा मार्ग्ग था उसीपर चलते थे भगवत्कथा कीर्त्तन का ऐसानियम था कि हज़ारों को भगवत् सन्मुख करदिया भक्ति व माला तिलक की प्रवृत्तिचलाई व राजधानी में रहकर सबऐश्वर्य्य प्राप्तथा परन्तु उससब

वैभव संसारीसे ऐसा वैराग्यथा कि सबको तुच्छजानतेथे सो यहदोहरा बनाया उन्हींका है॥

दो॰ माया सगी न मन सगो सगा न यह संसार।
परशुराम या जीव को सगो सो सिरजनहार॥

कोईसाधु इनकी परीक्षा को गया व कहा कि आपको भगवत्से प्रीति है तो इस वैभवसे क्याकाम है अलग भजन करनाचाहिये परशुराम जी अभिप्राय उससाधु का जानगये और सब छोड़कर कोपीन बांध के एक पहाड़की गुफामेंजाबैठे भगवत्भजन करनेलगे संयोगवश वहांएक बनजारा आगया और बहुतधन व पालकी और राजाओं की सामा सब भेंटकरी वह साधु अच्छी प्रकार समझगया कि परशुराम जी को कुछ चाहना वैभवकी नहीं है परन्तु भगवत् इच्छा से आपसे आप आते हैं परशुरामजी के चरणोंमें पड़ा लज्जितहोकर बिनयकिया कि मैं अज्ञता से बोला मेरा अपराध क्षमा कीजिये आप का प्रताप जाना सत्य करके भगवत्भक्त जितना ऐश्वर्य्यका त्यागकरते हैं उतनीही और बढ़तीहोती है तो जो संसारीसुखके चाहनेवाले जितना भगवत्भजन में लगेंगे उतनाही वैभव सुख उनको मिलैगा और सिवाय उसके परमनिधि भगवत् भक्तिभी उनको लाभहोगी॥

रांकाबांकाकी कथा॥

रांकाजी परम वैराग्यवान भगवत् भक्त हुये और बांका उनकी स्त्री रांकाजीसे अधिकभक्तथी पण्डरपुर जहां नामदेवजी का घरहै तहांही उनका घरथा जंगलसे लकड़ीलाते बेंचके निर्वाह करते दिनरात सिवाय सुमिरन भजनके और कुछधंधा न था एकदिन नामदेवजी ने भगवत्से बिनय किया कि बड़ेशोचकी बातहै कि रांकाबांका दोनों परमभक्त ऐसे खालीहाथों से दिनकाटैं भगवत् ने कहा कौन उपाय कियाजाय कि वे कदापि धन अंगीकार नहीं करते सोआपने आंखों तुमयह लीलादेख लेव यह कहकर नामदेवजी को अपने साथ बनमें लगये और जिसराह रांकाबांका लकड़ियोंके लेनेके हेतु जातेथे उसराहमें एकथैली मुहरों की डालदी रांकाजी की दृष्टि जो उसपरपड़ी तो बिचारकिया कि स्त्री पीछे आतीहै ऐसा न होकि उसको लोभइस द्रव्यका होजावै इसहेतु उसपर

धूलको डालदिया स्त्री जो रांकाजीके निकटपहुंची तो पूंछा कि तुमधूलमें क्या देखते थेरांकाजीने वृत्तान्तदेखने मोहरोंकेथैलीको व अपने बिचार का सबकहा स्त्रीनेपूंछा कि महाराज मुहर व धूलमें क्या भेदहै और धूल परधूल डालना क्या प्रयोजनथा रांकाजी बहुतप्रसन्नहुये और अपनीस्त्री का बांका नामधरा और कहा कि तेरेबैराग्यने मेरेबैराग्य परभी धूलको डाल दिया भगवत्ने नामदेवजी से कहा कि देखो कैसा बैराग्य दोनों भक्तोंकाहै फिर पीछे भगवत् व नामदेवजी ने भार लकड़ीका बटोरकर इकट्ठा करदिया कि भला कुछसेवातो होय रांका बांकाने उन लकड़ियों को किसी दूसरेका बटोरा समझकर हाथ न लगाया व खालीहाथ घर को चलेआये और यह निश्चय बिचारा कि आजमुहरें दृष्टिमें आईं उन के असगुनसे लकड़ी भी हाथ न आई जो उन मुहरोंको हाथलगाते तो न जानैं क्या होता भगवत्ने वह लकड़ी बटोरीहुई को रांकाजी के घर पहुंचादिया व रांकाजी ने भगवत् का भेजा जानकर अंगीकार किया पीछे भगवत् ने दर्शन दिया और कुछबस्त्रके अंगीकार करनेको आज्ञाकिया रांका रूप अनूप व छबि माधुरीको देखकर ऐसे दर्शनमें बेसुध व मग्न होगयेथे कि कुछ भान न था इसहेतु भगवत् ने आज्ञाकी तिसका उत्तर न देसके और नितांत भगवत् प्रसादको भगवत् रूप जानकर अंगीकार किया पीछे रांकाजी ने नामदेवजी से कहा कि महाराज उस शोभाधाम परम सुकुमार व फूलसे भी कोमल अंगवारेको कंटक व अनेक भयसे युक्त जीवन तिसमें लेजाना और परिश्रम देना तुमको कैसे अच्छालगा नामदेवजी और रांकाजी दोनों भगवत् बालरूपके उपासकथे सो भगवत् उनकी उपासनाके अनुकूल रूपसे प्रगट हुये ॥

रघुनाथ गोसाईं कीकथा ॥

रघुनाथ गोसाईंकी भक्ति और भावकी बड़ाई कौनसे कहीजाय कि जिसकी सेवाआप भगवत् ने करी और सदा भगवत्की परिचर्यामें तत्पर रहतेथे उत्कल देशमें थोड़ेसे नगरके रहने वालेथे और धनसंपत्ति बड़ी घरमेंथी सबको असार व अनित्य समझकर छोड़दिया और जगन्नाथपुरीमें रहनेलगे बाप उनका पुत्रके स्नेहसे सदा कुछ द्रव्य व सामा उनके खर्चकेहेतु भेजता परंतु कुछ अंगीकार नहीं करते केवल भगवत्-

रूपके रसमें छकेहुये अपने गुरू महाप्रभूजी की सेवा में तत्पर रहकर और श्रीजगन्नाथरायस्वामी के दर्शन करके भले बुरे व उष्ण व शीतल समय के धर्मसे अलग रहते एकबेर जाड़ेके समय में ठंढलगी श्रीजगन्नाथराय स्वामीने कृपाकरके बानात निज अपनी सेवाकीदी फिर एक बेर अतीसारका दुःखहुआ श्रीजगन्नाथरायजी ने जैसे माधवदास जी की सेवा करीथी उसी प्रकार इन गोसाईंजीकी करी गुरू ने वृन्दावन बासकी आज्ञाकरी तब श्रीवृन्दावनमें आये और राधाकुण्डपर विश्राम किया सदा भगवत् के मानसीपूजन में रहते थे और छविसुधा में छके दिन रात भगवत्नाम का वर्णन व कीर्तन का मन विश्रामथा एक बर दूध भात जो मानसीभोग भगवत्को लगाया तो ध्यानमें आपभी महा प्रसाद खाया बहुत भोजन करनेसे गरिष्ठता हुई बीमार होगये वैद्य ने नाड़िका देखकर कहा कि दूध व भात खानेकेकारणसे यहदुःख उत्पन्न हुआहै औषध पाचक व गरिष्ठता दूरकरनेकी करीजाय सो औषधभी लिखी गोसाईंजीने उत्तरदिया कि जिस भोजनसे गरिष्ठता हुईहै वही भोजन अज्ञान रोगके वास्ते औषध सिद्ध व सदा जीनेके हेतु अमृत है सो आप औषध अपनी अपने पास रखिये और मुझको जिसदशामें हूं उसी दशामें छोड़दीजिये वैद्यको विश्वासहुआ चरणोंमें पड़ा वाह वाह इस चिन्तवन व ध्यानके सिद्धताको कि भगवत् सबको ऐसा करैं और कुछ भाग उसमेंसे इस दासको भी देवैं ॥

श्रीधर स्वामी की कथा ॥

श्रीधरस्वामी ने श्रीमद्भागवत की टीका ऐसी रचनाकरी कि परम अद्भुत भागवतका निज अर्थ विनापरिश्रम सबकोप्राप्त होनेलगा दूसरे तिलककारोंके तिलकसे तो खेंच व खेंच प्रकटहै अर्थात् जो कोई कर्मका उपासक था तो उसने भक्ति व ज्ञानके अर्थकोभी कर्मकी ओर लगाकर टीका किया और जो कोई उपासक भक्ति व ज्ञान केथे उन्होंने अपने अपने मार्गोंको दृढ़ करदिया किसीने मुख्य वेद और भागवतपर दृष्टि न किया परन्तु श्रीधरस्वामी ने तीनों काण्ड अर्थात् ज्ञान और भक्ति और कर्म वेदकी पद्धति के अनुसार बिना पक्षपात लिखा और जैसा अर्थ जिस जगह चाहिये अपने गुरु परमानन्दजी महाराजसे पूछकर

वैसाहीलिखा और परम संहिताको वेदकी रीतिके अनुसार दृढ़ रक्खा जब वह टीका रचना होचुकी तो काशीपुरीमें पण्डितोंकी सभाहुई और दूसरे पण्डितोंनभी अपनी टीकाको रखदिया और सब पण्डित अपनी रचनाको दूसरेकी रचनापर श्रेष्ठता बतलाते थे श्रीधरस्वामी को तनक अहंकार व हठ अपनी टीकापर न था नितांत सब पण्डितोंके सम्मतसे यह बात ठहरी कि बिंदुमाधव महाराज जिसटीका को अंगीकार करैं उसीकी प्रवृत्ति चलाई जाय सो सब टीकाओं को भगवत् के मंदिर में रखवायदिया और दिनको बंदकरदिया कुछ बिलम्ब करके फिरमंदिर जो खोला तो स्वामी श्रीधरजी के तिलक पर दसखत मंजूरी के मिले और सब नामंजूर हुआ सबको बिश्वासहुआ और वही श्रीधरी टीका चली व सबको अंगीकार हुआ श्रीधर स्वामी पहिलेसे भगवत्के परम भक्त थे जिस कारणसे घर बार छोंड़ा सो यहहै कि धनवान थे आगरे से कुछ द्रव्य सहित कहींको जातेथे राहमें ठग मिलगये और पूंछा कि तेरे साथ कौनहै उत्तरदिया कि रघुनंदन स्वामी मेरा मालिक व जीवन आधार मेरे साथहै ठगोंने आपुस में सम्मत कियाकि यह आदमी अकेलाहै मार कर धन असबाब लूटि लेव सो एक जो हथियार चलाने को उद्यतहुआ तो श्री रघुनन्दन स्वामीको धनुष बाणलिये रक्षाके हेतुसाथ देखा इसी प्रकार कई बार मनकिया व हरबार उस रक्षक को साथ देखा जब घर आये तो ठगोंने पूंछा कि महा राज वह स्याम सुंदर सुकुमार नव यौवन कौन है जो राहमें तुम्हारी रक्षा करता रहा स्वामीने उसी घड़ी घर बार व धन संपत्ति का त्याग किया कि मेरे स्वामीको उस के हेतु क्लेशहुआ और वे ठगभी बिश्वास करके भगवत् सन्मुख होगये॥

चौ० रमा बिलास राम अनु रागी। तजतन मन जिमिनर बड़भागी॥

कामध्वजकीकथा॥

कामध्वजजी जातिके राजपूत व चारभाइयोंमें अपने आप परमभक्त व वैराग्यवान हुए कि बनमें रह कर सदा श्री रघुनन्दन स्वामी की भजन सेवामें लीन रहते थे किसी से कुछ मतलब व प्रयोजन न था एक काल भगवत् प्रसाद के निमित्त नगर में आया करते थे और उसीघड़ी फिर चले जातेथे एक दिन उनके भाइयों ने कहा कि जो तुम साथ चल-

कर रानाजी के सरकार में हाज़िरी देआवो तो तुम्हारा दरमाहा भी लिखा जावे कामध्वजजीने उत्तर दिया कि जिस सरकार में नौकर हूं तहां हाज़िर रहता हूं यह नहीं हो सकता कि वहांसे गैरहाज़िर होकर विमुखों में चेहरा लिखाऊं भाइयों ने कहा कि जब मरोगे दाह कर्म कौन करैगा उत्तर दिया कि वहही सब करैगा कि जिसका मैं दासहूं यहकह-कर वनको चले गये कुछ दिन पीछे जब अंत समयआया तो श्री रघुनं-दन स्वामीकी आज्ञा से हनुमानजी आये चन्दन अगर इत्यादि से दाह कर्म कामध्वजजी का किया श्रीरघुनन्दन स्वामीने अपने भक्तों का प्रताप दिखलाने के हेतु एक चरित्र आश्चर्य जटायु और शवरी के वास्ते यह किया कि जितने भूत प्रेत उसवाग में रहते थे सब कामध्वजकी चिताका धुंआँ लगने से पवित्र होकर परमपदको चलेगये एकप्रेत उस समयकहीं चलागया था जवआया और अपने सजातियोंको न पाया तो एक संन्यासी से समाचार सब सुनकर उसी भस्म में लोटकर सद्गति को गया जाने रहो भगवत्का वचनहै कि मेरे भक्त तीनोंलोकको पवित्र करते हैं और प्रयाग व गंगा आदि का यह वचन है कि हम सबके पाप व दुःख दूर-करते हैं और हमारेपाप भगवत्भक्तों की चरणकृपा से जाते हैं तो क्या आश्चर्य है कि भूत पिशाच इत्यादि शुद्धहोकर सद्गतिको पहुंचे ॥

गदाधरदासकीकथा ॥

गदाधरदासजी परम भागवत और ऐसे प्रेमीहुये कि श्रीविहारीलाल जी की सेवा और छवि अभिराम के देखने और शृङ्गार में सदाआनन्द व लीन रहकर भगवत्भक्तों की रीतिसेसेवा तन मन से करते थे उदार और भगवत्चरित्रों के कीर्तन करनेवाले ऐसेहुये कि वर्णननहीं होसक्ता भगवत् में अनन्य विश्वास ऐसाथा कि स्वप्नमें भी दूसरेदेवता की ओर न देखा संसारको भगवत् भक्तिका वाधक समझकर त्याग दिया व वु-रहानपुरके निकट एक वागमें आकर वैठेरहे लोगोंने वस्तीमें चलनेको बहुत विनय व प्रार्थनाकी पर न गये सदा भगवत्के ध्यानमें मग्नरहा करतेथे एक दिन मेह बहुत बरसा भगवत्ने अपने भक्तका क्लेश देखकर एक साहूकारको आज्ञादी कि तुम मेरे भक्तके वास्ते मकान बनाकर उस में टिकादेव मेरी आज्ञा जनादेव उस साहूकारने एक मंदिर बहुत दृढ़ व

सुन्दर बनवाकर उसमें भगवत् आज्ञा सुनाके बलसे ले आकर विराजमान कराया व और मकान साधु लोगोंके टिकनेको व आनेजाने वालों के निमित्त बनवादिया गदाधर दासजी ने श्रीलालबिहारीजी की मूर्त्ति अतिसुन्दर बिराजमान करके साधुसेवा को आरंभ किया जो कुछ आवे उसीदिन खरच करदेतेथे कुछनहीं रखतेथे परंतु रसोइआं कुछ सामग्री इस बिचारसे कि प्रभातके समय भगवत्के भोगको अतिकाल न होजाय रखलिया करताथा एक रात साधुआये उनकी रसोईके वास्ते सामग्री ढूंढ़ीगई गदाधरदासजी ने रसोइआंको बुलाकर पूंछा उसने कहा कि भगवत्के भोगके वास्ते भोरकी कुछसामग्रीको रखलिया है सो धरीहै गदाधर दासजीने आज्ञादी कि उसी सामग्रीसे साधोंकी सेवाकरो भगवत् के वास्ते कल्ह आयजायगी सो उसीघड़ी भगवत् भक्तोंकी सेवा हुई प्रभातको तीसरे पहरतक कुछ न आया और भगवत् भोगभी न लगा चेला लोग भूख से व्याकुल होकर कहनेलगे कि देखो अत्यन्त खरच करने से अबतक सबकोई भूखे हैं न जानैं भगवत् कब गदाधरदासजी के हाथसे छुड़ावेगा उसीसमय एक साहूकार आगया उसनेदोसौ रुपैया भेंटकिये गदाधरदासजीने कहा कि यह रुपैया इन असन्तोषियोंके शिर पर मारो कि हायहायकर रहे थे साहूकार डरा कि क्या यह रिस कुछ मेरे ऊपरहै गदाधरदासजी ने सब वृत्तान्त उस साहूकार से कहकर उस की तसल्लीकरी कि वह आनन्दहुआ और भगवत् भक्तोंका बिश्वास कर के भगवत् के शरणहोगया पीछे गदाधर दासजी कुछदिनवहां रहे फिर मथुराजी में आये ब्रजकिशोरके रूप व छबि से छकेहुये सत्संग व भगवत् सेवा में सब बयक्रम व्यतीत किये॥

माधवदास की कथा॥

माधव दासजी की भक्ति और महिमा और प्रताप व बैराग्य और शांति व भावका वर्णन कौनसे होसकताहै जिस प्रकार बेदव्यासजी ने अवतार धारणकरके वेदोंका बिभाग किया और पुराणबनाये और महाभारत व सूत्र इत्यादिको जगतमें प्रगटकिया और फिर उनका सार और सूक्ष्म करके श्रीमत्भागवत् में वर्णन किया और भगवत् भक्ति और भागवत् धर्मको संसार में प्रवृत्त किया इसीप्रकार माधवदासजी ने मा-

नों वेदव्यास जी का अवतार लेकर भगवत् भक्ति और चरित्रों का सब शास्त्रोंका सार निकालकर जगतमें विख्यातकिया और भगवत्नाम और लीलाका कीर्तन करकेहज़ारों लाखोंको संसारसमुद्रसे पार उतारा श्री जगन्नाथ राय जीके परम उपासक और वैराग्यवान और ब्राह्मणों के नायक हुए ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे जब स्त्री उनकी मरगई तो विचार किया कि यह संसार आगम पाईहै मनोरथ यहकियाथा कि लड़का लड़की होंगे उनका व्याह शादी करेंगे और कुलकी वृद्धि होगी अब भगवत् ने यह चरित्र दिखाया निश्चय करके यह संसार अनित्य है और किसीका नहीं है यह शोच कर कि जो घर में हैं इनकी चिंता करना निपट अयोग्य है कि सबका आहार पहुंचाने वाला व पालन करने वाला भगवत् है जो कोई अपनाउपाय करै वह बुद्धि हीन है ऐसानिश्चय करके और सब विकार संसारी छोड़कर अलग हुए और श्रीजगन्नाथ पुरीमें पहुंच कर भगवत् के दर्शन किये समुद्र के किनारे पर जाकर बैठ रहे और जो मन भगवत् के रूप अनूप में दृढ़ लगगयाथा इस हेतु भोजनकी सामग्री के न मिलने से विकल न हुए तीन दिन बीते कि कुछ न खाया और भगवत् का ध्यान करते एक जगह बैठे रहगये भगवत् ने शोचा कि हमारे वास्ते नित्य हज़ारों मन व्यंजन अति मधुर भोगका बनै और हाय २ हमारे भक्तको तीन दिन तक एक दानाभी न पहुंचा भक्त वत्सलता ने बेचैनकिया और उसीघड़ी निज अपने महा प्रसाद का थाल सोनेका लक्ष्मीजी के हाथ भेजा लक्ष्मीमहारागी भोजन लेकर चलीं तो विचार किया कि पिता तो बालकके पालन से सुचित्त रहता है परंतु ऐसी माता कोईनहीं कि थोड़े दिनके जन्मे हुए लड़केको पालन न करै माधवदास भक्तिके घरमें जन्मा हुआ बालकहै उसका उपाय व सुधि भोजनकी न लीगई तो बड़ी लज्जाकी बातहै इस हेतु लक्ष्मीजी माधवदास जीके पीछे गईं व झनकार पाव जेब और प्रकाश भूषण बिछुवोंकेसहय माधवदासजीको मालूमहुआ परंतु भगवत् ध्यान में मग्नथे इसहेतुआंख न खोली लक्ष्मीजी थाल रखकर चली आईं तब माधव दासजी ने थाल देखा तब आनंदित होकर भोग लगाया भोजन करके अपने भाग को सराहा और सोनेके थालको पनेके पत्ताकीसी भांति एकओर डालदिया

था मंदिरके पुजारी सबढूंढ़ते हुए वहां पहुंचे माधवदासजी को पकड़ा व बेंतमारा चलेआये वह चोटबेंत की भगवत्‌ने अपने कमरपर ली और पुजारियों को बेंतकी चोट जनाकर आज्ञाकी किवहथाल व महाप्रसाद माधवदासजीके वास्ते हमने भेजाथा उनकोजो बिना अपराध दंडदिया वह सब हमको हुआ हमबहुत क्रोधमें हैं पुजारी सबअति भयसे व्याकुल होकर माधवदासजीके पासजाकर बड़ी मर्य्याद से चरणों में पड़कर प्रार्थना व बिनय करके अपना अपराध क्षमाकराया यहवृत्तांतसारे संसार में बिख्यात होगया और भगवत् की कृपालुता को भगवत्‌भक्त जन सुनकर अतिआनंद और प्रेमसे शरीरमें न समाये माधवदासजीको भगवत् स्वरूपमें ऐसाप्रेम और स्नेहथा कि देखते देखते बेसुध होकर मंदिरमें रहजातेथे औरजब पुजारी सबमन्दिर बंदकरते थे तो भगवत् इच्छासे उनको दिखाई नहींपड़ते थे एकरात जाड़ेकीऋतुमें माधवदास जीको जाड़ालगा भगवत्‌ने पुजारियोंको आज्ञाकिया कि हमको ठंढलगी पुजारी सबतुरंत भांतिभांतिकी रजाइयांलाये भगवत्‌ने अपने निजओढ़ने की रजाई व बनात माधवदासजी को कृपाकरके दी और आपनई रजाईकोलेलिया तब ठंढमिटी एकबेर माधवदासजीके पेटमें मुर्शकारोग हुआ और अतीसारकेहोनेसे समुद्रके किनारेपर जापड़े जबपानीलेने व शौचकरनेकी सामर्थ्यनरही तो आप भगवत्‌आये व उनके शरीरकोधोया शुद्धकिया माधवदासजीने शोचकिया कि यहकौनहै जो ऐसीसेवाकरताहै बिचारकिया तो जाना कि आप भगवत्‌हैं हाथजोड़कर बिनयकिया कि ऐसा परिश्रम कब उचितहै कि दासकी दास्यतामें भेदआवै और स्वामी की बड़ाई में भगवत्‌ने कहा कि मेरेभक्तको जब दुःखहोताहै तब हमसे रहा नहींजाता आपचलाआताहूं माधवदासजी ने बिनयकिया कि रोग को दूरकरदेते तो ऐसापरिश्रम न होता भगवत्‌नेकहा कि रोगकाहोना प्रारब्धकर्म का भोगहै सो प्रारब्ध का दूरकरना उचित नहींदेखता कि कर्मभोगकी पद्धतिसे बिरुद्ध पड़ताहै औरजब कि मेरेभक्त बिनाकष्ट उन प्रारब्ध कर्मोंको भोगलेते हैं तो क्या प्रयोजनउनके ध्वंस करनेकाहै यह रीति दिखाकर वह रोगभी दूर करदिया इसहेतु कि किसी साधक भक्तका बिश्वास न छूटजाय जानेरहो कर्म तीन प्रकारके हैं सो संचित व

क्रियमान तो उसीघड़ी दूरहोजाते हैं जिसघड़ी यह मनुष्य भगवत् शरण होता है और प्रारब्ध निश्चय करके भोगना पड़ता है जबयह चरित्र माधवदासजी का विख्यात हुआ तो हज़ारों आदमी की भीड़ रहनेलगी माधवदासजी ने अपनी सिद्धताका विश्वास और भीड़के दूर करने के हेतु भिक्षा मांगना आरंभ किया एक के द्वारपर गये स्त्री चौका देतीथी उसने शब्द सुनकर वह पोतनेका कपड़ा क्रोध करके माधवदासजी के शिरपर मारा माधवदासजी को उसपर दया आई हँसके वह कपड़ा उठालिया उसको पानीसे धोकर शुद्धकिया बत्ती बनाकर रातको जगन्नाथ जी के मन्दिर में दीपक बारदिया उसका यह प्रताप हुआ कि भगवत् मन्दिर व उस स्त्री के हृदय में बराबर प्रकाश हुआ अर्थात् उस स्त्री को तुरन्त भक्ति उत्पन्न हुई दूसरे दिन माधवदास जी जबगये तो दौड़कर चरणों में पड़ी ऐसी दयालुताकी बड़ाई किस प्रकार वर्णन होसकै एक पण्डित सब देशों के पण्डितों को चर्चा व शास्त्रार्थ में जीतता और दिग्विजय करता हुआ पुरुषोत्तमपुरी में आया और वृत्तान्त पण्डिताई माधवदासजी का सुनकर उनसे कहनेलगा कि मेरेसाथ चर्चाकरो माधवदासजी ने चर्चा नकी और काग़ज़पर लिखदिया कि माधवदास हारा वह पण्डित काशी में गया और अपनी बड़ाई व पांडित्य को कहकर कहा कि माधवदास को जीतकर मैं आया हूं जब वह काग़ज़ पण्डितों की सभा में रखदिया तो उसमें यह लिखा देखा कि माधवदास जीता और पण्डित हारा अति क्रोधकरके फिर जगन्नाथ पुरीमें आया और माधवदासजी को अनेक दुर्वचन कहकर बड़ी उपाधि व बखेड़ा करनेको उद्यत हुआ माधवदासजी ने कहा कि जो कुछ तुमकहो फिर लिख देवें पण्डित ने कहा तू बड़ा धूर्तहै गदहेपर चढ़ाकर और काला मुह करके नगरमें चारोंओर फिराऊंगा माधवदासजी तो चुप होरहे और वह पण्डित स्नान करने को चलागया भगवत् पण्डितका रूप बनाकर उस के पास पहुंचे और चर्चाकरके जीतलिया उसको गदहेपर चढ़ाकर और सौ दोसौ लड़के बटोर करके और आपभी लड़के के रूपसे साथ होकर उस पण्डित की खूब धूल उड़ाई संयोग बश माधवदासजी भी उसी ओर आनपे और भगवत् से बिनती की कि ऐसे पण्डितको ये मर्य्याद

व मान भंजन करना कौनउचितथा भगवत्‌नेकहा कि बहुत उचितऔर प्रयोजनथा कि यहमूर्ख मेरेभक्तोंको गदहेपर चढ़ाकर मुझको गदहेपर चढ़ाया चाहताथामाधवदासजीने उसपण्डितको आपगदहेपरसे उतारा और अपनाअपराध क्षमाकराया एकबेर माधवदासजीके मनमेंयहआया कि पुरुषोत्तम पुरीमें ब्रजके चरित्र बहुत कीर्तनहुआ करतेहैं ब्रजकादर्शन करना चाहिये सो चले मार्ग में एक बाई भगवत् भक्त भोजन कराने के लिये लेगई जब भगवत् का भोग लगाया तो जगन्नाथ रायजी आये और माधवदासजी भोजन करनेलगे वह बाई भगवत् का सुकुमार अंग और सुन्दर मुख थोड़ी बयस देखकर रोनेलगी माधवदासजी ने जब कारणपूछा तो कहा कि यह लड़का जो तुम साथ लाये हो थोड़ी उमर का परम सुकुमार है इसके माता पिता कैसे जीतेरहे होंगे माधवदासजी ने गरदन फेरकर देखा तो अपने स्वामी को देखा भगवत् कृपा और अनुग्रह के प्रेम में बेसुध होगये और उसबाई का बोधकरके आगेचले किसी और गांवमें एक महाजन भगवत् भक्तरहता था उसको माधव-दासजीने बचन दियाथा कि हमतेरे घरआवेंगे उसके घरगये वहमहा-जन किसी कामको गयाथा उसकी स्त्रीआई चरणों में पड़ी एक महंत उसकी अटारीपर रसोंई करता था स्त्रीने उसमहंत से कहा कि एकहरि भक्त आगये हैं वहभी तुम्हारे साथ प्रसाद सेवन करलेवैंगे महंतनेक्रोध सहित उत्तर दिया कि यहांकिसी और की रसोंई नहीं होसक्ती लाचार उसस्त्रीने माधवदासजी से बिनय किया कि सामग्री तैयार है आपर-सोंई बनालेवैं माधवदासजी ने कहा कि और रसोंई नहीं बनासक्के जो कुछ बस्तु भोजन के योग्यहोय सो ले आवो वह दूधगरम लेआई और भोगलगा कर वहांसे चले और कहा कि अपने पतिसे कहदेना कि मा-धवदास जगन्नाथी आयेथे थोड़ीदूर गयेथे कि वह महाजन अपने घर आया और वृत्तान्त अपनी स्त्रीसे सुनकर दौड़ा जाकर अतिप्रेमसे चरण पकड़लिया और हाथजोड़कर अपने घर पधारने के वास्ते बिनयकिया माधवदासजी ने उसको बहुत करके कहा कि तेरेघर तेरीस्त्री ऐसीबड़-भागी है कि बर्णन नहीं होसक्ता अब तेरे सदगति और तेरे उद्धार में क्या संदेह है वहमहंतभी माधवदासजी का नामसुनकर महाजन के

साथ आयाथा हाथजोड़कर अपराध क्षमाकराने लगा और शिक्षाचाही माधवदासजीने कहा कि हरिद्वारमें जाकर भगवत् भक्तोंकी शीतप्रसादी सेवन करो तब कुछ ठिकानालगजायगा वहां से महाजन व महंत को विदा करके वृन्दावन में आये श्रीवृन्दावन और श्री वृन्दावनचन्द्र के दर्शन करके परम आनन्द में मग्नहोगये बांकेबिहारीजी के मंदिर में दर्शन करने गयेथे वहां चनेमिले और द्वारपालोंने कहाभी कि अबभगवत् रसोई का भोग लगायाजाता है तब प्रसाद मिलैगा परंतु चनेही से क्षुधाकी शांति समझकर यमुना के किनारे पर आये और भगवत् अर्पण करके भोगलगाया जब मंदिर में रसोई तैयार हुई और भांति भांतिके व्यंजन मधुर भगवत् भोग के वास्ते पुजारी लेगये तो भगवत् ने कुछ अंगीकार न किया आज्ञा हुई कि माधवदासजी ने चना हमको भोग लगाया इसहेतु अब कुछ चाह न रही गोसाईं और पुजारी मंदिर के दौड़गये और ढूंढ़कर माधवदासजीको ले आये तब भगवत् ने भोग लगाया श्रीवृन्दावनके दर्शनकर पीछे तब दूसरे ब्रजभूमि के दर्शन को गये और भांडीरवन में खेमनामे साधुरहताथा उसकेस्थानपर टिकनेका विचार किया उसने टिकने न दिया और कठोरताई बहुतकरी माधवदासजीअलग कहीं जाकर ठहरे जब उससाधु ने अपने वास्ते तसमई को तैयारकिया और खानेको बैठा तो कृमि सबहोगये लाचार होकर आया और माधवदासजीके चरणोंमेंपड़ा माधवदासजीने उसकाअपराध क्षमा किया और भगवत्भजनकी शिक्षाकी पीछे हरिआनेगांव में पहुँचे वहां एक बैरागियोंके स्थानमें साधुसेवा हुआ करतीहै और गऊ बहुत रहती हैं उसस्थल में कथा भागवत की होतीथी भगवत् चरित्रों के सुननें के वास्ते कुछदिन वहां टिकगये और टहलवहांकी अपनेअंगसे यह उठाली कि गोबर इकट्ठाकरके उपले पाथदियाकरते एकसाधुआगया और माधवदासजी को पहिचानकर दण्डवत् किया जब उसस्थलके महन्तआदि ने माधवदासजी को जाना तोसबचरणोंमें पड़े और बहुत बिनयकिया कुछ दिन वहांरहे और चलतीबेर ऐसा कहगये कि अबतकयह स्थल पूर्व गतसमाहुआ है और साधुसेवा होतीहै फिरतीबेर अपने धर्मभाव और माला व लड़कोंको भगवत्भक्ति उपदेश करके चलेआये तब उस महा-

जनके गांवके नगीच पहुंचे तब स्वप्नमें अपने आनेसे उसको जनादिया वह आया और दर्शनकिया वहांसे पुरुषोत्तमपुरीको चले और भगवत् दरबारमें पहुंचकर ध्यान व भजन में लगे चरित्र माधवदासजी के बहुत हैंजितना जानने में आया लिखागया॥

नारायणदास की कथा॥

नारायणदासजी जाति चारन अल्हभक्तके वंशमें भगवत्भक्त व वैराग्यवान हुये उनका बड़ाभाई तो कमानेवाला था और नारायणदास जी लुटानेवाले एकबेर भाभीने भोजनठंढा खानेकेवास्तेदिया नारायणदासजीने न खाया गरममांगा भाभीबोली मारी कि क्यातू अपने बाबा अल्हजीके ऐसा भगवत्भक्तहै कि तुम्हारी आज्ञा उठायाकरैं नारायणदासजीको लगगई कि भगवत्भक्तिसे बिमुख होकर जीना पशुकेसदृश है मनुष्यशरीर केवल भगवत्भक्ति के निमित्तहै संसारीसुखके निमित्त नहीं भगवत्भक्ति सार और यह संसार असार समझकर संसार को त्यागदिया द्वारकामें जाकर ऐसा सेवा भजनमेंलगे कि भगवत् उनके भक्तिसे बश होकर जो कृपा उनके बाबाअल्हजी पर करीथी वैसेही होकर उनपर भगवत्ने करी साक्षात्प्रकटदर्शनदिये॥

जीवगोसाईं की कथा॥

इसकलियुग में रूप सनातनजी तो भक्ति के जलके सदृशहुये और जीवगोसाईं महाराज मानसरवर के सदृश व भगवत् भजन उसमानसरवर के दृढ़घाटके सदृशहैं और भक्तिकी दृढ़ता फूलेकमल के सदृशहै कलियुगके प्रपंचकी काई जिस सरवर समीप न गई और भगवत्भक्त जो हंसकेसदृशहै उनको परमआनन्द का देनेवालाहुआ जिन्होंने वृंदावनमें वासकरके प्रियाप्रीतम महाराजकी सेवा और भजनमें मनलगाया और जगत्के उद्धारके निमित्त सब शास्त्र व पुराण इत्यादि इकट्ठे करके उनका जो सार व मुख्य अभिप्राय था उसको अच्छेसमझ कर ऐसी भगवत् भक्ति को प्रवृत्तकिया कि करोड़ों संसार समुद्र के पार होगये और शोक संदेहके नाशकरनेवाले ऐसेहुये जैसे सूर्य्य अंधकारका शत्रुहै और घटाके सदृश सबका उपकार करनेवाले मित्रहुये माधुर्य्य भाव से भगवत् की उपासना करतेथे और रासचरित्र और दूसरे बिहारलीला

को परम तत्व जानते थे और उसी को मुख्य तात्पर्य समझते थे रूप सनातनजी के भतीजे थे धन ऐश्वर्य बड़ा रहा सबको अनित्य व असार समझकर त्यागकिया और श्रीवृन्दावन में आये धोती और चादर रेशमी बड़े मोल की शरीर पर थी रूप सनातनजी ने मुलाक़ात के समय हँस कर कहा कि नामतो मेराव्यवान और पोशाक यह तब जीव गोसाईंजी ने उसकोभी त्यागकिया और गांवसे अलग यमुनाकिनारेपर कुटीबना कर भगवत्भजन और ध्यानरूप माधुरीमें लगे एकदिन गोसाईंरूपजी उसीओर जापड़े ब्रजवासियोंने कहा कि महाराज हमारे गोसाईंजीका दर्शनकरो रूपजी आये और जीवगोसाईंजी की मग्नदशा देखकर अति प्रसन्नहुये और छातीसेलगाकर प्रेमसंपूर्णहोगये फिर अपने पासटिका-कर सब शास्त्र पढ़ाया और रसग्रन्थ व भगवत्चरित्र गोप्य जो वचन से शिक्षाकी परम्पराहै सो सब अच्छीभांति समझादिया जीव गोसाईं जीने उनको ऐसा ग्रहणकिया कि सारे संसारको मिला और जहां तहां गोसाईंजी की विद्या और पांडित्य की ख्यातिहोगई और अकबरबाद-शाहने गंगा व यमुनाके माहात्म्य व बड़ाईके निर्णयकेवास्ते बुलाया सो वृन्दावन व ब्रजभूमि छोड़कर कहींरात्रिके निवासनहीं करनेका प्रणथा इसहेतु बादशाहने कई जगह घोड़ोंके रथकी सवारी बैठाकर एक पहर रातीतर फिर लौटने पहुंचानेका वादा प्रबंधकरदिया सो आगरेमें आये और ऐसे युक्तवाद से यमुनाजी की बड़ाई को ठहरादिया कि किसीको कुछभनुवाद भी न बाकीरही अर्थात् यह सिद्धांत दिखाकर बोले कि अल्प विचारक वाले दुराग्रहवश बुलाया कोई एकपुराण देखलिया होगा कि गंगाजी को विष्णुपादपद्मका पदार्पण लिखाहै यमुनाजी उसीपूर्णब्रह्म की पटरानीहैं विचारकरलेना चाहिये कि बड़ाई किसकीहुई उत्तरसे किसीको कुछ संदेह किसीबात का न होवे यह उपासना व सिद्धांतकी परम पढ़ाईहै निश्चय जिस किसी को ऐसा निश्चयहो उसको यह देना कैसाही [illegible] बादशाह [illegible] गोसाईंजी का सुनकर बहुत प्रसन्नहुआ और विनयकिया कि कुछ सेवाकी आज्ञाहोय गोसाईंजी ने कहा कुछ प्रयोजन किसीबात का नहीं है जब बादशाहने बहुतसा [illegible] आज्ञाकी कि [illegible] व [illegible] जब [illegible] गोसाईंजी ने [illegible]

के वृन्दावनमें इकट्ठे करादेव बादशाहने थोड़ेहीदिनमें आज्ञा गोसाईंजी को पूर्णकरदी कि अबतक सबपुराण व स्मृति व शास्त्र वृन्दावनमें प्राप्त हैं गोसाईंजीने जिसप्रकार गोबिन्द देवजी का मन्दिर मानसिंह अजमेर के अधिपतिसे बनवाया सो वृत्तान्त रूपसनातनजीकी कथामें लिखा है बादशाह अकबर वृन्दाबन में आया व गोसाईंजी के दर्शन को गया चलती समय बिनयकिया कि वास्ते बनवादेने मकान इत्यादि के कुछ आज्ञाहोय गोसाईंजी ने कहा कुछ प्रयोजननहीं बादशाह ने हठकरके कहा तब गोसाईंजी ने कहा कि हृदयकी आखोंसे श्रीवृन्दाबन व यहां के सजावटको देखनाचाहिये तिसपीछे हठ अपने श्रद्धाकेअनुकुल उचित है बादशाह ने आंख बन्दकर के देखा तो धरती और मन्दिर सबओर कुंजेंआदि वृन्दाबनके सब सोनेके खचित मणिगण के जड़ावसे जड़ित हैं ऐसेदिखाईपड़े कि जिसके तड़पसे आंखें बन्दहोजातीथीं और दूसरे सामान सब हरएक प्रकारके ऐसेदेखे कि कान और ध्यान ने कबहीं न सुने थे अधीनहोकर बिदाहुआ रीति गोसाईंजीकी ऐसीथी कि जो कोई भेंटपूजा ले आताथा यमुनाजीमें डालदेतेथे अपने पास कुछ नहींरखते थे सेवकलोगोंने हाथजोड़कर बिनयकिया कि किसवास्ते यमुनाजी में डालाकरते हो अच्छीबातहै कि साधुसेवा हुआकरै कहा कि साधुसेवा करनेकेयोग्य कोई देखनेमें नहींआता एक चेलेनेकहा जो आज्ञाहोय तो यहदास आपके मनके अनुकूल यह सेवाकरै सो गोसाईंजी ने आज्ञादी उसन्ने साधुसेवाका आरम्भकिया एकसाधु ने रातकेसमय कुबेलामें भोजनमांगा वह सेवाकरनेवाला टहल और परिश्रमसेवा से थकगया था रिसकरकेबोला कि इससमय भोजनकहांहै प्रभातको मिलैगा जोबड़ी भूखहोतो मुझकोखालेव गोसाईंजी सुनकरबोले कि इसी श्रद्धापर सेवा साधोंकी अंगीकार करीथी कि उनको आदमी खानेवाला कहताहै फिर पीछे हरिभक्तोंका माहात्म्य और उनकी बड़ाई और सेवाकाफल सबको समझाया गोसाईंजी श्रीगोबिन्ददेवजी की सेवा पूजामें गोसाईंरूपजी की आज्ञासे रहतेथे बहुत काल पर्य्यंत बड़ीप्रीति और स्नेहसे सेवाको किया जब एकचेले की भगवत् भक्ति और प्रेमकी सबप्रकारसे परीक्षा करली तब भगवत्सेवा उसको सौंपकर आप श्रीवृन्दाबन की लता व

कुंज व यमुनाकिनारे व वनइत्यादि में भगवत्स्वरूप के मनन व ध्यानसे बेसुधि व निमग्न रहने लगे॥

सुरसुरीजी की कथा॥

सुरसुरीजी परमसती भगवत् भक्त ऐसीहुई कि जिनका सतरखनेके वास्ते आप भगवत् स्वरूप धारणकरके आये धनसंपत्ति अनित्य व संसारको असार समझकर घर त्यागकरके और अपनेपति सुरसुरानन्दके साथ वृन्दावनमें आयके भगवत्भजन व ध्यानमेंलगी रूप अतिसुंदरथा उनकी कुटीके पास मुसल्मानों का डेरा आनिपड़ा उनका सरदार सुरसुरीजीके स्वरूपको देखकर आसक्तहुआ अपने सेवकोंको पकड़लानेकी आज्ञादी सुरसुरीजीने धनुषधारीका ध्यानकिया भगवत्ने तुरन्तव्याघ्रके रूपसे प्रगटहोकर सबदुष्टोंकोबिडारा कितनोंकोमारडाला कितनेघायल हुये व्याघ्र के रूपसे इसहेतु प्रगटभये कि तरकससे तीरनिकालते धनुष पर चढ़ाते विलम्बहोगी और व्याघ्ररूप में सबअंग शस्त्ररूप हैं जल्दी अच्छी दुष्टोंकेघातसे बनिआवेगी इसहेतु व्याघ्ररूप से प्रगटहुये॥

द्वारकादासजी की कथा॥

द्वारकादासजी चेले स्वामीकील्ह के परमभक्त श्रीराम उपासकहुये पातंजलशास्त्र के अनुसार से शरीर त्यागकरके भगवत् का परमधाम पाया कूकसगांवके नगीच नदीबहतीहै उसके जलमें जाकर भगवत्का ध्यानकिया करतेथे और रघुनन्दनस्वामी के चरणोंमें ऐसा दृढ़विश्वास था कि संसारकी अनेकमोह की फांसीको काटकर एक उसीओर चित्तको दृढ़करके लगाया॥

राघवदासजी की कथा॥

सबको जीतनेवाला कलियुग तिसको जीतकर राघवदासजीने अपने अधीन करलिया और भगवत्भक्ति को ऐसानिबाहा कि कबहीं किसी प्रकारका भेद न पड़ा काम जो चाहना व क्रोध जो रिस और लोभ जो लालच इनके तनको पवनने स्पर्शभी न किया जैसे सूर्यजल को आकर्षणकरके फिर बरस देताहै परन्तु सूर्यको न चाहना आकर्षणकीहै न बरसनेकी अपनी अपनी ऋतुपर आपसे आप आकर्षण व वर्षाहोतीहै इसीप्रकार राघवदासजी को कुछ चाहना किसी ऐश्वर्य व संपत्ति के बटोरनेकी न थी आनंदसागर में [illegible]

की सेवामें विश्वास व सहिष्णु व प्रिय दर्शन व मीठे बोलनेवाले सुंदर रूपथे अल्हरामजी जो रावलकरके बाजतेथे अपने गुरूकीसेवा भगवत् की सेवाके सदृश करके संसार में विख्यात हुये ॥

हरिवंशकीकथा

भगवत्का वचन हैकि निष्किंचन मेराभजन करते हैं उनको शीघ्र मिलताहूं इस वचनपर हरिवंश जी को दृढ़ विश्वास था जैसे उस घसि हारे ने कि उसके पास केवल खुरपा जाली था गंगास्नान के समय दान कर दिया उसी प्रकार सबवस्तु दान करके व त्यागी होकर भगवत् भजनमें लगे और बिना भगवत् भजन स्मरण के एक घड़ी व्यर्थ नहीं जाती थी जब तक रहे कोई बचन कठोर न बोले रामानुज संप्रदाय में श्रीरंगजी के चेले थे सन्तोषी सहिष्णु प्रिय दर्शन और श्लाघ्य थे ॥

सत्रहवीं निष्ठा ॥

भगवत्सेवाका वर्णन वो महिमा जिसमें दश भक्त उपासकों की कथा है ॥

श्रीकृष्ण स्वामी के चरण कमलोंकी ऊर्ध्व रेखाको प्रणाम करके बुद्धावतारको कि गया जी में धारण करके प्रथम वास्ते एक प्रयोजन के यज्ञादिक की निन्दाकरी और फिर सबधर्मोंको स्थापितकिया दण्डवतहै सेवा निष्ठाकी महिमा के बर्णनसे पहिलेही एक संदेह का निवृत्त करना प्रयोजन हुआ वह यह है कि भागवत इत्यादि पुराणों में नव प्रकार की भक्ति में से सेवा व पूजन व दास निष्ठाको अलग२ बर्णन किया और बिचार करके प्रगट कुछ भेदनहीं जनाई देतासो कारण अलग २ वर्णन करने शास्त्रोंका क्याहै सो जानेरहो कि स्वरूप सेवा निष्ठाका सन्मुख रहना अनुक्षण सेवामें अपने स्वामीके और सहि नहीं सकना विश्लेषता एक क्षण मात्रका और करना सब सेवा जो समय समय पर करना प्रयोजन पड़ै और वह सेवा मन बच कर्मसे होय सो पूजन निष्ठा से तो इस सेवा निष्ठा को यह भेद हुआ कि पूजा निष्ठा उसको कहते हैं जो केवल षोड़शोपचार से किया जाय जिनका वृत्तांत आठवीं निष्ठा अर्थात् प्रतिमा व अर्चा निष्ठामें विशेष करकेलिखा है कुछ अनुक्षण सन्मुख प्राप्त रहने का नियत नहीं है औरबियोग भी वहउपासक सहि सक्ता है और

दास निष्ठासे यह भेद है कि दास नाम किंकरका है व करना किंकरताई निकट व दूर दोनों दशा में बनताहै दासको स्वामी की प्रसन्नता परदृष्टि रहती है हठ किसी बात में नहीं कर सक्ता महिमा सेवा निष्ठा की वर्णन नहीं हो सक्ती कि जिसके प्रभाव करके पूरण ब्रह्म सच्चिदानंद घनका सामीप्य मिलता है जिनको निर्लुक कहते हैं व इसी निष्ठासे उस पदवी को प्राप्त हैं भागवत में लिखाहै कि देवता व राक्षस अथवाआदमी यक्ष गन्धर्व कोई होय नारायण के चरण सेवन से परम कल्याण को पावता है फिर लिखाहै कि हे भगवन् तुम्हारे चरणोंका केसदृशहैं और उनकी सेवामें जिसकामन लगाहै सो इस संसार समुद्रको गोपद जलके सदृश उतर जातेहैं कपिल देवजी का वचन है कि जो मेरे चरणकीसेवा करते हैं उनको संसारका दुःख कदापि नहीं होताहै सप्तमस्कंध भागवत में लिखा है कि तबतक भयऔर शोक वलोभ औस्पृहा इत्यादिक दुःखदेने वालेहैं कि जबतक भगवत सेवामें मननहीं लगता शेषशेषी भाव जोशा-स्त्रोंमें लिखा है उसका निर्णय यहहै किजो वस्तु किसी और के निमित्त होवे उसकानाम शेषहै औरजिसके निमित्त वह वस्तुहोय उसको शेषी कहतेहैं जिसप्रकार राजाकाराज्य व फौज व प्रजा व संपत्तिइत्यादिहैं सो राजा तो शेषीहै और राज्यइत्यादिक सबशेषहैं इसीप्रकारसवारतो शेषी है और घोड़ा साईस शेष सो जबक्रम से एकको दूसरे का शेषी विचार कियाजाय तो परिणाममें शेषीहोना भगवत्पर समाप्तहोता है किसवा-स्ते कि जितनीवस्तु हैं सो औरब्रह्मांड जहांतक गुप्त व प्रगट आंखों से देखनेमेंआवें सो भगवत्के वास्तेहैं और भगवत्काहै भगवन् से अधिक कोईनहीं और इसीप्रकार जबशेषका परिणाम पदवीका विचार किया जाताहै तो शेषनाशपर समाप्तहोता है किसवास्ते कि जब सबवस्तु भगवत्का ठहरायागया तो विचारकरना चाहिये कि सबसे अधिककौन वस्तु निज भगवत्कीहै सो वस्तु अतिशय करके भगवत् सम्बन्धी होवे यहांतो सब शेषवस्तुओंमें यावत्प्रकार के अतिशयवानहैं सो वैष्णवलक्षण सब शेषभागों में पायेजायँ अर्थात् कोई अंग शरीरका ऐसानहीं कि भगवत् सेवामें नियुक्तहोवे शरीर तो मुख्यहै और कर्मेन्द्रियां [illegible] [illegible] है और [illegible]

हैं सो दीपमालिका के स्थान और विषभरे श्वासको रोंककर जो शी-
तलश्वासकालेना है सो पंखकेस्थान जिह्वासे भगवत्का नामलेतेहैं और
गुप्त व प्रगटके आंखोंसे अनुक्षणदर्शन अनन्तगुण शोभाधाम भगवत् के
रूपअनूप का करतेहैं नासिका से भगवत् शरीरकी सुगन्ध और तुलसी
सूंघते हैं और सर्प्प आंखही से सुनते हैं कान उनके नहीं हैं इसहेतु
आंखोंकीराहसे भगवत्के श्वाससे वेद औरमंत्र निकलतेहैं सो मूलपद
अर्थ सहित मनमें धारणकरते हैं तात्पर्य्य यह कि सब अंग शेषजी के
भगवत्सेवामेंलगेहैं और सबवास्ते भगवत् सेवाके हैं इसी हेतु उनका
नाम शेष बिख्यात होकर पदवी अन्त व परिणाम शेष होनेका उनपर
समाप्तहुआ सो प्रयोजन इस लिखने से यहहै कि सेवा भगवत्की ऐसी
हो कि गुप्त व प्रकटके अंगमेंसेकोई अंग सेवासेरहित न होय इसअवस्था
को जिसकी सेवा पहुंचजातीहै उसीकानाम शेषहै और वहही अनित्य
और वहही नित्य मुक्तहै और वही समीपी सेवक व पार्षद है और उसी
कानाम सामीप्यमुक्ति वालाहै रामानुजसंप्रदायमें जो शब्द कैंकर्य्य बि-
ख्यातहैं वह तात्पर्य भगवत्सेवासेहै मूल उस पदके प्राप्तहोनेका यहहै
कि जितना काम प्रभात से अगिले प्रभाततक जिस अंग से यह मनुष्य
अपने तनके वास्ते करताहै वह सब भगवत्सेवाके सम्बन्ध बिचारकरके
करताहै अपने निमित्त तनक न समझै जैसे रसोई करना है तो चौकेका
देना और जलका ले आना और रसोईका बनाना भगवत्की रसोईका
बिचारहो अथवा घोड़ा मोललेनाहै तो भगवत्की सवारीके निमित्तमोल
ले अपने सवारीकोबिचारके नहीं और सवार होतेसमय यह ध्यानकरले
कि भगवत् घोड़ेपर सवार हैं और आप साईसकी भांति साथहै अथवा
कोई पोशाक बनावना है तो भगवत्के निमित्त हो अपने निमित्त बिचार
न करै व पहिले भगवत्को पहिनावै पीछे प्रसाद भगवत्का आप धारण
करै इसी प्रकार और सब काम रात दिन और अपने जाति धर्मके करै
औरजो त्यागीहोयतो जोकुछ वन और पहाड़में शरीरसे कर्महो सब भग-
वत् सेवाके निमित्त बिचारकरै अपने शरीर की मुख्यता सब उठादेवै
और यहसेवा भगवत् मूर्त्तिकीकरै या मानसी व भगवत्के ध्यानस्वरूप
में और ध्यानमें और विश्वासरूप अनूप भगवत् का ऐसाहो कि सातों

वह पोशाक अथवा कोईवस्तु अर्पण न कियाहुआ भगवत्ने अंगीकार व धारणकरलिया और प्रसाद मुझको कृपाकिया केवल बातही का जमा खरचनहो और हरएक काम में ऐसाविचार करता रहै और मालूमरहै कोई विधान भगवत् सेवा के सम्बन्धी आठवीं निष्ठा अर्थात् प्रतिमा व अर्चानिष्ठामें भी लिखेगये हैं कहांतक लिखाजावे मुख्य तात्पर्य्य यहहै कि जो अधिक न होसकै तो जितना सामा और काम निज अपने सुख आरामकेवास्ते यहमनुष्य करताहै वह सब भगवत् के वास्ते कियाकरै यद्यपि वह सबसामा व वस्तु सबमनुष्यहीके आराम व सुखकेवास्तेहो-जातेहैं परन्तु भाग्यके हीनताके कारण वश विचार व ध्यान भगवत्का नहींकरताहै हे श्रीकृष्णस्वामी इस भाग्यहीनमनको मैंने बहुतसमझाया यहांतक कि समझाते समझाते हारगया परंतु इसदुष्टको कुछगड़तानहीं अब मुझको अपने पुरुषार्थके व उपायका तनकभी भरोसानहींहै केवल आपकी कृपाके भरोसाकरके प्रार्थना करताहूं कि जिस प्रकारसे होसकै आपके चरणकमलों में मेरामन लगे और यह समाज आपके चरित्र का मेरे हृदयमें पूर्णमासीके चन्द्रमाकी भांति उदय बनारहै और सब रसिक जननको आनंद का देनेवाला होय श्रीब्रजचन्दमहाराज परमरसिक व रिझवार को समाचार पहुंचे कि बरसानेमें वृषभानुनन्दिनी ऐसी परम सुकुमारी और शोभायमान हैं कि तीनलोक में जिसकी उपमा को कोई नहीं अतिचाह दर्शन की हुई और यह भी सुना कि सांझी के समय में नित्यफूलोंके लेनेकेवास्ते फुलवाड़ियोंमें आयाकरतीहैं सो उसबागमें कि जिसकी शोभा से लज्जितहोकर नंदनवन आकाशमें जाकर छिपा आन पहुंचे और जैसे फूल सब खिलखुलके लटकरहेथे उसीप्रकार उसीबागके फूलोंमें सब अंगसे नयनहोकर बाट जोहि रहेथे कि अचानक उत्तरओर से एक सुपना व शोभाकीमूर्ति हज़ारों सखियोंके बीचमेंदेखी कि अपने मुखके प्रकाशसे सब बाग और सब दिशाओं को प्रकाशित व तड़प व बेसुधि बुधि करतीहुई आतीहैं आभूषण व पोशाक चमक दमककी ऐसी प्रकाशकी व सजावट व सुन्दरताईके सहित तनमें शोभितहै कि मानो शोभा व छबि व मनोहरता आदिने पोशाक व आभूषण के स्वरूपमें म-नमोहन महाराजके मनको मोहिलेनेकेवास्ते नवलकिशोरी महारानीजी

के अंग अंग व शरीर पर वासकिया है यद्यपि विश्वविमोहन महाराज रूपराशिने ब्रजनागरीजी के देखनेवास्ते इच्छा आगेचलनेकी की परंतु कुछ ऐसीछाया व तेजप्रियाजीको शोभाका मनपर छाया कि उसीजगह खड़ेरहे और चरणनउठा इतनेमें ब्रजचन्दनीजी चितचोर मनमोहनमहाराजके आवने की खबरकोपाय अपनी सखियों के साथहँसती व खेलती और फूलोंको तोड़ती हुई समीप आनि पहुंचीं देखा कि एक नवयौवन श्यामसुन्दर स्वरूपवाला आभूषण व पोशाक बहुमौल्यसे सजाहुआ ऐसे सजधज के साथहै कि जिसपर करोड़ों कामदेव और शृङ्गार निछावर होतेहैं यकटक नयनलगाये अति आसक्त देखने की होकर मनसे बेहोश और शोभाकेस्वादकमें छकाहुआ मतवारा खड़ाहै सो प्रेमकीझलक ब्रजचन्द्र शोभाधाम की ब्रजकिशोरी जीके चित्तपर कामकरगई थी इस हेतु वृषभानुकिशोरी जी देखतेही ब्रजकिशोर महाराज की शोभा को बेवश होकर मुखचन्द्रमाके चकोरहोगई और प्रिया प्रीतमके चार नयनहोकर देखने रूप व बहार परस्परके मग्नहुये पीछे वृषभानुकुमारी ने लज्जा कर सखियोंसे पूंछा कि यह नाजुक नवयौवन कौनहै और कहांका और किसकाहै कि निर्भय व ढीठबेपूंछे व बिनाआज्ञा हमारी फुलवारीमें नये नये फूलेफूलोंके लालचसे फिरताहै सखियोंने कि दोनोंके मनकीजानने वालीं होगईथीं देखनेवास्ते रूप मनमोहन व प्रियाप्रीतम के मिलनकी समाज व सुखलेनेवास्ते प्रियाजी ने जो बचनकहा उसमें भांति भांति के अर्थ प्रगटकर कै ऐसी ऐसीबातें परिहास व व्यंग्यकटाक्षलिये हँसी व ठट्ठ की आरम्भकी कि दोनोंओरकी चाह चौगुनीहोगई व नित्यके मिलने की रीतिबंधिगई इससमय सुंदरतापर किसीका यहबचनहै कि उसीदिन दोनोंने गांधर्वी बिवाहकरलिया जो इसबचनपर पुराणोंके प्रमाणसे एक बात निश्चय किआजाय तो परकीया भाववालोंको अंगीकार न होगा इसहेतु उसका निर्णय हरएक भाववालों के बिश्वासपर निश्चय करके छोड़दिया और प्रियाप्रीतम के रूपकावर्णन जो इससमाज में नहींकिया तो वह भाववालोंके मनकी रुचिपर रखदिया जैसी रुचि जिसकी होय तैसीहीछवि युगलकी मनमें बिचारिलेवैं ॥

———※———

लक्ष्मीजी की कथा ॥

लक्ष्मी जगतजननी भगवत् की परमप्रिया कि भगवत् की सेवा में मुख्यपदवी हैं कि एकक्षण भगवत् चरणसेवा से अलग नहींहोती यद्यपि लक्ष्मीजी और भगवत् में कुछ भेदनहीं नाममात्रको अलग दिखाई देतीहैं जिसप्रकार शब्द व अर्थ की वास्तवमें एकबात है परन्तु कहने मात्रको अलग अलगहैं और युगल उपासकोंने दोनोंको वादसे एकही सिद्धान्त करदिया परन्तु प्रगटमें भगवत्तो स्वामी और लक्ष्मीजी सेवा करनेवालीहैं इसहेतु शास्त्रोंने लक्ष्मीजीको सेवानिष्ठोंकी भक्तोंमें लिखा और दूसरेभक्तोंके सदृशलिखने किसी निजचरित्र लक्ष्मीजीकी ढूंढ़ीगई तो जानागया कि जितने चरित्र भगवत्केशास्त्र और पुराणोंमें लिखे हैं सो सबलक्ष्मीजी और भगवत्से मिश्रितहैं इसहेतु सबचरित्र जो वेद शास्त्रमेंलिखेहैं लक्ष्मीजीके चरित्र समझलेना चाहिये इसीप्रकार राधिकाजी व सीताजी व रुक्मिणीजी के चरित्रोंका वृत्तान्तहै तनक भेदनहीं परंतु उपासककी उपासना और विश्वासका भेदहै ॥

शेषजीकी कथा ॥

सेवा निष्ठा शेषनागजीपर समाप्तहुई सो सेवानिष्ठा की भूमिकामें प्रथमहीं लिखिआये अबलिखना दुबारा प्रयोजन नहीं जगतके उपकार व उद्धारमें ऐसीप्रीतिहै कि सदा भगवत्भजन और वेद श्रुतिका उपदेश करतेहैं औरकईशास्त्र नवीन रचनाकरके विख्यातकिये कि संसार समुद्र से पारउतरनेको दृढ़तर सेतुहोगये उनमें एक व्याकरणशास्त्र ऐसाहै कि जो वहनहोता तो वेद और शास्त्रोंका अर्थ मालूमनहोता और पातंजल शास्त्रऐसाहै कि जिनसेयोगमत और ज्ञानभक्तिके विचारमें आतेहैं उसी शास्त्रसेप्रवृत्तिपाई और साहित्यशास्त्र वहहै कि रसभेद व काव्यइत्यादि उसीके प्रभाव से प्रवर्त्तमानहुये जबकभी धर्मकी हानिहुई तो अवतार धारण करके परमपूर्ण भगवत्भक्ति का प्रवर्तमान किया और सर्वसिद्ध करदिये शेषजीके चरित्रोंको भगवत्चरित्र समझनाचाहिये और जिनकी महिमा वेद औरशास्त्रवर्णन नहींकरसके तो मेरे ऐसेमतिमन्द की क्या सामर्थ्य कि कुछअक्षर लिखसकूं और शेषजीका नाम धरनेहैं तो उनके चरित्रोंका अंत कौनपासकता है अर्थात् कौनवर्णन करसकता है ॥

१-विष्वक्सेन २-सुसेन ३-बल ४-प्रबल ५-जय ६-विजय ७-भद्र ८-सुभद्र ९-नन्द १०-सुनन्द ११-चण्ड १२-प्रचण्ड १३-कुमुद १४-कुमुदाक्ष १५-शील १६-सुशील॥

षोड़श द्वारपाल ये भगवत् के हैं सर्वकाल सेवा में वर्तमान रहते हैं व भगवत् के पार्षद असंख्य हैं पृथ्वी के रजकी गिनती कदाचित् कोई करसकै परन्तु भगवत् पार्षदों की गिनती नहीं हो सक्ती ये सोलह नामी हैं सो लिखेगये उनकी भगवत् सेवा में ऐसी प्रीतिदृढ़है कि कोई समय सिवाय भगवत् सेवा के दूसरा कामनहीं भगवत् स्वरूप को निरखि २ सेवा और रूपके आनन्द में मग्न रहते हैं कबहीं अलग नहीं होते आवागमन की रीतिसे पार व न्यारे हैं और सबको यह सामर्थ्य है कि करोड़ों ब्रह्माण्ड रचैं और पालन करैं और फिर नाशकरदें भगवत् पार्षद भगवत् रूप हैं इसमें सन्देह नहीं जो किसी को सन्देह हो कि जन्म मरण से बाहर हैं तो सनकादिकों के शापसे जय विजय पार्षदों के तीनतीन जन्म किस हेतु हुये उत्तर यह है कि जो मुक्त हैं सो मनुष्य तन धारण करके धरती पर रहैं तो उनके वास्ते आवागमनका निश्चय नहीं जैसे नारद व सनकादिक व वशिष्ठजी इत्यादि सिवाय उनके भगवत् भी प्रयोजन वास्ते शरीर धारण करते हैं जो भगवत् के निमित्त आवा गमन का निश्चय किया जाय तो पार्षदों के वास्ते भी होनेसकै सिवाय इसके ऐसा संयोग कभी नहीं हुआ कि जबउन पार्षदोंका जन्म हुआ तो भगवत् का अवतार न हुआ हो इसी से यह बात निश्चय हुई कि जिस प्रकार कोई राजा किसी देशको जाताहै तो पहिले अपना सामा डेरा व नौकरों को भेजदेता है इसी प्रकार जब कबहीं भगवत् का पूर्ण अवतार हुआ तो जो चरित्र करना बिचारा उनकी सामा को पहिलेही से भेज दिया सो यह बात बाराहीसंहिता और गर्गसंहिता से प्रकट है इसके सिवाय भगवत् अपनी इच्छा से इस संसार में अपना रूप प्रगट करलेता है इसी प्रकार जो पार्षदों ने भी प्रगट करलिया तो क्या सन्देह है और एक बात यह भी है कि भगवत् इच्छा सब पर प्रबल है जो वे केवल भगवत् इच्छा करके इस संसार में देह धारण करके भगवत् इच्छामें वर्त्ति के फिरउसी लोकमें चलेगये तो आवागमन

का निश्चय होसक्ताहै अब यहसंदेह उत्पन्नहुआ कि भगवत् सेवाके उपासक एकक्षणका वियोग नहीं सहिसक्के सो वन गमन के समय श्रीरघुनन्दन स्वामी ने लक्ष्मण महाराज को अयोध्याजी में रहने को आज्ञा दी सो वे सेवा के उपासकथे भगवत् आज्ञा को अङ्गीकार न किया साथगये सो दोनों पार्षद जय विजय को भगवत् सेवा से वियोग कैसे सहागया सो यह शङ्का ठीक है उत्तर इसका इतनाहीं बहुतहै कि उन्होंने जगत्का उपकार विचार करके सेवा में वियोग अङ्गीकार किया यह कि भगवत् चरित्र फैलेंगे जिस को गाय गायके कोटान कोटि जीवभगवत् की सेवा में आवेंगे तो इससे अच्छा और क्याहै सो यह विचार उनका सिद्धहुआ कि भगवत्भक्तों के सिवाय कितनेराक्षस और दैत्य और परम पातकी भगवत् को प्राप्त हुये॥

हनुमानजीकी कथा॥

चरित्र और कथा हनुमानजीके और भक्तिभाव ऐसेपवित्र हैं कि आप रघुनन्दन स्वामी सुनकर प्रसन्नहोते हैं श्रीरघुनन्दन स्वामीके चरित्र जो संसार समुद्र उतरने के वास्ते दृढ़ जहाज़ हैं हनुमान जी के चरित्र उन जहाज़ों के वास्ते बादवान के सदृश हुये महिमा हनुमान जी की किससे होसक्ती है कि सारा ब्रह्माण्ड उनकीसेवा को धन्य धन्य कहता है सीता महारानी जगज्जननी को तो भगवत्का सन्देश और रावण के वधहोने की भविष्य बात सुनाकर और रघुनन्दन स्वामी के हजूर हाज़िर होकरके समाचार सुनाये लक्ष्मण के वास्ते संजीवनीलाये मृत्युसे बचाया व भरत शत्रुघ्नजी व अयोध्या बासियों को भगवत् के आवनेका समाचार सुनाकर उपकारकिया रावणकावध कराकर सबदेवताओं को आनन्द देकर धन्य धन्य कहाया भगवत्चरित्र संसारमें विख्यात करके सब संसारी जीवों को परमपदका अधिकारी किया अर्थयह कि ऐसा कोईनहीं कि जिसके वास्ते उपकार हनुमानजी ने न कियाहो और बहुतप्रकार की विद्या में हनुमानजी का आचार्य्यहोना शास्त्रों में लिखा है परन्तु गानविद्या और [illegible]विद्या और शास्त्रविद्या और व्याकरण और साहित्यशास्त्र में विशेष करके आचार्य्यपन हनुमानजी को है शिवजी के अवतार हैं और केवल रघुनन्दन स्वामी की सेवा के निमित्त अवतारलिया यद्यपि सबनिष्ठाओं

में उनका बिश्वास दृढ़ है परन्तु सेवा निष्ठा में इस हेतु लिखा कि आप भगवत् ने उनकीसेवा को बड़ाईदी और सर्व्वकाल सेवा में प्राप्तरहतेहैं भगवत्नाम में ऐसाविश्वास हनुमानजी को है किजब श्रीरघुनन्दनस्वामी लङ्काजीतकर अयोध्याजी में आये तो बिभीषण एक मणि की माला कि जैसी कहीं सारेसंसार में नहीं है समुद्र से मांग के भगवत्भेंट को लाया और जिस समय रघुनन्दन महाराज राजसिंहासन पर विराजमानहुये तो वहमाला भेंटकी देवता व राजा आदि जो वहांथे सबको उसके मिलने की चाहहुई भगवत् अन्तर्य्यामी ने बिचारकिया कि मालाएक और इस के चाहने वाले अनेक तो ऐसे किसी को देना चाहिये कि जिसको चाहना न होय सो हनुमानजीको पहिनाय दी हनुमानजी ने जब उस मालाको देखा तो बिचारकिया कि प्रकट देखनेमें कोईबात भगवत्भक्ति की इस माला में दिखाई नहीं पड़ती क्या जाने भीतर कोई बात होगी इसहेतु एकनग को तोड़ा और उस को देखा जब उसमें भगवत्नाम न पाया तो दूसरेदाने को तोड़ा और नाम भगवत्का न देखा उसको भी डालदिया इसीप्रकार बहुत नग तोड़डाले जो दाने तोड़तेथे चाहनेवालों का मन टूटताथा और मनहींमन में रिस करके कहते थे कि भगवत् ने कैसे बे शहूर को यह माला अनमोल दी कि जो मोल व परख उस के जवाहिरातों की नहीं जानता नितान्त एक किसी से न रहागया और हनुमानजी से पूछा कि किसवास्ते ऐसी दुर्लभमणि को तोड़के डालतेहो हनुमानजी ने कहा कि इसमणि के भीतर रामनाम देखताहूं उसनेकहा कि महाराज कहीं ऐसीबस्तुओं के भीतर रामनाम होताहै हनुमान जी ने कहा कि जो रामनाम इसकेभीतर नहीं तो किसकामकी है उसनेकहा कि जो आपके बिश्वसाका ऐसा वृत्तान्त है तो आपके भीतरभी रामनाम होनाचाहिये हनुमानजी ने कहा कि सत्यकरके होनाचाहिये यहकहकर चर्म्म अपने छातीका उखाड़कर दिखाया तो सब रोमरोम में राम नाम लिखाथा सब किसी को हनुमानजी की भक्ति और बिश्वास का निश्चय हुआ गीताशास्त्र जो महाभारत में भगवत् ने अर्ज्जुन को उपदेश किया तो हनुमानजी ने भी अर्ज्जुन के रथपर ध्वजा में बिराजमानथे सुना अर्ज्जुन को उपदेश किया सो एक अक्षर स्मरण न रहा भगवत् ने टीका

करनेकीआज्ञा दी सो हनुमानजी ने तिलक गीताजीका भगवत् आज्ञानुसार रचनाकिया और गीताजी की प्रवृत्ति को जगत्‌में किया यह बात गीता माहात्म्य से प्रकट है और महाभारतके समय यद्यपि भगवत् आप सहायक अर्जुनके थे परन्तु हनुमानजीका भी ऐसाप्रतापहुआ कि आप भगवत् ने बड़ाई को किया और महाभारत से सब बात विशेष करके प्रकटहै॥

जगत्‌सिंहकीकथा॥

राजा जगत्‌सिंह बेटे राजे आनन्दसिंह के भगवत् भक्ति और साधु सेवा के मुल्क में भी राजों के राजाहुये भगवत्‌सेवा में ऐसी सच्ची प्रीति उनकी थी कि कबहीं उस में डगमग नहीं होती थी जितना प्रकट ऐश्वर्य व धनअसंख्य था तैसेहीऐश्वर्य भक्तिकी भी मनमें रखतेथे जिन्होंने लक्ष्मी नारायणको अपनी सेवासे वशीभूत करलिया और ऐसा निर्मल यश जगतमें फैलाया कि असंख्य विमुख लोग भगवद्भक्त होगये प्रताप ऐसाथा कि जिसप्रकार सूर्यके उदय होने से अंधकार ध्वस्त होजाता है तिसप्रकार शत्रु सबनाश होगये व आज्ञा दृढ़ऐसीथीकि प्रजाको आनन्द व धन संपत्तिकी वृद्धिहो और किसीको पराक्रम अवज्ञाकी नहोय लक्ष्मी नारायणकी सेवाकी यहप्रीतिथी कि जो कबहीं राजधानी से बाहरजाते तो भगवत्‌की पालकी सबसे पहिले चलती और आप किंकरके सदृश पीछे होते व जब कबहीं संयोग शत्रुसे युद्धका पड़ता तो मालिक व अधिपति लड़ाई और सेनाके भगवत् होते और आप हरवलके सदृश फ़ौजके कामकरते जितनी टहल प्रभातसे अगले प्रभाततक भगवत्‌सेवा कीहोती सब अपने हाथसे करते अन्त है कि पानी भगवत् सेवाके वास्ते अपने शिरपर धरकेलाते शाहजहांनाबाद में राजाजगत्‌सिंह व दूसरे राजालोग जैसे यशवंतसिंह उदयपुरके व जयसिंह जयपुरके टिकैत थे सबने यह हाल भक्ति व सेवाका सुना बहुत प्रसन्न और अपनी ओर विचार करके अति लज्जित हुये एकदिन राजाजयसिंह व यशवंतसिंह को राजाजगत्‌सिंह के दर्शनकी अभिलाष जल लेआने के समय की हुई सो दोतीन घड़ी रातरहे पर शाह यमुना बैठे औरदर्शन समागमें दर्शन हुआकि सौ दोसौ सिपाहीवीर हथियारबंद सैकरों खिदमतगार व गुलामों सहित साथहैं और आपराजा अपनेशिर पर भगवत् सेवाका जल लानेकेकलं

शामें छिपेहुये जिह्वा पर नाम और मनमें भगवत् स्वरूप तिलक और मालाधारण किये हुयेनांगे पांयन जातेथे दोनोंराजोंको धैर्य न रहाऔर साष्टांग दण्डवत करके चरणोंमें पड़े फिरहाथ जोड़कर विनय कियाकि जीवनेका सुख व फल भगवत् ने तुझीको कृपाकरके दिया क्याहेतु कि भक्तिका सुख व राजतो संसारमें पाया और परमधाम और भगवत्का स्वरूप उसलोक में मिलैगा राजा जगतसिंह राजा जयसिंहकी ओर-देखकर बोलेकि मैं किसी योग्यनहीं हूं मुझसे क्या भगवत् सेवा और टहल हो सक्तीहै तुम्हारी बहिन अलबत्ता भगवत् भक्त है उसकेसत्संग और कृपासेथोड़ीथोड़ी मेरे चित्तकी वृत्तिभी भगवत् सेवाकी ओर लग-ने लगी है राजाजयसिंह अपनी बहिन दीप कुवँरिकी भक्ति व प्रतापको समझकर बहुत प्रसन्न हुये और किसीकारण से क्रोधथा और जागीर अपनी बहिन की ज़प्त करली थी सो छोड़दी और द्रव्य वस्त्रादिक भेज कर अपने अपराध को क्षमा कराया दीप कुवँरि ने क्षमा किया और अपने भाईको भगवत् भक्ति और साधु सेवाका उपदेश लिख भेजा हे भगवन् श्रीकृष्णस्वामी कृपासिंधु महाराज इस पाप पुंज और मतिमंद परभी कुछ ऐसी दयादृष्टि होय कि अहंकार आदिक नाना दुर्मति को छोड़कर आपके चरण शरण रहै ॥

कुवँरकिशोर की कथा ॥

कुवँरकिशोर राजाखेमाल के पोते भगवत्भक्तिके बड़े दृढ़ औरप्रेम की मूर्ति बुद्धिमान आनन्द दर्शन उदार मीठेबचन के बोलनेवाले हुये भगवत्भक्ति को जगत् में फैलाकर सब छोटे व बड़ोंको अपनी अच्छी प्रकृतिके अधीन किया अर्थात् सब कोई धन्य धन्य कहताथा अवस्था थोड़ीथी परंतुभगवद्भक्तिमें जवानों और वृद्धोंसेभीअधिक होगये अपने पिता पितामहके शिक्षावचन को ऐसा निबाहा कि मरण पर्य्यन्त उसमें भेद न पड़ा अर्थात् जिस समय राजाखेमाल उनका पितामह देहत्याग करनेलगातो आंखोंमें जलभरके बड़े शोचयुक्त हुआ बेटोंने विनयकिया कि खज़ाना व राज्य व समाज इत्यादि सबकुछ भगवत्का दिया है जो चाहें सो दानकरें शोचकरनेकी बात क्याहै राजानेकहा कि उनबातों में से किसी बातका शोचनहींहै कि जेकाम सुयश व दान पुण्यका करना

उचितथा सो सब करलिया परन्तु दोबातका अफ़सोस है एक यह कि कबहीं भगवत्सेवाके वास्ते कलशजलका अपने शिरपर लेआकर सेवा न की दूसरा यह कि नूपुर बांधकर भगवत् के सामने नृत्य न किया राजाके बेटेलोग सुनकर चुप होरहे परन्तु कुवँरकिशोर राजाके पोतेने खड़ेहोकर हाथ जोड़के विनयकिया कि इस दासको आज्ञा हो जबतक जीऊंगा तबतक आज्ञा पालन करूंगा कबहीं व्यवधान न पड़ैगा राजा ने उसी दशामें अति हर्ष व आनंदसे उठकर कुवँरकिशोर को छातीसे लगाया और दोनोंकी सेवाकी आज्ञादेकर परमधामकी राहली कुवँर-किशोरने उस राजाकीआज्ञाको ऐसा निबाहा कि लिखने व बयानकरने की किसीको सामर्थ्य नहीं तन मन व सब इन्द्री भगवत् में लगादिये भगवत्भक्तों ने सारे संसारमें यश वर्णन किया॥

नरहरियानंद की कथा॥

नरहरियानंदजी ऐसे परमभक्त हुये कि दिन रात सिवाय भगवत् सेवा के कुछ काम न था और सदा अनुरागसे भगवतसेवा सामाकी तैयारी में रहतेथे एक दिन भगवत्रसोईका चौका इत्यादि सब बनाकर भगवत्के हेतु रसोई करनेलगे घरमें लकड़ी न मिली और पानी बड़े धूम धामसे बरसताथा इसकारण बाज़ारमें भी लकड़ी न मिली औरभगवत् सेवा सबपर सर्वोपरि है और सब देवताभी इसबातमें एक मत हैं इस हेतु रसोईमें विलम्ब उचित न समझकर दुर्गाका मकान उनकेनिकटथा गये और छत उतारने लगे दुर्गा महारानी इस भगवत् सेवा के दृढ़ विश्वास से प्रसन्न हुईं और नरहरियानन्द जी से कहा कि स्थान को तोड़ो फोड़ोमत लकड़ी तुम्हारेघर पहुंचतीरहेंगी नरहरियानंद जी फिर आये और प्रयोजन भर को नित्य लकड़ी पहुंचती रही एक स्त्री पड़ोस की ने इस भेदको जाना और अपनेपुरुष से कहा कि नरहरियानन्दजी ने दुर्गाको डरपाकर नित्य लकड़ी का पहुंचाना दुर्गासे ठहरालिया जो तुम भी ऐसाही करो तो नित्य लकड़ी बिना परिश्रम आती रहे यह निर्बुद्धि दुर्गाके स्थानपर पहुंचा और जैसे फावड़ा छतपर मारा कि दुर्गा महारानी ने त्रिशूलसे व पांव ऊपर करके उसको लटकादिया तब म-रनेलगा तो पुकारा कि हे दुर्गामहारानी हे माता अबकी माफ़कीजे

फिर ऐसा अपराध न होगा दुर्गानेकहा कि जो मेरेबदलै नरहरियानंद के घर लड़की पहुंचाआकरै तो प्राणतेरा बचसक्ताहै नहीं तो इसी घड़ी प्राणतेरा लेतीहूं लाचार होकर दुर्गाकी आज्ञाको अंगीकार किया और दुर्गाके शिरसे बेगारछूटी भगवत्सेवा की महिमा जो कुछ कोई वर्णन करै सो थोड़ीहै शेष और शारदासे भी वर्णन नहींहोसक्तीहै ॥

प्रेमनिधि की कथा ॥

प्रेमनिधिजी जातिके ब्राह्मण रहनेवाले आगरेके अन्तर व बाहर शुद्ध व सुंदर मधुरवचन बोलनेवाले नवधाभक्ति से भक्तोंको आनन्दके देने वालेगृहमें रहकरके गृहस्थीकी किसी कारमें बद्धनहीं शुद्धस्वभाव उदार भगवत्भक्तोंके सत्संगमें नियमवालेऔर दयालुहुये वास्तवकरके प्रेमनिधिथे सदा चारघड़ी रातरहते उठकर भगवत्सेवा में लगते और भगवत् सेवाके निमित्त यमुना जल अपने शिरपर रखकर लेआते एक बेर वर्षा ऋतुमें कहीं कहीं बहुतकीच राहमेंथी चिन्तामें हुये कि दिन ऊगे स्पर्श व भीड़ लोगों की राहमें होगी कोईनीच से जल छूजायगा व रातकोजायँतो कहीं अँधेरीमें गिर न पड़ें व घट फूटजाय नितांत स्पर्श नीचका अयोग्यबिचारके पानीबरसतेमें उसीअँधेरीमें कलशशिरपररख कर चले द्वारसेबाहर जैसे चरण दिया कि भक्तवत्सल करुणाकर महाराज उनके मनकी सेवा से प्रसन्न होकर बारह वर्षके लड़के के रूपसे मशाल लेकर प्रेमनिधिजीके आगे आगे होलिये प्रेमनिधिजीने जो रूप माधुरी उसमशालची मनमोहन हरारंग आँखेंअरसीली घुंघवारी अलकें लालचीराबांधेहुये कमर मशालचियों की नाईं कसेहुये हाथमें मशाल देखी तो भीतर व बाहर दोनों प्रकाशित हुये आसक्त और मोहित होगये यद्यपि यह विचार लिया कि अपने स्वामीको पहुंचाकर अपने घर आता है परंतु उसके देखने की आशा करके जिधर को वह चला साथ होलिये और यमुनाजीपर पहुंचे प्रेमनिधिजी स्नान कर यमुना जल का कलशाभर और शिरपर रखकरचले घरआये कलशा जलका भगवत् मन्दिरमें रखकर तुरन्त उस मशालची को ढूंढ़तेरहे कहीं पता न लगा जानिगये कि ऐसे रूपवाला सिवाय उस ब्रजकिशोर चित्तचोर के और कौनहै कि एक निगाह में अपना दास करलेवै और उस परम दयालु

करुणाकरसे ऐसा और कौन स्वामीहै कि सेवक के थोड़ेसे परिश्रम के हेतु अपनी ईश्वरताको कि जिसकावेद और ब्रह्मा भी पार नहींपाते छोड़ कर तुरन्त आनपहुंचे यह समझकर भगवत् सेवा और भजन में लगे पहिलेकथा फिर जब भगवत् सेवा से छुट्टीपाते तो भगवत् चरित्रों का कीर्तन कियाकरते और बड़ेप्रेमसे कथा कहतेथे तो श्रोता बहुत आते थे कथाकेपीछे गान और कीर्तनका समाज होता था और सब भगवत् के भाव और भक्ति में पूर्णहोते थे दुष्ट और पापात्मा लोगों को यहबात अच्छी न लगतीथी बादशाहसे जनाया और पिशुनताकी कि प्रेमनिधि नगरकी स्त्रियोंको कथाके मिस अपने घरपर जमाकरताहै कि यहबात कारण अनर्थकी है बादशाह ने चोपदारभेजा और उसने चलनेके वास्ते जल्दीकी उससमय प्रेमनिधिजी भगवत्के निमित्त जललियेजातेथे चोपदारके जल्दीकरनेसे जलकापिलाना भ्रमहोगया बादशाहके संमुख गये बादशाहने वृत्तान्तपूछा प्रेमनिधिजीने जोसत्यबातथी कहदी कि भगवत् कथाका कीर्तन किया करताहूं उससमयकोई स्त्रियांआवें अथवा पुरुष रोक नहींहोसक्ती कि यह सत्पुरुषोंकाआचरण नहींहै परंतु स्त्रियोंको बुरीदृष्टि से देखना पापबड़ाहोताहै बादशाहने कहा कि तुम्हारेटोलेके लोगोंनेकुछ खोटीबातें कहीहैंसो हमइसका वास्तव वृत्तान्त समझें बूझेंगे यहकहकर प्रेमनिधि को नज़रबन्द किया और महलमें चलागया रातको जबसोया तब भगवत्ने उसके इष्टदेवके रूपसे स्वप्न में कहा कि हमको जलकी तृषालगीहै बादशाहने कहाकिजलके घड़ेभरेधरेहैं पानकरिये इसउत्तर से भगवत्को रिस आयगई और कहाकि तेरेघड़े का पानी कौनपीता है और एकलातमारी कि हमारीबात नहीं सुनता बादशाहने कहाजिसको आज्ञाहो पानीले आवै कहा कि हमारा जो पानी पिलाने वालाहै उसको तूने क़ैद करलिया पानी कौनपिलावै बादशाहकी आंखें खुलगईं और बड़ी मर्यादसे प्रेमनिधिजी को बुलाया और चरणों में शीश रख कर अपराध क्षमाकराया और कहाकि आपजल्दजावें जो तृषाकी तृषा को भी दूरकरनेवालाहै उसको आपके बिना तृषालगी है और माल मुलक जो चाहिये सो लीजिये भगवत् भक्तों को सिवाय भगवत् के अर्पित पदार्थोंकी चाह नहीं रक्खी कुछ न लिया सिद्धहुये बादशाह ने

मशालसाथ देकर उनकेघर पहुंचादिया उसीक्षण प्रेमनिधिजी ने जल भगवत्को अर्पणकिया कि तृषा मिटगई ॥

जयमल्ल की कथा ॥

जयमल्लराजामीरथ के परमभगवत्भक्तहुये कोई कोई लोग उनको मीराबाईजीका छोटाभाई कहतेहैं दशघड़ी दिनचढ़ेतक भगवत्की सेवा पूजामें तत्पररहतेथे और यहआज्ञाथी कि सेवाकेसमय कोईमनुष्य पास न आवै नहीं तो वधकेयोग्यहोगा हेतु यह कि चित्तकीवृत्ति दूसरीओर न जाय कोईसजाती वैरीको यहसमाचार पहुंचे और जो समय राजाकी सेवा पूजनका था उसीसमय बहुत सेनालेकर चढ़िआया जबउसके चढ़ि आनेका शोरगुल नगरमें पहुंचा तो राजाके डरसे कोईराजा से कहनेको नहींगया परंतु राजाकी माताने जाकर सबवृत्तान्तकहा राजा ने उत्तर दिया कि आपसुचितरहें भगवत् सबअच्छीकरेंगे और आपसेवामें साव-धान बनेरहें शत्रुसूदन महाराज कि सर्वकाल अपने भक्तों के सहायके हेतु शस्त्रलिये व कमर बांधेरहतेहैं राजाके घोड़ेपर चढ़िके शत्रुकीसेना पर पहुंचे और एकपलमें सबसेनाको ध्वंसकरदिया राजा जयमल भग-वत्सेवा से छुटकारा करके बाहरआये तो शत्रुसे युद्धकरने की तैयारी मेंलगे अपने निज सवारीके घोड़ेको पसीनेमेंभरा देखकर बड़ेआश्चर्य्य में हुये परन्तु जल्दी सवारीके कारणसे कुछसुधि न किया दूसरे घोड़ेपर सवारहोकर सेनालेकर शत्रुकेसमुख पहुंचे पहिले अपने शत्रुको देखाकि धरतीपर पड़ाहै और विकलहै उसने राजाजयमलसे पूछा कि तुम्हारे लश्कर में वहश्याम स्वरूप परमअनूप सिपाही कौन है कि जिसने अकेले आयकरमेरी सारीफौजको मारडाला और मेरामन अपने साथ लेगया राजाजयमल ने उत्तर दिया कि भाई तेरेभागकी बड़ाई कौन कह सक्ताहै कि मुझको वहसिपाही कबहीं स्वप्नमेंभी दिखाई न दिया और तुझको दर्शनमिला उसवैरीने भी सबचरित्र भगवत्के जानकर निश्चय किया और भगवत्भक्ति अंगीकार करके कृतार्थ होगया राजा जयमल को ग्रीष्मऋतुमें यह मनमेंआया कि अत्यन्त बेविश्वासी व ढिठाईमेरी है कि भगवत् तो नीचेमन्दिर में कि जहांपवन का तनक प्रवेश नहींहोता तहां शयनकरैं और हम अटारीपर हवादार मकानोंमें सोवैं इसहेतु एक

बँगला अतिविचित्र तिमहला तैयारकरवाया और उसको फर्श व परदे व छत व चांदनी इत्यादि कमख़ाब व स्वर्णतारी का व झालर मुकेश व मोतियोंसे सजाया एकपलंग सोने व चांदीका तोशक व चादर व तकिया आदिसे सजिके उसमें बिछाया और सबसामान रातके शयन समय का जैसे मिठाई व पानदान व अतरदान व उगालदान इत्यादि रखकर भगवत् को मानसी ध्यानसे उसमें शयनकराया व आप हथियार लेकर चौकी और पहरेकेवास्ते बँगलेके चारोंओर फिरतेरहे और ध्यान भगवत् रूपके आनन्दमें भरतेरहे नित बँगलेकी सजावट और सबसेवा अपने हाथ कियाकरते और किसी सेवक व दासको उसकाम व सेवामें कुछ करने नहींदेते भगवत् ने अत्यन्तप्रीति व स्नेह राजाका सेवामेंदेखा तो अपने वचनके अनुसार जो गीताजीमें लिखाहै कि जो मेरेभक्त जिसप्रकार मुझको सेवनकरतेहैं उसीप्रकार मैं उनको अंगीकार करताहूं उस सेवा को ऐसा अंगीकारकिया कि प्रतिदिन प्रभातको चिन्ह खरचहोने मिठाई व पान और अतर और पानीका और कुन्तवन करनेका निर्देश और उगालदानमें उगाल होनेकाभाव सब राजाको अच्छेप्रकार मालूम हुआ करता और राजा उस भगवत् कृपाके परम प्रेमके समुद्रमें गोता लगाया करते कुछदिन जब इसीप्रकार बीते और महलमें जाना न हुआ तो रानीके मनमनमें आया कि राजा न मालूम किसी स्त्रीको उसबँगले में बुलाताहै सोभेदके बूझनेके हेतु ऊपर चढ़कर जोबँगलेको देखातोएक लड़का किशोर परम शोभायमानश्यामसुन्दरस्वरूपपरपीताम्बर पहिनेहुये शयनमेंपायारानीआधीनहुईऔरप्रभातकोयहवृत्तान्तराजासेकहाराजाने यद्यपि इसबातसे रानीपर कुछरिसकिया परन्तुभीतरमनमें यहविचार किया कि परम बड़भागी यहस्त्रीहै कि उसको भगवत् का दर्शनहुआ॥

आसकरन की कथा॥

आसकरन राजा नरवरगढ़ के महाराजा भीमसिंह के बेटे जाति के कछवाहे स्वामी कील्हदेवजीके चेले धर्मात्मा और परम भागवत् गुणवान् [illegible] मधुर बोलने वाले शूर उदार [illegible] [illegible] श्रीरामजी [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] श्रीकृष्णजी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

सेवा पूजन अत्यन्तप्रेम से करतेथे और द्वारपालों को आज्ञाथी कि कोई मनुष्य उससमय साम्हने न आनेपावै और न किसीमामिले का संदेश कोई संयोगबश बादशाहकी सवारीआई प्रभातको किसी कार्य्य शीघ्रके वास्ते बुलाया बादशाही सिपाही जोआये तो किसीने उनकी आज्ञाका पालन न किया और न राजातक वृत्तान्त पहुंचाया उनसिपाही लोगोंने वृत्तान्त सबबादशाह के हजूरमें पहुंचाया बादशाहने क्रोध करके फौज भेजी परंतु तबभी राजातककोई न गया और न कुछभय फौजके आनेका हुआ सेनापति ने बादशाहको लिखभेजा कि फौजके आनेपर भी कोई राजातक वृत्तान्त नहींपहुंचता जो आज्ञाहोय तो युद्ध प्रारम्भहोय बादशाह यहबात सबसुनकर आपआया और दरवानोंने केवल एक बादशाहको भीतर जानदिया बादशाहने देखा कि आशकरनजी सेवा पूजन करके भगवत् के साम्हने दण्डवत् करते हैं बादशाह देरतक खड़ारहा नितान्त तरवार राजाके पावमेंमारी कि एड़ीकटगई परन्तु राजाने तब भी कुछ असावधानी न की और न घावका भानहुआ क्योंकि मन भगवत्रूप में तदाकार होरहा था और जिसओर मन न होय उसओर का दुःख सुख कब व्यापित होताहै सो भगवत्का बचनहै कि जिनलोगोंका मनमेरी कथा और चरित्रोंमें नहीं लगा दुःखसुख उनको मालूमहोतेहैं राजा दण्डवत्करने पीछे मन्दिरके द्वारपर चिलमन डारकर बाहरआये और बादशाहको देखकर रीतिकेअनुसार मिलनेकी जो बादशाही मर्य्याद है सो सबकिया बादशाह यह वृत्तांत सबदेखकर और राजाके बिश्वास और सांचीप्रीति पर बहुत प्रसन्नहुआ और लज्जितहो अपने अपराधको क्षमाकराया और मर्य्यादराजाकी बड़ीकी सब राजोंकाशिरोमणि समझा राजा जब परमधामकोगये बादशाहने सुनकर बड़ा शोचकिया और श्री मोहनजीके मन्दिरमें जो राजा सेवनकरता था तिसकी सेवा व रागभोग के वास्ते कईगांव जागीरके बन्धान करदिये कि अबतक माफ़है ॥

निष्ठा अठारहवीं ॥

जिसमें दास्य निष्ठाकी महिमा और वर्णन सोरहभक्तों की कथाका है ॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरण कमलों की पूर्णचन्द्ररेखा को प्रणाम करके

ऋषभदेव अवतारको दण्डवत् करताहूं कि अयोध्यापुरीमें वह अवतार धारणकरके ज्ञान और वैराग्यकी अन्तिमदशा को संसारमें प्रकटकिया महिमा दास्यनिष्ठा की कौन वर्णन करसक्ताहै इसमें कुछ सन्देह नहीं कि इससंसार से उद्धारकेहेतु दास्यनिष्ठा से अधिक और कोई अवलंब नहीं यद्यपि भगवत् प्राप्तिकेहेतु दूसरीनिष्ठाभी बहुतहैं परंतु परिणाम सबनिष्ठाओंका इसीनिष्ठामें पहुंचजाता है जैसे सखा व वात्सल्यहै और उसमें दास्यभाव प्रकट मुख्यनहीं परंतु जो मूलअभिप्रायपर दृष्टिजाती है तो वास्तवमें जड़ उनकेनिष्ठाकी दास्यभावसे सम्बन्ध रखतीहै और सखा व वात्सल्यभाव केवल मनकीरुचिसे चित्तकेलगने वास्तेहैं उनके मंत्रोंसे साक्षात् अर्थ शरणहोने और दास्यभावके निकलतेहैं तो जब कि उन दोनोंनिष्ठावालों का यह वृत्तांतहो तो और निष्ठा एकअंग व मिश्रित दास्यनिष्ठाकी आपहीहोगई और हैं ब्रह्मस्तुति में भागवत् में लिखाहै कि तबहीतक द्वैत व सुखदुःख इसमनुष्यकी बुद्धिको चुरानेवाले हैं और तबहींतक गृह कारागारहै और तबहींतक मोह जो अज्ञान सो पांवकीबेड़ीहै कि जबतक भगवत्कादास नहींहोता दूसरावचन भागवत्काहै कि जिसभगवत् के केवल नामलेने और सुननेसे निर्मल होजातेहैं उसके दासहोनेसे कौनपदवी उत्तमनहीं मिलसक्तीहै इसप्रकार के हजारोंवचन सबपुराण इत्यादिकोंमें विख्यात व प्रसिद्धहैं और यह निष्ठा ऐसी सहज समवायी को अंगीकार व प्राप्तहै कि जिसकिसी से पूछाजाताहै तो अपने आपको ईश्वरदास और ईश्वरको स्वामी और मालिक अपना वर्णन करदेता है और यह बोलना कहना सब छोटे बड़ों के मुख से स्वाभाविक है कोई कोई उपासकों ने जो शरणागती को दास्य निष्ठा से अलग वर्णन किया तो कारण यह है कि दास तो दास्यता व सेवा टहल के करने में विवश व पराधीनहै कि सर्वावस्था व सबदशा में उसको अपने स्वामी की सेवा करना उचित व मुख्यतरहै व शरणागत अर्थात् शरण में आयाहुआ यद्यपि दास से भी अधिक सेवा टहल करता है परन्तु दास के सदृश उसपर आवश्यक सिद्धान्त नहीं कि सेवा टहल करै जो प्रसिद्ध देखने और सुनने में आया है कि जो दास किसी का होता है जो वह अपने स्वामी की नियत सेवा टहल न करै तो

निमकहरामों में गिनाजाता है और स्वामीभी प्रसन्न नहीं रहताहै और जो शरणा में आता है उसके ऊपर कोई सेवा टहल नियत नहीं परन्तु वह दासों की भांति दास्यता की टहल व सेवा भी करता है तो अनुक्षण सान्हने रहने के हेतु और सेवा का काम भी शीघ्र होजाता है पद्धति दास्य निष्ठा की जगह जगह लिखी हैं और गो तुलसीदास जी ने भी अयोध्याकाण्ड रामायण में दास निष्ठा का भाव और रीति अच्छी कुछ वर्णन करी है उसका सारांश तात्पर्य्य यह है कि दोनों लोक का लोभ अर्थात् अर्थ धर्म्म काम मोक्ष को मनसे दूरकरके केवल अपनेस्वामीकी सेवा व प्रसन्नता को सब सिद्धान्तोंपर सिद्धान्त तर समझै और अपने आपको सबप्रकार परबश व आधीन अपनेस्वामी के जानकर सुखपाय के हर्षित दुखपायकै दुःखित न होय और सुखको दियाहुआ अपनेस्वामी का और दुख को अपने जन्मान्तरीय पापों का फल समझतारहै और बिशेष करके जगत् की बोलन यह है कि जो कोईबात दुःख व हानि की अय्यजाती है तो यहकहते हैं कि भगवत् की इच्छा व आज्ञा ऐसीही थी सो जानेरहो कि अपने दासके दुख व हानि के लिये भगवत्की आज्ञा कदापि नहींहोती भगवत् हरघड़ी अपनेदासों के वास्ते अच्छाही करता है नहीं तो बिचार करना चाहिये कि उस मालिक की रिस और कोप करोड़ों ब्रह्माण्डोंके ब्रह्मा और कालयम इत्यादि नहींसहसके मनुष्य अपराधों से भरा क्या सहिसकैगा इसहेतु कदापि भूलि कै व स्वप्न में भी किसी दुःख व उत्पात के आने से किसी को यह मन में न हो कि भगवत्की इच्छासे हुआ सेवा टहल जो दास को करनाचाहिये अर्थात् आठवीं निष्ठा व सत्रहवींनिष्ठा में लिखीहैं उन सेवाओंका करना उचित व योग्यहै सेवा मानसीहोय अथवा साक्षात् श्रीविग्रहकी तो जबतकसेवा सब न करै तबतक निष्ठा दास्यता की नहीं होसकती काहेसे कि दासका काम सेवा करनेका है सैर व सपाटा करने फिरनेका नहीं जबउस सेवा से छुट्टीपावै तब अपनेस्वामीके संमुखबिनय व प्रार्त्थना व स्तुति अपराध क्षमापन कियाकरै और चरित्र व गुण शोचिसमझके उसआनन्दमें मग्न रहै उपासकोंने इसनिष्ठाको पांचरससे एकरसलिखाहै सो रसकेबिचार के अनुसार भगवत् सच्चिदानन्द घन पूर्णब्रह्म परमात्मा करुणाकर

दीनबन्धु दीनदयाल भक्तवत्सल शरणागत पालक इस रस का विषया
लम्बनहैं और भगवद्भक्त जो पहिले होगये या अबहैं या आगे होंगे
हैं आलम्बनउद्दीपन तिलक व माला व तुलसी और शङ्खोंका चिन्ह धारण
करना चरित्रोंका श्रवण कीर्त्तन और शास्त्रोंके अनुकूल वर्त्तना और भग-
वत् सेवा और टहल की सामा इकट्ठी करनी व्रत एकादशी इत्यादि व
सत्सङ्ग व भगवत् उत्साह यहसब विभाव व अनुभाव अर्थात् प्रथम व
द्वितीय सामग्रीहैं व आठप्रकारके सात्विक जो ग्रन्थके आरम्भमें लिखे
हैं अर्थात् तीसरी सामग्री सब इस रस में अपनी प्रवृत्ति करते हैं व
चौथीसामग्री अर्थात् तेंतीस व्यभिचारोंकी दश दशा जो वात्सल्यनिष्ठा
की भूमिकामें लिखीहैं इसदास रसमेंभी उतनीहीहैं सिवायनहीं भगवत्
चरणों की सेवामें निश्चल प्रीतिकाहोना यह स्थाईभावहै और वहप्रीति
कैसीहो कि किसी प्रकार और किसी सबबसे किसीघड़ी कम न होवै
जिसप्रकार गंगाका प्रवाह रात दिन बराबर चलता रहताहै इसीप्रकार
चित्तकी वृत्ति केवल भगवत्चरणोंमें लगीरहै हेप्रभु दीनवत्सल हे क-
रुणाकर हे पतितपावन महाराज किस अवतरन व अवलम्बसे अपनी
दशाके समाचार आपके समीप पहुंचाऊं कि सबप्रकारदीन और दुखित
हूं और जो चुप होरहूं तो बिना निवेदन दूसरा उपाय उद्धारका नहीं
देखताहूं काहेसे कि आपके सिवाय ऐसा और कौनहै कि जिसकोपतित
और अधम प्यारेहों जो यह आप कहैंगे कि दूसरे देवता बड़े बड़े नामी
व बड़े हैं उनके शरण किसवास्ते नहीं जाताहै तो पहिले तो वे बपुरे
अपनीही दशामें फँसेहैं मेरेवास्ते क्या करेंगे दूसरेजबकि आपके चरण
कमलों के आगे किसी की कुछ बड़ाई न समझीतो वे हमसे कबप्रसन्न
होंगे सिवाय इसके सब अपनीसेवा और स्वार्थके चाहनेवालेहैं बिना
कारण दीनपर प्रसन्नहोना केवल एक आपहीके बांटेमें आयाहै तो उन
देवताओंको सेवनेसे यह कोई नाय कि जिसको अपने शुभकर्म और सब
प्रकारकी सेवा [illegible] भरोसाहो उनकी सभामें मेरेऐसे अपराधीको
[illegible] न कोई जगह जानेकीहै व न कोई स्वामी
[illegible] दूसरा [illegible] आपके द्वारपर पड़ाहूं अबआपहीं
[illegible] होगा और निश्चय करके आप

के द्वारसे कोई पतित और पातकी निरासनहीं फिरा इसहेतु मुझकोभी निश्चयहै कि अपने मनोर्थको प्राप्त होजाऊंगा और एक बिनती यहहै कि यद्यपि प्राप्तहोना मेरे मनोर्थका मेरे यत्नसे अतिदुर्लभहैपरंतुआपकी तनकसीकृपासे दासोंसे मिल सक्ताहूं केवल इतनाहीं चाहताहूं कि वह सभा व समाज आपके राज्याभिषेक का जो ब्रह्मादिक को परमआनंद का देनेवालाहै सदा निश्चल मेरे मनमें बसारहै भगवत्का बावन अवतार उस स्वरूपसेहुआ कि जो विष्णु नारायण शंख चक्र गदा पद्मधारी का ध्यान शास्त्रोंमें लिखाहै और शरणागति निष्ठामें लिखाजायगा परन्तु जिसघड़ी राजाबलिके द्वारपर गये और दानलिया उस समयका ऐसाध्यान भागवतमें लिखाहै कि परम मनोहर और शोभायमान छोटा सा ब्रह्मचारी का स्वरूप जिसको देखकर सूर्य शीतल और चन्द्रमा लज्जासे सबअंग जल होताथा बनाकर एक हाथ में जलका कमण्डलु व डोरी दूसरे हाथमें दण्ड लियेहुये मुंजी शोभित छतुरी छायाके वास्ते लगायेहुये राजाबलिके सम्मुख बिराजमान और संकल्प करातेहैं ॥

प्रह्लादजी की कथा ॥

प्रह्लादजी भगवत्दासों में अग्रगणनीय व शोभा के देनेवाले दास निष्ठा और भागवतधर्मकेहुये सो कथा उनकी सबपुराणोंमें और विशेष करके भागवत व बिष्णुपुराण व महाभारत में बिस्तारसे लिखीहै इस वास्ते यहां संक्षेपसे लिखताहूं जब हिरण्याक्ष हिरण्यकश्यप के भाई को भगवत्ने वाराहरूप धरके मारा तो हिरण्यकश्यप सदा एक छत्र राज्य करने व अमर रहनेके वास्ते उपाय बिचार करके तप करनेको पहाड़में चलागया राजाइन्द्रनेसाज और घरबार हिरण्यकश्यपका लूट पाटके ध्वस्त करदिया और उसकी स्त्रीको कि प्रह्लादजी गर्भमेंथे पकड़ कर लेचला नारदजीने आकर छुड़ादिया और अपनी रक्षा में रखकर ज्ञान उपदेश किया वास्तवकरके वह ज्ञानकाउपदेश प्रह्लादजीके वास्ते हुआ क्योंकि गर्भ में सुनतेथे जब हिरण्यकश्यप अति कठिन कठिन वरदान लेकर आया तो अपनाराज्य व घरबार सब सजिलिया और तीनोंलोक के राज्यगद्दी पर बैठकर सब देवताओंको बंदमें डालदिया कुछ दिन पीछे प्रह्लादजीका जन्महुआ और ब्राह्मणों ने हिरण्यकश्यप

को मंगल आशीर्व्वाद किया कि इस महाभाग लड़के के जन्मलेने से तुम्हारा कुल परिवार पवित्रहुआ और तुम्हारे पुरुषा सब परमधामके भागीहोगये हिरण्यकश्यपने प्रह्लादजी को बड़ेलाड़ व दुलारसे पालन किया और पांच चार वर्षकेहुये तो शंख व लिखित दोनों शुक्रजीके पुत्र हैं उनकेपास वास्ते पढ़ने राजनीति और शास्त्रमें प्रवृत्ति होनेके निमित्त भेजा जबगुरूने पढ़ाना आरंभकिया तबप्रह्लादजीने भगवत् नामका उच्चारणकिया तब गुरूने कहा कि अरे तू किसका नामलेताहै वहतेरे बाप का शत्रुहै जो तेराबाप सुनेगा तो तुझे दंडहोगा प्रह्लादजीने कहा सब विद्याका पढ़ना केवल उस भगवत् के जानने वास्ते है उसको छोड़कर दूसरी विद्याका पढ़ना निपट निष्फल है और अपने पिताका कुछडर मुझकोनहीं गुरूने प्रह्लादजीकी मातासे बहुत शिक्षाकराई परंतु प्रह्लादजी अपने विश्वास और धर्ममें दृढ़रहे एकदिन हिरण्यकश्यपने गोदमें बैठालकर पूछा तुमने इन दिनोंमें क्यापढ़ाहै प्रह्लादजीने वहीनाम भगवत् का सुनाया हिरण्यकश्यप क्रोधसेबोला कि यहनाम मेरे शत्रुका किसने पढ़ायाहै अबफिर कबहीं इस नामको न लेना प्रह्लादजीने कहा कि यही नाम सब नामियोंका नाम देनेवाला है और सब धर्मों का परम धर्म्म और सब विद्याओं की परम विद्या है तुमको उचित है कि इस नाम का भजन कियाकरो हिरण्यकश्यप सुनकर अधिक क्रोध वंत हुआ अपने भृत्यलोगों से प्रह्लादजी को दण्डदेने के वास्ते आज्ञादी उन्होंने आज्ञाके अनुसार किया जबकुछ न सपरा तब आग में जलवाया नदी में डुबोया और पहाड़ परसे गिरवाया परन्तु कुछ क्षय प्रह्लादजी को न हुआ हारि के हिरण्यकश्यप ने फिर पढ़ाने वाले को सौंपा प्रह्लादजी ने पाठशाला के सब बालकोंको गुरू जब न रहैं तब उपदेश कियाकरैं कि यह संसार असार है और जगतका सब व्यवहार नश्वर है और भगवत् सार है और सदा सब जगह प्राप्त है भगवत् चरणों में मन लगाना परम सुख है और भगवत् विमुख होना परम दुख मनुष्य का देह केवल भगवत् भजन के वास्ते है नहीं तो पशुपक्षी व तृण व कूड़ा करकट से भी निकृष्ट है नारदजी ने जो उपदेश मुझको किया था सो तुमको सुनाया कल्याण इसी में है कि भगवत् शरण होकर स्मरण और भजन

करो भगवत् को कुछ जाति और कुलपर दृष्टिनहीं मैं भी तो तुम्हाराही सजाती हूं देखो भगवत् ने कैसी २ संकट काटीहैं बालकों को उपदेश प्रह्लादजी का लगगया सब भगवत् भजन करनेलगे गुरू आया और यह वृत्तान्त जब देखा तो रिस की और हिरण्यकश्यप से जाकर सब वृत्तान्त कहा वह क्रोध की अग्नि में लाल हुआ आया और तरवार हाथ में लेकर प्रह्लादजी के मारने को उद्यत होकर बोला कि अब तेरा रक्षक कौन है प्रह्लादजी ने उत्तर दिया कि वही भगवत् जो सब में व्यापक और समर्थ सर्वत्र प्राप्त है हिरण्यकश्यप ने कहा इसखम्भे में भी है उत्तर दिया अलबत्ता उस में भी है हिरण्य कश्यप ने एक मुष्टिका उस खंभे में मारी कि शब्द प्रचंड व भयंकर उस में से हुआ और फिर भगवत् भक्तरक्षक और सत्य करनेवाले बचन अपने भक्तों के नृसिंह रूप धारण करके बैशाख शुदी चतुर्दशी मध्याह्न के समय मुलतान में कि वह राजधानी हिरण्यकश्यप की थी प्रकट हुये हिरण्य कश्यप भी युद्ध को उद्यतहुआ लड़ाई होनेलगी जब संध्याका समय आया तब भगवत् ने उस का पकड़ा और अपने जानुओंपर डालकर गृहके द्वारपर अपने नखोंसे उदर फाड़ा और परमपद को भेजदिया और ब्रह्माका बरदान सब भगवत् ने सत्य भी रक्खा ब्रह्मा और शिव और इन्द्रादिक सब देवता स्तुति और बिनय करनेलगे और आकाश से जय जयकार की धुनि और फूलोंकी बरषा होनेलगी और जो भगवत् का स्वरूप बिकराल व क्रोधभरा था किसी को यह सामर्थ्य न हुई कि समीप जाकर क्रोधको शान्तकरै इसहेतु सबने प्रह्लादजी को भेजा प्रह्लादजीने जाकर दण्डवत्करके बिनय किया कि हे प्रणतारतिभंजन आपकी महिमा वेद और ब्रह्मा भी नहीं कहसक्ते मुझ अधम व अज्ञ व बालक से तो क्या वर्णनहोसक्ती है परंतु कृपासिन्धु व दीनबत्सल जानकर बिनयकरताहूं कि आपके क्रोधभरे स्वरूपसे सब देवता भयभीत और कम्पायमानहैं कृपाकरके उनकाभय दूरकरो भगवत् ने प्रसन्नहोकर कहा कि अच्छा और जो इच्छा तुमकोहो सो मांगो कि पूर्णकरूंगा प्रह्लादजी ने बिनय किया कि आपके चरणकमलोंकी भक्तिसे सिवाय किसीवस्तुकी चाहना नहीं जो शरीर मुझकोमिलै आपके चरणों की प्रीतिबनीरहै भगवत् ने

यह वरदानदिया और राजगद्दीपर बैठालकर अपनेहाथसे राजतिलक करदिया उससमय भगवत्रूप की शोभाऐसीथी कि जो हज़ारों सूर्य्य एकसाथ उगैं तौ वे भी भगवत्मुखके तेजकी समता नहींपायसक्ते उस मुखपर जहांतहां रुधिरकी बूंदे लगीहुई बड़ीआंखें लाल कुछ पियराई लियेहुये जीभसे बारबार अपनेओठोंको चाटतेहैं मूछेंभूरी गर्दनकेबाल पीले और श्याम दोनोंहाथ अत्यन्त बलिष्ठ नखतीक्ष्ण चौड़ीछाती पर आंतोंकीमाला विराजमान और पूंछ कमरपरकी होकर शिरपर चमर की भांति लहरातीहुई प्रह्लादजी को गोदमें लेकर राजतिलक करतेहैं देवता चारोंओर विनती कररहेहैं आकाशमें दुन्दुभी बजतीहैं अप्सरा नाचतीहैं गन्धर्व भगवत् चरित्रों का कीर्तन करतेहैं फूलोंकी वर्षाहोती है और यह बात मालूमरहै कि भगवत् स्वरूप ऐसा न था कि कोई अंग व्याघ्रका होय और कोई अंग मनुष्य का वह सब स्वरूप भगवत् का कबही व्याघ्रके रूपसे देखपड़ता तथा कबहीं मनुष्यके यहबात भागवत के तिलकसे प्रकटहै परंतु बहुत करके भगवत् रूप व्याघ्र के शरीरसे देखनेमें आताथा पीछे भगवत् तो अन्तर्द्धान होगये और प्रह्लाद जी राज्यकरनेलगे उनकेराज्य में भगवत् भक्ति की ऐसी प्रवृत्तिभई कि कोई विमुख नरहा और न्यायधर्म इतनाथा कि एकबेर प्रह्लादजीके पुत्र विरोचनसे व सुधन्वा ब्राह्मणसे आपुसमें एकसुन्दरी स्त्रीके वास्ते यह विवादहुआ कि विरोचन तो उसस्त्रीको राजा के पुत्रहोने से आपलिया चाहताथा और वहब्राह्मण कहताथा कि राजहत्यादिकों पर ब्राह्मणोंको अधिकता है इसहेतु यहस्त्री पहिले भागमेरा है न्याय इसझगड़े का प्रह्लादजी पर निश्चयहुआ और आपुस में यह प्रबंध ठहरगया कि जो अन्यथा कहनेवाला राजा के यहां ठहरै सो बधकियाजाय प्रह्लादजी ने कुछपक्ष अपने पुत्रका न किया और ब्राह्मण जो सचकहता था उसको यहस्त्री दिलादी और अपने पुत्रके बधकेवास्ते आज्ञादी यहब्राह्मण इस न्यायसे बहुतप्रसन्नहुआ और उसने उलटे विरोचनको बधकेबचाने को प्रह्लादजीको देदिया इसप्रह्लाद चरित्रसे भगवत् की भक्ति करनेवालों पर विचार करनाचाहिये कि यह हिरण्यकशिपु अपने राज्यमें देवताओंपर उत्पात करताथा और देवताओंको जहांताहि त्राहि पुकारतेहैं परन्तु

भगवत्‌ने कबहीं हिरण्यकश्यपकी ओर कुछतनक चिन्तवनभी न किया जबउसने भगवत्‌भक्तको दुःखदिया तो उसको न सहिसके और आपने विनापुकारे भक्तकी सहायकरी और एकशिक्षा भी इसचरित्र से प्रकट होतीहै कि जोबापभी भगवत् सम्मुख होनेमें बाधाकरै तौ त्यागके योग्य है जिसप्रकार प्रह्लादजी ने त्यागकिया ॥

अंगदजी की कथा ॥

अंगदजी बेटे बाली बानरोंके राजाके ऐसेपरम पवित्र भगवत् भक्त हुये कि युवाअवस्था और सर्वसुख राज्य ऐश्वर्य्यप्राप्तथा तथापि सदा मनकी वृत्ति भगवत् चरणोंमें रखतेथे और रघुनन्दन महाराजने उनके बापको सुग्रीवकी दीनपुकार पर बधकिया परंतु तनकभी भक्तिकी राह से और अपने धर्मसे न फिरे और प्रसन्नहुये कि ऐसीपदवीके योग्यबाली नहींथा सो दी व जानकीजीके खोजनेमें और रावणसे युद्धहोनेके समय ऐसा परिश्रम व शूरताकरी सो वृत्तांत बिस्तार से रामायणमें लिखाहै थोड़ासा यहहै कि जबरघुनंदन महाराजकी ओरसे रावणके पास दूत बनिकेगये और प्रश्नोत्तर उचितताके साथहुआ तो उसघड़ी यह बात ढिठाईकी रावण के मुंहसेनिकली कि जैसे और आदमी हैं वैसेही रामचन्द्र तेरे स्वामीभी हैं यहबचन सुनतेही अंगद जी क्रोधमेंभरिके काल स्वरूपहोगये कि भयसे कितने राक्षस भागगये व रावण भी कांपकर गिरपड़ा व मुकुटभी उसकेमाथे से गिरपड़े उसमें से कईमुकुट अंगदजी ने श्रीरघुनन्दन महाराजकी ओरफेंके उसकेपीछे जब अतिउत्तर प्रतिउत्तरका संयोगपहुंचा तो चरणरोपि के रावण से प्रणकिया कि जो कोई तुम्हारेमें से मेरापांव उठायदेवै तौ श्रीरघुनन्दन महाराज लौटजांयगे और सीता महारानीको मैं हारचुका इसबातको सुनकर इंद्रजितआदिक व बड़ेबड़े बीरउठायके हारिगये चरण न चला न हिला जैसेकामियोंकी बातोंके सुननेसे पतिब्रता स्त्रीकामन अथवा कोई आपत्तिके आनेसे भक्तका मन हरिभजन और न्यायसे नहीं चलायमान होता राक्षसोंने भांति भांतिके उपायसे चरणको उठाया परंतु चरणने धरतीको इसप्रकार न छोड़ा कि जैसे बिना भगवत्‌भजन संसारका दुःख और बिना बिद्या के अज्ञान नहींछोड़ता सब लज्जित होकर बैठगये तबअंत में रावण लल-

कारकर उठा चाहा कि अंगदजीके चरणको पकड़ैं उससमय अंगदजी ने शिक्षा और तर्क करकेकहा कि अरेमूढ़ मेरेचरणके पकड़नेसे तेराक्या भलाहोता है श्रीरघुनन्दन स्वामीके चरण क्योंनहीं पकड़ता कि कृतार्थ होजावे रावण लज्जितहोकर सिंहासनपर बैठगया अंगदजीको भगवत् का ऐसादृढ़ विश्वास था कि प्रणकरनेके समय कुछसंदेह न किया और लंका को जीतकर जब रघुनंदनस्वामी अयोध्यामें फिरआये और राज्याभिषेकहोलिया तबअंगदजीभी स्वामीकी आज्ञासे बिदाहोकर अपनेघर को गये और भगवत्के स्मरण भजनमें ऐसे लीनहुये कि दूसरी ओर तनक चित्तकी वृत्ति न गई॥

पीपाजीकी कथा॥

पीपाजी ऐसेपरम भागवतहुये कि उनकेभक्तिके प्रतापसे पशुतुल्यभी भगवत् शरणहोगये भगवत् भक्तोंकेभक्त और सबगुणोंके जाननेवालेहुये गागरौन गढ़केराजा व पहिले दुर्गाजीके सेवकथेएकबेर भगवत्भक्तलोग जा निकले उनको रसोई की सामग्री जो इच्छा से चाहा सोदिलवायदी उन्होंने रसोई बनाकर भगवत्को भोगलगाया और भगवत्से प्रार्थना कियाकि यहराजा भक्तहोजाय रातको एककिसीने राजाकोस्वप्नमें शिक्षा किया कि तूकैसा मतिमन्दहै कि भगवत्से विमुखहोकर उद्धार चाहताहै पीछे एकप्रेतने भयंकररूपसे प्रकटहोकर राजाको पलंगपरसे धरतीपर डालदिया राजाने उसीघड़ीसे भगवत् भक्तिका आरंभकिया और सबरचना संसारकी असार दिखाई देनेलगी दुर्गाजी साक्षात्हुईं और पीपाजी ने दण्डवत्करके पूछा कि भगवत्भक्ति किसप्रकार प्राप्तहोय दुर्गाजी महारानीने रामानन्दजीको गुरुकरनेकीशिक्षा करके अंतर्धानहुईं और पीपाजी रामानन्दजी के दर्शनकेहेतु ऐसे व्याकुलहुये कि लोगोंको यह सन्देहहुआ कि पीपाजी वैराग्यको काशीपुरीमें रामानन्दजी के पासआये उन्होंने निराशकरदिया कि यहघर त्यागियों व विरक्तोंका है राजाका यहां क्याकामहै पीपाजी सबत्यागिके फ़क़ीर बनिकआये कि मैं भी फ़क़ीर होगया रामानन्दजी ने आज्ञाकी कि कुवें में गिरपड़ो तुरन्त गिरनेचले जब गिरनेलगे तो रामानन्दजी के चेलों ने पकड़ लिया सान्हने लाये तब रामानन्दजी ने चेलाकिया और भगवत्भक्ति कृपा पूर्व्वक देकरकहा

कि अपने घरजाओ साधुसेवा करतेरहो एकवर्ष पीछे हमभी साधुसेवा सुनैंगे तो तुम्हारेघर भक्तों सहित आवैंगे पीपाजी घर आये और ऐसी साधुसेवा व भजन को किया कि वर्णन नहीं होसक्ता पीछे वर्षदिन के पत्र लिखा कि अपने वचन की पालना कीजिये पधारिये रामानन्द जी कबीर व रैदास आदि चालीस चेलों सहित चले जब नगर के निकट पहुंचे तब पीपाजी बड़ेभाव रीतिमर्य्याद पूर्वक रामानन्दजी को समाज सहित घरलाये व ऐसी सेवा करी कि जिसका फल शीघ्र प्राप्तहोय कुछदिनपीछे रामानन्दजी ने द्वारका चलने की इच्छाकिया और पीपा जी बिकल भये तब उनकी प्रीति हृदयकी देखकर रामानन्दजी ने आज्ञा की कि चाहो यहांरहो चाहो फ़क़ीरी अङ्गीकार करके साथ चलो पीपाजी तुरन्त सबराज्य छोड़कर साथ हुये बारह रानी भी साथ चलीं पीपाजीने उन ग्यारहको समझाकर फेरा एक छोटीरानी जिसका नाम सीताथा कमली पहिरना व नङ्गीरहने को भी अङ्गीकारकिया तब रामानन्दजी के सौगन्द दिलाने से साथलिया और चले एकब्राह्मणभी साथ हुआ मनाकरने से विष खा मरा भगवत् चरणामृत से जीगया फिरकर अपने घरआया समाज द्वारका में पहुंचा दर्शन यात्रा करके काशीजी को यात्राकिया परन्तु पीपाजी आज्ञालेकर द्वारकामें रहे एकदिन श्रीकृष्ण स्वामीके दर्शनकी इच्छाहुई समुद्र में कूदपड़े दिव्य द्वारका में पहुंचगये दर्शनपाया सातदिनरहे भगवत्की आज्ञासे फिर समुद्र के किनारे जल से सीतासहित निकले कपड़ाभीगा शरीरसूखा सबलोगों ने देखकरके आश्चर्य्यमाना पीपाजीको भगवत्ने जो छापदी थी सो पुजारियोंको दी और कहदिया कि जिसके शरीरपर लगाई जायगी यहछाप सो भगवत् को प्राप्तहोगा फिर जन्म न पावैगा यहप्रताप पीपाजीका जब विख्यात हुआ तो लोगोंकी बड़ीभीड़ होनेलगी तब वहांसे चलके छः मंज़िल आये थे कि कुशक़र पठानोंका मिला सीताजी को सुन्दरी देखकर उन्हों ने छीनलिया सीताने भगवत् को स्मरणकिया तुरन्त आपआये और दुष्टों को दण्डदेकर सीता को आनन्द से लेआये पीपाजीने सीता से कहा कि अब भी घरचलीजाओ तुम्हारे कारणसे सबउत्पात खड़ेहोतेहैं सीताने उत्तरदिया कि महाराज आपके उपायकरने से कौनउत्पात शान्तहुआ है

कि जिसके कारणसे भजन में भङ्गहुआहो और किससमय प्रभुने सहाय न करी सो आपको और मुझको इसबातकी परीक्षा अच्छेप्रकार होचुकी है तब भी ऐसी सिखावन करना यहदूसरीबातहै पीपाजी इसदृढ़ निश्चय पर प्रसन्न हुये दूसरी राहसेचले राहमें एक व्याघ्रआया उसको चेला करके भगवत् भक्तिका उपदेशकिया उसने अङ्गीकारकिया अबतक वहां का व्याघ्र साधु ब्राह्मण गऊ को नहींमारता वहांसे चलकर एकगांवमें आये शेषशायी महाराजका वहांमन्दिरथा बाज़ार में लाठी देखकर मा-लिकसेमांगी उसनेकहा जङ्गलमें से काटलेव पीपाजी ने सबलाठियोंको हरी व सपत्रकरदिया कि जङ्गल होगया एक लाठीको काट लिया फिर एक चीधरनामे भक्तके घरआये उनकेघर कुछ न था अपनीस्त्री को नङ्गी कोठेमें बैठाकर उसका लहँगा बेचकर रसोईं को कराया भोगलगे पीछे जब चीधरभक्तको उनकी स्त्री सहित जेवनेको बुलाया तो चीधरनेकहा कि आप भोजनकरें सीथप्रसाद वह भोजनकरैगी तब पीपाजीने सीता को भेजा देखा तो कोठेमें है पूंछा कि कोठेमें किसहेतु बैठीहै उत्तरदिया कि तनपर वस्त्रहोना न होनाकारण परम आनन्द का नहीं भगवत्स्वरूप का चिन्तवन और साधुसेवा परम आनन्दसारहै उसका होना अवश्य योग्यहै सीताजीने सबहाल जानलिया और उनकेभाव के आगे अपनी भक्तिको तुच्छसमझा अपनेअंगपरके वस्त्रसेआधा देकर बाहरलाई और एकसाथ भोजनकिया पीछे सीता व पीपाजी उनकी सेवा उचित समझ कर विशेष द्रव्यकी प्राप्ति वेश्याकर्म से शीघ्र जानकर बाज़ारमें जाबैठे सुन्दररूप देखकर लोगनमाहुये समीप आये तो आंख उठाकर न देख-सके पूंछा तुमकौन हो जवाब दिया कि वारमुखी हूं घरबार कहीं नहीं केवल एक रमाजी साथहै लोग सुनकर चुपहोरहे कुछ हँसी की बात न कहिसके नाज व मुहर व रुपया भेटकिया पीपाजी ने वहसब चीधर भक्तकेघर पहुंचादिया भक्त ऐसे वैराग्यवान् थे कि उन्ने सभी भगवत् भक्तोंको देदिया आप जैसेथे तैसेहैं पीपाजी विदाहोकर राहका कष्ट झेलते टोडागढ़में टिके तालाबपर स्नान करनेगये वहां मुहरों से भरा एक घड़ा देखा रातको सीताजीसेकहा चोरोंने सुनकर जाकर देखा तो घड़े में एक बड़ासांप है तबविचारा कि इससांपसे उनको कटवाना चाहिये तो

हमारे काटने के वास्ते झूठकहा उसघड़ेको लेआकर पीपाजीके अस्थान में डालकर चलेगये पीपाजी उस समय सात सौ बीस मुहर जो पांच पांच तोलेकी एकएकथी तीनदिनमें भंडारा करके साधोंको खिलादिया सूरसेनराजा उसदेश का था वह पीपाजी का नाम सुनकर दर्शनको आया चरणों में पड़कर बिनय किया कि मुझको भी अपने ऐसा बना व मंत्रदेकर चेलाकरो पीपाजी ने कहा कि अपनी सम्पत्ति व रानी इत्यादि सब हमारे भेंटकरो राजाने तुरन्त वैसाही किया तब उसको मंत्र उपदेश करके चेलाकिया व रानी व सम्पत्ति इत्यादि जो भेंटकिया था सो सब फेरदिया और कहा कि भक्तों से परदा का प्रयोजन नहीं राजाके भाई बंधु यह वृत्तान्त सुनकर बहुत क्रोधयुक्त हुये और अन्तःकरणसे पीपाजी के साथ दुष्टता करनेलगे एक बनजारा बैलोंके मोल लेने को बैल ढूंढ़ता हुआ आया राजा के भाइयों ने बहकादिया कि पीपाजी के पास बैल अच्छे २ हैं बनजारे ने पीपाजी के आगे आयके रुपैया नक़द रखदिया और कहा कि नयेनये बैलोंको मोललने आयाहूं पीपाजी दुष्टोंकी दुष्टता जानगये कहा कि इस समय बैल चराईपर गये हैं फिरआकर लेजाना बनजारा तो चलागया और पीपाजी ने उसी रुपये से भंडारा व महोत्साह आरंभकिया हज़ारों साधुजमाथे कि बनजारा आया और बैलोंके वास्ते बिनयकिया पीपा जीने कहा कि यह हज़ारों बैलखड़े हैं कि परम धामतक खेप पहुंचा देतेहैं जितने तुमको काम हों लेजाव बनजारा बड़भागी हरिभक्तोंका दर्शन करके उसीघड़ी भगवत् के शरणहुआ व अच्छेकपड़े साधोंकोदिये एकबेर घोड़ेपर सवारहोकर पीपाजी स्नानको गये घोड़को खुला छोड़कर नहानेलगे घोड़ेको दुष्ट लोग चुरालेगये और बांध रक्खा जब स्नान करके चलने का बिचार किया तो घोड़ाकसा कसाया आगे आकर खड़ाहुआ मानो कोई तैयार करके लायाहै एकबेर पीपाजी हरिभक्तोंके समाजमें गयेथे घरपर साधु आये घरमें कुछ न था सीताजी बाज़ार में जाकर एक बनिये से रातको आनेके करारपर सामग्री ले आईं उसीघड़ी पीपाजी भी आगये बहुत प्रसन्नहुये और सीताने सब वृत्तान्त कहदिया जब रातको सीता श्रृंगार करके चली तो जल बरसनेलगा पीपाजी अपनी पीठपर चढ़ाकर

वनियेके घरलेगये दर्शनसे वनिये को ज्ञान होगया चरणसूखा देखकर पूछा माता किसप्रकारआई सीताने कहा मेरेस्वामी अपनी पीठपरलाये दरवाजेपर खड़ेहैं वनिया दौड़कर चरणोंमें पड़ा और गिड़ गिड़ानेलगा पीपाजी ने कहा लज्जा का कुछ प्रयोजन नहीं अपने दूकानमें जा वस्त्रा चैन उठावो तुमने वह रुपया दिया है हमको कि जिसके कारण भाई आपुसमें लड़मरतेहैं वनिया बहुत दुखित और धारमार मार रोनेलगा पीपाजी को दयाआई दीक्षादेकर आवागमनके दुःख से छुटादिया दुष्टों ने यह वृत्तान्त राजातक पहुंचाया ब्राह्मणों ने राजासे कहा कि यहबड़ी अनीतिहै राजा अज्ञान अपनीही नाई समझकर वेविश्वास होगया पीपा जीने सुनकर विचार किया कि गुरूसे विश्वास छुटे इसके दोनों लोक बिगड़ जांयगे इसको दृढ़ विश्वास करायदेना चाहिये इसहेतु राजाके घरगये ख़बरकराई राजा ने कहलाभेजा कि पूजाकरता हूं पीपाजी ने कहा कि यह राजा बड़ामूर्खहै चमारके घरजूती लेनेवास्ते गयाहै नाम पूजाका लेताहै राजा सुनकर तुरन्त नंगेपाँय बाहर आयकर चरणों में पड़गया पीपाजी ने राजाको चेतानेवास्ते कुछ और परीक्षादेना उचित समझा राजाकी एकरानी जो बन्ध्याघरमें थी उसको लेआनेकी आज्ञाकी राजा अपने राज्यके शोचमें चला आंगनमें व्याघ्र बैठेदेखा फिरा कि यही बहाना करूंगा पीछेभी व्याघ्रदेखा तबतो करामात पीपाजी की समझा और रानीके पासगया देखा कि बगलमें एक लड़का तुरन्तका जन्माहै तबतो आधीन व विश्वासयुक्त होकर साष्टांग दण्डवत् किया और हाथ जोड़कर कांपता हुआ डरसे कहने लगा कि मैंने तुम्हारी महिमा नहीं जानी अबमेरा अपराध क्षमाकर कृपाकरो पीपाजी उसी लड़के के स्वरूप से प्रकट होकर कहाकि ऐ मूर्ख उसदिन के विश्वास और प्रेमको स्मरणकर कि जिसदिन चेलाहुआ उचिततो यहथा कि दिनदिन भगवान् और गुरूमें प्रीति अधिकहोती यहनहीं कि विमुख होकर नरकमें जाना अबसे जानकर कि दोनोंलोक सहजमें प्राप्तहों इसप्रकार शिक्षा देकर अपने स्थानपर आये। एक कोई विमुख ऊपरसे साधु भेषबनाकर पीपाजी से एक रातके वास्ते सीताको लिया और मार्गमें भागा और सीताको भी भगाया इसविचारसे कि दूर निकलजावें कि सीताफिर न आय

जहां प्रभातहुआ तहांसे सीता चलनेसे रुकिगईं कि स्वामीकी आज्ञा एक रातकीहै तब सवारीढूंढ़ने गांवमें गया गाँवकी स्त्रियों को सीताका स्वरूपदेखा तबतो ज्ञानहुआ सीताजी के चरणोंमें पड़ा और चेलाहोगया पीपाजी को इसीप्रकार एकबेर चारबिषयीभी साधु बनिकेआये सीताजी को मांगा जबसिंगार करके सीता कोठरीमें जाबैठी वो भी चारोंगयेतो देखा कि एकबाघिन मारने व फाड़नेवाली बैठीहै तबक्रोध व भयसेभरे पीपाजीके पासआये व कहनेलगे कि अच्छेसाधुहो बाघिन बैठादियेहो पीपाजीनेकहा वह सीताहै जैसीतुम्हारी रुचिकी वृत्तिहै वैसी दिखाई देतीहै जो शुद्धचित्तसे जाओगे तो सीताकेदर्शनहोंगे पीछे सीताके दर्शन हुये वह सबभी चेलेहोकर भगवत्भक्ति करनेलगे भगवत्को प्राप्तहुये। एकगूजरी से दही बहुतदिनतक साधोंकी सेवाकेनिमित्त मँगाया व उसको मोलके रुपये बहुतदिये। एकब्राह्मण दुर्गा उपासकके घर पीपाजीने भगवत् भोगलगाकर महाप्रसाद भोजन किया तो उसकोभी भोजन कराया उसप्रभावसे उसको दुर्गाके दर्शनहुये भगवत्भक्त होगया व भगवत्मूर्तिकी सेवा आराधन करनेलगा। एक तेलिन सुन्दरी तेल लो तेल लो कहती फिरतीथी पीपाजीने कहा कि इस मुखसे रामराम कहने से बड़ी शोभा होती तेलिन क्रोध करके बोली कि जब कोई मरजाताहै तब रामनाम कहा करतेहैं वह जब अपने घर पहुंची तो खसम को मरा हुआ देखा आधीन होकर पीपाजी के चरणों में पड़ी और सब लड़के बाले समेत रामनाम कहनेका क़रार किया तब पीपाजीने उस मुरदेको जिलादिया। साधुसेवा के निमित्त एक भैंस कहींसे आयगई उसकोचोर लेचले पीपाजी भैंसके बच्चेको लेकर पीछेपीछे यह पुकारतेचले कि भैंस बिना बच्चेकी दूध न देगी इसकोभी लेतेजाओ चोर आधीनहुये भैंस को स्थानमें बांधगये। कहींसे एकगाड़ी गेहूं और कुछ रुपया लातेथे बटपारों ने वह गाड़ी छीनली पीपाजी वह रुपयाभी देनेलगे कि बिना रुपये के घी चीनी इत्यादि सामा रसोईकी न होसकैगी बटपारे भी सब आधीन हुये व गाड़ी आप पहुंचायगये। एक महाजनका बहुत रुपया साधुसेवा के खरचका पीपाजीपर क़रज़होगया नित तगादा करताथा व पीपाजी आज कल किया करते एकदिन बहुत कड़ाईकी पीपाजीने कहा कि हम

कुछनहीं धरातेहैं उसने हाकिमके यहां फिरयादकी जबहिसाबकी बही दिखानेलगा तो सब बही कोरी देखी लज्जितहुआ हाकिम ने दण्डदेने को चाहा पीपाजी छोड़ायलाये चरणोंमें पड़ा रानेलगातब वही ज्योंकी त्यों होगई और रुपयाभी उसका देदिया। भगवत्‌ने देखा कि पीपाजी कंगाल होगये रुपया और अनाज बहुत भेजवाय दिया पीपाजी ने वह घर और सब असवाब पुण्य करदिया। एक किसी मनुष्यसे गऊहत्या होगई उसके ज्ञात भाइयोंने पांतिसे निकालदिया पीपाजी ने रामनाम उसके मुखसे कहलाया और भगवत्प्रसाद भोजन कराकर भगवद्भक्त करदिया उसकी ज्ञातिने ज्योंका त्यों अलग रक्खा तब पीपाजी ने सब वेद व शास्त्रोंके सिद्धान्तसे नामकी महिमाप्रकट दिखाकर कहा कि वह नाम एकबेर मुखसे निकले तो करोड़ोंजन्मके महापातक दूर होजातेहैं तो उसनामके सैकरों हज़ारों बेरके नामलेनेसे एक गऊहत्या कहांबाकी रही सबने निश्चय किया उसको जात में लेलिया। राजासूरसेन को एक बेर पीपाजीके दर्शनकी चाहहुई उसके मनकी बूझके पीपाजी आप गये दर्शन दिये। एक साधुको रुपयाका प्रयोजनलगा उसीजगह इतना रुपया पीपाजीने दिया कि और बचरहा। एकबेर श्रीरंगजी के मिलने को गये रंगजी पूजा करतेथे फूलों की माला मानसमें पहिरावते मुकुट में अटकजाय बनैनहीं तिसको पीपाजीने कहदिया कि कैसेपूजा करते हो कि माला पहिनाते नहीं बनता श्रीरंगजी सुनकर दौड़े आये परस्पर मिले एक ब्राह्मण ने लड़की ब्याहनेवास्तेजांचा पीपाजीने उसको राजाके पास अपना गुरू बतलाके द्रव्य दिलवाया। एकादशीके दिन जागरण होताथा पीपाजी तुरन्त उठकर अपना हाथ मलनेलगे राजा ने कारणपूछा तो कहा कि द्वारकामें भगवत् चंदुयेको आग लगगईथी उसको बुझायाहै राजा ने सांड़नी लगाकर समाचार मँगाया तो सत्य ठहरा और यहभी मालूमहुआ कि पीपाजी हर एकादशीको जागरणमें वहां आतेहैं। एकदिन पीपाजी नदीपर स्नान करनेजाते थे एक तेलीके लड़केसे बैल लेकर एक ब्राह्मणको देदिया तब तेलीने पीपाजीसे अपना दुःख सुनाया तो बैल अपने घरपर बँधाया। एकबेर अकाल में अनाज व कपड़ा लोगोंको इतनादिया कि अकालपाहीनहीं सबकादुःख

निवारणकिया । एकबेर बड़ी सम्पति कहींसेहाथलगी दो चार दिनमें खरच करदिया ऐसे चरित्र पीपाजीके अनेकहैं कि जाननेमें नहीं आते सो भगवत् और भक्तोंमें क्या भेदहै कि ऐसीही महिमा भगवत्कीहै ॥

प्रयागदास की कथा ॥

प्रयागदासजी अपने गुरू अग्रदास जीकी कृपासेऐसे परमभक्तहुये कि मन बच क्रमसे एक रघुनन्दनस्वामीके चरणकमलोंमें प्रेमथा और भगवद्भक्तोंमें ऐसी प्रीतिथी कि भगवत्रूप जानतेथे मौजे कियारे में भगवत् मन्दिर के कलश चढ़ानेका उत्साहथा और मौज़े आड़े व बलिये में भगवत्मन्दिर के ध्वजा चढ़ानेको दोनों स्थानसे साधुबुलानेकोआये प्रयागदासजीने बिचारा कि एक जगह जायँ एक जगहनहीं तो साधु उदासहोंगे इसहेतु दोनोंजगह दो स्वरूप बनाकर गये और सत्संग इत्यादिका आनन्द लिया और अपने हाथसे एक जगह ध्वजा और दूसरीजगह कलश चढ़ाया । रास होताथा भगवत् के स्वरूपकी माधुरी देखकर प्रेममें मग्न होगये और प्रेमके तरंग और गीतमें प्राण भगवत् पर निछावर करके परमपदको गये ॥

भगवान की कथा ॥

भगवान नाम करके भगवद्भक्त सोनेपत ग्राममें हुये जहां कहीं धर्म विमुखीनको सुनते तो भांति भांति के उपदेश करते और भागवत धर्म पर दृढ़ करदेते सो पड़रीनामे गांवमें योगियोंकी जमातरहतीथीउनको अपनी सिद्धताकी परीक्षा दिखलाकर भगवद्भक्त करदिया बादशाह ने करामात समझने वास्ते बिष पिलवादिया भगवत्कृपासे कुछ न हुआ लज्जित होरहा दासभावमें भगवानकी बड़ीप्रीतिथी ॥

रामराय की कथा ॥

रामरायजी परम भक्तरूपसारस्वत ब्राह्मणथे ज्ञान व बैराग्य व योगके बड़ेज्ञाताथे काम क्रोध लोभ मोहके त्यागीथे और साधु सेवामें ऐसीप्रीतिथी कि साधुके दर्शनसे कमलके भांति प्रफुल्लित होजातेथे एक बेर साधुसमाजथा वहां एकदुष्ट रामरायजीको निन्दा करनेलगा भगवत् को उसका दण्ड उचित मालूम हुआ सो सभामें जहां उसके भाई बंधु

सब बैठेथे उसकी पगड़ी उसके शिरसे ऐसी उछलके गिरपड़ी कि जैसे कोई धौलमारे लज्जितहोकर सभासे निकल गया ॥

श्रीरंगजीकी कथा ॥

श्रीरंगजी देवसागांव जयपुरके राज्यमें है तहां रहतेथे सरावगी के बेटेथे उनका सेवक मरकर यमदूतहुआ और उसी गांवमें एकबनजारा टिकाथा उसके प्राणको निकालने को आया आगेकी प्रीति वशरंगजीसे मिला और वृत्तान्त कहा श्रीरंगको चाह इसलीलाके देखने कीहुई जहां बनजारा टिकाथा तहांगये देखा कि उस यमदूतने एकबैलको भड़का दिया और बनजारा पकड़नेको उठा वहदूत बैलके शिरपर जाबैठा और सींगसे बनजारेका पेट फाड़दिया बड़ीपीड़ासे मारडाला श्रीरंग देखकर त्रसितहुये और उसदूतसे उपाय पूछा कि जिसमें यमदूतोंके हाथों से बचें उसने कहा कि बिना भगवत्भक्ति सबको ऐसीही पीड़ा होती है और जो भगवत्भक्तहैं उनकेपास स्वप्नमें भी यमदूत नहींआते श्रीरंगजीने सरावगी मतअसार समझकर उसी घड़ी भगवत्भक्ति अंगीकार करके दूतके बतलानेसे श्रीअनन्तानन्द जो रामानन्दजीके चेलेथे तिनके चेलेहोगये थोड़ेही कालमें भगवत् स्वरूपकी प्राप्ति होगई और जन्ममरणके भयसेछूटगये एकप्रेतनित श्रीरंगजीके बेटेको दिखाईदेताथा इसकारण वह दुबला होगया जबयह वृत्तान्त सुना तब एकदिन लड़के की खाटपर सोरहे जबप्रेत आया तब रगेद लिया प्रेतभागा और कहा कि मैंइसी गांवका फलाना सुनारहूं परस्त्री गमन व चोरी झुठाई कर्म करिके प्रेतहोगयाहूं सोअपने उद्धारके हेतु तुम्हारा द्वारा सेवताहूं श्रीरंगको दयाआई भगवत् का चरणामृत उसको दिया कि उसके प्रभाव करके देवताका स्वरूप पायकर संगतिका फल प्राप्त हुआ ॥

हठीनारायण की कथा ॥

हठीनारायण कृष्णदासजीके चेले रहनेवाले पंजाब देशके परम भक्त भगवत्केहुये सर्वकाल भजनमें व संतोपयुक्त रहतेथे भांग पीनेकी रुचिथी बादशाहने धतूरामिलाकर पिलाया कुछ न हुआ तबमतके द्वेषसे विषपिलाया व ऊपरसे एकबिच्छू खिलाई पिलाई कि जिस में विषमेंहि और मरजाय परंतु कुछकाम न किया लज्जित होकर चरणों में गिरा

अपराध क्षमाकराया जानेरहो कोई मनुष्य इसकथाको भांगपीनेके लिये प्रमान न समझले भांग त्याज्यहै मदिरामें शास्त्रने गिनाहै बरु भांगमें एक अवगुण मदिरासे भी अधिकहै कि बुद्धिको हरिलेतीहै किसी बड़ेके पीनेसे प्रमान नहींहोसक्ताहै मूर्ख महादेवजीका दृष्टांत दियाकरतेहैं तो शिवजी हलाहल बिष पानकरगये तो बिषभी कोई पीवै व शंकरस्वामी भट्टीमें से औटाहुआ कांच पीगये और कोईभी तो औटाकांच उठाकरथोड़ा भी तो पिये सो बड़ेके आचरणसे निषेधहै सो ग्राह्यनहीं होसक्ता॥

चौ० समरथ कहं नहिं दोष गुसाईं। रवि पावक सुरसरि की नाईं॥

और कईपुराणोंके बचन युक्तहैं कि जोकोई किसी बड़ेमहात्माओंके दृष्टांतसे बस्तु निषेधको बिधि समझतेहैं व त्याज्यको ग्राह्य करतेहैं वे नरकगामी होतेहैं हठीनारायणने सिद्धहोने पीछे भांगपिया और सिद्ध महात्मा बिधिनिषेधके बंधनसे बाहरहैं भगवत्रूप होजातेहैं तात्पर्य्य यह कि भांग पीना निषेध है॥

रैदास की कथा॥

रैदासजी परमभक्त भगवत्के हुये जिनकी बानी व काव्य हृदय के अन्धकार और सन्देहके दूरकरनको सूर्य्यके भांतिहै शास्त्र व बेदके अनुसार कर्म करनेमें हंसके सदृशहुये अर्थात् निषेधको छोड़कर सारको ग्रहणकिया इसीशरीरमें भगवत् धामको पहुंचे और जिनके चरणों को बड़े २ बरण आश्रम वालोंने दण्डवत् किया पहिले जन्ममें ब्रह्मचारी व रामानन्दजी के चेलेथे भिक्षा करके गुरुसेवा व भगवत् प्रसाद किया करतेथे एकदिन पानी बरसताथा सो एक बनिया कि जो बहुत दिन से कहता था परंतु उसकी भिक्षा कबहीं न लेते थे उसदिन उसीके यहां से रसोईकी सामग्री ले आये जब रामानन्दजी भोगलगानेलगे तो भगवत् ध्यान में न आये तब रामानन्द जी ने ब्रह्मचारी से बूझ के उस बनियेका वृत्तान्त बूझा बिचारा तो उसका लेन देन चमारों के साथ मालूम हुआ रामानन्दजी ने ब्रह्मचारी को शापदिया कि तुझको चमार का जन्म मिलै तो ब्रह्मचारीने ब्राह्मण का तन छोड़ कर चमारके घर जन्मलिया परंतु भगवतभक्ति व गुरूके प्रतापसे पहिले जन्मका स्मरण बना रहा जन्मे तबहीं से माताका दूधपीना छोड़ दिया कि बिना गुरु

मंत्र के उपदेश हुये खाना पीना निषेधहै रामानन्द जी को भगवत् ने आकाश वाणी से कहा कि ब्रह्मचारी को तुमने घोरदण्ड दिया उसपर दया उचित है कि रामानन्दजी उस आज्ञा से चमार के घरगये मंत्र उपदेश करके रैदास नामधरा और दूध पीने की आज्ञा दी जब रैदास जी कुछ सयाने हुये तो भगवत्भक्तों की सेवा करनेलगे जो कुछ घरसे मिलता भगवत्भक्तों के आगे धरदेते बापने उनको रिस करके घरके पिछवाड़े एकजगह रहनेकेवास्ते देदी धनबहुत था परन्तु एकदमड़ी भी न दी रैदासजी स्त्री समेत आनन्दसे रहनेलगे जूतीबनाकर दिन खेवते जो कोई वैष्णव व साधु देखते तो बिनादाम जोड़ी पेन्हायाकरते फिर एकछप्पर डालछिया और उसमें भगवत्मूर्त्ति विराजमान करके सेवा करनेलगे और आप उस छप्पर के आंगन और चौरेमें बिनाछाया पड़े रहते यद्यपि ऊपर दुःख दरिद्रता इत्यादिका था परन्तु मन भगवत्के ध्यान में आनन्द रहताथा भगवत् ने वह कंगाली भी दूरकरना उचित समझकर आप साधु के रूपसे रैदास के घरआये रैदास ने बड़ी सेवा करके भोजन कराया और भगवत् रूप वह जाना उससाधु ने प्रसन्न होकर एक पारसपाषाण रैदासजीको दिया और गुण वर्णनकरके कहा कि बहुतयत्नसे रखना रैदासजी ने कहा कि मेरे किसी की कामनानहीं मेरा धनसंपत्ति रामनाम है उससाधु ने जाना कि प्रभाव इसपारस का रैदास ने नहींजाना इसहेतु रांपीको लगाकर सोनेका करदिया रैदास जीने मनमें समझा कि रांपी भी हाथसे गई बहुतकहा तब रैदासजीने कहा कि छप्परमें रखदेव सो साधु छप्परमें उसपारसको रखकर चले गये तेरहमहीने पीछेफिरआये रैदासजीका वृत्तान्त वैसाहीदेख पूछा कि पारस क्या हुआ रैदासजी ने कहा कि जहां आपरखगये तहांहीहोगा मुझको उसके हाथलगानेसे भयहोताहै भगवान् उसको लेकर चलेगये एकदिन सेवा पूजाको पिटारीसे पांचमुहर निकलीं रैदासजीको भगवत् सेवासे भी भयहोनेलगा भगवत् ने स्वप्नमें आज्ञाकी कि यद्यपि तुमको कुछलोभ नहींहै परन्तु अब जो कुछहमदेवें उसको अंगीकारकरो तब रैदासजी ने अंगीकारकिया और एक धर्मशाला पक्का बनवाकर भगवत् भक्तोंको उसमें बसाया और फिर एकभगवत् मन्दिर तय्यार कराके भांति

भांतिके चन्दोये और झालर व सुनहरी बंदनवार व दीवारगीरी व छत-बंद इत्यादि से ऐसा सजा कि जो दर्शन करनेवाले आते थे मन्दिर की शोभा व भगवत् मूर्त्ति की छबिदेखकर मोहिजाते थे पूजा प्रतिष्ठा सब ब्राह्मणोंके हाथसे होतीथी तिसकेपीछे जहां रैदासजी आपरहतेथे तहां एकस्थान दोमहला बनवाया और बड़ीप्रीतिसे भगवत् आराधन आरंभ किया बहुत से ब्राह्मणों ने शत्रुता के कारण से राजाके पास कठोर बचन मुखसे निकालकर फिरि यादकिया कि चमारजाति को भगवत्मूर्त्ति के पूजनका अधिकार किसी शास्त्रमें नहीं लिखा रैदास निशंक भगवत्सेवा मूर्ति बिराजमान करके पूजन इत्यादि सब करता है उसको दण्डदेना चाहिये राजाने रैदासजीको बुलाया और ऐसाप्रताप रैदासजीका राजा पर व्यापा किएक दो बातकही और बिदाकिया राजा की रानीकानाम झालीथा उसने जो प्रताप रैदासजीका सुना तो सेवकहुई ब्राह्मणलोग रानी के यहांरहते थे उन्होंने रिसकी और कहनेलगे कि रानीकी बुद्धि जातीरही राजाकेपास सब समाचार कहा रानी ने रैदासजीको बुलाया और सब ब्राह्मण इकट्ठेहुये ब्राह्मणजाति की बड़ाई बर्णन करतेथे और रैदासजी का यह बचनथा कि भगवत्को भक्ति प्यारीहै जातिपर दृष्टि नहीं बहुत बाद बिवादभये पीछे यहबात स्थिरठहरी कि भगवत्मूर्त्ति जो सिंहासनपर बिराजमानहै जिसके पास प्रसन्नहोकर आजावै वही भगवत्को प्याराहै इसबात पर ब्राह्मणोंने तीनपहर पक्का वेदपढ़ा और मंत्र जपकिया परन्तु कुछ न हुआ जब रैदासजीपर बातआई तो बिनय किया कि महाराज अपने पतितपावन नामको सचकीजिये और दोएक विष्णुपद कीर्तन किये पद का प्रथमपद यहहै ॥ बिलम्ब छांड़ि आइये कि तो बुलाय लीजिये और दूसरे पदकातुक यहहै कि ॥

चौपाई ॥ देवाधि देव आयो तुम शरना । कृपा कीजिये जानि अनुपजना ॥

भगवत् सुनतही पदोंको सिंहासनपर से उठकर रैदासजीकी गोद में आबैठे और सब बिश्वासकरिके आधीनहुये तिसके पीछे रानीझाली काशीसे अपनी राजधानीमें आई और यज्ञ करनेकाबिचारकिया रैदास जीको बड़ा बिनयपत्र लिखकरभेजा रैदासजी चित्तौरमेंआये रानी बहुत आनंदितहुई बहुत रुपैया दानपुण्यकिया ब्राह्मणोंको शोचहुआ कि इस

रानीका गुरू चमारहै अच्छीबातहै कि सूखी सामग्री लेकर रसोई तैयार करें सो ऐसाहीकिया जबभोजन करनेकोबैठे तो सबने दोजनोंके बीचमें रैदासजीको बैठादेखा विश्वासयुक्त अधीन होकर चरणोंमेंपड़े औरलाखों मनुष्य चेलेहोगये और सबके विश्वासदृढ़ करनेकेहेतु अपने शरीर की खाल उतारके जनेऊ दिखाया औरगुरूके शापकीबात सबकही सब कामोह दूरकरके आपतन छोड़कर परमधामको गये जहां से फिरनहीं आता है ॥

गोपालभट्ट की कथा ॥

गोपालभट्ट ऐसे भगवत्भक्तहुये जो सारे संसारमें उनकी साखी विख्यातहै भक्तिकाप्रताप जिनकेललाटसे सूर्य्यके सदृश प्रकाशितथा भक्तों की सभाको शोभित करनेवाले और श्री मद्भागवतमें किसीको जोसंदेह होता तो अपने सर्बज्ञता से उसके निवृत्ती करनेवालेहुये बांगड़ देशको भगवत् परायण व भक्तकरदिया दास्यभावसे श्रीराधा बल्लभलाल के चरण रजके प्रेममें पूर्णरहे नवधाभक्ति के उपदेश करनवाले और भगवत्भक्तों की कृपाकेपात्र थे ॥

दिवाकर की कथा ॥

करमचन्द जो कश्यप के सदृश थे उनके घरमें दिवाकरजी संसारी जीवोंके हृदयके अंधकार दूरकरनेके हेतु दूसरे दिवाकर अर्थात् सूर्यहुये और बहुतसे राजाओंको उपदेश करके भगवत् भक्ति में लगाया हरि भक्तोंमें ऐसे थे जैसे फलसेलदी किसीवृक्षकीडाली भूमिपर लोटिजाती है और सबको वहफल मिलताहै भोलाराम उनका शरणागतकिया था श्रीरघुनन्दन स्वामीके निरपेक्षभक्त और सबकेमित्र और सबपर बराबर कृपाकरनेवाले हुये सीतापति अवधबिहारी महाराज के चरित्रोंका कीर्तन व सुमिरन किया करते थे ॥

खेमगोसाईं की कथा ॥

खेमगोसाईं विख्यात व नामीहैं कि रामदास अपनेगुरू की कृपासे श्रीरघुनन्दन स्वामी के अनन्य दासहुये इसलोक और परलोकमें सिवाय रघुनन्दन स्वामीके और किसीको कुछ नहींजानतेथे और न दोनों लोक के सुखदुःख से कुछ कार्य्य व सम्बन्ध था मनुष्य शरीर के रूप जो

दोनोंभुजापर धारण करतेथे उनको देख देखकरके बहुत आनन्द हुआ करतेथे और परमसुखमें मग्न रहाकरतेथे भक्तोंमें उत्तम पदवीमें थे ॥

कल्याणसिंह की कथा ॥

कल्याणसिंहजी को भक्ति का पक्ष और उदारता अत्यन्तहुई भक्ति पक्ष का संक्षेप वृत्तांत यहहै कि अपने भाई अनूपसिंह सहित श्रीनन्द नंदन महाराजके जन्मउत्साह के दर्शनकेहेतु नोनिरेशहर जहां उनका घर था तहांसे श्रीवृन्दाबनको आते थे एक सरावगी दुष्टकर्मी को देखा कि एकसाधू कंगालको दुःखदेरहाहै कल्याणसिंहजी ने उससाधु वैष्णव का पक्षकिया और उससरावगी से बचायलिया और उदारता का यह तात्पर्य्य कि धन सम्पत्तिदेना तो एक थोड़ीबातहै उनको प्राणदेनेसेभी शोच न था और भगवत् ने दोनोंबातें उनकी देहान्त पर्य्यंत निवाहीं पहिले जगन्नाथस्वामी के चरणोंमें प्रीतिरही अंत में रघुनन्दनस्वामीके चरणोंमें प्रीतिहोगई जगन्नाथ पुरी में रहाकरते थे रघुनन्दन स्वामी के स्नेहसे दोनोंलोल की स्पृहा दूरकरदी थी मनमें रूप और जिह्वापर रघुनंदनस्वामी व जानकी महारानी का नाम रहता था ॥

राजाखेमाल की कथा ॥

राजाखेमाल जाति के राजपूत राठौर ऐसे परम भक्तहुये कि उनके कुलमें भक्ति अचलहोगई रामराय बेटे कुंवरकिशोर पोते कि उनकावर्णन इसभक्तमाल में अलगहोआया परम भक्तहुये कि राजासेभी अधिक होगये राजाको भगवत् भक्तों में ऐसीप्रीतिथी कि जिसप्रकार चन्द्रमाको देखकर समुद्र तरंगलेताहै इसीप्रकार भगवत् भक्त को देखकर आनंद होतेथे भगवत् भजन में अत्यंत प्रेम था गंगाजल के सदृश मन बिमल मनबचन कर्मसे श्रीरघुनन्दनस्वामीके दास थे सिवाय उस चरणकमल के दूसरा भरोसा और आशा न थी ॥

केशव की कथा ॥

केशवजी लटेरा पदकरके विख्यात थे लटेरा दुर्बलको कहतेहैं काम क्रोधादिक में दुर्बलथे परंतु भक्तिभाव में पुष्ट और मोटेथे सुरसुरानन्द जीकी संप्रदायमें परमभक्तहुये जिह्वापर नाम और मनमें भगवत् चरित्र रहताथा जैसा प्रेमदास्यभाव भगवत्में किशोरजीका था ऐसाही उनके

पुत्रकोहुआ क्यों न होय कि जैसा वृक्षबोया था वैसाहीफललगा भगवत् चरित्रोंके कीर्तनमें एकहीथे तैसेही उदारता और दया में ॥

सोती की कथा ॥

सोतीजी हरिभक्तोंकी सभामें वन्दनीय व श्लाघ्य विख्यात सूर्य्यके सदृशहुये भजनका प्रताप ऐसाथा कि भक्ति और धर्म्म के ध्वजा थे श्री सीतापति अवधविहारी के चरित्रोंमें अनुक्षण मग्न रहाकरते और भगवत्के दास्यभावमें मनको ऐसा दृढ़कियाथा कि तनक दूसरी ओर चित्त की वृत्ति नहींजातीथी और नरहर जी उनके गुरू के प्रताप से ऐसीही भक्ति उनकेबेटे व पोते सबको भी हुई ॥

उन्नीसवीं निष्ठा ॥

जिसमें महिमा वात्सल्य व नवभक्त इस निष्ठा के उपासकों की कथा वर्णनहै ॥

श्रीकृष्णस्वामीके चरणकमलों की इन्द्रधनुष रेखाको दण्डवत्करके हरि अवतारको प्रणाम करता हूं कि गजके वास्ते वहरूप प्रगट करके आये और उसको ग्राहसे छुड़ाया वात्सल्यनिष्ठा वहहै कि अपनेबलसे भगवत्को खींचके उपासकके मन में स्थिरकरदेतीहै और ऐसाकदापि नहींहोता कि इसनिष्ठा के अवलम्ब से उपासना करनेवाले को भगवत् प्राप्त न होंय कारण यह है कि भगवत्का प्राप्तहोना मनके प्रेमपर निश्चयहै सो इसनिष्ठासे शीघ्र व विना श्रम प्रीति उत्पन्न होजाती है कि और किसीनिष्ठासे ऐसीशीघ्र नहींहोती प्रकट है कि प्रीति सांची केवल पिताको अपने पुत्रोंकेहेतु होतीहै और बेटा कैसाहीरूप व बुद्धिहीनहोय परन्तु पिताका कलेजेका टुकड़ा व आंखोंका प्रकाश है जो वहही प्रीति भगवत् में लगाई जावैगी तो क्यों नहीं शीघ्र तर भगवत् प्राप्त होगा सिवाय इस के बालकों के चरित्र ऐसे मनोहर हैं कि बरबश चित्त में बसिजाते हैं और बहुतेरों ने देखाहोगा कि किसीका लड़का लीला और तोतरी बातें करता है और सुन्दर भी है तो राहीं बटोही भी राहचलते उसकी लीलादेखकर प्रसन्नहोते हैं और कहलाते हैं और वह लड़का मनमें समाजाता है तो वह पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घन कि जिसपर सब सुन्दरताई व लीला और दूसरे चरित्र बालकोंके समान

हैं इस निष्ठाके सहारेसे आराधन कियाजावै तो क्यों नहीं शीघ्रमन में समायगा सिवाय इसके प्रीतिसब वस्तुकी किसी न किसीभयसे होती है और जब भयनहीं रहता तो प्रीतिभी कमहोजाती है और बेटेकीप्रीति आपसे आप मनके तरंगसे होतीहै इसहेतु उसको दृढ़ताहै इस रूपसे निश्चय होगया कि जो इसनिष्ठाके अवलम्बसे मन भगवत् में लगेगा तो कबहीं प्रीतिकी घटती न होगी और दिनदिन वह प्रीतिबढ़कर भगवत् परायण करदेवैगी जहां रसभेद का बादविवाद लिखा है तहां नव रसके निश्चयकरने वालोंने बात्सल्य निष्ठाको एकअंग करुणारस लिखा है और भगवत् उपासकोंने जो उनका उत्तरदिया और निश्चय रसोंकी करी तो करुणाको एक अंग बात्सल्यका ठहरायके दृढ़करदिया सो दोनों के बचनपर जो दृष्टिकीजातीहै तो समझ भगवत् उपासकों की ठीक और युक्तहै किसहेतु कि रसउसको कहते हैं कि जिसकरके अधिक स्वादु बिशेष करके उसबस्तुका कि जिसको रस बिख्यात किया गयाहै और किसीवस्तुमें न होय जैसे बीररस उसको कहैंगे कि सब पदवी बीरता व शूरताकी जिसपर समाप्तहोंगी इसीप्रकार यहां दयाके बिचार में मुख्यरस उसको कहना चाहिये कि जिसपर दयासमाप्त हो सो बिचार करके देखा जाताहै तो दया बात्सल्य निष्ठापर समाप्त है काहेसे कि करुणा उसको कहते हैं कि दूसरे का दुःख देखके मनकोमल होजाय और मनसे व बचन से व कर्म्म से उसके वास्ते उपायकरि जावै और बात्सल्य वहहै कि प्रीतिकी अतिझोंकसे धैर्य्य छोड़कर स्वाभाविक दया होवै और मन बचन कर्म्म एक बेर अन्तष्करण की झोंक और खींच से सब एक ओर एक वृत्तिहोजावै तो बिचारकरना चाहिये कि समाप्त होना दयाका बात्सल्य पर हुआ कि करुणा रसपर और दोनों में करुणा की अधिक प्रतिष्ठा हुई कि बात्सल्य भी अबभली प्रकार समझ में आनेके वास्ते एक दृष्टान्त स्मरण हो आया सो लिखताहूं एक संकीर्ण गली में एक ओरसे गायें आतीहैं और दूसरी ओरसे एक मनुष्य स्नान करके आताहै और ऐसाशुद्ध व पवित्रहै कि किसीको स्पर्शनहीं करता संयोग बश किसीका एक लड़का दोतीन बर्ष का खेलरहा है जब वह गायें उस लड़के के निकट आईं तो वह मनुष्य बड़ीदया से पुकारा कि कोई जलदी

से आकर इसलड़के को उठालेवें और आप अशुद्ध होजाने के भयसे न उठाया थोड़ीदूर चलाथा कि उसी मनुष्य का बेटाभी उसी अवस्था का राहमें खेलरहाथा और मिट्टी व कीचमें शरीर उसका अशुद्ध होरहाथा वह गायें इसलड़के के भी निकट आनिपहुंचीं वह मनुष्य धैर्य्य छोड़कर दौड़ा और कुछविचार अपनी शुद्धता और लड़केकी अशुद्धताका न किया तुरन्त उस लड़के को उठाकर अपने गलेसे लगालिया इस दृष्टान्त से विचार वात्सल्य और करुणारस में करलेना चाहिये सो मुख्यरस वात्सल्यहै और करुणा उसका एक अंगहै यह उपासना श्री दशरथ नन्दन अवधविहारी और श्री नन्दनन्दन वृन्दावन चन्दकी प्रवर्त्तमानहै और ऐसा अलौकिक भाव इस उपासना वालोंकाहै कि वर्णन उसका नहीं हो सक्ता भगवत् को अपनापुत्र मानतेहैं और उसीको पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घन मुकुन्द जानतेहैं कुछ रुरीति इस उपासनाको विष्णुस्वामी व वल्लभाचार्य्यकी कथामें लिखीगई और कोईकोई सामग्री आगे लिखीजायगी महिमा इस उपासना व उपासकोंकी निगम व आगम व ब्रह्मा व शिव भी नहीं कहिसके इस मतिमन्द पापपुंज को क्या सामर्थ्य कि जीभ हिलायसके और सचहै कि कोई किसप्रकार कहिसके कि जो पूर्णब्रह्म अनेक अनन्तक योगियोंके हजारों साधन करनेपरभी मनमें नहींआता सोउपासकोंके वास्तेनररूपहुआ और परमअनूपबालचरित्र दिखायेऔर अब दिखाताहै और आगे दिखावेगा आप उसी पूर्णब्रह्म को यहनिष्ठा ऐसीप्यारीहै कि अपने भक्तोंके चित्तको दूसरी निष्ठाओंसे फेरकर इस निष्ठाकी ओर प्रीतियुक्त लगादेताहै कि इसका निश्चय भागवत व रामायणसे अच्छाहोताहै अर्थात् नन्दरानी व देवकी व कौशल्या व वसुदेवको कईबेर अपनी ईश्वरता भगवतुने दिखाई जब उनके चित्तकीवृत्ति उसओरलगी तो आप भगवत् ने उसओरसे उनकेमनको फेरकर बाल चरित्रोंकी ओर लगादिया और परम आनन्ददिया जो भगवत् को यह निष्ठा प्यारी न होती तो क्यों ऐसाकरते और अबभी ऐसेभावको पक्का करदेनेके निमित्त अपनेभक्तों को इसप्रकार के चरित्र दिखलादेतेहैं कि देखनेसे कथा विट्ठलनाथ व कृष्णदास व कर्माबाई इत्यादिक से मालूम होताहै और थोड़ेदिनोंकी बातहै कि एकगोसाईं वल्लभकुल के कि नाम

उनका स्मरणनहींहै परमभक्त बात्सल्यरसके उपासकहुये एकबेर मनि-
हारी उनके घरकी स्त्रियोंको चूड़ीपेन्हाने के निमित्त उनके घरआई जब
गोसाईंजी दामदेनेलगे तो मनिहारी ने कहा कि मैंने सातलड़की व बहू
इत्यादि स्त्रियोंको चूड़ीपहिनाई हैं गोसाईंजीने उत्तरदिया कि मेरेघरमें
छः स्त्रियां बेटी और बहू समेतहैं इसबाद बिबाद में मनिहारी बिनादाम
लिये चलीगई रातको राधिकामहारानी ने स्वप्नमें गोसाईंजीको कहला
भेजा कि क्या मैं तुम्हारीबहू नहीं जो मेरी चूड़ियोंके दाम मनिहारीको
नहींदेते हो अब देखना चाहिये कि भगवत् कैसे मनोहर चरित्र करके
अपने भक्तोंके भावको पक्काकरदेते हैं सो यह बात्सल्य निष्ठा भगवत् के
शीघ्रमिलने के हेतु सब निष्ठाओंका तत्त्व व अभिप्राय व परम सार है॥
ग्रन्थ के आरम्भ में लिखागया कि रस चार सामग्री अर्थात् बिभाव अ-
नुभाव सात्विक व्यभिचारी से प्रकट होते हैं सो इस बात्सल्य रस में
पहिली सामग्री के सामाग्रियों में पूर्णब्रह्म परमात्मा अच्युत अनन्त स-
च्चिदानन्दघन श्रीनन्दनन्दन महाराज के रघुनन्दन महाराज तीनबर्ष
से सात वर्ष तक अवस्था वाले सुकुमारअङ्ग तुतले बचन श्याम सुन्दर
स्वरूप शिरपर छोटासा मुकुट शरीर में महीन ज़रतारी का कुरता गोटे
पट्ठे से भराहुआ कानों में झूमका और छोटे छोटे कुण्डल व गोरोचन का
तिलक भालपर नाकमें बुलाक कपोलपर डिठौना आखैंढीठ और चञ्चल
गलेमें कठुला व यन्त्र व बघनखा हाथों में कड़े व पहुंची चरणकमलों
में घुंघुरू यह बिषयालम्बन है और नन्द यशोदा व कौशल्या महारानी
इत्यादि आश्रयालम्बन और अत्यन्तचञ्चलता व चपलताकी कबहींमाता
की गोदमें हैं और कबहीं खिलौनों की ओर चित्त कबहीं परवेरुओं पर
दृष्टि कबहीं भोजनपर सुरत और कबहीं किसीबस्तु के लेनेपर हठ कहीं
तोतलीवाणी से कुछ पूंछना और कबहीं पलँग को पकड़कर खड़ाहोना
कबहीं माताकी उंगली पकड़कर चलना सीखना कबहीं नाचना कबहीं
आंगन में अपने सखाओं और भाइयों के साथ खेलना ऐसे ऐसे अनेक
चरित्र॥ स्नानकराना शृङ्गारकरना व बालचरित्र के खिलौना इत्यादि
सजिरखना सबप्रकार के पदार्थ खिलाने के योग्य भोजनकराना प्यार
करना लाड़ लड़ाना गोदमें लेकर रंग रंग की सैल कराना आशीर्बाद

देना और इसीप्रकार के अनेकसाज व सामा की चिन्तन सबसामग्रियां सामग्री पहिली अर्थात् विभाव में कि और सामग्री दूसरी अर्थात् अनुभाव की हैं ॥ सामा तीसरी अर्थात् आठप्रकार के सात्त्विक सब इसरस में प्रवर्त्तमान होते हैं व तेतीसों व्यभिचारी अर्थात् सामग्री चौथी में से दश दश इस रसमें प्राप्तहोते हैं एक मनस्ताप दूसरी दुर्व्वलता तीसरी विवशता चौथी मन उचट जाना संसार के सबकामों से पांचवीं अदृढ़ता छठवीं जड़ता सातवीं दुःखीहोजाना आठवीं उन्मत्तता नवींमूर्छा दशवीं मृत्यु और इसरसका स्थायीभाव वहहै कि चिन्ताकी वृत्ति दोनोंलोककी चिन्ताको छोड़कर एकाग्र होकर दिनरात अचलभगवत्के स्वरूप और प्रेममें दृढ़होजाय और किसीप्रकार किसीओर न जाय ॥ हे श्रीनन्दनन्दन हेदीनवत्सल हे प्रणतार्त्ति भंजन हे पतितपावन हेदीनबंधु हेकृपासिंधु महाराज आजतक जो निन्दा इसमनकी विनय करके तो व्यर्थ जानिपरताहै किसवास्ते कि उसीनिन्दासे कबहींकुछप्राप्त नहुआ और न इसमन अभागेने कुछसुना और न कुछमाना जो उसकृपा और प्रसन्नताका कि जिसके प्रभावकरके अजामिल और गज व गणिका व पशु पक्षी इत्यादि विनाकुछसाधन व भजन एकक्षणमें परमपदको पहुंचकर जन्ममरणके बंदीखानेसे छूटगये आश्रित होकर आपके द्वारपर विनय व प्रार्थना किया करता तो आपके विरद व दयासे कबमें ऐसाही संसारी रहता और यहमन अभागा मेरेवशीभूत क्यों नहोजाता सो अब उसीकृपा व दयाकी आशकरके विनय करताहूं कि जिसप्रकारसे होनेसकै ऐसी कृपादृष्टिहोय कि रूपअनूपआपका दिनरातअचल मेरीआंखोंमेंबसारहै ॥

क० कबहूं ससि मांगत आरिकरैं कबहूं प्रतिबिम्ब निहारिडरैं ।
कबहूं करताल बजायके नाचत मातु सबै मन मोदभरैं ॥
कबहूं रिसमारि कहैंहठतौं पुनि लेतवही जेहि लागिपरैं ।
अवधेशके बालक चारिसदा तुलसीमन मंदिरमें बिहरैं १ ॥
तनकीदुति स्याम सरोरुह लोचन कञ्जकी कोमलताई हरैं ।
अति सोहत धूरि भरे छवि भूरि अनङ्गकी दूरि धरैं ॥
दमकैं दँतियां दुतिदामिनिज्यों किलकैं कलबालविनोदकरैं ।
अवधेशके बालक चारिसदा तुलसी मनमन्दिरमें बिहरैं २ ॥
ईति की पहुंचि कुंद कली कञ्ज पर पल्लव सोहत सी ।

चपलाचमकै घनविज्जुजगै छवि मोतिनमाल अमोलनकी ॥
घुंघुरारि लटैं लटकैं मुख ऊपर कुण्डल लोल कपोलन की।
न्योछावर प्राणकरैं तुलसी बलिजाउंलला इनबोलनकी ३ ॥
दोहनीकीसमय बामनमोहन ललाजूकी ललितलोनाई कबिबरनैकहाकहैं।
कबहूं किलकिधाय नन्दके निकटआय करउचकाय मुखतोतरे बबाकहैं ॥
ताकेबूजरानी महाकौतुक सिरानी दीठ बानीमृदुसुनत बलैयालेउ माकहैं।
ओटहैगैयाकी ललैया बलगैयादैकै यशुमतिमैयासों कन्हैयाजब ताकहैं ४ ॥

कौशल्याजी की कथा ॥

कौशल्या महारानीके भाग्य की बड़ाई और भक्ति भावका वर्णन कौन कर सक्ताहै कि पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घन जिसकी महिमा को वेद व शास्त्र वर्णन करके पार नहींपाते सो जिस कौशिल्या के भक्ति के बशहोकर परम मनोहररूप धारण करके प्रकट हुये और ऐसे चरित्र पवित्र दिखलाये कि जिनको सुनकर महा २ पातकी भवसागर पार होते हैं महाराजाधिराज दशरथजी की कथामें बर्णन हुआ कि पहिले जन्म में दशरथजी स्वायंभूमनु और कौशल्या महारानी शतरूपा रहे और उन को बरदान हुआ कि तुम्हारा पुत्र हूंगा उससमय सतरूपाने यहभीमांगा कि हमकोज्ञान तुम्हारे स्वरूपका बनारहै भगवत्ने आज्ञा की कि माताकाभाव औरज्ञान दोनों तुमको बनारहैगा सो वैसाही कौशल्याजीको दोनोंभाव बनेरहे इसहेतु बात्सल्य की उपासनाका आद्याचार्य कौशल्याजीको समझना चाहिये॥ एकसमय कौशल्या महारानी भगवत्को पालनेमें सुलाकर आप कुल देवताके पूजन करनेकोगईं व पूजाकेसमय भगवत् अर्थात् रामचन्द्रकोदेखा आश्चर्य मानकर वहां से भगवत्के शयनके स्थानमेंआईं तो वहां सोतादेखा फिरपूजाके घरमेंगईं तो वहांभी भगवत्कोदेखा सो दोचारबेरके आनेजानेमें जो दोनों जगह भगवत्कोदेखा तो चिन्तामेंहोकर बिचार करनेलगीं कि यहकौन कारण है भगवत्ने यहचिंता देखकर अपने स्वरूप और अपनी मायाके दर्शन माताको कराये कि अगणित ब्रह्माण्डहैं और अलग अलग प्रकारसे सब ब्रह्माण्डोंकी रचनाहै और सबमें श्रीरघुनन्दन महाराज बिराजमान हैं परंतु भगवत्कारूप ब्रह्माण्डोंकी भांति अनेक प्रकारकानहीं सबजगह एकही प्रकार व बराबरहै ब्रह्मा शिव सिद्ध देवता असुर इत्यादि स्तुति

करतेहैं और एककोनेमें वहमाया कि जो सबब्रह्माण्डोंको बनाकर फिर नाशकर देतीहै डरसहित खड़ी है कौशल्याजी यहचरित्र देखकर डरीं और घबराय के चरण पकड़लिया भगवत् ने हँसिकर बोधकिया और वचनहुआ कि अब मेरीमाया तुमको कबहीं न सतावैगी इस चरित्र से भगवत् शिक्षाकरतेहैं कि जिसको मेरास्वरूप लाभहुआ उसको मुझसे सिवय और कौनपूजने के योग्यबाकी है काहेसे कि जिसदेवता में जो ईश्वरताहै सो सबमेरी दीहुईहै और वहदेवता हमारेही सम्बन्धसे पूज्य है फिरतो कौशल्याजी इसप्रकार भगवत् स्वरूपके चिन्तवन औरलाड़ लड़ानेमें तत्परहुईं कि जिसकावर्णन नहीं होसक्ता सो जब रघुनंदन महाराज बनको चलेगये तो स्वरूप भगवत्का ऐसासन्मुख कौशल्या जी के रहताथा कि कबहीं बनकाजाना मालूमनहुआ जबकोई स्मरण कराय देताथा तब बनकाजाना मालूम होताथा फिर एकक्षण के पीछे वहीदशा होजाती थी जब रघुनंदन महाराज लंका जीतकरआये और कौशल्या महारानी जैसे पहिले आरती भगवत्की कियाकरती थीं आरती करने लगीं तो यहमालूम न हुआ कि यहसमय कौनसाहै और यह शोचहुआ कि लड़केने ऋषीश्वरों कासारूप क्योंबनाया है और मेरीप्यारी बहूका रूपभी वैसाही बनालिया दुःखितहुईं और उसीघड़ी जानकी महारानी को अपनेसाथ उठालेगईं और आभूषण इत्यादिसे शृङ्गार कराया और जब भगवत्के राजसिंहासनपर बैठने की समाज व धूम धामका आनंद सारे संसारमें हुआ तो कौशल्या महारानी को यह चिंताहुई कि राज तिलकके समय ऋषीश्वर व देवता व असुर इत्यादि सब आवेंगे और मेरा लड़का औरबहू परम सुकुमार औरकोमल और मनोहरहैं ऐसानहो कि रूप अनूप देखकर किसीकी नज़र लगजावे सो सुमित्रा इत्यादिरानी तो मंगल व आरती इत्यादिकी तैयारीमें रहीं और कौशल्या महारानी को आरतीके करनेके समयतक तलाश व उपाय ऐसी ऐसी वस्तुओंरही कि जिनसे नज़र नलगे सो राजतिलक के समय आरती करने को आरंभ किया तोपहिले नज़रके बचानेवाले स्याहीकी बिंदी अपने लड़के व बहूके चेहरेपर लगालिया तब आरतीकरी औररूपको देखकर परम आनंदमें मग्नहोगईं उससमयके परम आनंदका मन भक्तोंके हृदयमें बसाहै ॥

श्री नन्दबाबा व यशोदारानी की कथा॥

ये नवनंदहैं--धरानन्द १ ध्रुवानन्द २ उपनन्द ३ अभयनन्द ४ सुनन्द ५ अभयानन्द ६ कर्मानन्द ७ धर्मानन्द ८ बल्लभानन्द ९॥ तिनमें धरानंदजीकेघर भगवत्का अवतारहुआ सो धरानंदजी व यशोदारानीकी यहकथा है यशोदा महारानी व बाबानंदजी के भाव की महिमा कौनकहिसक्ताहै कौशल्या महारानीका भाव व इनकाभाव एक है बारबराबर भी भेदनहीं जोकोई न्यून बिशेष कहै तो कारण उपासना भावकेभेदको समझना चाहिये लीलाचरित्रोंका भेद अलबत्ताहै अर्थात् श्रीराम अवतारमें तो ऐसाचरित्र बहुत नहींहुआ कि जिसको कौशल्या जी से छिपानेका प्रयोजनपड़े और श्रीकृष्ण अवतार में आरम्भही से सबचरित्र ऐसेहुये कि मातासे छिपाना अवश्यपड़े कारण इस प्रकार के चरित्रोंका प्रकाशित और सबको मालूमहै कि भगवत्का अवतार केवल जगत् उद्धारकेहेतु होताहै सो ऐसे चरित्र मनोहरकिये कि सबकामन भगवत्की ओरलगिजाय और उनचरित्रोंकी खबर यशोदामाता औरनंद बाबाको कबही नहींहुई और जोकोई कारण संदेहका होगया तो यह समझा कि हमारा बालकभोला और सीधासादाहै उसने यहकाम कदापिनहीं कियाहोगा सोजबआप गोपिकाओंका माखनचुराते और वे सब मनमोहनके रूप अनूपके देखनेवास्ते उरहनेके बहाने यशोदामहारानी के पासआतीं और फिरियाद करतीं तो यशोदा महारानी अपने पुत्र कौतुकीका अपराध कदापिन समझतीं बरु उनहींको लजावती एकबेर रातको किसी कुंजमेंआप और प्यारीजी बिहार और रासबिलास करते थे जबदोचार घड़ीरात शेषरही तो कौतुकी महाराज चुपके चुपके अपने पलंगपर आकेसोरहे औरजल्दीमें पीताम्बर छूटगया नीलाम्बर बदले में लायेथे उसीको ओढ़े शयनमें थे प्रभातही यशोदाजी ने जगाया तो नीलाम्बर को देखकर यह जाना कि बलदेवजी का नीलाम्बर बदल गया और आपुसके परस्पर हँसी खेलमें नखोंके चिन्हश्री अंगपर झलक रहे थे तो उसको यह बिचारकिया कि कालहइसी बनमें यहलड़का गया था कि बंदरों ने घेरलिया और उनके नखोंका चिन्ह शरीर पर है और रातके जगने से उनींदी आंखोंको यह जानाकि नखों के लगने से बंदरों

के रातको नींद नहीं आई अति प्यार दुलार करके छाती से लगाया और रोनेलगी और समझायाकि अबसे ऐसे बनमें कदापि मत जाना और ब्राह्मणोंको बुलाकर दान व निछावरदिया व यद्यपिघरमें हज़ारों दास दासीथे परंतु जोगऊनिज भगवत् के वास्ते नामकर के थीं उनकी सेवा और उनके दूधको गरम करना व जमाना और बिलोवन यशोदा जी निज अपने हाथ से किया करती थीं और जो माखन होता था उसको अलगअलग कईपात्रोंमें ऐसीजगह रखतींकि जहां आतेजाते भगवत्की दृष्टि पड़े अभिप्राय यहथा कि किसीप्रकार यह लड़का मुझसे मांगकर अथवा छिपाके कुछ माखन खावे किशरीर से पुष्टहो ब्राह्मण फकीर कुछ जानने वाला जो कहीं सुनतीं तो उसको बड़े निहोरे और चाहसेबुलातीं और धन द्रव्य उनको मनमानी देकर इस बातका यंत्र और गंडा बनवाया करतीं कि लड़का सुकुमार है बुरीभली जगह समय व बे समय फिरताहै किसीकी नज़र न लगजावे और अच्छेप्रकार भोजनकिया करें ऐसे २ चरित्र असंख्यहैं कि जो कोटान कोट जन्म शेष और शारदाका पाऊं तबभी वर्णन नकरसकूं और किसप्रकार वर्णन होसके कि जो मनुष्य महापापी और पतित उस भाव और चरित्र यशोदा माता के स्मरण करलेता है उसकी महिमा किसीसे नहींकहीजाती और तरणतारण हो जाताहै जो परम आनंद यशोदा माताको लाभहुआ सो न शिवको न लक्ष्मीको और किसीकी तो क्या गिनतीहै कि भगवत् इसबातका साक्षी है कि एक सिखापन भगवत्का इस कथामें लिखना उचित समझा और वह यहहै कि जब यशोदाजीने कईबातें और धूमधामके करने के कारण से उसढीठ व धूम करनेवाले को ऊखल में बांधना विचार किया तो यह बातसुनकर सब गोपिका प्रसन्न हुईं कि आज सब लंगराई का बदला होगा और अपने अपने घरसे रस्सी लेकर दौड़ीं और निजकामना यहथी कि इसी बहाने से उस परमसुंदर को देखिआवें जब यशोदाजी बांधने लगीं तो सबरस्सी दो अंगुल घटजाती रही यहांतक हुआ कि किसी गोपिकाके घर रस्सी न रही और भगवत् न बँधे तब तो यशोदा जीको बड़ीलज्जा व खिन्नताहुई श्रमहुआ तब कृपासिंधु नेत्र उन कृष्णचंद्र ने इस चरित्र में यह शिक्षा है कि मेरे बांधने में केवल

दो अंगुल का बीचहै एक अंगुल का तो भक्तकी ओरसे अर्थात् परिश्रम व उपाय के शोच का और दूसरा एक अंगुल का मेरी ओर से अर्थात् करुणा व दयालुता का सो जिस समय भक्तकी ओरसे परिश्रम सहित उपाय होय और उसके कारणसे मैंने दयाको किया तो तुरंत बंधि जाताहूं अर्थात् ढूंढने वालेको मिल जाताहूं ॥

बिट्ठलनाथकी कथा ॥

बिट्ठलनाथ गोसाईं बल्लभाचार्य्य के बेटे जिनकीकथा धर्म्म प्रचारक निष्ठामेंलिखीगई ऐसेपरमभक्त बात्सल्य निष्ठाकेहुये कि जोसुख बात्सल्य का नन्दबाबाको हुआथा सोई भगवत् ने कृपाकरके उनकोदिया बिट्ठलनाथजी की रीतिथी कि रात दिन भगवत् आराधन व लाड़ लड़ाने और खिलाने और रागभोग की तैयारी और सेवामें रहतेथे प्रभातही भगवत् को जगाना और मुखारबिन्दधोना कुछभोजन कराना फिर स्नानकराना आभूषण व पोशाक पहिराना शृङ्गारकराना खिलौना अनेक प्रकार के ढूंढ़के लआना सेजबिछाना शयनकराना और दूसरे सब बालचरित्रोंमें तत्पररहना और यह आराधन केवल एकबेरका न था सातबेर करतेथे तात्पर्य्य यह कि सेवा और आराधन के बिना चित्तकी वृत्ति दूसरीओर नहींजाती थी जैसाकुछबास्तवमें गोकुल और नन्दरायजीका समाजथा वैसाही शोभाका सामान अपने सेवकोंके हृदयमें प्रगट करदियाथा इस में संदेहनहीं बिट्ठलनाथजी ने कलियुगको द्वापरकर दिया यद्यपि ध्यान में भगवत्के बालचरित्रों का दर्शन साक्षात् दर्शनों के बराबर होता था परंतु एकबेर चाहनाहुई कि साक्षात् भगवत्के बाल चरित्रदेखें भगवत् ने उनका मनोरथ पूर्ण करना बहुत उचित समझ कर आज्ञाकिया कि हम अपने आवेश अवतार से अपने बाल चरित्र दिखावैंगे सोजबगिरिधर जी बड़ेपुत्र उत्पन्न हुये तो उनके शरीर में भगवत् की कलाने प्रकाशकिया और बालचरित्र बिट्ठलनाथ जी को दिख लाये जब गिरिधर जी पांच वर्ष की अवस्थासे अधिक हुये तोवही कला गिरिधर जीसेअलग होकर दूसरे पुत्रके शरीर मे आय गई इसी प्रकार सात पुत्रहुये और सब में भगवत् ने अपनी कला का प्रवेश किया और बाल चरित्र दिखाया एकबेर भगवत् बंदर को देख कर डरे और दौड़ कर बिट्ठल

नाथ जीकी गोद में आय छिपे उसघड़ी विट्ठल नाथ जीको भगवत् की ईश्वरता का ध्यान था प्रेम से गोद बैठाकर प्यार करके बोले कि जिस घड़ीलङ्कापर चढ़े और असंख्य बन्दर कालके सदृश बिकराल साथमें थे उस घड़ी तो कवहीं न डरे अब इस छोटे एक बन्दर से किस हेतु डरे हैं भगवन् ने कहा कि जो तुम्हारे चित्तकी वृत्ति मेरे ईश्वरता की ओर लगीहै तो बालचरित्र के उपासना का क्या प्रयोजन है और जो बाल चरित्र की उपासना निश्चय है तो उन चरित्रोंका कारण पूंछना कुछ प्रयोजन नहीं मेरे चरित्र और मेरे स्वरूप भक्तवत्सल व कृपालुता करके भक्तोंकी चाहना के अनुकूल होते हैं नहींतो इनबातों से अलग और सबमाया के गुणों से परेहैं विट्ठलनाथ जी इस भगवत् की कृपासे अतिआनंद को प्राप्तहुये सातों पुत्रोंका नाम वल्लभाचार्य्यजी के परंपरा में लिखाहुआहै सब आवेश अवतारहुये सातगादी उनके नाम से अबतक गोकुल में विराजमानहैं और विख्यातहैं इससंसार समुद्र से पार उतारने को मानों सात जहाजहैं स्वामी बल्लभाचार्य और विट्ठलनाथ और उनके पुत्रोंकी विराजमान कीहुई सातमूर्त्तियां तिनमेंसे एक मूर्त्ति श्रीनाथ महाराजकी उदयपुर के रानाकी चाह और प्रार्थना व विनयसे आलमगीर बादशाह जिससमयथा तब रानाके राजमें सैर करने को पधारे और उदय पुरसे बारह कोश उत्तर ओर विराजमान हैं और नाथद्वारा सारे संसार में प्रसिद्ध और विख्यात व अबतकआप श्रीनाथजी वहां पथिकों की भांति शोभितहैं निज अपने रहनेके वास्ते कोई मन्दिर नहीं बनवाया गोसाईं लोग व पुजारी लोगोंके वास्ते बड़ी बड़ीभारी इमारतें तैयार होगईहैं और विट्ठलनाथजीके वंशमेंसे वहां के अधिकारी व गोसाईंहैं और इसीप्रकार दूसरीमूर्त्ति गोकुलचन्द्रमा नाम आलमगीरही के समयमें जयपुरका राजा लेगया वहमूर्त्ति भी अबतक जयपुरमेंहै और गुरुद्वाराभीबड़ाभारी विट्ठलनाथकेवंशमेंसे वहां पुजारी व गोसाईं हैं ॥

कर्म्माबाई की कथा ॥

कर्म्माबाई परमभक्त वात्सल्य उपासकहुईं रीतिहै कि बालक छोटे स्वभावसे डरतेहैं और खिचड़ी बहुधा खानेको मांगा करतेहैं और

माको लड़केके जगने के पहिलेसे चिंता होतीहै सो कर्म्माबाईको उसी भावसे पहिले चिंता भगवत् के खिचड़ी तैयार करनेकी होतीथी और बिनान्हाये और क्रियाआदिकके किये थोड़ीसी खिचड़ी छोटीसी कुल्हड़ी में अंगारोंपर रखदिया करतीं और जब वहतैयार होजाया करती तो अत्यन्तप्यार व प्रीति से भगवत्को भोगलगायाकरतीं व जगन्नाथराय स्वामी पुरुषोत्तम पुरीसे आयकर और अति प्रसन्नहोकर भोजन किया करते एकबेर कोईसाधु आगया वह आचार पूर्वक भोगलगाने को शिक्षा करगया लाचार कर्म्माबाई आचार पूर्वक भोग लगानेलगीं अबदेरी भोजनमें भगवत्के होनेलगी एकदिन कर्म्माबाईजीके गोदमें बैठ खि-चड़ी खायरहेथे कि पुरुषोत्तम पुरीमें राजभोगकी तैयारीहुई और बिना हाथमुँह धोये वहां पहुंचे जब पंडोंने भगवत्के हाथ और मुखसे खिचड़ी लगी देखी तो चकितहुये और बिनय करके पूंछा तो आज्ञाहुई कि क-र्म्माबाई हमको प्रभातही खिचड़ी भोगलगाया करतीथी और हमउसके प्रीतिके बशहोकर भोजनकरने जाया करतेथे अब एकसाधूने उस बाई को आचार क्रियाकी शिक्षा करदीहै इसकारण बिलंब होजाताहै सो उससाधुको आज्ञादेव कि कर्म्माबाईको पहिले जिसप्रकारसे करतीरही तैसेही करनेको शिक्षा देआवें पुजारियोंने उस साधुको ढूंढकर कर्म्माबाई जी के घरभेजा भगवत् आज्ञाकी शिक्षा देआया कर्म्माबाईजीने कि उस क्रिया आचारको बड़ीबलाय समझ रक्खाथा इस हेतु कि मेरा लड़का सुकुमार और थोड़ा खानेवालाहै सो दोपहर तक भूखा रहनेलगा जब पहिलीरीतिकी शिक्षापाई तो ऐसी प्रसन्नहुई कि अंगमें न समाई अबतक जो जगन्नाथरायजीको सब भोगोंसे पहिले खिचड़ीका भोग कर्म्माबाईके नामसे लगताहै तो इसके दोकारण समझमें आते हैं एकयह कि गीताजी में भगवत्का बचनहै कि जोकोई जिसभावसे मरताहै सो उसी भावको प्राप्त होताहै सो इसबचनके प्रमाणसे कर्म्माबाईजीको यशोदा महारानी की पदवीमिली काहेसे कि उनको मरनेके समय अपनेबात्सल्य भावमें दृढ़निष्ठाथी और उसीके अनुसार कर्म्माबाईजी अबतक भगवत्को खि-चड़ी भोगलगातीहैं दूसरा यह कि भगवत् अपनेभक्तोंको शिक्षा करतेहैं कि मेरीप्रीति और बात्सल्यकी यहपदवीहै कि कर्म्माबाईजीकी खिचड़ी

का स्वाद अबतक मेरी जीभसे नहींमिटा उपासक लोग और प्रेमीलोग व रसिक लोगोंको मालूमरहै कि इसमें संदेहनहीं जो कर्म्मांबाई आप आकर खिचड़ी भोगलगाती हैं किसहेतु कि हजारों प्रकारके भोजन भगवत्के वास्ते पुरुषोत्तम पुरी में तैयार होतेहैं परंतु जो स्वाद व मिठाई कर्म्मांबाईजी की खिचड़ी में है इसप्रकार और किसी भोजनमें नहीं ॥

कृष्णदास की कथा ॥

कृष्णदासजी वात्सल्य निष्ठामें ऐसे परमभक्तहुये कि श्री गोवर्द्धन धारी व्रजभूषण महाराजने अपने नित्यपरम आनन्दमें मिलालिया श्री बल्लभाचार्य गुरूके वचनपर ऐसे आरूढ़हुये कि आप भजन व सेवा के स्वरूप होगये और उनकाकाव्य दूषण रहित ऐसाथा कि पण्डित और भक्त सबकोई जिसको धन्य कहकर समझ के दण्डवत् करते थे और अबतक विमुखोंको राह धराने वालाहै व्रजके रजको अपने इष्टदेव के सदृश जाना व सदा भगवत् भक्तोंके सत्संगमें रहे एकबेर शृङ्गार की सामाके खरीदने वास्ते दिल्लीमें आये जलेबी विमल देखकर चित्त में आया कि जो नाथजीके वास्ते यह जलेबी भेजीजावे तो आंगनमें खाते फिरतेहुये और बन्दर व जानवरों को खिलाते हुये बहुत प्रसन्न होंगे और यहभी जानेंगे कि हमारे बाबाने हमारेवास्ते दिल्लीकी मिठाई भेजी है और अपने सखाओंको खिलावेंगे बस उसध्यानके स्वरूपके चिन्तवन में मग्नहोकर उन जलेबियों का भोग श्रीनाथजीको लगाया और वह ऐसा अंगीकारहुआ कि थाल जलेबियों का उठाके दूकानसे कृष्णदास जीके आगे आयगये कि उसकाप्रसाद अपने सेवकोंको दिया कोई कोई ने तो न लिया और यहसमझा कि पुजारीकी बुद्धिमें भेद आगया है न जानें यहजलेबी किसआचारसे बनीहै और कोई कोई ने लेकर महा प्रसाद विचारकिया और कृपा व आचारकेवास्ते यहसमझा कि बड़ोंके आचरणमें पकड़करना न चाहिये उनकीआज्ञाको शिरपर रखना उचित है वहांसे आगेचले एक बारमुखीको नाचते देखकर प्रेम में मग्नहोगये कि इसनन्दकुंवरी का नाच नाथजीको दिखानाचाहिये और अपने पास बुलाकर कहा कि हमारा लड़का नाच गान का बड़ा रसियाहै उसके सामने नाचनेकोचल उसने मंजूरकिया सो साथलेकर आये और गोवर्द्धन

जीमें मानसीगंगा स्नानकराकर गहने व वस्त्र चमक के पहिनाये और अतर पान सुरमा इत्यादिसे सँवाँरिके मन्दिरमें लेगये वह वेश्या श्रीनाथजीका स्वरूप देखकर प्रेमकेमद में मतवारी होगई और मन क्रम वचनसे भगवत्की होकर देखने और दिखलानेके रसमें बेसुधबुधहोगई कृष्णदासजी ने पूछा कि हमारे साहिबज़ादे को देखा वेश्या ने उत्तर दिया कि देखा औरमेरेमन व नयनोंमें समागया फिरउसने नाचनागाना प्रारम्भकिया और ऐसीऐसी भाव अपने मुसकान व चितवन व बतलाने इत्यादि की बनाई और दिखलाई कि उसपरम रिझवारको अपनेरूप और नाच और राग और भावके बशमें करलिया फिर तदाकार रूप होकर और तनको छोड़कर नित्यबिहार में जामिली भगवत् भक्तों को करोड़ोंदण्डवत्हैं कि एकक्षणमें परमपातकी और अधर्मीको कि जिन्हों ने कबहीं नामतक मुख से न उच्चारण किया था उनको उसपदवीको पहुँचायदेतेहैं कि आप वह अनन्त ब्रह्माण्डों का उत्पन्न करनेवाला हो जाताहै कृष्णदासजी ने प्रेमरस राम ग्रंथबनाया कि उसको आप श्रीनाथजीने अंगीकारकिया और सब भक्तोंको उसमें प्रेम व प्रमाण है मिलनेके समय सूरदासजीने कृष्णदासजी से कहा कि कोई पद अपना बनाया ऐसापढ़ो कि जिसमें मेरे बनायेपदों का भाव न होय कृष्णदास जीने दशपांच पद सुनाये परन्तु सूरदासजी ने सबमें अपने बनायेहुये भावको ठहराया व पदपढ़दिया कृष्णदासजीने कहा कि तुम्हारे कहने अनुसार पद कल सुनावेंगे और चिन्तामें हुये व श्रीनाथजी महाराज परमकृपालु ने जो चिन्ता अपनेभक्तकी देखी तो आप एकपद बनाय के उनके तकिया के नीचे रखदिया कृष्णदासजीने जो प्रभात को उठकर देखा तो भगवत्कृपासे आनन्दहुये और सूरदासजीको वह पदसुनाया सो सूरदासजी भी परमभक्त थे जानिगये और कहा कि यह करतूत तुम्हारे कौतुकीकीहै कि अपनेबाबाकी हिमायतकी और दोनों भगवत् प्रेममें बेसुधिबुधि होगये॥ पहिला तुक भगवत्के बनायेहुये पदका यह है (आवत बनेकान्ह गोपबालक सँग बच्छकी खुररेणु छुरित अलकावली) मालूमरहै कि कृष्णदास जी और सूरदासजी दोनों गुरुभाई वल्लभाचार्य्यजी के चेलेहैं कृष्णदासजी नित्यमथुराजीसे बिश्रान्तघाटका

जल भगवत् स्नानकेनिमित्त ले आयाकरते थे गोवर्द्धनजी से नवकोशहै भगवत् ने मनाकिया कि इतने परिश्रमका कुछ प्रयोजननहीं परंतुजब कृष्णदासजी ने न माना तो श्रीनाथजी ने अपने शिरमें चिह्न लेआने कलशजलका दिखलाया कृष्णदासजी लाचारहोकर कूपकेजलसे स्नान करानेलगे एकदिन पांवकेकंपनेसे कूपमें गिरपड़े और भगवत् के नित्य लीला विहारमें जायमिले रसिकलोगोंको एक तो दुःख उनकेवियोगका दूसरे कुँए में गिरकर मरनेका हुआ श्रीनाथजी महाराज उस निन्दाको न सहिसके कृष्णदासजी को नित्य बिहार में मिलनेकी सबको परीक्षा दी यह कि कृष्णदासजी एक ग्वाल को गोवर्द्धनजी के निकट मिले और उस ग्वालसे यह बातकहा कि गोसाईं विट्ठलनाथजी से दण्डवत् करके विनयकरना कि इसवड़ी वहकौतुकी और ढीठ गोवर्द्धनकी ओर अकेला चलागयाहै उसके ढूंढ़नेको जाताहूं इसहेतु आयनहीं सक्ता और मेरेशयन स्थानमें साठहजार रुपयागड़ाहै तुमउसको निकलवाकर आधेका आभूषण व शृङ्गार श्रीनाथजी का और आधासाधुसेवामें लगादेव विट्ठलनाथ जी ने जो कहनेके पतेपर ढूंढ़ा तो उतनाही रुपया निकला और सबको विश्वास हुआ॥

गोकुलनाथ की कथा॥

गोसाईं गोकुलनाथजी विट्ठलनाथ के पुत्र वल्लभाचार्य्यके पोते भक्ति और सबगुणोंके समुद्र व बुद्धिमान व सुन्दरधीर सहिष्णुमितभाषी श्री गिरिधर महाराजके भजनमें दृढ़हुये भक्तिके प्रतापसे जिनके चरणों को सबराजा दण्डवत् करतेथे भीतरबाहर एकभांति और मनसब संसारियों के लाभके हेतु सावधान रहताथा उनकी सेवामें एक कोई बड़ाधनवान सेवक होनेके वास्ते आया और लाखोंरुपया भेंटकरनेके वास्ते लेआया गोसाईंजी ने उससे पूंछा कि तुम्हारीप्रीति हृदयकी किसवस्तुमें है उस ने उत्तरदिया कि किसी वस्तु में नहीं गोसाईंजी ने कहा कि तुमकिसी ओरसुनकोढूंढ़ो जो तुमको किसीओरकी प्रीतिहोती तो होसक्ता कि उस ओरसे मनको हटाकर भगवत् की ओर लगादिया जाता और जब कि स्नेहका बीजही नहीं तो भक्तिका फल कब उत्पन्नहोगा जो मनहै कि जो मनस्नेह व चाहरहित है सो मानो पत्थरके सदृशहै॥ गोस्वामीजी

सदा नाथजीके मन्दिरमें झाड़ूदेनेकेवास्ते आयाकरताथा और रूपअनूप भगवत् का दर्शन करके उसकेरस और प्रेममें मग्नरहता था गोसाईं जीने सबके नज़र का पड़ना श्रीनाथजी पर अच्छा नहीं जानकर एक आवरणकी दीवार खिंचवाई और कान्हा को भगवत् के दर्शन होने में बिक्षेपपड़ा भगवत् भक्त वत्सल को उसका दर्शन बन्दहोना पसंद न हुआ और रातकोस्वप्न में उसकान्हा को आज्ञादी कि गोसाईं गोकुल नाथजीसे बिनयकरदेना कि नईदीवार गिरवायदेहमारे दूरतकके अव-लोकनमें बाधा करतीहै कान्हाने मनमें बिचारा कि गोसाईं तकपहुंचने की हमको कहां गतिहै जो जाताहूं तो द्वारपाल ढिठाई समझकर पीटेंगे लालजी महाराज बिन प्रयोजन मुझको प्रेरणा करतेहैं यह समझकर चुपहोरहा श्रीनाथजी महाराज ने तीनदिन तक बराबर उसीआज्ञा को किया लाचारहोकर गया डेवढ़ीदारों से कहा किसीने गोसाईंजी से न कहा परंतु किसी और आदमीने बार्त्तालाप होतेमें जनायदिया गोसाईं जीने उसीघड़ी बुलवाया और उसके बिनय के अनुसार एकांतमें पूंछा कान्हा ने भगवत्का संदेश सुनाया और यह भी कहा कि तीनदिन से बराबर दिढ़ायके आज्ञाहै गोसाईंजी ने पूंछा कि क्यामेरा नाम धरकर-नाथजीने आज्ञा कियाहै उत्तर दिया कि आपही का नामलकर कहाहै कि दीवार गिरवायदें सो गोसाईंजीको भी कुछ इसबात की इंगित मालूम हुई थी बात कान्हाकी ठीक समझकर बेसुधि होगये और कान्हा को दौड़कर छातीसे लगालिया और भगवत् आज्ञाकी पालनकरी॥

गुंजामाली की कथा॥

गुञ्जामालीनाम बिख्यातहोनेका कारण यहहै कि गुंजा जो घुंघुची उसकी माला बहुत पहिरते थे इसहेतु कि ब्रजभूषण महाराजको उस की माला प्यारीहै इसीहेतु गुञ्जामाली नाम बिख्यात हुआ नाम का अर्थ यह कि गुंजाकी माला वाला लाहौर के रहनेवाले थे बेटा उनका मरगया बहूसे कहा कि धन संपत्ति घरबार सबतेराहै और गोपालजी महाराज मालिक और स्वामीहैं जो तुझको इच्छाहो सो लेकर भगवत् भजन कियाकर सो वह बहू उनकी भगवत् भक्त थी उसने कहा कि मुझको कुछ चाहनानहीं गोपालजी महाराज की मूर्त्ति सेवा के हेतु

बहू को देव और भगवत् सेवाके हेतु अतिविनय व प्रार्थना करती भई गुनामालीजी ने भगवत्सेवा तो उसबहू को सौंपी और मालअसबाब औरोंको देकर आप श्रीवृंदावन आये और प्राणवल्लभ महाराज के भजन कीर्तन में लगे और बहू वह बड़भागिनी सेवा करनेलगी ऐसी भगवत् सेवामें लवलीनहुई कि कोईघड़ी भजन व सेवाबिना व्यतिरिक्त न जाय और जहां भगवत् मूर्ति विराजमानथी तहां दूसरोंके लड़के उसबहूकी चाहना और भावनासे खेलाकरते थे एकदिन ईंटोंकीधूल उनलड़कों ने भगवत् के ऊपर डालदी उसबहू ने उनपर बहुत रिसकी और आना उनका बन्दकरदिया जब भोजन तैयार करके भोगधरा तो भगवत् ने भोजन न किया और अप्रसन्न होकर कहा कि हमारे सखाओंको आने से मनाकरदिया हम तेरीरोटी भी नहींखाते बहूजीने बहुतमनाया फुस-लाया परन्तु एक न सुनी तब तो रिसकरके कहा कि हमारी क्याबिग-ड़ती है तुम्हारीही पोशाक बिगड़तीहै सो मैं जितनी धूलमिट्टी कहोगे प्रभातको डलवाओंगी अब भोजन करलेव भगवत् बिनाअपनें सखाओं के राजी न हुये लाचार उनलड़कोंको मिठाईदेनेको कहकर फुसलाकर लेआई तब भगवत्ने भोजनकिया धन्यहै भगवत्की कृपालुता व दया-लुता कि अपने भक्तोंकी प्रीतिका ऐसा निवाहकरते हैं ॥

गिरिधरकी कथा ॥

गिरिधरजी महाराजबेटे विट्ठलनाथजीके औरपोते वल्लभाचार्यजीके कल्पवृक्षके सदृशहुये वरु कल्पवृक्षसे भी अधिकहुये क्योंकि कल्पवृक्ष तो केवल सांसारिक पदार्थदेताहै सो भी कामना करने से और गिरिधर महाराज अर्थ धर्म काम मोक्ष और भगवत् भक्तिबिना चाहना देनेवाले हुये सबशास्त्रोंका सार और वेदका गुप्तरहस्यदर्शी भगवत् ज्ञानहै उस को अच्छेप्रकार समझा और मथुरानटवर महाराजकी सेवामें माहात्म्य भावमें मग्नहोगया [illegible] दर्शनोंसे [illegible] होतेहैं और जिन सभामें बैठेथे वहां भगवत् [illegible] था उनकेगुण और [illegible] कहांतक [illegible] ॥

विदुरदासकी कथा ॥

विदुरदासजी जातिके [illegible]

प्रेम और भक्तिके स्वरूप हुये हरसाल जाड़ेकेदिनों में यहनियम था कि श्रीनाथजी महराज के वास्ते पोशाक ज़रदोजीके या और किसी अति सुन्दर प्रकारकी तैयारकरके भेजाकरते थे संयोगबश राजा ने सबधन सम्पत्ति उनका निरोधकरलिया कुछपास न रहा शोचनेलगे कुछउपाय न बनपड़ा अधिकहुआ तो यह शोचहुआ कि उस सुकुमार को जाड़ा लगताहोगा बिकलहोकर रोनेलगे और घरमेंजाकर बहुतढूंढ़ा तो एक दवातहाथलगी एकरुपैयापर बेंचकर एकथानगुंदा मोललेकर कुसुम्मी रँगाकर भेजनेके उपायमें लगे परन्तु उसकपड़े को देख देख यहशोचा करते कि उस परम मनोहरर शोभायमान और अतिसुकुमार के वास्ते हाय ऐसा मोटाकपड़ा भेजना चाहिये और इसीबिचार में बेसुध और बिह्वल होजाते कोई भगवत् भक्त ब्रजको जानेलगा उसको वहकपड़ा देकरके बड़ी अधीनताई से बिनयकिया कि इस कपड़ेका समाचार गोसाईंजी को न पहुंचै काहेसे कि उनकी दासियों की दासीके योग्य भी नहीं है भंडार में डालदेना वह आदमी आया भंडारी को देदिया भंडारीने बेमर्य्याद सो कपड़ोंके नीचे डालदिया श्रीनाथजीको कि वह रजाई भेजीहुई नंदस्वरूप अपने बाबाकी तोशेखाने में पहुंचने परभीपाई तो जाड़ेसे कांपनेलगे गोसाईंजी ने लिहाफ़ और रजाई जरबफ्त और किमख़ाब इत्यादिकी उढ़ाई परंतु जाड़ानगया फिर दुशाले व रूमाल इत्यादि उढ़ाये तबभी जाड़ा वैसाहीरहा आगकी अंगीठीलाये दरवाज़े सब बन्दकरदिये परंतु क्याबात कि जाड़ा तनकभीहटै गोसाईंजीने बिचार करके भंडारी और कारबारियों से कहा कि भाई यहशीतनहीं किसी कीप्रीतिहै सोकहो किस किसभक्तने क्या क्या जड़ावरभेजी है उनलोगोंने जिस जिस राजा और उमराव और दूसरेलोगों का भेजा जड़ावर था सो विनयकिया और उढ़ायागया कुछकार्य्य सिद्धनहुआ तब भंडारी को स्मरणहुआ और गोसाईंजी से बर्णनकिया कि तिपुरदास कंगालहो गयाहै उसने एक थान बहुत मोटाभेजाहै वह भगवत्की पोशाकके बनानेवास्ते भंडारमें रक्खाहै गोसाईंजीने कहा कि शीघ्रलेआवो सोआया और उसका चोलनासा तैयारकरके पहिनाया कि तुरन्त जाड़ा छूटगया और हठभीछूटा तिलककार भक्तमाल शिक्षाकरातेहैं कि इसप्रीति और

भक्तवत्सलता कीओर विचार करके मनलगाना चाहिये सो सत्यकरके हैं जो इसभगवत् कृपालुता को बिचार करके और पढ़सुनके जो मन अभागा भगवत् में न लगे तो निस्संदेह पत्थर से भी अति कठोर है वरु वज्रसमझना चाहिये ॥

——※——

बीसवीं निष्ठा ॥

जिसमेंवृत्तान्त छः भक्तों व इसनिष्ठाके उपासकोंवसौहार्द महिमाका वर्णनहै ।

श्रीकृष्ण स्वामीके चरण कमलों की अष्टकोण रेखाको दण्डवत् करके कल्की अवतार कि जिसको निष्कलंक कहते हैं प्रणाम करता हूं और वह अवतार कलियुगके अन्त समय सम्हल देशमें धारण करेंगे और नास कलियुग का व पापोंका पुंज संसारसे उठायदेंगे प्रत्यक्ष है कि जितने सम्बन्ध संसार में प्रवर्त्त मानहैं सो नव प्रकारके संबन्ध से उत्पन्न होतेहैं–एक शेष शेषी १ अंश अंशी २ शरीर शरीरी ३ पति पत्नी ४ पूज्य पूजक ५ सेव्यसेवक ६ रक्ष्यरक्षक ७ जनक जन्य ८ गुरूशिष्य ९॥ सो सब सम्बन्धोंपर अच्छीप्रकार बिचार कियाजाताहै तो अंतकीपदवी सबसम्बन्धोंकी ईश्वरप्राप्त व युक्तहोतीहै वइसओर जीवपर प्राप्तहोतीहै सो बिस्तार करके सेवानिष्ठामें शेष व शेषी भावके वर्णन मेंजीव व ईश्वर परलिखाहै थोड़ा यहांभीलिखताहूं तात्पर्य्य यह कि अंशी व पतिवपूज्य व सेव्य वरक्षकव पिता व गुरू अथवा कोई सम्बन्धवाला जो सबसेबड़ा और पुराना औरआगेपरभी सदारहने वाला और पहिले था और उस सम्बन्धकीरीतिका जाननेवाला और निवाह करदेनेवाला जो ढूंढ़ाजाय तो भगवत्सेअधिकऔर अच्छा कोईनहीं और इसीवास्ते अंशी व रक्षक पतिइत्यादिनाम भगवत्के विष्णुसहस्रनाम और दूसरे सहस्रनामों व स्तोत्रोंमेंलिखेगये और इसीप्रकार पूजाकरनेवाला और सेवाकरनेवाला व रक्षा चाहनेवाला इत्यादि जो ढूंढ़ाजाय तो जीवपर युक्त व योग्यता होतीहै कि जीवसे अच्छा इन सम्बन्धों में दूसरा कोईनहीं तिसमें भी मनुष्यशरीर तो मुख्य सम्बन्ध अर्थात् नातेदारी ईश्वर और जीवपर समाप्तहुई और यहनाता अनादि और पुराना अर्थात् उसदिनसेहै कि जिसदिनसे इसजीवने ईश्वरअंशसे अलगहोकर जीव नाम धराया और

विशेषता यह कि आगे परभी बनारहैगा तो भला जब कि ऐसा नाता पुरानाजीव और ईश्वरका दृढ़है तो अत्यन्त उचित व योग्यहै कि नातेदारी जो संसारीहैं सोभी भगवत्‌ही के साथ लगाईजावैं और इसबात में आप निजभगवत् ने कहाहै कि जो मुझको अपना नातेदार जानकर सेवन करताहै सो मुझको प्राप्तहोताहै भागवत व महाभारत के बहुत बचन इसबातके निश्चय करनेवालेहैं फिर गीताजी और एकादश और शान्तिपर्व्व महाभारतमें बारम्बार यहबार्त्ता आईहै कि जो जिसभावसे भगवत् का आराधन करताहै भगवत् उसीभाव से उसपर प्रसन्नहोता है और सैकड़ों हजारों कथापुराण व भक्तमालकी इसबात की साक्षीहैं नहीं तो कहां वह पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन कि जिसको वेद नेतिनेति कहतेहैं और जिसके स्वरूप ज्ञान और महिमा के वर्णनमें ब्रह्मा व शिव व शेष व शारदाके ज्ञान का दीपक ठंढाहै और कहां रामकृष्ण नृसिंह बामन इत्यादि अवतार धारणकरके सबभक्तोंको भाव और चाह को पूर्णकरना तात्पर्य्य इसकहने का यहहै कि संसार में नातेकीधरगी ऐसी बराबरहै कि उसके अवलंबसे बरबश स्नेह व प्रीति सबको अपने नातेदारों के साथहोतीहै जो भगवत्‌में सौहार्दभाव के अवलंब से मन लगायाजाय तो भगवत्‌के मिलनेमें क्या सन्देह व भ्रमहै बरु निश्चय करके और शीघ्रमिलैगा जो यहबाद कोईकरै कि भगवत्‌कोभाई अथवा बाप व दामाद व भतीजा अथवा देवर व जेठ इत्यादि नातेदार कहना कहां योग्यहै और कब बुद्धिमें यहबात आयसक्तीहै उत्तर यहहै कि जो यह बात अंगीकार कीजाय तो दास्य व शृङ्गार व वात्सल्य इत्यादि उपासना सब त्याज्य हो जांयगी काहेसे कि जिनप्रमाणों से नातेदारी त्याज्यहोगी सोईवास्ते लोपकरने दास्यइत्यादि निष्ठाकेभी समर्थहैं कि भगवत् स्वामी व मित्र व बेटा व पति नहीं होसक्ता और जिन बचनों के प्रमाणसे दास्यइत्यादि निष्ठाअंगीकार योग्यहैं उन्हीं प्रमाणोंसे यह सौहार्द निष्ठाभी सत्य व एकहै कि जैसीआज्ञा शास्त्रोंकी उन निष्ठाओं के वास्तेहै वैसीही इसनिष्ठाके वास्ते भी है सिवाय इसके गवाही युधिष्ठिर व कुन्ती द्रौपदी व उग्रसेन व लक्ष्मण व शत्रुघ्न व भरत व बलदेव जी व लव व कुश व प्रद्युम्न व अनिरुद्ध व जनक इत्यादि हजारोंभक्तों

की प्रगटहै और एकबात यहभी सबशास्त्रोंमें लिखीहै कि सबनातेदारों को भगवत् के नाते से मानना चाहिये अर्थात् बेटा पोता भाई भतीजा और दूसरोंको किसी को किंकर किसी को जलभरनेवाला और किसी को रसोइया और किसी को चौकादेनेवाला और किसी को सेवाकरने वाला जाने संसारीनातों को मुख्य न समझै और उनमें कोई भगवत् विमुखहो तिसका त्यागउचितहै कि प्रह्लाद ने पिताको त्यागदिया और विभीषण ने भाई को और भरतजी ने माता को राजाबलि ने गुरू को और गोपिकाओं ने पतिन को और उस त्याग करने में यह नहीं हुआ कि किसीको कुछ हानि हुई हो वरु ऐसीहुई कि उन का नाम जगत् को आनन्द और मङ्गलको देताहै तो जब कि दूसरे नातेदारोंको भगवत्के नातेसे माननालिखाहै तो आपसेआप उचित व आवश्यककरनाहीहुआ कि निज अपना नाता भी स्थिरकरले और वहनाता आरोपण करना योग्यहै कि जैसी मनकीरुचि और गहरीप्रीति होय और मुख्यअभिप्राय सब शास्त्रोंका यहहै कि भगवत्का किसीप्रकार और किसीरूप से और किसी रीति से आराधन हो अद्वैतता और ईश्वरता भगवत् की निश्चय समझकर दृढ़विश्वास करलेना चाहिये यह कदापिनहीं कि भगवत् न मिलें और जबतक कि अद्वैतता और ईश्वरता का ज्ञान व विश्वासनहो तबतक कुछ प्राप्त नहीं होता इस सौहार्द निष्ठा की महिमा व बड़ाई कौनकहसक्ताहै और ऐसा प्रताप इस निष्ठाको है कि अपने आप मन भगवत् में लगता है और क्यों नहीं ऐसा प्रताप इस निष्ठा को होय कि पूर्णब्रह्म अन्तर्यामी और व्यापक साक्षात् होकर सब प्रकार से मनभाया व चितचाहा इसनिष्ठाके उपासकों को करता है और करता रहा और आगे पर करैगा कारण ऐसा प्रतापहोने इसनिष्ठा का यहहै कि दूसरीनिष्ठा तो ऐसी प्रसिद्धहै कि सबकोई अपने आपको दास व सिरजाहुआ भगवत् का कह सक्ताहै अथवा कोई बात अपने मतमता-न्तरको जानताहो न के जानताहो और इसनिष्ठामें इसीका मनलगैगा कि जो कुछ जानने वाला भगवत् के सिद्धांत और शास्त्र व ईश्वरता व चरित्रोंका होगा और जब कि शास्त्रों के सब अभिप्राय जानने के पीछे मन भगवत्में लगा तो भगवत् बहुत शीघ्र मिलसक्ताहै इसनिष्ठा के

उपासकों को उचितहै कि जिसनाते से भगवत् का आराधन करें उस नातेको अच्छेप्रकार रीति भांति जैसो कि भाई व दामाद अथवा भतीजे आदिके साथ रखतेहैं भगवत् के साथ दृढ़विश्वास व सच्ची भावना से पक्कीदशाको पहुंचादेवैं और जिसनातेकी जो रीतिहै सो सब भगवत्के साथ ऐसी निबाहै कि तनक कोईबात बाकीनरहै थोड़ेदिनहुये कि स्वामी रामप्रसाद जनकपुर के रहनेवाले श्रीरघुनन्दन महाराज को अपना दामाद मानते थे जब दर्शन करने को अयोध्याजी में आये तो अयोध्या के देश का पानीतक पीना छोड़दिया जब दर्शनको श्रीरघुनन्दन महाराजके गये तो उनकेभावके पूर्णकरने को और भक्तिके प्रतापको प्रगट दिखानेके निमित्त भगवत्की मूर्त्ति रत्नसिंहासन से उठकर कईडग उनके अगवानीको आई और जो रीति मर्याद राजाजनक के वास्ते होना उचितथा सो सब उनके वास्ते हुई यह बात विख्यात है और स्वामी रामप्रसादजी के सेवक अबतक उसदेशमेंबनेहैं कहनेका अभिप्राय यह किनिष्ठामें पक्कताहोय कि तुरंत बेड़ापारहै एकबैष्णव रघुनन्दनस्वामी कोअपना बहनोई जानतेथे और कोई घड़ी भजनबिना नहींबीततीथी व जिसघड़ी अपनी निष्ठा और बिश्वासकी बार्ता लायाकरते थे तो सुनने वाले प्रेममें मग्न होजाते थे और उनकी दशा क्या कहीजाय॥ ब्रजमें बरसाना जो लाड़िलीजी का मैकाहै वहांकी ब्रजबासिनियोंकी बोलचाल यात्रियोंके साथ जो होतीहै और उस समाजमें जो दशा भगवत् भक्तों की होतीहै सबकिसीको मिलै तात्पर्य यह कि इसनिष्ठा वालोंकी बोल चाल सुनकर सुनने वालोंको बरबश स्नेह व प्रीति भगवत्में होतीहै उनकेप्रेम का क्या बर्णन कियाजाय हे श्रीकृष्णस्वामी हे दीनबत्सल हे पतितपावन कोई ऐसीअच्छीघड़ी मेरेवास्ते भी आवैगी कि जितने इस संसारमेंनाते व स्नेह व मित्रताहैं सो सब आपके चरणकमलोंमें बिचार कियाकरूंगा और कबहीं वहदिन भी होगा कि दूसरे सब अवलम्ब व बिश्वासोंको छोड़कर केवल उन चरणकमलोंका आसरा व बिश्वासयुक्त हूंगा कि जो शिव ब्रह्मा इत्यादि परम योगियोंके इष्टदेवहैं और नारद प्रह्लाद सनकादिकभक्तों के स्वामी और ध्यानजिनका परम पदका देने वाला है और इस संसार समुद्र के उतरने को हमसबका जहाजहै॥

राजाजनक की कथा॥

राजा जनक महाराज की महिमा शास्त्रों में लिखीहै जिनका ज्ञान सूर्यके सदृश ऐसा प्रकाशितहुआ कि शुकदेवजी इत्यादि ऋषीश्वर ज्ञानवान और वैराग्यवानों के मनको कमल की भांति प्रफुल्लित करदिया और आवागमनके अन्धकार को दूरकिया सीता महारानी सर्वब्रह्माडेश्वरोंकी माता और श्रीरघुनन्दन स्वामीकी परमप्रिया ने जिन जनक महाराजके घर अवतार धारण करके परमपवित्र चरित्रकिये ऐसे महाराज की महिमा का वर्णन कौन से होसक्ता है जब रघुनन्दन महाराज जानकीजी के स्वयम्बरमें विश्वामित्रजीके साथ जनकपुरमें गये और राजाजनक मिलनेके वास्ते आयेतोश्रीरघुनन्दन महाराजको देखा और उसीघड़ी ज्ञान वैराग्य को विदाकरके परममनोहर और अनूपरूप माधुरीके प्रेममें विकलहोगये और जब अपनी प्रतिज्ञापर चित्तगया कि जो कोई शिवजीका धनुष तोड़ैगा उसकोही सीता मिलैगी तो अतिविकल हुये कबहीं तो अपनी बुद्धिपर शोचकरतेथे कि क्योंऐसी प्रतिज्ञा की और कबहीं कर्मोंसे उदास होकर कहते कि तुमने प्रतिज्ञा किसवास्ते कराई कबहीं देवताओंका ध्यान मनमें करके यहमांगते कि यह श्याम सुन्दर वरसीताको मिलै और कबहीं अपनेज्ञान वैराग्य व कर्मों का फल वास्ते पूर्ण होने अपने मनोरथके मनमें संकल्प करते निदान जब किसीप्रकार मनकी विकलता न मिटी तो रघुनन्दन महाराज के चरण कमलोंकी शरणगही और दृढ़विश्वास अपनेमनोरथ पूर्ण होनेका कर लिया श्रीरघुनंदन महाराजने जो जनकमहाराजकी भक्ति और भाव को देखा और फिर जनकपुरवासियोंकी चाहना कि राजाजनकसे सौगुणी कामना टूटनेधनुषका रघुनंदनके हाथसे रहादेखा और जानकी महारानीका वहप्रेम अपार पाया कि सब ब्रह्माण्डोंका प्रेम जिनके करोड़वें भाग प्रेमकी छायाहै तो धनुषको तोड़ा और सीता महारानीने जयमाल कोराजसभामें श्रीरघुनंदन महाराजको पहिराया उससमय छविअनूप सीता और दशरथनंदन की जनक महाराजने जोदेखी तो अपने भाग की बड़ाई करतेहुये भगवत् कृपाके समुद्रमें गोता लगाके वेसुध बुध होगये व जिसघड़ी विवाह व भांवरि होने पीछे सीताजी व रघुनंदन

महाराज एक सिंहासनपर बिराजमान हुये उससमयकी शोभा व दशा का वर्णन किसीसे नहींहोसक्ता ब्रह्मानन्दका परमानन्दभी उसआनंद के सम्मुख फीकाहै राजा जनककी यह दशाहुई कि अंगअंगसे थकित थकितहोकर आंखोंसे एकटक रहिगये सत्यकरके बिदेहनाम उसीसमय हुआ और राजाजनक व सुनयना उनकी रानीका प्रेमअलगरहा जनक पुरवासियों के प्रेमकी दशा लिखीजाय तो अगणितशेष व शारदा भी नहीं लिखसक्तेतो मैं मतिमन्द क्या लिखसक्ताहूं रनिवास की प्रीति और बोलचाल और हँसी इत्यादि ऐसे आनन्दका देनेवाला रसहै कि जिसको पान करके सुधिबुधि सब बिसर जातीहै तो फिर बर्णन कौन करिसकै गूंगेका गुड़है कि मनहीमन स्वादको लेताहै और बिश्वामित्र जीको राजाजनकके प्रेम व भक्तिका वृत्तांत कुछकुछ धनुष टूटनेपर और कुछकुछ बिवाह होलेने पर खुलिगया था परंतु अच्छीतरह उसघड़ी मालूमहुआ कि जब जानकी महारानीको पालकीपर सवारकराकर श्री दशरथनन्दनमहाराज से बिदा हुये॥

वृषभानुकीर्तिजी की कथा॥

महिमा और भक्ति और यशवृषभानु महाराज और कीर्तिदामहारानी उनकी धर्म पत्नीकी कैसेमुखसे वर्णन होसकै जिनकेघर श्रीराधिका महारानी सर्वेश्वरी श्रीकृष्णकी प्राणप्रियाने अवतार धारण करके तीनों लोकको पबित्रकिया रसिक लोगोंको मालूमहै कि श्रीराधिका महारानी में उपासकलोग दोप्रकारके भाव रखतेहैं निम्बार्क संप्रदाय वालोंका तो यह निश्चयहै कि राधिका महारानी और नन्दकिशोर महाराज का बिवाहहुआ और बिष्णु स्वामी संप्रदाय वालों का उन के निश्चयपर अपना निश्चयभी रखतेहैं और उसभावका नाम स्वकीयाहै माध्व संप्रदाय और हितहरिबंशसंप्रदायवाले परकीयाभावकानिश्चय और बिलक्षण भावभी रखतेहैं अर्थात् बिवाह नहींहुआ प्रियाप्रीतम महाराजका अन्योन्य प्रीतिका होना बर्णन करतेहैं और दोनों स्वरूपको एक जानते हैं सो पुराणादिक के बचनोंके प्रमाणसे दोनों भावमें से एक भावको जो दृढ़कियाजाय तो दूसरे को अनरुचि होगी इसहेतु इसके निर्णयका कुछ प्रयोजन नहीं समझकर यही निश्चयहुआ कि दोनों भावसे वृषभानु

महाराज श्वसुर व कीर्त्तिदा महारानी सासु श्रीव्रजचन्द्र महाराजकी हैं और यहभी जानेरहो कि अबतक बरसानेकी सबजाति नन्दगांववालों को अपनी बेटी विवाहमें देतेहैं व नन्दगांवँकी बेटी नहीं लेतेहैं सिवाय इसके वल्लभाचार्य के कुलमें वात्सल्य निष्ठाहै अर्थात् पुत्रभाव रखते हैं कि इसका वर्णन वल्लभाचार्य की कथा और वात्सल्य निष्ठामें अच्छे प्रकार हुआ उनकीयह रीतिहै कि व्रजयात्राके समय जबकिसी मन्दिरमें दर्शनको जातेहैं तोआपही मन्दिरके भीतर जाकर पूजा इत्यादि कियाकरते हैं सोजब बरसानेमें आते हैं और लाड़िलीजी के दर्शनों को जाते हैं तो बरसाने वाले उनको मन्दिरके भीतर नहीं जानेदेते भावइसमें यहहैकि समधी को कैसे महलमें जानेदेवें बापके घरमें कोईलड़की अपने ससुराल वालोंके सामने नहीं जाती ऐसेऐसे विमल भाव व्रजवासियोंके हैं रसिकलोग विचार करके अपने अपनेभाव और विश्वासके अनुसार वृषभानु और कीर्तिजी में भावराखैं सब प्रकारभक्ति और भावपरम आनन्द वो प्रेम की खानिहैं वृषभानु वो कीर्तिजीका यश चन्द्रमासेभी अति निर्मलहै जिसने उस यशका आश्रयलिया संसारके तापसे छूटा॥

उग्रसेनकीकथा॥

उग्रसेनजी कन्सके बाप नाना श्रीकृष्ण महाराज केथे और उनकी भक्तिका भाव ऐसा अलौकिक हुआ कि भगवत् भक्तिका उत्पन्न करने वालाहै श्रीकृष्ण महाराजको पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन मानते थे और दोहिता अपना जानकर वैसेही प्रेम निबाहतेथे और भगवत्ने कन्सादिक आठ बेटे उनके मारे परन्तु भगवत् दर्शनका सुख ऐसा माना कि उनके वधका दुःख कबहीं निकट न आया और भगवत् उस भक्तिऔर भाव के अधीन होकर ऐसे वशीभूत होगये कि ब्रह्मा शिव और सूर्य और चंद्रमा और यम और काल व वरुण इत्यादि सब जिसकी मायासे भयभीत होकर सदा प्रसन्नताकी आशा करतेहैं उस अपनी ईश्वरता पर कुछ विचार न किया और आप श्रीहस्तसे छत्र व चमर लेकर सेवकों के सदृश सेवाको किया सत्य करके भक्तिही भगवत्को वशीभूत करती है गुणनहीं अर्थात् यह विचार करना चाहिये कि सुदामाको कौन धन और गजराजको कौन विद्या उग्रसेनजीको कौन पौरुष व बल व कुब्जा

को कौन सुन्दरता व्याधका कौन पुराय आचरण व विदुरजीका कौन उत्तमकुल और ध्रुवका क्या बयक्रम सो निश्चय करके भगवत् भक्ति ही सार पदार्थहै॥

कुन्तीकीकथा॥

कुन्तीजी परमभक्त भगवत्की हुईं भगवत् श्रीकृष्ण महाराज को भतीजा अपना जानती रहीं और ऐसी प्रीति भगवत्सेथी कि हरघड़ी भगवत् मूर्ति अथवा साक्षात् अथवा ध्यानमें आखों के आगे रहती थीं दुर्योधनको जीतने पीछे जब राज्य राजा युधिष्ठिर को प्राप्त हुआ तो भगवत्ने बिचार द्वारका जानेका किया कुन्तीजीने जाने न दिया पीछे उसके जब कबहीं बिचार जानेका करते तो कुंतीजी व्याकुल व दुःखित होकर कहती कि इसराज औ सुखसे तो बनबासही अच्छाथा कि सदा श्रीकृष्ण संगरहा करतेथे और भगवत् से कहा करती कि हे श्रीकृष्ण हमको वह बन और बनबासही अच्छाहै अबभी वही देनाचाहिये जिस में तुम्हारे दर्शन होते रहें एकदिन भगवत्ने दृढ़बिचार जानेका किया और रथपर सवार होगये कुन्तीजीगईं उनकी दशा देखकर भगवत्को निश्चयहोगया कि जो अब जातेहैं तो कुंतीजी तनछोड़देंगी न गये कुंती जी रथसेउतार लेआईं और अंत समयमें कुंतीजीने भगवत्के अन्तर्द्धान होनेके समाचार सुनतेही तुरंत अपने देहको छोड़दिया और जहां भगवत् रहे तहीं पहुचीं॥

युधिष्ठिरादिकी कथा॥

पांचों पांडवन मेंसे अर्ज्जुनकी कथा सखा निष्ठामें लिखीजायगी व राजा युधिष्ठिर व भीमसेन व नकुल व सहदेव की कथा यहां लिखी जातीहै पांडवलोग भगवत्को ममेरेभाई जानतेथे औ पूर्णब्रह्म व स्वामी भी जानते रहे और भगवत् भी वह भाव उनका अपनी कृपालुता और भक्त वत्सलता से पूर्ण करतेथे अर्थात् नित प्रभातके समय ऊपरकेभाव से युधिष्ठिर व भीमसेन जो बयक्रममें भगवत्से बड़ेथे प्रणाम किया करतेथे और नकुल व सहदेव कि वे छोटेथे बंदना किया करतेथे और कबहीं अपनी ईश्वरताका प्रकाश उनको ऐसा दिखला दिया करतेथे कि वह भाव ईश्वरताकाभी सदा उनको बना रहताथा और जितनी

मर्याद व संकोच राजा युधिष्ठिरके साथ रही तितनी भीमसेन के साथ नहीं वरु हँसीठट्ठा भाईचारोंका हुआ करताथा विशेषकरके बहुतभोजन करने व स्थूलता व लम्बेडील पर भीमसेनको हँसा करतेथे व भीमसेन जीभी जो मनमें आता सो कहतेथे वृत्तान्त बोलन व चालन इत्यादि भगवत् व चारों भाइयोंका वर्णन नहीं होसक्ता व्यासजी महाराजने कुछ थोड़ासा महाभारतमें लिखाहै कि उन चरित्रोंको सुनकर असंख्य पापी जन्म मरणके दुःखसे छूटगये और छूटेंगे युधिष्ठिर महाराज धर्म का अवतार व भीमसेनजी पवनका और नकुल सहदेव अश्विनीकुमार देवताओंके वंशसे हुये जो जो संकट दुर्योधनकी शत्रुता करके उनपर आनपड़ा भगवत्‌ने कृपाकरिके सबसे रक्षाकिया पहिले तो दुर्योधन ने भीमसेनको विष दिलवाया और हाथपांव बांधकर नदीमें डालदिया भगवत्‌ने यहकृपाकी कि भीमसेनको नदीमेंसे वरुणदेवता अपनेगृहमें लेगये वहांउनको अमृतवो दशहजारहाथीका बलमिला पीछेउसकेलाक्षा गृहमें जलानेकाउपाय दुर्योधनने किया तहांभी कुछनहुआ वरु अधिक ऐश्वर्य व मर्याद व ख्यातका कारण पांडवोंको हुआ अर्थात् हजारों राजों की सभामेंसे द्रौपदीको जीतकरलाये पीछेउसके हस्तिनापुर जो दिल्ली है तहां आयके धरतीपर जितनेराजाहैं तिनसे विजयकरायके भगवत्‌ने राजसूययज्ञ पूर्णकराया उस यज्ञमें जब दुर्योधनकी हँसीहुई उनसेजुयेमें छलसे सब धन संपत्ति इत्यादि को जीतलिया और द्रौपदी को राज-सभामें नग्नकरनेको चाहा तो भगवत्‌ने रक्षाकी और जब पांडव दुर्यो-धनसे वचन हारनेके कारण तेरहबर्ष वनमेंरहे तोवहुतगन्धर्व व राक्षसों को विजयकिया व अनेक प्रकारकी लाभ उनको ऋषीश्वरों व शिवजी व इन्द्रादि देवताओंसे हुई और भगवत्‌ने दुर्वासाके शापसे बचाया और महाभारत युद्धकेसमय दुर्योधनकीओर ग्यारह अक्षौहिणीदलथा और भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य व कृपाचार्य्य वकर्ण व अश्वत्थामा व शल्य व सोमदत्त व जयद्रथ व विकर्ण आदि ऐसे ऐसे शूरवीर थे कि सबकोई पाण्डवों को जीतनेका अहङ्कार रखताथा और दुर्योधनका अङ्ग अष्टधातु के सदृशथा व दुःशासन दशहजार हाथियोंके बलवाला व दूसरे अट्ठा-नबेभाई दुर्योधनके सबबलवान व शूरवीरथे और पाण्डवोंकी ओर पांचों

भाई पाण्डव आप और दो चार राजे दूसरे व सातअक्षौहिणी दल था भगवत्‌ने उस लड़ाई को घोर नदीसे आप कैवर्त्तक होकर पाण्डवों को पार उतारा व दुर्योधनादिक को सेना व शूरवीरों समेत भग्न व नाश करदिया पीछे राजायुधिष्ठिर राजसिंहासनपर बिराजमानहुये तो न्याय व धर्म्मपूर्व्वक प्रजापालन किया जब परमस्नेहीभाई अर्थात् भगवत्‌के अन्तर्द्धान होनेका वृत्तान्त सुना तो उसीघड़ी राज्यको छोड़दिया और उत्तरदिशामें सुमेरुपर्व्वतके निकट बरफाने में जाकर परमधाम को गये सो कथा पाण्डवोंकी विख्यात् औरमहाभारत आदिमें बिस्तारसे लिखी गई है इसहेतु नाममात्र थोड़ा लिखागया॥

द्रौपदी की कथा॥

द्रौपदीजी परमसती की भक्ति और भावकी महिमा ऐसाकौनहै जो वर्णन करसकै उस भगवत्‌ने कि जिसको वेद और ब्रह्माभी वर्णन नहीं करसक्ते उसके मनोरथकोपूर्ण किया अर्थात् जबद्रौपदीजीने स्मरणकिया तब तुरन्तआये और अपनी ईश्वरताको छोड़कर उनकी चाह को मुख्य जाना द्रौपदीजी भगवत् श्रीकृष्णस्वामीको यद्यपि मनसे पूर्णब्रह्म पर-मात्मा मानतीथीं परन्तु भाव देवरका रखतीथीं उसभावमें रस व परम आनन्द अपारहै चरित्र द्रौपदीजीका और वृत्तांत उनकेजन्मका पांडवों की कथाकेसाथ बिस्तार करके महाभारत व दूसरेपुराणों में लिखा है यहांभी दो एक कथा लिखीजातीहैं जब राजायुधिष्ठिरने सम्पूर्ण राज्य द्रौपदीसमेत आप व भाइयोंने जुयेमें दुर्योधनकेहाथ हारदिया तो दुर्यो-धनने पाण्डवों को बेमर्यादकरना बिचारा व राजसभामें जहां युधिष्ठिर व भीमसेन व अर्ज्जुन व नकुल व सहदेव भी बैठेथे द्रौपदीको बुलाकर दुःशासनको नग्नकरनेके वास्ते आज्ञादी व भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य इत्यादि इसबिचारसे कि द्रौपदीजी भगवत्‌भक्तहैं दुष्टता व अनीति दुष्टों की नहीं चलसकैगी अथवा दुर्योधनके डरसे कुछ मना न करसके और युधिष्ठिर आदि धर्म्मको बिचारिके न बोले और द्रौपदीजी उस समय स्त्री धर्म्म के कारण केवल एकसारी पहिने हुये थीं दुःशासन दुष्ट वस्त्र खींचनेको जबतैयारहुआ तब द्रौपदीजीने भक्तवत्सल दीनबंधुप्रणतार्त्ति भञ्जन कृपासिंधु अपने देवर का स्मरण किया और लज्जा रखनेवाले

महाराज कि सदा सर्व्वकाल अपने भक्तोंके सहायके हेतु समीपही बने रहतेहैं आनपहुंचे व द्रौपदी की सारी वामन महाराजके शरीरकेसदृश अथवा कुरुक्षेत्रके तुलादानके सदृश अथवा भगवत्अर्पित कर्म्मके सदृश अथवा नारायणके नाभिनालके सदृशबढ़नेलगी इतनीबढ़ीकिदुःशासन जो दशहज़ार हाथियोंका बल रखताथा खींचते खींचते हारगया व एक नख भी द्रौपदीका नग्न न हुआ सब दुष्ट लज्जित होरहे और उसी समय उन पापियोंसे राज्य व धर्म्म व बुद्धि व बड़ाई व आयु व सम्पत्ति इत्यादिने विदा मांगी॥

दो० कहा करै बैरी प्रबल जो सहाय यदुवीर।
दशहज़ार गजबल छुट्यो घट्यो न दशगजचीर॥

क० दुर्जन दुःशासन दुकूल गह्यो दीनबंधु दीनह्वै के द्रुपददुलारीयों पुकारीहै।
आपनोसबबलछांडि ठाढ़ेपतिपारथले भीमममहाभीम ग्रीवानीचेकरिडारीहै॥
अम्बरलौंअम्बरपहाड़कीन्होंगंगपकवि भीषम करण द्रोणसबीयों विचारीहै।
सारीमध्यनारीहैकिनारीमध्यसारीहै किसारीहैकिनारीहैकिनारीहैकिसारीहै॥

यहां एकशंका यहहै कि भगवत् बिना पुकारे आपसे आप सहाय करते उन्होंने किस हेतुधैर्यको छोड़कर भगवत्से सहाय चाहा सोएक उत्तर तो प्रेमसे भरायहहै कि भगवत्से और द्रौपदी जीसे जब हँसी कीबातें व छेड़छाड़ होतीथी तो कबहीं भगवत् निरुत्तर होजाते थे और कबहीं द्रौपदीजी को जबयह संकट आनिपड़ा तो द्रौपदीजीने इसहेतु श्रीकृष्ण स्वामीका स्मरण किया कि जोआप से आपबिना स्मरण व पुकारे भगवत्की सहाय हुई तो मेरापरम स्नेही देवर सदामेरे व्यंग्य बचनसे निरुत्तर होजाया करेगा कि दुःशासन बस्त्र खींचताथा तब सहायको नहींआयेथे तो उसीको पुकारना चाहिये कि जिसमें वहनिरुत्तरनहो और मुझीको अपने उपकारसे संकुचित करके व्यंग्य बचनबोला करें कि राजसभा में कैसीभई दूसरेयह कि द्रौपदी जी भगवत् को स्मरण करके वचन मारती हैं कि तुम अपने राज्य व बड़ाई की बड़ाई करके हमको वचन मारतेरहे अबदेखो कि तुम्हारी भावजको दुष्टलोग किसप्रकार से बेबस्त्र किया चाहते हैं तीसरे यहकि द्रौपदी जी भगवत् का स्मरण करके सबभक्तोंको सिखावतीहैं कि भगवत्के स्मरणकरने से बस्त्र जो जड़पदार्थ है अनंत होजाता है तोजीव उस के स्मरण से

अनंत व अच्युत क्यों न होजायगा चौथे अपने पतिन को धैर्य देती हैं कि भगवत् के स्मरणसे कौन ऐसा संकट है कि दूर न होगा पीछे दुर्योधनने पांडवोंके बारहबर्षका वनवास और फिरएक वर्ष गुप्तरहने को निश्चय बिचारकिया सो बनकोचले सिवाय शस्त्रोंके दूसरी सामग्री कुछखानेपीनेकी पासनथी सूर्यनारायणने एक टोकनीको प्रसन्न होकर दिया चमत्कार उसका यहथा कि जबतक द्रौपदीजी भोजन न करलेती थीं तबतक सबप्रकारकी सामग्री भोजनकी जो चाहताहोती उसमें से निकललीथी और जब द्रौपदीजी भोजनकर चुकतीथीं तब बन्दहोजाती थी एकदिन दुर्वासा जी दशहजार चेलोंसमेत दुर्योधनके कहने से ऐसे समयपर आये कि द्रौपदी जी भोजनकर चुकी थीं युधिष्ठर महाराज ने भोजनके वास्ते बिनयकिया दुर्वासाजी ने कहा कि स्नानकर आवें तब भोजन करेंगे यह कहिकर स्नानकरनेको गये व राजायुधिष्ठरने द्रौपदी जी से कहा कि तुम भोजन न करना दुर्वासाजी का शिष्टाचार है द्रौपदी जीने विनयकिया कि मैंनेतो भोजन करलिया राजा युधिष्ठर यह वचन सुनतेही अचेत व बेसुध होगये और रोदनकरनेलगे कि अब किसप्रकार मर्याद रहैगी और दुर्वासा के शापसे कैसे बचेंगे द्रौपदीजी ने जो यह दशा राजाकी और भीम व अर्जुन आदिकी देखी तो अतिदृढ़ बिश्वास व भक्तिसे कहनेलगीं कि तुमक्यों ऐसे दीन व अधीर होतेहो वह श्रीकृष्ण तुम्हाराभाई परम स्नेही क्या कहीं दूरहै कि इससमय सहाय न करैगा और यह कहकर द्रौपदीजी ने श्रीकृष्ण स्वामीको स्मरणकिया भगवत् तुरन्त द्वारकासे रुक्मिणीजी को छोड़कर आनपहुंचे मानों उसीजगहथे सबसे मिलनेपीछे द्रौपदीजी की ओर देखकर कहा कि भूखलगीहै कुछ भोजन को लावो द्रौपदीजी ने कहा कि यहां पहिलेसे एकके वास्ते सब शोचमें पड़ेहैं यह दूसरेनये भूखेआकर पधारे मेरेघर कुछ खानेपीनेको नहींहै भगवत्ने कहा कुछथोड़ासा लेआवो द्रौपदीजी ने कहा कुछनहीं है बड़ीबेरसे टोकनी मांज धोकर रक्खी है भगवत् ने युधिष्ठिरकी ओर देखकर कहा कि यह पुत्रियेकी बेटी भूखेघरकी ऐसीभूखी मिलगई है कि जबहम भोजन मांगतेहैं बिना नहींकिये कबहीं नहींदेती है अच्छा वह टोकनी उठाय लेआवो हमआप ढूंढ़लेंगे द्रौपदीजी टोकनी उठायले

आई और भगवत्के सामने रखकर कहा कि जो आपही ढूंढ़लेवेंगे तो यहां किसका निहाराहै भगवत्ने एक पत्ता सागका उसमें कहींलगाहुआ पाया उसको निकाल द्रौपदीजी को दिखाया कि देखोयह क्याहै द्रौपदी जो बहुत हँसी और कहा कि यह कृष्ण साग इत्यादि से रुचिमानरहा सोई ढूंढ़लिया भगवत् उस सागके पत्तेको अपनी हथेलीपर रखकर भो-जनकरगये और थोड़ासा जलपिया कि उसीक्षण त्रिलोकी तुष्ट व तृप्त होगई और दुर्वासाजी की तो यह दशाभई कि पेटके भरने से उठने की सामर्थ्य न रही और फिरजो विचारकिया कि क्या कारण इसभांतिपेट के अफरनेका है तो भगवत् भक्तोंका प्रताप अपने मनमें समझकर औ राजा अम्बरीषके कारण जो कष्टउठाया उसको स्मरणकरके राजा युधिष्ठिरसे विनाकहे छिपकर भागगये भीमसेनढूंढ़आये कहींपता न लगा. ऐसे चरित्र द्रौपदीजीके अनेकहैं क्या सामर्थ्य किसीकोहै जो लिखसके॥

इक्कीसवीं निष्ठा ॥

जिसमें महिमा शरणागती व आत्म निवेदन और दश भक्तोंकी कथा वर्णन है॥

श्रीकृष्णस्वामी के चरणकमलों की छत्र चमररेखाको दण्डवत् करके मन्वन्तर अवतारको वंदनाकरताहूं कि विठूरमें वहअवतार धारणकरके सबधर्म्मों का प्रकाशकिया शरणागति व आत्मनिवेदन की महिमा के पहिले एकबात यहलिखनेके योग्यहै कि जो भक्त वंदन निष्ठाकेउपासक हैं सोभी इसनिष्ठामें लिखेजायँगे हेतु यहहै कि वास्तव करके वन्दन से अभिप्राय वारिजाने अर्थात् निछावरहोनेकाहै औरवंदन और शरणागति में केवल इतनाहीभेद है कि वंदन तो बाहर निछावर और अर्पणहोनेको कहतेहैं और शरणागति बाहर व भीतर दोनोंको अर्पण और भेंट करने का नामहै जिसप्रकार कीर्तन व स्मरण कि कीर्त्तन तो उसको कहते हैं कि जो भगवत्का नाम और भजन केवल मुखसेहोय औरस्मरण उसका नामहै कि जो मनसेहोय वास्तव में दोनोंबातका तात्पर्य्य एकहीहै मन सेहोय अथवा वचनसे सुरति बनीरहै इसहेतु स्मरण भी कीर्तन निष्ठामें मिलायके लिखागया है इसीप्रकार वन्दन निष्ठाको भी शरणागतिसे मेलकियागया और यहभी मालूमरहै कि शरणागति और आत्मनिवेदन एकबात है कि इसका बयान इसीनिष्ठा में विस्तार करके होगा कोई

उपासकलोग विशेषकरके रामानुज संप्रदायवाले भगवत्के प्राप्तहोनेका हेतु मुख्य शरणागतिको मानतेहैं और कहतेहैं कि भगवत् दोप्रकार से मिलता है एक तो भक्ति से दूसरे शरणागति से सो भक्तिकेयोग्य तो वे लोगहैं कि जिनको अपने परिश्रम व उपायका भरोसा दृढ़होय कि इस जन्ममें अथवा दशकै पचास जन्ममें अपने पुरुषार्थ अर्थात् भगवत् आराधन इत्यादिसे निश्चय भगवत्को प्राप्तहोंगे और भजनके विश्वास से यमराज इत्यादिका कुछभय नहीं रखते और जो इसजन्म में उनका मनोरथ पूर्णनहोतो होनेवाले जन्मोंसेआगेकोयहभयनहीं किहमकोभगवत्भक्ति न होगी भगवत्गीता के बचनके अनुसार कि अनेक जन्म में सिद्धिको प्राप्तहोकर परमगतिको जाताहै दूसराबचन यह कि हे अर्जुन मेरे भक्तका नाश कहीं नहींहोता ऐसऐसे बचन सैकड़ों व हजारों भागवत व गीता व दूसरे पुराणोंके हैं व शरणागति वहवस्तुहै कि जिस समय भगवत्में दृढ़बिश्वास करके शरणहुआ और इसलोक व परलोक का बोझ भार भगवत्पर डालदिया उसीघड़ीसे उसजनको न किसी उपायका प्रयोजनहै न पुरुषार्थ का और जोकुछ पुरुषार्थ और उपायका भरोसारहा तो उसके शरण होनेमें कचाईहै बरुउसका नाम शरणागती नहीं व न शरणागतीका फल उसको मिलताहै जिसप्रकार हनुमान् जी को इन्द्रजीत रावणके बटेने ब्रह्मफांसमें कि वह एकपतरी रस्सीथी बांधिलिया तो और कुछ उपाय न किया और उसको बिश्वास रहा कि इसब्रह्मफांससे कबहीं न छूटैगा उसके बिश्वासके अनुसार हनुमान्जी बँधेरहे जबवह बिश्वास छूटगया अर्थात् मोटे २ रस्सोंसे हनुमान्जी को बांधा तो हनुमान्जी उस ब्रह्मफांस और रस्सोंको तोड़कर निकल गये इसीप्रकार भगवत् शरण होकर कुछ और भी विश्वास मुक्तिके हेतु समझा तो शरणागति कारूप कहांबाकीरहा॥ भक्ति मार्गके चलने वालोंका यह सिद्धान्तहै कि श्रवण कीर्तन इत्यादि जो भगवत्भक्ति है उनमें प्रेम व स्नेहका होना विशेषचाहिये जब वहप्रेम परिपक्क और दृढ़ताको पहुंच जायगा सोईफलहै उससे आगेपर कुछकरतब्य शेषनहीं रहता व न किसी साधनका प्रयोजन ॥ अब निर्णय इसबातका उचित हुआ कि शरणागति व आत्मनिवेदन में क्या भेदहै जोकुछ भेदनहीं तो

शरणागति व भक्ति मार्ग्ग वालोंको आपुसमें बोलचाल क्याहै सो जाने रहो शरणागति और आत्मनिवेदन एक बातहै और उसीको प्रपत्ति व न्यास और त्याग कहते हैं जिसप्रकार घड़के कईनाम कलश व कुम्भ व घटहैं इसीभांति उस शरणागतिके कईनामजो ऊपर लिखेहैं सो हैं केवल एक वचनका भेद उनमें यहहै कि भक्तिमार्ग वालोंने तो शरणागति को एक अंग भक्तिका समझा अर्थात् यह कहते हैं कि भगवत् शरण होकर दास्य अथवा वात्सल्य अथवा शृङ्गार अथवा श्रवण कै कीर्त्तन इत्यादि भक्तिका करना योग्यहै कि उस भक्तिसे उद्धार होगा और शरणागति के उपासकोंमें शरणागतिही को उद्धारके हेतु मुख्यसमझा और कहते हैं कि शरणागतिके ऊपर प्रयोजन और किसीबातका नहीं शरणागतिही सब काम दोनोंलोकका करदेती वैसो यहसिद्धांत दोनोंमार्ग वालोंके निश्चयका लिखागया परंतु जब कि शरणागतिके उपासना वालोंको बिना सेवा पूजा श्रवण कीर्तन इत्यादिके शोभानहीं व न श्रवण न कीर्तन के उपासकों कोबिना शरणागतिके दूसरा कुछ उपायहै इससे बोलनेका भेद जो ऊपर लिखा सो भेद नाम मात्र व विश्वास के बढ़ावनेके वास्ते है महिमा बड़ाई शरणा गति निष्ठाकी किससे लिखीजाय कि सब प्रकारकी भक्तिकासार मेरी शरणागति है भगवत्ने चौथे स्कन्ध पुरंजनकी कथामें कहाहै कि सख्य व आत्मनिवेदन कोमें आपशिक्षा करताहूं इससेनिश्चय हुआ कि सबप्रकारकी भक्तिका सार व फल शरणागति अर्थात् आत्मनिवेदन है जहांतक जो मंत्र देखनेमें आते हैं सबमें शरणागति को मुख्य रक्खाहै विवरण उसका यहहै कि कोई मंत्रोंमें तो खुलाहुआ पद शरणागतिका लिखाहै किमैं श्रीकृष्णकी नारायणकी रामचन्द्रकी शरणहूं और कोई मंत्रोंमें नमःपद लिखाहै और नमःके अर्थदण्डवत् और बंदन करने के हैं और बंदनाका तात्पर्य्य अर्पण अथवा भेंटके निवेदन करना शरीर से है कि जिसको वारीजाना व निछावर होना कहते हैं तो जबकि दण्डवत् करना और शरणागति व आत्मनिवेदन एकही बातहै और एकही परिमाण है तो निश्चय होगया कि सब मंत्र भगवत् शरणागति को बयान करते हैं और शरणागतिही सबमें मुख्यठहराई और जबकि सब प्रकारकी भक्ति और उपासना का निश्चय केवल मंत्रके ऊपर है और

मंत्रों से शरणागतिकी बड़ाई दृढ़हुई तो शरणागतिको सब उपासना और सब भक्तिमार्गोंमें मुख्यतर होनेमें क्या संदेहरहा और सब उपासना और निष्ठाओं में शरणागति की बड़ाई इससेभी दृढ़हुई कि भगवत्ने गीताजी में कहा है कि जो मेरे शरण होतेहैं सो मेरी मायाको तरते हैं जब भगवत् श्रीकृष्ण स्वामी ज्ञान और भक्ति व वैराग्य व योग व कर्मका उपदेश अर्जुनको कर चुके तो आज्ञाकी कि जो सबसे अत्यन्त गुप्ततम बातहै सो परम वचन मेरासुन तुझसे कहताहूं काहेसे कि तू मेरा प्यारा सखा और बुद्धिमान है सबधर्मों को छोड़कर मेरे एकके शरण हो मैं तुझको सबपापों से तुरन्त छुड़ादूंगा शोच मति करै और इस शरणागति उपदेश के पीछे और कोई उपदेश नहीं किया तो प्रतीति होगई कि सब धर्मोंका परिणाम पदवी व तात्पर्य्य शरणागतिहै इसके आगे अब और कोई भागवत धर्म नहीं और सबभक्ति आपसे आप शरणागति से प्राप्त होजाती हैं अथवा उसके अंग हैं ॥ जब बिभीषण भगवत् शरण आया तो सुग्रीव आदिने उसको बन्दीमें डालनेका सम्मतकिया भगवत्ने कहा कि जो कोई मेरी शरण होकर यह कहताहै कि तेराहूं उसको सम्पूर्ण लोकन से निर्भय करदेता हूं यह प्रतिज्ञा मेरी है यह अर्थ बाल्मीकीय रामायण के श्लोक का है और यह दोनों श्लोक अर्थात् गीताजी के अन्तके और बाल्मीकीय रामायण के मंत्रोंमें भी गिने जातेहैं ॥ सो इन भगवत् बचनोंसे अच्छे प्रकार सिद्धान्त होगया कि शरणागति ही उद्धार के वास्ते समर्थ है इसके सिवाय शास्त्रों से प्रसिद्ध है कि गज और बिभीषण ने कोई साधननहीं किया केवल भगवत्शरण हुये थे कि उसके प्रभावकरके दोनोंलोक के अर्थको प्राप्तहुये ॥ जगत् में प्रसिद्ध चाल देखने में आती है कि कैसेहू पापी और नीच किसीकी शरणजाताहै तो उसके अवगुण और अन्याय पर कदापि दृष्टि नहींजाती सबसे पहिले उसके कार्यसिद्धहोने पर दृष्टि होतीहै इसीप्रकार यहजीव सब भरोसे को छोड़कर जो भगवत् शरण होगा तो वह परमात्मा कि जो सबरीतों का जाननेवाला है क्यों नहीं दोनोंलोक का मनोरथ पूर्णकरैगा सो बिचार व दृष्टांत व रीति व प्रमाण से अच्छेप्रकार निश्चय होगया कि भगवत्शरणागति उद्धार के वास्ते आप समर्थ व स्वतंत्र हैं दूसरे किसी साधन का प्रयोजननहीं सो उस

शरणागति का वास्तवरूप तो यहहै कि दोनोंलोक के प्राप्तकी चिन्ता व शोच अपने शरीरसे दूरकरके और सबबोझ व भार अपना भगवत् के ऊपर डालकर अपने आपको भगवत्के समर्पण करदेना और हर घड़ी यहविश्वास दृढ़बनारहना कि भगवत् शरणागतिसे इसलोक और परलोक के सब काम आपसे आप होजायेंगे मेरी चिन्ता आप भगवत् कोहै और जिससमय जो भगवत् शरणहोताहै अनेक जन्मोंकेपाप उसी-समय दूरहोजातेहैं परन्तु कोई इस शरणागति में छः प्रकार के विवर्ण करतेहैं ॥ प्रथम यह कि शरणागतिके समय से जो भागवत धर्मशास्त्रों में लिखेहैं उनका आचरणकरना दूसरे जो भागवत धर्म्मसे विरुद्धधर्म हैं और शास्त्रों में उनकानिषेध लिखाहै उनका त्यागकरना और भग-वत् भक्तोंमें प्रीति और सेवा का होना ॥ तीसरे यह बिश्वास दृढ़रखना कि मैं जो भगवत्के शरणागतिहूं भगवत् मेरे सब अपराधोंको अवलो-कन न करके निश्चय क्षमाकरेंगे चौथे यह कि सिवाय एक भगवत् के दोनोंलोकमें किसीकोरक्षा व कल्याणके वास्ते स्वप्नमेंभी न समझना ॥ पांचवां यह कि भगवत्की मूर्ति जैसे शालग्राम इत्यादि अथवा मानसी-स्वरूप भगवत्के आगे खड़ाहोकर अपनी दीनता और अपराध वर्णन करना कि हे प्रभु मैं अपराधी व दीनहूं सिवायआपके मेरा कुछठिकाना और आसरा नहीं सो आप पतितपावन दीनवत्सलहैं तो यह एक सं-बन्ध भी आपसे रखताहूं कि मेरेसे अधिक पतित और दीन कोईनहीं मेरा उद्धार आपसेहोगा ॥ छठवां अपने आत्मा अर्थात् अन्तर व बाहर की ममता सब भगवत् समर्पण करदेना सो इसप्रकारकी शरणागति निःसन्देह बिना दूसरे किसी साधनके इससंसार समुद्र से एकक्षण में पार उतार देवेगी ॥ हे श्रीकृष्णस्वामी हे दीनवत्सल हे पतितपावन हे अधमउद्धारण महाराज जैसाहूं आपका हूं मेरे ऊपर भी कृपाकी दृष्टि होय कि आपका चिन्तवन दिनरात करता रहूं जो स्वरूप बैकुण्ठ का धामनिष्ठा में लिखाहै उसके मध्य में निजधाम भगवत् के विहारकाहै कि हजार खम्भ उसके हैं और सब द्वार व दीवार उसके प्रकाशरूप दिव्य मणिनसे जड़ेहुये हैं उसके बीचमें सहस्रदलकमल और सबदल मन्त्ररूपहैं अर्थात् जितने देवताओंके मंत्र उनदलोंपर चिह्नित व अंकित

हैं उनके ऊपर शेषजी महाराज मसनन्द की भांति हैं और शेषजी के ऊपर श्रीलक्ष्मीनारायण परमशोभा और माधुर्यके धाम विराजमानहैं भगवत् के स्वरूप और प्रकाश परम देदीप्तमान के आगे करोड़ों सूर्य व चन्द्रमा जो एकसंग उदयहोकर एकबेर प्रकाशकरें तो करोड़वांअंश को नहींपहुंचे चरण कमलों के नख कि जिनका शिव और ब्रह्मादिक ध्यानकरके कृतार्थहोत हैं और उनको मुक्तिकास्थान शास्त्रों ने लिखाहै ऐसे प्रकाश करनेवालेहैं कि मानों भक्तोंके हृदयको प्रकाशकरनेके निमित्त कोटिन महामणिके पुंजहैं और चरणतलसे उनचरणों को ऐसी लालीहै कि जितनीज्योति और शोभा सब ब्रह्माण्डोंमें है उसीसे प्रगट हुईहै और ऊपरसे ऐसी मनोहर शोभा उनचरणोंकीहै कि सब शोभा उसी सम्बन्धसे है कड़े और घुंघुरू बिराजमान पीताम्बर धारणकिये हुये उसपर क्षुद्रघंटिका यज्ञोपवीत शोभायमान मणिगण और तुलसी मंजरी और फूलोंकीमाला कौस्तुभमणि कण्ठ में ऊपर भँवर गूंजरहेहैं चारोंभुजनमें कड़े पहुंची बाजूबन्दआदि आभूषण व शंख चक्र गदा पद्म शोभायमान मुखारविन्द देदीप्तमान और भालपर तिलक शोभित मकराकृत कुण्डल कानों में शिरपर किरीट मुकुट पीताम्बर आदि की मनमोहनी पहिरन श्रीवत्स चिन्ह बक्षस्थल पर और आप लक्ष्मी जी बामभागमें वैसीही शोभा से बिराजमान चरणसेवामें और बिष्वक्सेन आदि पार्षद कैंकर्य में तत्पर॥

अक्रूर की कथा॥

अक्रूरजीको शास्त्रों ने बंदननिष्ठाके उपासकोंमें लिखाहै यदुबंशियों में सुफलक के पुत्र पवित्र थे यद्यपि उनके रहने का संयोग महाकुसंग अर्थात् कंस के राजकाज में था परंतु वे भगवत् चरणों में बिश्वास दृढ़ रखतेथे इसहेतु वहकुसंग कुछहानि नहींकरसक्ताथा बरु उन कुसंगियों को अक्रूरजी का चरण श्री व आयुर्बलका कारण था जब कंसने श्री ब्रजचंद्र महाराजके ले आने के हेतु अक्रूरजीको भेजा तो अतिआनंदसे तनमें न समाये इस आशा से कि इसबहाने से उन चरण कमलों को देखूंगा कि जो शिव और ब्रह्मादिकके स्वामी और नायकहैं और उस चन्द्रमुखको देखकर मेरीआँखें शीतल और सफलहोंगी कि जिसकेहेतु

सब व्रजसुन्दरी चकोरसीहोकर अनूपरूप सुधाकेपानसे तृप्तनहींहोतीं और जब दण्डवत् करूंगा तो उन हस्त कमलों से मुझको उठाकर हृदयसे लगावेंगे कि जिनकी छाया कल्पवृक्ष के सदृश सदा भक्तों के शिरपर रही है ऐसे मनोरथ करतेहुये जब श्रीवृन्दाबन के निकट पहुंचे तो व्रजभूषण महाराज के चरण कमलों के चिह्न को पहिचानकर प्रेम व स्नेहके आनन्दसे अत्यन्त बेसुधि होगये और उन चिह्नों को अपना स्वामी व इष्टदेव जानकर साष्टांग दण्डवत् किया उसी प्रेम और उमंगमें भरेहुये जहां जहां चरण चिह्नदेखे तहां तहां दण्डवत् की और प्रेमके मदमें छकेहुये श्रीनन्दजीके घरपहुंचे श्रीभक्तवत्सल महाराजने उनके हृदयकीप्रीति पहिचानकर उनकी चाहना पूर्णकरी और अतिभाव से बलदेवजी सहित उनसेमिले जबप्रभातको नंदजी महाराज औरबाल गोपालों समेत चलकर श्रीयमुनाजी पर पहुंचे तो अक्रूरजीको प्रेमवश यह संदेहहुआ कि श्रीकृष्ण महाराज और बलदेवजी परम सुकुमार और शोभायमान बालकहैं मैं बड़ीमूर्खता करताहूं कि निर्दय व महाबलवान् मल्लोंके झुण्ड में कंसकी सभामें लेजाताहूं श्रीज्ञानराय महाराज को यहसंदेह दूरकरना उचित मालूमहुआ और जब अक्रूरजी स्नानकरनेलगे तो यह चरित्रदेखा कि कईबेर भगवत्को बलदेवजी और सब समाजसहित यमुनामें और बाहर रथपरदेखा और फिर यहदेखा कि आपभगवत् शेषशय्यापर श्यामसुन्दर स्वरूप किरीट मुकुट मकराकृत कुण्डल व सब आभूषण सबअंगन में कौस्तुभ मणि और पीताम्बर पहिनेहुये शंख चक्र गदा पद्म हाथोंमेंलिये विराजमान हैं ब्रह्मा शिव यम काल यक्ष राक्षस गन्धर्वआदि भय व त्रासयुक्त चारोंओरखड़े स्तुतिकरते हैं और यहदेखा जो कबहीं न सुनाथा अक्रूरजी का संदेह तुरंत दूरहोगया और यमुनाजी से बाहर आकर अतिप्रेम से दण्डवत्किया और मथुराकोचले कंसके बधहोनेपीछे आप भगवत्ने उनकेघर जाकेनाच के और भक्तिका बरदेकर कुलपरिवार के समेत कृतार्थ करदिया जब भगवत् द्वारकाको पधारे तो यादवोंको अक्रूरजीके प्रताप औरभक्ति के न जाननेके कारणसे अविश्वासी और शत्रुता होगई और स्यमन्तकमणि के वृत्तान्तमें भगवत् की आज्ञानुसार अक्रूरजी काशीको चलेगये उसी

घड़ी द्वारकामें ऐसा उपद्रव उठा और दुर्भिक्षपड़ा किसब दीनहोगये और जब अक्रूरजी आये तब सब उपद्रव शांतहुआ एक और भक्तिका प्रताप विचारने व लिखनेकेयोग्य है कि स्यमन्तक मणि ऐसाथा कि आठभार सोना नित्य आपसेआप जहांरहै तहां जमाहोजाय और दरिद्रताआदि कोईउपद्रव तहां निकट नहीं आता परंतु दोषभी उसमें ऐसाथा कि जहां रहा तिसकी हानिकोकिया अर्थात् पहिले सत्राजित मारागया जब उसका भाईलेकर भागगया तो वहभीमरा जब जाम्बवान्के पासगया तो वहां भी यद्यपि भक्तहोने के कारण से जाम्बवान् के बहुत उपद्रव न कर सका तौभी जाम्बवान्को पराजय प्राप्तहुई तब आपभगवत्के पासगया तो भगवत् से बलदेवजीको संदेह उत्पन्न होगया जब अक्रूरजी के पास गया तो उसका सबदोष दूरहोगया और पूर्णफल मंगल हुआ ऐसे चरित्रोंसे भगवत् अपने भक्तिकाप्रताप दिखातेहैं नहींतो सबकोई जानता है कि भगवत् एकनिमिष में कोटिन ब्रह्माण्ड प्रगट करके फिरनाश करताहै तिसको गुणदोष से क्या प्रयोजन॥

बिंध्यावली की कथा॥

बिंध्यावली राजाबलिकी पटरानी परमभक्त और पतिव्रताहुई जिसघड़ी राजावलिसे बामनजीने तीनडग धरतीकी याचनाकरी और शुक्रजी ने समझाया कि यहविष्णु नारायण हैं उसघड़ी यहरानी निर्भर प्रेममें मग्नहोगई और अपने और राजाके भागकी बड़ाई करतीहुई लोटाका जललेकर बारबार राजासे कहनेलगी कि संकल्प करोकरो और कारण कहनेका यहथा कि ऐसा न हो कहीं शुक्रजी के कहने से राजाका मन दानसे फिरजाय संकल्प होनेकेपीछे जब भगवत्ने दोडगसे दोनोंलोक नापिलिये तो तीसरे डगकेहेतु राजाको बांधा रानीको उसघड़ी राजाके बँधनेका शोच व दुःख तनकनहुआ बरु यह आनन्दहुआ कि राजा बड़ा भाग्यवान है कि उसको भगवतके चरणों औरहाथोंका स्पर्शहुआ और फिर भगवत् से विनय करनेलगी कि हेनाथ हे कृपासिंधु आपनेदया व करुणा जो कुछ इस राजापरकरी सो किसप्रकार बर्णन होसकै कि एक राज्य व धनके अभिमानीको आप निजपधारके दर्शनदिया और कुल परिवार समेत पवित्र करदिया पीछे रानीने बिचारा कि राजाकाराज्य

व धन भगवत् भेंटहोकर सफल होगया परंतु मुझको और राजाकोदेह अभिमान बाकीहै सो यहभी जो भगवत् अर्पणहोजावे तो आगे परके देहकेहोनेका बखेड़ा मिटजावै इसहेतु जबराजा ने अपने शरीरके नाम लेने वास्तेकहा तो रानीने भी बिनयकिया कि महाराज मेराअंग शास्त्र वचनके अनुसार आधाअंग राजाकाहै सो राजाका व मेराशरीर एकडग के बदलेमें नापलीजिये भगवत्ने जब यहप्रेम रानीका आत्म निवेदन में देखा और राजाके दृढ़ विश्वासपर निगाहकोकिया तो उस कृपाको किया कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता कि उसका थोड़ासा वृत्तान्त राजाबलि की कथामेंलिखागया कि वह कृपाभगवत् की रानीकी परम भक्ति और आत्म निवेदनके कारणसे हुई॥

विभीषण की कथा॥

विभीषणजी विश्वश्रवाके बेटे पुलस्ति के पोते ऐसेपरम भक्तहुये कि शास्त्रों में परम भागवत् लिखेगये और प्रभातही उनके नाम लेनेसे मंगल व कुशल होताहै बाल्य अवस्थाहीसे भगवत् चरणोंमें प्रीतिरही जब अपने भाईरावण व कुंभकर्णके साथ तपकिया तो बरदानके समय ब्रह्मा और शिवजीसे भगवत् भक्तको मांगा जिनका चरण लंकामें रावणआदि राक्षसोंकी संपति व आयुर्वलका कारण था सोरावणको जब विभीषणजीने त्यागकिया तबहीं तुरन्त लंकापर विध्वंस आन पहुंची और रावण आदि सब राक्षस मृत्युके ग्रासहुये सूक्ष्म वृत्तान्त यहहै कि जब रघुनन्दन महाराजकी सेना समुद्रके किनारेपर पहुंची तो रावणने अपनेसब मंत्रियोंसे मंत्र पूछा विभीषणजीने जोधर्म और नीतिके ज्ञाताथे कहा कि कुशल तो इसीमेंहै कि सीताजीको भगवत्के समर्पण करो और बिनयऔर प्रार्थना सहित चरणगहो व संधिकरो नहीं तोविग्रह बढ़नेसे लंकाकी और तुम्हारी और सबराक्षसोंकी कुशल नहींहै रावणको यह मंत्र अच्छा न लगा और क्रोध करके राजसभामें एकलात मारी और कहा कि जिसकी बड़ाई व पक्ष तूकरताहै उसीके पासजा विभीषणजीने फिरभी साधुताकी रीतिसे उसके कल्याणकी शिक्षाकरी परन्तु जब सब प्रकार भगवत्से विमुख निश्चय करलिया तब उसका त्यागकरके भगवत् चरणोंके शरणमें चले राहमें यहमनोर्थ करते आतेथे कि आज मैं

उन चरण कमलोंको दंडवत् करूंगा कि जो शिव और ब्रह्मादिकके भी इष्टदेवहैं और उसरूप अनूपको देखूंगा कि जिसको योगीजन समाधि लगाकर ध्यान करतेहैं जब समुद्रके इसपार आये तो श्रीरघुनन्दनस्वामी को समाचार पहुंचे बिनय निवेदन होने पर आनेको आज्ञादी सुग्रीवने बिनय किया कि शत्रुका भाईहै न जानैं उसके मनमें क्याहै अच्छा यह है कि बांधि लियाजाय रघुनन्दन स्वामीने हँसके कहा यद्यपि तुमने राजनीतिकी बातकही परंतु मेरा प्रण शरणागतके भयको दूरकरनेका है जो कोई दोनों लोकके सब पापोंमें फँसाहै और भयभीत होकर मेरे शरण आकर एकबेर यह कहताहै कि मैं तुम्हाराहूं उसीघड़ी दोनोंलोक के भयसे निर्भय करदेताहूं तौ जो शरण आयाहै और बांधाजाय तो मेरे प्रण में भंग होगा और जो कपट करके आयाहै तो तौभी कुछ चिन्ता नहीं कि लक्ष्मणजी एकक्षणमें सारे संसारके राक्षसोंका संहार करसक्ते हैं सोहरप्रकारसे उसका आना उचितहै यह सुनकर हनुमान व अंगद व जामवन्त आदि दौड़े और बड़ी रीति व मर्यादसे ले आये बिभीषण जीने दूरसेही धनुषबाण धारीके शोभायमान मुखकी शोभा देख करके दोनों लोकके दुख व पीड़ाको बिदाकिया और साष्टांग दण्डवत् करके अति दीनतासे पुकार कर यहशब्द कहा कि हेशरणागत बत्सल शरण हूं शरणपाल महाराज उस शब्दके सुनतेही उठे और छाती से लगा लिया और बार्तालाप होनेपर यद्यपि भगवत् दर्शन प्राप्त होनेसे बि-भीषणजी को कुछ कामना संसार के बिषय की नहीं रही परन्तु दर्शन करनेके आगे जो कुछ चाहना उनके मनमें रही उसका पूर्ण कारण भगवत्नें निश्चय समझा इसहेतु वहराज लंकाका कि जिसको रावण ने हजारों बार अपने मस्तकको भेंटकर करके शिवजीसे पाया था उसी घड़ी बिभीषण को प्रसन्न होकर देदिया और समद्रका जल मँगाकर राज्य तिलक करदिया रावणके बध होने पीछे जब बिभीषणजी राज्य लंकाका करने लगे तो वहही लंका जो पहिले पाप और अपराधों से भरी हुईथी सो धर्म और भक्तिको रूप होगई बिभीषणजीको रामनाम में इतना बिश्वासथा कि थोड़ासा वृत्तान्त उसका यहहै कि एकजहाज़ किसी सौदागरका समुद्रमें चलने से रुकगया जहाज़ के मालिकने अ-

पने मंत्रियोंके कहनेसे एकआदमीको समुद्रकी भेंट करके समुद्रमें डाल दिया वह विचारा डूबता उतराता बहता लंकाके किनारे जायलगा वहां के लोग विभीषणजीके पास उसको लेगये कि विभीषणजी इसविश्वास से कि ऐसेही आकार और स्वरूप मेरे स्वामीके हैं उसको भगवत्रूप जाना और प्रेमसे सेवा पूजा करके सिंहासनपर बैठाला बड़ी मर्यादसे रक्खा वह आदमी राक्षसोंके संगसे डरकर नित्य विदा मांगै तब विभीषणजीने उसको बहुत रत्न देकर विदाकिया और समुद्रसे पार होने के वास्ते उसके भालमें रामनाम लिखदिया वह मनुष्य उसीरामनाम की नौकापर समुद्रमें ऐसे सुखसे चला कि जहाज़में भी ऐसा सुखनथा संयोगवश उसी जहाज़के निकट पहुंचा और जहाज़वालोंने चढ़ालिया उसने सबवृत्तान्त और भक्ति विभीषणजीकी और रामनामकी महिमा को जहाज वालोंसे वर्णन किया वेलोग सबविश्वासयुक्तहुये और उस नामको जपकर कृतार्थ होगये निश्चय करके यहनाम मंगल रघुनन्दन स्वामीका वहहै कि जिसके प्रभावसे शिला समुद्रपै तरगई पापी और पातकी जितने इस संसारसे उतरेहैं उनकी तो कुछ गिनतीही नहीं और विभीषणजीने भी यही समझकर उसके भालपर रामनाम लिख दिया कि करोड़ों महापातकी संसार घोर समुद्रको उतर गये तो एक मनुष्यका छोटासा समुद्र उतरना क्या बात है ॥

गजराजकी कथा ॥

महाभारत व भागवत् और दूसरे पुराणोंमें कथा विस्तारसे लिखी है कि गज व ग्राह दोनोंपहिलेजन्मोंमेंब्राह्मणभगवत्भक्तथे ऋषीश्वरके शापसेएकनेशरीर हाथीका दूसरेने शरीर ग्राहका पाया व पहिले जन्म की शत्रुतासे इस जन्ममें भी संयोग लड़ाईका पहुंचा इसप्रकार कि एक दिन वह गजराज पानीपीनेके वास्ते गंडकी नदीमें जहां वह ग्राहरहता था गया और ग्राहने गजका पांव पकड़लिया ग्राह अपनी ओर जलमें खींचताथा और गज अपनी ओर इसीभांति एक हज़ार वर्षतक दोनोंल-ड़ते रहे अन्तको ग्राह प्रबलपड़ा और गजको नदीमें लेचला मूंड़ मात्र थोड़ासा डूबनेको बाकीथा कि गजने भगवत्की शरण ली अर्थात् एक कमल नदीमें से तोड़कर अपनी सूंड़में लेकर भगवत् भेंटकिया और पु-

कारा कि हे हरि मैं तुह्मारे शरणहूं शरणागत बत्सलदीन दुख भंजन महाराज दुखसे भरीहुई टेर सुनतेही बिकल होकर गरुड़पर सवार चक्र फिराते हुए बैकुंठसे दौड़े और शीघ्र पहुंचने के हेतुऐसी बिकलता हुई कि जो गरुड़ का बेग मनके बराबर है उसकोभी बलहीन समझ कर छोड़दिया और पियादे पायन धाये गजकी सूंड़ ज्योंकी त्यों बाहर थी कि आन पहुंचे और ग्राहके मुंह पर चक्रमारा कि मुंह उसका कट गया और गज उसकी फांसीसे छुटा॥ एक शंका यहहै कि भगवत् सर्वत्र व्यापक हैं सो क्या कारण कि बैकुंठसे अवतार धारणकरके आये उसी जगहसे क्यों न प्रगट हुए सो हेतु यहहै कि उस समयगजने बैकुंठनाथका ध्यान मनमें करके पुकार किया था इसी कारण से रीतिके अनुसार भक्त की चाहना के अनुकूल बैकुंठसे आये और दूसरा यह कि यह चरित्र अपनी अधिक बिकलता का कि अपने शरणागत के छुड़ानेके वास्ते दूसरे भक्तोंके भाव बढ़ानेके निमित्त बिख्यात करना उचित समझा इसहेतु बैकुंठ से आये भगवत् के शीघ्रपहुंचने के बर्णनमें हज़ारों श्लोक व कबित्त कबि लोगोंने रचना कियेहैं उनमें से दो चार का भाव सूक्ष्म करके यह है॥ हाइन मिटन पाइ आये हरि आतुरहुये॥ अर्थात् पुकारकीझनक न मिटी थी तबतक बिकलहुए आय पहुंचे॥ दूसरा--रा कह्यो कदन माहि मा कह्यो मगनमें॥ अर्थात् गजने रामपुकारा तो ऐसी शीघ्रतासे आये व रक्षा करी कि रा शब्द तो पीड़ा व रोतेमें मुखसेनिकला और माशब्द आनन्दमें मुखसे निकला॥ तीसरा--पानीमें प्रगट्यो कैधौं बानीमें गयंदके॥ अर्थखुलाहै॥ चौथा--आयो चढ़िवाहीके मनोरथ महारथी॥ अर्थात्उसी की चाहना पर चढ़कर आये ऐसी लाघवता करी॥ पीछे गजने भगवत् की स्तुति करी कि गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र में लिखाहै कि जो कोई उसका पाठकरताहै भगवत् धामको जाताहै भगवत्ने प्रसन्न होकर अपना परमपद गजराज को दिया और भगवत् दर्शन व चक्र के स्पर्श होने से ग्राहको भी परमपद मिला॥

ध्रुवजीकीकथा॥

ध्रुवजीकी कथा बहुत से पुराणोंमें लिखीहै और सब लोग जानते हैं इसहेतु थोड़ीसी में लिखताहूं जन्मउनका राजा उत्तानपाद व रनीसुनी-

तिसे हुआ एकदिन राजाने दूसरी रानीका बेटा उत्तम नामीको गोदमें बैठाया था ध्रुवजीने भी गोदमें बैठने की इच्छाकी सुरुचि रानी जो दूसरी थी तिसने कहा कि तू जो मेरे उदरसे जन्मलेता तो राजाकी गोदमें बैठने योग्य होता यह कहकर बैठने न दिया ध्रुवजीने लज्जा व हीनताई से उसीघड़ी भगवत् शरणली कि सिवाय भगवत् शरणागत के दूसरा शरण दिखलाई न पड़ा अपनी मातासे आज्ञा लेकर भगवत् भजन करने घरसे चले राहमें नारदजीने समझाया न फिरे तब द्वादशाक्षरमंत्र का उपदेश करदिया ध्रुवजी मथुरामें आये मंत्र जप करके भगवत्को प्रसन्न किया सो शरणागत् वत्सल दीनबंधु महाराज आये अपना हस्तकमल ध्रुवजी के माथेपर रखकर भक्तिवरदान देकर कहा कि छत्तीसहजार वर्ष इसपृथ्वीका राज्यकरके फिर अटललोकका राज्यकरोगे अबतुम अपने घरजाव ध्रुवजी अपने घरको आये पिता उनका नारदजी की आज्ञा व समझानेसे ध्रुवजीको आगेजायके बड़ीरीति मर्यादसे लेआया और ध्रुव जीको राज्यतिलक देकर आप भगवत्भजन करनेको बनको चलागया ध्रुवजीने छत्तीसहजारवर्ष न्याय धर्म पूर्वक राज्यकिया और भगवत् धर्म को सारे संसारमें फैलाया उत्तम नामी ध्रुवजीका भाईथा उसको कुबेर के अनुचरों ने मारडाला ध्रुवजी कुबेरपर चढ़गये एकलाख अस्सीहजार कुबेरके अनुचरों को बधकिया स्वायंभूमनु आये कुबेर का अपराध क्षमा कराया पीछे उसके ध्रुवजी अपने दोनों माता पिता समेत ध्रुवलोक को गये और जब महाप्रलय होगी तब भगवत्के परम पदको जायँगे॥

जटायु की कथा॥

सब रामायणोंमें कथा बिस्तारसे लिखीहैं कि जटायु पक्षियोंका राजा परमभक्त भगवत्का हुआ और अपने शरीरको भी भगवत् पर निछावर करदिया जब रघुनन्दन महाराज दण्डक बनमें आये और पंचवटी से सीताजीको रावण चुराकर लेगया तो सीताजी भगवत् बिरहसे व्याकुल होकर महाबिलाप करती जातीथीं जटायुने जानकीजीको पहिचानकर रावणके प्रताप व बलका कुछभय न किया अधीरहोकर दौड़ा व अपनी चोंच व पंजोंसे रावणको मारकर गिरादिया सीता महारानी को छुड़ा लिया और एकजगह बैठालकर रावणसे लड़नेको सन्नद्धहुआ ऐसालड़ा

कि जिस रावणने सारे देवता व राजाओंको बिना परिश्रम जीत लिया था उसको बेसुध मृतककी नाईं करदिया रावण चकित व क्रोधवन्तहुआ तरवारसे पंखकाटदिये यद्यपि ऐसीदशामेंभी बल व पराक्रम बहुतकिया परंतु जबकि पक्षी बिनापक्ष के मृतक के सदृश हैं वह परिश्रमकुछकाम न आया रावण दोचारकारीघाव देकर चलागया सीताजीको ढूंढ़तेहुये रघुनन्दन महाराज और लक्ष्मणजी जटायु के पास पहुंचे उसी घड़ी तक प्राण जटायु का शरीर में था रघुनन्दन महाराज के दर्शन करके सब दुःख सुख शत्रु मित्र साधु असाधु मन से दूर हुये सिवाय रूप अनूप भगवत् के भीतर बाहर कुछ न रहा पीछेरघुनन्दन महाराज से सबवृत्तान्त कहकर प्राणोंको बिदा मांगी श्रीकरुणाकर कृतज्ञ ने जटायु को अपनी गोदमें रखकर शरीर पर हस्त कमलफेरा उस समयके चरित्रमें एककबित्त तुलसी के पिताका कहाहुआ लिखताहूं ॥

कबित्त ॥

दीन मलीन अधीनहे अंग बिहंग परेउ क्षिति छिन्न दुखारी।
राघव दीनदयाल कृपाल को देखिदुखी करुणा भइ भारी॥
गीधको गोद में राखि कृपानिधि नयन सरोजन में भरिवारी।
बारहिं बार सुधारत पंख जटायु की धूर जटान सों झारी १॥

और शोक के दुःख से विकल होकर आंखन में आंसू भर कहा कि तनका छोड़ना क्या प्रयोजन अटल और निश्चय कर सक्ताहूं जटायुने कहा कि जिसका नाम करोड़ों जन्म के पातकों को दूर करके परम आनन्द को पहुंचा देता है सो पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घन मुझको अपनी गोदमें लेकर मेरे शिरपर हाथ फेरताहै और प्यार करता है और मैं उस स्वरूप को कि जो शिवजी के भी ध्यानमें कबहीं बहुत कष्ट से आता है तिस को देख कर आनन्द में मग्न हूं तो इस घड़ी से सिवाय और कौन सी घड़ी अच्छी होगी कि इस अनित्य शरीर को छोड़ूंगा यह कह कर भगवत् चरणों का चिन्तवन करता हुआ तनको छोड़कर स्वरूप मुक्तिको प्राप्त हुआ भगवत् की स्तुति करके परम शोभायमान विमान पर आरूढ़ होकर परम धामको गया भगवत् ने उसके शरीर को दाहादिक क्रियाको आप किया और जिस प्रकार दशरथ महाराज

को तिलांजलि दियाथा उसीप्रकार जटायुकोभी दिया धन्यहै इसकृपालुता व दीन वत्सलताको भगवत्की कि कैसेर तुच्छकिसपदवी कोपहुंचातेहैं कि जहां मन व बुद्धिका प्रवेश नहीं॥

मामू भानजेकी कथा॥

मामू भानजे दोनों ऐसे परमभक्त हुये कि भगवत् को अपनीसेवासे प्रसन्न किया और प्राणतक भगवत् को निछावर करदिया पहिले जब भगवत् शरण हुये तो घरबार सब त्याग करके तीर्थयात्रा करते हुये फिरने लगे पंडित और ज्ञानवान थे यात्रा करते में किसी बन में देखा कि परम शोभायमान भगवत् की मूर्ति है परन्तुमन्दिरनहीं सो मन्दिर बनवाने का विचार करके द्रव्य के अन्वेषण में फिरने लगे कहीं कुछ न मिला किसी नगर में सेवड़ों के देवता की प्रतिमा पारस पाषाण की सुनी प्रसन्न हुये कि अब मन्दिर मनमाना बन जायगा परंतु शंका यह हुई कि सरावगियों के चौताले में जाना मनाहै कैसे जावें फिर यहबिचारा और निश्चय किया कि यह शरीर भगवत् शरण है भगवत्जिस बातमें प्रसन्न हो सो बात करनी चाहिये और भगवत् शरणागतोंने जो नरकादिक का भय किया तो शरणागती की दृढ़ता नहीं नितान्त सेवड़ों के मन्दिर में जाकर चेले होगये और ऐसी सेवा उस मन्दिर और सेवड़ों की करी कि सबने बुद्धि हीनता करके सब कारबार मन्दिर का उनको सौंप दिया जब देखा कि सब कारबार अपने वशमें आगया तो मूर्तिके ले जानेकी चिन्ता की परंतु राह निकालने की न मिली द्वारसंकीर्ण था कारीगरने जो मन्दिर बनायाथा उनसे युक्तहीयुक्त भेदलिया कि गुम्मज के ऊपर जो कलश है पेंच लगाकर दृढ़ किया गया है और वहपेंच खुल सक्ता है और वहीं मूर्ति के आने जानेकी राहहै रातको दोनों आपुस में मंत्रणा करकेपहिले उस कलशको उतारा फिरभानजा उस राहसे निकल कर गुम्मज पर चढ़ गया मामूने मन्दिर के भीतर बैठकर उस मूर्तिको अच्छे प्रकार दृढ़ रस्सीसे बांधा व भानजेने ऊपर खींच लिया जब मूर्ति के मिलने से मनस्थिर होगया तो मामू ने भी उसी राह से निकलने को चाहा परंतु अति हर्ष होनेके कारण से शरीर ऐसा मोटा होगया कि उस राह से न निकल सका उसीमें फँस-

गया कितनेही उपाय किये परन्तु कुछ बस न चला मामूने अपनेभानजे से कहा कि जो मेरा शरीर यहां रहा तो कुछ चिन्ता नहीं व न कोई बात दुःख की है मनोर्थ जो था सो सिद्ध होगया उचित यह है कि तुम जाकर भगवत् मन्दिर जैसी कांक्षा है बनवाओ मेरा शिरकाटकरकहीं डाल देव कि मेरे कानोंमें साधु भेष की निन्दा शब्द सेवड़ों के मुखकी पड़ने न पावै क्योंकि साधु भेष वास्तव करके भगवत् भेष है भानजे ने शोक से दुःखित होकर मामूके कहनेके अनुसार किया अर्थात् उसका शिर काट लिया और मूर्त्तिको लेकर चला यद्यपि ज्ञान व भगवत्शरणागती के दृढ़ता से कुछ शोच अपने मामूके मरजाने से नहीं लेआया परन्तु सत्संग को समझकर व परम भागवतके बिछुड़ने से ऐसा शोक समुद्र में पड़ा कि किसीभांति चित्त को चैन नहीं सो कबहीं शोक में दुःखित कबहीं मूर्त्ति के मिलने के आनन्द में मग्न होता जहां मन्दिर बनवाने का बिचार किया था तहां पहुंचा दूरसे देखा कि कोईमन्दिर के बनवाने की तैयारी में तत्पर है अपने मनमें जाना कि कोई दूसरे मनुष्य ने मन्दिर के बनवाने का कार लगाया है दुःखितहुये जब और समीप पहुंचे तो देखा कि मामू खड़ाहै और मन्दिर बनवाने के काममें तत्पर है अतिआनन्द से दौड़कर दोनों मामू भानजे मिले और मन्दिर रंगनाथ स्वामी का ऐसी शोभा व तैयारी से बनवाया कि वैसादूसरा संसार में नहीं ॥

राघवानन्दकी कथा ॥

राघवानन्दजी रामानुज स्वामी की सम्प्रदायमें परमभक्त और हरि भक्तोंको आनन्दके देनेवाले हुये जिसदेश में रहतेथे उसको काशीजी के सदृश करदिया चारो वर्ण अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र और चारों आश्रम अर्थात् ब्रह्मचर्य्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यस्थको भगवत् भक्तिमें दृढ़करदिया रामानन्दजीको मृत्युके मुखसे निकालकर साढ़ेसातसौ बर्ष की आयुर्बल को देदिया कि रामानन्दजीकी कथामें वृत्तान्त लिखागया है ऐसे ऐसे प्रभाव उनके बहुतहैं महिमा उनकी कौन लिखसक्ता है ॥

जगन्नाथकी कथा ॥

जगन्नाथ बेटे रामादासजी के पारीक ब्राह्मण कान्हड़ाकुल में धर्म्म

और भक्तिके मर्य्यादहुये श्रीरामानुज सम्प्रदायके अनुकूल भगवत् शरण होकर मनको लगाया और उपासनाके शास्त्र अच्छेप्रकार निजअभिप्राय उपासनाका भलीप्रकार सब समझा सार और असार को ऐसा न्यारा न्यारा करदिया कि जिस प्रकार हंस दूध और पानी को अलग अलग करदेताहै मुनीश्वरों की भांति आचार व धर्म्म का आचरण करते थे और अनन्य शरणागती व दशप्रकारकी भक्तिके करनेवाले दृढ़हुये पुरुषोत्तम अपनेगुरूके प्रतापसे दोनोंअंगमें कवच जिसको बख़्तरकहतेहैं पहिना था इसके अर्थ कईभांतिके हैं प्रथम यह कि ये महाराज पुरोहित राजा के थे और शूरता बीरतामें विख्यात सो एक जो शरीरहै उस में बख़्तर पहिना करतेथे जैसा सिपाहीलोग पहिनतेहैं और दूसरा अंग जोमन है तिसमें सहिष्णुता व क्षमा का बख़्तर धारणथा कि किसी की कठोर वाणी रूपी शस्त्र न लगै दूसरा यह कि दोनोंअंग जो दोनोंभुजा तिस पर शंख और चक्र के चिन्ह धारण कर के कलियुग के पाप जो तीर व तरवारके सदृशहैं उनसे शरीरकी रक्षा किया तीसरा यहकि प्रकट अङ्ग में भगवत् सेवाका ऐसा कवच पहिनाथा कि संसारी कार्य्य जो तीर व तरवार सेभी अति तीक्ष्णहै कदापिनहीं काम करसक्तेथे और हृदय में भगवत् चिन्तवन रूपी कवच पहिनाथा कि जिस करके दूसरी चिन्ता रूपी शस्त्रस्पर्श नहीं करसक्ताथा ॥

लक्ष्मणभट्टकी कथा ॥

लक्ष्मणभट्टजी रामानुज सम्प्रदाय में परमभक्त शरणागती मार्ग्गके हुये भक्ति का आचरण मुनीश्वरोंके अनुसार करतेथे औरभाव व भगवत् धर्म्म और भगवत् भक्तोंकी सेवा और दशप्रकार की भक्ति में विख्यात हुये सन्तोष व क्षमा व प्रेमकी मूर्तिथे और मन कबहीं स्वप्नमें भी संसारी कार्य्यके सिद्धके अर्थ नहीं सावधान होताथा परमधर्म्म जो शरणागति है उसका प्रतिपालन करके सबलोगोंको उपदेशकिया और श्रीमद्भागवतको विचारकर सार और असारको अलग अलग करदिया भगवत् कीर्त्तनमें अद्वैत और भजन सुमिरणमें वसेहुये ॥

निष्ठा बाईसवीं ॥

जिसमें महिमा सखाभाव व वर्णन कथा पांचभक्त उपासकों की ॥

श्रीकृष्णस्वामीके चरण कमलोंकी मुकुट रेखा को दण्डवत् करके ध्रुव अवतारको दण्डवत प्रणाम करताहूं कि बिठूरमें अवतार धारण करके भगवत्भक्ति और शरणागतीके स्वरूपको जगतमें प्रगटकिया जानेरहो कि कोई २ पुराणोंमें ध्रुव अवतारके स्थान नारदजी का अवतार लिखाहै सखाभावके उपासकों का यह सिद्धांतहै कि ईश्वर और जीव दोनों परस्पर सखा अर्थात् मित्रहैं और ऐसी मित्रता व स्नेह दृढ़है कि ईश्वरको जीव बिना ईश्वरता नहो और न जीव ईश्वरबिना होसक्ताहै अर्थात् जो जीव नहो तो ईश्वरको कोई नहीं जानता और जो केवल जीवहो और ईश्वर नहो यहबात होनेकी नहीं क्योंकि बिना ईश्वर जीव नहीं होसक्ता जो कदाचित् यहबाद कोई करै कि मित्रता दोनोंकी आपुसमें बराबरके हो तब होतीहै सो कहां तोजीव कि हजारों प्रकारकी पीड़ा जन्म मरण व पाप पुण्य में फँसाहै और कहां वह ईश्वर जिसका स्वरूप मन व बुद्धि में न आयसकै और बेद जिसको नेतिनेति कहतेहैं और मायाके गुणोंसे अलग नित्य निरीह निर्बिकार अच्युत अनन्त पूर्णब्रह्म परमात्मा सच्चिदानन्द घनहै इसबिवादका उत्तर प्रगट दृष्टांतसे समझ लेनाचाहिये कि पहिले तो मित्रता के ब्योहारमें कुल व ढंग व मर्याद व बुद्धि व चतुराई व सुन्दरताई व वस्त्रकी पहिरन व आभूषणकी सजावट इत्यादि सब सामा सब तुल्य व बराबर होना योग्य होताहै तिसकेपीछे अपना अपना भाग्यहै कि एक बादशाह होजाय और दूसरा दरिद्र सो ऐसाही वृत्तांत जीव और ईश्वरकी मित्रताकाहै अर्थात् जैसा ईश्वर निर्बिकार प्रकाशवान ज्ञानानन्द स्वरूपहै वैसाही दोएक बातोंके न्यून बिशेषकरके जीव है कुछ भेदनहीं दोनोंके बीचमें मायाके स्वरूपका आचरण जंजालहुआ सो जीवतो अणु अर्थात् छोटा व अल्पज्ञथा इस कारण करके वह तो मायाको देखकर मोहित होगया और उसके जाल में फँस गया और ईश्वर कि जो अनन्त व सर्वज्ञथा वह मायासे ज्यों का त्यों अलग व परे रहा यद्यपि ईश्वरने अपने मित्रके छूटनेके हेतु बेद व शास्त्र के द्वारा उस मित्र को अपना और उसका स्वरूप बतलाया और अपने नाम

को प्रगट किया और सैकड़ों हजारों उपाय जैसे मंत्र जप व यज्ञ व दान व दया व कर्म व ज्ञान व वैराग्य व नवधा भक्ति इत्यादि की प्रवृत्ति करी परन्तु वह जीव उस मायाके मोह में ऐसा फँसा कि कुछ न समझा और अपना और अपने मित्रका स्वरूप संपूर्ण भूलगया सो जबअपने और ईश्वर और मायाके स्वरूपको जानकर छूटनेके निमित्त उपायकरै तबफिर अपनेमित्रका मिलन और परमआनन्दको प्राप्तहोय अबबड़ीशंका यह उत्पन्नहुई कि जब ईश्वर और जीवमित्रहैं और वह ईश्वर कि जिसकीमायामें यहजीव फँसाहुआहै उसकेछुटानेको चाहताहै तो फिरकौनहेतु यहजीव मायामें बँधाहै आप ईश्वर क्योंनहींछुड़ालेता सो यह शंकानईनहींहै वहीबातहै कि जो शास्त्रोंमें ईश्वरकी दयालुता व कृपालुता जीवपर वर्णनकरीहै और संसारके सृष्टिकी परम्परा के बने रहनेकेहेतु कर्मको विशेषता प्रगट करके मुक्तिका होना ज्ञानसे अर्थात् पाप पुण्य ये दोनों कर्मों के दूरहोने पर वर्णन कियाहै सो जो उत्तर इस शंका के समाधान के हेतु शास्त्रों के सिद्धान्त के अनुसार वहां निश्चय हुआहै सोई यहां समझलेना चाहिये और जो सखाभाव की रीति के उत्तर की चाहनाहोय तो यहहै कि संसारी व पारलौकिक सबकार्यों की रीति व पद्धति का जाननेवाला ईश्वर से अधिक दूसरा कोई नहीं इसीप्रकार मित्रता की रीति भी भगवत् से अच्छा दूसरा कोई नहीं जानता और मित्रता की रीतिमें दोनोंमित्र बराबर आचरणकरते हैं जो एक मित्रने शिष्टाचार किया तो उसके बदलेमें दूसरा मित्र उससे अच्छा शिष्टाचार करदेता है और विवाहादि में जो एकमित्र ने सौ रुपैया उठाया तो दूसरा मित्र भी उसके बिवाहादि में उतनाही उठाता है सो इस बराबरी के रीतिके अनुसार जो ईश्वर बिनासन्मुख भये जीव की मायाको दूरकरके मिलनेके वास्तेआवै तो रीति और मूलमित्रता की बिपरीतहोजाय जो यहकहिये कि जीवके सन्मुख होनेपर कौनप्रबन्ध था आप ईश्वरने अपनेमित्रके मिलनेके हेतु अगुवाई क्योंनकी कि मित्रतामें मित्रका अपनेघर आना अथवा आप उसके घरजाना दोनोंबात बराबरहैं सो जानेरहो कि भगवत्की ओरसे अगताई व हठ अच्छेप्रकारसेहुई और कदापि कोईरीति में चूकनहुई अर्थात् अपना और उस

मित्रका स्वरूप वर्णनकरके और बेद व शास्त्रोंको सन्देशा पहुंचानेवाले की भांति भेजकर मिलनेके वास्ते सन्देशाभेजा और अपना नाम और लक्षण प्रगटकिया तिसकेपीछे मिलनेका उपाय बतलाया और अबतक सर्वकाल सबजगह मिलनेके वास्ते सन्मुख व प्राप्तहै तो ईश्वरकी ओर से कौनचूकहै सबचूक इसजीवकीहै कि कदापि उससे मिलना नहीं चाहता व न सन्मुखहोता है यहां जो कोई सन्देहकरै कि बाततो मायासे छुड़ानेकी पड़ीहै तुममिलनेकी बातलिखतेहौ प्रश्न और उत्तर और सो सन्देह कुछनहींहै मायासे छूटनेका तात्पर्य्य ईश्वर से मिलनेकाहै और ईश्वरसे मिलनेका अभिप्राय मायासे छूटनेकाहै बातएकहीहै केवलबात के कहनेका हेरफेरहै॥ अबयह निश्चय कैसेहोय कि जीव और ईश्वर पुराने मित्रहैं सो बेदश्रुतीमें स्पष्ट यहीबातलिखीहै और श्रीमद्भागवतके चौथे स्कंद पुरंजनकी कथामें विस्तारसे निर्णय करके लिखीहै कि जीव और ईश्वर दोनों आपुसमें मित्रहैं इसकेसिवाय जहां नवधाभक्तिका बेद और शास्त्रोंने बर्णनकियाहै तो वहां सखाभाव की भी भक्तिलिखी है तो जो जीव और ईश्वरआपुसमें मित्रनहींहोते तो सखाभावकी भक्ति और उस की रीतिबेद और शास्त्रमें क्यों लिखीजाती और सखाभावके आराधन की रीति दूसरी निष्ठाओंकी रीतिके अनुसार है केवल इतनाभेद है कि दूसरी निष्ठाओंमें स्वामी इत्यादि जानिके सेवापूजा करते हैं और इस निष्ठामें मित्र व बराबर समझकर सेवाहोतीहै और भगवत्‌ने चौथेस्कंद पुरंजन उपाख्यानमें कहाहै कि दूसरीभक्ति तो गुरूके उपदेशसे मिलती है और सखाभाव व आत्मनिवेदनको मैं आप उपदेश व शिक्षाकरताहूं इसभांतिसे सखाभावमें जिसघड़ीभक्तका मनलीनहोताहै उसघड़ी आप भगवत् उसके हृदयमें प्रवेश व प्रकाशकरताहै यहरस जिसकिसीने पान किया तुरन्त मतवारा व बेसुधहोगया सब सखाभाव वालों के मनकी लाभ भगवत् चरित्रोंमें अपनेमनके रुचिके अनुसारहै जैसेकि बदरिकाश्रममें नर नारायण सखाहैं उनकी प्रीतितप और ज्ञानके चरित्रोंमें है॥ अर्जुन और श्री कृष्णमहाराज की प्रीति महाराजों के सदृश और ब्रज गोपकुमारोंकी खेल और हँसी गोपकुमारोंके सदृश और अयोध्याकेराजकुमारोंकी प्रीति भगवत् चरित्रोंमें महाराज कुमारोंके हँसीखेलके सदृश

हुई और इसीप्रकार सबकेभाव अलगअलगहैं जिसओर जिसकिसीको चाहहै उसीभांतिकी तैयारीसे सेवा औरभगवत् आराधन व किया करताहै व आराधन से व पूजा जो नव अथवा सातबेरनित्य न होसके तो तीनबेरसे कम न हो स्तोत्र पाठ और नाम व मंत्रजप अलगरहा व हर घड़ी मनसे ध्यान उसओर लगारहना नित्यनेमकी सेवापूजा से अलग बात है कि सब सेवापूजा व उपासना उसीके हेतुहै यहउचित व परमसिद्धान्तहै इसकालमें उपासना इस सखाभावकी माधुर्य व श्रृङ्गारके विचार से विशेष करके प्रवृत्तहै केराम उपासकहों अथवा कृष्ण उपासक और सिद्धान्त बिचारसे भी जितनीप्रीतिकी दृढ़ता व वृद्धि माधुर्यभावमें शीघ्र होतीहै और दूसरेकिसी भावमें इतनी शीघ्र नहींहोती है थोड़ेदिन बीते होंगे कि अयोध्याजी में रामसखे महाराज और उनके चेले प्रेमसखेजी सखाभावकी ध्वजा औरभक्तिके देशके राजाहुये रामसखेजी का एक ग्रन्थ इसभावकाहै उसमें माधुर्यको मुख्यकरके रक्खाहै और ब्रजमें जोनिर्णय इस बातकी करी गई तो वहां विशेष करके प्राधान्यता माधुर्यकीसर्वावस्था में उचित व योग्य ठहरी कि ब्रजमें चरित्र भगवत् के सबश्रृङ्गार और माधुर्य के स्वरूपहीहैं अनन्य भाव भगवत्‌में और यहबात कि उपासक को भूलकर भी अपनेउद्धार व मुक्तिके वास्ते दूसरे देवता का चिन्तवन न होवे जैसे अनन्यतासब निष्ठाओंमें सिद्धांतहै इसीप्रकार इस निष्ठामें ज्यों की त्यों है महिमा इस निष्ठा और उपासकोंकी वर्णन नहीं होसक्ती क्योंकि इस निष्ठा और भगवत् व इसनिष्ठाके उपासकों में बार बराबर भी भेद नहीं सब एक हैं॥ भगवत् उपासक लोगों ने इस सखा निष्ठा को पांचों रसोंमें एकरस वर्णन किया सो इस रीतिके अनुसार भगवत् श्रीकृष्ण अथवा श्रीराम के विष्णु चतुराई में व चोज व कटाक्ष लेके बोलने व शीघ्र समझने व हाव भाव व झटिति उत्तर देने में प्रवीण व प्रगल्भ व नवयौवन परम शोभायमान कि जिसकेमुख के सन्मुख सब शोभा व सुन्दरता धूल हैं वस्त्र व आभूषण जैसा जहां चाहिये सब अंगन में पहिने हुये विषयालंबन हैं अर्जुन व सुदामा व श्रीदामा आदि ब्रजग्वाल व दूसरे भक्त सखा भाव के आश्रयालंबन हैं व सामग्री श्रृङ्गार व माधुर्य व हंसी ठट्ठा व आपुसमें खेलना एक साथ

भोजन करना एक संग शयन करना एक साथ बैठना एक साथ रहना एकही साथ उपवन पुष्प बाटिका आदि में बिहार को जाना आपुसमें शृङ्गार व छविकी सजावट करना ऐसे ऐसे हजारों भाव सामग्री प्रथम व द्वितीय अर्थात् बिभाव अनुभाव की सामा है व सामा तीसरीअर्थात् आठों सात्विक सब इस रसमें अपनी प्रवृत्ति करतेहैं और यहसख्य रस शृङ्गार से मिश्रित हैं इस हेतु तेतीसों प्रकार के व्यभिचारी अर्थात् सामा चौथी इस रस में बर्त्तमान होते हैं स्थाई भाव इस रस का वह है कि उस परम मनोहर मित्रके स्नेहमें इतनी दृढ़ता व पक्कता होय कि कदापि तनक स्वप्न व ध्यानमें मनकी लगन दूसरी ओर न जाय और अचल चित्तकी वृत्ति उस मित्र मनोहर के प्रेममें मग्नरहै ॥ हे श्रीकृष्ण हे दीनबत्सल हे प्रणतारत भंजन महाराज मैंने सुना है कि आपके न्याव व रक्षासे कोईबली किसीदुर्बल को सताने नहींसक्ता और दीन व दुखी न्याय पावते हैं सो कृपासिंधु महाराज मेरे वास्ते न जाने वह न्याव व कृपा कहांगई कि यह महामोह दिनराति भांति भांति के उपद्रव करता है व अनेक जन्मोंसे दुखी व दीन कर रक्खाहै सो आपके कृपा व न्याय में कुछ संदेह नहीं परन्तु मेरी अभाग्य दशा है कि उस पापीके पंजेसे छूटने नहीं पावता अब आपके श्री द्वार पर दीन होकर पुकारता हूं कि एक बेर किसी प्रकार उसके उपद्रव व उपाधिसे छुड़ाकर मेरे मनको अपने रूपअनूप के चिन्तवनमें लगादी-जिये कि जो सब वेदऔर शास्त्रोंका सार और एकान्त निज भक्तों का जीवन व आधार है ॥

कवित्त ॥

कर कंजन मंजु बनी पहुंची धनुहीं शरपंकज पानिलिये।
लरिका संग डोलत खेलत हैं सरयू तट चौहट हार हिये।
तुलसी असबालकसों नहिंनेह कहाजपयोग समाधिकिये।
नरसोखर शूकर श्वान समान कहो जगमें फलकौनजिये।

तिलक ॥

बिना धागेके माला पहिरे हुये अभिप्राय यह कि वहसखी जिसके यहां रातको रहे सो जो माला पहिने थी उसका साट छाती परशोभा-यमान है ॥ हंसके गतिकी तात्पर्य यह है कि रातके जगनेसे मतवारी

चालहै ॥ अधरन पद बहु वचन अर्थात् दोनों होठ कई बेरके पानखाने और सखीके लाल होठोंकी लालीभी लगजानेसे अत्यन्त लाल हो रहे हैं अथवा अधरके आगे जो नकार है सो लालीको नहीं कहताहै अर्थात् यह कि सखीने अधरामृत पान कियाहै इस कारण से होठों की लाली जाती रही और शोभा व छवि चढ़के हैं हेतु यह कि बहुत अच्छीभांति शृङ्गार करके ठटि करगयेथे ॥ तिलकपदके आगे नकार सोएकअर्थतो बहुबचन सूचित करता है अर्थात् सखीके ॥

मूल—बिनगुनमालवारे चलनमरालवारे अधरनलालवारेशोभामदभारे हैं।
तिलकन भालवारे जलजतमालवारेमूरतिविशालवारेदृगअनियारेहैं।
पीतपट वारेलटवारेनटवारे जमुनाकारेलटवारेतूतोमोहनीमनहारेहैं।
चोर पर वारे चितचोरपरवारे सुनमोर परवारे तेरी मोरपर वारेहैं।

भालके तिलकके चिन्हहोनेसे बहुत से तिलक होगयेहैं दूसरा अर्थ नकारका नहीं रहने तिलकके है अर्थात् मिलने व आलिंगन गाढ़करने से भालपर तिलक न रहा दलमलगया जलज जो कमल व तमाल जो वृक्ष सुन्दर होताहै तैसे सुकुमार व श्याम व शोभायमान अथवा कमल दिनमें शोभित होताहै परन्तु तुमने यह आश्चर्यकिया कि तमाल अर्थात् सघन अंधेरीमें कमल की भांति आपप्रफुल्लित हुये और दूसरे को प्रफुल्लितकिया मूरति बिशालवाले कहनेका यहहेतुहै कि तुमऐसेही कोमल अंग और छोटेसे स्वरूपवाले नहीं युवालोगों का काम करतेहो और अनियारे आंखोंसे यहअभिप्रायहै कि रातकी उनींदीहैं तिसकरके हृदय में चुभतेहैं अथवा काजरकी तीक्ष्णरेखा से बरबश कलेजेको बेधतीहैं ॥ पीताम्बरवाला कहनेसे छवि सँवार करजानेकाहै और लटवाला कहनेसे हेतु यहहै कि केश कहां गुन्दवाये और नटवाला कहनेसे अभिप्राय स्फूर्ति व चपलता के जतानेका है और यमुना किनारे वाला कहने से तात्पर्य व कटाक्ष यह है कि रात को वनके कुंज में रहे और मन का मोहलेनेवाला कहनेका यह हेतु है कि वह ऐसीदगा देनेवाली सखी है कि तुमकोभी मोहित करलिया ॥ चोर अर्थात् माखन चोरीका स्वभाव तो पहिलहीसे था परन्तु अब चित्तके चुरानेका भी स्वभाव वैसाहीहुआ सुनते मोरपङ्क के मुकुटवारे तेरीमोर अर्थात् त्रिभङ्गी लचकन पर मैं ब-

लिहारी होगई अर्थात् तेरामन दूसरीओर लगै तो लगै परन्तु हमको सिवायतेरे दूसरा प्राण अधार नहीं ॥ यद्यपि यहकवित्त धीराखण्डिता काहै परन्तु इसकेसब पद प्रेम और रस और ब्रजराज महाराजके ध्यान और शोभा और माधुर्य्य को प्रकाशित करते हैं इसहेतु इसका लिखना उचित जानकर लिखा ॥

॥ अर्ज्जुन की कथा ॥

अर्ज्जुन महाराज के सखाभावका बर्णन कौन से होसक्ता है जिन के भावना और भक्तिकेबश होकर वह पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन जो मन व बुद्धिमें नहींआयसक्ता सो रथवान उनकाहुआ यद्यपि अर्ज्जुन महाराज फुफेरेभाई श्रीकृष्णस्वामी के थे परन्तु सखाभाव मुख्यथा बैठना उठना व खाना पीना व लीला विहार व हँसना बोलना मिलना मित्रवत् था युधिष्ठिर व भीमसेन आदिके सदृश भाईचारेकी रीति न थी जो जो भगवत्‌ने कृपा सहायताकी बिस्तार करके सो कथा महाभारत में लिखी है उनकावर्णन इसकथामें प्रयोजन नहींसमझा क्योंकि मित्रता में जिस किसीसे जो कुछ भलाई आपुसमें होय सब योग्यहै एकवृत्तान्त निष्कपटता का लिखा जाता है अर्ज्जुन महाराज जब सुभद्रा जी की शोभा व सुन्दरताको देखकर हज़ार जीव से आशक्त होगये तब सच्ची मिताई के विचार से प्रसन्नता व उदासी का कुछ शोच न किया अपनी प्रीति व बिकलताका वृत्तांत सत्य सत्य श्रीकृष्ण स्वामीसे कहदिया व श्री महाराजकी सुभद्राजी उनकी यद्यपि बहिनथी परन्तु रुचिर खाना व मनोर्थ पूर्णकरना अपनेमित्र परमप्रेमीका इतना चित्तमेंबसा कि जगत्के उपहास्य व निन्दापर कुछ दृष्टि न करके यह गुप्त मंत्र अर्ज्जुनजीको दिया कि जो विवाह करदेनेवास्ते वसुदेव जी व बलदेवजी से कहताहूं तो न जानैं अङ्गीकारकरैं कि न करैं सो तुम संन्यासी का बेष धारण करके द्वारकामेंजाय बलसे अपने लेआवो पीछे बसुदेव जी व बलदेव जी को समझाकर प्रसन्न करलिया जायगा सो अर्ज्जुन ने वैसाही किया और जब बलदेवजीने अर्ज्जुनके मारडालने की तैयारीको किया तो आप श्री कृष्ण महाराजने समझाकर उनकाक्रोध शान्त किया ॥ एकबेर अर्ज्जुन महाराज सुभद्राजीसे आनन्द व बिलासमें रत रहे श्रीकृष्ण स्वामी ने

उनको बैठककी जगह नहींदेखा तो विकलहोकर लज्जाछोड़के सुभद्रा जीके महलमें चलेगये मित्रता की हँसी ठट्ठे में लीन हुये और अतिशय करके स्नेह को दृढ़किया ॥ भगवत्की कृपालुता व दीन बत्सलता पर विचारकरना चाहिये कि आपमित्र व शत्रु व सुखदुःख पुण्यपाप इत्यादि मायाके प्रपञ्चसेजहांतक भीतर बाहरको आंखें पहुँचें न्यारा व निर्लेप है सो ऐसा होकर जो ऐसे चरित्र किये तो भक्तों को बोध और दूसरे लोगोंको भक्तिके हेतु शिक्षा देताहै कि जो कोई जिसभावसे मेराभजन करताहै मैं उसीभाव से प्रकट होकर भक्तकी भावना पूर्ण करताहूं कि गीताजीमें इस बातका प्रण दृढ़ कियाहै ॥

सुदामा की कथा ॥

कथा सुदामाजी की भागवत् व बिष्णुपुराणमें विस्तार करके लिखी है और भाषामें कवि लोगोंने सुदामा चरित्र कईएक बनाये हैं इस हेतु थोड़ेमें लिखताहूं सान्दीपन गुरूकेपास जब श्रीकृष्ण स्वामीने वेद और दूसरी विद्या सबपढ़ी उस समय की मिताई सुदामाजीसे थी जब पढ़ चुके तब बिश्लेपहुआ सुदामाजी दरिद्रीऐसेथे कि न घरमेंकुछ अन्नदाना न तनपर वस्त्रथा एकदिन उनकी स्त्री सुशीलाने कहा कि बड़े आश्चर्य्य की बातहै कि जिसका मीत लक्ष्मीपति श्रीकृष्ण महाराज हो सो ऐसा दीन व दरिद्रीहोवे सो अबतुम उनकेपास जाव सुदामाजीने बहुत संदेह व नाहीं नाहीं किया परन्तु सुशीलाने ऐसे उत्तरदिये कि हरिके जानेका निश्चय किया सुशीला थोड़े से चावल साठीके कहींसे मांगिलाई और सुदामाजी को देके कहा कि भगवन् की भेंटकरना सुदामा जी भगवत् दर्शनको प्रेममें भरेहुये चले रातको किसी गावँ में टिके वहां भगवत् को अपने मित्रसे मिलनेका प्रेम उमँगा और रातोंरात सुदामा जी को द्वारकाके समीप बुलालिया प्रभातको सुदामाजी जब थोड़ीदूर चले तो एक नगर दिखाई पड़ा और जो नामपूछा तो द्वारका सुनकर हर्षित हुये स्नान पूजा करके पूछते पूछते श्रीकृष्ण महाराजकी राजधानीपर आये द्वारपालोंने दण्डवत् करके श्रीकृष्ण स्वामीको निवेदनकिया कि एक ब्राह्मण छोटी धोती फटी चादर पहिने नंगेपांव दरिद्री सा आप का स्थानपूछताहै और सुदामानामहै सुनतेही उस नामके बेसुधिदौड़े

पहिले चरण पकड़ छातीसे लगालिया और बहुत दिनपर जो दोनों मित्र मिलेथे इस हेतु बड़ीदेरतक ऐसे मिलेरहे कि मानों एकतनहोगये पीछे भगवत् हाथमें हाथ लेकर रंग महलमें लाये और दिव्य पलँग पर बैठालकर कुशलप्रश्नादिक पूछनेलगे इतनेमें रुक्मिणीजी पूजाकी सामाले आईं और आप भगवत् और रुक्मिणी जी चरण धोने लगे उस समयका एक कवित्त नरोत्तम कविका कहा लिखताहूं॥

कवित्त छन्द सवैया अर्थ सलिल हैं॥

ऐसे बेहाल बेवायन सों भये कंटक जाल गुंथे पग जोये।
हाय सखा दुख पाये महा तुम आये इतै न किते दिन खोये।
देखि सुदामा की दीन दशा करुणा करिकै करुणामय रोये।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं नैनन के जलसों पग धोये।

पायँधोये पीछे भगवत्ने अपने पीताम्बरसों पोंछकर जैसीपूजाकीवि-धिहै पूजाकिया तबपूछा कि हमारी भाभीने कुछ हमारे वास्ते भी दिया है और तुम्हारास्वभाव और भांतिकाहै ऐसा न हो कि तुमहीं पचाय जाव और हम देखतेही रहैं सुदामाजी जो साठी के चावल कुक्षमें थे छिपाने लगे भगवत्ने जाना कि कुछ सौगात बगल में है इधरतो भगवत् उस-के लेनेके दावँघात में हुए और उधर सुदामाजी लज्जाके हेतु छिपाने के बिचारमेंइतनेमें कपड़ाबहुतजीर्णथा फटगया और चावलधरतीमेंगिरगये भगवत्ने उनमेंसे एकमूठी लेकर तुरन्त और जल्दीसे मुहमें डाल लिया औरदूसरी मूठी के वास्ते भी वैसीही चतुराई थी कि रुक्मिणीजी ने हाथ पकड़लिया सो कोई २ भक्त व तिलककार लोगोंनेहाथ पकड़ लेनेकाहेतु यह लिखाहै कि एकमूठी चावलसे तो दोनों लोककी संपति सुदामा को देदी दूसरी मूठीमें कौनवस्तु देवेंगे और किसीने यह लिखा कि रुक्मिणी जी को भयहुआ कि मैं लक्ष्मीका स्वरूप हूं ऐसा न हो कि भगवत् दूस-री मूठीके बदलेमें हमको देदेवैं और किसीका यहकहाहै कि रुक्मिणी-जीको भगवत्के सुकुमारता व स्वल्प आहार व कोमल व मधुर पदार्थोंके भोजनका स्वभावशोचकर यह चिन्ताहुई कि कच्चे चावलोंके भोजनसेकुछ अवगुण न करैं परन्तु निजअभिप्राय रुक्मिणीजीका हाथ पकड़ लेनेसे यहहै कि महाराज यहसौगात तुम्हारे मित्रके घरकीहै ऐसा मीठापदार्थ

अकेले आपहीआप खायलेना उचितनहीं इसमेंहमारा भी भागहै और जो यह कहोगे कि हमारेमित्रकी लाईहुई सौगातमें तेरा क्या बखरा है तो आपके मित्रभूखेबंगाली व उपासमस्त होतेहैं उनको किसी सौगात के जुहावने की क्या सामर्थ्य है यह सौगात मेरी जिठानीके व्यवसाय से तुमको जुरी है निश्चय करके भागीहूं इसचरित्रके होने पीछे सेवक लोगोंने जेवनार के तैयार होनेका संदेशनिवेदन किया दोनों मित्रोंने एक संग भोजन किया इसी प्रकार सातदिन सुखआनन्दमें बीते पीछे सुदामाजीनेबहुत कहा तब विदाहुए भगवत् दूरतक पहुंचाने के हेतुगये और विदाके समय सुदामाकोकुछ न दिया सुदामाजी अपनेमनमें कहने लगे कि आखिरतो ग्वालियों के घरपलेहो क्याहुआ कि अब राज्य व बड़ा ऐश्वर्य्य मिला जो हमको कुछ देते तो क्या खज़ानेका टोटाथा या कि कम होजाताथा और बहुत अच्छा हुआ कि कुछ न दिया अब उसस्त्रीसे कि जिसने बलात्कार करके भेजाथा कहूंगा कि धनको अच्छी प्रकार से यत्न करके धर कि बहुतखज़ाना मिलाहै फेर मनमें कहने लगे कि जानैंभगवत्ने इसविचारसे कुछ न दिया कि धन के पावनेसे भगवत्भजनमें बाधा न पड़ जावै ऐसेही ऐसे शोचते विचारते अपनेगांवके समीप पहुंचेदेखा कि द्वारका से भी सहस्र गुण अच्छीसोने व मणि गणोंकी महलात खड़ी हैं ऐसेकि कभीदेखीथी न सुनीथी लोगोंसे पूछा कि किसकानगरहै और क्यानामहै उत्तर दिया कि आपहीकानगरहै और सुदामापुरनाम है यही कहते सुनतेथे कि तबतक दासदासी दौड़े हाथोंहाथ सुदामाजीको महलोंमें लगये सुशीला आकर चरणोंमें पड़ी और सुदामाजी इस भगवत् कृपाको देखकर जो वचन भगवत्को व्यंगवितर्क कहेथे उसका शोच व पश्चात्ताप करनेलगे ऐश्वर्य के सुखमें कनहीं भजन और आराधन भूले वरु अधिक करके तत्परहुए भगवत् की ईश्वरता कि अच्युत अनन्त व सच्चिदानन्दघनपरमात्मा पूर्ण ब्रह्महैं विचारकरके फिर इस दयालुता व कृपालुता व भक्त बत्सलता और मित्र भावके निबाहने की भाव पढ़ सुनकरजो निर्भर आनन्द में मग्ननहीं होते उसने व्यर्थ जन्म लेकर अपने माताके यौवनका नाशकिया और जिसके आंखोंसे प्रेमका जल नहीं उमँगता तो वे आंखोंसे अंधीअच्छी ॥

वृजके ग्वालबालों की कथा॥

श्रीनन्दनन्दन महाराज के असंख्य ग्वालबाल सखा हैं उनमें--श्रीदामा, मधु, मंगल, सुबल, सुबाहु, भोज, अर्जुन, मंडल, ये आठ सखा परममित्र और हरघड़ी पास रहनेवाले व दूसरे सबसखाओं के नायक हैं जिसप्रकार श्रीराधिकाजीके साथ--ललिता, बिशाखा, चित्रा, चंपकलताआदि आठ सखीहैं सिवाय असंख्य सखाओं के--रक्तकपत्रकपत्री, मधुकण्ठ, मधुवर्त्त, रसाल, बिशाल, प्रेमकंद, मकरंद, आनंद, चन्द्रहास्य, पयद, बकुल, रसदान, शारदाबद्धि, इतनेसखा यद्यपि सखाभाव रखते हैं परंतु सेवकाई व आज्ञा पालनेमें भी क्या गृहमें क्या बनमें हरघड़ी तत्पर व हाजिर रहतेहैं सखाभाव वालोंके जितनाभाव अलख अलख हैं उनसबमें मुख्यता ब्रजके ग्वालबाल सखाओंकोहै किसहेतु कि उनको उसपदवी से न्यून व अधिक नहींहोती भगवत् के नित्य बिहार में प्राप्तरहतेहैं और सबगोलोक निवासी हैं जबभगवत् का अवतार होता है तब वहभी साथआते हैं जोकोई भगवत्की महिमा अथवा भगवत् चरित्रोंको लिखसकै तो उनकीमहिमाभी लिखसकेगा नहींतो जैसेमहिमा भगवत्की अपारहै तैसेही उनकीहै और उनकेचरित्र और परमपवित्र कथा का यह माहात्म्यहै कि जो कोई धोखेसे भी उनकी खेल व लीला व हँसी ठट्ठा अशक्तता बालचरित्रों को सुनता है अथवा गान करताहै तो भगवत् बलात्कारसे अपनी भक्ति उसकोदेकर उसके आधीन होजातेहैं सखा भाव के चरित्र इतने अगणित व अपारहैं कि शेष व शारदा भी वर्णन नहींकरसक्ते सो एक दो चरित्र सूक्ष्म करके इसग्रन्थ के पवित्र होनेकेहेतु लिखताहूं जब बनमें गऊचराने को जायाकरतेथे तो दो यूथ होकर खेलतेथे एकदिन बलदेवजी का यूथ तो जीतगया और लालजी का यूथहारा तब हारेहुये सखाओं ने एकएक सखा जीतेहुये को अपनी चड्ढी चढ़ाया श्रीदामाजीके बखरमें नन्दनंदनजी आये व जहां पहुंचाने की प्रबन्धथी सो जगह दूरथी थोड़ीदूर चलकर सुकुमारता व सुंदरता के कारण से नंदनंदन महाराज को पसीना आयगया और थकगये तो पहिले श्रीदामा की बहुत खुशामद व लल्लोपत्तोकरी कि आधीदूरतक ले जाऊंगा जब न माना तो धमकाया डरपाया कि अच्छा कलहको मैं

कड अच्छीप्रकार शिष्टाचारी करूंगा जब उसपर भी श्रीदामाजीने कुछ नमाना तो मचलाई करनेलगे परन्तु श्रीदामाजी ऐसे उस्ताद मिले कि एकडग भी माफ न किया जहांतक का प्रबन्ध था वहांहीतक ले गये जब श्रीनन्दनंदन महाराज कंस के बुलानेपर मथुराजीमें गये तो मुष्टिक व चाणूरआदि मल्लोंको और कुवलयापीड़ मतवारे हाथीको बिनापरिश्रम एकक्षणमें मारडाला और उसी अखाड़े में जब ब्रजग्वालवालों के साथ कुस्ती होनेलगी तो कभी नंदनंदन महाराज उनको धरतीपर गिरायदेते थे और कभी ग्वालवाल आपको ऐसे पटकतेथे कि शीघ्र उठनेकी सामर्थ्य नहींरहतीथी धन्यहै यह भक्तवत्सलता और प्रीति की पूर्णता जब सूर्य ग्रहणमें कुरुक्षेत्रपर द्वारकासे भगवंत् आये तो सब ब्रजबासी भी आये थे बहुतदिन पर आपसमें मिलापहुआ और लोग तो अपने अपनेस्नेह व भाव के अनुसार मिले और भगवंत् सखा उस अपनेरंग में रँगेहुये अपने दावँ और पेंचकेलनेको तैयारहुये और वहरंग भगवत् गुणानन्त निर्विकारको भी ऐसाचढ़ा और प्रेमकीनदी में ऐसा मग्नकरदिया कि प्रेमका जल आंखोंसे बहकर चरणोंतक पहुंचा॥

गोविन्दस्वामी की कथा॥

गोविन्दस्वामी महाराजके सखाभाव का चरित्र भगवत् भक्तोंको तो परम आनंद का देनेवाला है और जो कोई भक्तनहीं उनको भक्ति का देनेवालाहै गोविंदस्वामी उस भावकी आराधनासे थोड़ही दिनमें उस पदवी को पहुंचेकि गोवर्द्धननाथजी के साथ सदा खेल व क्रीड़ामें प्राप्त रहकर अपने परम मित्र के रूप अनूप में मग्नरहते थे एकदिन गुल्ली डण्डा खेल रहेथे जब दांव गोविंदस्वामी का आया तो नटनागर महाराज भागकर मंदिरमें आ घुसे गोविंदस्वामी पीछे दौड़आये और गुल्ली भगवत् मूर्तिपर मारी उधरसे भगवतके हिमाती अर्थात् पुजारी लोग मंदिरके दौड़े और अत्यंत ढिठाई गोविंदस्वामीकी समझकर धक्केदेकर मंदिरसे निकालदिया व भगवत्से बिलुबजाना गोविंदस्वामी तड़ाग किनारे राहपर आकर बैठरहे व गालियां देकर कहनेलगे कि अब हिमायतमें जाबैठा भला कभीतो निकलैगा ऐसी शिष्टाचारी करूंगा जानैगा नंदकिशोर महाराजको चिंताहुई कि अबयह बैरनमेरतड़ाग

में है और मुझसे बिन बनविहार और खेलके रहानहींजाता जबबाहर जाऊंगा न जानें क्या करैगा सो इस शोचमें कुछ न खाया और गोसाईं विट्ठलनाथजी जो परम भक्तथे उनसे कहा कि गोविंदस्वामी के डरसे हमसे कुछ भोजन नहीं कियाजाता जो हमको कुछ भोजन करानाहोय तो गोविंदस्वामी को प्रसन्नकरो यद्यपिदांव गोविंदस्वामीका था परंतु सुधि भूलिकै मैं मंदिरमें चलाआया अब वह मुझको वृथा गाली देताहै और जब बाहर जाऊंगा न जानैं क्या करैगा सो जब उसका क्रोध शांत होगा तब मुझको कुछ खानापीना सुहायगा विट्ठलनाथ जी दौड़ेगये विनय प्रार्थना करके बलसे गोविंदस्वामी को मनाकरलाये औरमंदिर में भगवत्‌के पास भेजदिया वहां जब दोनोंका आपुसमें बनाव होगया और दोनों यार गलेलगकर मिले तबनंदलाल महाराजने भोगलगाया एकबेर गोविंदस्वामी बाह्य शंकाको बनमेंगये थे जबबैठे तब आपलाल जी महाराज जाकर दूर खड़े होकर आकके फल मारने लगे और इसी प्रकारकी दूसरी कुछ चपलाईकोकिया गोविंदस्वामीने उसीदशा में उठकर ऐसे आक के फलमारे कि ब्रजमोहन महाराज ने घबराकर भागनेको चाहा संयोगवश गोविंदस्वामी की माता उनको ढूढ़ती आय गई तब गोविंदस्वामी धोती बांधकर घरगये और झगड़ा छूटगया एकबेर भगवत् मन्दिर को भोग के निमित्त थालजाता था व गोविंद-स्वामी जो कि राहमेंप्रसादकी आशा करके बैठरहे थे पुजारीसे माँगा कि पहिले हमकोदेव तिसके पीछे नन्दनंदन के वास्ते थाल लेजाना पुजारी ने न माना गोविंदस्वामी उसके हाथसे थाल छीनकर सब सा-मग्रीथालकी खायगये और चलखड़ेहुये पुजारी रिसकरताहुआ गोसाईं जीके पास आया और कहा कि मैं पूजा सेवा से बाज आया गोविंद स्वामीभोगका थाल लूटलेगया गोविंदस्वामीको बुलाकरपूछा कि यह क्यों ढिठाई है गोविंद स्वामी ने उत्तर दिया कि तुम अपने लाला को अच्छे अच्छे भोजन कराकर फिरने व खेलने व लड़ने को तैयार कर देतेहो और पहिले ठटिवट कर बनको चलाजाताहै मुझको जो भोजन पीछेमिलता है तो उसको ढूंढताहुआ सारेबनमें श्रमित भ्रमता फिरताहूं तोमैं उससेपहिले क्योंनतैयार होरहूं गोसाईं जीने हँसकर प्रताप औ

भक्ति और सखाभाव गोविंदस्वामीका पुजारीसे वर्णनकिया और आगे परको ढिठादिया कि उनके प्रसन्नता से भगवत् की प्रसन्नता जानगये गोविंदस्वामी के पद बनाये हुए भगवत् में ऐसे शीघ्र मनको लगादेते हैं कि मानों मूलमंत्र हैं और मालूम रहै कि कीर्त्तन निष्ठामें नंददास जीकीकथामें जो अष्ट छापके नाम लिखे हैं तो उसमें दो नामकी भूल है व तुलसी शब्दार्थ प्रकाशग्रंथ गोपालसिंह का बनाया है उसमें अष्ट छाप के नाम ठीक ठीक लिखे हैं सो यह हैं ॥ सूरदास ॥ कृष्णदास परमानंद ॥ कुंभनदास ॥ ये चारों भक्त वल्लभाचार्य्य के चेलेथे ॥ चतुर्भुज दास ॥ छीतस्वामी ॥ नंददास ॥ गोविंदस्वामी ॥ ये चारों भक्त वल्लभा-चार्यके पुत्र बिट्ठल नाथजी तिनके चेलेथे अर्थात् ये आठों भक्तवल्लभकुल के प्रभावसे भगवत् पदको प्राप्तहुए और उनके ग्रंथ गोकुल व वल्लभा-चार्य जीकी संप्रदायमें मिलतेहैं सो ये गोविंदस्वामी भी अष्टछापमें हैं ॥

गंगग्वालकीकथा ॥

गंगग्वाल व्रजनाथजी के चेले सखाभाव के परम भक्त और किसी सखाका अवतार हुए जिन्होंने व्रजके चरित्रऔर सबसखी और भगवत् सखाओं का वर्णन विस्तार करके किया नंदनंदनमहाराजके साथ खेल का जो परम आनंद उसके रसमें हरघड़ी मग्नरहतेथे व्रजकी भूमिप्राण से भी प्यारीथी और भगवत् चरित्रोंमेंअत्यन्त प्रीति रखतेथे और भगवत् कीर्त्तन अर्थात् गांधर्व विद्या जो गान विद्या है तिसमें हुए कि उस समय में उनके ऐसागानेवाला दूसरा कोई न था एक बेर बादशाह श्री वृन्दावन आया और उनके गानेकी बड़ाई सुनकर बुलाया बलसे आये बल्लभाचार्य भी उसघड़ी साथमें थे दोपहरका समयथा तिससे सारंग गाया कि बादशाह और जो कोई वहांथा सब मोहित होगये और सब भगवत् के प्रेममें मग्न बादशाह यह प्रताप देखकर हाथ जोड़कर खड़ा हुआ और अत्यन्त आधीनताई से यह बिनती किया कि मेरे साथ चलो उत्तरदिया कि व्रजभूमिको छोड़कर नहीं जा सक्ता जबबहुत कहा सुनी दोनों ओरसेहुई तो बादशाह कैदकरके दिल्लीमें ले आया व नजरबंद में रक्खा राजा हरिदास जाति तोंवर राजपूतने यह वृत्तान्त सुना सिपा-रस करके छुड़ादिया तुरंत व्रजमें आये और अपने परम मित्रको देख-

करपरम आनंदको प्राप्तहुये ग्वालसंज्ञा सखाभाव करके विख्यात था॥

निष्ठातेईसवीं॥

जिसमें महिमा शृंगार व माधुर्य्य की व कथा आठ भक्तों की है॥

श्रीकृष्ण स्वामी के चरणकमलों की त्रिकोण रेखाको और श्रीकृष्ण अवतारको दण्डवत् करताहूं कि वह अवतार गोकुल में धारण करके ऐसे चरित्र पवित्रजगत् में विख्यात व प्रवर्त्तमानकिये कि जिनके प्रभाव से ब्रह्मानंद व परमपदकी प्राप्ति महापापी व अपराधियों को भी अति सुलभ होगई शृङ्गार रसको उज्वल और शुक्ररस भी कहते हैं यह वह रसहै कि ज्ञान और वैराग्य और भक्ति सब जिसके सेवक व दासहैं दूसरे धर्मोंकी तो क्या गिनतीहै इस शृङ्गार रसको वह गुनहै कि एक क्षणमें निबिड़ प्रेम उत्पन्न करके फ़क़ीर को बादशाह व बादशाह को फ़क़ीर कर देताहै इसरस अर्थात् सुंदरताके बराबर मोहन गुण न तंत्र में है न मंत्र में है व राग इत्यादि तो एकबातहलकी हैं जितने भक्त पहिले हुए और आगेपर होंगे और अब हैं सो इस रसके अवलम्ब से अपने मनोवांछित पदवीको पहुंचे और पहुंचेंगे महिमा इसरस की अपार व अथाहहै जोकोई भगवत्की महिमा व चरित्रोंका वर्णन करसकै तो इस रसकी भी महिमा बर्णन करदे गोपिकाएकतो स्त्री फिर गावँकी रहनेवाली न कुछ विद्यापढ़ी न कुछ साधन किया व न कुछ साधक जानती थीं और जातिसे भी उत्तम न थीं इस रसके प्रभाव से उसपद को पहुंचीं कि ब्रह्मा जो सब जगतके पितामह और उत्पन्न करनेवालेने जिनकी चरणरज को अपने शिरपर धारण किया और जिनके चरित्रों का जहाज़ संसार समुद्र से पार उतरने को ऐसा प्रवर्त्तमान हुआ कि कर्म्म भोगरूपी आंधीका कदापि भयनहीं शृङ्गार उपासक जो इसरसको मुख्य वर्णनकरके कहतेहैं कि ब्रह्मानन्द इसी रससे प्राप्तहोताहै बचन उसका सत्य व ठीक है क्योंकि जब भगवत् आराधन ज्ञान अथवा भक्तिके द्वाराकरके होगा तो कोई झलक सुन्दरता व माधुर्य भगवत् की उपासकके मनमें ऐसी प्रगटहोगी कि उसके आनन्दसे सब मिठाई व उत्तमपदार्थ तीनोंलोकके तृणके समान समझपड़ेंगे और बेसुधि व मगन

उस झलकके दर्शन में होजावेगा और जबतक भगवत् के सुन्दरताकी झलक मनमें न आवेगी तबतक भगवत् की प्राप्ति कदापि नहीं तो इससे निश्चय होचुका की ब्रह्मानंद केवल शृङ्गार रससे प्राप्त होताहै इस में एक शंका यह उत्पन्नहुई कि जो शृङ्गार रस मुख्य है तो शास्त्रों में जो दास्य सख्य वात्सल्य इत्यादि कई प्रकार की निष्ठा व भक्ति लिखी है उनका लिखना क्या प्रयोजन था केवल शृङ्गार निष्ठा लिखदेना बहुत था और नवप्रकार भक्तिमें शृङ्गारका कहीं नामभी नहींहै सो जानेरहो कि जितने वेद व पुराण और शास्त्रइत्यादि ग्रन्थ व आज्ञाहैं सब शृङ्गारही रसका वर्णन करतेहैं व शृङ्गारही मुख्यहै व जो वर्णन जहां भगवत् आराधन का है वह सब शृङ्गार का अर्थ समझना चाहिये क्योंकि सुन्दरताकी झलकके बिना साक्षात्कार हुये भगवत्कीप्राप्ति कदापि २ होने नहीं सक्ती और दास्य सख्य वात्सल्य इत्यादि जो भक्तिके प्रकार शास्त्रोंमें लिखेहैं सो भी उसी शृंगारही के बिस्तारहैं जैसे भक्तिके स्वरूपके वर्णनमें प्रथम भूमिकामें लिखाहै कि भक्ति एकहै व जिस जिस रीतिसे जिस किसी ने मन लगाया वही एकप्रकार की भक्ति होगई ॥ इसीप्रकार भगवत् की शोभा व माधुर्य्य की चिन्तन सब निष्ठा दास इत्यादि में योग्य व निश्चय हुआ है जिस किसी ने भगवत्को अपना स्वामी ध्यान करके सुन्दरता व स्वरूप व माधुर्य्य का चिन्तवन उस रीतिसे किया सो दास निष्ठा ठहरा और जिस किसीने मित्रजानकर उस रूपका ध्यानकिया सो सख्य और जिस किसी ने पुत्रजान कर चिन्तवन किया सो वात्सल्य इसीप्रकार सेवा और अर्चा व शरणागत इत्यादि को विचार करलेना चाहिये तो वेद और पुराणों के प्रमाण से निश्चय होगया कि भगवत्का शृङ्गार व माधुर्य्य मुख्यहै जो यह कोई कहै कि भगवत् की करुणा व दयालुता व भक्त वत्सलता आदि भी तो जगह जगह लिखी है कि तिस कारणसे भगवत् में प्रीति होती है सो पहिले उत्तरतो यहहै कि वहप्रीति जिसका बयान करते हो किसवस्तु में होतीहै जो किसीरूप व झलक में होतीहै तो उसीका नाम शृंगार व माधुर्य्य है और जो कुछ शोभा व झलक के चिन्तवन में नहीं होतीहै किसी और बात में होतीहै तो मिथ्याहै क्योंकि बिनाकिसी सुन्दरता व

झलकके प्रकाशमंधे कदापि दृढ़प्रेम नहीं होसक्ता दूसरा उत्तर यह है कि जिसप्रकार संसारी प्रीति अर्थात् मनस्वी प्रीति में जिसपर आशक्त हैं तिसकी सुंदरताका बर्णन करतेहैं तो उसके बोलने व चलने व मिलने इत्यादि स्वभावका भी बर्णन किया करते हैं इसीप्रकार भगवत् प्रेमके वर्णन में भगवत् के रूप और माधुर्यका बर्णन करनातो मित्रके सुंदरता के बर्णनके सदृशहै और भग वत् की अद्वैतता व कृपालुता व करुणा व भक्तबत्सलता व ईश्वरता व सर्ब्बज्ञता और दूसरेगुण जैसे अच्युत व अनंत व व्यापक व अन्तर्य्यामी व पूर्णब्रह्म व परमात्मा व सच्चिदानंद घन इत्यादिक बर्णन मित्र के स्वभाव के बर्णन के सदृश हैं अबयह शङ्का उत्पन्नहुई कि एक बचनसे भक्ति व शृङ्गार एकही भांति जनाई पड़ते हैं अर्थात् एक जगह तो दास्य सख्य बात्सल्य इत्यादि को भक्तिके प्रकारमें लिखा और इस शृङ्गार निष्ठाके बर्णनमें शृङ्गारके अंग व भेद उनदास्य इत्यादि निष्ठाओंको लिखा जब कि भक्तिदशा प्रेमाशक्तकीहै और शृङ्गार प्रियबल्लभके सुन्दरताको कहतेहैं तो दो दशा भिन्न २ एक कब होसक्तीहै सो सत्यहै कि दोनोंप्रकार अलग २ हैं परन्तु एकसे एकका सम्बंध ऐसा है कि एकके बिना एकका प्रकाश नहीं होता क्या हेतु कि सुन्दरता बिना स्नेह कदापि नहीं हो सक्ता और इसीप्रकार प्रेम बिना सुन्दरता का गाहक कोईनहीं जैसे कि जगत् न रहा तब भक्त भी नहींथे उसकालमें ईश्वर को कौन जानता था और आगेपर जब प्रलय हो जायगी तो तब भगवत् को कौन जानैगा व उसकी सुन्दरतापर कौन आशक्त होगा तो जबकि स्नेह व सुन्दरता ऐसे सम्बंधीहुये तो अंगसब उनके परस्पर मिश्रित होकर एकके सदृशहोंय तो कौन आश्चर्य व बिरुद्धहै सिवाय इसके परिणाम में स्नेह करनेवाला व जिसमें स्नेहहुआ दोनों एक होजाते हैं अर्थात् प्रेम करनेवाला अपनी सबदशा भूलकर सबअंग में अपने प्रियबल्लभका रूपहोजाताहै तो इसप्रकारसे भी एक लिखनेमें कुछशंका योग्य नहीं है सिवाय इसके शृङ्गार व भक्ति दोनों भगवत् रूपहैं कुछभेदनहीं इसप्रकार से भी शंकाकी समवाई नहीं निश्चय करके यह शृङ्गार रस सब रसोंमें मुख्यतरहै और सत्यकरके भगवत्में प्राप्तकर देताहै यहरस चारसामा अर्थात् बिभाव व अनुभाव व सात्विक व ब्यभिचारी करके

उत्पन्न होताहै पहिलीसामा जो विभाव तिसमें भगवत् सच्चिदानन्द घन पूर्णब्रह्म नवयौवन सब शोभा व सुन्दरता का सार श्यामसुन्दर स्वरूप दिव्यवस्त्र व आभूषणोंको सजेहुये कि जिसके सब अंगोंपर करोड़ों कामदेव निछावर होतेहैं विषयालंबन हैं और जिस उपासककी भगवत् के सुन्दरता व शृङ्गारपर जैसी प्रीति व चाहहोय सो अपनी उपासना के अनुसार भगवत् का ध्यान जैसा कि जगह जगह शास्त्रोंमें वर्णन कियाहै और इसग्रन्थ में भी जहांतहां लिखा हुआहै विचारकरलेवै॥ भगवत् भक्तिजो कि उस सुन्दरता व शृङ्गारके महाआशक्त और ध्यानकरनेवालेहैं इस विभाव में आश्रयालंवन हैं व दूसरी सामा सब इस शृङ्गार रसकी बिस्तारकरके इसग्रन्थके आरम्भमें लिखीगईहै दोबार लिखना प्रयोजन नहीं शृङ्गार रसमें उपासक लोग दो भेद वर्णन करते हैं एकतो शृङ्गार और दूसरा माधुर्य शृङ्गार तो उस सुंदरता और प्रेमसे तात्पर्यहै कि जो नायक व नायकाके बीचमें हो और बिना एक ओर नायका व एक ओर नायकके शृङ्गारनहीं कहाजातासो उसमें उत्तमपद स्वकीया नायका अर्थात् व्याहीस्त्री और पतिके शृङ्गारकाहै भगवत् भक्तोंमें यहपदवीलक्ष्मी जी और श्रीजानकी और रुक्मिणीजी परसमाप्तहुई और किसी किसीके बचन से श्रीराधिकाजी भी स्वकीयाहैं अबकोई उपासक इस पदवीका न देखा न सुना व दूसरीपदवी शृङ्गारकी परकिया नायकाहैसो गोपिकाओं परसमाप्तहुआ अबयहभाव किसको होसकाहै जोकोई किसी गोपिकाका अवतारलेवै तो होसक्ताहै जैसे कि मीराबाईजी व करमैतीजी व नरशी जी व हरिदास जी इत्यादि लोग हुये और यह भी जानेरहो कि रीति शृंगार व प्रीतिकी इसी पदवीमें विशेष बनि आतीहै अब जो उपासक हैं उनके यह भावहै कि कोई तो सख्यताकी मुख्यता लिये दासीभाव रखते हैं और कोईको दासीभावकी मुख्यता सख्यताकी गौणता है और कोई अपने आपको युगलकी दासी जानते हैं सख्यतासे कुछ प्रयोजन नहीं और कोई अपने आपको श्रीप्रियाजीकी दासी जानकर उनके प्रसन्नता में प्रीतमकी प्रसन्नता मानते हैं सो इसग्रंथ पद्योंके निजउपासक हित हरिवंशजीकी संप्रदायवाले हैं सब शृंगार उपासकों की यह रीतिहै कि युगल शृङ्गार व बिहारमें अपने भावके रूपसे सब समय मात रहते हैं

कोई समय अनप्राप्त व परदे की नहीं और प्रियाप्रीतमके मनकी बात जानने वाले और संदेशमें चतुर और मानके समय मनाने व मिलाने में प्रवीण ऐसे ऐसे सैकड़ों हजारों भावसे सेवा व चिन्तवन करते हैं भाव बहुत बारीक व अतिकठिन है इसका विस्तार करके कहना प्रयोजन नहीं शृङ्गारकी उपासना चारोंयुगसे सदाहै बहुत ऋषेश्वर और योगी-जन श्रीरघुनन्दन महाराजाधिराज का अपाररूप देखकर मोहित व आशक्त होगये और उसरूप व शृङ्गारके पूर्णसुख व आनन्द की प्राप्ति श्रीमहारानीजी को देखकर मानसी दासीभाव व सख्यतासे मनकोलगाया॥ माधुर्यका अर्थ यद्यपि मिठाईका है परंतु तात्पर्य सुंदरतासे है माधुर्य के उपासक लोगअपने आपको सखीभाव नहींमानते भगवत्के माधुर्य व सुंदरता के आशक्त व अनुरक्तहोते हैं उनमें कईभेदहैं एकवह है कि केवल भगवत् माधुर्यके उपासकहैं प्रियाजीके ध्यानसेकुछसंबन्ध नहींरखते दूसरे वहहैं कि युगलस्वरूप अर्थात् प्रिया प्रीतमका चिन्तवन और ध्यानकरतेहैं उनमेंभी एकयूथवालेतो भगवत्की ईश्वरता मुख्य मानतेहैं और प्रियाजीको आद्या और सबब्रह्माण्डोंकी माता और भगवत् आश्रयाभूत जानतेहैं दूसरे ऐसेहैं कि प्रियाप्रीतमको एकमानते हैं जिसप्रकार जल औरतरंग अथवासांप और उसका कुण्डल कि बास्तव करके एकहै कहने मात्रको दो कहेजाते हैं व तीसरे ऐसेहैं कि प्रियाजी की परत्व अधिककरतेहैं व प्रीतमकी न्यून इस तीसरे भावकीबात विस्तारसे आगे लिखीजायगी और माधुर्यके उपासकों के सेवा पूजाकी रीति ऊपरके लिखेभावोंसे सिवाय कईभांतिके दूसरे हैं अर्थात् कोईकोई तो युगल स्वरूपके सेवा पूजाकेसमय अपने आपको बालक दोचार बर्षका चिन्तवन करके सबसेवा पूजाकरते हैं और किसीकी यहरीतिहै कि आपतो सेवा भगवत्की करतेहैं और महारानीजी के सेवाकेनिमित्त अपनी माताके स्त्री को अथवा भगिनी इत्यादिको अथवा अपने घरकी सब स्त्रियोंको महारानीजी की दासी बिचारकर लेतेहैं और किसी की यहरीतिहै कि ब्रह्माणी और भवानी वइन्द्राणी इत्यादिको महारानीजी की सेवा करनेवाली जानकर भगवत्की सेवा पूजा आप करलेतेहैं सिवाय इसके स्वकीया परकीया भाव अलगरहा सोरामानुजसंप्रदायऔर

राम उपासकों में तो परकीया भाव तो कदापि शोभित नहीं होसक्ता स्वकीयाभावसे सेवा आराधन प्रवर्त्तमानहै श्रीकृष्ण उपासनामें विशेष करके परकीया भाव से आराधन योग्यहै और होतीहै सो उसका यह भेदहै कि निम्बार्कसंप्रदाय में स्वकीयाभाव से सेवा पूजन करतेहैं और विवाहका होना श्रीकृष्ण व राधिका महारानी का पुराणोंके प्रमाण से मानतेहैं और विष्णुस्वामीकी संप्रदायवाले यद्यपि उपासक केवल बाल चरित्र श्रीकृष्णस्वामीकेहैं परंतु राधिकाजीको निम्बार्कसंप्रदायके प्रमाण के अनुकूल स्वकीयाभावसे श्रीकृष्णस्वामीकी परमप्रिया जानतेहैं और माध्वसम्प्रदायमें परकीयाभावकी रीतिहै और मनकीरुचि दूसरीबातहै व स्मार्त मतवालोंमें कोई सिद्धांतरीति का प्रबंधनहीं जैसे चरित्रों और भावपर मन सन्मुख होगया वैसाही मानलेतेहैं ॥ शृङ्गार और माधुर्य्य भावमें जो साज व शृङ्गार प्रियाप्रीतम का ध्यानमें अथवा प्रत्यक्षकरना चाहिये और जो प्रियाप्रीतम आप परस्पर के मिलने और देखने और देखलाने और अपने अपने सजावट रखने और विहार व आनन्द की सामा अत्यंत मनसे सोधिसोधि व बनावट से तैयारीकी उमंग रखतेहैं और जो खेल व हँसी व वागविलास व प्यार व चाह परस्पर उनमें होतेहैं उसका वर्णन अगणित शेष और शारदा से करोड़ों कल्पतक कदापि नहींहोसक्ता और जिनभक्तों की उपासना सिद्धहोगई है और वह सामा व समाज मनमें समायगईहै उनकोभी सामर्थ्यनहीं कि वर्णन करसकें मनहीं मनमें उसआनन्द का अनुभाव करतेहैं तो मैं मतिमन्द क्या लिखसकूं वे मित्र परम प्रेमी व स्नेही कि जिनका मन आपुस के सुंदरतापर परस्पर परम अशक्तहो और मिलनेकी चाह और उमंग में भरहुये त्रयलोकका ऐश्वर्य व संपत्तिसे जहांतक सामाकेलिये व आनंद व बनावटको जो शास्त्रोंमें सुनतेहैं व जो कुछ देखतेहैं अथवा जहांतक मनपहुंचै सोसब तैयार करतेहो सोसब प्रियाप्रीतमके शृङ्गार व विहार व आनन्द व सुख व शोभा व सुन्दरता के सामाके आगेऐसेहैं कि जैसे सौकरोड़ सूर्यकेसामने एकबालकी कथाहो सोइसहेतु उपासकलोग अपनीचाह व मनकीदौड़ व देखसुनके अनुसार जिसप्रकार जितना युगलस्वरूप का ध्यान व आराधन करसकें तितनाही अच्छा है जैसा और

जिसप्रकार चिन्तबन करेंगे सोई बांछितपदको पहुंचावेगा और यहभी जानेरहो कि प्रियाप्रीतम परस्पर प्रेमाशक्त स्नेहियोंमें शिरोमणि हैं जो चरित्र शृङ्गार व माधुर्य्यके हृदयकी आंखोंको दिखाईपड़ैं सो सबभगवत् के कियेहुयेहोंगे नयेचरित्र कोई न होंगे सो उसरूप अनूपमें जिसप्रकार मनलगै लगाना चाहिये कि परमानन्द व ब्रह्मानन्द व ज्ञान व भक्ति व वैराग्य व चारोंपदार्थ आपसेआप प्राप्तहोजातेहैं ऊपर वर्णनहुआहै कि कोईकोई प्रियाजीकी परत्व बर्णानकरतेहैं और प्रीतमकी किंचित्न्यूनसो जानेरहो कि चारोंसम्प्रदायमें ऐसीरीतिको किसीने प्रगटनहीं किया था अब चार सम्प्रदायोंमें एक किसीने नईशाखा निकाली अर्थात् पहिलेसे रामानुज सम्प्रदायमें दो मार्ग हैं एकतिङ्कल दूसरेमें बड़गल तिङ्कलवेहैं कि जो निज रामानुज स्वामीकी रीतिके अनुकूलहैं और उनकेसिद्धांत में बिष्णुनारायण ईश्वरहैं और लक्ष्मीजी जीव और बड़गल वे हैं कि वेदान्तचारीने नईरीति चलाई कि बिष्णु और लक्ष्मीको बराबर जाना और युगुल स्वरूप के आराधन की परिपाटी को प्रवर्त्तमान किया अब थोड़ेदिनोंसे अर्थात् सौ दोसौ बर्षसे वेदान्ताचारीके पन्थमें बीर राघवाचार्य्यने यह शाखा निकाली कि विष्णुनारायण पर लक्ष्मीजीको अधिक लिखा और बीर राघवी मतचलाया उनका मत दुर्गाउपासकों से थोड़ा मिलताहै उसमतमें थोड़ेलोग हैं और मदरास से एक मञ्जिल पश्चिम उनका गुरुद्वारा है ॥ शृङ्गार व माधुर्य्य के उपासक लोग ध्यानकरने में व प्रिया प्रीतमके सुन्दरता व शृङ्गारके उपासनामें एकमतहैं और आरम्भ परिणाम दोनों का एकही भांति है इस हेतु शृङ्गार व माधुर्य्य के उपासक लोगों को एकही निष्ठा में लिखना उचित जाना हे कृपासिन्धु हे दीन बत्सल हे करुणाकर अब इस दीन की ओर भी कुछ ऐसी कृपा दृष्टिहो कि आपके माधुर्य्यका चिन्तवन करताहुआ आनन्द में रहाकरूं यद्यपि मेरे कोई आचरण आपकेकृपा व दया करनेकेयोग्य नहींहे परन्तु जो आपकी विरददीनबत्सल और प्रणतारत भञ्जनकीओर दृष्टिजातीहै तो दृढ़आशा होतीहै सो अपनी ओर व अपने विरदकी ओर देखकर यह दृढ़ता कृपाकरो ॥

कवित्त ॥

जिनजान्यो वेदतेतोवेदविदविदितहोहैं जिनजान्यो लोकलोकलीकनपर लड़मरैं ।

जिनजान्यो तपतीनों तापनसों तपततें पञ्चअग्नि सङ्कले समाधि धरधर मरें॥
जिनजान्यो योगतेतो योगीयुग २ जियें जिनजान्यो ज्योति सोंऊज्योतिलै जरमरें।
हूंतो देवनन्द के कुमार तेरो चेरीभई मेरो उपहास कोऊ कोटिन करमरें १॥

कोउकहो कुलटा कुलीन अकुलीन कोउ कोउकहो रङ्किनि कलङ्किन कुनारीहौं।
कैगत देवलोक परलोकत्रयलोकमैंतो लीनीहैअलौकिक लोक लोकनतेन्यारीहौं॥
तनजाहु धनजाहु देवगुरु जनजाहु जीव क्यों न जाहुनेक टरत न टारीहौं।
वृन्दावन वारी वनवारी के मुकुट वारी पीतपट वारी वा मूरति की वारीहौं २॥

माथेपै मुकुटदेखि चन्द्रिका चटक देखि छविकी लटक देखि रूपरस पीजिये।
लोचन विशाल देखि गरेगुंजमाल देखि अधररसाल देखि चित्तचोप कीजिये॥
कुण्डल हलन देखि अलकैं वलन देखि पलकैं चलन देखि सर्व्वस दीजिये।
पीताम्बर छोरदेखि मुरलीकीघोरदेखि सांवरेकीओर देखि देखिवोई कीजिये॥

व्रज गोपियों की कथा॥

व्रज गोपिकाओं के चरित्र त्रयलोकको ऐसेपवित्र करनेवाले हैं कि जिनकी उपमा कोईनहीं देखनेमेंआती जोगङ्गा इत्यादि तीर्थोंसे वरावर करीजाय तो वे एक एक देशमेंस्थित हैं जोलोग दूररहते हैं उनको बड़े परिश्रमसे मिलतेहैं और पर्वआदिके भेदसे पुण्यके न्यून बिशेषकीवात अलगरही और यहचरित्र परमपवित्र सवको सवजगह अनायास प्राप्त हैं और चारोंपदार्थ के देनेकेनिमित्त सवसमय वरावरहैं अपने अभाग्य से जो उसमें प्रीतिनहोय तो दूसरीवात है महिमा गोपिकाओं की वेद और ब्रह्मा व शेष व शारदा इत्यादिभी नहीं कहसके ब्रह्माजीने जिनके चरण रजको अपने शिरपर धारणकिया व अपना भागसराहा तो फिर उनकी महिमाका वर्णन करनेवाला कौनहै जो गोपिकाओं को भगवत् भक्तोंके पृथमें गिनाजाय तो उसमें शङ्काहोती है प्रथम यह कि जिनके चरित्र गायकरके भक्तजन भक्तनाम पायकर विख्यातहोतेहैं जो उनको भक्तकहाजावे तो ढिठाईहै दूसरे यह कि वेद और पुराणोंमें कईप्रकारकी भक्तिलिखी है उनके साधनसे भक्तनाम होताहै सो गोपिकाओं ने उन सबमें कौनसा साधनकिया कि उनको भक्तोंमें गणना कियाजाय व जो उनको भक्तोंमें न लिखाजावे तबभी शङ्काकास्थानहै प्रथम यह कि किसी ने बिना भगवत्भक्ति भगवनको नहींपाया दूसरे यहकि जो ये भक्तनहीं तो इसभक्तमाल में क्यों लिखा इसहेतु उनको भगवत् की परमप्रिया

और भगवत्‌रूप जानना चाहिये और जो महिमा उनकी बर्णनहो सो महिमा भगवत्‌की बिचार करनीयोग्य है बरु गोपिकाओं की महिमा अधिक है इसभांति कि जो प्रबल होताहै सो निर्बलको अपनीओर खींच लेता है सो गोपिकाओं ने भगवत्‌को गोलोकसे अपनीओर खींचलिया सिवाय इसके सारासंसार कहताहै कि भगवत् इससंसारका कर्त्ताहर्त्ता और स्वामीहै परंतु इसकहने सुननेसेभी किसीको बिश्वास नहींहोता कि भगवत्‌का भजन स्मरणकरके भगवत्‌केरूप अनूपका चिन्तवनकियाकरैं और गोपिकाओंके चरित्रको वहप्रताप और प्रभावहै कि जोथोड़ासाभी कोई सुनलेताहै तोऐसाकदापिनहीं होसक्ता किभगवत्‌कावहस्वरूपउस के हृदयमें न आजाय और भगवत्‌में बिश्वास न होय इच्छाथी कि कुछच-रित्र गोपिकाओं केइसग्रन्थमें लिखेजावैं परन्तुउनअपारचरित्रोंमेंसे एक प्रकारके चरित्र के लिखनेकी भी सामर्थ्य करोड़ों जन्मतक न देखी गो-पिकाओंका भाव भगवत्‌में अलौकिक अर्थात् जो न देखनेमें आवे ऐसा हुआ कि भगवत् भक्तोंको परमआनंद का देनेवालाहै और दूसरेलोगों को भगवत्‌में लगादेने वालाहै अर्थ अलौकिकभाव का यहहै कि गोपि-का भगवत्‌को एक व सबसे अलग पूर्णब्रह्म परमात्मा जानतीथीं और उसीको यारदोस्त व मित्र परमस्नेही व प्राणप्रीतम समझकर मित्रता व दुलार व प्रेमकेनेमकी रीति सबआचरण करतीथीं यद्यपि यहदोनों बात परस्पर ऐसी बिरुद्धहैं कि जैसे अन्धकार व प्रकाश को आपुस में बिरुद्धता होतीहै परन्तु सो गोपिकाओंमें दोनोंबनेरहे इसहेतु शास्त्रोंने उनकाभाव अलौकिक कहा सो इसभाव के चरित्रोंमें से एक दो चरित्र नमूनेके भांति लिखताहूं॥ एकबेर ब्रजभूषण महाराज रातको किसी गोपिका के घररहे जब बड़ीभोर वहांसे चलनेकी इच्छाकोकिया अपने घुंघुरू इसडरसे कि शब्द सुनकर कोई जागि न पड़ै उतारने लगे उस गोपिकाने हाथपकड़लिया और कहा कि जो मेरी उपहासहोय तो चिंता नहीं परन्तु यह उपहास तुम्हारीहोनी न चाहिये कि श्रीकृष्ण पूर्णब्रह्म अपने चरणसे लगेहुयेको अलग करदेताहै॥ एकबेर ब्रजगोपिका मा-खन बेचनेकेलिये यमुनापार जातीथी और उनको ब्रजचंद्र महाराज से हँसने बोलने व देखनेकी प्रीति अनुक्षण रहतीथी इसहेतु उसीओरगईं

जिसओर नटनागर महाराज थे और दर्शन परस्पर होनेपीछे दधिदान का झगड़ा व रसवाद के होनेपर यमुनापार जाने की इच्छाको किया तब व्रजकिशोर महाराज ने कहा कि यहनाव तो यमुनामेंहै परंतु इस समय मल्लाहनहींहै जो तुमको आवश्यक जानाहै तो हम तुमको पार उतारदेवेंगे सबगोपिका उसनावपर चढ़गईं और व्रजकिशोर महाराज मल्लाह बने संयोगवश वह नाव सड़ी और पुरानी थी जब बीचधारामें पहुंची उसमें पानी आनेलगा कौतुकी महाराज ने कहा कि सावधान होजाओ नावडूबी उनमेंसे जो नंदनंदनमहाराज के हँसीखेलके स्वभाव की जाननेवाली थीं उन्होंनेकहा कि कुछ चिन्तानहींडूबनेदो हम वह मतिहीननहींहैं कि तेरी धमकीसे डरकर जो तू कहै सो मानलेवैं और कोई कोई जोथोड़ीअवस्थाकी थी और नंदनंदन महाराज के स्वभाव से अजान व नईआईथीं वह सब घबरानी और श्यामसुंदर शोभाधाम के निकट आकर कोई तो छातीसे लिपटगईं और किसीने हाथपकड़लिया और कोई चरण पकड़कर बैठगईं और किसीने गलेमें हाथ डालदिया जब मनमोहन महाराज ने देखा कि बहुतोंसे तो मनकी भाई सिद्धहुई परंतु कितनी एक हमारे धमकीमें नहींआतीहैं तो नावको बारो बराबर पानीमें मग्नकरदिया तब तो सबको निश्चय होगई कि अब यह नाव डूबी औ गोपकुमार जो किनारेपर खड़ेथे ताली बजाकर हँसनेलगे कि यह मूरख गोपी सब इस नन्दलाल के भरोसे से नावपर चढ़ी थीं उन व्रजनागरियों को अपनेप्राणका तनकशोच न हुआ और कहनेलगीं कि यह गोरस और माखन सब डूबजावै तो क्या चिन्ताहै और जो हमारे प्राण जातेरहैं तबभी कदापि कुछचिन्ता व शोचका कुछ प्रयोजन नहींहै परन्तु अत्यन्त शोक व शोचइस बातकाहै कि सबजगत में बात फैलैगी कि जिसनावका खेवनेवाला श्रीकृष्ण भवसागर तारकथा सो नाव डूब गई जब यशोदाजी महारानीने ब्रह्मा और शिव आदिकको मायाकीफांसी से बांधने और छुड़ाने वालेको रस्सी से बांधा तब सब गोपिका लीला देखनेको आईं और कहने लगीं कि हे नन्दनंदन बहुत अच्छी बातहुई जो तुमको यशोदा जी ने ऊखल से बांधा कि अब भी तुमको दूसर के बंधनेका दुःख ज्ञानपड़ै अर्थात् जीवोंको मुक्ति कृपाकरो॥ जब ऊधोजी

भगवत् का संदेशा लेकर मथुरासे गोपिकाओं के पास आये और ज्ञान बैराग का राग आरम्भ किया तब व्रजसुंदरियों ने ऐसे उत्तर दिये कि निरुत्तर होरहे संयोगबश एक भ्रमर वहां आयगया गोपिका उसभ्रमर के मिसकरके ऊधोसे कहतीहैं कि हे भ्रमर तू उसी निर्दयी व कपटीकी स्तुति व बड़ाई करताहै कि जिसने राजाबलि बिचारेसे कपट व धूर्तई करके उसका राज लेलिया फिर रामाअवतार धारणकरके पहिले तो सूर्पनखा को अपने मुखकी शोभापर बशीभूत व आशक्त करलिया फिर उसीके रूपका नाश करदिया और न जाने कि उसधूर्त बेशीलको अंतर्यामी किसवास्ते कहतेहैं जो बास्तव करके अंतर्यामीहै तो हमारी अंतर्दशादेखकर क्योंनहींआता और हमारे दुःखकी दशापरदया क्योंनहीं करतासोकैतो अन्तर्यामीनहींहैकैनिर्दयी व बेशीलहै इसप्रकारके चरित्रों
९ कि अनन्तहैं गोपिकाओंका अलौकिकभाव अच्छेप्रकार प्रत्यक्ष है॥
महाभारत व भागवत व गर्ग संहिता व बिष्णुपुराण और दूसरे पुराणों से प्रगटहै कि गोपिका बेदश्रुती व ऋषेश्वरों व जनकपुर बासियों की स्त्रियोंकी अवतारथीं जितना कि ज्ञान और प्रेम व भाव इत्यादि उनको हुआ सबठीक व युक्तहै प्रेम गोपिकाओं का इतनाहुआ कि सबऋषेश्वर लोग व कबिलोगों ने अगिले व अबके प्रेमका अन्तगोपिकाओंपरसमाप्तलिखा और इसभक्तमालमें जो प्रेमकीदशा प्रेमनिष्ठामें लिखीजायगी औरउनके दृष्टान्त बर्णनहोंगे सो करोड़से करोड़ व भाग गोपिकाओंके प्रेमकाहै बिचार यहकियाथा कि कुछ गोपिकाओंके प्रेमका बर्णन इस कथामें भी लिखाजाय परंतु जब अपारदेखा तब मौनता को अंगीकार किया शृङ्गाररस जिसका कुछबर्णन ग्रंथारम्भमें औरकुछ शृङ्गाररसकी भूमिकामेंहुआ उसरसके खजानेकी ध्वजा अथवा उसरसके देशकी साम्राट अथवा चक्रवर्ती राजा यहव्रज गोपिकाहुईं व उसरसका अन्त व्रज गोपिकाओंपर समाप्तहो चुका अब थोड़ा थोड़ा जिसकिसीको प्राप्तहोता है तो व्रजनागरियों की कृपा से मिलता है और जिस किसीको उसके स्वादकी चाहहोवै तो गोपिकाओंके चरित्रकी शरणलेवै औरव्रजगोपिका व व्रजचन्द्र महाराज वहचरित्र सब जो शास्त्रोंमेंलिखे हैं ज्यों के त्यों अब तक करतेहैं जिनको भगवत् ने सूझनेवाली आंखें कृपाकरके दी हैं सो

उसचरित्रको देखतेहैं ब्रजनन्द महाराज कबहीं ब्रजछोड़कर अलगनहीं होते और भागवत इत्यादि पुराणोंमें जो मथुरा व द्वारकाका और भगवत् के जानेका वर्णनहुआ वे चरित्र भगवत्‌के कोई कोई कार्यके प्रयोजन के हेतुहैं एकरूपने तो सबचरित्र मथुरा आदिमेंकिये और दूसरा निज स्वरूप पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन नन्दनन्दन महाराज का ब्रजमेंरहा कि अबतक वे चरित्र ज्यों के त्यों होते हैं इसका सिद्धांत वेदश्रुती और पुराणोंसे अच्छेप्रकार उपासक जनोंने निश्चय करदिया है उसको विस्तारकरके लिखनेकी यहां समवाईनहीं परन्तु एकवृत्तान्त थोड़ेमेंलिखा जाताहै जब उद्धवजी ने विरह करके गोपिकाओं की अत्यन्त विकलता देखी तो आपदयासे अतिविकल व वेचैन होगये और भगवत्‌की ओर निर्दयता व कृतघ्नताको समाप्त करनेलगे यहविचार करतेही थे कि एक चरित्रदेखा यह कि नन्द नन्दन महाराज किसी ब्रजगोपिका से हँसतेहैं और किसीका माखन चुराकर खाते हैं और नन्दरायजी के घरमें गऊ बछड़ों की रक्षा गो दोहन इत्यादि करते हैं और बनसे गऊ चरायेलिये आते हैं और गोपिका भगवत् के देखने के लिये अपने अपने द्वारपर खड़ी हैं ऐसेही ऐसे चरित्र जो भगवत् नित्यकिया करते थे देखे और आश्चर्य में चकित होकर वेसुधि बुद्धिहोगये तब ब्रज गोपिकाओं ने समझाया कि उद्धव तूज्ञान किसको सिखलाता है और क्या प्रयोजन इत्यादिको वर्णन करता है श्रीकृष्ण सदा यहां विराजमान रहतेहैं और कबहीं ब्रजसे अलग नहींहोते॥

मीराबाईजीकी कथा॥

गोपिकाओं की प्रीति और भक्ति के अनुसार कलियुग में अशङ्क व निर्भयप्रीति मीराबाईजीकी हुई संसारकी लज्जा और कुलकी परम्परा त्याग करके बलसे गिरिधरलालजीसे प्रेमलगाया औरनिर्मल यश सब भगवत भक्तोंनेगाया मेरते के राजाके घर जन्महुआ और लड़काई से गिरिधरलालजी के रूप अनुपमें प्रीतिहोगई कारण उसप्रीतिहोने का कोई कोई भगवतभक्त यह कहतेहैं कि किसी बड़ेके घर बरात आईथी उनवरात के धूमधामके देखने के निमित्त महल्लकी स्त्रियां कोठेपर चढ़ीं उससमय मीराबाई जीकी माता गिरिधरलालजी के दर्शनकेहेतु जो म-

हल में बिराजतेथे गईथी मीराबाई जी भी तीनचार वर्षकी थीं खेलती हुई अपनीमाता के पास चलीगईं व अपनी मातासे पूछाकि हमारा दूलह कौनहै उनकी माने हँसकर गोदमें उठालिया और गिरिधरलालजी की ओर बतलाकर कहा कि तेरादूलह यहहै मीराबाईजीने अपनी माताकी लज्जासे अपनेदूलहसे घूंघटकरलिया और उसीघड़ीसे ऐसीप्रीति गिरिधरलालजीमें हुई कि एकपल बिनादर्शन व चिन्तवन अपने स्वामीके नहीं ब्यतीतहोताथा भक्तमाल के तिलक कारने लिखाहै कि मीराबाई गिरिधरलाल जी के प्रीति दृढ़ होजाने के पीछे मातापिता ने चीतौर के राना के बेटेके साथ मीराबाई जीका बिवाह करदिया और बरात बड़ी भारीआई जब रानाके बेटेके साथ भांवरी होनेलगी तो मीराबाई जी अपनी भांवरी गिरिधरलाल जी के साथकरतीथी रानाके बेटेका भान तनक न था जब बिदा करनेकी तैयारीको माता पिताने किया तो मीराबाई जी गिरिधरलाल जी के बियोग को न सहिसकी और अत्यन्त बिकलहोकर रोतेरोते बेसुधि होगई मा बापने अतिप्रेम व प्यारसे कहा कि सबकुछ तैयार है जो तुमको अच्छा लगैसो लेजाव मीराबाई जी ने उसबिकलता दशासेकहा कि जो हमकोजिलाना चाहो तो गिरिधरलाल जीको देव मैं तनमनसे सेवाकरूंगी मातापिता को मीराबाई जी बहुत प्यारीथीं और समय बिछुड़नेकीथी इसहेतु गिरिधरलाल जीको मीराबाई जी को सौंपदिया बाईजी भगवत् को अपने डोलेमें बिराजमान करके भगवत्छबिको देखतीहुई और अपने प्राणप्रीतमके मिलनेसे बहुत प्रसन्न व हर्षित रानाके घरपहुंची सासुने डोलाउतारनेकी रीति भांति करके तबपहिले दुर्गाका पूजनअपनेबेटेसे करवाया और फिर मीराबाई जीसे कहा मीराबाई जीने उत्तरदिया कि यह तन गिरिधरलाल जी को भेंटकर चुकीहूं उनसेसिवाय और किसीके सामने शीश कब झुकासक्तीहूं सासुनेकहा दुर्गा के पूजनसे सुहागकी बढ़तीहोती है इसहेतु दुर्गापूजन उचितहै मीराबाई जीने उत्तरदिया कि इसबातमें हठ करनेका कुछ प्रयोजन नहीं जो कुछ मैंने पहिलेकही है उसके सिवाय और कुछ नहींहोगी यह सुनकर मीराबाई जीकी सासु अप्रसन्नहुई और जलबलकर अपने पतिके पासगई और कहा कि यहबहू किसी कामकीनहीं जबकिपहिले-

हो दिनउत्तर देकर मुझको लज्जितकरदिया तो न जानें आगे क्या करेगी रानायहबात सुनकर महा क्रोधमें भरकर मीराबाईजी को मारनेको उद्यत होगया परन्तु अपनी स्त्रीकेकहनेसे रुकिरहा और अलगमकान में टिकादिया ॥ यह बातजानेरहो कि गोपिका और रुक्मिणीने जोदुर्गा पूजनकियाथा तो श्रीकृष्ण महाराज तबतक मिलेनहींथे व मीराबाईजी को तो पहिलेही श्रीकृष्ण महाराज पति मिलगये इसहेतु दुर्गापूजन का प्रयोजन न हुआ और रुक्मिणी व गोपिकाओंके दृष्टान्तसे शङ्का भी योग्यनहींहै मीराबाईजी जब अलग स्थानमें रहनेलगीं तो बहुतप्रसन्न हुईं और गिरिधरलालजी को विराजमान करके शृंगार और सजावटमें भगवत्की और सत्संग में दिन रात मन लगाया राना की बेटी जिसका उदाबाई नामथा सो मीराबाई जी को समझाने के निमित्त आई और कहनेलगी कि भाभी तू बड़ेघरकीबेटीहै कुछज्ञान व विवेक सीख बैरागियोंका संग छोड़दे इसमें दोनोंकुलको कलङ्क लगताहै मीराबाईजीने उत्तरदिया कि सत्संगसे करोड़ों जन्मके कलङ्क छूटतेहैं जिसको सत्संग प्यारानहीं सोई कलङ्की है और हमारा तो सत्संगही से जीवन है जिस किसीको दुखहोय उसको तुम्हारी शिक्षा उचित है उदाबाई फिर आई और अपने मातापितासे सब वृत्तान्तकहा कि मीराबाई भगवत्भक्तिमें ऐसी दृढ़ है कि किसी का कहना नहीं मानती राना क्रोधित हुआ और विषका कटोरा चरणामृतका नाम करके मीराबाईजी के पास भेजदिया मीराबाईजीने भगवत् चरणामृतको शीशपर चढ़ाया और अतिआनन्द से पानकरगई राना अगोरतारहा कि अब मीराबाईके मरनेके समाचार पहुंचतेहैं परन्तु मीराबाईजीके मुखारविंदपर शोभाकाप्रकाश क्षण क्षण बढ़ताथा भगवत्शृंगार और शोभामें छकीहुई नयेनये प्रकारोंसे सजावट करतीथी और भगवत् चरित्रोंका कीर्त्तन करके रस और प्रेमामृत में भरतीथी उससमय मीराबाईजीने एक विष्णुपद भगवत् के साम्हने कीर्तन किया ॥ स्थाई उसका यहहै ॥ रानाजी जहरदियो हम जानी ॥ जब मीराबाईजीको विषकी ज्वाला कुछ न व्यापी तब रानाने ड्यवढ़ीदार रखदिया कि जिससमय मीराबाईजी साधोंसे बोलना बतरावना करती हो उसका वृत्तान्त पहुंचावे कि मारडालीजावे व मीराबाई जी गिरिधर

लालजीके साथ हँसी व ठट्ठा व खेल व बातचीतपर काया अभिमानियाँ व प्रिय बल्लभोंकी जैसीहोतीहै किया करतीथी एक दिन डेवढ़ीदारने समाचार पहुंचाये कि इससमय मीराबाईजी किसीकेसाथ बोलबतराव हँसी ठट्ठेकी करतीहैं राना तलवारपकड़े पहुंचा और पुकारा कि किवार खोल मीराबाईजीने किवार खोलदिये जब भीतरगया तो कुछ न देखा बोला कि जिसकेसाथ बातचीत हँसी ठट्ठेकी होरहीथी सोकहांहै मीराबाईजीनेकहा कि तुम्हारेआगे बिराजमानहै आंखखोलकर देखलो कि उसकी तुमसे कुछ लज्जा व ओटनहींहै उस समय मीराबाई और भगवत् आपुसमें चौसर खेलतेथे जब रानापहुंचा तो भगवत्ने पांसाडालने के वास्ते हाथ फैलायाथा रानाने जो हाथ भगवत् का पांसालिये फैला देखा तो लज्जितहुआ फिर आया रानाने अपने आंखोंसे यहप्रताप भी देखा परन्तु उसके मनमें कुछ न व्यापा निश्चय करके जबतक भगवत् भक्तोंकी कृपा नहींहोती तबतक भगवत् कदापि कृपा नहींकरते राना तो मीराबाईजीके मारनेके उपायमें लगाथा भगवत्कृपा उसपर किस भांतिसे हो एक धूर्त कपटी साधुका भेषबनाकर मीराबाईजीके सामने आया और कहा कि गिरिधरलाल जीकी आज्ञा है कि मीराबाईजी को पुरुषके अंगसंगका सुखदेव इसहेतुआयाहूं मीराबाईजीने कहा कि गिरिधरलाल जीकीआज्ञा मेरे शिरऊपरहै पहिले आप भोजन प्रसादकरैं तिसकेपीछे मीराबाईजीने जहां भगवत्भक्तोंकी समाज होरही थी उस मकानके आंगनमें पलंगबिछवाया और सजिकेउसधूर्त साधुको बुलाया और कहा कि पलंगपरपधारिये लज्जा और भयकिसीबातकी न चाहिये क्योंकि गिरिधरलालजीकी आज्ञाकापालन सर्ब्बथाउचितहै वहधूर्तसुनतेही पीलापड़गया और हृदयका अन्धकार ध्वस्तहोकर प्रकाश होगया मीराबाईजीके चरणोंमें त्राहित्राहि करके पड़ा मीराबाईजीने कृपाकरके भगवत् सन्मुख करदिया॥ अकबर बादशाह मीराबाईजीकी सुन्दरताका वृत्तान्त सुनकर तानसेनके साथदर्शनकोगया और दर्शन कियेपीछे भक्तिकीदशा देखकर अपने भाग्यको धन्यमानकर बहुतप्रसन्नहुआ तानसेन जब एक बिष्णुपद भगवत्के भेंटकरचुका तब फिर चलागया मीराबाईजी दर्शनके निमित्त श्रीवृन्दाबनमें आईं व जीव गोसाईंजी के दर्शन को

गई जीवगोसाईंने कहलाभेजा कि हम स्त्रियोंका दर्शन नहींकरते मीरा-बाईजीने कहा कि हमतो वृन्दावनमें सबको सखीरूप जानतीथीं और पुरुष केवल गिरिधरलालजीको सो आज हमारे जाननेमेंआया कि इस व्रजके और उसव्रजराजके और भी पट्टीदारहैं गोसाईंजी सुनकर नांगे पायनआये मीराबाई जीके दर्शन करके प्रेममें पूर्णहोगये पीछे मीराबाई जी सब बन व कुंजोंके दर्शन करके व भगवत्रूप माधुरीको हृदयमें धरके अपने देशमें आईं रानाकी द्वेषबुद्धि ज्योंकीत्यों बनी देखकर द्वारका जीमें चलीगईं और गिरिधरलालजीकी शोभामें छकीहुई भगवत्शृङ्गार के रसमें मग्न रहने लगी जब भगवत् भक्तों का आवना रानाके नगर में बन्दहुआ और भांति भांतिके उपद्रव होनेलगे तब रानाने मीराबाई जीकी भक्तिका प्रताप जाना और बहुतसे ब्राह्मण मीराबाई जीको फेर लानेके निमित्त भेजे ब्राह्मण द्वारकामेंगये और रानाकी प्रार्थना व विनती सबसुनाई ब्राह्मणोंने जब देखा कि मीराबाई जीको देश चलनेका मननहींहै तो सब धरने बैठे कि जबतुम चलोगी तबहीं अन्नजल करेंगे मीराबाईजीने ब्राह्मणोंसे कहा कि मेरानिवास इस द्वारकामें रनछोड़जी की कृपासे हुआ है उनसे विदाहोआऊं सो वहां जाकर गिरिधरलालजी के प्रेममें मग्नहोकर एकविष्णुपद भगवत् भेंटकिया अन्तकातुक उसका यह है॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागरमिलि बिछुड़न नहिंकीजे॥ भगवत् पूर्णब्रह्मसच्चिदानन्दघन परमप्रीति मीराबाईजीकी देखकर अलग न करसके और उनको अपने अंगमें मिलालिया विलम्बभये पीछे जो ब्राह्मणलोग ढूंढ़ते वहांगये तो मीराबाईजी को कहीं न देखा परन्तु सारी जो मीराबाई जी पहिने थीं सो पीताम्बरकी जगह भगवत् के अंगपर देखी भक्तिको निश्चय करके फिर आये व अकबर बादशाह ने चीतोर को मीराबाईजी के चलेजाने पर युद्धसे विजय करके ध्वस्तकर दिया॥

करमैतीजीकी कथा॥

करमैतीजी परशुराम रहनेवाले कांडेल राजा सिखादत्तके प्रोहित की बेटी ऐसी परम भक्तहुईं कि कलियुग जो हजारों कलङ्क व पीड़ासे भराहुआ है करमैतीजी के निकट नहीं आया अनित्य पतिको छोड़कर नित्य निर्विकार पति श्रीकृष्ण महाराज से प्रीति लगाई व संसार की

सब फांसे तृणके सदृश तोड़कर वृन्दावन में बासकिया निर्मलकुल जो परशुराम ब्राह्मण जो उनके पिता हैं उनके धन्यभाग हैं कि जिसके घर ऐसी लड़की जन्मी जिसकी बड़ाई और भक्ति सब भक्तोंने वर्णन करी श्रीकृष्ण महाराजके छबिपर करोड़ों कामदेव निछावर होते हैं ऐसा चित्तको लगाया कि उसीछबिके चिन्तवन व ध्यान में मगनरहती और ध्यानके सुखसे ऐसी आनन्द व स्वादलेती कि शरीर में न समाती व संसारका सबकाम असार व फीकाहोगया करमैतीजी को पति गवना लेनेके निमित्तआया मातापिताने गहने व कपड़ेकी अच्छी तैयारी करी करमैतीजी को शोचहुआ कि यह तन भगवत् भजन के हेतुहै शरीर के बिषय भोगके सुखलेनेके निमित्त नहींहै इसहेतु देहत्यागकी इच्छाकरी फिरशोचा कि भगवत् की प्रीति और भजन सबअर्थोंपर मुख्यतर अर्थ है और जगत् की प्रीति व सम्बन्ध सब अनित्यहै सो बिना शरीर भगवत् भजन नहीं होसक्ता इसहेतु देहका त्यागकरना उचित नहीं भजन के बिरोधियोंका त्यागयोग्यहै यह बिचार सिद्धान्त ठहरायके जिसरात के भोरको गवनाथा उसीरातके आधीबीतनेपर भगवत् के छबिमें छकी हुई और उसी ध्यानरूपी रूप के साथ निर्भय निराली अकेली घर से निकलकर चलखड़ीहुई प्रभातको चारोंओर आदमी ढूंढ़नेको दौड़े उनको आतेदेखकर एक मरेऊंट के कंकार में घुसकर छिपगई व कलियुग के पापोंके दुर्गन्धके बराबर मरेऊंट की दुर्गन्ध नहीं तुलसक्ती इसीकारण से वहदुर्गन्ध जनाई न पड़ी व भगवत् शृङ्गारके अतरइत्यादिकी सुगन्ध जो मन व प्राणके मस्तकमें समाईथी उसके कारणसे भी कुछदुर्गन्ध का बिकार न हुआ तीनदिन उसीकरंकमें छिपीरही तीनदिनबीते उसमें से निकलकर एक मेला गंगा नहाने को जाताथा उसकेसाथ गंगाजी पर आई वहां स्नानकरके गहने सब दानकरदिये जब मथुराजीमें गई वहां स्नान और यात्रा करी तबवहांसे वृन्दावनमें ब्रह्मकुण्डपर निवास करके भगवत् के चिन्तवन और ध्यान में रहने लगीं॥ करमैतीजी का पिता परशुराम ढूंढ़ता मथुराजीमें पहुंचा एक मथुराबासी चौबेसे पतापायकर वृन्दाबनमें गया उनदिनों में इतनी आबादी व कुंज व बाग इत्यादि वृन्दाबन में नहीं थीं वन सघन व हरियाली बड़ी थी एक बरगद के

वृक्षपर चढ़कर देखा कि करमैतीजी भगवत् ध्यानमें विराजमानहैं वृक्ष से उतरकर उनके पास आया और अत्यन्त स्नेहसे रोता कलपता चरणों में लपटगया और कहनेलगा कि तुम्हारे चलेआने से मेरीनाक कटगई कि भाईबन्धु कलङ्क लगातेहैं और सारा तेराबोल मारताहै अबघरको चलो अपने ससुराल में जाकर भगवत् भक्ति व सेवा पूजा किया करो यहवनहै कोई जंतु तुमको खायजायगा हमको दुखहोगा तुम्हारी माता जो मरने अटकीहै तिसको जिलावो करमैतीजीने उत्तरदिया कि निश्चय करके जिस २ तनमें भगवत् भक्ति नहीं है वहतन मृतकप्राय है जो जीनेकी चाहहै तो भगवत्भक्ति करनीचाहिये और यह जो कहतेहो कि नाक कटगई सो नाक पहिलेही से तुम्हारे मुंहपर न थी क्योंकि मुख्य नाक भगवत् भजन व भक्ति है विना इसके हजारों नकटे कान कटे हैं शोचकरो कि पचासबर्ष तुम्हारी अवस्था संसार के विषय बिलास में बीतगई और कबहीं तृप्त न हुई अबभी मोहरूपी नींदसे जागो कि सब भोग बिलास अनित्य व तुच्छ हैं भगवत् का भजन सार है सब बखेड़ा छोड़कर उसीओर मनलगाओ इस थोड़ेही उपदेशसे परशुरामका अ- ज्ञान इसप्रकार दूरहोगया कि जैसे सूर्यके उदयहोनेसे अंधकारका नाश होजाता है तबतक करमैतीजी ने एक भगवत् स्वरूप सेवा के निमित्त दिया व बिदाकिया परशुराम घरआया भगवत् मूर्ति बिराजमान करके ऐसा मनलगाया कि सिवाय सेवा व भजनके दूसरीओर तनक सुरत नरही व लोगोंके यहां आनाजाना सबकिसीसेबोलना बतरावनाभी छोड़ दिया एकदिन राजाने लोगोंसे पूछा कि परशुराम ब्राह्मण बहुतदिनोंसे हमारेपास नहीं आता उसका क्या समाचारहै किसीमनुष्यने सबवृत्तांत बिस्तारसे भक्ति व भजनका वर्णनकिया राजाने मनुष्य बुलानेको भेजा परशुरामने कहा अब राजासे कुछ काम नहीं मनुष्य तन पायकर जो कार्य्य करना चाहिये तिसमें लगाहूं राजा परशुरामकी भक्ति और वै- राग्यको विचारकरके आप दरशनोंके निमित्त आया और उनकी सांची प्रीति भगवतमें देखकर और करमैतीजीके भक्ति और वैराग्य का वृत्तांत सुनकर प्रेमसे बिह्वल होगया इच्छाहुई कि करमैतीजी का दर्शन करना चाहिये जोमेरे भाग्यहैं तो क्या आश्चर्यहै कि आवें और देश को

पवित्रकरें इसआशा से वृन्दाबनको गया और करमैतीजी के दर्शनकिये देखा कि नन्दनन्दन महाराजकी निश्चल और दृढ़प्रीति में करमैतीजी उस अवस्थाको पहुंचगईहैं कि कुछ कहने सुनने की बेर नहींरही उस दशामें चलनेके निमित्त अधिक बोलचाल न करसका और करमैतीजी के मनेकरने पर भी एककुंजकुटी करमैतीजीके रहनेकेनिमित्त बनवाकर चरणों को दण्डवत् करके फिर आया और भगवत् भजन में लवलीन हुआ अबतक कुटी करमैतीजीकी ब्रह्मघाट पर प्रगट है॥

नरसीजी की कथा॥

नरसीजी महाराज का गुजरातदेशमें और ऐसे कुलमें कि स्मार्तधर्म्म से सिवाय जहां भगवत् भक्ति का निर्मूलपता न था और जो किसीको तिलक छाप धारण कियेहुये देखतेथे तो उसी की निन्दा करते थे तहां जन्महुआ और ऐसे परमभागवत हुये कि उसदेश के पापोंको दूरकरके सबको भगवत्भक्त करदिया शृंगार और माधुर्यके उपासनामें ऐसेहुये कि गोपिकाओं के तुल्य कहना चाहिये जूनागढ़ के रहनेवाले थे उनके मा बाप जब मरगये तो भाई भावज के यहां रहनेलगे एकदिन बाहर से खेलतेहुये घरमें आये और भावज से पानीमांगा उसने अपने दुष्ट प्रकृतिके कारणसे क्रोधकरके उत्तरदिया कि ऐसाही कमाईकरके लाया है जो पानीपिलाऊं नरसीजीको लज्जाके मारे जीना भारीहोगया और शिवजीकी सेवामें गये सातदिन तक बिना अन्नजल शिवालय में पड़े रहे शिवजी महाराज ने बिचारकिया कि संसारी मनुष्य भी अपनेद्वार पर पड़ेहुये की रक्षाकरताहै और मैं जगत्का ईश्वरहूं इस हेतु साक्षात् आकर दर्शनदिये और कहा कि जो इच्छाहोसो मांग नरसीजीने बिनय किया कि मुझको मांगने नहींआता जो कुछ आपको प्रियहोय सो दीजिये शिवजीको चिन्ताहुई कि मुझको वह प्रियहै कि जिसको वेद भी नेतिनेति कहतेहैं और जिसका भेद अपनी परमप्रिया पार्बतीजीको भी अच्छेप्रकार से नहींबतलाया इस मनुष्यको तुरंत कैसे बतलादेवें फिर अपने बचन और इसबातको देखा कि इस मनुष्यके प्रभाव करिके एक देश कृतार्थ होजायगा इसहेतु अपना और नरसीजीका सखीरूप बनाकर वृन्दावनमें आये देखा कि सबभूमि कंचनमयी रत्नजटित उसकेबीच

में रासमण्डल व रासमण्डल में असंख्य गोपिका और गोपिकाओं के बीचमें सिंहासन और सिंहासन पर प्रियाप्रीतम विराजमान हैं शोभा की चांदनी से करोड़ों चन्द्रमा की चांदनी फीकी दिखाई पड़तीहै रास विलास होरहाहै तालदेकर कवहीं आप लालजी प्रियाजीको और कवहीं प्रियाजी प्रीतमको संगीतकी गति सिखातेहैं और कवहीं परस्पर गलवांहीं देकर नृत्य और कवहीं परस्पर हाथ पकड़कर गान करतेहैं और कवहीं दूसरी गोपिकाओंके नृत्य व गानपर सावधानहैं औरकवहीं हँसी व ठट्ठाहोताहै पखावज व बीनाआदि सबप्रकार के बाजेमिले ताल स्वरसे बजते हैं छहोंराग रागिनियों सहित सखीरूपसे खड़ेहैं नरसीजी ने जब यहसमाजदेखा तो कृतार्थ होगये दुःख सुखसे उसीघड़ी अलग हुये और शिवजी की आज्ञासे मशाल दिखलानेलगे ब्रजकिशोर महाराजने प्रियाजी से कहा कि आज यहसखी कोईनई आईहै प्रियाजी ने उत्तर दिया कि शिवजीके साथ है तब नटनागर महाराज ने मन्द मुसुकान और कृपाकी दृष्टिसे नरसीजी की ओरदेखा और फिर प्रियाजीने भी वचनसे सहायकिया तब आज्ञाहुई कि अब तुमजाओ और जो देखा है उसीकाध्यान और चिन्तवन करतेरहो जहां बुलाओगे तहां तुरन्त आऊंगा नरसीजी भगवत् आज्ञापाय परम आनन्दमें मग्न अपने घरको आये अलग एकघर बनाकर उसीसमाजके ध्यानमें रहनेलगे एकब्राह्मण की लड़की से विवाह होगया उसीसे एकबेटा दो लड़की उत्पन्नहुईं संसारमें भगवत् भक्तिको विख्यातकिया जो साधुआते उनकी सेवा अच्छे प्रकार कियाकरते और रातदिन भगवत् भजनके सिवाय दूसराकार्य नहींथा यहवृत्तान्त देखकर उनके सजाती ब्राह्मण द्वेषकरके शत्रुताकरने लगे परन्तु नरसीजी तो भगवत् रूपके समुद्र में मग्नथे और भगवत् सदा उनकीरक्षा व सहायके निमित्त प्राप्तरहतेथे इसकारण से वे लोग कुछ न करसके एकबेर साधु आनिउतरे लोगोंसेपूछा कि हमको द्वारका की हुण्डी करानीहै कोई साहूकार यहांहै लोगोंने कुत्सा व ठट्ठेकीराहसे नरसीजीको बतलाया और समझादिया कि जो वे न मानें तो तुम चरण पकड़लेना और बहुतविनय प्रार्थनाकरना साधुओं और सातसौरुपया नरसीजी के आगे रखकर चरण पकड़लिये नरसी जी नाहीं करनेलगे

तो हाथ जोड़ जोड़ प्रार्थना करने लगे नरसीजी ने जाना कि किसीके बहकाने से आये हैं अथवा भगवत् ने शत्रु लोगों के हृदय में प्रेरणा करके यहखरच भेजवाया है तुरन्त हुण्डी को लिखदिया और समझा दिया कि जिसके नाम हुण्डी है उसका नाम सांवल साह है उसी के हाथमें देना वे साधु द्वारकामें आये और उस साहूकार को ढूंढ़ा पता न मिला लाचार भूख प्याससे विकल नगरसे बाहर आये कि भोजन प्रसादसे छुट्टीकरके तब फिरसाहुको ढूंढ़ेंगे सांवलासाह महाराज ने बिचार किया कि बिना पक्केखोजके मेरामिलना कठिनहै परन्तु जो अधिक कष्ट ढूंढ़नेका देताहूं तो मेरी गुमास्तगरी और नरसीजीकी साहूकारीमें वट्टा लगताहै इसकारण बड़ीपगड़ी लम्बीधोती नीचाजामा पहिन कमरबांध कलम कानपररख एक बही बगलमें दबी साहूकार रूपबना और थैलो रुपैयाकी कांधेपररख जहां साधूटिकेथे आये और पूछा कि नरसीजी की हुण्डी कौन लायाहै साधु लोगोंके तनमें मानों प्राण पड़गया और सब एकबेरही बोले कि महाराज हमलायेहैं आपको ढूंढ़ते ढूंढ़ते हारगये आपने बड़ीकृपाकरी कि आये साहूने कहा कि किसवास्ते लजवातेहो हमको तुमको ढूंढ़ते कईदिन बीतिगये और नगरमें जो मेरापता न मिला तो कारण यहहै कि जो भगवत्का निजदासहै सो मुझको जानता है साधोंने हुण्डीकोदिया और सांवलसाहने नक़द रुपया देकर नरसी जी के नाम जवाब लिखदिया कि चिट्ठीआई रुपया रोकदेदिये मुझको अपना गुमास्ता जानकर कामकाज लिखते रहना साधूलोग यात्राकर के फिर नरसीजी के पासआये और वह चिट्ठीदीनी नरसीजी ने पूछा कि सांवलसाह को देखआये साधोंने कहा हां महाराज देखआये नरसी जी अतिप्रेमसे मिले और साधों को जो यह वृत्तान्त मालूम हुआ तो वोभी प्रेममें रँगिगये नरसीजी ने वह सब रुपया साधुसेवा में खर्च किया क्योंकि साहूका रुपया देनानिश्चयहै और उसके पास कोई लेजाने वाला पहुंचनहीं सक्ताहै सिवाय साधुसेवा के और कोई उपाय नहीं नरसीजी की बड़ीलड़की के लड़का उत्पन्न हुआ और नरसीजीके घरसे छूछक को सामानहीं गई सास आदिक सबनित्य बोलीमारतीं व गालियां दिया करतीथीं उसलड़की ने नरसीजी को कहला भेजा

कि इस सासने मुझको जातना में डालरक्खाहै जो तुमसे कुछ दिया-
जावे तो लेआओ नरसीजी एक पुरानी गाड़ी जिसके बैल अति दुर्बल
व बूढ़थे तिसपर चढ़कर उसनगर के किनारे पहुंच लड़कीने जो कंगा-
लीदशा देखी तो नरसीजी से कहा कि जो तुम्हारे पास कुछ न था तो
किसहेतु आये नरसीजीने कहाकि चिन्ताका कुछ प्रयोजन नहीं अपने
सासके पास जाकर जो कुछ सामान छूछक का चाहिये सो एक काग़ज़
पर लिखालेआवो सासने क्रोध करके सारे नगरके वास्ते सामा पहिरने
का व गहना सब लिखदिया जब नरसीजी की लड़की फ़र्दलेकर आई
तो नरसीजीने फेरभेजा कि जो किसी के निमित्त कुछ और बाक़ी रह-
गयाहो तो वहभी लिखकर भेजो सासने रिसकरके लिखदिया कि दो
पत्थरभी भेजदेना पीछे एकपुराने व टूटे दालानमें टिका दिया व न्हाने
के वास्ते जलभेजा सो ऐसाउष्ण कि हाथ न लगायाजाय भगवत् इच्छा
से मेह बरसा जल शीतल होगया नरसीजीने यथेष्ट स्नान किया और
उस दालान में एक कोठरी थी उसके द्वारपर परदा डालकर भगवत्
कीर्त्तन आरम्भ किया भगवत् आप रुक्मिणीजी के सहित सबअसबाब
जो काग़ज़पर लिखाथा लेकर उस कोठरीमें आये और रुक्मिणीजीको
साथ लानेका यह हेतुहै कि पुरुषोंके शृङ्गार पोशाकसामा तो मेरेआधीन
है जो स्त्रियोंकी सामामें कुछभेद पड़ेगा तो उसकादोष रुक्मिणीजी का
समझा जायगा एक शंका यह उत्पन्नहुई कि नरसीजी शृङ्गार उपासक
थे उचितयहथा कि उनके इष्टदेव अर्थात् नन्दनन्दन महाराज व राधि-
का महारानी आकर बिराजमानहोते रुक्मिणीजी व द्वारकानाथ महा-
राज क्यों आये उत्तर इसका यहहै कि नरसीजीने प्रियाप्रीतमके सुख
समाज व विहार में दुचिताई डालना उचित न समझा इसहेतु द्वारका-
नाथ व रुक्मिणीजीका स्मरण किया दूसरे यह कि भगवत् ने विचारा
कि यह कार्य्य शृङ्गारके सम्बन्ध नहींहै गृहस्थी धर्म्मके सम्बन्धका है
इसहेतु उसरूपसे चलना चाहिये कि सब कार्य्य विवाह गवना छूछक
भात इत्यादि को जिसने किया होय सो द्वारका नाथ व रुक्मिणी जीके
रूप से प्रकटहुये पीछे नगरके वासी लोगोंको सामा ओढ़ने पहिरने को
बटनेलगी और ऐसे असबाब दिये कि किसीने आंखसे भी नहीं देखेथे

सबसे पीछे दो पत्थर चांदी सोनेके दिये सारे नगर व देशमें नरसीजी का यश ऐसाहुआ कि अबतक साधुसमाजमें गाया जाता है पीछे नरसी जी अपने घरको चले एकस्त्रीका नाम उस काग़ज़पर नहीं चढ़ाथा छूट गयाथा उसको नरसीजीकी लड़की अपनी पोशाक देनेलगी उसने हठ किया कि जिसके हाथसे सबने लियाहै उसीके हाथसे ल्योंगी नरसीजी नेअपनी लड़कीके सङ्कोचसे दोहरायके भगवत्को बुलाया और उसको भी सब असबाबदिया इसदेनेसे नरसीजीकीलड़की इतनीप्रसन्नहुई कि शरीरमें न समाई और अपनेबापकी भक्तिदेखकर अपने पति इत्यादिको त्याग करदिया नरसीजीके साथचलीआई भगवत् भजनमें लगी दूसरी लड़कीने अपना ब्याहही न कराया वहभीभगवत् भक्त होगई जूनागढ़ जहां नरसीजीका घरथा दोगानेवाले गातेफिरतेथे कहीं एककौड़ी उनको न मिली किसीने नरसीजीका नाम बतलादिया कि उनके घरसे कुछअच्छीभांति तुमको मिलैगा वे आयके नाचने गानेलगे नरसीजी ने समझा दिया हमफ़क़ीरहैं हमसे क्याचाहतेहौ चलेजाओ उन्होंने न माना नरसीजीने कहा कि यहांकेवल भगवत्भक्ति साक्षात्है जो तुमको उसकी चाह होय तो मूड़मुड़ायके आजाओ उन्होंने तुरन्त शिर मुड़ालिया और नरसीजीके समाजमें मिलगये नरसीजीकी दोनोंलड़की व दोगायन प्रेम और भक्तिसे भगवत्काभजन औरकीर्त्तनकरके जोभाव भगवत्भक्तिऔर प्रेमके परमानन्द देनेवालेहोते प्रगट कियाकरती नरसीजीका सासू शाह लंगनामें जूनागढ़के राजाका दीवान था उसको नरसीजी का आचरण अच्छा न लगा और राजासे मिथ्या पाखंडीठहरायके इसबातपर सन्नद्ध किया कि दण्डी साधु और ब्राह्मणों का समाजकरके नरसीजी को इस नगर और देशसे निकालदेना चाहिये कि लोगोंको पाखण्ड में भुलाता है सो चारचोपदार नरसीजी को लेआनेवास्ते भेजे नरसीजी ने अपनी लड़कियों और दोनोंगायनोंको कहा कि तुमलोग कहीं अलग होजाओ हम राजाके पासजातेहैं उनलोगोंने कहा कि राजाका क्याडरहै हमभी साथहैं सो सब भगवत् कीर्त्तन करतेहुये राजाकी सभामें आये सब सभावालोंके मुखकी श्री नरसीजी के प्रतापसे जातीरही परन्तु एक पंडित ने पूंछा कि स्त्रियोंको साथरखना किसपद्धतिमें लिखाहै नरसीजीने उत्तर

दिया कि सब शास्त्र और पुराण और वेदोंका सार भगवत् भक्तिहै जिस किसीको कि भक्तिप्राप्तहुई वह परम भागवत् और भगवत् रूपहै क्या स्त्रीहोय क्या पुरुष और उसका एक निमिषका सत्संग भगवत् भक्तिका देनेवालाहै भगवत् ने श्रीमुखसे आप मथुरा बासिनी स्त्रियोंकी श्लाघा करी और उनकेपति मथुराके ब्राह्मणोंने उनकेभाग्यकी बड़ाईकरके कहा कि यहस्त्री परम बड़भागिनीहैं कि भगवत्का दर्शनपाया और हमारी सर्वज्ञता और वेदपढ़नेपर धिक्कारहै कि भगवत् से विमुखहैं भागवतमें लिखाहै कि वही बड़ाहै और वही मुक्तिके योग्यहै और वही सत्संगीहै और वही सेवाकरने वालाहै कि जिसको भगवत् भक्तिहै फिर भगवत् का वचनहै किमैं भक्ति के वशमेंहूं एकादशस्कन्ध में भगवत् का बचनहै कि मेरा भक्त जो श्वपच भी है तो उन बड़े कुलीनों से कि जो भगवत् भक्त न हों बड़ा है तो जिस किसी को भगवत् भक्ति लाभ हुई उसका स्त्री अथवा पुरुष अथव छोटी जाति या बड़ी जाति कहना शास्त्र विरुद्ध है वह भागवत् और भगवत् का प्याराहै शास्त्रों के सिद्धान्त और मुख्य तात्पर्यको समझकर जो भगवत् में मनको लगायेहैं सोई पण्डित व सर्वज्ञहैं नहीं तो सबगुण व पण्डिताई तुच्छहै ऐसेही ऐसे उत्तर से सब सभाको निरुत्तर करदिया इसबोल चतराव में एक ब्राह्मणने नरसीजी का प्रताप और हुण्डीके देनेका वृत्तान्त राजासे वर्णन किया राजाको विश्वासहुआ और चरणोंमें पड़ा प्रार्थनाकरके विनयकिया कि मेरेगृह को पवित्रकरिये अर्थात् गृहमें मेरेचलकर विराजमानहो कि मेरी कृतार्थता हो राजा का आश्वासन व बोध करके नरसीजी चले आये और भगवत् भजनमें लगे श्रीमूर्त्ति भगवत्की जो विराजमानथी नित्यइस स्वरूपके सन्मुख भजन व कीर्तन कियाकरतेथे और जिस समय राग केदारा गातेथे उस समय भगवत् प्रसन्नहोकर अपने गलेकी मालादिया करतेथे एकबेर साधुसेवाका प्रयोजनपड़ा केदारा रागिनीको साहूकार के यहां गिरों रखदिया कि जबतक रुपया न देंगे तबतक केदारा भगवत् को न सुनावेंगे उसी समय में शत्रुलोगों ने राजा को बहकाया कि नरसीजी की बड़ाई व श्लाघा व्यर्थ फैलरहीहै एक कच्चेधागेमें फूलोंकी माला भगवत् को पहिनाय देताहै और वह माला फूलोंके भारसे आप

टूटपड़ती है राजा परीक्षा लेनेपर हुआ राजाकी माता भगवत् भक्तथी उसने बहुत समझाया परन्तु कुछ न मानां एक मोटेरेशमके डोरेमें माला को बनवाया और भगवत्को पहिनाकर नरसीजीसे कहा कि हमभी तो देखें कि भगवत् तुमको माला किसप्रकार देतेहैं नरसीजीने कीर्त्तन आरम्भकिया एककेदारा छोड़ और सब रागगाये परंतु भगवत् प्रसन्न न हुये और न मालादीनी तब तो नरसीजी ने बोली मारना प्रारम्भकिया कि नितान्त ग्वालबालहो एकमालाके हेतु ऐसी कृपणताईको अंगीकार करलियाहै कि छातीसे लगारक्खी है और सिवाय उसकेदाराके किसी भांति प्रसन्न नहींहोते विष्णुनारायण बड़े बुद्धिमानहैं कि सारे संसारका पालन करके अपने किंकरोंकी बाञ्छा पूरीकरते हैं मेरेभाग्यमें तुमग्वालबाल लिखगये कि एकमालाके निमित्त यहदशाहै और इसउदारताई पर विशेष यहहै कि अपनेसे अलगभी नहीं होनेदेतेहो अपनेमुख और अंगनकी अनूप छबिको दिखाकर बशी व आधीन करलियाहो और इस तुम्हारी कृपणतापर मेरी क्याहानिहै तुमहींको कलङ्कलगेगा जबआप श्रीजीने यहबोली मारना सुनलिया तो नरसीजीका रूप बनाकर और उनका रुपैया लेकर उससाहूकार के घरगये वहसाहूकार अभागा नींद मेंथा उसने कहदिया कि मेरीस्त्रीको रुपैया देकर लिखना अपना निकलवाय लेजाव जबस्त्रीके पासगये तो उसने दण्डवत् औरप्रतिष्ठाकिया व रुपैयालेकर लिखनाफेरदिया पाछे कुछभोजन करवाकर बिदाकिया साहूकारकी स्त्रीको जोदर्शनहुये तो कारणयहहै कि एकबेर उसस्त्रीने नरसीजीसे बहुतप्रार्थना करके विनयकियाथा कि भगवत्के दर्शन करादो तब नरसीजीने बचन प्रबन्धकियाथा सो नरसीजीके बचनकोभगवत्ने पूरा किया इसहेतु दर्शनहुये जबभगवत्केआगे रागकेदारा अलापा तो काग़ज़ नरसीजीके गोदमें डालदिया नरसीजी देखकर प्रसन्नहुये और ऐसाउस रागकोगाया कि औरदिन तो माला भगवत्के गलेसे अलग होजायाकरतीथी उसदिनभगवत्मूर्त्ति ने अपनेहाथसे नरसीजीको पहिनाई सबने जय जयकारकिया और राजा दृढ़बिश्वासयुक्त होकर चरणोंमें पड़ा सब दुष्ट लज्जितहुये और भगवत्भक्तिका बिश्वास करिके भगवत् शरण होगये भगवत्ने जोबिनाकेदारागाये मालाकृपानकिया तोकारणयहहै कि

पहिले तो नरसीजी के मनसे बड़ाई व प्रेम उस केदारा रागिनी की जातीरहती सिवायइसके साहूकार व और दूसरेलोगोंको उसरागिनी का विश्वास न रहता और नरसीजी ने माला मिलने हेतु व दिखावने सिद्धाईके जो हठकिया तो कारण यहहै कि उसदेशमें भक्ति का प्रचार नहीं था और यह प्रभाव सिद्धताका देखनेसे बहुत लोगों ने भक्ति को अंगीकारकिया जो इससांची भक्ति की परीक्षामें कुछ अनर्थ प्रगटहोता तो सबलोग वे विश्वास होजाते और भक्तिकाप्रचार उसदेश में न होता एकब्राह्मण लड़कीके विवाह के निमित्त लड़का ढूंढ़ता जूनागढ़में आया कोई लड़का रुचिके अनुकूल न मिला किसीने नरसीजी का पता बत-लाया कि उनका लड़का बहुत सुन्दरहै उस ब्राह्मण ने नरसीजी का लड़का जो देखा तो बहुत प्रसन्नहुआ और तुरन्त तिलक विवाह का करदिया नरसीजीने कहा कि हम कंगालहैं तुम किसी धनवान के घर विवाहकरो वह ब्राह्मण नरसीजीकी बड़ाई व विनयकरके शीघ्र अपने नगरमें पहुंचा व लड़की के बापसे सब वृत्तान्त कहा वह लड़िकीवाला नरसीजी का नाम सुनकर बहुत अप्रसन्न व क्रोधवन्त हुआ और उस ब्राह्मणसे कहा कि यहलड़का अंगीकार नहींहै टीका फेरलावो ब्राह्मण ने कहा कि जिस अंगुली से विवाह का तिलक करआयाहूं उसको जो काटडालो तो कुछ चिन्ता नहींहै परन्तु सम्बन्ध नहीं फिरसकैगा वह लड़कीवाला लाचारहुआ और कहनेलगा कि लड़कीके भागमें जैसाहै वैसा निश्चयकरके होगा शोचकरना प्रयोजननहीं विवाहमें ऐसादायज दे देवेंगे कि नरसीजीको धनाढ्य करदेंगे जब विवाह का दिन निकट आया तब उसने लग्नपत्रिका भेजी नरसीजीने उसको कहीं डालदिया और निर्मल विवाह की चर्चा व कबहीं चिन्तवन न किया ज्योंके त्यों भजन और कीर्त्तनमेंलगेरहे चारदिन जब विवाहके रहगये और नरसी जीने कबहीं विवाह का नाम भी न लिया तो श्रीकृष्णस्वामी और रु-क्मिणी महारानीजी विवाहके कार्यसँवारनेके निमित्तआये रुक्मिणीजी तो स्त्रियोंके कार्य सँवारनेमें लगीं और आप भगवान् नरसीजीके करने योग्य कार्योंमेंलगे स्त्रियों ने विवाहके गीतगाना इत्यादि आरम्भकिया व ठौर ठौर मिठाई व पकवान बननेलगे और नौबत खाने बजनेलगे

श्रीरुक्मिणीजी ने अपने हाथ से लड़के के भालपर तिलक किया कि जिसको चित्रमुख अथवा मुखमंडन अथवा मुरवट कहते हैं और आप शृङ्गार करके घोड़ेपर चढ़ाया और जिस जिस जगह जो जो नेगदान दक्षिणाका उचितथा सो दश गुणाकिया फिर ज्योनारहुई असंख्य आदमी आये ब्राह्मणलोगों ने स्पर्द्धा व द्वेष के कारणसे इतनी मिठाई व पकवानलिया कि पोट बांध बांधकर घरलेगये फिर बरात की तैयारी हुई असंख्य रथ व घोड़े व हाथी व पालकी इत्यादिपर सुन्दर सुन्दर पुरुषलोग चढ़े जब बरातचली तो भगवत्‌ने नरसीजी का हाथपकड़के आज्ञाकिया तुमभी साथचलो गुप्तमें यद्यपि हम साथहैं परन्तु प्रगटमें तुमसब कार्य करतेरहो नरसीजीने कहा कि महाराज आप जानैं और आपका कामजानै मुझको तालबजाना और आपका कीर्तन आताहै सो यह काम जहांचाहो तहांलेलो भगवत् ने बिचारा कि सिवाय भजन कीर्तनके नरसीजीसे कुछ काम न होगा तो आपही सबकामोंके अधिष्ठाताहुये और बरात समधी के नगर के समीप पहुंची उस समधी ने बरातके आनेके पहिले अपने आदमीभेजेथे कि दिन बिवाहका आपहुंचे हैं जो लड़का और दो चार आदमीआतेहों तो ले आवो उनलोगोंने जो बरात ऐसी भारीदेखी तो लोगोंसे पूछा कि यह बरात किसकीहै बरातियोंनेकहा कि नरसीजी महत्माकी है वहलोग समधीकेपासआये और बरातकी भीड़ और शोभा का वृत्तान्त बर्णनकिया समधीने जो नरसीजीको कंगाल समझलिया था और कुछ सामान तैयार नहींकिया था उनलोगोंसेकहा कि क्या मेरी हँसीकरतेहो उनलोगोंने कहा हँसीनहीं सत्यकहतेहैं तब तो समधीकी बुद्धि उड़गई और जो ब्राह्मण टीका दे आयाथा उसको देखने के निमित्त भेजा वह बरातको देखकर अत्यन्त प्रसन्न व आनन्दहुआ और आयके समधीसे कहनेलगा कि इतनीबरात आतीहै कि तुम अपने सारेधन लगानेसे घोड़ों को घास नहीं देसक्तेहो जिसओर दृष्टिजातीहै सिवाय बरातके कुछ नहीं देखपड़ता समधीघबराकर आप देखनेकोगया बरातको देखकर शोचमेंपड़ा धनका अहंकार दूरहुआ मर्य्याद रहनी कठिन समझी लाचार व दीन होकर तिलक चढ़ानेवाले ब्राह्मणके चरणोंमेंपड़ा कि अब मेरी मर्य्याद सिवायतुम्हारे

और किसीसे नहीं रहसक्ती वहब्राह्मण उस को नरसीजीके पासलेगया उसने जातेही नरसीजीके चरण पकड़लिये और हाथजोड़कर प्रार्थना किया कि कृपाकरो और मुझको और मेरी मर्य्यादको रखलो यहकह कर रोनेलगा व फिर चरण पकड़लिया नरसीजी उससेमिले और भगवत्के दर्शनकराये और उसकी आश्वासनकरी कि दोनोंओरकी लज्जा व मर्य्याद इन महाराज के आधीनहै यह समझाकर बिदाकिया भगवत् ने आप दोनोंओर का कार्य्यसम्हाला और इस धूमधामसे बिवाहहुआ कि वर्णन नहींहोसक्ता जब बिवाहकरके नरसीजी घरआये तब भगवत् द्वारका को पधारे और भगवत् भक्ति के प्रताप का यश सारे संसार में व्याप्त हुआ यह प्रसंग नरसीजी का पढ़ सुनकर जिसको भगवत् चरणोंमें प्रीति उत्पन्न न होवै तो उससे अधिक भाग्यहीन और कोई नहीं क्योंकि यह चरित्र अच्छेप्रकार से बोध करता है कि भगवत् की शरण होनेसे कुछ चिन्ता संसार व परलोक की नहीं रहती आप भगवत् सब पूर्णकरते हैं ॥

हरिदासजीकी कथा ॥

स्वामी हरिदासजी सबशृङ्गार उपासकों के शिरमौरहुये और उपासना में दृढ़ धारना जैसी उनकोहुई उसका वर्णन नहीं होसक्ता अपने समयमें अद्वैतथे सखी भावना से अनुक्षण प्रिया प्रीतम के सुख समाज और नित्यविहारमें मिले रहतेथे और प्रिया प्रीतम कुञ्जबिहारी राधारमण राधाकृष्णनाम जिह्वापर रहताथा भक्तिकाप्रताप यहथा कि देश देशके राजा दर्शनकी आशा करके द्वारपर रहतेथे भगवत् भोग लगने के पीछे मयूर व बन्दर इत्यादिको देखते तो बड़ीप्रीतिसे भोजनकरवाते इसभावसे कि नटनागर महाराज उनसेखेल व दिल्लगी करतेहैं और जिनके कीर्त्तन और गानविद्या के सन्मुख गन्धर्व्व भी लज्जितथे कोई सेवक स्वामीजीके निमित्त अतिउत्तम विष्णुतैल अर्थात् अतर बड़ेपरिश्रमसे लाया उस समय स्वामीजी यमुनाके पुलिन में बैठेथे शीशालेकर सब अतर उसरेतमें डालदिया उससेवकको बड़ा दुःख व शोचहुआ और मनमें कहनेलगा कि स्वामीजी ने मर्य्याद व गुण इस अतरका न जाना स्वामीजी उसके मनकी सब जानगये उसको कहा कि बिहारीजी महा-

राजके दर्शन करआवो वह पुरुष जब मन्दिर में आया तो सारामन्दिर सुगन्ध की लपट से भरापाया और जब बिहारी जी के दर्शन किये तो भगवत् की पोशाक शिरसे पांवतक सब अतर में भीगी देखी तब तो बिश्वास हुआ और अपनी अज्ञानता से लज्जित होरहा ॥ सब शीशा अतर भगवत्पर डालनेका हेतु यहहै कि हरिदासजी ध्यानसे भगवत् से होरी खेलतेथे भगवत्ने हरिदासजीपर रङ्ग व गुलाल डाला स्वामी जीकेहाथमें उसघड़ी यहशीशा अतरका आयगया कि रङ्गकीजगह उस शीशेको भगवत्पर डालदिया ॥ कोई एकपुरुष स्वामीजीकेपास सेवक होने को आया और पारसमणि भेंटकिया स्वामीजीनेजाना कि इसको पारस मणि बहुत प्यारा है जब तक उसमेंसे प्रीति न जायगी तब तक प्रिया प्रीतम में प्रीति कब होगी इसहेतु से उसको आज्ञाकिया कि यह पारसमणि यमुनाजीमेंडालदे उसने आज्ञाकेअनुसार यमुनामें उसमणि को डालदिया परन्तु यहशोच मनमें रहताथा कि जो वह पारस रहता तोसाधुसेवा और भगवत्के शृङ्गारकी सामाकीतैयारी अच्छेप्रकार होती स्वामीजीने देखा कि अबहीं उस पत्थरकी प्रीतिनहींगई इसहेतु अपने साथ बनमेंलेगये और हज़ारों पारसपाषाण दिखलाकरकहा कि जितने त्रिलोकीके ऐश्वर्य और जितनी स्वादकी चाहना भीतर व बाहरकीहैं सब भगवत् प्राप्तके पन्थके ठगहैं और जबतक सब ओर से प्रीति दूर करकेभगवत् चरणोंमेंमननहीं लगता तबतकभगवत्का परमानन्दप्राप्त नहींहोता इसहेतु सबओरसे मनको खींचकर भगवत्में लगाना चाहिये और जो पारस पाषाण प्याराहै तो जितना मुझको कामहो उठाले वह सेवक चरणों में पड़ा और मनको एकाग्र करके भगवत्के भजनस्मरण में लवलीनहुआ अकबर बादशाहने तानसेन से पूछा कि तुम्हारा गुरू गानविद्या का कौनहै उसने स्वामी हरिदासजीको बतलाया बादशाह को स्वामीजीके दर्शनकी बड़ी उत्कंठाहुई और तानसेनके साथ तानपूरा लेकर दर्शनपाया तानसेनने एकपदगाया और जानबूझकेदो एकजगह तालसुरमें अशुद्धकिया स्वामीजीने तानपूरालेकर आप उस पदकोगाया कि जितनेलोग सुनतेथे सबभगवत् स्वरूपमें लयहोरहे जब बादशाह डेरेपरआया तब उसीपदके गानेकीआज्ञा तानसेनकोदी जब उसनेगाया

तो जो रसस्वामीजी के मुखसे पायाथा सो न मिला कारण इसका तानसेनसे पूछा उत्तर दिया कि स्वामीजी तो उसके साम्हने गातेथे कि जो सबकास्वामी और पालन करनेवालाहै और मैं तुम्हारे साम्हने गाताहूं बादशाह ने यहवचन उसका स्वीकार किया ॥ बिदाकेसमय स्वामीजीसे बादशाह ने विनयकिया कि कुछसेवाकी मुझको आज्ञाहोय स्वामीजी ने कहा कुछ प्रयोजननहीं जबबहुत हठकिया तो स्वामीजीने दिव्य ब्रजभूमि दिव्यनेत्र से बादशाहको दिखलाया कि वहवृत्तान्त धामनिष्ठा में लिखागया पीछे बादशाह चरणोंमें पड़ा व प्रार्थना किया कि जो किसी सेवाकेयोग्य पदवीनहींहूं परंतु कुछस्वल्प सेवाके निमित्तभी आज्ञाहोय तो मैं कृतार्थ व धन्यभाग्य होजाऊं स्वामीजीने कहा कि पहिले बन्दरों के निमित्त कुछचना पहुंचतारहै दूसरे ब्रजभूमि के वृक्ष और शाखाकोई काटने न पावै तीसरे तुमफिर कबहीं हमारेपास न आना बादशाह ने आज्ञा पालन किया॥

रत्नावलीजी की कथा॥

रत्नावलीजी भगवत्‌भक्तोंमें राजाहुई भगवत्‌कथा और कीर्त्तन और सत्संग और उत्साह और भगवत् शृङ्गारमें अनुक्षण लवलीन रहतीथी पतिके स्नेहका तनक चिंतवन नथा भगवत्‌प्रीति और भक्तिको मुख्यसमुझकर अपने विश्वास से चलायमान न हुई अपने प्रेम और भक्तिको अच्छेप्रकार निवाहा सत्य करके अँधेरे घरकी चांदनीहुई राजामानसिंह मेरके अधिपति तिसकेछोटेभाई माधवसिंह तिसकी रानीथी एकसहेली भगवत् भक्तिमें पगीहुई भगवत्‌का नाम नवलकिशोर व नंदकिशोर व ब्रजचन्द व मनमोहन व बिहारी जी इत्यादि कहकर प्रेमसे आंखोंमें जल भरलाती और प्रसन्नहुआ करती रानीजी ने जो भगवत्‌के नामसुने तो स्नेह उत्पन्न होगया और सहेलीसे पूछा कि बारंवार किसका नाम लेतीहै जो मेरे मनको अपनेओर बलसे खींचतेहैं सहेलीने उत्तर दिया कि तुमक्या पूछतीहो अपनेसुख व सुहागमें लवलीनरहो भगवत्‌भक्तों की कृपासे यहअनमोल रत्न मुझको प्राप्त हुआहै रानीजीको और अधिकचैन भगवत्‌का उत्पन्नहुआ और सहेलीसे पूछा कि किसप्रकार वह मनमोहन महाराज मुझकोभी मिलें सहेलीने जो प्रेम रानीजी का देखा

तो भगवत्के चरित्र रानीजीको सुनाये और भगवत्भक्त जो रसिक व शृङ्गार उपासक हुयेहैं तिनकी कथाकही रानीजीने उस सहेलीकोसेवा टहल करना छुड़ादिया व गुरूके सदृश समझा और मर्य्याद बहुतकरने लगी और भगवत् चरित्र दिनरात सुना करती जब अच्छे प्रकार मन भगवत्के चरित्रोंमें लगा तो दर्शनोंकी चाहनाहुई और सहेलीसे कहा कि ऐसा कुछउपाय करनाचाहिये जिसमें भगवत्के दर्शनहोंय कि प्राण सुखीरहैं क्योंकि वह मनमोहन मनमें समायगयाहै सहेलीने कहा कि उसके दर्शन बहुत कठिन हैं हजारों ऋषेश्वर इत्यादि घरबार व राज ऐश्वर्य त्याग करके धूरमें लोटतेहैं और दर्शन नहींपाते परंतु प्रेमसेवह मिलताहै सोतुम भक्ति और भावसे भगवत् सेवा अंगीकार करो और शृङ्गार व रागभोग में लवलीन रहाकरो रानीजी ने नील मणिका स्वरूप भगवत्का बिराजमान किया और बड़ीभक्ति और भावसे सेवा में लीनहुई भांतिर के शृङ्गार और रागभोग और नानाप्रकार के लाड़ लड़ानेको आरंभ किया थोड़े दिनमें उसपदवीको पहुंचगई कि स्वप्नमें भगवत्से बातचीत हुआकरती निश्चय कर करोड़ों उपाय और योग यज्ञ व तप व दान इत्यादिसे प्रेमकी राह कुछनिरालीहै पीछेयह कांक्षा हुई कि भगवत्के साक्षात दर्शन होंय उसीसहेली से मनकी बात कही उसने उत्तरदिया कि अपने महलके निकट एकमकान बनवाओ और चारोंओरअपने मनुष्य सावधान करो किजो कोई भगवत्भक्त व साधु आयाकरैं उनको लेआकर उस मकानमें टिकायाकरैं और भोजनइत्यादि कीसेवा अच्छेप्रकार होतीरहै और तुमपरदेमें बैठकर उनकेदर्शन किया करो इसउपायसे बिश्वासहै कि ब्रजकिशोर महाराजके दर्शन होजावैं-गे रानीजीने वैसाही सबकिया और साधुसेवामें बिरहिन व प्रेम मत-वालियोंकी भांति दिन काटने लगी एकबेर निज ब्रजभूमिके रहनेवाले साधु आय गये कि युगलकिशोर महाराजके रंगमें रंगेहुये थे उनके दर्शन और बोल बतरान से रानी थकित होगई और सहेलीसे पूछा कि इस शरीरमें वह कौन अंगहै कि जिसकी लज्जासे सत्संग व साधुसेवा में ब्यवधान पड़ताहै मेरे देखनेमें सब अंग बराबरहैं भगवत् स्वरूपके रससे परम आनन्द के रसमें मग्न होना यहीसारहै और सब असार

और तुच्छहै यहकहकर जहां भगवत् भक्तथे तहां चलीआई उससहेली ने मनाभी किया पर न माना आयकर चरणपकड़के दण्डवत् किया और बड़ी दीनता व आधीनतापूर्वक अपने हाथसे भोजन कराने और सेवा करानेका मनोर्थकरके विनयकिया कि जो आज्ञाहोय सोकरें उस समय के प्रेमकी दशारानी जीकी लिखने व वर्णन करने में नहीं आयसक्ती और किसप्रकार वर्णन होसके कि प्रेमसे नेमनहीं रहता अपने हाथमें सोनेका थाल भगवत् प्रसादका लेकर सबको भोजन कराया और पान दिया और चरणोंमें पड़ी हरिभक्त यहसेवा और प्रेम रानीजी का देख कर प्रेमसे विह्वल होगये जब सब परदा व संकोच रानीजीने उठाधरा तो नगरमें शोरहुआ और लोग देखनेको आये महलपर मुसद्दीतैनाथ था उसने राजाको सब वृत्तान्तलिखा कि रानीजी ने निर्भयहोकर सब लज्जाको दूरकिया और मुण्डी अर्थात् बैरागियोंके साथ बैठतीहैं राजा ने जो पत्रपढ़ा और हलकारेके जबानी सबसुना तोजलबल कर भस्महो- गया संयोगवश कुंवरप्रेमसिंह जो रत्नावलीके पेटसेजन्माथा अपनेबाप को सलाम करने इस स्वरूप से आया कि भालपर तिलक और गलेमें कण्ठी व मालाथी जिससमय आयकर सलामकिया व लोगोंने साधोंके स्वरूपसे कुंवरके आनेका वृत्तान्त निवेदन किया तो माधवसिंह ने उस कुंवरको मुण्डीके अर्थात् बैरागिनका बेटा कहा और यह कहकर महल में चलागया प्रेमसिंहको अपनेबाप के क्रोध करने की चिन्ता उत्पन्नहुई लोगोंसे कारणपूछा सब वृत्तान्त समझनेपीछे विचारकिया कि जो हम साधुहैं तो इससेअच्छा और क्याहै भगवत्भक्ति अङ्गीकार करनीचाहिये अपनीमाताको लिखभेजा कि जो तुम्हारीप्रीति भगवत् चरणों में सांची है तो राजाने आज सभामें हमको मुण्डीका कहाहै उसको सत्य करना चाहिये और मृत्युको शिरपरपहुंचा जानकर किसीप्रकारका शोच योग्य नहीं रानीने वहपत्री पढ़ी और भगवत्भक्तिके रङ्गमें रङ्गीनहोकर उसी घड़ी शिरकेकेश जो अतर फुलेलसे भीजेथे दूरकिये और पहिले साधों को भोजन इत्यादि सेवाकरके महलोंमें चलीजातीथी उस दिनसे महल का जाना बन्दकिया साधुसेवाके स्थानमें रहनेलगी और राजाकीओर से जोकुछ खरचकेनिमित्त बंधानथा तिसकोलेना छोड़दिया और अपने

पुत्र प्रेमसिंहको लिखभेजा कि आज मुण्डी होगई तुम आनन्द से रहो प्रेमसिंह बहुत आनन्दहुये लोगोंको इनआम दिया और नौबत बजवाई राजा माधवसिंहने लोगोंसे पूछा कि आज कुंवर प्रेमसिंह की किस बात की खुशीहै लोगोंनेकहा कि पहिले तो रानीजीने मुण्डी का स्वांग बना रक्खाथा अब आपने जो कुंवर प्रेमसिंह को मुण्डीका कहा तो रानीजी सच्चीमुण्डी होगई और केश शिरके दूर किये राजा सुनकर महाक्रोध में आया और कुंवर व उसकीमाता का घातकशत्रु होगया व हथियार बांधकर फौजलेकर कुंवरके मारने के निमित्त सवार हुआ कुंवरने जो यह वृत्तान्त सुना तो वह भी युद्धपर आरूढ़ होगया और संग्राम मारकाटकी निकट पहुंचगई थी कि राज मंत्रियोंने राजाको समझाया कि बेटेपर मारने की कमर बांधनी उचितनहीं बड़ा दुर्यश सारेसंसार में होगा और उधर कुंवर प्रेमसिंह को समझाया कुंवर ने उत्तरदिया कि संसार के विषय भोगके हेतु हजारोंलाखों शरीरधारणकिये फिर वे शरीर जातेरहे जो एक बेर भगवत् की राहमें यह तन जाय तो इससे दूसरा क्या उत्तमहै राज मंत्रियोंने चरण पकड़लिये और विनय प्रार्थना किया तबयह ठहरीकि जो माधवसिंह कमर खोलकर अपनेमकानपर चलाजावे तो हमको भी बिना प्रयोजन युद्धकरना अंगीकारनहीं है सो ऐसाही हुआ रात्रिके समयराजा माधोसिंह रानीके मारनेके हेतु दिल्लीसे कूचकरके अपने नगरमें आया और लोगोंसे सब वृत्तान्त सुनके अपनेमहलमें गया मंत्रियों से मंत्रणा किया कि रानीने हमारीनाक काटलिया ऐसी स्त्रीके बध करनेमें कुछ पाप नहींहोता सोबधकरना चाहिये एकबुद्धिमानने मंत्रदिया कि तरवार इत्यादि से मारना उचितनहीं जहां रानी रहतीहैं वहांनाहरको छोड़वादो कि रानीको मार देवैगा सबको यह मंत्र पसंदहुआ और प्रभातको यह बात करी उससमय रानी भगवतसेवा करके उठीथी और भगवत् रूपके प्रेमका जल आंखोंमेंथा उससहेली ने कहा कि देखो नाहर आया रानी ने देखकर कहा कि यहां नाहरका क्याकामहै नृसिंह जी पधारे हैं और अत्यन्त भक्तिभावसे सन्मुख आई दण्डवत् व बिनयकरके कहा कि आज धन्य मेरे भाग्यहैं जो दर्शनदिये भगवतने जो यह शुद्धभाव देखा तो उस नाहरहीमें अपना नृसिंह रूप दिखाया रानीजीने पूजनकिया और फूल

व माला इत्यादि अर्पणकरिके आरती को किया भगवत्‌ने विचारा कि पूजाको तो करालिया परन्तु कामभी तो नृसिंहका करनाचाहिये इसहेतु नृसिंहजी के सदृश कि हिरण्यकश्यप के मारने के समय खम्भसे भयंकर रूप प्रकटहुये थे मन्दिर से बाहरआये और जो लोग बिमुख थे उनको मारकर निकलगये माधवसिंहको यहसब सुननेमेंआया औररानी का वृत्तान्त सुनाकि ज्यों की त्यों भजन में आनन्द हैं तबतो बिश्वास हुआ व आधीनहोकर आया भूमिमें गिरकर साष्टांग दंडवत्‌किया उस सहेलीने विनयकिया कि राजाजी दंडवत् करते हैं रानीजीने कहा कि लालजी महाराजको दंडवत्‌करें फिरविनयकिया कि एक निगाह देखनी चाहिये उत्तरदिया कि ए आंखें एक ओर लगीहैं दूसरी ओर निगाह नहीं होसक्ती राजाने हाथजोड़ कर विनयकिया कि राज्य व खजाना सब आपकाहै जोमनमें आवै सो करो रानीजी ने कुछ सावधान होकर उत्तर न दिया भगवत् भजन में लगीरहीं एक बेर राजामानसिंह व माधवसिंह दोनों एकबड़ी गहिरीनदीके पारजातेथे नावडूबनेलगी और मल्लाह बेबशहोगये दोनों घबराये और राजा मानसिंह ने माधवसिंहसे कहा कि अब कौनउपाय करना चाहिये माधवसिंहने रानीके भक्ति का वृत्तान्त सबकहा और फिरध्यान रानीजीका किया उसीघड़ी नावकिनारे पर लगिगई और दोनोंको मानो नया जन्महुआ राजामानसिंहको बड़ी चाह दर्शनकी हुई जबआया तो पहिले रानीजी के दर्शनको गया दीन व आधीनतासे बिनतीकरी और मनमें दृढ़ विश्वास युक्तहुआ ॥

निषादकी कथा ॥

भीलोंके राजा निषादकी कथा सब रामायणोंमें विस्तारकरिके लिखी है यहां सूक्ष्मकरिके लिखीजाती है जब श्रीरघुनन्दन स्वामी दशरथ महाराज की आज्ञा से बनको गये तब शृङ्गबेरपुर में कि अबसीरोंर बिख्यातहै वहांके राजा गुहनाम निषादथे तहां पहुंचे निषाद रघुनन्दन स्वामीके आगमनका समाचार सुनतेही भेंट व नज़र लेकर आये और रूप अनूप व छबि माधुरीका दर्शन करके मन व प्राणसे आयकरूप होगये और उसीघड़ीसे सिवाय उसरूप और दर्शनके कुछसुधि अपने व बिरानेकीनरही जब रघुनन्दनस्वामी चित्रकूटकोपधारे और निषाद

को बिदाकिया तो बेसुधि बुधि होकर उसी रूपके ध्यान में रहनेलगी

जब भरत महाराज रघुनन्दन स्वामीसे मिलने के निमित चित्रकूट को चले और निषाद को समाचार पहुंचे तो संदेह हुआ कि मेरे स्वामी व परम प्रीतम से लड़ने के हेतु यह सेना जातीहै तब प्राणदेने को उद्यत होगये और तनक भय उससेना कटीली का न किया फिरजो वृत्तान्त भक्ति और मनकी निष्कपटता भरतजीका जाना तो भरतजी से मिले और चित्रकूट तकसाथ चलेगये जब वहां से फिरआये तो भगवत् के बियोग से ऐसे बिकल व बेचैनहुए कि रोतेरोते आंखोंसे रुधिर बहने लगा और उस भगवत् ध्यान में अपने और बिराने की सुधि जाती रही फिर मन में बिचार करने लगा कि मुझसे मीन इत्यादि जंतुजलके हज़ार गुना अच्छे हैं कि अपने प्राण प्रीतमसे बिछुड़तेही मरजाते हैं नितान्त फिर दर्शन मिलने की आशा करके रहे परंतु यह न हुआ कि इन आंखोंसे सिवाय उस रूप अनूप के और भी कुछदेखना चाहिये इस हेतु आंखें बन्द करके उसी रूप के चिन्तवन और ध्यान में रहे चौदह बर्ष पीछे जब रघुनन्दन स्वामी आये तो बिश्वास न आया और कहने लगे कि ऐसे मेरेभाग्य कहां हैं कि फिरभी उसरूपको इन आंखिनसे देखूं श्रीरघुनन्दन स्वामी अपार प्रीति देखकर आपआये और उठाकर अपनी छाती से लगाया उसघड़ी निषादने आंखें खोलीं और अपने स्वामी परम प्रीतम के दर्शन करके दोनों लोक में कृतार्थ हुये॥

बिल्व मंगल की कथा॥

बिल्व मंगलजी श्रीकृष्णस्वामीकी कृपाके पात्र आनन्द स्वरूप परम भागवत् हुये करुणामृत व गोबिन्दमाधव ग्रंथ और स्फुट स्तोत्र सँस्कृत में ऐसे रचनाकिये कि रसिक भक्तों को हार और मालाके सदृशहैं चिन्तामणिके संगको पायकर व्रजसुन्दरियोंके बिहार व परम आनन्दको बर्णन किया दक्षिण देशमें कृष्णाबेणानदीके निकटके रहनेवालेथे और चिन्तामणि नामवेश्याके प्रेम में ऐसे आसक्तथे कि संसारकी लज्जा शरमछोड़ कर दिनरात उसीके प्रेम में फँसेहुये उसी के घररहा करतेथे जाति के ब्राह्मणथे पिताके श्राद्धके दिन कर्म्मकरते और ब्राह्मण जिमाते दिनथोड़ा रहगया बिकल होकर चले वहवेश्या कि नदी के उसपार रहतीथी जब

नदीपर पहुंचे तो बाढ़पर देखा और नाव इत्यादि उतरनेकी सामा कुछ नपाई तो अत्यन्त बेचैनहुये और बिनाअपने प्रेमीके जीना व्यर्थ समझ कर नदीमें कूदपड़े कुछसुधि अपनेव बिरानेकी न थी उसीवेश्याके मिलने का ध्यानथा जवनदीमें डूबनेलगे तो एकमृतक वहां बहा जाताथा उस को पकड़लिया और विचारा कि उसी महबूब ने नावभेजी है उसपर चढ़कर किनारे पहुंचे वहांसे गिरते पड़ते बड़े बेगसे उस वेश्याके द्वार पर पहुंचे आधीरातथी व द्वार बन्दथा भीतर जानेकी चिन्ता में हुये सं-योग वश एक सर्प लटक रहाथा विचारा कि उस महबूबे ने कृपा करके चढ़ने के वास्ते डोरको लटकाय दियाहै उसको पकड़कर मकानकी छत्त पर चढ़गये और वहांसे जब उतरनेकी राह न पाई तो आंगनमें कूदपड़े शब्द सुनकर वेश्या और उसके घरके लोग जगे दीपक बारकर देखा तो विल्वमंगलजी हैं स्नान करवाया व सूखे बस्त्र पहिनाये पूछा कि किस प्रकारआये उत्तरदिया कि तुमने नदीपर नावको भेजदिया व द्वारपर डोर लटकाय दिया उसीके अवलंबसे आयाहूं वेश्याने छत्तपर चढ़कर देखा तो अजगर लटक रहा है वहवेश्या अत्यंत क्रोध करिके कहनेलगी कि जिस प्रकार मेरे शरीपर कि केवल मास व चमड़ाहै मनको लगाया है इसी प्रकार श्यामसुन्दर सब शोभाके धाम जो व्रजनागर महाराज हैं उनसे क्योंनहीं मनको लगाता कि इससंसार समुद्रसे पारहोजावै और दोनों लोक शुद्धहोंय मैं तो प्रभातहीसे युगुलकिशोर महाराज का स्मरण भजन करूंगी तुझको तेरे आधीनहै जो चाहै सोकर विल्वमंगलजी को यहबात ऐसीलगी कि हियेकी आंखें खुलगईं और श्रीव्रजचन्द्रकी रूप माधुरी ने तुरंत हृदयमें प्रकाशकिया और उसीघड़ी रूपमाधुरीका रस ऐसा मनोवांछित पाया कि परम आनन्दमें मग्न होगये वहरात तो भ-गवत चरित्र और वृन्दावनकीकुंजन और शोभाके कीर्तनमें व्यतीतहुई प्रभात होते दोनों ने अपनी अपनी राहको लिया मनमें परमशोभा धाम का स्वरूप और जिह्वापर नाम और आंखोंमें प्रेमका जलथा विल्वमंगल जी माध्व संप्रदामें सोमगिरनामे संन्यासीके सेवक हुये और भगवतके रूप अनूपकी चिंतवन करतेहुये हजारों श्लोक रसचरित्र व भगवत् के ध्यानके गुरुसेपढ़े और आप रचनाकिये एकवर्ष पर्यंत गुरुकी सेवामेंरहे

पीछे श्रीवृन्दाबनके दर्शनकी चाहहुई उसी प्रेममें मतवाले चलेराहमेंरहे एकनदीके किनारे पहुंचे वहां स्त्रियां सब स्नान कर रहीथीं एकस्त्री परम सुन्दरी को देखकर आसक्त होगये और अपने भेषको भूलकर उसके पीछे होचले वहतो अपने घरमें चलीगई और बिल्वमंगलजी देखनेकी चाहमें द्वारपर खड़ेरहे उसस्त्रीका पति भगवत्भक्तथा एकपरम भागवत् को अपने द्वारपर खड़ा देखकर अपनी स्त्रीसे वृत्तान्त पूछा उस स्त्री ने वृत्तांत आसक्तहोने और साथ आनेका वर्णन किया उस भक्तने बिल्व-मंगलजीको हाथ जोड़कर बिनयकिया कि मेरेगृहमें पधारिये कि चरण पड़ने से मेरा गृहपबित्र होय और सेवाकरके दोनों लोकमें धन्यताको प्राप्तहूं उसे अपनेघर लेगया अटारी पर टिकायकर बड़ीप्रीतिसे सेवा किया अपनी स्त्रीसे कहा कि शृङ्गार करके सबप्रकार से सेवाकर कि भगवत् भक्तों की सेवासे भगवत् बहुत शीघ्र मिलते हैं वह स्त्री शृंगार करके और थाल में भगवत् प्रसाद लेकर बिल्वमंगलजी की सेवा में पहुंची बिल्वमंगलजीने उसको देखकर और उनकी भक्ति व साधुसेवा का बिचार करके अपने मन आसक्तको सावधान किया और जाना कि सब उपाधि व बखेड़के कारण ये मेरी आंखें हैं जोये न होती तो काहेको मन आसक्त होता उस स्त्रीसे कहा कि दोसूई लेआओ सोवह लेआई और बिल्वमंगलजी ने उन दोनों सूइयोंसे अपनी दोनों आंखोंको अंधाकर लिया वहस्त्री डरीहुई और कांपती अपनेपतिकेपास आई वृत्तान्त कहा वहभक्त आया चरणपकड़कर अत्यन्त बिकल होकर बोला कि महाराज हमसे क्याअपराधहुआ कि जिसकारण आपकोयहक्लेशहुआ बिल्वमंगल जीने उनको आश्वासनकरकेकहा कि तुम्हारीसाधुता व भक्तिमेंकुछ संदेह नहीं हमारीही साधुतामेंभेदहै उसनेबिनयकिया कि कुछ दिन आपरहें कि सेवा करके कृतार्थ होऊं बिल्वमंगलजी ने कहा कि तुमने ऐसीसेवा करीहै जोकिसीसे नहीं होसक्ती अबतुम भगवत् भजनकरो यहकहिकर चले ऊपरकी आंखों को दूरकरके भीतरकी आंखों से कामरक्खा वृन्दा-बनमें पहुंचे एकवृक्षके नीचे बैठकर भगवत्के ध्यान और भजनमें लवलीन हुये भगवत्ने देखा कि मेराभक्त भूखा और प्यासा है आपआये और महाप्रसाद भोजनकराया जिसजगह बिल्वमङ्गलजी बैठे थे वहां धूप

आगई भगवत्ने कहा कि चलो तुमको छांहमें बैठाल देवें सो हाथ पकड़कर घनीछायामें लेगये बिल्वमङ्गलजी महाप्रसादके भोजन व मधुर बोलन और कोमल हाथकेस्पर्शसे जानगये कि आपहैं इस हेतु हाथपकड़लिया और छोड़नेको मन न चाहा भगवत्ने छुड़ानेकेहेतु बलकिया तो बिल्व मङ्गलजी ने भी बलकिया नितान्त भगवत् हाथ छुड़ाकर लम्बे हुये तब बिल्वमङ्गलजी ने कहाकि भला इसघड़ी तो बरिआई आपकीचल निकली अब मनमें पकड़ताहूं देखूंगा कैसे भागजाओगे सो ऐसाही किया अर्थात् सबओर से मनको बटोरके एक श्रीव्रजचन्द महाराजके रूप और ध्यान में ऐसा चित्त लगाया कि जो योगियों के मनसे भी निकल जाता है सो बिल्वमङ्गलके मनमें दृढ़होकर स्थितहुआ जब अच्छेप्रकार मनको दृढ़ता होगई तो बनसेउठकर वृन्दाबनमें आये और चाहयहहुई कि जो आंखें होतीं तो भगवत्के कुंजमहलके विहारस्थान और भगवत्के श्रीविग्रहों का दर्शन करते भगवत् ने उनके मनकी रुचि जानकर पहिले तो उस बांसुरीकी ध्वनिकी जो योगमायाकी भी मायाहै सुनाई और परमानन्द में पूर्णकिया व फिर दोनोंआंखों को प्रकाशवान् करदिया जैसे सूर्य्यके उदयसे कमल खिल जातेहैं बिल्वमङ्गलजी ने बन और लता और कुंज व विहारस्थान भगवत्के दर्शनकिये और फिर भगवत् श्री मूर्त्तियों का रूप शोभायमान देखकर अधिक चाह व तृष्णाध्यानके रूप माधुरी की हुई क्योंकि उसपरमअनूप रूपकासुख ऐसानहीं कि तृप्तहोय वरुजितना प्रकाश हृदयमें करताजावै तितनाही अधिक तृष्णा व चाहको बढ़ाताहै बिल्वमङ्गलजी ने करुणामृत रसग्रन्थ और कईस्तोत्र ऐसेऐसे रचनाकिये कि जिससे मन युगुल स्वरूपमें लगजाताहै करुणामृत ग्रन्थके मङ्गला-चरणमें जो पहिलेनाम चिन्तामणि पीछे नाम अपने गुरू का लिखा तो इसमें दोबात जानीजातीहैं एक तो यह कि पहिले उपदेश चिन्तामणि से हुआ इस हेतु उसको प्रथम गुरू करके जाना व पहिले नाम उसका लिखा दूसरे यहकि भगवत्भक्त थोड़ेसे उपकारको भी बहुत मानते हैं इस हेतु यद्यपि वह वेश्याथी परन्तु उसका उपकार इतना माना कि गुरूसे भी अधिक उसको विचारकिया और जब पद उस के निमित्त धरे उस चिन्तामणि बड़भागिनी ने बिल्वमङ्गलजी का वृत्तान्त सुना कि भगवत्

के दर्शनहुये और परमभक्त होगयेहैं पहिले प्रेमका नाता बिचार करके वृन्दाबनमें आई बिल्वमङ्गलजी उसको देखकर उठे और बड़ा सत्कार व आदरभाव किया दूधभातका देना निजप्रसाद का भोजन के निमित्त आगेधरा चिन्तामणिने पूछा कि यह भोजन कहांसेआया है बिल्वमङ्गल जीने कहा भगवत् कृपा करके देतेहैं चिन्तामणि ने कहा कि यह महा प्रसाद भगवत्ने तुमको कृपाकरके दियाहै जो मुझको कृपाकरके अपने हाथसेदेंगे तो लेऊंगी यहकहके भगवत् भजनमेंलगी भगवत्ने जोप्रीति अपार चिन्तामणिकी देखी तो परमप्रीति और कृपासे आप दोना दूध व भातका चिन्तामणिके निमित्त लाये कि जिसकी ब्रह्मादिक भी बड़ी चाहनासे कृपाकटाक्ष जोहते रहतेहैं व दर्शन देकर कृतार्थ किया ॥

सूरदास मदनमोहन की कथा ॥

सूरदास मदनमोहन ब्राह्मण सूरध्वज किसीसखीका अवतार परम भक्त माध्व सम्प्रदामेंहुये यद्यपि मुख्यनाम उनका सूरदासथा परन्तु श्री मदनमोहनजी महाराजमें प्रेम और स्नेह अत्यन्त रखतेथे इसहेतु नाम सूरदास मदनमोहन उनका बिख्यातहुआ बाहर भीतरकी आंखें कमल के सदृश प्रफुल्लितथीं और गानबिद्या व काब्यकी रचनामें बहुतअभ्यास रखतेथे प्रिया प्रीतमके जो गोप्य चरित्र हैं उनके परमानन्द और सुख और रसके अधिकारीहुये और नव रसों में जो शृङ्गार रस मुख्य और पहिलेहै उसको अपनी कविताईमें अच्छा बर्णनकिया कविताई उनकी तुरन्त मुखसे निकलतेके साथ बिख्यात होजातीथी एक दिनमें चारसौ कोस तक पहुंच जातीथी मानो वह काब्यही पङ्ख उड़ने की बांधलेती थी पूर्व्बके ज़िलोंमें बादशाहकी ओरसे सन्दीलेके सूबेदारथे बाज़ारमें खांड़ स्याह दिब्यदेखी बिचारमें आया कि मदनमोहन महाराजके भोगपूजा के योग्यहै खरीद करनेके निमित्त आज्ञादी सेवकोंनेकहा कि इसकेदाम से बीसगुणा खरच किराये का पड़ेगा और वृन्दाबन तक मिश्री से भी अधिक महँगी पहुंचैगी सूरदास जी ने कहा कि खरचका कौन बर्णन है भगवत् प्रीति पर दृष्टि चाहिये सब गाड़ियों में भरवाकर भेजा संयोग बश वृन्दाबन में रातके समय पहुंची मंदिरके पुजारियों ने भण्डारे में रखवालिया कि प्रभात को भोग लगावेंगे भगवत् कि अपने भक्त के

भेजे सौगात का बाट जोहिरहेथे भूखके कारण भोरतक धैर्य्य न धर-सके गोसाईंजी को स्वप्नमें आज्ञादी कि इसीघड़ी मालपूआ बनैं सोबना और भोगलगा तब संतुष्टहोकर शयनकिया धन्य है यहभक्त वत्सलता कि जिसकीमाया कोटान कोट ब्रह्माण्ड को एक क्षण में ग्रास करलेती है सो ईश्वर भक्त के वशहोकर क्षुधा व संतुष्टता प्रकटकरता है सूरदास जी ने एकविष्णुपद के तुकमें वर्णनकिया कि भगवत् भक्तों के जूतीका रक्षक यहपदवी मुझको मिलै किसीसाधु ने परीक्षा के हेतु सूरदास जी से कहा कि हम मदनमोहन जी महाराज के दर्शनकर आवैं हमारे जूते की रखवारी करते रहो सूरदास जी ने बहुत प्रसन्न होकर साधु की जूती को अपने हाथमें उठालिया और कहने लगे कि आजतक तो इसकार्य्य में बातही की जमा खरच थी परन्तु आजमेरी वांछापूरी हुई कि यह सेवा मिली गोसाईं जी ने कईबार बुलाया नहीं गये बिनयकर भेजी कि साधु के चरण सेवा करैंपीछे दर्शन को पहुंचूंगा गोसाईं जी और साधु इसबिश्वासपर अत्यन्त प्रसन्नहुये संदीलेके सूबेसे तेरह लाख रुपैया तहसील होकर आया सब साधुसेवा में खरच करदिये और कुछ डर हिसाब व बादशाहका न किया जब बादशाह के सेवकलोग रुपैया लेने के निमित्त आये तो सन्दूक कंकरों से भरकर सब सन्दूकों में एक एकपुरजा लिखकर डालदिया उसमें यह लिखाथा (तेरहलाखसंदीले उपजेसबसाधुनमिलिगटकेसूरदासमदनमोहनआधीरातसटके) और हर एक संदूक पर अपनी मुहर करके आधीरात को भाग गये जब संदूक खोलीगई तो कंकर निकले बादशाहने पुरजों को पढ़कर कहा कि गटक अर्थात् खाना तो अच्छा हुआ परन्तु सटक अर्थात् भागजाना अच्छा न हुआ और साधुसेवा व उदारता को समझकर प्रसन्न हुये व एक फर-माना कसूरके माफ़होनेका और हाज़िर होने के निमित्त भेजा सूरदास जीने उज़ुर लिख भेजा कि अब आमिली और सूबेदारी से श्रीवृन्दावन की गलियों में झाड़ूदेना सहस्रगुन बड़ाई है टोडरमल दीवानने विनय किया कि जो इसीप्रकार लोगमाल वाजिब सरकारका खरच करके भाग जावेंगे तो सब इंतिज़ाम जातारहैगा उनके गिरिफ़्तारी का हुकुमजारी कराया और कैदखाने में भेजदिया सूरदास जी ने एक दोहा लिखकर

बादशाहके पास भेजदिया उसमें बादशाहकी श्लाघा और क़ैदका दुःख और अपनाहाल थोड़े में लिखाथा बादशाहने उसीघड़ी छोड़दिया छूटे तब वृन्दावनमें आकर श्रीब्रजकिशोर किशोरी के ध्यानमें मग्नरहे ॥

अग्रदासकी कथा ॥

स्वामी अग्रदासजी चेले कृष्णदास पय अहारी के तीसरी पीढ़ी में रामानन्द जी के परम भक्त हुये और उनकी सम्प्रदा माधुर्य्य उपासक बिख्यातहैं जो कथासे कोई चरित्र माधुर्य्य व शृङ्गारकी नहीं जानने में आतीहो इसहेतु इस निष्ठा में लिखी ऐसे भजनानन्दथे कि एक पल व एक क्षणभी बिना भजन व चिन्तवन नहीं बीतता था प्रभातसे उठकर भगवत् भक्तोंकी रीति जैसी होती है आचार व कृपा से श्रीसीतापति अवधबिहारीके सेवा व स्मरणमें रहते और अपने बचन अमृतकी वर्षा से सबको ऐसा आनन्ददेते कि जिसप्रकार घटाकी वृष्टि सबपर बराबर होतीहै सिद्ध ऐसे हुये कि नाभा ग्रन्थकार जन्म के अंधे तिसको नवीन नेत्रकरदिये और समुद्रसे डूबताहुआ जहाज़ बचाया कि यह दोनों बात ग्रन्थके आरम्भमेंलिखीगई जानकी महारानीके साक्षात् दर्शनहुये वैराग इतनाथा कि सब कार बार संसारी त्यागकर के गलता जी में जो कि आमेरके निकटहैं तहां भजनमें लवलीनहुये फुलवाड़ीको अपने स्वामी का बिहार स्थानसमझकर आप अपनेहाथों झाड़ूदेते व उज्ज्वल किया करते यद्यपि सैकरों बागवान व नाभा ऐसे २ चेले सब सेवामें थे परन्तु किसीको अपनीसेवामें साझीनहींकरते एकदिन झाड़ूदेकर पत्ते व कूड़े टोकरीमें लेकर बाहरडालनेको निकलेथे कि महाराजा मानसिंह आमेर के अधिपति दर्शनके निमित्तआये स्वामीजी भीड़देखकर फुलवारीमें न गये बाहर एकबटके वृक्षकेनीचे बैठरहे जबबिलम्बहुआ तो नाभाजीगये और दण्डवत् करके प्रेममें भरेहुये खड़ेहोरहे कुछकहि न सके राजा ने बहुत बेरतक बाटजोही फिर उठकर जहां स्वामीजी बैठैथे तहांगया दर्शन व दण्डवत्किया फिर बिदाहुआ स्वामीजीके भीतर न जानेका अभिप्राय यहथा कि इसवृक्षके नीचे छोटे बड़े सबको बराबर दर्शनहोंगे और भीतर बड़ेलोगोंको दर्शनहोंगे और छोटेलोगोंको दर्शन न होंगे और यह भी बिचारकिया कि भीतर बैठने से राजा बहुतबेरतक रहैगा वृक्षके नीचे

धूल इत्यादिमें बहुत बेरतक न रहैगा चलाजावैगा धनाढ्य लोगोंकासंग जितनाहीं थोड़ा हो तितनाहीं अच्छीबात है॥

स्वामी कील्हदासकी कथा॥

स्वामी कील्हजी चेले कृष्णदास पय अहारीके माधुर्य्य औरशृङ्गार उपासक परम भागवत् स्वामी अग्रदासजी के गुरुभाईहुये दिनरात श्री रघुनन्दन स्वामीके चरण कमलोंके ध्यानमें मग्नरहतेथे जिनकानिर्मल यश अबतक सारेसंसार में विख्यात है भगवत् भजन में शूरवीर और सांख्य योगके मुख्य तात्पर्यके जाननेवाले हुये भीष्म पितामहके सदृश मृत्यु अपनी इच्छाके आधीनकिये थे ऐसीसिद्धतापर प्रेम व नम्रता का यहवृत्तान्तथा कि सबको आप प्रणामकिया करते सुमेरदेव उनकेपिता गुजरातमें सूबाथे जबउनका परलोकहुआ तो विमानपर चढ़कर परम धामकोचले उसीघड़ी कील्हदासजी मथुरामें राजामानसिंहके पास बैठे थे विमानको देखकरउठे और दण्डवत् करकेकहा कि अच्छाहुआ अच्छा हुआ राजाने पूछा कि किससेबात कहतेथे कील्हदासजी ने पहिले छि-पाया जब राजा ने हठकिया तो जो वृत्तान्तथा सो कहदिया राजा ने हरकारा भेजकर दिनघड़ी सबसमझा ठीकउतरा तो दण्डवत्किया व विश्वास दृढ़किया एकबेर कील्हदासजी भगवत् पूजनकरतेथे और पि-टारीफूलोंकी रक्खीथी उसमें फूललेनेके निमित्तजो हाथडाला तो सांपने अंगुलीमें काटा कील्हजी ने जाना कि सांप तृप्तनहीं हुआ उसको कहा फिरकाट सो तीनबेर कटवाया तनकविष न भीना जब परमधाम जानेकी इच्छाकरी तो भगवत् भक्तोंका समाजकिया और दर्शन व सत्संग करने के पीछे दशवांद्वार अर्थात् ब्रह्माण्ड तोड़कर देह त्यागकिया कि योगी जनभी यह वृत्तान्त सुनकर चकितहुये व सब भक्तोंको विश्वासहुआ॥

गोपालभट्टकी कथा॥

गोपालभट्ट व्यंकटभट्टके पुत्र श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभुके चेले ब्राह्मण परम भागवत हुये माधुर्य और शृङ्गार उपासना में ऐसे पगेहुये थे कि वृन्दावनमें उस अमृत रसका स्वाद उन्हींको प्राप्तहुआ जिनके प्रभाव करके सहस्रोंको भगवत् की प्राप्तहुई भागवत धर्मके प्रवृत्त करनेवाले और भगवत् भक्तिके रूपहुये कि सिवाय गुणके किसीका अवगुण दृष्टि

में न आया धनसम्पति सब छोड़कर वृन्दावनमें वासकिया और सदा रसरास और परमशोभामें ब्रजकिशोर महाराजके मग्नरहते थे भगवत् भक्त भावना महाराज उनकी भक्ति और सेवाके वशमें ऐसे थे कि अत्यन्त प्रसन्न होकर शालग्रामी मूर्ति स्वरूप अपना प्रगटकिया अर्थात् सेवाके समय एकबेर उनको शालिग्रामजी में यह चिंतना हुई कि जिस प्रकार भगवत् का शृङ्गार ध्यानमें कियाजाता है व प्रगट उसी प्रकार हुआकरै तो अच्छाहै भगवत्ने अपने भक्तके मनोर्थ पूर्ण करने के लिये शालग्रामसे मूर्ति स्वरूप अपनी परमशोभायमान् को बैशाखशुदी पूर्णमासी को प्रगटकिया भट्टजीने मंदिर में विराजमान करके राधारमण नाम विख्यातकिया कि वृन्दाबन में प्रसिद्ध व विख्यात है और चिन्ह आधेभाग शालग्रामका चरणकेनीचे और आधेका कटिपर विराजमानहै इसकृपाके पश्चात् भट्टजी शृङ्गार व सेवा व राग भोग इत्यादि में लगे व सारेसंसारको हेतु सुगतिके हुये ॥

केशवभट्टकी कथा ॥

केशवभट्ट काश्मीरी ब्राह्मण ऐसे परम भक्तहुये कि लोगोंको दुःख व पापोंसे छुड़ाकर भगवत् सन्मुख करदिया महिमा भट्टजी की संसार में विख्यातहै कि भक्तिके कुल्हाड़ेसे दूसरे धर्म्मोंके वृक्षोंको काटकर भगवत् चरित्रोंको जगतमें विख्यातकिया भट्टजीको निम्बार्कसम्प्रदायवालों ने अपने गुरु परम्परा में लिखा है वे उनकी कथासे उपदेश होना श्री कृष्णचैतन्य महाप्रभूसे कि माध्वसम्प्रदायमेंथे प्रगटहै ऐसीजनाई पड़ती है कि उनको उपदेश भगवत् भक्तिका श्रीकृष्णचैतन्यसे हुआ और उस समयमहा प्रभूकी सातबर्षकी अवस्था थी इसकारणसे उनकेचेले न हुये निम्बार्क संप्रदायवालोंके सेवकहुये जिसप्रकार भगवत् भक्ति प्राप्तहुई तिसका वृत्तांत यहहै कि यह भट्टजी बड़ेपंडितथे हजारों पंडितोंको शास्त्रार्थ में निरुत्तर करदिया जब दिग्विजय करते हुये सैकड़ों पंडित व शिष्यों के सहित नदियाशांतिपुर में पहुंचे तो वहांके पण्डितलोग भय को प्राप्तहुये महाप्रभू जीने बिचारकिया कि इसपंडितको अपनी पंडिताई का बड़ागर्बहै सो गर्ब दूरकरना चाहिये इसहेतु भट्टजी के पासआये व मधुर बचनसे बोले कि आपकी बिद्या और यश सारे संसारमें विख्यात

है कुछमुझको भी सुनाकर कृतार्थकरो भट्टजी ने उत्तरदिया कि अबहीं लड़केहो और विद्याभी प्राप्तनहीं हुई ऐसे वचन निर्भय बोलना ढिठाईहै परंतु हम तुम्हारे मधुर वचनसे बहुत प्रसन्न हुये जो कुछकहो सो सुनावें महाप्रभू जीने कहा कि गंगाजीका स्वरूप वर्णनकरो भट्टजीने कईश्लोक अपने बनाये पढ़े महाप्रभू जीने तुरंत उपस्थित करलिया वरु पढ़के सुनायदिया और कहा कि अर्थ व गुण दोष जो उनमेंहैं वर्णनकरो भट्टजी ने कहा कि मेरे काव्यमें दोषकब होसक्ताहै महाप्रभू जीने कहा कि यह नहीं होसक्ता जो आज्ञाकरो तो मैं गुण दोष व अर्थ वर्णनकरूं सो कहना आरम्भकिया और ऐसे ऐसे अर्थकिये कि बनानेके समय भट्टजी को भी न सूझेथे और जो जो दोष व गुणथे सोभी ऐसे विस्तारसे प्रगटकिये कि भट्टजी को उत्तर न आया महाप्रभूजी तो अपने स्थानको चलेआये और भट्टजी लज्जित होकर रातको सरस्वतीका ध्यानकिया सरस्वती जी आईं भट्टजी ने विनयकिया कि सारे संसारसे विजय कराकर एक लड़केसे हरायदिया हमसे ऐसा कौन अपराध हुआथा सरस्वती जी ने उत्तरदिया कि महाप्रभूजी भगवत् अवतार और मेरे स्वामीहैं मेरी क्या सामर्थ्यहै कि उनके सन्मुख बोलसकूं और तुम्हारे भाग्य धन्यहैं कि उनके दर्शन हुये यह कहकर सरस्वती तो अंतर्द्धान हुईं और भट्टजी महाप्रभुजी की सेवामें आये हाथ जोड़कर विनयकिया व प्रार्थना किया कि कुछशिक्षाहोय महाप्रभुजी ने आज्ञाकिया कि भगवत् भक्ति अंगीकार करो और आगेको किसी पण्डितके साथ वादकरना उचितनहीं भट्टजी ने मानलिया उस वचन को धारणकिया और जो पण्डितलोग साथथे सबको विदाकरके भगवत् भक्तहोगये फिर कश्मीर अपने घरमेंगये और कुछदिन वहांरहे मथुराजी के वृत्तांत व समाचार पहुंचे कि मुसल्मानोंने विश्रांतघाटपर ऐसायंत्र लगादियाहै कि जोकोई उसपर जाताहै आपसे आप उसकी सुन्नत होजातीहै और मुसल्मान बलात्कार उसको अपने दीनमें मिला लेतेहैं भट्टजी यह समाचार सुनतेही कश्मीरसे चले और एक हज़ार अपने चेलों सहित मथुराजी में पहुंचे पहिले विश्रान्त घाटपर गये दुष्टोंने जैसे और लोगोंसे दुष्टता करतेथे उसीप्रकार भट्टजीसेभी कहा कि नग्न होकर हमको दिखाओ भट्टजी ने उन को अच्छी प्रकार

मारा और यंत्रको तोड़कर यमुनाजी में डालदिया मुसल्मान सब सूबा के पास फिरयादी हुये सो सब दुष्टता उन की सूबे की हिमायत से थी उसने अपनी फौज सहायके हेतु पठाई भट्टजी उसफ़ौजसे ऐसेलड़े कि बहुतेरोंको बधकिया और कितनोंको यमुनामें डालदिया और कुछभाग गये इसयुद्धका वृत्तान्त एककविने विस्तारकरके लिखाहै उससे जानने में आया कि भट्टजीने चक्रसुदर्शनकी आराधनकरके ऐसीअग्नि बरसाई कि सबदुष्ट अशरणाहोगये और काजी व सूबा आदि सबआपके चरणों मेंपड़े पीछेउसके यह चरित्रकिया कि सबमुसल्मानोंके शरीरपर चिन्ह हिन्दुओंके जनाई पड़नेलगे वहलोग यहप्रभाव देखकर अधिक आधीन हुये और सबने हाथ बांधके सेवकाई करनी अङ्गीकार करके रक्षाचाही त्राहि त्राहि पुकारा भट्टजीने ब्रजके सब हिन्दुओं का बटोर किया और बहुत जगह आप गये व सब को मुसल्मानों से निर्भय करदिया और भगवत् भक्ति की प्रवृत्ति करी॥

बनवारीजीकी कथा॥

बनवारीजी भगवत् भक्तिके रङ्गमेंरङ्गीन और माधुर्य्य व शृङ्गाररस के रसिक और भजनके मूर्त्तिहुये अच्छेबचन के बोलने व काव्यके समझने व व्यंग व व्याजोक्तमें बड़े बुद्धिमान व प्रवीण व सार व असारके बिचारमें परमहंसोंसे भी अधिकहुये सदाचारके करनेवाले व संतोषी व सबपर दयाकरनेवाले अनेकन बिद्याकेज्ञाता पण्डित इसप्रकार भक्ति के साधन में सावधान हुये उनके दर्शनाहीं से लोग पवित्र होतेथे और जो किसी से बातचीत हुई तो उस के पवित्र और भक्त होजाने में कुछ संदेहहीनथा व ब्रजभूषण महाराज सुखधामके चरित्रके अलापमें अत्यंत चतुरथे॥

यशवन्तजीकी कथा॥

यशवन्त जातिकेराजपूत राठौर भगवत्भक्तिमें समाधान और भक्ति के सब धर्म्मोंके आचरण करनेवालेहुये भगवत्भक्तोंसे ऐसी सच्चीप्रीति थी कि क्लेश निकट नहींआताथा सबहाथ बांधे उदारमनसे उनकीसेवा में एकपांवसे खड़े रहतेथे और अनुक्षण यह चाहना करते थे कि किसी सेवाकेनिमित्त आज्ञाहो श्रीवृन्दावनमें दृढ़बासकरके श्रीराधाबल्लभलाल के चरित्र और बिहार लीला में मनको लगाकर दिन रात भगवत् के

शृङ्गार और माधुर्य्यके चिन्तवनमें रहतेथे सब धर्म्मोंकासार जोनवधा भक्ति है उसके धनी और सत्यके बोलनेवाले हुये और भगवत् प्रेममें ऐसेहुये कि विशेष करके बेसुधि व डूबजातेथे॥

कल्यानदास की कथा॥

भगवत्‌की भक्ति और भलाई और सबगुणोंकी सूक्ष्मसमझ संसार में कल्यानदासजी के बखरे में आई नवलकिशोर ब्रजचन्द्र महाराज के प्रेममें मग्न रहतेथे व जिस प्रकार नदीका प्रवाह दिन रात प्रवर्त्तमान रहताहै इसीप्रकार अनन्य जो दृढ़मनकी वृत्ति अनुक्षण माधुर्य्य व शृङ्गारके चिन्तवनमें रहती थी बाणी ऐसी मधुर थी कि सुन्नेवाले का मन बरबश मोहित होकर आधीन होजाय परोपकारी दयावान व बिवेकी हुये और नाभाजीने जो यह वचन लिखा है कि मन क्रम वचन से रूप भक्तके चरण रजके उपासकथे इसका अर्थ यह मालूम होताहै कि रूप जो भक्तहैं सनातनके भाई तिन के चरणरजके उपासक अर्थात् उनके चेलेथे अथवा रूप भक्त अर्थात् माधुर्य्य उपासक जो भक्त तिनकेउपासकथे अथवा रूप अर्थात् माधुर्य्य और भगवत्‌भक्त दोनोंके उपासकथे॥

कर्णहरिदेवविख्यातकन्हरदासकी कथा॥

कर्ण हरिदेव बिख्यात कन्हरदासजी रहनेवाले योड़ियांके भगवत् भक्त अपनेआत्मामें आनन्द करनेवाले और भविष्यके जाननेवाले श्रीकृष्ण भक्तिके आरोपण करनेवाले ब्राह्मण कुलमें सूर्य्यके सदृश सहिष्णु व दृढ़स्वभाव सब गुणोंकी खानि हुये भगवत् भक्तोंको अपना सर्व्वस्व जानकर प्रेमसे सेवा भक्ति करतेथे कपड़ा व जिनिस खानेपीने का जो कुछ जितना जिसको प्रयोजन होताथा निर्मलमन व विश्वास से देतेथे सोभूरामजी से उनको अनुभवहुआ शृङ्गार और माधुर्य्यके स्वरूप थे व सब जीवोंपर कृपादृष्टि बराबर रखतेथे॥

लोकनाथकी कथा॥

लोकनाथजीको भगवत्‌में प्रेम व स्नेहइतनाथा कि जितना पार्षदोंको है श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभुजीके चेलेथे और प्रियाप्रीतमके चिंतवन और चरित्रोंमें अनुक्षण ऐसे मग्न रहतेथे कि जो एक क्षणभी भगवत् स्वरूप का चिन्तवन न करते तो बिकल होजाते श्रीमद्भागवत् का गान और

कीर्त्तन प्राणसे अधिक प्याराथा व जो कोई भागवत् के राम चरित्र का भजन और कीर्त्तनकरता तो उसको अपनामित्र जानतेथे और उसही को नातेदार समझते एकबेर राहमें चलजाते थे एक मनुष्यको देखा कि भगवत् चरित्रोंका कीर्त्तन करताहै उसको रसिक और प्रेमी जानकर बेसुधि होकर उसके चरणोंमें पड़े और इसचरित्र से दूसरे मनुष्यों को शिक्षा भगवत् के प्रेम और भक्ति की करी ॥

मानदास की कथा ॥

मानदासजी परमभक्त परोपकारी दयावान सुशीलहुये श्रीरघुनंदन स्वामी के चरण कमलों में प्रेम और भक्ति अनन्य थी जानकी जीवन महाराजके जो चरित्र रामायण व हनुमन्नाटक और दूसरे रामायणों में गोप्य करके लिखेहैं उनको मानदासजीने भाषामें इससुघड़ाई व कबिताईसे बर्णनकिया कि सबको प्रिय और दोनोंलोकमें लाभ देनेवाले हैं यद्यपि नवरस कि जिनका वृत्तांत ग्रंथके आरम्भ में लिखागया अपने ग्रंथमें बिस्तार से बर्णन किया परन्तु भगवत् का शृङ्गार और माधुर्य्य रस ऐसालिखा कि जिसके पढ़ने सुन्नेसे निश्चय करके मनभगवत्स्वरूपमें लगजातहै और जो रीति शृंगारकी श्रीकृष्ण चरित्र में उपासकों ने बर्णन कियेहैं उसीप्रकार रामचरित्रमें मानदासजीने बर्णन किया ॥

कृष्णदासकी कथा ॥

कृष्णदासजी परमभक्त और पण्डितहुये श्रीगोबिन्दचन्द्र महाराज के रूप माधुरी और शृंगार में मग्न होकर उनके रसमें रात दिन मत्त रहतेथे भगवत् सेवा ऐसी प्रीति से करते कि सेवा के स्वरूप होजाते भगवत् भक्तोंको भांतिभांतिके भोजन और प्रसाददिया करते और जो कोई साधु उनकी संप्रदायका होता तो उसके साथ बड़ी प्रीतिसे मिला करते भगवत् चरित्रोंके कीर्त्तन और स्वरूपके चिंतवन और अनुभव में ऐसे आनंद और बेसुधि रहाकरतेथे कि बर्णन उसकानहीं होसक्ता ॥

———※———

निष्ठा चौबीसवीं ॥

प्रेमके वर्णनमें व जिसमें सोलह भक्तोंकी कथा वर्णन है ॥

श्रीकृष्ण स्वामीके चरण कमलोंके साधु हृदरेखाको दण्डवत करके

रामावतार को दण्डवत करताहूं कि जगत् के उद्धार के हेतु अयोध्यापुरी में धारण करके रावण इत्यादि राक्षसों को वधकिया और धर्मकी मर्य्याद को दृढ़ आरोपण करके पवित्रचरित्र जगत् में फैलाये यहप्रेम निष्ठाभगवत् रूपहै और जितनी निष्ठा इसके पूर्व वर्णन होचुकी उन सबका सार व परिणाम यह निष्ठाहै इसके आगे कोई और पदवीनहीं कि उसको साधन करनापड़े जीवनमुक्ति जो विख्यातहैं सो इसी प्रेमके दृढ़होने को कहते हैं और कोई कोई जो कैवल्य मुक्ति कहते हैं वह भी इसी प्रेम और उस के दृढ़ होनेको कहते हैं अब कुछ अर्थ व विवरण उस प्रेमका लिखा जाता है साण्डिल्य ऋषेश्वर ने पहिले भूमिका में अपने सूत्रोंके यह सूत्र लिखा है॥

अथातो भक्तिजिज्ञासः॥

अर्थ सूक्ष्म करके इससूत्र के तिलककार के तिलक अनुसार यह है कि भगवत्भक्ति चारोंपदार्थ अर्थात् अर्थ धर्म काम मोक्ष की देने वाली है इसहेतु उस भक्तिको जानना चाहिये सूत्र दूसरा॥

सापरानुरक्तिरीश्वरे॥

अर्थ इसका यहहै कि परम अनुरक्त ईश्वरमेंहोना उसकानाम भक्ति है और अनुरक्त अथवा राग कै प्रीति कै प्रेम कै इश्क अथवा रति अथवा मोह धृत अथवा उलफत अथवा स्नेह सब के एकही अर्थ हैं और जबकि भक्तिको अनुरक्ति लिखा तो भक्तिका अर्थ भी दृढ़प्रीति निश्चय भूतहोगया और इसप्रकारसे प्रेम और भक्ति एकहीबातहुई सो नारद पञ्चरात्रमें लिखाहै कि अनन्य ममता भगवत्मेंहै उसको प्रेम कहते हैं और उसीका नाम भक्तिहै अब दोशङ्का उत्पन्नहुई एक यह कि जो प्रेम व भक्ति एकबातहैं तो भक्तिका वृत्तान्त ग्रन्थ के आरम्भ में लिखागया यहां अब फिर किसहेतु वर्णन होताहै दूसरा यहकि जो सब निष्ठाओं का परिणाम पदवी प्रेमनिष्ठाहै तो जो दूसरीनिष्ठा और उनकीश्लाघा पहिले लिखआये सो किसहेतु लिखे केवल यह प्रेमनिष्ठाही बहुतथी सो पहिली शङ्काका उत्तर यहहै कि ग्रन्थारम्भमें जो दशा भक्तिकी लिखी गई वहमहिमा भक्तिकी और स्वरूप उसका और भक्तिकाप्रकार लिखा गया और इसनिष्ठामें वहवृत्तान्त लिखाजाताहै कि उस भक्ति के प्राप्त

होने पीछे जो दशा उसभक्तकी होतीहै दूसरी शंका का उत्तर यहहै कि जो महिमा बड़ाई दूसरी निष्ठाओंकी लिखीगई सो सब सत्य व योग्य है परन्तु यहप्रेमनिष्ठा जो बिचारीगई तो यहसब निष्ठाओं की परिणाम दशा है जो वह सब निष्ठा बिचारी न जाती तो इस परिणाम दशा की निष्ठाके लिखनेका संयोग काहेका पहुंचता सिवाय इसके यद्यपि निष्ठा बहुतहै परन्तु परिणामदशा सबकी एकहीभांतिहै जैसे दाननिष्ठावाला अपनी उपासनापर दृढ़होकर उस पदवी को पहुंच गया है कि कबहीं गावताहै कबहीं नाचताहै कबहीं हँसताहै कबहीं रोताहै और कुछ सुधि अपने व बिरानेकी नहींरखता जब सखा अथवा वात्सल्य व श्रवन व पूजा इत्यादि निष्ठावाला परिणाम पदवीको पहुंचैगा तो उसकी भी ऐसीही दशा होगी इसहेतु सब निष्ठाओंकी परिणामदशा एकहुई और उस परिणाम दशाका वर्णन जो सब निष्ठाओंमें लिखाजाता तो ग्रन्थके बहुत बिस्तार होनेकी बात अलगरहै एक प्रकारकी दशा वृत्तान्त सब निष्ठाओंमें लिखना पड़ता इस हेतु यह प्रेम निष्ठा लिखी गई सिवाय इसके सबवस्तुका प्रारम्भ व परिणाम नियतहै जो प्रेमनिष्ठा न लिखी जाती तो अन्तकी पदवी जानी नहींजाती और जानेरहो कि मुक्ति इस निष्ठा व सब बस्तुओंका फलहै व सब निष्ठाओंकी अन्तिम पदवी प्रेम है और यहभी जानेरहो कि यद्यपि परा भक्ति और प्रेम एकही बातहै परन्तु सबशास्त्रोंमें उसदिशा नियतको भी प्रेमहीनामधरके लिखाहै कि जो प्रेमकी बिकलता भक्तपर बीतती है प्रेम दो प्रकार से उत्पन्न होता है एकईश्वरकी कृपासे कि भगवत् ने एकादशमें कहाहै कि हेऊधो गोपी न गुरूसे पढ़ीं न तपकिया न यज्ञ इत्यादि कुछकिया केवल मेरीहीं कृपा से मुझको पहुंचगईं अथवा मीराबाई व करमैतीकी भांति कि आपसेआप प्रेम भगवत् कृपासेहुआ दूसरा भावसेहोताहै अर्थात् भगवत्का सच्चिदानन्द स्वरूप उसके गुणसुनकर प्रेम उत्पन्नहो और उसप्रेमसे द्रवीभूतहोकर तदाकार व बेसुधि होजाय जैसे विष्णुपुराण का बचन है कि भगवत् अन्तर्यामीके गुण सुननेसे चित्तकीवृत्ति भगवत्की ओर लगाने के योग्यहै और वहऐसीहो कि जिसप्रकार गङ्गाका प्रवाह दिनरात प्रवर्त्तमान रहता है वहभाव दोप्रकारका है एक तो भगवत्भक्तों के प्रताप

से होताहै जिसका नारदजीने प्रह्लाद व दक्षप्रजापति के पुत्रोंको व दत्तात्रेय ने राजा सुबाहुको व भरतने रघुगणको उपदेशकिया व तुरन्त भगवत् स्वरूप साक्षात्कार होगया और अबभी विख्यात है कि कोई ऐसा सिद्ध भगवत्दास किसीको मिलगया कि एकघड़ीमें भगवत्पद को दरशायदिया दूसरा साधनसे प्रकटहोताहै जैसे नारदजीने भगवत् चरित्रों को सुना उसपर आचरण व साधन किया भगवत्भक्त और प्रेमीहोगये इसभावके चारभेद तंत्रशास्त्रमेंलिखे हैं एकवह जोसदा चित्तकीवृत्ति भगवत् में लगीरहै उसमें भी दोभेदहैं एकवह कि जिसको कबहीं संसार के विषय स्वादकी चाहना नहींहोती जैसे प्रह्लाद व सनकादिक इत्यादि दूसरे वह कि जिनको संसार के सुखोंकी चाह होजाती है जैसे अर्जुन इत्यादि दूसरे वह कि प्रेमकेसमय समाधिकी दशाहोती है जैसे शुकदेव इत्यादि तीसरे वह कि बड़ेखेंचसे मनको लगातेहैं तब प्रेमकीदशा उत्पन्नहोती है जैसे अक्रूरआदि चौथे वह कि मनमें शोच व पश्चात्ताप करते हैं कि हमारामन गोपिकाओं की भांति भगवत् के प्रेमसे पूर्णहुआ जैसे उद्धव व युधिष्ठिर इत्यादि अब प्रेमकीदशा के प्रकारोंके लिखनेके पहिले इसबातकानिर्णय करना हुआ कि प्रेमकी दो दशाहैं एक संयोग दूसरी वियोग सो भगवत् प्रेममें भी वियोग की दशा होती है कि नहीं व जो होतीहै तो उसका क्या वृत्तान्तहै सो जानेरहो कि निश्चय वियोगकी दशा होतीहै परन्तु विषयी लोगोंके मन सुखी प्रेमकी भांति व संसारी विषय भोगके सम्बन्धियों के सदृश दुख की देनेवाली नहीं होती वरु भगवत्केप्रेम और चिन्तवनकी बढ़ानेवाली होतीहै जिसप्रकार गोपिकाओंकी व्रजचन्द्र महाराजके मथुरा गमनके समय विरह हुआ परन्तु वहऐसेप्रेमका भभकानेवालाहुआ कि वेसुधहोकर भगवत्के नित्यविहारमेंजा मिलीं इसमें जोयह कोईकहै कि यहवृत्तान्त तो उनभक्तों के विरहकाहै कि साक्षात् रामकृष्णके रहनेकेसमय जिनकोविरह हुआ परन्तुजिनलोगोंको कि ध्यानसे और रूप व गुणकेश्रवणसे भगवत्काप्रेम उत्पन्नहुआ अथवा होताहै उनको भी विरह होताहै कि नहीं सो जाने रहो उनको भी विरह होता है और उस के कई स्वरूप हैं एक यहकि भगवत् के ध्यान व चिन्तवन के समय किसी समय गोपिकाओं अथवा

दशरथ महाराज व कौशल्या महारानी अथवा नन्दजी व यशोदामहारानी अथवा दूसरेभक्तोंके बियोगकी चिन्तवन आयगई कै उनकेबियोग की कथासुनी तो जो दशाउनपर बियोगके समय बीतीथी वही इस भक्त पर बीतती है तनक भेदनहीं रहता सो कथामें किसी बियोगके चरित्र के सुननेके समय बिशेषकरके परीक्षा सबको होतीहै व जिससमय ध्यान की पक्कता होने लगतीहै उस समय अति चिंतवन व प्रेमकी झझकसे ध्येयरूपकी शोभाका जो बिरह होताहै सो दशाभी ज्योंकीत्यों प्रियबल्लभ के बियोगकी दशाकी भांति होतीहै और जब भगवत्का ध्यान व चिंतवन अनुक्षण रहनेलगा तो भगवत्के साक्षात् दर्शन होतेहैं अथवा ध्यान का रूप व शोभा साक्षात् रूपके सदृश इस भक्तको होजाता है तबसब समय व प्रतिदिन दशा संयोग व बियोगकी बीताकरतीहैं अर्थात् प्रारंभ दशासे अंतिम दशातक संयोग व बियोग दोनों होतेहैं अबयह लिखना उचितहुआ कि कोई २ लोगोंने बियोगकी पदवीको संयोगकी पदवीसे श्रेष्ठलिखा और बास्तव करके जो कुछस्वाद बियोग में है सो संयोगमें इतना नहीं इन दोनोंमें बड़ाई जिसकोहै सोजानेरहो किजो बाद बिवाद से लिखीजाय और बड़ाईका निश्चय एक का दूसरेपर कराजावै तो सैकड़ों पोथियों में लिखनेसे समवाई न होसके क्योंकि अंतको झगड़ा व बाद बिवाद वेदश्रुति और न्याय व पातञ्जलि व कर्मशास्त्र व वेदांत तक पहुंच जातीहैं और सिद्धान्त नहींहोता सो इसहेतु उस बिस्तारसे बचायके जो सारांश सब बातोंका पायागया वह लिखाजाताहै कि प्रेम में बियोग और संयोग दोनों अन्योन्य सम्बन्ध रखते हैं क्योंकि जो सदा बियोग बनारहै और आशासंयोग ध्यानमें संयोगकी अथवा प्रकट संयोगकी न होवै तो प्रेम कबहीं न उत्पन्नहोय और इसी प्रकार सदा संयोगहीकी दशा बनीरहै और बियोग अथवा बियोगका भय व शोच न होय तबभी प्रेम कदापि न होय सो प्रेमनाम उसीकाहै कि बियोग के पीछे संयोग और संयोगके पीछे बियोग होताहै इसहेतु संयोग और बियोग दोनोंका सम्बंधहै परंतु बियोगमें स्वाद बिशेषतर है और प्रेम की पक्कता बियोगसे होतीहै और मुख्य अभिप्राय जो नित्य संयोग अर्थात् मुक्तिहै सोभी बियोगके भावसे शीघ्रप्राप्त होतीहै इसहेतु कोई कोई

लोगों ने वियोग की बड़ाई लिखीहै और जो मुख्य अभिप्रायपर दृष्टि करीजाय तो सबशास्त्र और सबसाधन और भक्तिज्ञान वैराग्य इत्यादि केवल संयोग के निमित्त हैं अब प्रेम की दशा व प्रकाश लिखाजाता है सबदशा का जो दृष्टान्त व उपमा लिखीजायँगी तो उनके पढ़नेसे यह नहो कि वे दशा अगिले समय में बीतती होंगी वरु वे सब दशा सब भक्तोंपर सदा अब बीततीहैं और भक्तको जिस समय जैसी चिन्तवन होतीहै वैसेही समाज का तदाकार व तद्रूप होजाताहै वे दशा बारहहैं और कोईकोई ने उसमेंसे सूक्ष्मता निकालकर तीनदशा और अधिककी कि सब पन्द्रह होगईं सो सबका उदाहरण कियाजाताहै पहिली दशा का नामउस जब महबूब अर्थात् प्रियवल्लभ की सुन्दरता और गुणोंको सुना और अत्यन्तचाह उसके मिलनेकीहुई और फिर वह किसीभांति दिखाई पड़ा तो सिवाय उसप्यारे के और किसी प्यारीबस्तु की और किसीकी देखीसुनी सुन्दरताई की आंखोंमें न समानी और यह आशा और चाहहोनी कि यहप्यारा मेरेआंखोंसे क्षणभर भी अलगनहो उस समयमें जो दशा सच्चेआशिक अर्थात् भक्तपर बीततीहै उसकानामउस है जैसे कि जानकी महारानी की जब रघुनन्दन स्वामी जनकपुर में पहुंचे अथवा रुक्मिणीजी की भांति अथवा गोपिकाओं की सदृश कै अक्रूरजी के सुतीक्ष्णकी॥

दूसरीयत॥

कोई मिसकरके दूतसे अपने प्यारेके समाचार पूंछने और उसपूंछने के समय विकल व विरही आशिकपर जो दशा बीततीहै अथवा महबूब प्यारेका वृत्तान्त सुनकर जो दशा और हर्षहोतीहै अथवा प्यारा आयाहै और जान पहिचान नहींहै इस कारणसे मिलना व बोलना बतरावना नहीं हुआ और उसीकी चर्चाहोना कि यह कौनहै और कहांसे आयाहै उससमय जो दशा होतीहै अथवा महबूबकी ओरसे कोई संदेशा लेकर आयाहै उसके साथ बातचीत करने के समय जो गति होतीहै इन सब दशाओं में से कोई एक दशाहो उसका नाम यतहै और मालूमरहै कि इसके दशप्रकारहैं जल्प व प्रजल्प इत्यादि और सबमें नई नई बातें हैं ग्रन्थके विस्तारके भयसे नहीं लिखीं दृष्टांत इस यत दशाका यहहै कि

जिस समय उद्धवजी श्रीब्रजकिशोर महाराज का संदेशा लेकर ब्रजमें आये उस समय जो बोलना बतराना हुआ अथवा भँवर के मिस करके गोपियोंने ब्रजचन्द्र महाराजकी निठुरता व कृतघ्नता इत्यादि को बर्णन किया कि भँवरगीत में बिस्तार सहित लिखा है अथवा जिस समय रघुनन्दन महाराज जनकपुरमें पहुंचे वहां स्त्रियां देखकर आपुसमें कहती सुनती भईं ॥

तीसरी ललित ॥

ललित का स्वरूप यहहै कि महबूब अर्थात् प्यारेके देखनेकी उमंग व उसके तरंगसे गुरुजन लोगोंकी शिक्षा व ताड़न व तर्ज्जनको मनमें न ले आना व बारबार देखनेके निमित्त चाह होनी और लज्जाको छोड़ कर देखने के हेतु पीछे होलेना और जब नयननभरि देखलिया तब गुरुजनों से व अपने साथ स्नेह करनेवालों से लज्जाहोनी जिसप्रकार गोपिका कि जब ब्रजमोहन महाराज बन से आते थे तो ब्रजगोपिका लज्जासंकोच को छोड़कर बिनाभय सास ससुर इत्यादि के देखनेको जाती थीं और स्वयम्बर के समय धनुष तोड़ने के पहिले से जो दशा जानकी महारानी पर बीती ॥

चौथा दलित ॥

दलित का रूप यहहै कि महबूब प्यारा किसी कारणसे आंखोंके साम्हने नहीं उसके बियोग में रंगका बदलजाना अर्थात् बे बर्णहोना और नींद न पड़नी व आहार घटिजाना व दुर्बलता व बिकलता होजानी और किसी बस्तुका न सुहाना और रोतेरोते बेसुध होजाना और महबूब प्यारे का मनमें ध्यानकरके तन्मय होजाना और उससमय मन नवनीत के सदृश कोमल होकर जोकुछ दशा बीतती है उसको दलित कहते हैं जिसप्रकार गोपिकाओंसे रासके आरम्भमें ब्रजकिशोर महाराज अंतर्द्धान होगये और उस समय भांति २ का विलाप गोपिकाओं ने कियो और जब ढूंढ़कर हारिगईं मनमोहन न मिले तो चरित्रोंका गान करके तन्मय होगईं कै श्री जानकीमहारानीके लंकामें जाने व अशोकबाटिका में रहनेकेसमय जो दशा बीती ॥

पांचवीं मिलित ॥

मिलितका स्वरूप यहहै कि बहुत कालसे जो महबूब प्रियबल्लभ से

वियोगथा और विश्लेषताकी व्यथाके कष्टसे मन विकल व बेचैन होकर भांति २ के मनोरथ व चाह किया करता था वह प्यारा प्राणबल्लभ बहुत कालपीछे मिला उससमय जो मनकी दशा होती है उसका नाम मिलित है जिसप्रकार श्री ब्रजचन्द्र नटनागर महाराज रास लीलामें अंतर्द्धान होगये थे और फिर अचानक गोपिकाओं से आनिमिले कै रघुनन्दन महाराज लङ्का जीतकर अयोध्यामें आये और भरत इत्यादि वियोगियों को नवीन जीवन हुआ ॥

छठवीं कलित ॥

कलितका रूप यहहै कि जिस समय मनसंयोगके आनन्दसे द्रवीभूत होकर प्यारे महबूबके प्रेममें डूबजाताहै उस दशाको कलित कहते हैं वह दो प्रकारकी है एक यह कि प्रियबल्लभसे साक्षात् अर्थात् प्रकट मिलकर उसके देखने अथवा वार्त्तालाप व लाड़ व प्यार व भाव अथवा श्लेषनसे जो आनन्द हो दूसरा यह कि ध्यान व चिन्तवन में मिलकर जो चाहना थी सो उस चिन्तवन में ज्यों की त्यों प्राप्तहो और उससे आनंदहो वह दोनोंप्रकार का संभोग परम आनंदका देनेवालाहै जिसप्रकार किसी गोपीको श्रीब्रजचंद्र महाराज ने बनमें अकेली पाकरअपने प्रेम व कटाक्ष भरे वचन और परस्पर प्यार व दुलारसे व जो वस्तु का लेना देना दुर्लभ होवे ऐसी परस्पर आपुस के मांगने से और हँसी व छेड़छाड़ और खींचाखींची इत्यादि से परम आनंद के अंतको पहुंचाया और उस रसमें बेसुधि किया अथवा रासलीलाके समय ऐसा वृत्तांत विस्तार से पंचाध्यायी में लिखा है ॥

सातवीं छिलित ॥

छिलित यह कि प्यारे प्राणबल्लभ पर परम अत्यंत स्नेहके कारणसे क्रोध आजाना और प्यारेके दोष वर्णन करना और बहुत प्रेमके क्रोधसे ओठोंका फड़कना व शरीर कांपना और दूसरी दशा सब क्रोधको तिस से अपने प्यारे महबूब का तदाकार होजाना उसको छिलित कहते हैं जिसभांति गोपिका भँवरगीतमें अति क्रोधसे कहती हैं कि हे भँवर तू उसी कृष्ण की श्लाघा करता है कि जिसने राम अवतार में बालीको व्याधाकी भांति होकर मारा कि जिसका मांस व चर्म कुछ प्रयोजनका न

था और प्रेमसे जो रावणकी बहिन आई उसके रूपको बिगाड़ करके न आप रक्खा व न और के योग्य रहने दिया बामन अवतारमें राजाबलि के यज्ञको नष्ट करदिया अथवा जिसप्रकार लक्ष्मण जी को बनवास होनेके समय रघुनंदन स्वामीपर क्रोधआया और कहा कि आप क्या ब्राह्मणों कीसीबात कहते हैं कि बनमें जाकर ऋषीश्वरों के दर्शन और तपकरेंगे मैं आपका किंकरहूं आज्ञा होवे कि शत्रुनको यमलोक में पठाय देवें और इसीप्रकार चित्रकूटपर जबभरतजी गये तब क्रोधआया ॥

आठवीं चलित ॥

चलितयह कि देह त्यागके समय अपने प्रिय बल्लभका चिंतवन कर के प्रेमके कष्टकीदशा में यह मांगना कि दूसरेजन्म में भी मुझको उसका प्रेम होवै और वही मिलै इसकानाम चलितहै जिसप्रकारसती जीने दक्ष प्रजापति के यज्ञ में देह त्याग के समय चाहना किया व मांगा अथवा बाली कै राजादशरथ अथवा सरभंग इत्यादिने ॥

नवींक्रांत ॥

क्रांतयह कि प्यारे महबूबके चिंतवनसे जो स्वरूपमनमें प्रकटहुआ मनके चाहके अनुकूल शृंगार इत्यादि करना और हँसना खेलना बोलना बैठना और अपने मनकी चाहव कामना पूरीकरनी और सिवाय अपने प्यारे के और किसीका वृत्तांत सुनना न और को देखना न और किसीसे बोलना ऐसीजो दशा हैं उसको क्रांत कहतेहैं जिसप्रकार कोई गोपी भगवत्के चिंतवनसे बाहिरकी सबबात भूल गई और चिन्तवन में जो परमआनन्द प्राप्तहुआ उसमें योगीजनों की भांति ज्यों की त्यों रहिगई और बियोगका जो दुःखथा तनक न रहा और बावरीसी कभी आंखें खोलतीहै और कभी बंदकर लेतीहै जानेरहो कि बिरही आशिक अर्थात् रूपाशक्तको जो माशूक अर्थात् प्राण वल्लभके चिन्तवन का सुख नहोवै तो शोकके कष्टसे जीता न रहै और जो अनुक्षण चिन्तवनमें मग्न रहै तबभी थोड़ेही दिन जिये ॥

विक्रांत ॥

बिक्रांत एक अंग नवीं दशाका है इसहेतु गणनामें लिखा नहींगया जिस समय आशिक अर्थात् रूपाशक्त भक्त भगवत् के प्रेमके प्राप्तहोने

से अपने भाग्यकी बड़ाई करताहै अथवा अपने इष्टदेव अर्थात् भगवत् की बड़ाई और उसके मिलनेका आनन्द और उस आनंदकी बड़ाई और उसके मिलने की दुस्तरता वर्णन करताहै अथवा अपने इष्टदेव से जो औरोंकी प्रीति है उनकी श्लाघा और गुणोंको कहता सुनता है अथवा अपने प्यारेके न मिलने व देखनेका शोच करताहै इन दशाओं में से एक दशा प्रकट हो अथवा कई उसका नाम विक्रांत है जिसप्रकार भरद्वाज और अत्रि और वाल्मीकि इत्यादि ऋषीश्वरों ने श्री रघुनन्दन स्वामी के देखने के समय अपने भाग्य को सराहा अथवा ब्रह्मा व शिव और दूसरे ऋषीश्वरों ने भगवत् की महिमा वर्णन करी अथवा ब्रह्माजी ने ब्रह्मस्तुति में बड़ाई ब्रज और गोपिकाओं की और दुर्लभता मिलने भगवत्के प्रेमकी वर्णन करी कि वे आंखैं गोपिकाओंकी धन्यहैं जो नंद-नन्दन शोभाधामको देखती हैं॥

संक्रांत॥

संक्रांत अंगक्रांत व विक्रांतका है वर्णन करनेका प्रयोजन नहीं॥

दशवां विह्वल॥

विह्वल दशाका रूप एक श्लोक के दृष्टांत के अनुसार है कोई गोपी कहतीहै कि देखोपहिले जन्ममेंहमको श्रीकृष्ण महाराजका प्रेम न हुआ इसकारण यह देहपाई और संसारके दुःख देखनेपड़े और कैवल्यमुक्ति में जो श्रीकृष्णके प्रेमकी अधिकाई नहीं तो वह मुक्तिनहीं मानों मृत्युहै अभिप्राय यहहै कि जो मृत्युके समय भगवत्का प्रेम होजाय तो मृत्यु हजार जीवनके सदृशहै और जिस मुक्तिमें भगवत्का प्रेमनहीं सो मुक्ति हजारमृत्युसे निकृष्टतरहै कोई गोपीने श्रीकृष्ण महाराजसे मानकरके मनावनेपर भी मान न छोड़ा जब श्रीकृष्ण महाराज चलेगये तब शोच करके वियोग की दशासे विकल हुई और अपने शरीर और मान को धिक्कार करके शोककी पीड़ा व विरहसे चिन्तवनमें बेसुधि होगई॥

संह्वत॥

संह्वत एक अङ्ग विह्वलका है उदाहरण का प्रयोजन नहीं है॥

ग्यारहवांगलित॥

यहकि प्यारेमहबूब अर्थात् प्राणवल्लभकी सुन्दरताइत्यादिकी चिन्त-

वन करके अथवा उसकी सुन्दरता देखकर गलई चांदी सोनेके सदृशमन का द्रवीभूत होजाना उसको गलित कहते हैं जिसप्रकार कोई गोपिका किसी सखीको देखकर कहतीहै कि देखो इसीगोपिकाने एकबेर श्रीव्रज-किशोर महाराजकी शोभा व सुन्दरता और बोलन चलन व भाव इत्यादि किसी से सुना है इसहेतु से इसकी यह दशा है कि योगियों की भांति मौन होगईहै न हिलतीहै न डोलतीहै कबहीं रोतीहै कबहीं रोमाञ्चित होतीहै कबहीं बकतीहै और कबहीं नाचतीहै और कबहीं गाती है और कहतीहै कि कबमैं उसप्यारेको देखूंगी जबकि नन्दनन्दनकी सुन्दरताके सुननेसे यहदशाहै तो न जानै मनमोहनके देखलेने पीछे कैसीदशाहोगी॥

बारहवीं संतप्त॥

संतप्त यहकि सच्चिदानन्दघन पूर्णब्रह्म परमात्मा छविसमुद्र शोभा-धाममें ऐसा जिसका मन लगा है कि जहां तहां उसको देखती हैं और उसरूप अनूपमें ऐसी बेसुध व मग्नहैं कि तनक भी दूसरीओर मनकी वृत्ति नहींजातीहै दर व दीवार में वहीप्यारा दिखाई पड़ताहै कि जिस के निमित्त अनेक जन्ममें अनेक प्रकारके योगऔर अभ्यास और शुभकर्म कियेथे इसदशाका नाम संतप्तहै और सबउपासना व निष्ठाओंका सार व मानों वहीदशाहै इसीकी बड़ाईमें भगवत्गीतामें यहलिखाहै कि जो बासुदेव रूप सबजगह देखताहै सो महात्माहै सो दुर्ल्लभहै इसीअवस्था व दशाके वर्णनमें सब वर्णन भगवत्गीता व भागवत्में लिखा है इसी पदवीको शांडिल्य सूत्रमें परानुरक्ति अर्थात् पराभक्तिके नामसे लिखा है कि वहसूत्र ऊपर लिखागया इस भूमिकापर दृढ़होने का नाम जीव-न्मुक्तहै व फलइसका मुक्त व परमपदहै और जानेरहो किजोदशा सब सात्विक व्यभिचारी अर्थात् समान तृतीय व चतुर्थ जो कि रस भेदके वर्णनमें ग्रन्थके आरम्भमें लिखीगईहैं सो भी प्रेमनिष्ठा की सम्बन्धीहैं सो ग्रन्थारम्भमें जोदशा रसभेदकी लिखीहै और इस प्रेमनिष्ठाकीदशा सब मिलानेपर जो किसी प्रेमासक्तकी कोई नईदशा सुनने के देखने में आवै तो उसको एकअंग उनदशाओंका समझलेना चाहिये अथवा हम से लिखते न बना नहींतो ऐसीबात कोईनहीं कि शास्त्रने जिसकामूल न लिखाहोय॥ हे श्रीकृष्णस्वामी हे दीनवत्सल हे पतितपावन महाराज

जिसभांति शेषीभाव आप पर परिणाम को प्राप्तहुआहै उसी प्रकार पतितपावन और अधमउद्धारण नामभी आप पर समाप्त हैं और जिस प्रकार शेष नाम पर शेषभाव का अंत हुआहै उसी प्रकार अधम और पतित होनेकी पदवी मेरेऊपर समाप्तहै परंतु ऐसीमेरीदुर्भाग्यता है कि शेषजीको तो अनुक्षण समीपता प्राप्तहै और मैं इस जगत्‌के जंजाल में ग्रसित रहूं और गुण यह कि मैंतो अपने काम चतुर व चौकस हूं अर्थात् कोई पाप व अपराध ऐसानहीं कि न किया हो व न कर्त्ताहूं और आपको कबहीं अपने नामका स्मरणभी नहींहोता सोकुछ चिंतानहीं अब हमने ग्रंथोंमें लिखना आरंभ करदियाहै कबहीं तो चित्तपर परचढ़ैगा यद्यपि इसभांति विनय करनी अनरीतिहै परंतु आपकी ढिलंगीने इसढंग से कहलाई कि लिखाई ढिठाई क्षमा कीजाय उसके ऊपर इतना और अधिक है कि आपका दृढ़वचन प्रबंधक इस जगहपर है कि जो शरण आताहै उसको अभय करदेताहूं सो बहुतकालबीता कि आपके द्वारपर पड़ाहूं यद्यपि ऐसापक्का व दृढ़नहीं कि वाद करके ठहरायदेव परंतुआप सबप्रकार जानते हैं कि आपके द्वारको छोड़ और किसीसे कुछ संबन्ध भी नहींरखता जब जो कुछ मेरे निमित्तहोगा आपसे होगाथोड़ेमें विनय यह है कि किसी प्रकार उस रूप अनूपके चिंतवन में दिन रातलगा रहूं जो सबरूप और शोभाका सार भूतहै मेरेनिमित्त वही सबकुछहै ॥

अंबरीषकी रानीकी कथा ॥

राजा अम्बरीषकी कथामें लिखीगई कि रानी का वर्णन प्रेमनिष्ठा में होगा सोउसी रानीकी बात लिखीजातीहै कि जब यहरानी ब्याही आई और राजासे उपदेश अलग सेवा पूजा करनेका पाया तो अत्यंत प्रेम व विश्वाससे भगवत् मूर्ति विराजमान करके सेवापूजा करनेलगी और इतनाप्रेम भगवत्‌में हुआ कि किसी समय सिवाय भगवत् भजन और आराधनके किसी काममें मन नहीं लगाती थी राजा को भी इस वृत्तांत का समाचार पहुंचा रानीके महलमें आया देखा कि रानी को भगवत्‌में इतना प्रेमहै कि साधन अवस्थासे जाय के सिद्ध अवस्थाके समीप प्रर्थात् तद्रूपताको पहुंचगई है इस दशाको कि जब कबहीं अति चाह व उमंगसेगातीहै और कबहीं नाचतीहै और कबहीं हँसतीहै और

कबहीं रोती है और कबहीं भगवत् ध्यानमें भीतिके चित्रके सदृश हो जातीहै राजा यह दशा देखकर अति प्रसन्न हुआ और अपने भाग्य की बड़ाई करताहुआ रानीके पास पहुंचा रानी तो भगवत् छबिके अनुभव में मग्न होकर शरीरकी सुधि व भान भूलगई थी पहिले कुछ बात न पूछी पीछे बहुत बेरबीते कुछ सुधिहुई तो राजाको देखकर बड़ी रीति मर्याद व आदर सन्मान करके हाथजोड़ खड़ीहुई इसहेतु कि एकतो पति दूसरेराजा तीसरेगुरू कि उसकेही उपदेशसे भगवत्सेवा मिली पीछे वार्त्तालाप सत्सङ्ग व भगवत् आराधनहुये पर राजाने भगवत् चरित्रों के कीर्त्तन करने की आज्ञा करी सो रानी ने भगवत् कीर्त्तन और नृत्य आरम्भकिया और ऐसीप्रेममें मग्न होगई कि अपने व बिरानेकी कुछ सुधि न रही राजाने इसकारणसे कि इस प्रेमरसके आनन्द व सुखका स्वाद कबहीं पाया नहींथा अपने भाग्यको धन्यमानिके नित्य व हरघड़ी उस रानीके सत्सङ्गमें रहनेलगा और रानीके प्रेमका फल यहहुआ कि सारानगर और देश राजाका भगवत्भक्त होगया वह वृत्तान्त विस्तार करके राजाकी कथामें लिखागया॥

सुतीक्ष्णकी कथा॥

सुतीक्ष्ण ऋषीश्वर अगस्त्यजीके चेले रामोपासक बड़े प्रेमी हुये जब रघुनन्दन महाराज दण्डक बनको पधारे और सुतीक्ष्णजी के आश्रमके समीपपहुंचे तो सुतीक्ष्णजी अपनेस्वामीके आगमनका समाचारसुनकर आगेलेनेकेहेतु चले परन्तु परमानन्द भगवत्के आगमनकी और दर्शन की उमङ्ग इतनीहुई कि सबसुधि अपने बिरानेकी भूलगई सिवाय उस रूप अनूप जो चिन्तवन में था और कुछ भीतर व बाहर दिखाई नहीं पड़ताथा और न यहकुछ भानरहा कि मैं कौनहूं और कहांहूं और किस ओरजाताहूंजबकबहीं सुधिहोती तोयहमनमें होतीथी कि आजकौनऐसी शुभघड़ी और क्या मङ्गलदिनहै कि जोशिव व ब्रह्मादिकोंको भी दुर्ल्लभहै तिसस्वामीका दर्शन करूंगा और कबहीं इसबातपर प्रसन्न होतेथे कि मेरेबराबर और कौन बड़भागीहै किजिसको आज पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्दघन के दर्शनहोंगे बस ऐसे चिन्तवन और आनन्द में एक डग भी न चलागया और बेबश होकर राह में बैठगये इसभांति उस ध्यान के

स्वरूपमें लीन व लय होगये कि जब रघुनन्दन स्वामी जानकी महारानी और लक्ष्मणजीके सहित आये तो कुछ जनाई न पड़ी और जब पुकारा तो कुछ न सुना तबतो रघुनन्दन स्वामीने अपनारूप जो ध्यान में देखतेथे तिसको अन्तर्द्धान करलिया और चतुर्भुजरूप उनके मनमें प्रकटकिया जबसुतीक्ष्णने वह मनोहररूप अपने स्वामीका न देखा तो विकलहोकर आंखें खोलदीं और अपने मनभावन को सम्मुख देखकर और अतिप्रेमसे बेसुध होकर चरण पकड़लिये न छोड़े भगवत्ने बलसे उठाकर अपनी छातीसे लगाया और आश्रममें जाकर टिके ऋषीश्वर ने रीति अनुसार पूजा इत्यादि किया फिरभगवत् स्तुतिका आरम्भ किया परन्तु मारे प्रेमके ऐसास्वर भंगहुआ कि एकअक्षर भी उच्चारण न कर सके कबहींतो आंखोंसे जलका प्रवाह चलताथा और कबहीं कण्ठ रुकि जाताथा जब भगवत्ने यहप्रेम अपार देखा तो आज्ञाकी कि जो इच्छा हो सो वर मांगो कि सबकामना तुम्हारी पूर्णहोंगी ऋषीश्वर ने बिनय किया कि कौनवस्तु मागूं हमको अच्छे बुरेकाज्ञान नहींहै आप को जो अच्छीलगे सो दीजिये और जो मेरेही मांगनेपर बातहै तो यहमांगता हूं कि आपका रूप अनूप जानकी महारानी व लक्ष्मणजी महाराज के सहित मेरेमनमें सदानिश्चल बसारहै सो भगवत्ने यहीवरदानदिया प्रभातको जब रघुनन्दन स्वामी आगेको चलनेलगे तो सुतीक्ष्णजी को वियोगका सँभार न होसका अगस्त्यजी अपने गुरुके दर्शन के बहाने से साथचले और उसी परमानन्दके समुद्रमें मग्नरहे ॥

शबरी की कथा ॥

शबरी भीलनी की महिमा किस प्रकार वर्णन होसके कि बड़े बड़े ऋषीश्वर जिसकी भक्तिको देखकर आधीनहोगये प्रथम जब शबरीको भगवत्भक्ति हृदयमें उत्पन्नहुई तो साधुसेवाको अंगीकार किया यहकि दण्डकारण्य में पम्पासरके समीप मतंग इत्यादि ऋषीश्वरोंके आश्रम में रात्रिके समय छिपकर लकड़ियोंका भार डालजातीथी और रातसे उठ कर जिस राहसे ऋषीश्वरलोग स्नान करनेको आया जाया करतेथे उस राहको झाड़ बुहारकर निर्मल करदेतीथी मतंग ऋषीश्वर अपने मन में कहाकरते कि ऐसा कौन बड़भागीहै कि ऐसीसेवा करता है और हमारे

तप व भजनमें बखरा लेनेवाला होताहै रातको दश बीस ऋषीश्वर चुपके छिपकर लगेरहे जब शवरी आई तो पकड़कर मतंगजी के पास लेगये शवरी ऋषीश्वरके डरसे कांपने लगी और जब सम्मुख गई तो रोदन करनेके दुःखसे व डरसे कुछ बिनय न करसकी दूसरे ऋषीश्वरों को तो यह मनमेंहुआ कि यह शवरी नीचजाति है तिसकी लेआईहुई लड़की जो हमने काममेंलगाई न मालूम किसपापमें पकड़ेजायँगे और मतंग ऋषीश्वरकी भक्तिके प्रभावको जानतेथे अपने मनमें कहनेलगे कि यह शवरी ऐसी परमपवित्र व शुद्धहै कि जिसके ऊपर करोड़ों ब्राह्मणोंके धर्म्मकर्म्म निछावरकरना उचितहै मतङ्ग ऋषीश्वर उसको अपनेआश्रम में लेआये और भगवत् मंत्र उपदेशकिया जब मतङ्ग जी परमधाम को जानेलगे तो शवरी को शिक्षा किया कि श्रीरघुनन्दन स्वामी पूर्णब्रह्म यहां आवैंगे व तुझकोउनके दर्शनहोंगे तू इसीआश्रममें रहाकर यद्यपि शवरीको गुरूकेबियोगसे अत्यंत शोकहुआ परन्तुश्रीरघुनन्दन स्वामीके दर्शनोंकी आशासे प्रसन्न होकर भजन व ध्यानमें रहनेलगी जिसघाट पर ऋषीश्वर स्नानके निमित्त जायाकरतेथे शवरी राह बुहारा करतीथी एक दिन नियत समय में बिलम्ब होगया और ऋषीश्वरने शवरी को देखकर क्रोधकिया और उसी क्रोधमें एक ऋषीश्वर का बस्त्र जो शवरी से स्पर्श होगया तो और अधिक ऋषीश्वरोंके क्रोध का कारण हुआ और शवरीको बचन दुष्ट व कठोर कहकर फिर स्नान को गये तड़ाग जलका स्थान रुधिरसे भरादेखा और बड़े बड़े कीड़ेदेखे इस बातको अपने दुर्बिदग्धता से यह समझा कि शवरी के अपबित्रता से जल तड़ाग का नष्ट होगया है कुटीपर अपने फिरगये व शवरी ऋषीश्वरों के भय से अपनेस्थानपरचलीआई और चिन्ताकी श्रीरघुनन्दन स्वामीके निमित्त प्रसाद अन्वेषण करनी चाहिये इसहेतु बन बनफलढूंढ़नेको जाने लगी अच्छे अच्छे बेर तोड़कर पहिले आपचाखाकरती कि यहमीठेहैं कै खट्टे जो मीठे होते तो रखलिया करती और खट्टे को फेंकदिया करती और फिर राहपर जाकर जिसओरसे रघुनन्दन स्वामी पधारेंगे बाट देखा करती जब अपने कुरूपता व जातिकी नीचताको बिचारती तो किसी जगह झाड़ीमें छिपजाती और जब अपने गुरूके बचन और भगवत्की

कृपालुता व पतितपावनता पर दृष्टिकरती तो आगे लेनेके हेतु दौड़ती इसी प्रकार भगवत् के प्रेम व चिन्तवन में दिन रात व्यतीत करती जब बहुत दिनबीते तो अधम उधारण व भक्तवत्सल महाराज पधारे और लोगोंसे बड़ीचाह से पूछा कि शवरी परम भक्तका स्थान कहां है जब स्थानके समीपआये तो शिवरीने साष्टांग दण्डवत्करी रघुनन्दनस्वामी ने लपककर धरतीसे उठालिया और सबदुःख व शोक बियोगका दूर किया शवरीकी यहदशा हुई कि भगवत्मुख चन्द्रमा की चकोर होगई और दर्शनमें मग्नहोकर निर्भर परमानन्द का जल आंखोंसे ऐसाप्रवाह मान किया कि जिसका वार पार न रहा फिर रघुनन्दन स्वामी को अपने आश्रममेंलेगई और बेरजो जङ्गलसे लेआतीथी भोजनके निमित्त आगे धरे भक्त भावन महाराज तो उन बेरों को भोजन करनेलगे और शिव आदि उसभक्त वत्सलता व कृपालुताके प्रेममें मग्न होकर शवरी के भाग्यकी बड़ाई करनेलगे भगवत् एकबेर उठावैं और मुखमेंडालकर उसकी मधुरता व मिठासकी श्लाघा करलें कि ऐसाफल मीठा कबहीं नहींखाया फिर दूसरा उठावैं और उसीभांति गुण बर्णनकरके भोजन करें जबभोजन करचुके तो सबऋषीश्वर आगमन सुनकर कि आप शवरीके गृहमें आयके उतरे हैं अचम्भे योगमें हो श्री रघुनन्दन स्वामी के दर्शनको आये व सबगर्व्व अपने धर्म्मकर्म्म व कुलीनताका बिदाकिया और भगवत् दर्शनोंसे कृतार्थहोकर परमानन्द को प्राप्तहुये वार्त्तालाप होनेपीछे ऋषीश्वरोंने तड़ागकेजल बिगड़जानेका वृत्तांतकहा व उसके शुद्ध व निमल होनेका उपाय भगवत्सेपूछा भगवत्ने आज्ञाकिया कि शवरी के चरण परम पावन जब उस तड़ागमें पड़ेंगे उसी क्षण जल निर्म्मल व शुद्ध होजायगा ऋषीश्वर शवरीसे विनय व प्रार्थना करके तड़ागपर लेगये और उसपरमभक्तके चरणोंके पड़तेही तड़ाग भगवत् भक्तोंके मानसके सदृश विमल व शुद्धहोगया पीछे रघुनन्दन स्वामीने आगेजानेकी विदा शवरीसेमांगी और आज्ञाकिया कि जोउपदेश भक्ति का हमनेकियाहै उसीप्रकार आगेपर आचरण करतीरहना शवरीको जो वह परम मनोहर व रूप बाहर व भीतरके आंखोंमें समायगयाथा बियोग न सहसकी विदामांगतेही अपनेप्राणको निछावरकरके परमधाम

को गई भगवत्ने दाहकर्म्म उसका आपकिया इसचरित्रसे आवागमन से छुटीचाहतेवालों को भक्तिकरने की शिक्षाकरी निश्चय करके प्रेमकी अन्त पदवी यहीहै कि अपने प्यारे के मिलनेके अति आनन्दमें अथवा बियोगके अतिशोकमें आशक्त अर्थात् स्नेहकरनेवाले के प्राण तुरंतजातेहैं॥

विदुर व उनकी स्त्रीकी कथा॥

बिदुरजी व उनकी धर्म्मपत्नी परमभक्तहुये बिदुरजी धर्म्मके अवतार थे माण्डव ऋषीश्वर के शापसे मनुष्य देह पाई कथा उनकी बिस्तारसे महाभारतमें लिखीहै जितनी प्रीति भगवत् में बिदुरजी को थी उस से अधिक उसकी धर्म्मपत्नीको थी जब भगवत् श्रीकृष्ण महाराज कौरव पाण्डवनके बिरुद्ध मिटानेके निमित्त हस्तिनापुरमें पहुंचे तो दुर्योधनने अपने ऐश्वर्य्यके गर्ब्बसे संधि अर्थात् मेल अङ्गीकार नहीं किया परन्तु भोजनके शिष्टाचारकेहेतु बिनयकिया भगवत्ने आज्ञाकिया कि बिराने घर भोजन तीन भांतिसे होताहै एक तो कङ्गालता करिके दूसरे प्रेमके सम्बन्धसे तीसरे हरिभक्त अथवा गुरू चेले आपुसके घर जबजावें सो यहां इनतीनों बातोंमें से कोईबातनहीं यह कहके बिदुरजी के घर पधारे उससमय बिदुरजी घरपर नहींरहे और उनकी स्त्री स्नान करती थी उसने जो भक्त बत्सल महाराजका आगमन सुना तो मारे हर्षके अङ्गन में न समायसकी और ऐसीप्रेम व आनन्दमें मग्न होगई कि बेधड़क उस नग्न दशामें उठदौड़ी लज्जा रखनेवाले महाराज यहदशा उसकी प्रेम की देखकर चकितहुये और झटपीताम्बर श्रीअङ्गका अपना उढ़ायदिया सो यहसमझ पड़ताहै कि जानें भगवत्को उससमय यह बिचार हुआ होगा कि यहमेरे तद्रूपताको पहुंचगईहै केवल पीताम्बर नहींहै इसहेतु पीताम्बर भी उढ़ायदेना चाहिये अथवा यहबातहो कि जब राजाकिसी अपने प्यारेसेवकपर प्रसन्नहोताहै तो अपनीपोशाक निजखिलतदेताहै सो भगवत् महाराजाधिराजमणिने इसकेप्रेमसे प्रसन्नहोकर पीताम्बर खिलतकीभांति कृपा करदिया अथवा ऐसामनमें आया होय कि जबकोई राजाकी सेवामें जाताहै तो कुछ नज़र भेंटदिया करताहै सो भगवत् ने बिदुरपत्नी को अपने प्रेमियों में राजा के सदृश बिचार करके पीताम्बर भेंटदिया हो पीछे भगवत्को अपने घरमें लेआई और परमप्रीतिसे सिंहा-

सनपर बैठाकर अत्यंतप्रेम व आनन्दमेंबेसुधि होगई कृपासिन्धुमहाराज ने जो उसकी यह दशादेखी तो अपनेओर बार्तालापमें लगानेके निमित्त आज्ञा कियाकि भोजनकुछ तैयारहोय तोलाओ वहबड़भागी केलेकेफल ले आईपास बैठकर खिलाने लगी वहतो परमानन्दमें पूर्णथी गिरीको तोधरतीपर गिरा दिया और छिलका भोजनके निमित्त दिया विश्वम्भर महाराज कि केवल प्रेमके भूखेहैं छिलकों को सराहि २ खानेलगे उस समय विदुरजी आयगये और भगवत्के चरण कमलोंको दण्डवत् करके स्त्रीको तर्जन भर्त्सन करनेलगे कि रेमन्द बुद्धी गिरी खिलाने को सो छिलके खिलातीहै और आप भगवत्के पास बैठकर बड़ेभाव व भक्तिसे गिरी निकाल २ कर खिलाने लगे भक्त चित्त रंजन महाराज ने आज्ञा किया कि विदुरजी यह केलोंका गूदा बड़ा मीठाहै परन्तु उन छिलकों के स्वादको नहीं पहुंचता इस वचनसे भगवत् अपने भक्तोंको शिक्षा करतेहैं कि जिस किसीको जितनी प्रीति व भक्तिमेरे चरणकमलों में है तितनाही भोजन इत्यादि जो कुछ मेरे अर्पण व भेंट करतेहैं मैं अंगीकार करता हूं दूसरे यहबात जतातेहैं कि मेरे दरबारमें चतुराई इत्यादिकी कुछ नहीं चलती केवल प्रेम व स्नेहपर रीझहै और एक यह अर्थभी प्राप्तहोगया कि जो बिदुरजी और उनकी स्त्री को छिलकों के खिलाने के कारण से लज्जा व शोचहुआथा सो सब मिटगया और दोनों परम प्रीतिसे और भगवत्की सेवामें तत्पर रहे॥

भक्तदासकी कथा॥

राजा भक्तदास कुलशेपर जिनका पदहै भगवत् भक्त प्रेमीहुये कथा उनके प्रेम और भक्तिकी प्रपन्नामृत ग्रंथमें विस्तारसे लिखीहै यहांमूल भक्तमालमें जितनी लिखीहै सो लिखीजातीहै यह राजा श्रीरघुनन्दन स्वामीके उपासकथेश्रीरघुनन्दन स्वामीकी कथा चरित्र सदा सुनाकरते और अतिप्रेम और प्रीतिसे लीला और उत्साह भगवत् का नित्यनये भावसे किया करते ब्राह्मण कथा सुनानेवाला राजा के प्रेमका वृत्तान्त जाननेवालाथा जब रामायणमें सीताहरणकी कथा आयाकरती तो छोड़ दिया करताथा एकबेर वह दुःखीपड़ा उसका बेटा कथा सुनानेको आया वहीकथा सुनाई कि रावण आया और जानकी महारानीको चुराकर ले

गया इतना बचन सुनतेही राजा तरवार खींचकर मार मारकरता हुआ दौड़ा और घोड़े पर सवार होकर लङ्काकी ओर चला कि इसी घड़ी रावण को मारकर अपनी माता के दर्शन करूंगा मेरे जीते मेरी माता को कैसे लेजाय जब राह में समुद्र आन पड़ा तो निरभय घोड़ा समुद्र में डालदिया भक्त भावन व भक्तमन रंजन महाराज जानकी महारानी व लक्ष्मणजीसहित प्रकटहुये और कहा कि कुलशेखर कहांजातेहो रावण को तो हमने वधकिया जनक नन्दिनी सहित अयोध्याको जाते हैं राजा चरणोंमें पड़ा युगुल स्वरूपके दर्शन करके नये प्राण पाये अपनी राजधानी में आकर प्रेम भक्तिमें मग्नरहे ॥

बिट्ठलदासकी कथा ॥

बिट्ठलदासजी माथुर चौबे अनहंकार व औरोंको मानदेने वाले सब प्रकारसे निर्मल परोपकारी हुये किसीके अवगुणपर दृष्टि नहीं जातीथी जो बिद्या जिसमें होतीथी उसका बर्णन करतेथे माला और तिलक व भगवत् भक्तोंकी महिमा व प्रेम भगवत्के सदृश बुद्धिमें समायाथा व हरिगोबिन्द हरिगोबिन्द यह बाणी अनुक्षण जिह्वापर रहतीथी उनके बाप दो भाई सगे रानाके प्रोहित थे बिट्ठलदास लड़केही थे तबहीं वह दोनों आपुसमें लड़कर मरगये जब बिट्ठलदासजी सयाने हुये तो भगवत्भक्तिको अङ्गीकार किया और रानाकेपास आनाजाना छोड़दिया एक दिन रानाने लोगोंसे पूछा कि हमारे प्रोहितका लड़का नहींआता वह कहांहै शीघ्रलेआओ बिट्ठलदासजी न गये जबदोहरायके बुलाया तबशत्रु लोगोंने कहा कि महाराज वह तो दिनरात रागरंग व बैरागियोंके संग में रहता है और अपने आपको भक्तमें गिनता है रानाने बिट्ठलदासजी को कहलाभेजा कि आज जागरण हमारे यहांहै सो जागरण हमारे गृह में करना बिट्ठलदासजी हरिभक्तों के समाज सहितगये रानाने सबको आदर भावकरके समाजके निमित्त तिखने मकानकी छतपर फ़रसलगवाया जिससमय भगवत् चरित्रोंका कीर्त्तन और भजन होनेलगा बिट्ठलदासजीकी दशा उनचरित्रों के रस में बेसुधि होगई और अपने व बिरानेको भूलकर आपकीर्तन करनेलगे और नृत्य व गानकी दशामें कुछसुधि अपने शरीर व मकानकी न रही तिमंजिले मकानसे नीचेगिरे

राजा वहदशा देखकर वड़ेशोचमें हुआ और दुष्टलोगोंको बहुत तर्जना भत्सनाकिया साधुलोग विट्ठलदासजीको उठाकर घरपरलेआये व राना ने रुपैया व सामग्री सवभेजी विट्ठलदासजीको तीनदिन पीछे सुधिभई उनकी माताने सब वृत्तान्त राजा की परीक्षा लेनेका व दुष्टलोगों की दुष्टता व तिमहलेपर फरसहोनेका कारण सवकहा विट्ठलदासजी रात्रि को अपने घरसेचले छठीकरागांव में कि जहां यशोदाजीने छठीकीरीति रसम श्रीनन्दनन्दन महाराज कीकरीहै आयकर श्रीगरुड़ गोविन्द की सेवा पूजामेंलगे रानाके सेवक सब जगह जगह ढूंढ़आये कहीं न मिले परन्तु उनकीमाता व स्त्रीने ढूंढ़ते ढूंढ़ते पाया घरचल ने के निमत्त उनसे बहुतकहा व उपायकिया समझाया परन्तु मन विट्ठलदासजी का सेवा व स्वरूपमें श्रीगरुड़ गोविन्द महाराज के लिपटगयाथा इसहेतु कोई उपायने काम नकिया हारिके उनकी माता व स्त्री उसीगांवमें रहनेलगे कुछदिन बीते बहुत दुखीपड़े भगवत्‌ने स्वप्नमें आज्ञाकी कि तुम मथुरा जीमें निवासकरो विट्ठलनाथजी को गरुड़ गोविन्द महाराजका वियोग अंगीकार न हुआ जब तीनदिनतक बराबर आज्ञा को किया तब वेवश होकर मथुराजीमें आये व अपने सजातियों को देखा कि भगवत् भक्ति से विरुद्धहैं इसहेतु एकबढ़ई साधुजीके घर उतरे उनकी स्त्री परमसती गर्भवती रही उसको खर्च पातकी चिन्ताहुई भगवत्‌ने मिट्टी खोदते में एक अपनी मूर्त्तिको बहुतधन सहित प्रगट करदिया विट्ठलदासजी वह मूर्त्ति व रुपैयाबढ़ईको देनेलगे परंतुउसने हाथजोड़कर चरणकमलपकड़ लिया व विनय किया कि आपही भगवत्‌की सेवा करें और यह रुपैया भी खर्चमें लगावें विट्ठलदासजी ने ऐसी प्रीतिसे सेवाको आरंभ किया कि सिवाय सेवा पूजा के और किसी कार्य्य से सम्बन्ध न रक्खा और थोड़े दिनमें उनके भक्ति भावकी ऐसी ख्यातहुई कि बहुतलोग चेले हो गये भगवत्‌उत्साह और कीर्तन का ऐसा समाज रहनेलगा कि मानो भगवत पार्षदोंका समाजहै संयोगवश एकनटिनी आयगई और उसने भगवत्‌के आगे नृत्य और गानकिया विट्ठलदासजी भगवत् प्रेममें ऐसे वेसुधि व वेवश होगये कि जो गहने व वस्त्रादिक थे सब उसको प्रसन्न दान करदिया और जब उसको भी कम जाना तो रंगीरायने अपने पुत्र

को भगवत्को निछावर करके देदिया रंगीरायकी चेली रानाकी लड़की-थी उसने उसनटिनीसेकहलाभेजा कि जो रुपया व आभूषण तुझको चाहना होय मुझसेले व रंगीराय मेरे गुरूको मुझकोदे नटिनीने उत्तरदिया कि संपत्तिकी तो कुछ परवाहनहीं परंतु रीझकर तन मन धन सबदेसक्ती हूं रानाकी लड़कीने बिट्ठलदासजीसे बिनय व प्रार्थना करके फिरसमाज कराया और जो गुनी और भक्तजन आयेथे बहुत रुपैया उनको नज़र भेंट दिया और आप भगवत्के सामने नृत्य करनेलगी कि वह नटिनी भी चकित होगई और रंगीरायजीका शृङ्गारकरके और डोलेमें बैठाकर भगवत्के सम्मुख लाई रंगीरायजी उसनटिनी के कहनेसे नृत्य करने लगे कि सब समाज भगवत्प्रेम से बेसुधि होगया और नटिनी ने सब धन संपति रंगीरायजी सहित भगवत् भेंटकिया रंगीरायजी ने बिट्ठल दासजीसे कहा कि आप मुझको भगवत्की निछावर करचुके हैं उचित नहीं कि फेरलेवें इसहेतु रंगीरायजी को तो बिट्ठलदासजी ने न लिया परन्तु रानाकी लड़कीने लेलिया रंगीरायजी ने बिचारा कि यद्यपिप्रकट जो तनहै सो तो भगवत् निछावर होचुका परन्तु प्राण अबतक निछावर नहींहुये इसहेतु पंच भौतिक तनछोड़कर भगवत्के परम धामको प्राप्त हुये यहचरित्र पबित्र भगवत्के रसिक व प्रेमियोंका कि भगवत् भक्ति का देनेवाला है बिचारके योग्य है ॥

कृष्णदास की कथा ॥

कृष्णदासजी भगवत्के परमभक्त हुये कि श्री नन्द नन्दन महाराज ने निज अपने चरण कमलों का नूपुर उनको कृपा करके दिया भगवत् कीर्त्तनकी रीतोंके अच्छे ज्ञातारहे स्वर और ताल व ग्राम और मूर्च्छना इत्यादि जोकुछसंगीतरत्नाकर आदि ग्रंथोंमें लिखेहैं उनको ऐसाजाना कि उस समयमें उनके सदृश कोई न था और अत्यन्तता उसकी यहां तक हुई कि राधिका बल्लभ महाराज को भी अपने प्रेम और गुणसे प्रसन्न करके रिझायलिया जातिके सुनारथे और खरगसेन उनके बापका नाम था एक दिन श्री राधा कृष्ण महाराज की सेवा पूजा करके भगवत्के सामने नृत्य व गान करनेलगे और भगवत्के रूप और चरित्रके चिन्तवन व रस में ऐसे मग्न और बेसुधहुये कि कुछ शरीरकी भान न रही

उसी दशामें एकपांवँका घुंघुरू खुलकर गिरपड़ा और समा जोजमरहा था उसमें विक्षेप होनेलगा श्रीरसिक बिहारी परम रिझवार उस समा के भंगको ताल व बेशोभा समझकर उठ व अपने चरणकमलका नूपुर श्रीहस्तसे कृष्णदासजी के चरणमें पहिनादिया कृष्ण दासजी ने नृत्य और कीर्त्तनके पीछे जब यहवृत्तांत जानातो भगवत् कृपाकी और अपने भाग्यको धन्यमानिके फिर आनन्दमें मग्नहोगये और ऐसे भगवत् भजनमें लवलीनहुये कि दिन रात उसीप्रेमकी दशामें बेसुध रहनेलगे व साधुसेवी ऐसेथे कि हरि भक्तोंको कबहीं भगवत् से न्यून न जाना जो किसीको शंकाहोय कि भगवत्‌ने अपना घुंघुरू क्यों पहिनाया वही घुंघुरू क्यों न सजिदिया सोहेतुयहहै कि जो वहघुंघुरू साजिके पहिनाते तो बिलम्बहोता इसहेतु अपना घुंघुरू पहिनादिया और भक्त के मनसें अपनी रिझवारता और चित्तकी चाहको प्रकट करदिया सिवाय इस के यहबात भी सूचितहोतीहै कि भगवत्‌ने रीझकर यहघुंघुरू इनामदिया॥

कात्यायिनी की कथा॥

कात्यायिनीजी के प्रेम और भक्तकी कथा किससे कही जाय जितना प्रेम और स्नेह ब्रजगोपिकाओं को श्रीब्रजराज भूषण महाराज में हुआ तितनाहीं कात्यायिनीजी को था बात कहते कहते भगवत्‌केरूपमें चिन्तवन करके बेसुध होजाती थी तनक सुधि नहीं रहती थी जगतके जितने झगड़े व बखेड़ेहैं तिनसे न्यारी और भगवत्‌के प्रेमकी मूर्त्तिथी सबभगवत्‌भक्तों का सम्मत इसबात परहै कि भगवत्‌का स्नेह कात्यायिनी जी पर समाप्त हुआ यहदशाथी कि राहचलते में भगवत् चरित्रों के तन्मय होजातीथी और कबहीं गातीथीकबहीं रोतीथीकबहीं हँसतीथी एकबेरकी बातहै कि भगवत् चरित्रोंके कीर्त्तनमें बेसुधि व मग्नथी पवनतेज चलने के कारणसे वृक्षोंसे शब्द आनेलगा कत्यायिनी जी यह समझीं कि यह लोग कोई तालमृदंग बजानेवाले हैं भगवत्‌के सन्मुख जो मैं गातीहूं तो यहबाजा बजातेहैं इसहेतु कुछइनाम उनकोदेना चाहिये सो सब अपने वस्त्रोंको उनको प्रसन्नदान करदिया और प्रियाप्रीतम के प्रेममें बेसुधि और मग्न होगईं॥

माधव दासकी कथा॥

माधवदास रहनेवाले कन्नौज के ऐसे भगवत्‌के प्रेमी भक्त हुये कि

जब भगवत् चरित्रों का गान अथवा कीर्तन सुनते अथवा आप कीर्तन कियाकरते तो भगवत्के रूप माधुरीके चिन्तवनमें बेसुधि होकर लोटनेलगते और कुछसुधि न रहती और पुत्र व पौत्रोंका भगवत् भक्तोंमें अत्यंत प्रेमथा व दृढ़ प्रेमरखतेथे और तनमनसे उनकीसेवा टहलकिया करते थे नगरका अधिपति भगवत्से बिमुखथा दुष्टलोगोंने उसको बहँकाया कि माधवदास अपनेको संसारमें दिखलाने के हेतु भगवत्प्रेम के बहाने झूंठमूंठ धरतीपरलोटाकरताहै राजा अज्ञानीने परीक्षाके निमित्त अपने स्थानपर समाज ठहराया और तिमहलेपर समाजीसभा ठहरी समाज के समय माधवदासजी ने नूपुरबांधकर कीर्तन किया किबेसुधि होकर लोटनेलगे और उसीदशासे मकानकी छतसे एककड़ाह तप्तघृत में वहउत्सव के निमित्त पकवान बनताथा उसीमें गिरे भगवत् ने ऐसी रक्षाकरी कि किसीअंगमें कुछचोट न आई इस चरित्र से राजकी आंखें हृदयकी खुलगईं व भय व लज्जासे भगवत् भक्तिमान व भक्तोंसे आधीन होगया और भक्तहुआ॥

नारायणदास की कथा॥

नारायणदास जी नर्त्तक अर्थात् नट व भगवत् प्रेम के स्वरूप हुये यद्यपि संसारमें हज़ारों नाचने वाले होगये और हैं परन्तु जो भगवत् प्रेमको उन्होंने निबाहा दूसरे किससे हो सक्ता है बिष्णुपदको अक्षरके अर्थसे भगवत् रूपमें मग्नहोकर भगवत्के नित्यबिहारमें जामिले उनका यह नेम व प्रणथा कि सिवाय भगवत्के और किसीके सामने नृत्य व गान नहीं करतेथे तीर्थ और भगवत् मन्दिरोंकी यात्राकरते हुये हंड़िआ सरायमें जो प्रयागराजसे छःकोस पूर्व्बहै पहुँचे और उनके नृत्य व गानकी धूम नगर में हुई वहांका हाकिम यमनथा उसने बुलाने के हेतु अपने लोगोंको भेजा नारायण दासजी ने भगवत् सिंहासन का लै जाना यमन के सामने उचित न समझा और उस का अभिलाष भंग करनाभी अच्छा न जाना बेबश होकर एक बिचार अपने जीमें ठहराय कर गये और ऊंचे सिंहासनपर तुलसी की माला कि शास्त्रके बचन से तुलसी और भगवत्में कुछभेद नहीं बिराजमान करके नृत्य और गान करनेलगे परन्तु उसहाकिम मुसल्मानकी ओर जो अलग बैठाथा भूल

करभी न देखा जबयह विष्णुपद मीराबाईजी का कि ध्रुवा उसका यहहै साँचो प्रीतिहीको नातो कैजानै राधिका नागरी कै मदनमोहन रंगरातो॥ कीर्तनकिया तो उसके अर्थ व भावको समझकर प्रियाप्रीतमके चिंतवन में बेसुध होगये और उसी बेसुधिताकी दशामें उस विष्णुपद के अर्थ के अनुकूल भीतर व बाहरकी आंखनमें वहसमाज समाया कि ब्रज मोहन महाराज व वृषभानु नंदनी परस्परकी प्रीति व स्नेहसे आनन्दमें भरे खेल और विहार व नृत्य और गान में लवलीनहैं और नृत्यकी दशा में तिरछादेखना और त्रिभंगी लटकवारे रूप ब्रजकिशोर महाराज ने और परमशोभा व शृङ्गार ब्रजनागरीजीने ऐसाछटा व समाका स्वरूप पकड़ा कि नारायणदासजी को अत्यंत चाव से कुछ निछावरकरना उचित तब निश्चय करिके हुआ उस समय अपने प्राणसे अच्छी और कोई वस्तु निकट न पाई बस तुरंत युगुलस्वरूप के निछावर करके नित्य विहार और परम आनन्द में जामिले॥

लीलानुकरन की कथा॥

एक ब्राह्मण पुरुषोत्तम पुरीमें ऐसेप्रेमी भक्तभये कि भगवत् रूप के अनुभवमें मग्नहोकर तन्मय व बेसुधि होजातेथे एकबेर नृसिंहजीकी लीलाको परम पवित्र नृसिंह चतुर्दशीके दिन लोगोंने बहुत धूमधामसे तैयार किया और उसब्राह्मणको भगवत्भक्त और प्रेमी जानकर नृसिंह जीका रूप बनाया जब उसचरित्रका कीर्तन होनेलगा कि नृसिंहजी ने हिरण्यकशिपुको अपने नखोंसे उदर चीरकर मारडाला तो उस ब्राह्मण को अनुकरणका ध्यानरहा और जो नृसिंह जीको करना उचितथा सोई किया अर्थात् जो पुरुष हिरण्यकशिपु का रूप बना था उसका उदर अपने नखों से चीरकर मारडाला और प्रह्लाद को राज्यदिया लोगों ने उसका बध शत्रुताके कारणसे समझा और भगवत्भक्तोंने यहकहा कि शत्रुता नहीं नृसिंहजीका अंश इसब्राह्मण में आगयाथा नितांत सबका यह सम्मत ठहरा कि रामलीलाके समय इस ब्राह्मणको दशरथ महाराजका अनुकरन बनाना चाहिये उससमय वृत्तान्त प्रेम और शत्रुता का खुलजावेगा सो रामलीलामें वैसाही किया जिससमय वहचरित्र आया कि रघुनन्दनस्वामी जनकनन्दिनी व लक्ष्मण महाराज सहित बनको

गये और सुमन्त मंत्रीने आकर राजादशरथको सन्देशा रघुनन्दनस्वामी का सुनाया और राजाने सुनतेही सन्देसे के प्राण त्याग किये तो उस ब्राह्मण ने कि वास्तव करिके दशरथही होगया था रघुनन्दन स्वामी का सन्देसा सुमन्त के मुखसे सुनतेही उसी घड़ी अपना प्राण भगवत्के निछावर किया और दशरथ महाराजसे बढ़करपदवी पाई वास्तव करिके प्रेम का ऐसाही प्रताप है ॥

मुरारिदासजी की कथा ॥

मुरारिदास जी प्रेमीभक्त श्रीरघुनन्दन स्वामी के बलबंडा शहर में जो माड़वार देशमें विख्यातहैं हुये भगवत् का उत्साह और हरिभक्तों की सेवा और भंडारा करने में अद्वितीय थे कीर्तन करने के समय श्री रघुनन्दनस्वामी के चरित्रों में लवलीनहोकर प्रेमकी अंतदशा हरिभक्तों को शिक्षाकिया एक चर्मकार भगवत् सेवा पूजा बड़े भावसे करके बड़े उच्चस्वरसे नित्य कहा करताथा कि जो भगवत् के चरणामृतका अधिकारीहो सो लेजावे मुरारिदासजी ने वह शब्द राहचलते सुना उसके घरगये वह चमार डरसे कांपउठा मुरारिदासजी ने उसको बहुत आश्वासन करी और कहा कि भय किसहेतु करताहै केवल चरणामृत के निमित्त आयाहूं चमार ने बिनयकिया कि महाराज मैं जातिका चमार हूं आपको कब दे सक्ताहूं मुरारिदासजी ने उत्तरदिया कि तू हमसे भी अच्छाहै व जो तुझको कुछडर है तो हमकिसी से न कहैंगे यहकहकर विकलहोगये और जलआखोंसे बहनेलगा चमार ने पूंछा कि महाराज तुम किसहेतु रोतेहो मुरारिदासजीने उत्तरदिया कि हमारीआखें दुखतीहैं फिर चमार ने बड़ी बिनय व पुकारसे कहा कि महाराज आपको चरणामृत मुझ नीचसे लेना न चाहिये मुरारिदासजी ने न माना और हठकरके चरणामृतलिया भगवतभक्त को मुख्यसमझा और जातिकर्म आदिपर धूलडालदी जानेरहो मुरारिदासजी इसचरित्र से तीनोंप्रकार के लोगोंको शिक्षा करतेहैं अर्थात् जो कोई भगवत प्रेम और भक्तिको सिद्धदशाको पहुंचगयेहैं उनको तो यह शिक्षाहै कि जाति इत्यादि का बंधन उनलोगोंकोहै कि भगवत् प्रेममें दृढ़नहींहुये सो तुम उसदृढ़ता पर स्थिररहना और साधकलोगोंको दृढ़ निश्चय करातेहैं कि भगवत्

भक्तिमें और प्रेममें वहपदवी प्राप्तकरनी चाहिये कि भेद और द्वैत दूर होजावै और जो भगवत्से विमुखहैं उनपर यहदशाहै कि तुमसे चमार अच्छेहैं जो भगवत् सेवा करतेहैं भागवतके एकादशका वचनहै कि जो विप्र बारह कर्म करके युक्त है परंतु भगवत् भक्ति नहीं रखता उस से स्वपच अच्छाहै काशीखंड में लिखाहै कि ब्राह्मण अथवा क्षत्रिय अथवा वैश्य के शूद्र और नीच जो भगवत् भक्तहैं सोई सब उत्तम लोगों में उत्तमहैं ऐसे सैकरों वचन इसबातके सिद्धांतमें हैं एक यह उपदेश भी इस चरित्रसे दिखाई देताहै कि आगम शास्त्रके वचनके अनुकूल भक्ति मार्गके पांच कण्टकहैं कुलमद १ विद्यामद २ धनमद ३ सौंदर्यमद ४ बलमद ५ सो जिसने इन पांचों बिरोधियों को जीतलिया सोई भक्त देशका अधिपति हुआ मुरारिदासजी का यह वृत्तांत सारेनगर में फैला और सबलोग प्रकटबोली मारनेलगे और राजातक समाचार पहुंचाया राजाको भी यहबात अच्छी न लगी और मन फिरगया एकबेर मुरारिदासजी राजाके देखनेको आये तो पहिलीसी भावभक्ति राजामें न देखी व वैराग्यवान् पुरुष थे सब त्याग कर किसी और जगह जारहे उनके जानेसे भगवत् भक्तोंका आना निर्मूल बन्दहोगया और राजा जो प्रति वर्ष उत्साह करता था और देश देशके साधु भगवत् भक्त मेलेमें इकट्ठे होतेथे कोई न आया और उपाधि उपद्रव व अकालका आगमन दिखाई देनेलगा तबतो राजा शोच व शोकयुत होकर फेर लेआने के हेतु चला और जाकर अत्यंत दीनता व नम्रतासे साष्टांग दण्डवत् किये मुरारिदास जीने मुंह फेरलिया कि ऐसे भगवत् विमुखका मुखदेखना नहींचाहिये कि ऐसे भगवत् विमुखसे गुरूकी निन्दा होतीहै राजाहाथजोड़े दीनता व दुःखसे लज्जाकी नदी में डूबकर खड़ारहा और फिर दण्डवत् करके प्रार्थनाकी कि आप मेरे ऊपर दया करके जो दण्ड विचार करें उसके योग्यहूं और यह कटाक्षका बचन भी नियत किया कि मेरे अच्छे भाग्य होनेमें कुछ सन्देहनहीं कि आपऐसे गुरू मुझ को मिले परन्तु आपकी कृपा व दयाकी न्यूनता निश्चय करिके है कि आपके चरणोंमें विश्वास न रहा मुरारिदासजी इस कटाक्ष युक्त बचन से बहुत प्रसन्न हुये और और प्रसङ्ग बाल्मीक स्वपच का कि श्रीकृष्ण महाराज ने युधिष्ठिर के

यज्ञमें सबसेऊंचे आसनपर बैठलाकर द्रौपदीजीके हाथसे भोजनकराया और शवरीका कि ऋषीश्वरों ने जिसके चरण पकड़े और तड़ाग जिस चरणके प्रभावसे पवित्रहुआ और निषादका कि बशिष्ठ जी और भरत जीने अपने बराबर बैठाया व हनुमान व सुग्रीव व विभीषण व गज व गणिका इत्यादि का वृत्तांत उपदेश करके राजाके हृदयके अन्धकार को दूरकरदिया और भगवत्भक्ति और भक्तोंका विश्वास दृढ़करदिया पीछे राजाके नगरमें आये और वैसाही समाज भगवत् भक्तोंका और सत्सङ्ग रहनेलगा सब उपद्रव व उत्पात शान्त होगया व सबलोगोंने भगवत् भक्तिको अङ्गीकार किया ॥ एकबेर समाजहुआ व जो कोई कीर्त्तन और भजनमें ज्ञाता व प्रवीणथे सब चेले हुये भजन कीर्त्तन के समय भगवत् भक्तोंने मुरारिदासजीको कहा कि कुछ आपभी भजन करें उनके कहने से उठे और घुंघुरू बांधकर नृत्य करनेलगे व भगवत् भक्तथे सब राग रागिनी और सातों स्वर तीनोंग्राम व इक्कीसों मूर्छना आय के प्राप्तहुई और ऐसा समाजहुआ कि किसीने देखाथा न सुनाथा जब श्रीरघुनंदन स्वामीके बनके जानेका चरित्र भगवत् भक्तों ने कीर्त्तन कियातो मुरारि दासजी भगवत् बिरहके तन्मय होगये और चित्रके सदृश ज्यों के त्यों रहगये अथवा यह बात समझी कि उस बन व अरण्यमें परम सुकुमार रघुनन्दन स्वामी व जानकी महारानी और लक्ष्मणजी की सेवा कौन करैगा इस हेतु यह प्राण संग भेजना उचित है यह दशा देखकर उस समाज ने बहुत दुःखपाया व मुरारिदास जी श्रीरघुनन्दन स्वामीजी के परम्पदको पहुंचे॥

गदाधर भट्टजीकी कथा॥

गदाधर भट्टजी प्रेम भक्तिके समुद्र सुशील मधुर बोलनेवाले सहज स्वभाव निस्पृह अनन्य भगवत् भजनमें आनन्द और लोगोंको भगवत् भक्ति में दृढ़ करने वाले हुये किसीसे कुछ चाहना नहीं रखते थे और भगवत् भक्तोंकी सेवा ऐसे प्रेमसे करते थे मानों इसीहेतु उनका जन्म हुआथा उनका यह बिष्णुपद कि। सखीहौंश्यामरँगरँगीदेखिबिकाय गईवहसूरतमूरतिमाहिँपगी ॥ जीव गोसाईं जी ने सुना व एकचिट्ठी लिखकर दो साधु के हाथ भेजी चिट्ठी में यह लिखा था कि तुम को बिनारैनी रंग किस प्रकार चढ़ गया हमको चिन्ता है इस लिखने का

तात्पर्य्य प्रथम यह कि विना वैराग्य अर्थात् त्याग विना भक्तिकी रंग चढ़नी अति कठिनहै सो तुमने अबतक गृह कुटुम्बका त्यागनहीं किया जो फिर रंगमें रंगीन किस प्रकार हुये॥ दूसरे यह कि श्री वृन्दावन भगवत् रूपके रंगकी रैनीहै सो वृन्दावन बासविना रंग किस प्रकार चढ़गया साधुलोग वह चिट्ठी लेके भट्ट जीका घर जहां था तहां पहुंचे संयोगवश भट्टजी नगरसे बाहर कोई कुयेंपर बैठेथे उनहींसेपूंछा कि गदाधर भट्टजी कहां रहतेहैं भट्टजी ने पूंछा कि, तुम कहांसे आये व कहां रहतेहो साधोंने कहा कि सब धामोंका परमधाम श्रीवृन्दावन है तहां रहतेहैं और तहांहीं से आयेहैं भट्टजी उसनाम परम अभिराम के सुनतेही प्रेमसे बेसुध होकर गिरगये कुछकाल पीछे सुधिहुई तो परम आनन्दमें मग्न मौन होकर चित्रकी मूर्तिके सदृश भगवत् रूपके चिन्तवन में बैठगये किसीने साधोंसे कहा कि गदाधरजी यही महाराजहैं साधोंने वहपत्री उनको दी भट्टजी ने जो पढ़ा शिरपर चढ़ाकर वृन्दावन व वृन्दावनविहारी के रूपमें आनन्द होकर उसीक्षण वृन्दावनको चल खड़े हुये व आयके जीव गोसाईंजी से मिले दोनों परम भागवतों को प्रेमकी नदी ऐसी उमड़ी कि उस में डूबगये और आपुस के सत्सङ्ग से भाग्यको धन्य मानकर भगवत्की बड़ीकृपा समझी गदाधरभट्टजी ने जीव गोसाईं जी से सब ग्रन्थ भगवत् चरित्र और रस रास और प्रिया प्रीतमके कुंजबिहारके पढ़े सुने और भगवत्के रूप रङ्गमें रङ्गीन होगये भट्टजी नित्य श्रीमद्भागवतकी कथा करतेथे कल्याणसिंह नामी राजपूत रहनेवाला दरेरागांवका जोकि वृन्दावनके निकटहै कथा सुनकर भगवत्की ओर सावधान हुआ और अपने घरका आना जाना त्याग करके भगवत् भजनमें रहनेलगा उसकी स्त्रीने समझा कि भट्टजीके सत्सङ्गसे घरकीचाह व काम की वासना जातीरही सो अपने पति को वे विश्वास करनेके हेतु एकस्त्री गर्भवती जो कि भिक्षा मांगती फिरती थी उसको बुलाया व बीस रुपया देनेको कहकर यहबात सिखाया कि जिस समय भट्टजी कथा कहें उससमय जोमें सिखातीहूं अच्छे पुकारकर कहदेना अपनीदासी साधकरके गदाधरजी का स्थान उसको बतलादिया वह स्त्री लोभमें वशहोकर जहांभट्टजी कथाकहतेथे आई और पुकारकर कहा

कि तबतो मेरे साथ तुमको वह खेलमेलथा कि गर्भ रहगया अब ऐसी निठुराईहै कि खर्चका देना भी बन्द करदिया भट्टजीने कथा कहतेही में उत्तरदिया कि ठीकहै परन्तु मेरीइसमें कौनतकसीरहै तुम्हींने दर्शन नहींदिया कथामें जितने लोगथे किसीको विश्वास न आया और कहने लगे कि निपटझूठहै बरु यहपापिनी दण्डके योग्यहै ॥ राधाबल्लभ लाल जीके गोसाईंको इह वृत्तान्त का समाचार पहुंचा बहुत दुःखित हुये उस स्त्रीको बुलाकर बहुत भयत्रासदिया कि सचकहु नहीं तो जीती न छोडूंगा उसने जो बात सत्य सत्यथी सो कहदी उस कल्याणसिंह ने अपनी स्त्री के त्रिया चरित्रके समाचार पाये तो तलवार लेकर उसके मारनेको उद्यत हुआ भट्टजी ने दयासे कहा कि कदापिस्त्रीको कुछ न कहना चाहिये इतनाही दण्ड बहुतहै कि उसका त्याग होगया ॥ किसी देशका एक महंत कथामेंआया व भट्टजीने सबसे आगे उसको बैठाया उस महन्त ने देखा कि सब श्रोता प्रेममें भरेहुये भगवत्‌चरित्रोंको सुनतेहैं और प्रेमका जल आंखों से बहता है परन्तु मेरी आंखोंसे एक बूंदभी जल नहीं निकलता सब लोग मेरी महन्तता पर निश्चय करके ब्यंग बोलैंगे दूसरे दिन लाल मिरच चादरके कोनेमें बांधकर कथामें जाबैठे और आंखोंमें मिरच डाल डालकर अच्छापानी बहाया एक साधुने इसबातको देखलिया था भट्टजी से सब वृत्तान्त कह दिया भट्टजी अपने हृदय की सचाईसे यह समझे कि उस महन्तने इसहेतु अपनी आंखोंमें मिरच डालीहैं कि जिन आंखों से प्रेमकाजल न बहै उसमें मिरच अच्छीहै सो जब कथा होचुकी भट्टजी बहुत प्रसन्न होकर उस महंत से मिले और यह मिलना उन का उसके हेतु ऐसा रसायन होगया कि थोड़ेदिन में दूसरे प्रेमियों से अधिक होगया ॥ एकबेर गदाधरजी के स्थान में चोरआया और बस्त्रा-दिक वस्तु की दृढ़पोट बांधी परंतु भारीके कारणसे उठाय न सका भट्टजी आपआये औरवह गठरी असबाब की उठवादी चोरने शोच किया कि यह मनुष्य कौन है कि पकड़ता नहीं है गठरी उठाय देता है पूछा कि तुम कौनहो भट्टजी ने अपना नाम बतलाया चोर असबाब को छोड़ कर चरणों में पड़ा और गिड़ गिड़ाने लगा भट्टजी ने कहा कि निर्भय होकर लेजाओ बरु और जोचाहिये सो लेलेव और शीघ्रचलेजावो प्रभात

होगई चोरने हाथ जोड़कर विनयकिया कि अब वह धन निरुपाधि मुझ को कृपा होय कि दोनों लोककी चिन्तासे निश्चिन्तहोकर बेपरवाह होजाऊं यह कहकर रोयके फिर चरण पकड़लिया भट्टजीने दया करके उसको मंत्र उपदेश किया और इस चोरीसे छुड़ाकर माखन चोरसे हाथ पकड़ा दिया ॥ भट्टजीकी यहरीतिथी कि भगवत् की रसोईं की सेवा सब अपने हाथसे किया करतेथे व सेवक व चाकर बहुतथे परन्तु भगवत्सेवामें किसीको प्रवृत्त होने नहीं देते एक दिन भगवत् रसोईं का चौका देते थे कोई साहूकार अथवा राजा दर्शन करने को आया और बहुत द्रव्य भेंटके निमित्त लाया एक सेवक ने भट्टजीसे विनयकिया कि चौकाछोड़कर हाथ धोकर शीघ्र गद्दीपर आवैं कि बड़ाभारी सेवक आताहै भट्टजी उस सेवक से बहुत अप्रसन्न हुए और कहा कि भगवत् सेवासे दूसरा मुख्य काम कौनसा है कि जिसके हेतु सेवा छोड़ी जाय ऐसे चरित्र गदाधरभट्ट जी के बहुत और आनन्दके देने वालेहैं ॥

रतवन्तीकीकथा॥

रतवन्ती बाई परम भक्त बात्सल्य उपासक हुई भगवत् भजन और भोग इत्यादिको सामग्रीकी तैयारी में सर्बकाल सदा लवलीन रहाकरतीथी श्रीमद्भागवतकी कथा किसी जगह होतीथी तो नित्य वहां जानेका नियमथा एकदिन भगवत्की रसोईं बनाती थी उसको छोड़कर कथामें जाना उचित न समझा क्योंकि सेवाको विशेषता है अपने बेटेको कथा में भेजदिया उसदिन कथामें यहप्रसंग था कि नंद नन्दन ब्रजचंद्र महाराज माखनको चुराकर अपने मित्रों और बंदरोंको खिला रहे थे और उस खेल और लीलामें लग रहे थे कि यशोदाजी ने यह चरित्र आप अपनी आंखसे देखा और उसीदिन कितने उरहने इसीप्रकार के ब्रजसुन्दरियों के भी पहुंच चुकेथे इस हेतु नंदरानीजीने ब्रजभूषण महाराजको ऊखलसे बांधदिया रतवन्तीजीके बेटेने वहसब कथा आय कर कहि दीनी जिस समय उस लड़के के मुखसे यह बात निकली कि रस्सीसे बांधदिया तो बिह्वल होगई और यह कहा कि यशोदा बड़ी कठोर है उस सुकुमारकोमल अंग परम सुन्दर को रस्सीकी बन्धन कैसे सहि सकीहोगी हाय वह मेरा मनोहर बालक तो ऊखलसे बंधाहो और मैं सुखसे बैठी रहों यह

कहकर उसीघड़ी अपने प्राण निछावर किये और नित्य परम आनन्दको पहुंचकर अपने आंखकी पुतली व कलेजेके टुकड़े श्यामसुन्दर को ऊख-लसे छुड़ाया कि जिसकी माया की फांसीमें करोड़ोंब्रह्माण्ड बँधिरहेहैं॥

जस्सूधरकीकथा॥

देवदास बंशमें जस्सूधरजी ऐसे भक्त दृढ़ हुए कि पुत्र व स्त्री इत्यादि सब भगवत् परायण थे और जिसभाव और भक्तिसे भगवत्में प्रेम और स्नेह था उसीभावसे भगवत् भक्तों की सेवाकरतेथे और रघुनंदनस्वामी के चरित्रों में इतनी प्रीतिथी कि चरित्रोंको सुनकर भगवत्रूपमें बेसुधि होजातेथे यह चरित्र जो रामायण में लिखाहै कि बिश्वामित्र ऋषीश्वर आये व दशरथ महाराज से श्रीरघुनन्दन स्वामी और लक्ष्मण महाराज को मांगा व भक्तबत्सल महाराज ऋषीश्वर के साथ चलनेको तैयारहुए तो इस चरित्रके बर्णन करतेसमय उसी समाज के तद्रूप होगये अर्थात् कहने लगे कि महाराज मैं भी साथ चलताहूं भगवत्ने साक्षात् होकर कहा कि तुम यहां रहो हम थोड़े दिनमें बिश्वामित्रजीका यज्ञ पूरण करके आतेहैं सो जस्सूधरजीने उसरूप माधुरी को सन्मुख देखलियाथा कि जिसकीशोभाके एक कणकीशोभा में कोटान कोट ब्रह्मांडोंकी शोभा होतीहै तो बियोग कब सहाजाय रहने की आज्ञा सुनतेही अपने प्राण भगवत् शोभाधामकी निछावर करके नित्यपरम आनन्दको प्राप्तहुये॥

कृष्णदास की कथा॥

कृष्णदास ब्रह्मचारीके चेले सनातनजीके हुये जब श्रीमदनमोहनजू-महाराज का मन्दिर तैयार हुआ और मूर्ति भगवत् की उसमें बिराज मान हुई तो सनातनजीने कृष्णदासजीको भगवत् सेवामें अति योग्य जानकर भगवत् सेवा उनको सौंपदी सो ऐसे भाव व भक्तिसे सेवापूजा में तत्पर हुये कि जिसमें भगवत् व गुरूकी प्रसन्नता का कारण हुआ तिसके पीछे कृष्णदासजी ने नारायण भट्ट को भक्ति व प्रेमी जानकर अपना चेला किया एकदिन कृष्णदासजी ने भगवत् का शृङ्गार किया व भगवत् छबिको देखने लगे भगवत्के रूपमें बेसुधि व मग्न होगये और इतना प्रेमका तरंग व झोक बढ़ा कि उपाय करने से भी बहुत देरतक

अपने व बिरानेकी कुछ सुधि न रही जिस स्नेह व प्रेमसे शृंगार करते थे उसका वर्णन कब होसक्ता है ॥

संपूर्णता इस भाषान्तर और कुछ वृत्तान्त प्रयोजनी का वर्णन ॥

श्रीराधा कांत वृन्दावन विहारीके चरण कमलोंकी बलिहारी कि मेरे ऐसे अधम व मतिमन्दों को कृपालुता व दयालुता करके अपने चरण के शरणमें राखि-के दोनोंलोकके दुःखोंसे एकक्षणमें निर्भय व निश्चिंत कर देतेहैं विचार करना चाहिये कि जिसकी माया अनंत ब्रह्माण्डों को रचकर फिर नाशकर देतीहै जिसको कोई सहस्रशीर्षा व सहस्राक्ष व सहस्रपाद और कोई निराकार निर्गुण निरवयव अर्थात् विनाअंगवाला और कोई विश्वरूप और कोई योगका परिणाम और कोई सवप्रमाणों का प्रमाण और कोई सब तत्वोंका परम तत्व और कोई चिन्मात्र व कोई कालका भी काल और कोई सव कर्मोंके फलका परम फल बतलाता है और जिसके चरण कमल ब्रह्मा व देवताओं के देवता हैं जिसका रूप अनूप शिवजी के मन मानसका हंस व भक्तोंका आधार है मंगल रूप नाम जिसका सव नामियोंके नामका देनेवालाहै व सब बेद व शास्त्रोंका सारहै जिसकी महिमाके वर्णनमें शेष मौन व शारदा मूकहैं वेदजिसको नेति नेति कहतेहैं व बुद्धि व विचार व अनुमान व तर्कसे बाहरहै सो कहां तो वह स्वामी और कहां मैं अपराध व अघपुंज कि जिसको नरक भी घृणा करताहै सो मेरेऊपरभी ऐसी करुणा व कृपाकरी कि जिसका लेखनहीं अर्थात् जिस भक्तमालका सुनना और पढ़ना अगले जन्मोंके हज़ारों पुण्य व सत कर्म्मके फलके उदयसे प्राप्त होताहै सो भक्तमाल प्रदीपन जो पारसीमें है तिसको अनायास पंजाव देशसे ले आकर प्राप्त करदिया व पारसी भाषासे देवनागरीमें भाषान्तर करके हृदयमें प्रेरना किया कि उस भाषान्तर करनेसे एक एक अक्षरकी चिन्तना व पद पद का अर्थ समझाना और फिर उसको भाषान्तर करना और उसके रसमें आनन्द होना नेत्रोंसे जलकाआना रोमांचित होना व हृदय द्रवीभूत हो जाना व कवहीं प्रेमके तरंगमें कलम हाथका हाथ रहजाना यह सब सुख मुझको प्राप्तहुआ और चारों सम्प्रदायके उपासना इत्यादिके ग्रन्थ जब बहुत संग्रह करते व पढ़ते समझते तब अभिप्राय व सारांश व गुरु प-

रम्परा लिखते सो ऐसे परिश्रम की नदी को उतरने के निमित्त मुझको यह पारसी आरसी सी ऐसी मिली कि जैसे चैंटीको पुल मिलजाय सिवाय इसके यह कृपाकी कि दूसरेकी सहायताको भी न लेने दिया मेरे ही हाथ व लेखनीसे सम्पूर्ण करादिया सो ऐसी कृपालुता व करुणाको विचारकर जो मेरा अल्पभागी मन ऐसे स्वामीके चरण कमलोंमें न लगै तो उससे अधिक भाग्य हीन व शठ कौनहै और यह चरित्र भगवत् भक्तोंके आप श्रीकृष्ण स्वामीको श्री राधिका महारानी व अपने भक्ति महारानी के सदृश प्यारे हैं और बिना निजकृपा कटाक्ष भय किसीको प्राप्त नहीं होती दोनों लोकका मनोर्थ अर्थात् अर्थ धर्म काम मोक्षकी दाता और श्रीकृष्ण स्वामीके स्वरूपको हृदयमें दृढ़ प्रकाशकर देनेवाली है इसहेतु इसके संपूर्ण होनेसे भगवत्की कृपा व धन्य मानना उचित न था काहे कि न जाने यह आनन्द फेर मेरे भागसे मिलै कै न मिलै परंतु यह दृढ़ बिश्वासहै कि जिस कृपासे यह सत्संग प्राप्त हुआ और बहुत काल पर्य्यंत इसमें लगेरहे व मनोर्थ पूर्णहुआ सो कृपा सदाबनी रहैगी और सर्बदाको सत्संग मेरे भागमें बना रहैगा और एक कारण से बिशेष करके कृपाकी आशा मुझको है कि स्वामीके मित्रों व संबंधियों के चरित्रोंको मनसे भाषांतर कियाहै जो कदाचित् अपने चरित्रोंकी रचनाकी मंजूरी नदें तो समर्थहैं परंतु यह कदापिनहीं होसक्ता कि उन के मित्रोंके चरित्रोंकी मंजूरी न मिलै इसहेतु दृढ़ बिश्वासहै कि निश्चय करके रूप अनूप की दृढ़ चिंतवन और स्मरण भजनका धन मुझको मिलैगा जो यह संदेह करूं कि भाषांतरकी वाणी गजबज व स्वामीके रीझके योग्य नहींहै मुझको कौनआशा कुछ मिलनेकी है तो यह संदेह योग्यनहीं क्योंकि यह भाषांतरकी बाणी भदेश व गजबज सुनकर बहुत हँसैंगे व जब हँसनेकी चाह होगी तब इसको सुनैंगे व प्रसन्नहोकर जो धन मैं चाहताहूं सो निश्चय करके स्वामी देंगे और भगवत् भक्तोंकी रीतिहै कि जिसपद व रचनामें भगवत् व भक्तोंके चरित्र व नामहैं उसी को परममंत्र व अच्छाकाव्य समझते हैं जो वह कैसेही बुरे व अवगुण भरे कबिकी रची और काव्य गुणसे रहितहोय इसहेतु साथ बैठनेवाले भगवत्के कि भक्तहैं इस भाषांतरको कि भगवत् और भक्तोंका चरित्र

का स्वरूपहै अतिप्रेमसे सुनकर व प्रसन्नहोकर निश्चय हमारे विनयकी सहाय व सिपारस करेंगे व हमारे मनोकामनाको पूर्णकर देवैंगे अर्थात् भगवत्‌के रूप अनूपका चिन्तवन व भजन मुझको मिलैगा सिवाय इस के यह भक्तमाल एक कल्पवृक्षके स्वरूप है कि भगवत् भक्त तो उसका मूल और चौबीसनिष्ठा जो वर्णनहुई सो शाखाहैं भगवत् भक्तोंकी कथा पत्रहैं और नवीन नवीन अर्थ व भाव सब फूलहैं और भगवत् स्वरूप का चिन्तवन भजनका दृढ़ होजाना यह जिसमें फलहैं सो जबकिसीने ऐसे कल्पवृक्षको सेवनकियाहै तो वहफल मुझको क्यों न मिलैगा और कदाचित् हमारे कोईपाप कर्म ऐसेउदय होजावैं कि इधर तो इससत्संग से अन्तरपड़े और उधर भगवत् भजन व चिन्तवनमें मनलगा तो निश्चयकरके यहबात समझी जायगी कि यह मेरा तन श्वान व शूकर व खर व सर्प्प आदिसे भी निंदितहै क्योंकि क्षुधा पिपासा निद्रा मैथुन इत्यादि सबजीवोंको बराबरहै मनुष्य शरीरकी बड़ाई भगवत् भजनसे है तो जिस शरीरसे भगवत् भजन आराधन नहीं होता वह सबशरीरों से अधम व अमंगलहै जो शिर कि भगवत् व भगवत् भक्तोंके चरणोंमें नहीं झुकता सो शिर बाजीगरके सूमका अथवा कडुईतूंबी और जिसकी जीभसे भगवत् कीर्त्तन नहीं होता सो दादुरकी जीभ और कानसे भगवत् चरित्रश्रवण नहींकिया सो सर्पका बिलजानना चाहिये और भगवत् का दर्शन जिनआंखोंसेनहींहुआ सोआंखेंमोरकेपर अथवाजूतीकासितारा और हाथ बिना भगवत् पूजन सेवाके अधजली लकड़ी के सदृशहैं और चरण जो भगवत् तीर्थों व भगवत् स्थान में यात्रानहीं करते तो सूखे वृक्षके सदृशहैं केवल भगवत् भजनहीसे मनुष्य कहाजाता है नहीं तो श्वासा तो लुहारकी धौंकनीसे भी निकलती है श्वासालेने से मनुष्यनहीं वृथा जन्मलेकर अपनी माताको दुःखदिया और यद्यपि निष्काम भजनकी पदवी उत्तमहै परन्तु जिनलोगोंने संसारी कामनाकेहेतु भगवत् की शरणको लिया है उनको मनवांछित संसारी कामना प्राप्तहुई और होतीहै और अंतको आवागमनके बंधनसे छूटगये और छूटजातेहैं कि वेद श्रुति और गीता व भागवत और सबपुराण यहबात पुकारतेहैं और ध्रुव व सुग्रीव व विभीषण व युधिष्ठिर व उग्रसेन व सुदामा इत्या-

दि हजारों भक्तोंकी साक्षी देतेहैं और यहभी शिक्षा सबको करतेहैं कि भगवत् से बिमुख होकर किसीने सुख नहींपाया न किसी का ऐश्वर्य बनारहा कि जरासन्ध व बेगु व दुर्योधन व रावण व कंस व शिशुपाल आदि की कथा साक्षी है ॥

भगवत् भजनकी महिमाके वर्णनमें— वर्त्तमान लोगोंका वृत्तांत व भगवत् भजन के बिरोधी का ॥

कईबार आपुसमें अच्छे लोगोंके इस बातका वाद बिवाद हुआ कि हस्तिनापुरके बादशाहोंपर एक हज़ार वर्ष के दिनों से बराबर उत्पात घोर किसकारणसे होतेहैं इसके उत्तरमें किसीने तो व्यभिचारकी रीति प्रवर्त्तहोजाने और उसपापसे भांतिभांतिकी पीड़ाहोनीवर्णनकिया किसी ने कहा कि परलोकका भय न रहा व सतधान्यके खानेकीरीति उठगई सबउद्यमी लोगोंने अपने सत्कर्म्मके धान्यमें अधर्म्मका धान्य थोड़ासा मिलाकर सबकोनष्ट करलियाहै किसीने कारण प्रवर्त्तहोने रीतिमिथ्या व धूर्तता व मद्यपान व कपट व द्यूत व चोरी इत्यादि बुरेकर्म्मों का बर्णन किया कोईबोला कि शत्रुता व फूट इस देश में इतनी फैल गई कि सहोदर भ्राता आपुसमें बुरा चाहतेहैं इस हेतु बिराने लोग प्रबल पड़ गये और भांति भांति के दुःखदिये एक किसी ने कहा कि शास्त्र विद्या इसदेशमें कमहोगई अपनमन व दूसरी बिद्यावोंसे वहुतसे अज्ञ व मूर्ख हैं कुलीन लोगों में जो थोड़ी बिद्या का प्रकाश है तो केवल संसार के लाभमात्रका है परलोकका निर्मूल चिन्तवननहीं और दूसरीजाति सब लाभके हेतु बिरानेकी बिद्या व बोल पढ़लिये उसीको पढ़तेहैं स्वप्नमें व भूलकर भी अपनी बिद्याकी ओर चाह नहीं करते सो जैसी बिद्या को पढ़तेहैं वैसाही स्वभाव होजाताहै इसहेतु भगवत्के दरबारसे भ्रष्ट हो गये और होजातेहैं और अनेक प्रकार की पीड़ा दूसरों के हाथसे पाई और पातेहैं किसीनेकहा कि राजालोग अपने धर्म्मसे जातेरहे अर्थात् धर्म्मशास्त्रके अनुसार राजाऐसाहो कि बुद्धिमान व धर्मात्मा बिद्यावान् पूर्ण पण्डित शास्त्र में सावधान सूक्ष्मका समझने वाला न्यायके समय शत्रुमित्रको बराबर जाननेवाला अठारह अवगुण जो हैं मद्यपान हिंसा बिहार स्त्री रत रहना अन्याय दुर्बचन बोलना बाचालुता बिन अपराध

वधकरना प्रजासे शत्रुता खेलकूद इत्यादि इनसबसे बचारहै आठजगह से चौकस रहै अर्थात् गुरु पुरोहित मंत्री कोट किला खजाना कारबारी सबफौज मित्र इतनका सावधानीसे रखनेवाला व साम दाम भेद दण्ड की रीतिका जानने वाला व उसका आचरण करने वाला हो व अपनी प्रजाको दूसरे राजोंके हाथसे व ठग व उचक्का व बटपार व चोर व फेरहा व मूर्ख व मद्यपी व धूर्त्त व जान मारनेवाला और दूसरे सबदुष्टों से अच्छेप्रकार की रक्षा में अपने प्राण के सदृश रखकर सब को अपने धर्म्म में स्थिर व दृढ़ राखै और कारिन्दा लोग औ पुंश्चली स्त्रियों से अति अधिक रक्षा प्रजाकी करै कि यह दोनों प्रबल प्रेत राजाको झूठ मूठ मीठी मीठी बातें कहकर अपने वशमें करलेतेहैं इसीहेतु मंत्री बुद्धिमान व परलोकका भय करनेवाला व समझदार व विद्यावान्को रखना शास्त्रोंमें लिखाहै सो ऐसेराजा अपने प्रजाको रक्षाकरके धर्म्मपर स्थिर रखतेथे अबके राजोंका वह वृत्तांतहै कि नहीं कहना अच्छा सूक्ष्म कर कहतेहैं कि सब विपरीत शास्त्रके आचरणहैं प्रजाकी रक्षा व पालनकी जगह अन्याय व लूटपाटहै व धर्म्मकी जगह अधर्म्म व विद्याकी जगह मूर्खता है व चतुराई की जगह अज्ञता व लाघवताकी जगह असावधानता है कारिन्दा व बकशी व मंत्री आदि ऐसेहैं कि विद्या जानना व धर्म्म की प्रवृत्ति व प्रजाका पालनतो अलगरहा निज आप तीनों बात के नष्ट करनेको लगेहैं औरशुभ चिन्तना व धर्म्म निष्ठताका यहवृत्तांत है कि राजाका राज्य जातारहैतो जूतीसे परंतुकिसीप्रकार उनको मुद्रा लाभहोय कोई राजालोगोंके निमित्त यह दृष्टांत योग्यहै कि किसी वन में जङ्गली जीवों काबादशाह एक बंदरथा बिल्ली व मूसा एक रोटी के बांट करानेकहेतु उसकेपास गये बादशाह साहब ने उस रोटी के दो टुकड़े करदिये परन्तु एकबड़ा होगयाथा उसका भोजन करना प्रारम्भ किया दोनों फिरयादी ने कारण भोजन करने का पूछा तब बादशाह साहब ने आज्ञा किया किदूसरेके बराबर करताहूं खातेखाते वह छोटा होगया तो दूसरेका भोजनकरना आरंभ किया और इसी प्रकार बराबर करते वह रोटी समूची चट करगये भला जब राजों का यहवृत्तांतहै तो प्रजा आदि दरिद्र वदुःखी क्यों न तुरन्त संकटमें पड़ें और जब कि

एकगरीब की आहसे एक बड़ादेश भस्महोने सकताहै तो जिसराज्य में लाखों गरीबोंकी आहहो क्यों न जातारहै व क्यों न विध्वंसको प्राप्तहो पीछे एककिसी ने कहा कि धर्मके चार चरणथे सत्य १ शौच २ दया ३ दान ४ यहीशास्त्रोक्त धर्मोंके मूलथे सो कलियुग के प्रभाव करके उन चारोंचरणों में महाबिघ्न उत्पन्नहुआ व मनुष्य पापी व अपराधी होगये इसहेतु दूसरेके हाथसे उनपापोंका दण्डहुआ औरहोतेहैं इसीप्रकार के कारण बहुतलोगोंने अपनी बुद्धि व समझके अनुसार कहि सुनाये सबसे पीछे एकपुरुष बुद्धिमान व सर्वज्ञ व भगवत्भक्तने कहा कि मुख्यकारण छूटजाने राजोंके राज्यका व उठजाने शास्त्रोक्त धर्मोंका व प्रवर्तहोने अपने धर्म व प्राप्तहोने अनेक महा उत्पातोंका यहहै कि भगवत् का भजन व आराधन न रहा जो वह प्रवर्तमान रहता तो कदापि नहीं किसीप्रकार का बिघ्न किसीबातमें होता व न कलियुगका कुछबल चलता और कारण लुप्तहोजाने भगवत् भजन व आराधन का यहहै कि कोई पन्था तोलोगों ने ऐसी चलाई कि बेद व शास्त्रसे सबबातें बिरुद्धहैं और कोई ऐसी चली कि यद्यपि मूलउसका शास्त्रसे जामिलताहै परन्तु प्रवृत्ति में उसकेअगिले आचार्य अथवा पिछले आचार्यों से उसपन्थाई की ऐसीभूल व चूक होगई है कि उनके अनुयाई व पन्थाईवाले इधरके हुये न उधरके व निन्दित धर्म कर्ममें रतहैं और कोई लोगोंने कलियुग व पाप कर्मके प्रभावकरिके नरककुण्ड के भरनेके निमित्त शास्त्रका अर्थ बिपरीत समझ लिया और एक पंथाईके बहाने से त्याज्य व बर्जित बस्तुके खानेपीने व बिषयभोग इन्द्रियोंका मजा आनन्द खूब अच्छेप्रकार उड़ाने लगे धन्य यह पंथाई व धन्य समझ अधिक सोच इसबात का यहहै कि इनलोगों ने शास्त्रका सिद्धान्त व अर्थ तनकभी नहीं समझा सिवाय इसके हमारे अग्रजलोग आप निर्बल होगये और थोड़ेसे जो शेषहैं तो उनके आचरण व बचन के प्रभाव व अनुसार करिके थोड़ाबहुत परम्परा भजनका प्रवर्तमान है सिवाय इसके एकबड़ा अनर्थ यहउत्पन्न हुआ कि कोई कोईलोग जो कि आप संसार गर्तगम्भीर व अन्ध व संकीर्णमें बिना हाथ पांवके पड़े हैं परन्तु किसी ऐसे कोईसे कि वहभी उसीगर्त में उससे अति अधिक दीन व दुःखीहैं बड़ाई किसी ऐसे बादशाह की कि चौमहले के ऊपर है

और चौमंजिलें महलके ऊपर चढ़जाने पर जाने मिलै कै न मिलै और एकएक महलका चढ़ना हज़ार जन्ममें भी कठिनहै व चढ़जाने पर भी गिरनेका भय अनुक्षण बना रहताहै तिसको सुनकर विना चारोंमहल पर चढ़े विना पनारेके सहारे इच्छापहुंच जानेकी रखतेहैं आश्चर्य यह कि उसमहल पर पहुंचना तो दूररहा उस गड़हेसे भी उनके निकलने का भरोसा नहीं और उसपरभी मज़ा यहहै कि ऐसी मतिमन्दता व मलीन समझपर दूसरे लोगोंको अपना संघाती बना लेनेमें चूकतेनहीं विष्णुपुराण में उन लोगों के निमित्त जोकुछ लिखा है सोठीक है इन लोगों के सिवाय एक और यूथ ऐसाही है कि जिनके कारणसे भजन और धर्मकी जड़ निर्म्मूल होगई और ऐसा प्रवर्तमानहै कि जैसा सत-युग में भगवत् भक्तों का यूथथा नाम उनका दुष्ट व विमुख व खलहै वर्णन व उनकी बड़ाईकी भगवत् भक्तोंके चरित्रसे दूना तिगुना बिस्तार है थोड़े में लिखतेहैं॥ उपासना उनकी यह है कि शास्त्रविरुद्ध आचरण करना यही कर्म व भागवद्धर्म है दूसरों के अवगुण व दुष्ट कथा और दुष्टों के चरित्र सुनना यह उनकी श्रवण निष्ठा है मिथ्या व चुगली व निन्दा व गाली देनेका रातदिन कीर्तन करतेहैं जैसै पोशाक और छबि से हिंदू जनाईपड़ै ऐसी पोशाक व छबि बनानी यह उनकी भेष निष्ठा है मदिरा वेचनेवाले व जुवा खेलनेवाले व जो बड़े धूर्त व कपटी व मिथ्या बोलने में व निर्लज्जतामें अभ्यासरखताहो ऐसेसब उनकेगुरुहैं वेश्याओं व पराई स्त्रियों व लड़कोंका भगवत्मूर्ति से भी अधिकसेवन करते हैं विनाकारण किसी की हानि करदेनी व जीवहिंसा व कपट मिताई व लड़ाई व क्रोध यह उनकी दयाहै मद्यपान करना व वर्जित वस्तुका खाना यहउनका चरणामृत व महाप्रसादहै दिनरात नाचराग रंग कुत्सित इतिहास पढ़ना खेलकूद लीला तमाशा चकलेकी गैर गलीनमें घूमना और ऐसेही काम में रहना यहउनका सत्संगस्थान है भगवद्भक्तों और साधु सन्यासी आदि की निंदाकीरचनाकरनी यही उनकी साधु सेवाहै सत्यबातको भी मिथ्या समझलेना और संदेहयुक्त रहना व एककामव स्मृतिकी आज्ञामें मन्मुखीतर्क उत्पन्नकरके उसकेअनु-कूल न आप आचरण करना न दूसरेको आचरण करनेदेना यह उनका

ज्ञानहै भगवत् व भक्तोंके चरित्रोंसे इतनाबैराग्यहै कि कबहींस्वप्नमेंभी स्मर्णनहींहोता चाह व खोटापन व लालच व कामोल्लास व गर्व्व व दंभ व असत्यतासे मिताई है और जोउनके अनुकूल कामकरै साईउनकासंबंधी और प्रियहै अर्थके किंकर हैं और जिससेकुछ मिलैतिसके शरणागत मद्यस्थान व द्यूतस्थान व बिजयादिका स्थान और वेश्याओंका मकान व कुसंगियोंका स्थानजिनका तीर्थ औरधामहै कईबार अथवा बहुतभोजन करना यहउपासहै ऊपर लिखिआये सो आचरण व कर्मको सुनकर व मनलगाकर बिचार करके दिनरात उसमें प्रसन्नरहना और दूसरी ओर चाह नहोनी यह उनलोगोंका दृढ़प्रेमहै परमधाम अर्थात्मुक्ति उनकी वह नरक है कि जिससेन निकलें और जिनकोसुनके हृदय कांपि जाय ऐसे कठिन व अपार दुःखोंका प्राप्तहोना यही उसमुक्ति का सुखहैकाम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर उसके आदि आचार्य हैं अग्रगामी व प्रकाशक व प्रवर्तक उसके वे महाराज धर्मवान् अथवा आज्ञा चलाने वाले अथवा कुलीन व पुराने घरानेदार अथवा लंपटों व सोहदोंके प्रधानलोग हैं कि जिनको भगवद्भजन में प्रीतिनहीं काहेसे कि जैसा आचरण उन का दूसरेलोगों ने देखा वैसाही आचारण किया भगवत्ने गीतामें कहा है कि यद्यपि मैं शुभ अशुभ कर्म्मों से बन्धमान होने के योग्य नहींहूं परन्तु लोक संग्रहके निमित्त सबकर्म्म आप मैं करताहूं जो मैं कर्म्मोंको छोड़दूं तो दूसरेलोग भी मेरे अनुसार आचरणकरैं और सबका नाशहो जावै इससे निश्चय होगया कि उन चारों प्रकारके लोगोंसे जो ऊपर लिखआये सब अनर्थों व अधर्मों की प्रवृत्ति हुई कुछ निन्दा किसी को कोई न समझै केवल स्मृति व शास्त्रकी शिक्षा लिखदेनेमें कुछअनुचित न समझी एकादशस्कन्ध की टीकामें श्रीधरस्वामीने क्रमसेनीच व नष्ट लोगोंका बर्णन करके समाप्तता राजोंके सेवकों पर लिखी और स्मृति का बचन भी उसके अनुसार पाया और एकबचन सारे संसार की कहनावतहै कि खेतीकी वृत्ति उत्तमहै व बाणिज्य मध्यमहै और सबसे नष्ट चाकरी की है सो कारण इसके नष्टता का यह है कि सब शास्त्र व सब सम्प्रदाय व मत की राह मनके एकाग्रहोने के निमित्त हैं कि उसी को निर्मल मान सक्ते हैं और जब मननिर्मलहुआ तब भगवत् मिलताहै

और मनके एकाग्र होनेके निमित्त दयाका होना विशेष से विशेष चाहिये मुख्य साधन है सो इस चाकरी की वृत्ति में दोनों बातनहीं हैं अर्थात् वे विश्वासता स्वामी से इतनी है कि कदापि मनसुस्थिर नहींरहता ऐसा दूसरीवृत्ति में नहींहै और निर्दयपन इस अधिकाईसे है कि भारीपीड़ा व दुःखको राजसेवकलोग एकबात प्रवन्धवाली व रीति व पद्धति अपने स्वामीकी समझते हैं भला जबकि वेमुख्यबातें दोनों जोकि दृढ़ साधन व विशेष कारण भगवत्के मिलनेका इसवृत्तिके प्रभाव करके जातारहै तो सबवृत्तिओंमें यह वृत्ति नष्ट व निकृष्ट क्यों न गिनीजाय और क्यों न शास्त्रोंमें उसकी निन्दा लिखीजाय अभिप्राय इसलिखनेसे यहहै कि एक तो यह वृत्तिनष्ट तिसपर जो इस वृत्तिवाले भगवत् भजनकरें तो अपनी अन्तदशापर अच्छे शोच करलें कि क्या होनी है और जो ऐसी निन्दित वृत्तिके प्राप्तरहने पर भी भगवद्भजन करैंगे तो उसका अंत समयका फलभी देखलें कि सबसे उत्तम पदवी उनको क्यों न मिलैगी अभिप्राय कहनेका यहहैकि जब भगवद्भजन रूप चन्द्रमाको कृष्णपक्ष की चतुर्दशी है तो उस भगवद्भजन में हानि काहे न होय और उस परम धर्म्मकी परम्परा काहे न भङ्गहोजाय और दूसरे लोगोंके हाथसे भांति भांति की पीड़ा काहे न होय सो भगवद्भजन सार व तात्पर्य्य सब शास्त्रोंका है जिसप्रकार होसकै भजनमें मनलगाना उचितहै और जानेरहो कि ब्रह्मा जो कि सबसेबड़ा है सो भी बिना भगवद्भजन इस संसार समुद्र से नहीं उतर सक्ता है ॥

मुक्ति का वृत्तान्त व स्वरूप ॥

जगह जगह इस ग्रन्थमें हुआ कि भगवत् आराधन व सब मतोंका फल मुक्तिहै उसीकेनिमित्त सबपरिश्रम करतेहैं सो वर्णनकरना चाहिये कि मुक्ति किसको कहतेहैं और वहकौन वस्तुहै सो जानेरहो कि जैसा ज्ञानशब्दके वर्णनमें हरएकमत व शास्त्र के न्यारे न्यारे अर्थ व सिद्धांत हैं इसीप्रकार मुक्तिकी निर्णयहै कथनका भेदहै नहींतो अभिप्राय सबका एकही निकल आताहै अर्थात् किसीने संसारके आवागमनसे छूटने को मुक्तिका स्वरूप बयानकिया और किसीने कहाकि सब दुःखदूर होकर नित्यसुख होनेकोमुक्तिकहतेहैं॥ और किसीने मायाकेगुणोंसे अलगहोने

को और किसीने सुख दुःख दोनोंके न रहनेको और किसीने परतंत्रता से छूटकर स्वतंत्र होजाने को और किसी ने शरीर व मन दोनों का न रहना॥ और किसीने सब तत्त्व व पंचमहाभूत को ईश्वर में मिलजाने को॥ और किसीने मायाका नाशहोजाना मुक्तिकारूप बतलाया परंतु मुख्यबात जो शास्त्रोंके सिद्धांतके अनुसार मालूमहुई सोयहहै कि ब्रह्म-स्वरूप होजानेका नाम मुक्ति है यद्यपि शाब्दिक अर्थ मुक्ति शब्द का छूटनेका है परन्तु जबतक ब्रह्मस्वरूप न होगा तबतक कब छूटसक्ताहै इसहेतु ब्रह्मस्वरूपहोना सिद्धांत व सारठहरा व ब्रह्मस्वरूप सो होता है जो भगवत् कृपासे मायाकी फांसीसे छूटजाताहै अब यहबाद उत्पन्न हुआ कि शास्त्रोंमें मुक्तिके चारनाम लिखेहैं और ऊपरकी लिखावट से केवलएकमुक्तिअर्थात्ब्रह्मस्वरूप होजाना जाननेमें आताहैतो विरुद्धता कीबातक्याहै सोजानेरहो किवास्तवमें तोमुक्ति केवल ब्रह्मस्वरूपहोने का नामहै परन्तु शास्त्रोंने जो चार नामसे बिख्यात किया है तो कारण यहहै कि भगवत्को सबदशामें अपने भक्त के मन की चाह पूर्णकरनी अङ्गीकार रहताहै और वेभक्त वहांभी उसी अपने भावकी चाह करतेहैं कि जिसभाव व कैङ्कर्यके प्रभाव से ब्रह्मस्वरूप होने की पदवी उनको प्राप्तहुई इसहेतु उस एक मुक्ति अर्थात् ब्रह्मस्वरूप होनेके चार प्रकार शास्त्रों ने लिखे हैं॥ प्रथम सार्ष्टि अर्थात् परमात्मा के समान ऐश्वर्य्य काहोना॥ दूसरी सालोक्य अर्थात् उस परमात्मा के लोकमें रहना॥ तीसरी सारूप्य अर्थात् परमात्मा के स्वरूप ऐसा स्वरूप धारणकरके वहां रहना॥ चौथी सामीप्य अर्थात् भगवत् के समीप रहना॥ सा-युज्य पांचई है अर्थात् भगवत् में मिलजाना उस का नाम भी सार्ष्टि को कहतेहैं कि इसमें किसीका तो यह निश्चय है कि भगवत्में एकहो जाना और फिर खोज उस जीवका उसलोक में न रहना उसकानाम सायुज्यहै और किसीका यहबचन है कि यद्यपि भगवत् में जीवमिल जाताहै परंतु उसजीवको भगवत् में अपने मिलजाने का ज्ञान बनारह ताहै जिसप्रकार कोई पुरुष नदीमें डुबकी लगाता है यद्यपि किसीको नदीसे भिन्न वहदृष्टिमें नहींआता परंतु उसडुब की लेनेवालेको अपने डुबकी लेनेका वृत्तान्त स्मरण रहताहै और किसीका सिद्धांत सायुज्य

शब्दसे सहयोगका है अर्थात् भगवत् अंगसे अंगका संलग्न होना॥ सो जिससमय उपासककी उपासना परिपक्वताको पहुंचतीहै उससमय जीवन्मुक्त कहलाताहै और परमधाम जानेकी इच्छाहुई तब इसदेहको छोड़कर लिङ्गशरीरको धारणकरताहै फिर भगवत् पार्षदोंके साथ उस राहसे कि कुशीतकी उपनिषद व आठयें अध्याय गीताजी में अग्नि व सूर्य औरशुक्लपक्ष और छःमहीने उत्तरायणके देवताओंका वृत्तांतलिखा है यात्राकरके जो मायाके गुण जैसे पृथ्वी जल अग्नि पवन आकाश व अहंकार जो यह छःनित्यहैं उनको एक एकके आवरण में छोड़ता हुआ अर्थात् पृथ्वी की आवरण जबभेदन करचुका तो पृथ्वीके सबतत्वों को वहीं छोंड़दिया जलके आवरणमें जामिला इसीप्रकार दूसरे आवरणों को भेदन करताहुआ इन्द्र व ध्रुव व ब्रह्मा इत्यादिदेवता व ऋषीश्वरोंसे पूजा आदर सत्कार ग्रहणकरताहुआ इस ब्रह्माण्ड से वाहरहोता है जानेरहो कि पृथ्वीकी रज और जलकी सीकर जो गिनजायँ तो गिन जायँ परन्तु ब्रह्मांडोंकी गणनानहीं होसक्ती सो सब आवरणों के भेद न करने पीछे विरजानदी पर कि वहप्रभाव व प्रकाश पूर्णब्रह्म परम सच्चिदानंदकाहै पहुंचताहै और उसमें स्नानकरके लिङ्ग शरीरको छोंड़ देताहै और दिव्यशरीर निर्विकार प्रकाशवान् ज्ञानानन्द स्वरूप को धारण करके मायाके जो गुणहैं उनसे अलग व निर्लिप्त होताहै और फिर उनगुणोंसे संबन्ध नहीरहता वहांसेआगे जोदूसरे स्थान सबनित्य मुक्त इत्यादि भगवद्भक्तों व पार्षदोंके हैं उनके और वहांके रहनेवालों के दर्शन करताहुआ और उनसे पूजा व सत्कारको प्राप्त होताहुआ अपने स्वामीके निजविवास स्थानके द्वारपर पहुंचता है कि किसीके सिद्धांतमें वह वैकुंठहै और किसीके गोलोक औरकिसीके अयोध्या तब पार्षदलोग व द्वारपालक सब दंडवत् व महा सत्कार करने पीछे भीतर लेजाते हैं वहां की झलक व तड़प व प्रभाव व प्रकाश पूर्णब्रह्म परमात्मा का कि उसी से सब स्थान व वाटिका फुलवाड़ी व जल यन्त्र व जलप्रणाली व कूप व मार्ग इत्यादि जो कुछ मन व विचारके बुद्धि को देखने में आवें तैयारहैं सुख दर्शन करताहुआ अपने स्वामीकेपास पहुंचताहै और वहां भगवत् पूर्णब्रह्म परमात्मा सच्चिदानन्द घन स्वामी और उनकी परम

प्रिया व उनके निकट निवासी की ओरसे सब रीति प्यार व दुलार व प्रेम कृपा व दया कि इस पहुंचनेवाले पर होती है बोलबतराव होने पीछे उस समय यहकहताहै कि मैं नित्य निर्विकार ज्ञानानन्द स्वरूप प्रकाशवान् ब्रह्महूं अबतक मायाके जालमें फँसाथा अब आपकी कृपासे छूटा अपने स्वरूपको प्राप्तहुआ पीछेउसके चाहेभगवत् स्वरूपमें मिल जाय अथवा वहीअधिकार व सेवाउसको मिलतीहै कि जिसओर चाह उसकीहै और परमानन्दमें निश्चल व मग्नहोकर उसपरमपद में वास करता है यद्यपि आप इतना बल व सामर्थ्य रखता है कि कोटान कोट ब्रह्माण्डोंको उत्पन्न करके पालन और नाश करदेवै परन्तु उसब्रह्मानंद के स्वादमें ऐसा मग्न रहताहै कि दूसरीओर चाह नहीं होती जो कुछ बेद व शास्त्र और सम्प्रदायवालों के सिद्धांत के अनुसार समझ में आया लिखा गया और कोई कोई बात का बिषेष बर्णन व निर्णय इस हेतु न किया कि किसी एक सम्प्रदायके सम्बन्धमें वह होजायगा और चाहना यहथी कि सबसम्प्रदायवाले अपने निश्चयके अनुकूल अपना अर्थ सिद्ध करलेवैं सो ऐसेही अक्षरों से वहां लिखागया॥

निर्गुण पंथ और भक्तिमार्गमें बिशेषता किस को है इसबातका वर्णन॥

अब एक यह सन्देहहुआ कि बहुतसेलोग भक्तिमार्गपर ज्ञानमार्ग की बड़ाई बर्णनके श्रुति व शास्त्रोंके बचनको प्रमाण देकर मुक्तिकाहोना निर्गुण ब्रह्मके ज्ञानहोनेपर बर्णनकरतेहैं और इस भक्तमालमें आदिसे अन्त पर्य्यंत बड़ाई और महिमा भगवत् भक्ति और सगुण ब्रह्म की बर्णन होकर उसी के प्रभाव करके उद्धार का होना बर्णन हुआ सो इन दोनों मार्गोंमें बास्तव करके बड़ाई किस मार्गको है और किससे मुक्ति मिलतीहै सो उत्तर पीछे लिखेंगे यहबात जाने रहो कि बास्तव करिके मुख्य अर्थ ज्ञान शब्द का ईश्वर माया जीवके स्वरूप जानने के हैं और निर्गुण ब्रह्म का अर्थ यहहै कि मायाके गुणों से वह परमात्मा अलग निर्लेपहै परन्तु कोईकोई लोग ज्ञानशब्दका तात्पर्य जीव व ईश्वरके एक होने से समझते हैं और ईश्वर को अब्यक्त मानते हैं स्वरूपवान् नहीं मानते और उसको निर्गुण ब्रह्म बिख्यात करते हैं सो इस बादानुबाद में उन निर्गुण मतवालों के निश्चय के अनुसार दोनों पद के अर्थात्

ज्ञान पद व निर्गुण पद के अर्थ को समझना चाहिये और सगुण पद का तात्पर्य उपासकों व भक्तोंके इष्टदेवसे और मुख्य अर्थ सगुण स्वरूप का आगे लिखेंगे व जो संदेह ऊपर लिखआये तिसका उत्तर पहिलेही श्रीकृष्ण स्वामी ने अर्जुनसे गीता में वर्णन किया है अर्थात् अर्जुन ने भगवत्‌से पूछा कि दोनों मतोंमें से कौनसा मार्ग उद्धारके निमित्त विशेष तरहै भगवत् ने आज्ञाकी कि जो मेरे में मन लगाकर विश्वास से मेरी उपासना अर्थात् मेरी भक्ति करतेहैं सो योग्यतम अर्थात् बहुत अच्छे हैं और जो निर्गुण अर्थात् अरूप व अव्यक्त जानकर उपासना करतेहैं यद्यपि वेभी मुझको प्राप्त होंगे परन्तुक्लेश बहुत अधिक उसमेंहैकाहे कि अव्यक्त अर्थात् अरूपकी उपासना और प्राप्तिमें दुःख व परिश्रम बहुत है फिर ब्रह्मस्तुतिमें ब्रह्माजी का वचनहै कि हे महाराज जोकोई अपने आपको मुक्तहोनेका गर्व मानकर आपकी भक्ति नहींकरते और शुष्क-वाद विवादमें बड़े बुद्धिमानेहैं जोवे बड़ेकष्टसे किसी उत्तम पदको पहुंच भी जावें तो फिर गिरपड़तेहैं किसहेतु कि आपके चरण कमलसे विमुख हैं और जिन लोगोंने आपके चरण कमलोंमें मनलगाया है सो लोग बड़े २ देवतोंके ऊपर होकर वहां पहुंचतेहैं कि जहांसे फिरनहीं फिरते तीसरे स्कंधमें कपिलदेवजी ने अपनी माताको उपदेशकिया कि भगवत् भक्ति सिद्धहै अर्थात् निर्गुण ज्ञानसे अधिकहै जो निष्कामहो फिर कैसे हो कि इन्द्रियां व उनके देवता व मन सब भगवत्‌में लगजावें पद्मपुराण में लिखाहै कि ज्ञान और योग इत्यादिसे क्याहै केवल भगवत् भक्तिही मुक्तिकी देने वालीहै भागवत का वचनहै कि हे महाराज जो तुम्हारी भक्तिको छोड़कर केवल निर्गुणज्ञानके लाभके हेतु क्लेश व दुःख उठातेहैं उनको केवल दुःखही हाथ रहताहै जिसप्रकार भूसके कूटनेवालोंको कि सिवाय दुःखके दूसरा कुछ हाथ नहींलगता और जिनलोगों ने अपने सब कर्मोंको आपके समर्पण कियेहैं और तुम्हारे चरित्र सुनतेहैं वे तुम्हारी भक्तिको पाकर मुक्त होजातेहैं यद्यपि इन वचनोंसे ज्ञानमार्गपर भक्तिमार्गकी बड़ाई व विशेषता स्थिर व सिद्ध होगया परन्तु मनको यह उमंग हुई कि थोड़ा औरभी वृत्तांत लिखाजाय सो कुछ लिखताहूं और सब पुराणोंमें श्रीमद्भागवतको प्राधान्यता है इसहेतु प्रमाणके निमित्त

कुछवचन भागवतके लिखे जावेंगे दूसरेपुराणोंके वचन लिखनेका कुछ प्रयोजन नहींसमझा और जानेरहो कि चारोंबेदका सार उपनिषद और सब उपनिषदोंका सार गीता उपनिषदहै और निर्गुण व सगुण मतके सब उपासकोंने उसगीताके बचनका प्रमाण दृढ़करके अंगीकार किया है इसहेतु कि जैसा बेद भगवत्‌के मुखसे उत्पन्नहुआ ऐसीही यहगीताहै सो उसके मुख्य सिद्धान्तके कोई २ बचनोंको तर्जुमा करके लिखूंगा भागवतमें भगवत्‌का बचनहै कि भक्तियोग जो विख्यात है और मैंने बर्णन कियाहै उसके प्रभाव करके तीनोंगुणोंसे अर्थात् मायासे छूटकर जीव मेरेभावको प्राप्त होताहै ॥ बचन दूसरा मेरेभक्त सारूप्य इत्यादि मुक्तिको मेरे देनेपर भी नहींलेते केवल मेरीभक्ति चाहतेहैं ॥ बचन तीसरा मेरे भक्त स्वर्ग और धरतीपरके सबसुख कदापि नहीं चाहते हैं परन्तु मेरी भक्ति चाहतेहैं ॥ बचनचौथा मेरेभक्त कैवल्यमुक्ति को भीनहींचाहते यद्यपि मैं देताहूं ॥ बचनपांचवां दूसरेबचन के अनुसार कुछथोड़ान्यून बिशेषहै हे अर्जुन मेरेही में मनलगावै और मेराही भक्तहो और मेरेही निमित्तयज्ञ करै अर्थात् जपकर और मुझीको दण्डवत्‌कर कि मुझही को प्राप्तहोगा यह सत्य कहताहूं इस अध्यायसे बहुतअच्छे प्रकार निश्चय होगया कि ज्ञान व विज्ञान केवल भक्ति हैं दसवेंअध्याय में भगवत् ने अपनी बिभूति स्वरूप का बर्णनकरके ग्यारहवें अध्यायमें अपना स्वरूप अर्जुनको दिखाया औरकहा कि न मैं बेदोंसे न तपसे न दानसे नयज्ञ से देखनेमें आताहूं कि जैसा हेअर्जुन तूनेदेखा और यहभी कहाकि अनन्य भक्ति से मिलताहूं जैसामैंहूं इस अध्यायसे भी यही सिद्धांत ठहरा कि भगवत् केवल भक्तिसे जानाजाताहै बारहवें अध्यायमें संपूर्ण भक्ति का बर्णन हुआ दूसरी चर्चा कुछ नहीं और निज अभिप्राय उसका इस बिबादके आरंभमें बर्णनकर चुकाहूं तेरहवेंअध्यायमेंयद्यपिभगवत्‌भक्ति का बर्णन एक जगह हो चुकाहै परन्तु वह अध्याय आरम्भ से समाप्ति पर्यन्त ईश्वर माया जीव और दूसरे तत्वों को बर्णन करताहै चौदहवें अध्यायमें भगवत् ने मायाके तीनोंगुणों का बर्णन करके अंतमें कहाकि जो मुझको दृढ़भक्ति से सेवनकरतेहैं सो उन तीनोंगुणोंसे छूटकर ब्रह्म स्वरूप होने के योग्य होते हैं पंद्रहवेंअध्याय में भगवत् ने अर्जुन को

शरणागती मंत्र उपदेशकिया और जीव तटस्थसे अपनेआपको अलग पुरषोत्तम नामसे वर्णनकरके कहाकि जो मुझको पुरषोत्तम जानताहै सो सबप्रकारसे मेरा भजन करता है यह अतिगुप्तबात तुझसे मैंने कहीहै हेअर्जुन जिसको जानकर कृतकृत्य होजावै भगवत्के इस वचनपर अच्छे प्रकार विचारकरना चाहिये कि निर्गुणमार्ग कब सिद्धांतरहा अर्थात् भगवत्ने जीवको पुरषोत्तमसे अलग बर्णनकिया और कृतकृत्य होनेका निश्चय पुरुषोत्तमके जाननेपर समाप्तकिया तो बिना परिश्रम और बिना सन्देह प्रकट व दृढ़ होगया कि ईश्वर सगुण स्वरूप है और भक्तिसेजाना जाताहै सोरहवेंअध्याय में विमुख व असुर भावका वर्णन है सत्रहवें व अठारहवें अध्याय में सबप्रकार के कर्म धर्म वर्णन करके अन्त में भगवत् ने कहा कि जिस प्रकार ब्रह्मको प्राप्तहोता है सो ज्ञाननिष्ठा संक्षेपकरके कहताहूं बुद्धिसे मनको एकाग्र करके और इन्द्रियोंके स्वाद व द्वैतअर्थात् दुःख सुख मित्रता शत्रुता इत्यादि को त्यागकरके एकान्तमें छठवांवचन भगवत्ने गोपियोंसे कहा कि अच्छा हुआ तुम्हारी प्रीति मेरेमें हुई काहेसे कि मेरी भक्ति निश्चय करके मुक्तिकी देनेवाली है॥ बचन सातवां वेदकरके क्याहै और बड़े शास्त्रों से क्या है और तीर्थ सेवनसे क्या है मेरी भक्तिही अर्थ धर्म काम मोक्ष की देनेवाली है॥ आठवां वचन शुभकर्म व योग इत्यादि सबका यह फल है कि भगवत् में भक्तिहो और वह भक्ति मुक्ति इत्यादि सबपदार्थों को देती है॥ गीताजीके प्रथमअध्याय में गीताशास्त्रके वर्णन का कारण लिखाहै दूसरे अध्याय में जीवका स्वरूप और सांख्ययोग का वर्णन है तीसरे अध्याय में कर्मयोग कहा है चौथे अध्यायमें ब्रह्मयज्ञका कथनहै पांचवें अध्यायमें सन्यास योग कहा है छठयें अध्यायमें मन और इंद्रियों और आत्माको स्थिर करनेका योग है योगके वर्णकरनेके पीछे छठयें अध्यायके अंतमें भगवत्ने कहा है कि जिसकिसीका मन मेरेमें लगाहै और सच्चेमनसे मेराभजन करता है सो सब योगियोंमें युक्ततम अर्थात् सबसे उत्तम है इस बचनसे दृढ़निश्चय होगया कि छहों अध्याय में जो सब मार्ग लिखेहैं तिनसब में भगवत् भक्तिही की बड़ाई है सातवें अध्यायमें लिखाहै कि बहुत जन्मोंके पश्चात् ज्ञानवान्होकर तब मेरी

शरण होता है इस बचनसे यह बात स्थिरहुई कि ज्ञान एक अंगभक्ति का है फिरउसी अध्याय में लिखाहै कि मुक्ति के निमित्त जो मेरे शरण होकर सेवन करते हैं सोई ब्रह्म और सोई उसके जाननेवाले और सोई अध्यात्मज्ञानी और सोई सब कर्मोंके जानने वालेहैं फिर लिखाहै कि जोकोई मुझको अनन्यजानकर मेराभजन करतेहैं उन योगियों को बहुत सहज से मिलताहूं आठवें अध्यायमें भगवत्का बचनहै कि वह परम पुरुष अर्थात् भगवत् अनन्य भक्तिसे जानाजाताहै नवेंअध्यायके आरंभमें भगवत्का बचनहै कि ज्ञान व बिज्ञान सब तुझसे कहताहूंऔर उनसब अध्यायोंमें अपनास्वरूप ईश्वरताका बर्णनकरके मिलनाअपना अपनी भक्तिसे बर्णनकिया और अपने मिलने का उपाय बर्णन करके अंतमें लिखाकि मेरे शरण होनेसे स्त्री शूद्र वैश्यइत्यादि भी तरजाते हैं ब्राह्मणोंको तो कुछ कहनाही नहीं इसहेतु बैठकर गर्ब व चाहना आदिसे छूटा हुआ ब्रह्महानेके योग्य होताहै तिसके पश्चात्ब्रह्ममें एकाग्र होकर न शोचहै न कुछ चाहना है और सब जीवमात्र को बराबर देखताहै सो मेरी पराभक्ति को पहुंचताहै भक्तिहीसे जानाजाताहूं वास्तव में जैसाहूं उसीभक्तिसे मुझको जानकर वहभक्त मेरेमें बासकरता है अर्थात् मुझ को प्राप्तहोता है उसके पीछे सबके अंतमेंकहा कि अतिगुह्य तम परम बचन फिर तूसुन क्योंकि तू मेरामित्रहै और मेरेमें तेरीमति दृढ़है इस हेतु तेरे कल्याणहोने के निमित्त वहसिद्धांत कहताहूं कि मेरेही में मन लगाव मेराहीभक्तहो मेराही यज्ञ अर्थात् जपकर और मुझहीको दण्ड-वत् कर मुझीको प्राप्तहोगा सच्च कहताहूं कि तूमेरा प्याराहै सबधर्मों को छोड़कर एकमेरे शरणहोने से मैं तुझको सबपापों से छुड़ादेऊंगा शोच मतकर इसउपदेश करनेपर पीछे भगवत्ने कुछउपदेश नहींकिया इसअध्याय से भगवत् भक्तिही मूलसार व सिद्धांत ठहरिगई और यह श्लोक कि मेरेमें मनलगाव और मेराभक्तहो जो भगवत् ने दोजगह अर्थात् पहिले नवें अध्याय में दुहरायके अठारवें अध्यायके अंतमें कहा तो इसकेदोहेतुहैं एकयह कि जोबात आवश्यक व बिशेष जतानेकेयोग्य होतीहै तिसको बारबार कहनेमें आताहै सो दोबार कहने से भगवत् अपनी शरणा भक्तिके निमित्त दृढ़ व प्रकट जनातेहैं दूसरे यह कि भग-

वत्‌को ज्ञान और विज्ञान नवें अध्याय मे कहनेकी इच्छाथी सो भगवत् भक्तिसे अधिकज्ञान और विज्ञान और कुछनहीं इसहेतु एकबेर तो वहां इस श्लोककोकहा और अठारहवें अध्यायमें भगवत्‌को सार व सिद्धांत संपूर्ण गीताकेकहनेकी इच्छाहुई सो जबकि भगवत्‌भक्ति सबशास्त्र और वेद व उपनिषद इत्यादिका सिद्धांत औरनिज अभिप्राय है इसहेतु वहां भी वहीश्लोक जो ज्ञानविज्ञान के स्थितिके निमित्त नवें अध्यायमें कहा था वर्णनकिया और इसबर्णनसे इसबातको दृढ़ व स्थिरकिया कि ज्ञान और विज्ञानभी भगवत्‌भक्तिहै औरसार व सिद्धान्तभी भगवत्‌भक्तिही है तात्पर्य कहनेका यही कि संपूर्ण गीताशास्त्रका अभिप्राय आदिसेअंत पर्यंत यहहै कि भगवत्‌भक्ति सार है तो जबकि भगवत् के बचनोंसे सिद्धांत सबशास्त्रोंका भगवत्‌भक्तिही दृढ़हुई और दूसरे पुराणभी भगवत् भक्तिहीको सबमार्ग और धर्म कर्मकाफल वर्णनकरतेहैं और भगवत्‌का मिलनाभी कि उसकानाम मुक्तिहै केवलभक्ति से बहुतशीघ्र होतीहो तो भक्तिसे अधिक दूसरे किसमार्गको अच्छा समझाजाय और दूसरीकौन सोराह ऐसीहै कि जिसको बड़ाई दीनीजाय भक्तिही भगवत्‌के मिलने के निमित्त मालिक व स्वतंत्र व सार व सिद्धांत सबबेद व शास्त्रोंकी है बिनाभक्ति किसीप्रकार भगवत् किसीको न पहिलेमिला न अबमिलैगा ज्ञान शब्दकाअर्थ पहिलेही लिखिआये कि जीव माया ईश्वरके जाननेको कहतेहैं जो निर्गुण उपासकोंका यहहठ और निश्चय कि यहशब्द एक तत्वको कहताहै तोइसमेंभी भक्तिहीकीसहायताहै क्योंकि जबतकईश्वर के एक और सबसे निर्लेपहोनेका ज्ञानहोगातबतक मुक्ति कबहोसक्तीहै सो अनन्य भक्तिकाकईजगह वर्णनहुवाहै उपासक तत्वमसि और सोहंइ त्यादिमहावाक्यकोमूलकारणअपनेमतकासमझतेहैं औरउनमहावाक्यों के अर्थसगुण उपासनाको प्रकटकरतेहैं कि सोपदसेअहंपद आपभिन्नता का अर्थसूचित करताहै व इसीप्रकार त्वंपद तत्वपदसे भिन्न सूचित होता है और जोयहसब महावाक्य और ज्ञानशब्दभी जीवईश्वरके एकहोनेको निर्गुणउपासकों के कथनके अनुसार समझाजावे तबभी सिद्धांत सगुण उपासकोंको मिलताहै क्योंकि कोई उपासकोंने जीव ईश्वरको एकही जाना अंगीकारकिया है औरसायुज्यमुक्ति उनकामुख्यनिश्चयहै अबयह

बिवाद उत्पन्नहुआ कि वेदांतशास्त्र वेदकाअंगहै और उसशास्त्रके बड़ेबड़े बिस्तारग्रन्थ देखनेमेंआतेहैं उसमें निर्गुणउपासकों का सिद्धांतलिखा है उसका क्या वृत्तांतहै सो जानेरहो कि वेदांतवेद के अंतभाग अर्थात् उपनिषद को कहतेहैं और जो उपनिषदों में बर्णनहुआ सोई गीताजी और शारीरकसूत्र में लिखाहै तो मुख्य वेदांतशास्त्र यह तीनो हैं कि बड़े बड़ेग्रन्थ ऊपरकहे सोहैं निर्गुण उपासकों ने उनका तिलक आप बनाया और उसके सहायके निमित्त बिस्तारकरके ग्रन्थ अलगबनाया उसकानाम वेदांतरखलिया नहीं तो वास्तवकरके उपनिषद और गीता और सूत्रोंका सिद्धांत व सम्मत भगवत्‌भक्ति है और भगवत् भक्ति के सम्बन्ध के जो तिलक व भाष्य व ग्रन्थहैं सो मुख्य वेदांतहै और भगवत् उपासकोंमें प्रवर्त व बिख्यातहै इस कहनेका तात्पर्य्य यह कि कुतर्करहित निर्बिवाद भगवत् भक्तिही सर्बमार्गों की शिरताज व शिरामणिहै यह सिद्धांत सब शास्त्रों का द्वेषरहित लिखागया भला इसको रहनेदीजिये जो निर्गुण उपासकोंही के बचनोंको सिद्धांतमानाजाय तब भी भक्तिहीको बड़ाई प्राप्तहोतीहै क्योंकि उनकाबचनहै कि वहीनिर्गुण ब्रह्म सगुणस्वरूप होजाता है अब इसमें यह पूछते हैं कि वह सगुण स्वरूप जो निर्गुणब्रह्म ने प्रकट करलिया ईश्वरहै कि आवागवन के परंपरा में बद्धहै जो जन्मलेना व मरना उसकोहै तो ईश्वर कहना न चाहिये और जो ईश्वरहै तो उसके सेवनसे मुक्ति क्यों न होगी सिवाय इसबादके और एक यहबातहै कि निर्गुणमार्गके अनुसार वेदश्रुति ने कहाहै कि निर्गुणपरमात्मा अपने भक्तोंपर कृपाकर के सगुणरूप हो जाताहै इसमें यहपूछतेहैं कि जो उस सगुणरूपकी भक्ति व सेवनमुक्ति न हुई तो उस निर्गुणब्रह्मने कृपाक्याकरी बरु वह कृपा एकप्राणपीड़ा होगई क्योंकि हजारों जन्मोंतक एकजीव बेचारे ने परिश्रमकिया और अंतकाल वह ईश्वर मुख्यकार्य के सिद्धकरनेमें असमर्थ निकला तो वह निर्गुणब्रह्म एक धोखेबाज़ व कपटीहुआ कि लोगोंको एक हराबगीचा बातोंका दिखलाताहै और उसी श्रुतीके अनुसार दूसराप्रश्न यहहै कि जो वेदश्रुती सिद्धांत व ठीकहै और यहभीबात उनकीसच्चहै कि निर्गुण मार्गसेही मुक्तिहोतीहैतो इसभगवद्वाक्यका क्याअर्थ कियाजायगा॥

हे अर्जुन मेरे जन्म व कर्म जो कोई जानताहै अर्थात् मेरे चरित्रोंमें मन लगाताहै सो शरीरको छोड़कर फिर जन्म नहींलेता और मुझकोप्राप्त होताहै अभिप्राय इसके लिखनेका यहहै कि मुक्तिहोना भगवत् भक्ति से जो मानलियाहै तो इस सिद्धांतमें विरुद्ध पड़ताहै कि विनानिर्गुण मार्गके भक्तिनहीं और जो यहसिद्धांत ठीकहै तो उसश्रुती और भगवत् के वचनका उत्तरदेना उचितहै कि सच्चहै कि झूठ इसकेसिवाय सिद्धांत की वातहै कि जो जिसकिसी का ध्यानकरताहै सो वही रूप होजाताहै तो इससिद्धांतके अनुसार जिसकिसी ने भगवत्को पूर्णब्रह्म परमात्मा सच्चिदानन्दघन व्यापक मायाधीश अनंत ब्रह्माण्डोंका नायक जानकर उसकेरूप अनूपका चिन्तवनकिया सो कहांजायगा जो यहकहोगे कि अपने स्वामीका रूप होजायगा तो यह भी कहना उचितहै कि उसके स्वामीमें वेगुण कि जैसाजानकर उसने चिन्तवनकियाहै कि नहीं जोहैं तो सबप्रकारसे वह चिन्तवन करनेवाला मुक्तहोगया कि सिद्धांतयहीहै और जो वे गुणनहीं तो वैसा गुणवाला दूसरेकिसीको निश्चयकरदेना चाहिये नहीं तो सिद्धांतमें बड़ा विरुद्धपड़ेगा यद्यपि इनवातोंको निर्गुण मतवाले मानके यहवात बनावते हैं कि निश्चय करके जो भक्तिकरके अपनेस्वामीको पहुंचगयाहै उसको आवागवन नहींहोगा परंतु वास्तवमें मुक्ति अर्थात् निर्गुणब्रह्मकी प्राप्ति तबहींहोगी कि जब अपनेस्वामी के साथ अंतर्द्धान होकर निर्गुण ब्रह्म में मिलजावेगा अभिप्राय उनकायह है कि निर्गुणब्रह्मके मिलनेका भक्ति एक साधनहै सो इसका उत्तर तो हम ऐसी मोटीबुद्धिवालों का तो यहहै कि हमको आमखाना कि पेड़ गिनना तात्पर्य हमारा आवागमन से छूटनेकाथा सो तुम्हारी कृपासे आप प्राप्तहोगया अब अधिक वादविवादका क्या प्रयोजनहै और किस हेतु सिवाय अपने स्वामीके दूसरे किसीको ईश्वर अंगीकारकरें परन्तु जो कोई निज निबोधा के वृत्तांत और वेद शास्त्रों के सिद्धान्त जानते हैं वे निर्गुण मतवालोंकी वातोंको विना जड़मूलका कहकर उत्तरदेतेहैं कि यह वचन उनका तब निश्चयकरनेके योग्यहोता कि जो सगुणब्रह्म एकअंग निर्गुणब्रह्मका होता और जब कि निर्गुणब्रह्म एकअंग सगुण ब्रह्मकाहै तो यह सिद्धांत उनका कब अंगीकार करनेके योग्यहै निश्चय

विरुद्ध व बिपरीतहै सो सूक्ष्मकरके वृत्तांत उसका यहहै कि पन्द्रहवीं निष्ठामें शास्त्रोंके सिद्धान्त के अनुसार जहां ईश्वरका वर्णनहुआहै तहां पांचप्रकार का निरूपण लिखागया उसके चौथेनिरूपण में यह लिखा गयाहै कि वह स्वरूप चौथा उस सगुणब्रह्म का अंतर्य्यामी अव्यक्त ज्ञानानन्द अलख अबिनाशी निरंजन निर्गुणब्रह्म सर्व व्यापकहै तो प्रकट होगया कि निर्गुणब्रह्म अंग सगुणब्रह्मकाहै और निर्गुणमतवाले उसीचौथेस्वरूप के उपासकहैं सिवाय इसके वाराहीसंहितामें लिखाहै कि निर्गुणब्रह्म प्रकाश व छाया सगुणब्रह्मकाहै और निजरूप भगवत् का सगुणब्रह्महै और इसीप्रकारकाबचन सनकादिक संहितामें लिखाहै तो इन बचनोंसे पन्द्रहवीं निष्ठा के चौथे निरूपणकी मिलान होती है सो निस्सन्देह निर्गुण ब्रह्म एकअंग सगुण ब्रह्मका है और प्रकार के बिबाद व संदेहके दूर करने के निमित्त निर्गुण ब्रह्म का अर्थ इसबाद के प्रारम्भ में लिखि आयाहूं कि जो ईश्वर मायाके गुणोंसे भिन्न व निर्लेप होय उसको निर्गुणब्रह्म कहते हैं अरूप को नहीं कहते हैं और इसी प्रकार ज्ञानशब्दका अर्थभी लिखागया कि ईश्वर माया जीवके जानने का नाम ज्ञान है और वह एक साधन भगवत् भक्ति का है कि इसका सिद्धान्त गीताजी के श्लोकों के तरजुमे जो ऊपर लिखि आये हैं उनसे अच्छेप्रकार होता है और यहां भी दोएक बचन लिखता हूं गीताजी में भगवत् ने कहा है कि जो मुक्ति के निमित्त मेरे शरण होतेहैं सोई ब्रह्मके जानने वाले और अध्यात्मज्ञान व सब कर्मोंके जानने वाले हैं (सांडिल्य सूत्र है) कि ब्रह्मकांड अर्थात् ज्ञान भगवत् भक्ति जानने के निमित्त है सो निश्चयकरिके ज्ञान एक साधन भक्तिकाहै और भगवत् भक्तिमें दृढ़ होनाविज्ञानहै अब जो यहशङ्काहोय कि निर्गुणशब्दका अर्थ जोउपासकों के इष्टदेव के सम्बन्ध का ठहरा तो सगुण स्वरूप का कौन अर्थ किया जायगा सो प्रकटहै कि जब निर्गुण ब्रह्मका अर्थ मायासे निर्लेपका हुआ तो सगुण शब्दका अर्थ उस भगवत् स्वरूपका ठहरा कि अपनी माया के आश्रय होकर अपने भक्तके कार्यके हेतु प्रकट होता है और जिसका चरित्र संसार समुद्रके उतरनेके वास्ते दृढ़ सेतुहै जोकोई संसारसमुद्रसे पारहुआ तो उन चरित्रोंही के कृपा व प्रभावसे उन चरित्रों से अधि

और कोई निर्वाहकी राह न आगेरही न अबहै न आगेपर होगी इस बातको वेद व शास्त्र उच्चस्वर से पुकारकर कहते हैं नितांत सब शङ्का सन्देह दूर होनेपर भगवत् भक्तिही मुख्य है उससे सिवाय और कोई राह अच्छी व सीधी नहीं और ईश्वर का स्वरूप निर्गुणमतवालों का भगवत् भक्तिके उपास्य ईश्वर परमात्माका एक अङ्गहै इस लिखने में जो यहकोई शङ्काकरै कि जोवह निर्गुणब्रह्म भगवत्के सबरूपों में एक अन्तर्य्यामी व व्यापक अथवा छायाहै तो उसके उपासनामें क्या बिवाद है क्योंकि भगवत् उपासकोंका सिद्धांतहै कि भगवत्के कोईएकरूप चाहे धाम चाहेनाम अथवा चरित्रकी उपासना दृढ़होनी चाहिये निश्चयकरके उद्धार होगा उत्तर इसका यहहै कि इस बिवाद के आरम्भ से व यहां तक यहबात कहींनहीं लिखी कि उनका मत अशुद्ध है केवल भगवत् भक्ति और सगुण स्वरूपकी बिशेषताका बर्णन कियागयाहै जो वहलोग सिद्धांत व सच्चीबातको समझकर निर्गुणब्रह्मका आराधन करैं तो निश्चयकरके कबहीं न कबहीं भगवत् सच्चिदानन्दघनपूर्णब्रह्मका बास्तव स्वरूप उनके हृदयमें प्रकटहो और उद्धार होजाय परन्तुविचारकरना भी तो उचितहै कि वह मार्ग्ग कैसाकठिन व क्लिष्टहै पहिले तो भगवत् ने आप गीताजीमें कहाहै कि अव्यक्तकी राह अर्थात् निरूप की प्राप्ति देहाभिमानी को दुःखरूपहै अतिकठिनहै सिवाय इसके उसका निरूपण करना कठिन जोकदाचित् किसीने निरूपण भी किया तो उसका समझना उससे और अधिककठिन और जोकिसीप्रकार समझभीलिया तो आचरण व आरूढ़ होना उसपर कैसाकठिन व क्लिष्ट है कि जानै पहिले युग व समयमें कोईआचरण करनेवाला उसकाहुआहोगा क्योंकिजोवस्तु बुद्धि व समझसे बाहरहै उसमें किसप्रकार मनलगै और बिनाएकाग्र होने मनके उसका प्राप्तहोना दुर्ल्लभहै इसहेतु उस परम्परापर पहुंचना जानेरहना कदाचित् अगणित जन्मोंमें बड़े कष्टसे किसी एक को कोई पदवी प्राप्त भी हुई तो ऊपर ठहरना अत्यन्त कठिनहै और गिरना बहुतसहज क्योंकि इन्द्रियोंकी बलात्कारी सबको मालूमहै तात्पर्य्य यह कि आदिसे अन्त पर्य्यन्त सिवाय क्लिष्टताके और कोईबात दिखाईनहीं पड़ती और भगवत् भक्तिकी सहजता व भगवत्के शीघ्रमिलनेका वृत्तान्त

यहहै कि किसी प्रकारसे भगवत् चरित्रोंमें थोड़ीसी प्रीति होनी चाहिये वह चरित्रही भजन और कीर्त्तनमें लगाकर भगवत् स्वरूपको हृदय में प्रकट करदेतेहैं उसस्वरूप का यहप्रतापहै कि दिन दिन भक्तके हृदयमें अपनेनिजझलक व प्रकाशको बढ़ावता हुआ दृढ़निश्चय व बिश्वास कृपा करके अनन्य मनसे संसारके स्वादकी चाहना दूर करताहुआ औरज्ञान वैराग्यको प्रकाशित करताहुआ और नाम कीर्तन व भजन के सहाय से पहिले करुणा क्षमा तितिक्षा इत्यादि भक्तके मनमें उत्पन्न करदेताहै तिसकेपीछे अपनी यथार्थ सुंदरता व अनूपछबि हृदयकी आंखोंको दिखा कर ऐसाबश व मोहित करलेताहै कि सिवाय उसरूप अनूप औरछबि माधुरीके दूसरीओर वहमननहींजाता फिर वह कृतकृत्य व कृतार्थ हो कर उसरूप अनूपमें दृढ़ व निश्चल होजाताहै कि उसीका नाम जीवन्मुक्तहै इसकेपीछे मुक्तिहोती है सो आदिअंततक सहज और शनैः शनैः सुखरूप इसमार्ग क औरमार्ग कठिन हैं कोईबात देखने में नहींआती जन्म मरणकी पीड़ासे भय करके उसीओर सन्मुखहोने की देरहै भगवत्को अपनी करुणा और दयालुता और दीनबत्सलता में तनकदेर नहीं अपनेमिलनेकासबसामान व सामग्री आपकरदेताहै जगतमेंबहुत जगह सुना और कहीं कहीं देखनेमें भीआया कि झूठे व बिषयीप्रेमियों के मनकी लगन अज्ञानी व अनेकपाप व अवगुणों से भरीहुई स्त्रियों के मनमें प्रबेशकरके उनस्त्रियोंको उनकोचाह करनेवालोंको मिलादेता है तो वह परमात्मा जोकि शुद्ध सच्चिदानंदघन सबजानने वाला व उत्पन्न करनेवाला सब परिपाटी व प्रबन्ध व रीतिपर कायाभिमानी व प्रियबल्लभपनेका अर्थात् आशिकी व माशूकीका है अपनेप्रेम करनेवालेपर दया करके क्योंनहीं शीघ्र वहमिलैगा और क्योंन मनोरथपूर्णकरैगा नहींतो उसीकी मर्य्यादा प्रबन्धमें दोष प्राप्तहोगा तात्पर्य इनबातोंके कहनेका यहहै कि जोकोई ऐसेसहज व मुख्यमार्गको छोड़कर भगवत् के मिलने के निमित्त अतिक्लिष्ट व एकअंगकी ओर चित्तदेतेहैं व निश्चय करिकै बुद्धिहीन व अल्पभागी व कर्महीनहैं रत्नोंको डालकर कंकरोंको उठातेहैं कामधेनुको छोड़कर दूधके निमित्त आकका पेड़ खोजतेहैं और एकचोर की बातस्मरण होआई कि निर्गुण खसमको स्त्रीभी अंगीकार नहींकरती

पुरुष समझदार व बुद्धिमान तो निर्गुणको अपनास्वामी क्यों अंगीकार करै सो गोपिका भगवत् की परमप्रिया उद्धवसे कहतीहैं॥ सूरछांड़ि गुणधामसांवरोकोनिर्गुणनिरवाहै॥ और एकबातविचार व न्यायकेयोग्य है किप्रेम बिनासुंदरता व शोभाके नहींहोताऔरजबतक प्रेमनहींतबतक मिलनाभगवत्का कदापिनहींहोसकता॥ उसमतवालोंकासिद्धांतहै कि जबतक वर्णाश्रम के धर्मोंको करके हृदय निर्मल नहो तबतक वहज्ञान उपदेशका अधिकारी नहीं अबबड़ ब्रह्मज्ञान गली गलीऐसाबहार फिरताहै किजो थोड़ाभी वर्णन करूं तोबहुत विस्तार होजाय और द्वेषताका कलङ्क अलगरहा इसहेतु उसकी चरचाही को छोड़दिया और अच्छी प्रकार समझ लिया कि विष्णुपुराण व भागवत इत्यादिमें जो वृत्तान्त कलिधर्मके लिखे हैं और यहभी वर्णन हुआहै कि कलियुगमें स्त्री पुरुष ऐसे होंगे कि सिवाय ब्रह्मज्ञानके और कुछ न करैंगे और कर्म उनके ऐसे होंगे कि थोड़से लालचमें आयकर ऐसे कर्म करैंगे कि जिससेचांडाल काभी हृदय कांपजावे सो वह समय अब आगया अब और वाद विवाद को विरुद्ध करके अति अधीनताई व प्रार्थनापूर्वक बिनती करताहूं कि जो सूर्य पश्चिम उगै और शशाके शिरपर सींगजमैं व आकाश में फुलवारी लगै व पानीमें आगलगै तो संदेह नहीं यह सबहोय परन्तु यह कदापि २ नहीं होसकता कि विना भजन भगवत् पूर्णब्रह्म परमत्मामेरे स्वामीके इससंसारसमुद्र से पार हो जावे यह प्रताप भगवत् के सेवन भजनही का है कि वह संसारसमुद्र गोपद जलके सदृश होजाताहै यह सिद्धांत व सार वेद व शास्त्रों का है॥

थोड़ासा वृत्तांत संप्रदायों के चारोंभेदका और वास्तव में उनका परिणाम में एक होना॥

अबयह लिखनाउचितहुआ कि सबसंप्रदायवाले अपनी संप्रदायको दूसरी संप्रदायपर विशेष जानकर उद्धारके निमित्त उसीकोसत्य व सिद्धांत समझतेहैं औरउसीकी विशेषता वर्णन करतेहैं सोइन चारोंसंप्रदाय में अच्छी व विशेष कौन संप्रदायहै सोजानेरहो कि संसार समुद्रसे पार करदेनेके निमित्तचारों संप्रदाय एकही भांति व बराबरहैं किसीमें कुछ न्यून व विशेषतानहीं सबसंप्रदायवालोंने भगवत्कीअद्वैतताएकहीप्रकार

व बराबर लिखीहै और प्रमाण श्रुति व स्मृति इत्यादिका सबसंप्रदाय वालोंमें एकहै और युक्तहै कि सिवाय भगवत्के न कोई उद्धार करने वालाहै नउसके सिवाय और किसी देवताका साधनचाहिये और इसी प्रकार भगवत्के धाम व विग्रहमें सबका बराबर एक सम्मतहै केवल थोड़ी बातपर झगड़तेहैं एकतोमाया और जीवके निर्णयमें आपुसमेंउन लोगोंके निश्चयमें भेदहै दूसरे तिलक और मुद्रा धारणकरने और उसकी मूर्ति बनानेमें विरुद्धहै तीसरे सब संप्रदाय वाले अपने इष्टदेव को अवतारी व स्वयं स्वरूप और दूसरोंको अवतार व अंश व बिभूति अपने स्वामीका जानते हैं सोइस विरुद्धताका वृत्तांत भेपनिष्ठा व धाम निष्ठा और चारों आचार्योंकीकथा व चारों निष्ठाओं सेमालूम होसक्ताहै॥ रामानुज स्वामीकी संप्रदायमें कैंकर्यनिष्ठाहै व ईश्वरको चित् चिद्वि शिष्ठाद्वैत मानतेहैं अर्थात्माया और जीवभी उसी अद्वैतसे मिलेहुयेहैं औरनित्यहैं व निम्बार्क स्वामीकी संप्रदायमें अनन्यता की निष्ठाहै व जीव ईश्वरमें भेदाभेद अद्वैताद्वैत अर्थात्एकभी व दोभीहैं और व्याप्यव्यापक सम्बन्ध करके तात्पर्य यहकि जो जिसकरकेव्याप्यहै सोतद्रूपहै और माध्वसंप्रदायवालोंकी निष्ठा कीर्तनकी और द्वैतसिद्धांतहै वविष्णुस्वामी संप्रदाय आत्मनिवेदन की निष्ठा व शुद्ध अद्वैत सम्मतहै सो इन भेदोंपर बिचार कियाजायतो एकहीहै क्योंकि बास्तवबस्तु सबनिष्ठाओंकी एकहीप्रकार कीहै जो कुछ झगड़ा व बादआपुसमेंहै सो अपनी अपनीराहमें प्रीति व विश्वासके बढ़ानेके निमित्तहै बास्तवकरिके कुछ बिरुद्ध नहीं॥

स्मार्त मतके वर्णनके बहाने अनन्य शब्दका अर्थ बर्णन और
प्रयोजन वाली दूसरी बातका भी वर्णन॥

अब यहबात वर्णनकरनीपड़ी कि स्मार्त संप्रदाय की भी चरचाइस भक्तमाल में हुईहै उस संप्रदायवालोंका क्यामार्गहै और किस देवताका आराधन करतेहैं और फल व परिणाम उसमार्गका क्याहै सो जानेरहो कि स्मृति अर्थात् धर्म शास्त्रके अनुसार चलना व सोरह कर्म्म गर्भके आरम्भसे मरणपर्यंतको मुख्यजानना उनकापरंपरा मार्गहै जिसनेपहिले यज्ञोपवीत दिया अथवा जिस से विद्यापढ़ी उसी को गुरूजानते हैं ऋषीश्वरों अर्थात्मनु व याज्ञवल्क्य इत्यादि को आदि आचार्य्य समझते

हैं और ऋषीश्वर बहुत होगये इसहेतु कोई एकमुख्य प्रवर्तक उसमार्गका नहींकहनेमें आता परन्तु अन्तमें सैकड़ोंके बधहोनेके पीछे शङ्करस्वामी से उस मार्ग्गकी बहुत बिशेष प्रवृत्तिहुई और वे लोग सारफल अपने धर्म्म कर्म्मका निराकार निर्गुण ब्रह्मकी प्राप्ति को समझते हैं इसहेतु शङ्करस्वामी को अन्तका आचार्य्य समझना चाहिये स्मृतीको पूजाइत्यादिके निमित्त पुस्तक पद्धतिकी जानते हैं पञ्चाङ्ग पूजा करते हैं अर्थात् गणेश शिव बिष्णु दुर्गा सूर्य्यकीमूर्त्ति एकसिंहासनपर विराजमान करके सबको पूजतेहैं और जिसदेवतापर बिश्वास व प्रेम अधिक होयतिसको मध्य में और चारों कोनोंपर चार देवता को बैठालते हैं चारों सम्प्रदाय बैष्णवोंमें से किसीके चेले नहींहोते उनमें से कोई कोई ऐसे भी हैं कि निजएक किसी देवताकी पूजाकरतेहैं और अपनेआपको स्मार्त कहतेहैं देवताके पूजा की पद्धति और स्तोत्र पाठ इत्यादि सब रखते हैं परन्तु उपासनाके ग्रन्थ जिसप्रकार चारों सम्प्रदायमें हैं कोई नहीं और होना भी निश्चय बिना निःप्रयोजन है क्योंकि वह लोग पूजा देवताओं की दूसरे कर्म्मोंके सदृश समझतेहैं और वेदान्त निर्गुणमतका पढ़तेहैं इस भक्तमालमें जो कोई कोई जगह स्मार्त सम्प्रदायका वर्णन हुआहै तो कारण यहहै कि उन लोगों में किसी किसी को भगवत् आरधक ऐसा देखा कि भूलकर भी दूसरी ओर चित्त नहींदेते सो भगवत् को अपना अनन्यदास प्याराहै जो कोईहो सोई भगवत्काभक्तहै भगवत्को जाति विद्या बड़ाई सम्पत्ति मार्ग्ग इत्यादि पर कुछदृष्टिनहीं केवल अनन्य भक्ति चाहिये बाल्मीकि स्वपच शवरी गज गणिका सुग्रीव हनुमान् बिभीषण प्रह्लाद इत्यादि हजारोंभक्तोंकी कथा इस के प्रमाण व दृष्टांतको प्रसिद्धहैं और गीतामें कहा है कि अनन्यचित्त से भजन करने वाले को सुलभहूं—दूसरा बचन है कि अनन्यदास कीर्त्तन करनेवालों को मुक्ति देताहूं अनन्य शब्दका अर्थ साधन अवस्थामें तो यहहै कि अपने स्वामी के सिवाय और किसी से जानि सुनकर किसी बात का कोई प्रकारका सम्बन्ध न हो व सिद्धावस्था यह है कि सिवाय अपने स्वामी रूप राशिके औरकोईबाहर व भीतरकी दृष्टिमें दिखाई न पड़ै दोनों अवस्था में एक से सिवाय दूसरा अंगीकार व बिश्वास के योग्य नहीं और

सिद्धांत की बात है कि दो सुन्दर रूपपर एक को प्रीति नहीं होसक्ती सो एकदृष्टान्त भी स्मरण होआया किसी धूर्त दगाबाजने एक सुन्दरी स्त्रीसेकहा कि मैं तेरा आशिकहूं उसने उत्तरदिया कि फलानी स्त्री बड़ी सुन्दरीहै उसपरआशिकहो वहपुरुष उसस्त्रीको ढूंढ़नेगया व फिरआकर कहा कि कोईस्त्री न मिली उसस्त्रीने उत्तरदिया कि तेरीपरीक्षा मैं लेती थी जोतू सच्चामेरा आशिकथा तो दूसरी स्त्रीके ढूंढ़नेके हेतु क्यों गयाथा सो ऐसी बातोंसे हम नहींजानैं कि जिनको बिश्वास व निष्ठा कई ओर हैं और निज अभिप्रायका सिद्ध करनेवाला जिसकी पूजा पत्री करतेहैं उसकेसिवाय और किसीको जानतेहैं तो उनकोप्रेम किसमें और किस प्रकारहोगा और कैसे अपनेमनोबांछित पदको पहुंचैंगे और ऐसीनिष्ठा पर कौतुक यहहै कि जोकोई शास्त्रके प्रमाणके अनुसार एक ओर मन को लगायेहैं उनको अपने मनमुखी ज्ञान करके बे बिश्वास और निंदक ठहराते हैं और वह कदापि न किसी से द्वेषरखते व न किसी की निन्दा करते जिस देवता का जैसा प्रभाव व प्रभुत्त्व है तैसाही यथार्थ जानकर सच्चेमन से उस को वैसाही मानते हैं परन्तु वहां इतना भेद है कि उन लोगोंके सदृश सब को ईश्वर नहीं मानते इसहेतु कि शास्त्रों के बचन के अनुसार ईश्वर एकहै दो चार नहीं अभिप्राय इस बिस्तारसे कहनेका यहहै कि जोकुत्ता द्वारद्वार फिरताहै कदापि उसका पेट नहीं भरता और जोकुत्ता एक द्वार सेयकर रहता है सो यद्यपि अपबित्र व अशुद्धताकेभी घरके मालिकको ऐसाप्यारा होजाताहै कि आप उसकी खबरगीरी करताहै और यहभी बिचार करने योग्यहै कि पुंश्चली स्त्री कापुत्र बाप बाप किसको कहै॥

भगवत्केअवतारलेनेऔरभक्तोंकेचाहकेअनुसारचरित्रकरनेकासबहेतु॥

अब यहप्रश्नहै कि इस तरजुमेभक्तमालवमें सब शास्त्रों में भगवत् की महिमा लिखीगई कि वह अच्युत अनन्त ब्यापक सच्चिदानन्द घन पूर्णब्रह्म परमात्माहै कि बेदजिसको नेति २ कहतेहैं और उसीका यह बर्णनहुआ किकिसी भक्तके निमित्त स्वामीऔर कहीं टहलुवाकहीं चर-वाहा कहीं मशालची कहींसुनार कहीं चोर कहींसाहूकार कहीं बेटाकहीं बापकहींआशक कहीं माशूक कहींयार कहींनातेदार हुआतो उसमहिमा

की ओर देख करके ऐसे चरित्रोंपर दृष्टिजाती है तो महा आश्चर्य होता है इसका क्या वृत्तान्तहै सो जानेरहो कि जो भगवत् व शास्त्रके जानने वालेहैं उनलोगोंकी तो यह आशङ्कानहीं और न उनको कुछउत्तर का प्रयोजनहै क्योंकि उनको यह चरित्र परम आनन्द के देनेवाले व सबसंदेहोंके दूरकरनेवाले और भगवत् भक्ति व दृढ़प्रेम के कृपाकरनेवाले हैं व उनको भगवत् चरित्रोंके सिवाय वास्तव करिके तनकभी दूसरीकथा पर चाहनहींहोती काहेसे कि उनचरित्रोंका यह बल व प्रतापहै कि भगवत्के रूप अनूप और छवि माधुरीका हृदयमेंप्रकाश करके भगवत् परायणकरदेतेहैं परंतुजोलोग ना समुझहैं उनसे यह विनय है कि इसप्रश्न का उत्तर केवल भगवत्की करुणा व दयालुता भक्तोंकी चाह पूर्ण करने के निमित्त कई जगह थोड़में वर्णनहुआ है यहांभी थोड़में लिखाजाता है वेदश्रुतीकहते हैं कि भगवत् पूर्णब्रह्म अपनेभक्तोंपर करुणावदयाकरके आविर्भाव होताहै सांडिल्यसूत्र में लिखाहै कि भगवत्के स्वरूप धारण करनेमें केवल करुणा व दयाका कारणहै भगवत्ने गीताजीमें कहा है कि भक्तोंकी रक्षाकरनेको और धर्मको स्थिररखनेके निमित्त युग युगमें अवतारलेताहूं मेरे उनजन्मों और कर्मोंके जाननेसे फिरजन्म नहीं होता तो उन बचनोंके अनुसार जबकि भगवत् अपने परमधामको छोड़कर प्रकटहोताहै तो जो चरित्रकरताहै सो भक्तोंपर दया व करुणा के कारण से है इसहेतु कि भक्तलोग उनचरित्रोंको कीर्तनकरके और अपनेस्वामी की करुणा व दयालुताको देखकर उसीओर लगेरहतेहैं दूसरीओर चित्त नहीं देते और दूसरोंका भी उन चरित्रोंके प्रभावकरके उद्धार होजाता है सिवाय इसके भगवत् भक्तोंको अनुक्षणध्यान व चिन्तवन अपने स्वामी का रहताहै और जोप्रयोजन आनिपड़ता है तो भगवत् को छोड़ और किसीसे नहीं याचते तो रीति व सिद्धांतके अनुसार भक्तके प्रयोजनके समय उसीका आनायोग्य व उचित होताहै कि जिसको उसभक्तका ध्यानरहताहै और जो इस में यह कोईकहै कि भगवत् में सब कुछ सामर्थ्य और पराक्रमहै क्या और किसीप्रकारसे वह प्रयोजन सिद्धनहीं होसक्ता निजआप आनेका क्या प्रयोजनहै सो जानेरहो कि इस आशंकासे पहिले तो रीति और सिद्धान्तमें भेदपड़ताहै कि ध्यानतो किया किसी और

रूपका और कार्य व मनोरथकी सिद्धता किसी और प्रकारसे यहकबहो सक्ताहै दूसरे उन बचनोंके अनुसार जो ऊपर लिखेहैं दया करुणा में भगवत्के विरुद्ध पड़ताहै अर्थात् जब भक्तोंको प्रयोजनहुआ और आपु नहीं आया दूसरे किसीप्रकारसे प्रयोजन सिद्ध होगया तो वह बचन भगवत् का और दया कहां सचरही किसहेतु कि उन बचनोंमें यहबात लिखीहै कि आप मैं आताहूं यहबात नहींलिखीहै कि प्रयोजन सिद्धकर देताहूं और इसीशंकाके समाधानमें एक इतिहास स्मरण हो आया यह कि किसी महाराजने किसी एक बड़े महानभावसे पूछा कि ईश्वर सब प्रकार समर्थहै अवतार लेनेका क्या प्रयोजन था किसी और प्रकारसे भक्तोंका कार्य क्यों न करदिया वे महानुभाव उसदिन चुपरहे एकमूर्ति उसके छोटे बालकके तदाकार ऐसी बनवाई कि तनक उसके लड़के के स्वरूपसे भेदनहींथा औरलड़का खिलानेवालेको समझादिया कि जिस समय हम और महाराज यमुनाके शैरको नावपर चढ़ें उस समय वह मूर्ति गोदमें लेआना सो वह उसी समयपर लेगया व वह महानुभाव उस लड़केकोलेकर महाराजको देनेलगा परन्तु वहमूर्ति हाथसेछूटकर यमुनामें गिरपड़ी महाराज जो कि उसमूर्तिको अपनालड़का समझताथा बिकल होकर यमुनामें कूदपड़ा कुछअपनेप्राण व डूबनेका शोच नकिया उस महानुभावने निकलवाया और पूछा कि तुम्हारे नौकर व मल्लाह सैकड़ों खड़ेथे तुम आपक्यों यमुनामें कूदपड़े महाराजने कहा कि मुझको उस लड़के के स्नेह व प्रेमके कारणसे इतनीसुधि व सम्हार न रही कि कुछकहूं इसहेतु आप कूदपड़ा उसमहानुभावने उत्तरदिया कि यहीदशा उस भगवत् की है कि जबअपने भक्तको दुःखमें देखताहै दयाकरिके बिकलहो आप चलाआताहै सिवाय इसबातके भगवत्का दृढ़बाचा प्रबन्धहै कि अपने भक्तोंकी चाहना पूर्ण करताहूं और उन श्लोकों का अर्थ कई जगह इसग्रंथ में लिखागया तो उस बाचाप्रबंध के अनुसार जैसी चाहना भक्तकी हुई सोई आयके भगवत्ने पूर्णकी इसके सिवाय भगवत् व भगवत्का चरित्र कल्पवृक्षके सदृशहै जैसा जिस किसी को बिश्वास है उसको वैसाही फल देतेहैं सो जानकी महारानीके स्वयंबर में श्रीरामचन्द्रस्वामी व मथुराके रंगभूमिमें आप श्रीकृष्ण स्वामी सब

लोगों के भावके अनुसार दिखाई दिये इससे निश्चय होगया कि जिस भक्त ने जिसभाव से चिंतवन किया उसको उसी भावसे देखपड़े और वैसाही फलदिया और वैसेही चरित्र किये एक वृतांत बरसानेमें देखने में आया अर्थात् बनयात्राके समय जब बरसाने श्रीराधिका महारानी के मैके में जानेका संयोग हुआ तो वहां की व्रजबासिनी सब यात्रियों से पैसा रुपैया मांगने लगीं किसीने कहा कि जब यहबात कहोगी कि नंद-नन्दन व्रजकिशोर हमारा बहनोईहै तब कुछ देवैंगे उन व्रजबासिनियों ने अपने नाते व भावके अनुसार उस राधिका बल्लभ और उसके संबंधी लोगों को सौगालियां सुनाईं और भगवत् भक्तों और रसिकों के हृदय में प्रिया प्रीतमके रूप अनूपका एक समाज प्रगट करदिया उससमय एक दो की तो यहदशा देखी कि प्रेमका प्रबाह आंखों से बहता था भगवत् की छवि माधुरी की चिंतवनमें मग्न व बेसुधिथे और उन व्रज वासिनियों को भगवत्की सखी जानकर प्रणाम करतेथे और कोई दुष्ट भाव वालों को देखा कि उन स्त्रियों से गाली देकर कुदृष्टि से देखते थे और हँसठिट्ठा उनके साथ करते थे अब विचार करना चाहिये कि एक ओर वालों को तो गालियों ने महामंत्र का फल दिया और दूसरेगोल वालोंको वे स्त्री और उनकी बातचीत नरकका कारण होगई अभिप्राय इस कहने का यहहै कि जिस किसी को भगवत् व भगवत् चरित्रों में जैसा भाव है उसको वैसाही देखने में आता है और शास्त्रों में स्पष्ट लिखा है कि भगवत् का चरित्र भक्तों को तो आनन्द का देने वाला और दुष्ट व विमुखों को रसातल पहुंचाने वाला है जैसे सूर्यको कमल तो देखकर खिलजाता है और कुमुदिनी संपुटित हो जाती है अथवा सारे संसारको तो प्रकाश प्राप्तहोता है व उलूक व चमगीदड़ोंकी आंखों की ज्योति जातीरहती है इससे कोई संदेह का स्थाननहीं कि भगवत् समर्थ और मालिक और अपने वाचा प्रवन्धका दृढ़ और अपने वचन को सत्य कहनेवाला और अपने भक्तों पर अत्यंत दया करनेवाला है जो चरित्र उसनेकिया और आगे करैगा सबसत्य व समीचीनहैं शंका व कुतर्ककी कदापि समवाईनहीं विश्वास युक्त और प्रेमियों को वहचरित्र निश्चय व निस्सन्देह आनन्द व ब्रह्मपदका देनेवाला है और विमुख व

वे बिश्वासियोंको बिश्वास छुड़ाकर सातवें पातालको प्राप्त करदेनेवाला है काहेसे कि कल्पवृक्ष से आनन्द के मांगनेवाले को आनन्द मिलता है और दुखमांगने वालेको दुःख कि यहपहिले भी लीलानुकरण निष्ठा में वर्णनहुआ है मुझको ऐसेशंका करने वालोंको प्रश्नपर अत्यंत आश्चर्य हुआ कि उन्होंने बिना समझे शोचे ऐसाप्रश्न निर्बल व अयोग्य किया काहेको क्योंकि जिनभक्तोंके हृदयके नयनोंको सिवाय भगवत् के और कोईदृष्टिमें नहीआता व नबाहर सिवाय उसके और किसीको जानतेहैं तो जो उनको चाहना किसीप्रकारकी हो उसका पूर्ण करनेवाला सिवाय भक्तवत्सल कृपासिन्धु के और कौननिश्चय कियाजाय और उनभक्तों के भीतर व बाहर के नयनोंको सिवाय उसके और कौन दिखाई दे ॥

कुसंगसे हानि व सुसंगसे लाभ तिसका वर्णन ॥

अब लिखने का प्रयोजनपड़ा कि कौनबस्तु तुरंत त्यागनेयोग्य है और कौनबस्तु अंगीकार करनेयोग्यहै सो जानेरहो कि दुष्ट और खल व बिमुखोंके संगकात्याग शीघ्रउचित व योग्यहै उनका वर्णन करना व लिखना कुछ प्रयोजननहीं कि थोड़ा बहुत कोई कोई निष्ठामें व बिशेष करके इसके अंतमें लिखिआयाहूं उनकेसंगको एककरामात विचार करना चाहिये अनेकरूपसे लोगोंको सताते हैं अर्थात् किसी को बीछ व कालभौंरा के सदृश हैं और किसीको बौड़हे कुत्ते के सदृश व किसीको मदिराकी रंगत दिखातीहै और किसीके निमित्त हलाहल बिषकीमूर्त्ति होजाती है गोसाईं तुलसीदासजी ने जो इनलोगों के संगत्याग के हेतु जो चौपाई उत्तरकाण्डमें कहीहै सो यहहै ॥

उदासीन नितरहिय गोसाईं । खलपरिहरिय श्वानकीनाईं ॥

इस चौपाईके अर्थकई एक हैं परंतुसूक्ष्म करिके अर्थयहहै कि दुष्टसे दूररहिये और श्वानजो कुत्ताहै तिसकीभांतिउसका त्यागउचितहै तात्पर्यदूर रहनेसे यहहै कि कुत्तसे जो स्नेहकरिये तो वह शरीरमेंलगके व चाट कर अपवित्रकरै औरज़ो उसको मारिये तो भूकै व काटखाय ॥ इसीपर व्यासजीका दोहाहै ॥ दो० ॥

व्यासबड़ाई जगतकी कुत्ते कीपहिचान । प्यारकियेमुंहचाटई बैरकियेतनहान ॥

अर्थात् दोनोंप्रकारसे हानिहै और दूर रहनेमें कुछहानिनहीं और

टुकड़ा डालदेनेमें भी कुछ हर्जनहीं होता अर्थात् इस दोहा व चौपाईके दृष्टान्तसे कुछ उपकार व भलाई करदेने में रुकावट नहीं समझना उन से वैर व प्रीति नहीं करना यह मना करते हैं व दूर रहने को आज्ञा है किसी ने इसी वचनके अनुसार एक दोके साथ आचरण किया आनन्द में रहा निश्चय त्याग करना संग विमुख व दुष्टोंका बहुत उचितहै भूल कर भी निकट न जाय व जैसा विमुख व दुष्टोंका और उनके प्रीति का त्याग करना अत्यन्त उचित है इसीप्रकार अंगीकार करना सत्संग व समागम भगवत् भक्तोंका वहुत योग्य व उचितहै सत्संग वहवस्तुहै कि जिस पदवी का मिलना मन व बुद्धिमें न समाय व न समझमें आवै सो पदवी सहजमें मिलजाती है इस संसार व स्वर्गादिक के सुख तो तुच्छ हैं ब्रह्मानन्द का सुखभी सत्संग की बराबरी नहीं करसक्ता बरु वे सब सुख सत्संगके सेवकहैं सब हाथ बांधे सम्मुख होजातेहैं और जब कि पूर्णब्रह्म परमात्मा सत्संगके प्रभाव करके सहज में मिलजाता है और जहां सत्संग है तहां आप देवताओं के सहित प्राप्त रहताहै तो दूसरी पदवीके सुख सब प्राप्त होजावें तो क्या आश्चर्यहै सत्संगका वह प्रताप है कि अजामिल ऐसा पापी यमदूतों को मार पीट कर उस स्थान पर पहुंचा कि योगियों को मिलना कठिनहै वेश्या जो सब पापकी मूर्ति हैं उनको वह पद मिले कि रंगनाथ स्वामी और नाथजी महाराज वशी भूत होगये और नित्य विहारमें अपने मिलाय लिया बाल्मीकि व नारद जी के वृत्तान्त पर दृष्टि करनी चाहिये कि पहिले वे क्याथे और अब सत्संग के प्रभाव से क्या हैं सो किसको किसको गिनावें जो कोई जिस उत्तम पदवीको पहुंचाहै सत्संगहीके प्रभावसे सो जिस किसीको संसार समुद्र से उतरना है सो सत्संग करै बिना सत्संग न तो नाम कीर्तन प्राप्त होताहै न भक्ति न भगवत् ॥



बहुत निष्ठा स्थापित होनेका कारण व उसके साथ माहात्म्य नाम कीर्त्तनका ॥

इस ग्रंथ में चौबीस निष्ठा लिखी हैं व सब निष्ठाओं के वर्णनमें यह लिखागया कि इस निष्ठासे भगवत् मिलता है अब चित्त डगमगाने है कि उनमेंसे किसके अनुकूल आचरण करना चाहिये और जो एकनिष्ठा

से भगवत् मिलताहै तो इतनी निष्ठाके लिखनेका क्याप्रयोजन एकनिष्ठा लिखदेनी बहुत थी और जो किसी कारण से चौबीसों निष्ठा ठीक हैं तो यहभी वर्णन करना चाहिये कि उनमें कौनसी निष्ठा ऐसीहैं कि जिससे मनोरथ अति शीघ्र सिद्धहो उत्तर यहहै कि सब निष्ठाओं की जो कुछ महिमा लिखीगईहै सबसत्य व ठीकहै किसीभांति कुछ संदेह नहीं है उनमें से किसी एक निष्ठा पर चित्त दृढ़ आरूढ़ हो जाना चाहिये वही एक निष्ठा इससंसार समुद्रसे पार उतार देवेंगी दूसरी निष्ठाका प्रयोजन नहोगा और उसी एकनिष्ठाके बिश्वास व निश्चयको यह प्रतापहै कि शेष दूसरी सबनिष्ठाओं में आपसे आप अधिकार हो जायगा जैसे एक दीपक के प्रकाश होने से सब बस्तु घरमें हैं सो दीखने लगती हैं और जिसनिष्ठापर जिसका चित्तलगे तो उस निष्ठासे सिवाय भगवत् के मिलने के निमित्त दूसरे साधनका प्रयोजन नहीं दिनदिन प्रीतिको वृद्धि करके अधिकारता को पहुंचाय देतीहै व बहुत निष्ठा स्थापित होने का कारण यहहै कि सब किसीकी रुचि मनकी एकसी नहींहै किसीकी बाल चरित्रों में रुचि है और किसीको माधुर्य्य व शृङ्गारमें व किसी का हँसी खेल सखाभाव के चरित्रों में मन लगताहै और कोई ईश्वरता व कृपालुता के चरित्रों पर चाह रखताहै इसीप्रकार सब उपासक अपने मनकी रुचिके अनुसार भगवत्के शोभा व चिंतवन में सावधान होताहै तो शास्त्रोंमें जो उनके सब भावकी निष्ठा लिखी न जाती तो बिना ठहरने रीति आराधन उस निष्ठा के भगवत् के मिलने में व्यवधान पड़ना प्रमाण इस वचन का आप भगवत् के चरित्रों से प्रसिद्ध है कि भगवत् ने सब निष्ठा के संबंधी चरित्र किये जिसमें जैसे चरित्रों पर जिसको चाह हो वैसेही चरित्रों पर मन को लगाकर भगवत् परायण होजावै इस हेतु चौबीसनिष्ठा जो ठहराईगईं बरुजितनी अधिक लिखीजातीं तितनी अधिक प्रकाशितहोतीं यहीबात ग्रन्थके आरम्भमें जहांभक्ति अनेक प्रकारकी होजानेका उत्तर लिखागया है तहां प्रथमही पद्धति व रीति के नामसेलिखी है यहां उसीको विशेष करके लिखदिया है और यहनहीं कहाजाता कि इसनिष्ठासे भगवत् बहुतशीघ्र मिलता है और इसनिष्ठा से शीघ्रनहीं क्योंकि यहचौबीस निष्ठा आवागमन के समुद्रसे पारहोने

को चौवीस जहाज के सदृश हैं जिस जहाज़ पर बैठेगा बेखटके पारहो जायगा जहाज़पर बैठने अर्थात् विश्वासदृढ़ व आचरण पक्का करने की देरहै पार उतारनेवाला अपनी दयाकेवश पार उतारनेको सदा सर्वकाल सावधान है परन्तु इसकालमें अर्थात् कलियुग के निमित्त जोकुछ शास्त्रों में लिखाहै कि सतयुग में भगवत् का ज्ञान ध्यान और त्रेतामें यज्ञ और द्वापरमें भगवत् की पूजा करनेसे उद्धारहोता था अब कलियुगमें केवल भगवत्का नाम मुख्य आधारहै और इस वचनका निश्चय भागवत व स्कन्दपुराण व पद्मपुराण इत्यादिसे अच्छेप्रकार होताहै व रामतापिनी वेदश्रुति कहती है कि नामके प्रभावसे पूरण ब्रह्म परमात्मा मिलता है नाम माहात्म्य कौमुदी ग्रन्थ में सूत्र व स्मृती पुराण व वेदके प्रमाणसे निश्चय करके मिलना मुक्तिका केवल भगवत् नामसे ऐसासिद्धांत लिखाहै कि वह ग्रन्थ पढ़ने व सुननेसे बनिआताहै विस्तारके भयसे उसके भाषान्तरका कुछ प्रयोजन न समझा जितने मत व पंथहैं देखने सुनने में आये उनके अग्रगामी अपने अपने मत व पंथकी बड़ाई करके आपस में लड़ते झगड़तेहैं परन्तु भगवत् नामकी महिमा और बड़ाई करने में सबका सम्मत एकहै व सबबराबर कहतेहैं कि यहनाम सबकाम दोनों लोकके सुधारदेता है व परीक्षा की बातहै कि दशआदमी गाढ़ निद्रामें सोतेहैं उनमें किसी एकका नाम लेकर किसीने पुकारा तो वही जगता है जिसकानाम लेकर पुकारा इसदृष्टांत व प्रमाणसे दोबातकी निश्चय हुई एक यह कि सोताहुआ पुरुषनामके पुकारनेसे जगकर प्राप्तहोजाता है तो वह भगवत् कि सर्वकाल जागनेवाला व सर्वत्र व्यापकहै क्योंनहीं सम्मुख होजायगा दूसरे यहकि इसप्रमाण से नाम व नामीको अभेदता निश्चय ठहरगई अर्थात् जो नामहै सोई नामवाला है तो जब कि नाम भगवत्का कि वास्तवमें भगवत्है अनुक्षण जिसके जिह्वापर रहैगा तो वहजापक क्यों न ब्रह्मरूप होजायगा शास्त्रोंका जो यहवचनहै कि नाम के लेनेसे सम्पूर्णपाप आगेके व अबके दूरहोजातेहैं उसका निर्णयनाम माहात्म्य कौमुदीग्रन्थमें अच्छेप्रकारसे लिखा है अर्थात् शंकाकरनेवाले ने यह शंकाकिया कि जो धोखे व भूलकर एकबेरके नामलेनेसे सम्पूर्ण पाप आगेके संचित व वर्तमानकाल के नाशको प्राप्त होजातेहैं तो यह

लोग संसार व अंतकालमें क्यों दुःखपातेहैं उत्तरयहहै कि एकबेर नाम लेनेकेपीछे जो नाम नहींलेते इसहेतु नाम नहींलेनेके पापमें बद्धहोकर भांतिभांति की पीड़ा व दुःखोंको भोगतेहैं जो बराबर नाम लेतेरहैं तो कोई पापनहो व ब्रह्मस्वरूप होजावैं और श्वेत वस्त्र पर स्याही बहुत शीघ्र भीनजातीहै तो जिस जिह्वासे एकबेर नाम उच्चारणहुआ और वे फिर नामनहींलेते तो उनको नाम नहींलेने का पाप अधिक होताहै अभिप्राय यहनिकला कि भगवत्का नाम प्रतिश्वासा व प्रतिक्षण जपता रहै कि फिर कोई पाप निकट न आवे यहसिद्धांत ऐसाहै कि कोई संदेह अथवा शंका उचितनहीं व जो किसीको संदेह होतो अजामिलके प्रसंग से शंका का समाधानकरदे सर्वथा इस कलियुगमें सिवाय नाम मंगल रूप मेरे स्वामी के और कोई उपाय विशेष व सुष्ठुतर ऐसानहीं कि जिसके अवलम्ब से अतिशीघ्र मनोवांछित पद का पहुंचजाय व नाम लेनेमें न कुछ अटपटहै न कुछ खर्चहोता है केवल जीभ हिलानीहै सो जीभ अनुक्षण मुखमें प्राप्तहै जिनलोगों ने अनन्य होकर उस नामीके नामकी शरणली है वही भक्त है और वही भजनानन्द व वही साधु है और वही वैष्णवऔर वही जीवन्मुक्तहै ॥

भगवत् भक्तोंके आगे विनयव श्रीराधाश्यामआनंदधामकेचरणारविन्दमेंनिवेदन ॥

अब भगवत्भक्तों व उपासकोंके चरणकमलों को दण्डवत् प्रणाम करके विनय करताहूं कि यहचरित्र भगवत्भक्तोंका संपूर्णपाप व दुःखों का दूरकरनेवाला और भगवत् चरणोंमें प्रीतिका बढ़ानेवाला व दोनों लोकका सबसुख कृपाकरनेवाला व ब्रह्मानन्दका देनेवाला जैसा अपनी मतिअनुसार मुझमतिमन्द से हो सका देवनागरी में भाषान्तर रचिकरके निवेदनकिया यहतुम्हारे परमप्रीतमके चरित्रोंसे भराहै इसहेतु मेरे बुरे कर्मोंकी ओर न देखिके अवश्यअंगीकार करनेयोग्यहै औरसब सम्प्रदाय वालोंको आनन्दका देनेवालाहै क्योंकि सबसम्प्रदायोंके आश्चर्य व रीति व परम्पराका वृत्तांत निखोट सब बड़ाई व मर्यादके सहित लिखाहै जो कुछ चूक होगी सो मेरी अज्ञताहै प्रारम्भसे व अंततक केवल एक सिद्धांतपर दृष्टि व परिश्रम रहाहै कि जिसप्रकार होसकै किसीनिष्ठाके अवलम्बसे अथवा चरित्रसे कैनामसेकै सम्प्रदायसे भगवत् पूरण ब्रह्मसचि-

दानंदघन छवि समुद्र शोभाधाम के चरित्रों व रूप अनूपमें अज्ञ लोगों को प्रीति व ज्ञाताळोगोंको प्रीतिकी वृद्धि व दृढ़ता प्राप्तहोय व दोअपराध जानिबूझिके अलवत्तेहुये एकयह कि बहुतजगह इस समयके लोगों का वृत्तांतका वह निश्चय करके मेरा वृत्तांत है सो लिखागया है सो प्रयोजन इसका इतनाहीं है कि संग्रह व त्यागविना पहिचान नहींहोसक्ता दूसरायहकि कोई २ जगह वहभेद व भाव लिखिगयाहै कि जो विमुख व सम्प्रदायोंसे वहिर्मुख लोगों से गुप्त रखनेयोग्यथे सो इसमें शुचिताई व दृढ़ताई यहहै कि उनलोगोंको उस भेद व भावके पढ़ने व सुननेका संयोगहीनहीं पहुंचैगा कदाचित् जो हजार दोहजार में कोई एकपढ़ सुन लेगातो उसके स्वाद व भाव और मुख्य अभिप्रायसेनिश्चय करिकै अज्ञ रहैगा व कथा व इतिहासकी भांति समझैगा जैसेपीनसवारेको कपूरकी सुगंधका ज्ञाननहीं होता क्योंकि उसरसके वेहीभागी हैं कि जिनकी भगवत् चरित्रोंमें प्रीतिहै और उसरसके उपासकहैं और उनहीं के निमित्त वे भाव और भेद लिखे गयेहैं ॥ हे श्रीनन्दनन्दनराधावर वृन्दावन विहारी शोभाधाम हे शरणागत वत्सल प्रणतारतभंजन दीनबंधु हे करुणाकर सच्चिदानंदघन पूर्णब्रह्म नित्य निर्विकारहे यशोदाकिशोर परम मनोहर सुकुमार हे पतितपावन हे अधमउधारन हे करुणानिधान हे दयासिंधु जैसा मेरा वृत्तांत है किसप्रकार किस मुखसे निवेदनकरूं कि आपको बिना मेरे निवेदनकिये सब अच्छीप्रकार ज्ञात है मेरे बराबर पतित अनेक अपराधोंका पात्र व मतिमंद दृष्टांत को भी कोईनहीं और न इस बातपर मुझको निश्चय व दृढ़ता है कि छोटे से राजाका किंकर अपनेस्वामी व प्रजाका हज़ारों अपराध करिकै दण्डसे इत्यादि बचारहता है वरुसवपर आज्ञाचलाता है व जवकि मैं बिनमोल का चेरा बरुघरजाया किंकर लाख दरलाखसे तुमऐसे पूर्णब्रह्मका हूं कि जिसकीमाया एक अदनेको अनेक ब्रह्मांडोंका स्वामी बनादेती है तोमुझको क्या भय व डर किसीसे है परंतु क्याकहूं और इसमनभाग्यहीन को क्याकरूं कि किसीभांति नहींमानता व न आपके सम्मुखहोताहै वरु ऐसी दशा है--भजनबिन जीवत जैसे प्रेत ॥ दूसरा --भजनबिन मिथ्या जन्म गँवायो ॥ तीसरा -- दोऊपै एकौन भई ॥ चौथा -- सबै दिनगये

बिषयके हेतु॥ पांचवां -- जन्मगयो बादिही परबीते॥ ऐसे अपने बुरे आचरण पर दृष्टिकरके जो परिणाम को शोचताहूं तो अपना कुछ ठिकाना नहीं देखता न सहारा दिखाई पड़ताहै परंतु आधार व अवलम्ब एक बचनका सो वह यहहै कि आपनेनिज श्रीमुखारबिंद से कहाहै कि जो कोई एकबेर मेरे शरण होकर और यहबात कहिकर कि तुम्हाराहूं मुझसे मांगता है तो मेरा यहप्रण है कि उसको निर्भयपद देदेता हूं और इसप्रणमें यहनियम नहींकि वह साधुहोकै असाधु अथवा मानसे शरणहो अथवा ऊपर से सो उस वचनके अनुसार सत्यकरिके अथवा मिथ्या अथवा दिखलाने के निमित्त अथवा बंचकता से अथवा मनसे अथवा ऊपर से आपके शरणहोकर और तुम्हाराहूं उच्चस्वरसे पुकार कर यह भिक्षा मांगता हूं कि किसीशरीर में जावें किसी लोकमें कहीं रहें यहध्यान व चिंतवन आपका रातदिन निश्चल मेरे हृदयमें बनारहै कि श्रीयमुनाजी के किनारे परम शोभायमान चौरासीकोश ब्रजमण्डल बारहबन बारह उपबनकरिकै मण्डित जिसकी रजको ब्रह्मादिक अपने मस्तक का तिलक बनाकर व चौरासी कोशकी परिक्रमा करकै शुद्धता व सिद्धता को पहुंचते व एकबेर दर्शन जिसका असंख्यजन्मके पाप व पातकों को दूर करके श्रीकृष्ण परायण करदेता है बिराजमान है तिसके बीच में अनेक बिहारस्थान उसके मध्यमें कमल कार्णिका की भांति निज बिहारस्थल नित्यवान श्रीवृन्दावन तिसबनके बीचमें गऊ व गोप सखा व गोपियों की सभा पांच आवरण जिस के कमलाकार हैं छठवें आवरणमें रत्न सिंहासन श्रीयुगल महामंगल मूर्तिके बिराजमान होनेका शोभायमान है उसकी सुन्दरता व दमक चमकका बर्णन कौन करसक्ता है सो करोड़ चन्द्रमा व सूर्यकीज्योति जिसके आगेगर्द हैं उस सिंहासन पर बितान ऐसा शोभायमान तनाहै कि जिसकी जगमगाहट औरझलकसेमनकीआंखें चकचोंधखातीहैं मुकैशव मोती और जवाहिरात कीलड़ियोंसे झालरलगीहुईहै और भूमि व लता द्रुमगुलमदल फलफूल व मृगमयूर हंस सारस कोकिला भँवर सब मणिमय नानारङ्गके चैतन्य स्वरूपहैं उनकी तड़प झलक जैसा सिंहासनहै वैसाहीहै उससिंहासन पर श्रीनन्दनन्दन ब्रजचन्द्र राधाकान्त महाराज बंशीधारी ऐसे शोभा

व शृङ्गारके सहित विराजमानहैं कि जिसका वर्णन वेद व ब्रह्मा व शेष व शारदासे भी नहीं होसक्ता और जोकुछ शास्त्रोंने और वेदों ने वर्णन किया है तो अन्त में कह दिया कि वर्णन में नहीं आता अपार है चरण कमलोंके नखकी द्युति ब्रह्मा व शिव इत्यादि योगीश्वरोंको ब्रह्मानन्दके प्रकाशकी देनेवालीहै व चरण मनोहर ऊपरसे श्याम और नीचेसे अरुण ऐसे सुन्दर हैं कि उपमा श्याम व अरुणकमलकी व ज्योति नीलमणि व पद्मरागमणिकी अतिफीकीलगतीहै तिसपरसखियोंने कहींरङ्गमेहँदी व कहीं रङ्गमहावर रचिदिया है उन चरणों के अंगूठों में जड़ाऊ छल्ले उसपरकड़े और पायजेब जड़ाऊ झलकिरहेहैं पीताम्बरीधोती बिजुली की छवि को लजावने वाली पहिने हुये नाभि गम्भीर मनोहरके ऊपर ललित त्रिबली चौड़ीछाती उसपर धुकधुकी और बनमाल व वैजयन्ती माला व गजमोतियोंका हार बागा बारीकजरतारी धानीरंगकी मनोहर व सुकुमार श्रीअंग पर सजे जरी का पीताम्बरी दोपट्टा कसेहुये सोनेका हैकलमाणिक व पन्ना व हीरेइत्यादि मणिगणोंसे जड़ेहुये दोनों कन्धे और छातीपर आकर कमरतक लटका मोतियोंके छोटे छोटे दानों की दोहरीकण्ठी गले में हाथों में अंगूठी छल्ले कङ्गन पहुंची बाजूबन्द नवरत्न पहिने हुये मुख ऐसा चित्त चुराने वाला मनोहर कि जिसकी शीतलता व मनोहरता को पूर्ण चन्द्रमा व प्रकाश व दमक को सूर्य्य व बिजुली व चिक्कणता व लावण्यता को नीलमणि व नवीन श्यामघन व प्रफुल्लता व सुंदरताको कमल व गुलाब देखकर ऐसेफीके व शोभा हीन हैं जैसे सूर्य्यकेसम्मुख बालूकाकण मोरमुकुट शिरपर जिसमें मोती व चुन्नी व पन्नोंकीलड़ी लटकरहीहैं जहांतहां फूलगुंथेहुये भालपर केशरके तिलककीझलक कानोंमेंकुण्डल व झूमक उनमें रङ्गरङ्गके फूलोंके गुच्छे प्रियाजीने अपनेहाथसे बनाकर पहिनायेहैं आंखेंरसीली व अलसीलीमें काजल लगाहुआ झलकते हुये शोभायमान गोल कपोलों पर घुंघुरारी अलकें झुकीहुईं ओठोंपर पानकी लाली और सखियोंके किसीछेड़छाड़ पर मुसक्यातेहुये और उसशोभा व शृंगारपर जो डीठ लगनेके बचाव के निमित्त जो अगणित कामदेव व सब ब्रह्माण्डोंकी शोभा और सुन्दरता और सजावट व माधुर्य्य व चिक्कणता इत्यादि को निछावर किया

जाय तो उसकी यह उपमा होती है कि किसी चक्रव
कानीकौड़ी न्यवछावर करै बामभागमें श्रीराधिका महारा
मान हैं उनको जो श्रीनन्दनन्दनस्वामी से भेद कहाजाय तो
सहस्रनाम व गोलोकतापिनी इत्यादि उपनिषद व दूसरे शास्त्र
विरुद्ध पड़ताहै व महादेवके वचनके अनुसार ब्रह्महत्याकापाप प्राप्तहोता
है और जो एकरूप श्रीनन्दनन्दनस्वामी का वर्णन कियाजाय तो माधुर्य
व शृङ्गार व छबि व शोभा व सुन्दरता इत्यादि प्रियाप्रीतमके नित्य हैं
उनकी नित्यतामें विरुद्ध आताहै बात यही सिद्धांतहै कि जो नन्दनंदन
स्वामी हैं सोई राधिका महारानी व जो राधिका महारानी सोई नन्द
नंदनस्वामीहैं भक्तोंको अपने चरित्रोंमें लगाकर उद्धार करनेकेहेतु और
शृङ्गार व माधुर्य्य की उपासना प्रवर्त्तमान करने के निमित्त भगवत्ने
अपने दोरूप प्रकटकिये इसीकारण माधुर्य्य व शृङ्गार निष्ठा सब निष्ठाओं
पर अग्रवर्त्ती मुख्यहै कि उसके प्रभावसे बहुत शीघ्र भगवत् मिलताहै
और प्रिया प्रीतमके एक होनेकी एकयह छटाहै कि उस सिंहासन पर
जो दोनों विराजमानहैं तो गौरश्याम श्रीअङ्गन की सुंदरता व निर्म्मल
शोभा व पोशाक व आभूषण की झलक व चमक दमक दोनों स्वरूप के
परस्पर मुखारविंद व वस्त्र आभूषणपर पड़तेहैं उस समय यहनहीं बि-
बेकहोता कि कौन श्रीप्रियाजी महारानीहैं व कौन श्रीकृष्णस्वामी इस
पहिचान करने में शिव व शारदा की भी बुद्धिदङ्ग है दूसरे की तो क्या
सामर्थ्यहै जो निरुवारसके व प्रिया प्रीतमके प्रेमका यह वृत्तांत है कि
प्रियाजीके हृदयमें प्रीतम व प्रीतमकेहृदयमेंप्रियाजी निरंतर बसीरहती
हैं सो जबकि अंतर व बाहरका यह वृत्तांत है तो दोनों में किसप्रकार
कहाजाय कि प्रियाप्रीतम दोहैं निश्चय करके एकहैं जैसे शब्द व अर्थ
व जल व तरङ्ग सो ऐसी श्रीवृषभानुनन्दिनी साक्षात् कृष्णप्रिया जिस
की चरणनख चन्द्रिका परमरसिकों का जीवनआधार व सम्पूर्णशोभा
व शृङ्गार का कारण तिसकी सुन्दरता शोभा व शृङ्गार का वर्णन किस
प्रकार कोई करसकै जितनी उपमा रहीं सो प्राकृतस्त्रियों की शोभा के
वर्णनमें लगिगईं प्रियाजी महारानीके योग्य न रहीं ऐसी श्रीप्रियाजी
महारानी श्रीकृष्णस्वामी के बामअङ्गमेंविराजमानहैं कि जिसकी शोभा

व सुन्दरताके कारणसे श्रीनंदनंदन महाराजकीशोभा व सुन्दरता प्राप्त होतीहै ललिता व विशाखाइत्यादि सबसखी चँवरछत्र व्यंजनपानदान उगालदान इत्यादि नानाप्रकारकी सामा सेवाके लिये अपनी २सजसे सेवामें सजीहुई खड़ीहैं सम्मुख सखीगण नृत्यकरती हैं वीणाबेणु बन्शी मृदङ्ग शारङ्गी करताल आदि भांतिभांति के वाद्ययंत्र सब एक स्वरमें मिलेबजतेहैं घुंघुरू व किङ्किणी गतिपर छमाछम छमकिरहीहैं व मधुर आलाप व गान व तान व उपज व मूर्च्छना की तरंग उठरही है सब रागिनी व छओं ऋतु सखीरूप मूर्त्तिमान सेवामें खड़ी हैं वह शोभा व समाज व सुख व परम रसिक भक्तोंके हृदय में समाय रहा है सो सब विराजमान व प्राप्तहैं ॥

छन्द ॥

जय जय नन्द किशोर जयतु वृषभानु किशोरी ।
चिदानन्द घन रूप नित्य सुन्दर शुभ जोरी ॥
लीला धाम स्वरूप नाम नित भक्त जो गावैं ।
नेति नेति कहि वेद भेद जाको नहिं पावैं ॥
गौर श्याम शोभासदन प्रणतपाल आरत हरण ।
जन प्रतापके कल्पतरु सर्व्वकाव्य पूरण करण ॥

॥ इतिश्रीभक्तमालकथासमाप्तम् ॥



नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भविष्योत्तरपुराण	विजयमुक्तावली	ब्रह्मसार	गोकर्णमाहात्म्य
स्कन्धपुराण	अनेकार्थ	शिवसिंहसरोज	श्रीगोपालसहस्रनाम
वाल्मीकीयरामायण	उपदेशचन्द्रिका	इन्द्रसभा	कथासत्यनारायणस-
अद्भुतरामायण	मंगलविनोद	विक्रमविलास	हनूनाटक
शुक्रनीति	बिजयचन्द्रिका	बैतालपच्चीसी	हनुमानबाहुक
रसवृष्टिवरसचन्द्रोदय	सिद्धान्तसंग्रह	सिंहासनबत्तीसी	जनकपच्चीसी
सुदामाचरित्र	रामविनयशतक	पद्मावतीखण्ड	हरिहरसगुणनिर्गुण-
कृष्णगीतावली	छन्दोर्णवपिङ्गल	शुकबहत्तरी	पदावली
श्रीअनुरागरस	रसराज	बकावलीसुमन	वनयात्रा
सौदागरलीला	सतसईमूल	चहारदरवेश	कायस्थवर्णनिर्णय
रासलीलाव्रज-कृत-	सतसईसटीक	क़िस्साहातमताई	बिहारवृन्दावन
नाटक	सभाबिलास	अपूर्वकथा	समरबिहारवृन्दावन
प्रबोधचन्द्रोदय	युगुलबिलास	क़िस्सागुलसनोवर	वाल्यभाष्य
रामाभिषेक	तुलसीशब्दार्थप्रकाश	सहस्ररजनीचरित्र	लक्ष्मीसरस्वतीसंवाद
आनन्दरघुनन्दन	भजनावली	दास्तानअमीरहमज़ा	**दर्सी**
भ्रमजालनाटक	प्रेमरत्न	राबिन्सनकाइतिहास	अक्षरावली
वेदान्त	चित्रचन्द्रिका	सीताहरण	स्वयम्बोध
योगवाशिष्ठ	बारहमासाबलदेवकृ-	सतीविलास	ज्ञानचालीसी
आनन्दाऽमृतवर्षिणी	मनोहरलहरी	क़िस्सामर्दऔरत	दोहावली
सांख्यतत्वकौमुदी	गंगालहरी	सांगीतप्रह्लाद	बालाबो·
पारसभाग	यमुनालहरी	**मुतफ़र्क़ात**	विद्यार्थीकाप्रथमपुस्तक
काव्य	जगद्विनोद	शनिश्चरकीकथा	किताबजंत्री
सूरसागर	शृंगारबत्तीसी	ज्ञानमाला	गणितकामधेनु
कुलसागर	नवीनसंग्रह	गोपीचन्दभरतरी	लीलावती
विश्रामसागर	**राग**	कथाश्रीगंगाजी	पटवारियोंकीपुस्तक ४
प्रेमसागर	रागप्रकाश	अवधयात्रा	चारभाग
व्रजविलासबड़ा-	लावनी	भरतरीगीत	**वैद्यकभाषा**
व्रजविलासछोटा	**क़िस्सावगैरह**	दानलीलावनागलीला	निघण्टु
कृष्णप्रिया	नानार्थनामसंग्रहावली	दोहावलीवरत्नावली	भ्रमरबिनोद

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
वैद्यजीवन	कायस्थधर्मनिरूपण	गीतगोविंद	विद्याचक्र
औषधिसंग्रहकल्पवल्ली	तथा छोटा	कथासत्यनारायणस०	विद्याङ्कुर
अमृतसागरबड़ा	मथुरालक्षा	परमार्थसार	पदार्थविद्यासार
अमृतसागर छोटा	**ज्योतिष**	शार्ङ्गधरसंहिता	भोजप्रबन्धसार
वैद्यमनोत्सव	मुहूर्त्तगणपति	पाराशरीसटीक	राजनीति
देलूलगन	मुहूर्त्तचक्रदीपिका	शीघ्रबोधसटीक	भाषालघुव्याकरण
डूलाजुलगुर्व्वी	मुहूर्त्तचिन्तामणिस०	लघुजातक	१ भाग
ज्योतिष भाषा	मुहूर्त्तदीपक	षट्पञ्चाशिका	तथा २ भाग
जातकचन्द्रिका	बृहज्जातकसटीक	सामुद्रिक	भाषातत्वदीपिका
जातकालंकार	जातकालंकार	गरुड़पुराण	भाषाचन्द्रोदय
दैवज्ञाभरण	जातकाभरण	रामविवाहोत्सव	भूगोलतत्व
ज्ञानस्वरोदय	होरामकरन्द	**सरिश्ते तालीम की पुस्तकें**	भूगोलदर्पण
रमलसार	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड सटीक	**संस्कृत**	इतिहासतिमिरनाशक
रमलनौरत्न	**संस्कृत उर्दू टीका**	ऋजुपाठ १ व २ व ३ भा०	१ व २ व ३ भाग
इन्द्रजाल	मनुस्मृति	धात्वर्णव	अवधदेशीयभूगोल
संस्कृत की पुस्तकें	विष्णुहारीत	**नागरी कैथी**	इंग्लिस्तान का इतिहास
लघुकौमुदी	महिम्नस्तोत्र	वर्णमाला कैथी १ व २ भा०	हितोपत्रिका
सिद्धान्तचन्द्रिका	व्रतार्क	**तथा कैथी फ़ारसी नागरी**	बालाभूषण
भाषातत्वप्रकाश	याज्ञवल्क्यस्मृति	हरूफ़ मुफ़रदात	पद्यसंग्रह
पञ्चमहायज्ञ	**संस्कृत भाषाटीका**	अक्षरारम्भ	भाषाकाव्यसंग्रह
निर्णयसिन्धु	अमरकोष तीनों काण्ड	वर्णप्रकाशिका १ व २ भा०	कवित्तरत्नाकर १ व २ भा०
संग्रहशिरोमणि	याज्ञवल्क्यस्मृति	सूरजपुर की कहानी	मंगलकोश
भगवद्गीता	सन्ध्यापद्धति	धर्म्मसिंह का वृत्तान्त	अंकप्रकाश
दुर्गापाठमूल	व्रतार्क	शिक्षावली	गणितप्रकाश १ व २ व ३
दुर्गापाठसटीक	भगवद्गीताटीका हरि-	शिशुबोध	भाग
विष्णुभागवत	वंशलालकृत	पत्रहितैषिणी	क्षेत्रचन्द्रिका १ भाग
कथायमद्वितीया	भगवद्गीताटीका आन-	पत्रदीपिका	तथा २ भाग
अपराधभंजनस्तोत्र	न्दगिरिकृत		बीजगणित २ भाग
कायस्थकुलभास्कर	भगवद्गीतापञ्चरत्न		